सह़ाबए किराम, ताबिईन, तबए़ ताबिईन और औलियाए किराम رَضِیَ اللہُ عَنۡہُم
की मुबारक ज़िन्दगियों के बा'ज़ गोशों की झलक पर मुश्तमिल एक नादिर तालीफ़

UYUNUL HIKAYAT (HINDI)

(मुतर्जम)

उ़यूनुल हि़कायात

(हि़स्सए अव्वल)

मुअल्लिफ़

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जौज़ी

अल मु-तवफ़्फ़ा 597 हि.

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए तराजिमे कुतुब

मक-त-बतुल मदीना

दा'वते इस्लामी

مکتبۃ المدینہ

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ***ऐ अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले*** (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

उ़यूनुल ह़िकायात (ह़िस्सए अव्वल)

येह किताब (**उ़यूनुल ह़िकायात** (ह़िस्सए अव्वल))

इमाम अबुल फ़रज **अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जौज़ी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की **अ़-रबी** ज़बान में तह़रीर कर्दा है। मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने इस का **उर्दू** तरजमा और तख़्रीज कर के मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) **मक-त-बतुल मदीना**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

सह़ाबए किराम, ताबिईन, तबए़ ताबिईन और औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم
की मुबारक ज़िन्दगियों के बा'ज़ गोशों की झलक पर मुश्तमिल एक नादिर
तालीफ़

उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम)

(ह़िस्सए अव्वल)

: मुअल्लिफ़ :

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

अल मु-तवफ़्फ़ा 597 हि.

: पेशकश :

मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए तराजिमे कुतुब

: नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना
अह़मद आबाद

الصلوۃ والسلام علیک یا رسول اللہ وعلی الک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम)

मुअल्लिफ़ : इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तराजिमे कुतुब, दा'वते इस्लामी)

सिने त़बाअ़त : ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम सि. 1431 हि.

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखे़ं

मुम्बई : 19,20 मुह़म्मद अ़ली बिल्डिंग, मुह़म्मद अ़ली रोड, फ़ोन : 022-23454429

देहली : मटिया मह़ल, उर्दू मार्केट, जामेअ़ मस्जिद फ़ोन : 011-23284560

कानपूर : मख़्दूम सिम्नानी मस्जिद, दीप्ती पांडव का चौराहा, नज़्द गुर्बत पार्क, यूपी, फ़ोन : 09415982471

नागपुर : (C/0) जामिअ़तुल मदीना, मुह़म्मद अ़ली सराय रोड, कमाल शााहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फलाहे़ दारैन मस्जिद. नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : 0145-2629385

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

याद दाश्त

दौराने मुता़-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

"औलिया की इत़ाअ़त में अ़-ज़मत है" के 22 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "22 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** " نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (معجم کبیر طبرانی حدیث ۵۹۴۲، ج ٦ ص ۱۸۵ بیروت)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा। (10) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) इस किताब का मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। (13) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। (14) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (15) औलिया की सिफ़ात को अपनाऊंगा। (16) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (17,18) इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" ﴿مؤطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۷، رقم:۱۷۳۱﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (19) इस किताब के मुत़ा-लए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। (20) अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर किया करूंगा और हर इस्लामी माह की दस तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा। (21) आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा। (22) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदी-नतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

الحمد للہ علی احسانہ و بفضل رسولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम کثرہم اللہ تعالی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالی علیہ (2) शो'बए दर्सी कुतुब (3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब (5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عزوجل **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
1	तआ़रुफ़े मुअल्लिफ़	14
2	पहले इसे पढ़ लीजिये	19
3	श-रफ़े इन्तिसाब	23
4	**ह़िकायत नम्बर** 1 : ऐ काश ! मुझे उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे गवर्नर मिल जाएं	24
5	**ह़िकायत नम्बर** 2 : अहले ह़िम्स की चार शिकायात	28
6	**ह़िकायत नम्बर** 3 : कुफ़्रो शिर्क की आंधियां और शम्ए ईमान	30
7	**ह़िकायत नम्बर** 4 : क़ुरआन और नमाज़ का शैदाई	33
8	**ह़िकायत नम्बर** 5 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पाक दामनी	34
9	**ह़िकायत नम्बर** 6 : फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا	36
10	**ह़िकायत नम्बर** 7 : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत	39
11	**ह़िकायत नम्बर** 8 : जन्नत की ख़ुश्बू	42
12	**ह़िकायत नम्बर** 9 : अ़ज़ीम मां के अ़ज़ीम बेटे	43
13	**ह़िकायत नम्बर** 10 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है	45
14	**ह़िकायत नम्बर** 11 : एक रोटी की ब-र-कत	47
15	**ह़िकायत नम्बर** 12 : आस्माने विलायत के आठ सितारे	48
16	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	48
17	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैसम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	49
18	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	50
19	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन यज़ीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد	51
20	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ बिन अज्दअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	52
21	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	52

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
22	★...... ह़ज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی	55
23	**हि़कायत नम्बर** 13 : ह़ज़रते उवैसे क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के फ़ज़ाइल	59
24	**हि़कायत नम्बर** 14 : बा हिम्मत व मुख़्लिस मुबल्लिग़	62
25	**हि़कायत नम्बर** 15 : जिस दिन क़दम फिसल रहे होंगे	66
26	**हि़कायत नम्बर** 16 : रिज़्क़ के ख़ज़ानों का मालिक	71
27	**हि़कायत नम्बर** 17 : बा कमाल व बे मिसाल लोग	73
28	**हि़कायत नम्बर** 18 : कन्जूसी का अन्जाम	74
29	**हि़कायत नम्बर** 19 : दो बादशाह, साहि़ले समुन्दर पर	75
30	**हि़कायत नम्बर** 20 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नसीह़त आमोज़ फ़रामीन	77
31	**हि़कायत नम्बर** 21 : सह़रा की ऊंची क़ब्र	79
32	**हि़कायत नम्बर** 22 : सर्द रात में सो कोड़े	80
33	**हि़कायत नम्बर** 23 : क़ब्रें फटने और सितारे टूटने का दिन	82
34	**हि़कायत नम्बर** 24 : बारह सालों में हि़साबो किताब से फ़ारिग़ हुए	83
35	**हि़कायत नम्बर** 25 : हु़स्नो जमाल की पैकर	83
36	**हि़कायत नम्बर** 26 : ह़क़ गोई और समझदारी	85
37	**हि़कायत नम्बर** 27 : उड़ने वाली देग	86
38	**हि़कायत नम्बर** 28 : समुन्दर में रास्ते	87
39	**हि़कायत नम्बर** 29 : शाने औलिया	89
40	**हि़कायत नम्बर** 30 : आंखें बे नूर हो गईं	90
41	**हि़कायत नम्बर** 31 : इबादत गुज़ार और साहि़बे करामत मुजाहिद	91
42	**हि़कायत नम्बर** 32 : सब्र की अनोखी दास्तान	93
43	**हि़कायत नम्बर** 33 : ने'मत पर ग़मगीन और मुसीबत पर ख़ुश होने वाली औ़रत	94
44	**हि़कायत नम्बर** 34 : ह़ज्जाम और दो हज़ार दीनार	96

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
45	**हि़कायत नम्बर** 35 : इसे कफ़न कौन देगा...... ......?	97
46	**हि़कायत नम्बर** 36 : रेशमी कफ़न	98
47	**हि़कायत नम्बर** 37 : चमक्ते हुए चराग़	99
48	**हि़कायत नम्बर** 38 : ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब अपनी आंख निकाल दी	101
49	**हि़कायत नम्बर** 39 : ऐसे होते हैं डरने वाले	102
50	**हि़कायत नम्बर** 40 : तिलावते क़ुरआने करीम की चाश्नी	103
51	**हि़कायत नम्बर** 41 : अ़क़्ल के चोर	105
52	**हि़कायत नम्बर** 42 : शहज़ादे की अंगूठी	106
53	**हि़कायत नम्बर** 43 : तीस हज़ार दिरहम	110
54	**हि़कायत नम्बर** 44 : दुश्वार गुज़ार घाटी	111
55	**हि़कायत नम्बर** 45 : मक्कार सांप	113
56	**हि़कायत नम्बर** 46 : मक़्सद में काम्याबी	115
57	**हि़कायत नम्बर** 47 : जन्नत के सब्ज़ हुल्ले	116
58	**हि़कायत नम्बर** 48 : मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ मे मरना, फ़िक्रे आख़िरत सिखा गया	120
59	**हि़कायत नम्बर** 49 : अमीरुल मुअमिनीन के नाम "नसीह़तों भरा मक्तूब"	121
60	**हि़कायत नम्बर** 50: नफ़्स कुशी का काम्याब त़रीक़ा	125
61	**हि़कायत नम्बर** 51 : सफ़र हो तो ऐसा, रफ़ीक़े सफ़र हो तो ऐसा	126
62	**हि़कायत नम्बर** 52 : रोने वाली आंखें	129
63	**हि़कायत नम्बर** 53 : ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दौरे ख़िलाफ़त	130
64	**हि़कायत नम्बर** 54 : त़वील तरीन सफ़र "दो दिनों" में तै कर लिया	134
65	**हि़कायत नम्बर** 55 : फ़िक्रे आख़िरत के लिये कोई नहीं रोता	137
66	**हि़कायत नम्बर** 56 : चौथे आस्मान का फ़िरिश्ता	138
67	**हि़कायत नम्बर** 57 : पुर असरार जज़ीरा	140

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
68	**ह़िकायत नम्बर** 58 : नसीह़त आमोज़ चार अश्आ़र	142
69	**ह़िकायत नम्बर** 59 : और वोह ज़िन्दा हो गया...... !	143
70	**ह़िकायत नम्बर** 60 : आस्मानी लश्कर	144
71	**ह़िकायत नम्बर** 61 : समुन्दर की लहरों पर चलने वाला नौ जवान	145
72	**ह़िकायत नम्बर** 62 : बारह सुवारों का क़ाफ़िला	146
73	**ह़िकायत नम्बर** 63 : क़ुदरत का करिश्मा	149
74	**ह़िकायत नम्बर** 64 : एक पुर असर पैग़ाम	150
75	**ह़िकायत नम्बर** 65 : रोते रोते हिचकियां बंध गईं	151
76	**ह़िकायत नम्बर** 66 : मह़बूब से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब आ गया	153
77	**ह़िकायत नम्बर** 67 : ख़ूंख़ार दरिन्दों की वादी	154
78	**ह़िकायत नम्बर** 68 : चरवाहे की ह़कीमाना बातें	157
79	**ह़िकायत नम्बर** 69 : धोकेबाज़ दुल्हन	158
80	**ह़िकायत नम्बर** 70 : जुरअत मन्द मुबल्लिग़ और ज़ालिम ह़ुक्मरान	161
81	**ह़िकायत नम्बर** 71 : यौमे उ़क़्बा की तय्यारी	163
82	**ह़िकायत नम्बर** 72 : शराबी की हिदायत का सबब	164
83	**ह़िकायत नम्बर** 73 : वीरान पहाड़ियां	165
84	**ह़िकायत नम्बर** 74 : ज़र्द चेहरे वाला मोची	166
85	**ह़िकायत नम्बर** 75 : ह़ज़रते सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़दविया رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْھَا के शबो रोज़	168
86	**ह़िकायत नम्बर** 76 : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قدس سرہ الربانی की करामत	170
87	**ह़िकायत नम्बर** 77 : बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दर्द भरी मुनाजात	171
88	**ह़िकायत नम्बर** 78 : ना फ़रमान पाउं की सज़ा	171
89	**ह़िकायत नम्बर** 79 : जन्नत की अ-बदी ने'मतें	172
90	**ह़िकायत नम्बर** 80 : सब से बड़ा इ़बादत गुज़ार	173

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
91	**ह़िकायत नम्बर** 81 : छोटी मुसीबत ने बड़ी मुसीबत से बचा लिया	175
92	**ह़िकायत नम्बर** 82 : चांद जैसा नूरानी चेहरा	178
93	**ह़िकायत नम्बर** 83 : माल का वबाल	179
94	**ह़िकायत नम्बर** 84 : राहे इ़ल्म की मशक़्क़तों में सब्र पर इन्आ़म	181
95	**ह़िकायत नम्बर** 85 : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के पन्दो नसाएह़	185
96	**ह़िकायत नम्बर** 86 : शायद इसी में भलाई हो	187
97	**ह़िकायत नम्बर** 87 : जुस्त-जू बढ़ती गई	188
98	**ह़िकायत नम्बर** 88 : क़स्साब की तौबा	189
99	**ह़िकायत नम्बर** 89 : शहवत परस्त बादशाह और लालची औ़रत पर क़ह्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ	191
100	**ह़िकायत नम्बर** 90: शैत़ान का जाल	192
101	**ह़िकायत नम्बर** 91 : औ़रत का फ़ित्ना	193
102	**ह़िकायत नम्बर** 92 : सादाते किराम से मह़ब्बत पर दुगना इन्आ़म	197
103	**ह़िकायत नम्बर** 93 : सफ़ेद मह़ल	198
104	**ह़िकायत नम्बर** : 94 चन्द नसीह़तें	202
105	**ह़िकायत नम्बर** 95 : इख़्लास फ़रोश मुसल्मान	203
106	**ह़िकायत नम्बर** 96 : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की करामत	204
107	**ह़िकायत नम्बर** 97 : एक नाशपाती से चार दिन की भूक जाती रही	207
108	**ह़िकायत नम्बर** 98 : गुदड़ी में ला'ल	208
109	**ह़िकायत नम्बर** 99 : मिलावट करने की सज़ा	209
110	**ह़िकायत नम्बर** 100 : अन्धे, गन्जे और कोढ़ी का इम्तिह़ान	210
111	**ह़िकायत नम्बर** 101 : एक आ़बिद की सख़ावत और यक़ीने कामिल	212
112	**ह़िकायत नम्बर** 102 : नौ जवानों को कैसा होना चाहिये ?	215
113	**ह़िकायत नम्बर** 103 : मां को क़त्ल करने वाले का इ़ब्रतनाक अन्जाम	218

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
114	**ह़िकायत नम्बर** 104 : तक़्वा हो तो ऐसा	223
115	**ह़िकायत नम्बर** 105 : तीस साल तक रोटी न खाई	225
116	**ह़िकायत नम्बर** 106 : ख़ुदा तरस औ़रत को डूबा हुवा बच्चा कैसे मिला ?	226
117	**ह़िकायत नम्बर** 107 : दरियाए नील के नाम एक ख़त़	228
118	**ह़िकायत नम्बर** 108 : टोकरियों वाला नौ जवान	230
119	**ह़िकायत नम्बर** 109 : ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का तबर्रुक	232
120	**ह़िकायत नम्बर** 110 : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की चन्द नसीह़तें	233
121	**ह़िकायत नम्बर** 111 : बेहतरीन ज़ादेराह क्या है ?	234
122	**ह़िकायत नम्बर** 112 : एक आ़लिमे रब्बानी की लिल्लाहिय्यत	235
123	**ह़िकायत नम्बर** 113 : तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का	238
124	**ह़िकायत नम्बर** 114 : यक़ीने कामिल	241
125	**ह़िकायत नम्बर** 115 : दीवार से खजूरें निकल पड़ीं	242
126	**ह़िकायत नम्बर** 116 : ख़ुश्क ज़बानें	243
127	**ह़िकायत नम्बर** 117 : ज़मीन सोना बन गई	245
128	**ह़िकायत नम्बर** 118 : गुस्ताख़े सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इ़ब्रतनाक अन्जाम	246
129	**ह़िकायत नम्बर** 119 : बदनामे ज़माना फ़ाह़िशा ने तौबा कैसे की ?	248
130	**ह़िकायत नम्बर** 120 : मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ रखने वाली बूढ़ी औ़रत	250
131	**ह़िकायत नम्बर** 121 : चार अ़ज़ीम ने'मतें	252
132	**ह़िकायत नम्बर** 122 : क़त्ल की धमकी	255
133	**ह़िकायत नम्बर** 123 : ख़बीस जिन्न	257
134	**ह़िकायत नम्बर** 124 : ख़लीफ़ा मन्सूर को एक लालची की नसीह़त	260
135	**ह़िकायत नम्बर** 125 : जिस का अ़मल हो बे ग़रज़, उस की जज़ा कुछ और है	263
136	**ह़िकायत नम्बर** 126 : दियानत दार ताजिर	266

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
137	**ह़िकायत नम्बर** 127 : एक मुस्तजाबुद्दा'वात बुज़ुर्ग	268
138	**ह़िकायत नम्बर** 128 : गुनाहों से ह़िफ़ाज़त की अनोखी दुआ़	269
139	**ह़िकायत नम्बर** 129 : मां की दुआ़ का असर	270
140	**ह़िकायत नम्बर** 130 : जग-मगाता ख़ैमा	274
141	**ह़िकायत नम्बर** 131 : जुरअत मन्द चीफ़ जस्टिस	276
142	**ह़िकायत नम्बर** 132 : पांच लाख दिरहम का दा'वा	278
143	**ह़िकायत नम्बर** 133 : आग की ज़न्जीरें	282
144	**ह़िकायत नम्बर** 134 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करने का अज्र	284
145	**ह़िकायत नम्बर** 135 : तेरा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तेरी शफ़ाअ़त करेगा	286
146	**ह़िकायत नम्बर** 136 : काम्याबी की ज़मानत	288
147	**ह़िकायत नम्बर** 137 : सब्र और क़नाअ़त की दौलत	289
148	**ह़िकायत नम्बर** 138 : अह़कामे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ग़ौरो फ़िक्र	292
149	**ह़िकायत नम्बर** 139 : अच्छे लोग कौन हैं ?	293
150	**ह़िकायत नम्बर** 140 : ज़ुल्म का अन्जाम	295
151	**ह़िकायत नम्बर** 141 : उ़-लमा की शानो शौकत	296
152	**ह़िकायत नम्बर** 142 : ह़ासिद का इ़ब्रतनाक अन्जाम	298
153	**ह़िकायत नम्बर** 143 : बे अ-दबों से दूरी में आ़फ़िय्यत	302
154	**ह़िकायत नम्बर** 144 : भुना हुवा हरन	303
155	**ह़िकायत नम्बर** 145 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हर वली ज़िन्दा है	304
156	**ह़िकायत नम्बर** 146 : दिल की दुन्या बदल गई	305
157	**ह़िकायत नम्बर** 147 : मु-तवक्किल ख़ातून	308
158	**ह़िकायत नम्बर** 148 : "कामिल भरोसा" हो तो जंगल में भी "रिज़्क़" मिल जाता है	309
159	**ह़िकायत नम्बर** 149 : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का अन्दाज़े दुआ़	310

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
160	**ह़िकायत नम्बर** 150 : बड़ी चाहतों से है इस दर को पाया	315
161	**ह़िकायत नम्बर** 151 : का'बतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र	322
162	**ह़िकायत नम्बर** 152 : टूटी हुई सुराही	324
163	**ह़िकायत नम्बर** 153 : ख़ून के आंसू	325
164	**ह़िकायत नम्बर** 154 : तर्के दुन्या और फ़िक्रे आख़िरत के मु-तअ़ल्लिक़ एक तह़रीर	327
165	**ह़िकायत नम्बर** 155 : रिज़्क़ की ब-र-कत से मह़रूम कौन...... । ?	328
166	**ह़िकायत नम्बर** 156 : येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है	330
167	**ह़िकायत नम्बर** 157 : फ़ु-क़रा और मसाकीन का रुत्बा	331
168	**ह़िकायत नम्बर** 158 : दुन्या मसाइब का घर है	333
169	**ह़िकायत नम्बर** 159 : नेक जिन्न	335
170	**ह़िकायत नम्बर** 160 : अनमोल नसीह़तें	337
171	**ह़िकायत नम्बर** 161 : रोज़े जज़ा का ख़ौफ़	340
172	**ह़िकायत नम्बर** 162 : सब्र की तल्क़ीन	341
173	**ह़िकायत नम्बर** 163 : ह़ज़रते सय्यिदुना सिरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का जिन्नात से मुकालिमा	343
174	**ह़िकायत नम्बर** 164 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के औसाफ़े करीमा	344
175	**ह़िकायत नम्बर** 165 : क़ुरआनो सुन्नत से ख़लीफ़ए वक़्त को नसीह़तें	345
176	**ह़िकायत नम्बर** 166 : अ़ज़ीम लोगों की अ़ज़ीम सोच	351
177	**ह़िकायत नम्बर** 167 : कहां है वोह मर्दे सालेह़ ?	352
178	**ह़िकायत नम्बर** 168 : फ़क़ीर की दुआ़	353
179	**ह़िकायत नम्बर** 169 : एक सर्द रात	353
180	**ह़िकायत नम्बर** 170 : दर्से इ़रफ़ां	354
181	**ह़िकायत नम्बर** 171 : दीने मुह़म्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वे	356
182	**ह़िकायत नम्बर** 172 : अ़जीबो ग़रीब निशानी	357

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
183	**ह़िकायत नम्बर** 173 : लाश ग़ाइब हो गई	358
184	**ह़िकायत नम्बर** 174 : बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا	361
185	**ह़िकायत नम्बर** 175 : ह़िम्स के मिसाली गवर्नर	362
186	**ह़िकायत नम्बर** 176 : मा'रिफ़त की बातें	364
187	**ह़िकायत नम्बर** 177 : क्या बीमारी ब ज़ाते ख़ुद दवा बन सकती है ?	367
188	**ह़िकायत नम्बर** 178 : में तेरी रिज़ा पर राज़ी हूं	368
189	**ह़िकायत नम्बर** 179 : ता'ज़ीम की ब-र-कत	369
190	**ह़िकायत नम्बर** 180 : सत्तू से इफ़्तारी	370
191	**ह़िकायत नम्बर** 181 : तू अचानक मौत का होगा शिकार	371
192	**ह़िकायत नम्बर** 182 : तख़्ते सिकन्दरी पर येह थूकते नहीं	372
193	**ह़िकायत नम्बर** 183 : तीन बहादुर भाई	374
194	**ह़िकायत नम्बर** 184 : फ़ु-क़रा व मसाकीन की ईद हो गई	382
195	**ह़िकायत नम्बर** 185 : दो चादरों वाला नौ जवान	383
196	**ह़िकायत नम्बर** 186 : एक ग़रीबुल वत़न	384
197	**ह़िकायत नम्बर** 187 : फ़ाह़िशा औ़रत और बा ह़या नौ जवान	385
198	**ह़िकायत नम्बर** 188 : बुज़ुर्गों की म-दनी सोच	387
199	**ह़िकायत नम्बर** 189 : शैत़ान की धमकी	388
200	**ह़िकायत नम्बर** 190 : शिफ़ा देने वाला हाथ	389
201	★...... कोहे लकाम का आ़रिफ़	390
202	**ह़िकायत नम्बर** 191 : गुमशुदा थैली कैसे मिली ?	390
203	**ह़िकायत नम्बर** 192 : नूरानी बुज़ुर्ग	392
204	**ह़िकायत नम्बर** 193 : सफ़ेद रोटी और ख़त़रनाक अज़्दहा	393
205	**ह़िकायत नम्बर** 194 : मिस्र का बादशाह	394

नम्बर शुमार	उन्वान	सफ़ह़ा नम्बर
206	**ह़िकायत नम्बर** 195 : चिड़िया और च्यूंटी की मिसाल	395
207	**ह़िकायत नम्बर** 196 : माले यतीम की ह़िफ़ाज़त	396
208	**ह़िकायत नम्बर** 197 : घर में क़ब्र	397
209	**ह़िकायत नम्बर** 198 : दो वलियों की मुलाक़ात	399
210	**ह़िकायत नम्बर** 199 : अनोखी ज़ियाफ़त	401
211	**ह़िकायत नम्बर** 200 : कटे हुए सर से तिलावते क़ुरआन की आवाज़ आती	401
212	**ह़िकायत नम्बर** 201 : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق और यतीम घराना	403
213	**ह़िकायत नम्बर** 202 : हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने वाले	404
214	**ह़िकायत नम्बर** 203 : इ़ल्म के क़द्रदानों का सिला	405
215	★...... मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब	406
216	★...... मआख़ज़ो मराजेअ़	409

तआरुफ़े मुअल्लिफ़

अबुल फ़रज हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी ह़म्बली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی

नाम व नसब :

आप का लक़ब : जमालुद्दीन, **कुन्यत :** अबुल फ़रज और **नाम व नसब :** अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़म्मादी बिन अह़मद बिन मुह़म्मद बिन जा'फ़र अल जौज़ी बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ासिम बिन्नज़्र बिन क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्रिस्सिद्दीक़ ख़ली-फ़तुल मुस्लिमिन ख़लीफ़ए अव्वल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن ।

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सिलिसलए नसब ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के वासिते से ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंचता है।

विलादत व परवरिश :

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 511 हि. में **उरूसुल बिलाद बग़दाद शरीफ़** में पैदा हुए। अभी आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तीन साल के थे कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे मोह़तरम इस दुन्या से रुख़्सत हो गए। वालिद की वफ़ात के बा'द आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की फूफी ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की परवरिश का ज़िम्मा लिया और ख़ूब प्यार व मह़ब्बत से आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की परवरिश की।

ता'लीम :

जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कुछ होश संभाला तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की फूफी जान आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उस अ़लाक़े के मशहूर ह़ाफ़िज़ **ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल बिन नासिर** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار के पास ले गईं और ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि मेरे भतीजे को ह़ाफ़िज़ बना दें, उस्ताद की जौहर शनास निगाहों ने देख लिया कि येह बच्चा दीने इस्लाम का सरमाया है और اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَل मुस्तक़्बिल में दीने मतीन की ख़ूब ख़िदमत करेगा। चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने ह़ल्क़ए तलामिज़ा में शामिल फ़रमा लिया।

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी ज़हानत, मेह़नत और उस्ताद के अदबो एह़तिराम की वजह से **कलामे मजीद** को अपने दिल के **आबगीने में** सजा लिया और बहुत जल्द ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बन गए। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दर्से ह़दीस की इब्तिदा भी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नासिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَادِر ही से की और उन्ही से **इल्मुल क़िराअत** सीखा। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **इल्मे फ़िक़्ह** अपने ज़माने के मशहूर ह़म्बली फ़क़ीह **ह़ज़रते अबू बक्र देनूरी ह़म्बली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی और ह़ज़रते **इब्नुल फ़राअ** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से, **इल्मे अदब व लुग़त** ह़ज़रते अबू मन्सूर इब्ने जवालीक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से ह़ासिल किया। इन के इ़लावा आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तक़रीबन 87 असातिज़ए किराम से इ़ल्मी इस्तिफ़ादा किया जिन में अबुल क़ासिम

हब्बतह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वाजिद अश्शैबानी, अबुल बरकात अ़ब्दुल वह्हाब बिन मुबारक अन्माती़, इब्ने त़बरी, अबुल ह़सन इब्ने ज़ाग़वानी और इब्ने अ़क़ील رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی वग़ैरा शामिल हैं।

वा'ज़ो नसीह़त का शौक़ :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को वा'ज़ो नसीह़त और बयान करने का बहुत शौक़ था, इसी शौक़ की बिना पर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बहुत छोटी उ़म्र में बयान करना शुरूअ़ कर दिया और लोग भी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बयान में दिल चस्पी लेने लगे लेकिन अभी इस **गौहरे नायाब** को तराशने की ज़रूरत थी। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के उस्ताद **इब्ने ज़ाग़वानी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जो उस ज़माने मशहूर वाइ़ज़ थे, उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बयान सिखाया और उन की ज़ेरे निगरानी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत जल्द एक बहुत अच्छे वाइ़ज़ बन गए।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी सा'ये पैहम, और मुश्फ़िक़ उस्ताद **अबुल ह़सन इब्ने ज़ाग़वानी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़ुसूसी शफ़्क़तों और ख़ास तवज्जोह से तक़रीबन 20 साल की उ़म्र में बा क़ाइ़दगी से वा'ज़ फ़रमाने लगे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का वा'ज़ सुनने दूर व नज़्दीक से लोग आने लगे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुस्तक़िल तरबिय्यती इज्तिमाअ़ शुरूअ़ कर दिया। इस तरबिय्यती इज्तिमाअ़ में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی, त़ु-लबा, ख़ु-लफ़ा, वु-ज़रा, बड़े बड़े बादशाह, अ़वाम और हर त़रह़ के लोग शामिल होते और अपनी इ़ल्मी व अ़-मली प्यास बुझाते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के **तरबिय्यती इज्तिमाअ़** में लोगों की ता'दाद तक़रीबन दस हज़ार (10,000) तक होती और कभी कभी तो उस इज्तिमाअ़ में ता'दाद एक लाख (1,00,000) तक पहुंच जाती। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत फ़सीह़ व बलीग़ कलाम फ़रमाते और दौराने बयान अश्आ़र भी पढ़ते, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान नसीह़त आमोज़ कलिमात पर मुश्तमिल होता, लोग आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान सुन कर आख़िरत की तय्यारी की त़रफ़ राग़िब होते, गुनाहगार गुनाहों से ताइब हो जाते, मुत्तक़ी व परहेज़ गार लोगों को मज़ीद जज़्बा मिलता, बे इ़ल्मों को इ़ल्म व अ़मल की दौलत नसीब होती, बे सुकूनों को सुकून मिलता।

अल ग़रज़ ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने दौर के अ़ज़ीम मुबल्लिग़ थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का अन्दाज़ सब से मुन्फ़रिद था, दौराने बयान क़ुरआने पाक की आयतें पढ़ते, तरग़ीब के लिये वाक़िआ़त बयान फ़रमाते, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तरबिय्यती इज्तिमाअ़ में शरीक होने वाला ख़ूब फ़ैज़याब होता, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दीने इस्लाम के एक अ़ज़ीम मुबल्लिग़ थे।

ह़दीसे पाक से मह़ब्बत :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ह़दीसे पाक से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत थी। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि जब तक "सह़ीह़ बुख़ारी, सह़ीह़ मुस्लिम, जामेए़ तिरमिज़ी, सु-नने अबू दावूद, सु-नने नसाई, सु-नने इब्ने माजह, मुस्नदे इमाम अह़मद, त़ब्क़ाते इब्ने सा'द, तारीख़ुल ख़त़ीब, ह़िल्यतुल औलिया, इन के इ़लावा चन्द और किताबें ह़िफ़्ज़ न कर लूं उस वक़्त तक मुस्तक़िल इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल नहीं करूंगा।" चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने थोड़े ही अ़र्से में येह सारी किताबें ज़बानी याद कर लीं, इस के

बा'द मुस्तक़िल इल्मे ह़दीस सीखना शुरूअ़ किया।

तस्नीफ़ व तालीफ़ :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इल्मे क़ुरआन, इल्मे ह़दीस, इल्मे फ़िक़्ह, जुग़राफ़िया, इल्मे त़िब, तारीख़, तफ़्सीर, इल्मे नजूम, ह़िसाब, लुग़त, नह़्व वग़ैरा के इलावा और बहुत से उ़लूम पर किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बहुत सी कुतुब ज़ाएअ़ हो गईं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तसानीफ़ की ता'दाद 300 बताई जाती है जिन में कई तो मुजल्लद हैं और कुछ रिसाले वग़ैरा हैं।

आप की बा'ज़ तसानीफ़ व तालीफ़ात के नाम येह हैं :

(١) اَحکام النساء (٢)اخائر الذخائر(٣)اخبارالاخبار(٤) اخبار اهل الرسوخ فی الفقه والحدیث بمقدار المنسوخ(٥)اخبار البرامکة (٦) الاریب فی تفسیر الغریب(٧) اسباب الهدایة لارباب البدایة(٨)اعمار الاعیان فی التاریخ والتراجم(٩) اعلام العالم بعد رسوخه بحقائق ناسخ الحدیث ومنسوخه(١٠) الانصاف فی مسائل الخلاف(١١) بستان الصادقین(١٢) بستان الواعظین ورياض السامعین(١٣) التحقیق فی احادیث الخلاف(١٤) تذکرة الخواص(١٥) تذکرة المنتبه فی عیون المشتبه(١٦) تلبیسِ ابلیس(١٧) تلقیح فهوم الاثرفی التاریخ والسیر(١٨) تیسیرالبیان فی تفسیرالقران(١٩) جامع المسانید بالحصی الاسانید(٢٠) الجمال فی اسماء الرجال(٢١) الخطا والصواب عن احادیث الشهاب(٢٢) الدر الثمین من خصائص النبی الامین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلیہِ وَ آلہٖ وَسَلَّم(٢٣) الدر الفائق بالمجالس والاحادیث الرقائق (٢٤) درة الاکلیل فی التاریخ (٢٥)الدلائل فی مشهورالمسائل(٢٦) ذم الهوی(٢٧) الذهب المسبوك فی سیر الملوك(٢٨) الذیل علی طبقات الحنابلة (٢٩) الرد علی المتعصب العنید المانع من ذم یزید (٣٠) روح الارواح(٣١)روضة المجالس ونزهة المستأنس(٣٢) روضة المریدین(٣٣) روضة الناقل(٣٤) زاد المسیرفی علم التفسیر(٣٦) زاهر الجواهر (٣٧)السّهم المصیب(٣٨) سیرة العمرین(٣٩) شذورالعقود فی تاریخ العهود(٤٠) شرف المصطفٰی(صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیه وَآلہٖ وَسَلَّم) (٤١) شم الریاض(٤٢) صفوة الصفوة مختصرحلیة الاولیاء (٤٣) صید الخاطر(٤٤) عجالة المنتظر فی شرح حال الخضر (٤٥)العلل المتناهیة فی الاحادیث الواهیة(٤٦) عیون الحکایات (٤٧)غوامض الهٰیات (٤٨) فضائل المدینة(٤٩) قصیدة فی الاعتقاد (٥٠) کتاب الاذکیاء (٥١) کتاب الالقاب (٥٢) کتاب الحمقاء والمغفّلین(٥٣)منهاج الوصول الی علم الاصول(٥٤) النور فی فضائل الایام والشهور(٥٥) الواهیات(ثلاث مجلدات)(٥٦) الوفا فی فضائل المصطفٰی صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلیہِ وَ آلہٖ وَسَلَّم

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की औलाद :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के तीन साहि़ब ज़ादे और पांच साहि़ब ज़ादियां थीं। साहि़ब ज़ादों के नाम येह हैं, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, अबुल क़ासिम अ़ली और मुहि़य्युद्दीन यूसुफ़ رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی। सब से बड़े साहि़ब ज़ादे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد आलमे शबाब ही में इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो गए, उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की उ़म्र तक़रीबन 40 साल थी। जब कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सब से छोटे साह़िब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़िय्युद्दीन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी आप जैसी ख़ूबियां पाईं और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के विसाल के बा'द वोह वा'ज़ व बयान फ़रमाते, उन में अपने वालिदे मोह़तरम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का रंग नज़र आता और लोग उन का बयान भी बड़ी तवज्जोह और एहतिमाम से सुनते।

इ़श्के़ रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़ थे, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीस लिखते तो त़हारत व पाकीज़गी का बहुत एहतिमाम फ़रमाते और बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में बैठते। जिस क़लम से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक लिखते उस पर लगी सियाही को जम्अ़ फ़रमाते रहते और उसे बड़े अदबो एह़तिराम से रखते और फ़रमाते : "जब मैं मर जाऊं तो जिस पानी से मुझे ग़ुस्ल दो उस में येह सियाही डाल देना, मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से उम्मीद है कि जिस सियाही से मैं ने उस के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबा-रका लिखी हैं वोह बा ब-र-कत सियाही जब मेरे जिस्म से लगेगी तो ज़रूर मेरी मग़्फ़िरत हो जाएगी, जिस सियाही से मैं ने अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी लिखा जब वोह मेरे जिस्म को छू लेगी तो उसे जहन्नम की आग हरगिज़ न छूएगी और **नामे मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ब-र-कत से मैं क़ब्रो आख़िरत के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहूंगा।"

आक़ा का गदा हूं ऐ जहन्नम ! तू भी सुन ले　　　वोह कैसे जले जो कि ग़ुलामे म-दनी हो

विसाले पुर मलाल :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सिने 597 हिजरी बरोज़ हफ़्ता र-मज़ानुल मुबारक के बा ब-र-कत महीने में आख़िरी **तरबिय्यती इज्तिमाअ़** मुन्अ़क़िद किया जिस में कसीर अफ़राद ने शिर्कत की इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमार हो गए और सिने 597 हिजरी 12 र-मज़ानुल मुबारक मग़्रिब और इ़शा के दरमियान दीने इस्लाम का येह अ़ज़ीम मुह़द्दिस व मुबल्लिग़ इस दुन्याए फ़ानी में अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी के 87 साल गुज़ार कर दाइमी व उख़्रवी मन्ज़िल की त़रफ़ कूच कर गया और गुलशने इस्लाम में एक और गुल की कमी हो गई लेकिन उस गुल की ख़ुश्बूओं से आज भी आ़लमे इस्लाम मुअ़त्तर व मुअ़म्बर है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस्लाम का बहुत बड़ा सरमाया थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात के वक़्त लोगों की ह़ालत बहुत अ़जीब थी, हर आंख पुर नम थी और हर दिल ग़मज़दा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रूह़ हज़ारों लोगों को रोता हुवा छोड़ कर आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई, यहां दुन्या में लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जुदाई से ग़मगीन व परेशान थे और आ़लमे बाला में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस्तिक़्बाल की तय्यारियां हो रही थीं

और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आमद पर ख़ुशी व मुसर्रत का समां था।

अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला

फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जनाज़े में बहुत ज़ियादा लोग शरीक हुए, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नमाज़े जनाज़ा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बेटे अबू क़ासिम अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने पढ़ाई और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अह़मद बिन ह़म्बल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में दफ़्न किया गया, लोगों ने कई रातें मुसल्सल आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्रे अत़्हर पर क़ुरआन ख़्वानी की, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि जब मैं इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो जाऊं तो मेरी क़ब्र पर येह अश्आ़र लिख देना, चुनान्चे ब मुत़ाबिक़े वसिय्यत आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र पर मुन्दरिजए ज़ैल अश्आ़र लिखे गए :

يَا كَثِيرَ الْعَفْوِ يَا مَنْ   كَثُرَتْ ذَنْبِي لَدَيْهِ

جَاءَكَ الْمُذْنِبُ   يَرْجُو الصَّفْحَ عَنْ جُرْمٍ يَدَيْهِ

اَنَا ضَيْفٌ وَجَزَاءُ   الضَّيْفِ الْاِحْسَانُ اِلَيْهِ

तरजमा : ऐ बहुत ज़ियादा अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमाने वाले परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! ऐ बुज़ुर्गो बरतर मालिक ! मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा हैं।

ऐ (रह़ीम व करीम) परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तेरा गुनाहगार बन्दा तेरी बारगाह में अपने गुनाहों की बख़्शिश की आस लगाए ह़ाज़िर है।

ऐ (मुन्इमे ह़क़ीक़ी) मैं (तेरा) मेहमान हूं और मेहमान की जज़ा येही है कि उस पर एह़सान किया जाए (लिहाज़ा ऐ मेरे मेहरबान रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर एह़सान फ़रमा और मुझे बख़्श दे)।

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म   देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल   नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ

(ماخوذ از بستان الواعظین و ریاض السامعین ،ذم الھوٰی، عیون الحکایات،سیر اعلام النبلاء)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

पहले इसे पढ़ लीजिये

ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर, रह़मानो रह़ीम عَزَّوَجَلَّ का हम ना तुवानों पर करोड़हा करोड़ एह़सान, कि उस ने हमें दौलते ईमान, और दामने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जैसी अ़ज़ीम ने'मत से नवाज़ा। वोह रह़ीम व करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तो अपने बन्दों पर बहुत ज़ियादा मेहरबान है, लेकिन इन्सान उस का ना शुक्रा और ना फ़रमान है, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों की भलाई के लिये अम्बिया व रुसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया। उन पाकीज़ा हस्तियों ने इन्सान को ख़ालिक़े लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त व फ़रमां बरदारी की दा'वत दी। अम्बिया व रुसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आ-वरी का येह सिल्सिला चलता रहा और ख़ातिमुन्नबिय्यीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत शरीफ़ पर ख़त्म हो गया।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आ-वरी से क़ब्ल इन्सानियत, तबाही व बरबादी के अ़मीक़ गढ़े में गिरी हुई थी, हर त़रफ़ कुफ़्रो शिर्क और जहालत व गुमराही का दौर दौरा था, ज़ुल्मो सितम, बे ह़याई, शराब व कबाब की मह़फ़िलें, धोकाबाज़ी, जुवा, सूदी लैन दैन, क़त्लो ग़ारत अल ग़रज़ हर त़रफ़ बुराइयों के सियाह बादलों ने घटा टोप अंधेरा कर रखा था। उस वक़्त कोई ऐसा चराग़ न था जो इस अंधेरे को ख़त्म कर के दुन्या को अपनी ज़िया से मुनव्वर करता।

फिर जब कुफ़्रो शिर्क के अंधेरों में भटके हुए इन्सानों को का'बे के **बदरुहुजा**, त़यबा के **शम्सुद्दुहा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर ने अपने ह़ल्क़े में लिया, तो उन की बे चैन रूहों और शिकस्ता दिलों को क़रार नसीब हुवा। कुफ़्रो शिर्क के सियाह बादल छट गए, ज़ुल्मो सितम की आंधियां थम गईं, बह़रे ज़ुल्मात की तलातुम ख़ैज़ लहरें साकिन हो गईं, मुतलाशियाने ह़क़ मन्ज़िले मक़्सूद पाने के लिये उस मिनारए नूर के गिर्दागिर्द जम्अ़ हो गए, उस आफ़्ताबे रिसालत की किरनों से अन्धे शीशे जग-मगाने लगे, चहार दांगे आ़लम में इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत के डंके बजने लगे। शम्ए़ रिसालत के परवानों ने इस्लाम का नूर दुन्या के गोशे गोशे में पहुंचाना शुरूअ़ कर दिया।

शैत़ाने लईन जो कि मुसल्मानों का खुला दुश्मन है उस से इस्लाम की येह शानो शौकत न देखी गई, चुनान्चे वोह मरदूद और उस के चेले इस्लाम की शम्अ़ को बुझाने की मज़्मूम कोशिश में एड़ी चोटी का ज़ोर लगाने लगे मगर इस्लाम के शैदाइयों (ह़ज़राते सह़ाबए किराम, ताबिईन व तब्ए़ ताबिईने इ़ज़ाम और फिर औलिया رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) ने जान की बाज़ी लगा दी और इस शम्अ़ को बुझने न दिया।

जब तक ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ज़ाहिरी ह़यात के साथ इस दुन्या में जल्वा गर रहे इस्लाम रोज़ ब रोज़ तरक़्क़ी करता रहा, लेकिन जब ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया, तो शैत़ान और इस का त़ाग़ूती लश्कर, इस्लाम के लहलहाते गुलशन को तबाह व बरबाद करने के मज़्मूम इरादे से आगे बढ़ा, और बहारे इस्लाम को ख़ज़ां में बदलने के लिये त़रह़ त़रह़ के हथकन्डे इस्ति'माल करना

शुरूअ़ कर दिये। लेकिन उन्हें इस्लाम के चाहने वालों से हर मैदान में शिकस्त उठानी पड़ी।

मगर जब इन मुबारक हस्तियों ने यके बा'द दीगरे इस दारे फ़ानी से पर्दा फ़रमाना शुरूअ़ कर दिया तो शैत़ानी लश्कर जो अब तक हर **"रज़्मे ह़क़्क़ो बात़िल"** में ज़लीलो ख़्वार होता आ रहा था उस ने एक बार फिर मुज्तमेअ़ हो कर मुसल्मानों को उन के दीने ह़क़ से दूर करने की मज़्मूम कोशिश शुरूअ़ कर दी, लेकिन अब पहले जैसी बात न रही, जो ब-र-कतें और रह़मतें क़ुरूने सलासा (या'नी ह़ज़राते सह़ाबा, ताबिईन और तबए़ ताबिईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین के मुबारक ज़मानों) में थीं वोह उन के बा'द न रहीं। चुनान्चे,

मुख़्बिरे सादिक़, रसूले अ़ा-लमियान, नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اِنَّ خَیْرَکُمْ قَرْنِیْ ثُمَّ الَّذِیْنَ یَلُوْنَھُمْ ثُمَّ الَّذِیْنَ یَلُوْنَھُمْ तरजमा : बेशक सब से बेहतर मेरा ज़माना है, फिर वोह लोग जो इन के बा'द आएंगे, फिर वोह जो उन के बा'द आएंगे।"

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة ،باب فضل الصحابة ثم الذین یلونھم ، الحدیث:۲۵۳۵)

येह वोह बेहतरीन ज़माने थे कि जिन में तबए़ ताबिईन, ताबिईने इ़ज़ाम से, वोह सह़ाबए किराम से और वोह अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते यूं कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की बातें सुन कर ताबिईने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی अपने दिलों को तक़्विय्यत बख़्शते। इसी त़रह़ ताबिईने इ़ज़ाम के वाक़िआ़त सुन कर तबए़ ताबिईन अपनी तिश्नगी को बुझाते और यूं ईमान की ह़िफ़ाज़त और आ'माले सालिह़ा का जज़्बा बढ़ता रहता लेकिन इस के बा'द ज़माना तेज़ी से तब्दील होने लगा और एक बार फिर शैत़ान अपने लश्कर समेत मुसल्मानों को उन के प्यारे दीन से दूर करने के लिये सरगर्म हो गया।

अब ज़रूरत इस अम्र की थी कि इन त़ाग़ूती क़ुव्वतों का मुक़ाबला किस त़रह़ किया जाए ? और किस त़रह़ से शैत़ानी साज़िशों को नाकाम बनाया जाए। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत पर करम फ़रमाते हुए इन्हें अपने सालिह़ीन बन्दों (औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی) की सूरत में रहनुमा अ़त़ा फ़रमा दिये, येही वोह सलफ़े सालिह़ीन رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی हैं जिन के ह़ालात व वाक़िआ़त और अ़ज़ीम कारनामे आज तक उम्मत की रहनुमाई कर रहे हैं, इन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی ने हर मैदान में शैत़ानी क़ुव्वतों का मुक़ाबला किया और उन्हें शिकस्त दी। उन्हों ने अपने क़लम, ज़बान और अ़मल के ज़रीए़ लोगों की रहनुमाई फ़रमाई, वोह ख़ुद भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, ताबिईन और तबए़ ताबिईन رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی के नक़्शे क़दम पर चले और लोगों को भी उन के रास्ते पर चलने की दा'वत दी।

फिर ह़ज़राते उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی ने इस उम्मत पर येह एह़सान किया कि उन्हों ने इन बा ब-र-कत हस्तियों के ह़ालात व वाक़िआ़त को किताबी शक्लों में जम्अ़ कर दिया जिन को पढ़ कर लोगों में ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीन पर अ़मल का जज़्बा पैदा होता है। चुनान्चे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"गुलदस्तए अ़त्तारिय्या"** के सफ़ह़ा 7 पर किसी दाना का क़ौल नक़्ल करते हैं : "قَصَصُ الْاَوَّلِيْنَ مَوَاعِظُ الْاٰخِرِيْنَ" या'नी अगलों के क़िस्से पिछलों के लिये नसीह़त होते हैं।"

ज़ेरे नज़र किताब **"उ़यूनुल हि़कायात"** छटी सिने हिजरी के अ़ज़ीम मुहद्दिस व मुबल्लिग़, इमाम अबुल फ़रज जमालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की तालीफ़ है। जिस में जगह ब जगह बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, इ़बादत व रियाज़त, ज़ोह्दो वरअ़, शर्मो ह़या, सख़ावत व शुजाअ़त, शौक़े शहादत, सब्रो इस्तिक़ामत, बाहमी शफ़्क़तो मह़ब्बत, अदब व ता'ज़ीम, और जज़्बए एह़याए दीन पर मुश्तमिल वाक़िआ़त व ह़िकायात अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रही और अपने पढ़ने वाले को अ़मल की त़रफ़ भरपूर दा'वत देती हैं।

"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश" के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त दा'वते इस्लामी की मजलिस **"अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या"** के **"शो'बए तराजिमे कुतुब"** के म-दनी इस्लामी भाइयों ने इस किताब का तरजमा बनाम **"उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम)"** आप तक पहुंचाने के लिये दिन रात कोशिशें की हैं। इस तरजमा में जो ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **रब्बे रह़ीम** और उस के **मह़बूबे करीम** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी को दख़्ल है।

तरजमा करते हुए दर्जे ज़ैल उमूर का ख़याल रखा गया है :

★...... कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़िय्यत मुन्तक़िल की जाए जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

★...... इस सिल्सिले में बा'ज़ मक़ामात पर तम्हीदी जुम्लों का इज़ाफ़ा किया गया है। इस त़रह़ इस किताब की ह़ैसियत मह़ज़ तह़तुल्लफ़्ज़ तरजमा की नहीं, बल्कि तरजुमानी की है।

★...... ह़िकायात व वाक़िआ़त की अस्ल ज़मीन बर क़रार रखी गई है।

★...... अ़-रबी उ़न्वानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

★...... इस के इ़लावा (मफ़्हूमे ह़िकायत को मद्दे नज़र रखते हुए) कई एक ज़ैली उ़न्वानात का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

★...... आयात का तरजमा इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर-ज-मए क़ुरआन "कन्ज़ुल ईमान" से दर्ज किया गया है।

★...... अह़ादीस की तख़्रीज अस्ल मआख़ज़ से करने की कोशिश की गई है।

★...... तरजमा में ह़त्तल इम्कान आसान और आ़म फ़ह्म अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं।

★...... कई अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगा दिये गए हैं।

★...... मौक़अ़ की मुनासिबत से **इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن और **आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, महताबे र-ज़विय्यत, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **और दीगर उ़-लमाए अहले सुन्नत** دَامَتْ فُیُوْضُہُمُ الْعَالِیَہ के अश्आ़र लिखे गए हैं।

★...... हर ह़िकायत को अ़लाह़िदा एक मुस्तक़िल नाम दिया गया है।

★...... अक्सर ह़िकायात के आख़िर में हिलालैन के अन्दर दुआ़इया कलिमात ज़िक्र किये गए हैं जो अस्ल किताब का ह़िस्सा नहीं।

★...... बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद ह़वाशी भी दिये गए हैं।

★...... ह़िकायात के नम्बर अ़-रबी मतन के ए'तिबार से नहीं बल्कि तरजमा की तरतीब के मुत़ाबिक़ दिये गए हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या, दा'वते इस्लामी)

श-रफ़े इन्तिसाब

दुन्याए इस्लाम की उन दो अ़ज़ीम हस्तियों के नाम जिन्हों ने उम्मते मुस्लिमा को गुनाहों की दलदल से निकालने में अपना तारीख़ी किरदार अदा किया या'नी

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत अश्शाह

अल मुफ़्ती अल ह़ाफ़िज़

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

और

शैख़े त़रीक़त, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत,
बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

ह़िकायत नम्बर 1 :

ऐ काश मुझे उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे गवर्नर मिल जाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द अल अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ह़िम्स का गवर्नर बना कर भेजा। एक साल गुज़र गया लेकिन उन की कोई ख़बर न आई। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कातिब को बुलाया और फ़रमाया : "उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ ख़त़ लिखो कि जैसे ही तुम्हें मेरा येह ख़त़ मिले फ़ौरन मेरे पास चले आओ, माले ग़नीमत व ख़राज वग़ैरा भी साथ लेते आना।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पैग़ाम मिला तो आप ने अपना थैला उठाया, उस में ज़ादे राह और एक पियाला रखा, पानी का बरतन लिया फिर अपनी लाठी उठा कर पैदल ही सफ़र करते हुए मदीनए मुनव्वरह पहुंच गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में इस ह़ाल में ह़ाज़िर हुए कि आप का चेहरा गर्द आलूद और रंग मु-तग़य्यर हो चुका था और त़वील सफ़र के आसार चेहरे पर ज़ाहिर थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ाज़िर होते ही اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ یَااَمِیۡرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ وَمَغۡفِرَتُہٗ कहा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सलाम का जवाब दिया और पूछा : "ऐ उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मेरा वोही ह़ाल है जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ देख रहे हैं, क्या आप नहीं देख रहे कि मैं सह़ीह़ व सालिम हूं और दुन्या मेरे साथ है जिसे मैं खींच रहा हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम क्या कुछ ले कर आए हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुमान था कि शायद ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ माले ग़नीमत वग़ैरा लाए होंगे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास मेरा थैला है जिस में अपना ज़ादे राह रखता हूं, एक पियाला है जिस में खाना खाता हूं और इसी से अपना सर और कपड़े वग़ैरा धोता हूं, एक पानी का बरतन है जिस में पानी पीता हूं और वुज़ू वग़ैरा करता हूं और एक लाठी है जिस पर टेक लगाता हूं और अगर कोई दुश्मन आ जाए तो इसी लाठी से उस का मुक़ाबला करता हूं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस के इलावा मेरे पास दुन्यावी मालो मताअ़ नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या तुम पैदल आए हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "क्या मुसल्मानों में से कोई ऐसा न था जो तुम्हें सुवारी देता ताकि तुम उस पर सुवार हो कर आते ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "नहीं, उन में से किसी ने मुझे कहा न ही मैं ने किसी से सुवाल किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह कितने बुरे लोग हैं जिन के पास से तुम आए हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ऐ उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! उन्हें बुरा न कहिये, मैं उन लोगों

को सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते छोड़ कर आया हूं, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने वाले हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम जिस माल की वुसूली के लिये भेजे गए थे वोह कहां है ? और तुम ने वहां रह कर क्या क्या काम सर अन्जाम दिये ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "आप मुझ से क्या पूछना चाहते हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "سُبْحَانَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! मैं जो पूछना चाहता हूं वोह बिल्कुल वाज़ेह़ है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे इस बात का ख़ौफ़ न होता कि मेरे न बताने से आप को ग़म होगा तो मैं हरगिज़ आप को न बताता, सुनिये ! जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे भेजा था तो वहां पहुंच कर मैं ने वहां के तमाम नेक लोगों को जम्अ़ किया और उन्हें माल जम्अ़ करने के लिये कहा। जब उन्हों ने माले ग़नीमत और जिज़्या वग़ैरा जम्अ़ कर लिया तो मैं ने उस माल को उस के मसारिफ़ (या'नी ख़र्च करने की जगहों) में ख़र्च कर दिया। अगर उस में कुछ बचता तो मैं यहां ज़रूर ले कर आता।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम यहां कुछ भी नहीं ले कर आए ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दोबारा वहां का ह़ाकिम बना कर भेजा जाता है इस के लिये अ़हद लिखो।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह सुना तो अ़र्ज़ की : "अब मैं येह काम न तो आप के लिये करूंगा न आप के बा'द किसी और के लिये, क्यूं कि इस काम में मैं अपने आप को गुनाहों से नहीं बचा सकता बल्कि मुझ से एक ख़त़ा भी सरज़द हुई है, मैं ने एक नसरानी को येह कह दिया था कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे रुस्वा करे ह़ालां कि वोह हमें जिज़्या दिया करता था और ज़िम्मी काफ़िर को अज़िय्यत देना मन्अ़ है लिहाज़ा मैं अब येह ओ़हदा क़बूल नहीं करूंगा।" फिर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इजाज़त चाही और अपने घर की त़रफ़ रवाना हो गए।

उन का घर मदीनए मुनव्वरह से काफ़ी दूर था। वोह पैदल ही घर की जानिब चल दिये। जब वोह चले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इन के बारे में तह़क़ीक़ करनी चाहिये।" लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ारिस नामी एक शख़्स को बुलाया और उसे एक सो दीनार दे कर फ़रमाया : "तुम ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाओ और वहां मेहमान बन कर रहो, अगर वहां दौलत के आसार देखो तो वापस आ जाना और अगर उन्हें तंगदस्ती और फ़क्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में पाओ तो येह दीनार उन्हें दे देना।"

जब वोह शख़्स वहां पहुंचा तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दीवार से टेक लगाए बैठे हैं और अपने कुर्ते से गर्दो ग़ुबार वग़ैरा साफ़ कर रहे हैं। वोह उन के पास गए और सलाम अ़र्ज़ किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप हमारे हां मेहमान हो जाइये।" लिहाज़ा वोह उन के हां बत़ौरे मेहमान ठहर गया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : "आप कहां से तशरीफ़ लाए हैं ?" उस ने कहा : "मैं मदीनए मुनव्वरह से आया हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "अमीरुल मुअमिनीन को किस ह़ाल में

छोड़ कर आए हो ?" जवाब दिया : "अच्छी ह़ालत में।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "क्या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजरिमों को सज़ा नहीं देते ?" उस ने कहा : "क्यूं नहीं। वोह ह़ुदूद क़ाइम फ़रमाते हैं और उन्हों ने तो अपने बेटे पर भी किसी ख़त़ा [1] पर ह़द क़ाइम फ़रमाई यहां तक कि वोह फ़ौत हो गए।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा, उन की मदद फ़रमा, बेशक वोह तुझ से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करते हैं।

वोह शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां तीन दिन मेहमान रहा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां जव की एक रोटी होती जो उसे खिला देते और ख़ुद भूके रहते। यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मशक़्क़त में पड़ गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत ज़ियादा परेशानी होने लगी। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से मा'ज़िरत करते हुए फ़रमाया : "हमें बहुत ज़ियादा परेशानी का सामना है, अगर आप मुनासिब समझे तो हम से रुख़्सत हो जाएं।" जब उस ने येह सुना तो दीनार निकाल कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश किये और कहा : "येह अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये भेजे हैं, इन्हें क़बूल फ़रमाइये और अपनी ज़रूरियात में इस्ति'माल कीजिये।" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुना तो एक ज़ोरदार चीख़ मारी और फ़रमाया : "मुझे इन की कुछ ह़ाजत नहीं, इन्हें वापस ले जाओ।" येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "आप इन्हें क़बूल कर लीजिये, अगर इन की ज़रूरत मह़सूस हो तो इस्ति'माल कर लेना वरना ह़ाजत मन्दों और फ़ु-क़रा में तक़्सीम फ़रमा देना।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस में इन्हें रख सकूं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने कुर्ते का नीचे वाला ह़िस्सा फाड़ कर दिया, और कहा : "इस में रख लीजिये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह दीनार ले कर उस कपड़े में रख लिये फिर घर से बाहर तशरीफ़ ले गए और तमाम दीनार शु-हदा के अक़्रिबा और फ़ु-क़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दिये। जब वापस घर आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक दीनार भी न था, दीनार लाने वाले का गुमान था कि शायद मुझे भी कुछ ह़िस्सा मिलेगा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब दीनार फ़ु-क़रा में तक़्सीम फ़रमा दिये थे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मेरा सलाम अ़र्ज़ करना।" फिर वोह शख़्स वहां से रवाना हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : "तुम ने वहां क्या देखा ?" अ़र्ज़ की : बहुत तंगदस्ती और फ़क़्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "उन्हों ने दीनारों का क्या किया ?" अ़र्ज़ की : "मुझे मा'लूम नहीं।"

1: उन की ख़त़ा येह थी कि उन्हों ने नबीज़ पी थी जिस से नशा हो गया था। फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल में है : "उन की जानिब शराब पीने और ज़िना करने की निस्बत ग़लत है, सह़ीह़ येह है कि उन्हों ने नबीज़ पी थी जिस के सबब नशा हो गया था तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन पर ह़द क़ाइम फ़रमाई, फिर वोह बीमार हो कर इन्तिक़ाल फ़रमा गए।"
(فتاوی فیض الرسول بحوالہ مجمع البحار، ج ۲،ص ۷۱۰)

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़ ख़त़ भेजा और उस में लिखा : "जैसे ही हमारा येह ख़त़ पहुंचे फ़ौरन हमारे पास चले आओ।" लिहाज़ा ख़त़ पा कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "आप ने दीनार कहां ख़र्च किये ?" बोले : "मैं ने जहां चाहा उन्हें ख़र्च किया, आप उन के मु-तअ़ल्लिक़ क्यूं पूछ रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें क़सम दे कर कहता हूं मुझे बताओ तुम ने वोह दीनार कहां ख़र्च किये ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने वोह दीनार अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लिये हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुश व ख़ुर्रम रखे, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को दुआ़एं देते रहे, फिर हुक्म फ़रमाया : "इन्हें छ मन गन्दुम और कुछ कपड़े दे दिये जाएं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर कहा : "मुझे गन्दुम की कोई ह़ाजत नहीं, मैं घर में दो साअ़ गन्दुम छोड़ कर आया हूं, जब वोह ख़त्म हो जाएगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें और अ़त़ा फ़रमाएगा।" पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गन्दुम क़बूल न फ़रमाई और कपड़े भी येह कह कर लिये कि फ़ुलां ग़रीब औ़रत को इन की ह़ाजत है, मैं येह कपड़े उसे दे दूंगा, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर की त़रफ़ रवाना हो गए और कुछ अ़र्सा बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया। (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन)

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के विसाल की ख़बर मिली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत सदमा हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की तदफ़ीन के लिये पैदल ही जन्नतुल बक़ीअ़ की त़रफ़ चल पड़े, बहुत से लोग भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न कर दिया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से कहा : "तुम अपनी अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार करो।" उन में से एक शख़्स बोला : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मेरी येह ख़्वाहिश है कि मेरे पास बहुत सा माल हो और मैं उस के ज़रीए़ ग़ुलामों को आज़ाद करवाऊं ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा नसीब हो।" दूसरे ने कहा : "मेरी येह ख़्वाहिश है कि मेरे पास बहुत सा माल हो जिसे मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर दूं।" एक और शख़्स ने कहा : "मेरी ख़्वाहिश है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे बहुत ज़ियादा क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाए ताकि मैं बीरे ज़मज़म से पानी निकाल कर हुज्जाज को सैराब करूं।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी तो येह ख़्वाहिश है कि **मुझे उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे लोग मिल जाएं जिन्हें मैं गवर्नर बनाऊं और मुसल्मानों के कामों का वाली बना दूं।**"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 2 : अहले ह़िम्स की चार शिकायात

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर बिन हु़ज़ैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़िम्स का आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िम्स तशरीफ़ ले गए तो आप ने अहले ह़िम्स से दर्याफ़्त फ़रमाया : "तुम ने अपने आ़मिल को कैसा पाया ?" तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ शिकायात कीं । (गवर्नरों और आ़मिलों की ब कसरत शिकायात करने की वजह से ह़िम्स को "कूफ़ए सुग़रा" कहा जाता है) उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "हमें अपने अमीर से चार शिकायात हैं :

(1) येह हमारे पास दिन चढ़े बहुत देर से तशरीफ़ लाते हैं ।

(2) येह रात को किसी की बात नहीं सुनते ।

(3) महीने में एक दिन ऐसा भी आता है कि उस दिन येह हमारे पास तशरीफ़ ही नहीं लाते ।

(4) कभी कभी इन पर बहुत ज़ियादा रन्जो ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है और येह बेहोश हो जाते हैं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर बिन हु़ज़ैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और तमाम लोगों को जम्अ़ किया, फिर दुआ़ फ़रमाई : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! आज इस मुआ़-मले में मेरे फ़ैसले को कमज़ोर न करना (या'नी मुझे सह़ीह़ फ़ैसला करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाना) ।" फिर लोगों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें इन के बारे में क्या शिकायात हैं ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "येह हमारे पास दिन चढ़े बहुत देर से तशरीफ़ लाते हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन हु़ज़ैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह शिकायत सुनी तो इर्शाद फ़रमाया : "मुझे येह बताते हुए शर्म आती है कि मैं क्यूं देर से आता हूं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे पास कोई ख़ादिम नहीं, मैं ख़ुद आटा पीसता हूं, फिर उसे गूंध कर रोटी पकाता हूं, इस के बा'द वुज़ू कर के इन के पास आ जाता हूं । मेरे देर से आने की येही वजह है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से पूछा : "और क्या शिकायत है ?" कहने लगे : "येह रात को हमारे मसाइल नहीं सुनते ।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ सई़द ! तुम्हारे पास इस शिकायत का क्या जवाब है ?" उन्हों ने कहा : "मैं ने दिन मख़्लूक़ के लिये ख़ास कर रखा है और रात को अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ होता हूं ।" फिर उन्हों ने तीसरी शिकायत करते हुए कहा : "हर महीने एक दिन ऐसा भी होता है कि येह हमारे पास तशरीफ़ ही नहीं लाते ।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ सई़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! तुम क्या कहते हो ?"अ़र्ज़ की :

"हु़ज़ूर ! मेरे पास कोई ख़ादिम नहीं, महीने में एक मर्तबा मैं अपने कपड़े धोता हूं। मेरे पास कोई दूसरा लिबास नहीं होता जिसे पहन कर इन के पास आऊं। फिर जब वोह कपड़े सूख जाते हैं तो उन्हें पहन कर इन के पास आ जाता हूं।" चौथी शिकायत करते हुए वोह लोग कहने लगे : "इन्हें कभी कभी शदीद दौरा पड़ता है और येह बेहोश हो जाते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ सई़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! इस शिकायत का जवाब दो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "इस्लाम की दौलत ह़ासिल होने से पहले मैं ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के एक सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैबुल अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मैदान में देखा था जिन्हें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने खजूर के दरख़्त से बांध रखा था और तीरों से उन का जिस्म छल्नी कर रहे थे, मैं भी उन लोगों में मौजूद था। फिर क़ुरैश उन से पूछने लगे : "क्या तू इस बात को पसन्द करता है कि तेरी जगह मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह सज़ा दी जाए ?" येह सुन कर उन सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो इस बात को भी पसन्द नहीं करता कि मैं घर में अपने अहले ख़ाना के साथ रहूं और मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई कांटा भी चुभे, मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरी हज़ारों जानें क़ुरबान :

तेरे नाम पर सर को क़ुरबान कर के तेरे सर से सदक़े उतारा करूं मैं
येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं (सामाने बख़्शिश)

इस के बा'द उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश किया, और या मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم या मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सदाएं बुलन्द कीं। अफ़्सोस ! वहां होते हुए भी मैं उन की कुछ मदद न कर सका (क्यूं कि आप उस वक़्त मुसल्मान न थे) शायद मेरा येह गुनाह कभी भी मुआ़फ़ न किया जाए। बस येह ख़याल आते ही मेरी ह़ालत ख़राब हो जाती है, और मुझ पर ग़शी त़ारी हो जाती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मेरी फ़िरासत को ज़ाएअ़ नहीं किया और मुझे ऐसी अ़ज़ीम हस्तियां अ़त़ा फ़रमाईं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक हज़ार दीनार देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "इन के ज़रीए़ अपनी ज़रूरियात पूरी कर लेना।" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीनार देखे, तो कहने लगी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने हमें ग़नी कर दिया।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "हमारे लिये ज़ियादा बेहतरी इसी में है कि हम येह तमाम दौलत उन लोगों को दे दें जो हम से ज़ियादा मोह़ताज हैं, क्या तू इस बात पर राज़ी है ?" वोह सब्रो शुक्र की पैकर बोली : "मैं राज़ी हूं।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम दीनार थैलियों में भरे और अपने घर के सब से अमीन

शख़्स को बुलाया और फ़रमाया : "येह थैली फुलां ख़ानदान की बेवाओं को दे दो, येह फुलां ख़ानदान के यतीम को, येह फुलां ख़ानदान के मिस्कीन को और येह फुलां ख़ानदान के ह़ाजत मन्द को दे दो।" इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारी रक़म तक़्सीम फ़रमा दी सिर्फ़ कुछ दीनार बाक़ी बचे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने पूछा : "क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे लिये ग़ुलाम नहीं ख़रीदेंगे ? जो माल बचा है उस से ग़ुलाम ख़रीद लेना चाहिये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर हम से ज़ियादा कोई मोह़ताज आ गया तो हम येह माल उस को दे देंगे।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 3 :

कुफ़्रो शिर्क की आंधियां और शम्ए ईमान

ह़ज़रते सय्यिदुना असद बिन ह़ारिसा सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल एक क़ाफ़िला किसी मुहाज़ पर रवाना फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन पर अमीर मुक़र्रर फ़रमाया, जब येह ह़ज़रात अ़स्फ़ान और मक्कए मुकर्रमा के दरमियान वाक़ेअ़ एक वादी में पहुंचे तो **क़बीला हज़ील** के कुछ लोगों को उन की ख़बर मिली, लिहाज़ा सो तीर अन्दाज़ों ने उन का तआ़क़ुब शुरूअ़ कर दिया, एक जगह सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان का येह क़ाफ़िला खाने के लिये ठहरा और वहां खजूरें वग़ैरा तनावुल फ़रमाईं, फिर आगे रवाना हो गए। जब येह लोग पीछा करते हुए उस मक़ाम पर पहुंचे और वहां खजूरों की गुठलियां देखीं तो आपस में कहने लगे : "येह तो मक्कए मुकर्रमा की खजूरों की गुठलियां हैं, उन्हें ढूंढो, वोह ज़रूर कहीं आस पास ही मौजूद होंगे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मह़सूस फ़रमाया कि हमारा पीछा किया जा रहा है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان को ले कर एक मैदान में आ गए जैसे ही येह मैदान में आए तो दुश्मनों ने उन्हें घेर लिया और कहा : "तुम सब अपने आप को हमारे ह़वाले कर दो, हम वा'दा करते हैं कि तुम्हें क़त्ल नहीं करेंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं हरगिज़ किसी काफ़िर के वा'दे का ए'तिबार नहीं करूंगा, हम अपने आप को तुम्हारे ह़वाले नहीं करेंगे।" जब दुश्मनों ने येह सुना तो उन पर तीरों की बारिश कर दी। ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ !

हमारी इस ह़ालत की ख़बर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंचा दे। अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्रूफ़े दुआ़ ही थे कि उन ज़ालिमों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीर मार मार कर शहीद कर दिया और इसी त़रह़ और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी शहीद करते रहे जब आख़िर में सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित और एक और सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाक़ी रह गए, तो उन्हों ने अपने आप को उन के ह़वाले कर दिया। कुफ़्फ़ार ने येह देख कर फ़ौरन उन से तलवारें छीन लीं और उन्हें घेरे में ले लिया और ज़दो कोब करने लगे। येह देख कर उन में से एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह तुम्हारी पहली बद अ़हदी है, अब मैं हरगिज़ तुम्हारे वा'दे पर ए'तिबार न करूंगा और तुम्हारे साथ न जाऊंगा, येह सुन कर कुफ़्फ़ार ने उन्हें घसीटना शुरूअ़ कर दिया उन्हों ने मुज़ा-ह़मत की और उन के साथ जाने से इन्कार किया तो ज़ालिमों ने उन्हें भी शहीद कर दिया, फिर वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्कए मुकर्रमा ले गए और उन्हें वहां फ़रोख़्त कर दिया।

येह वाक़िआ़ ग़ज़्वए बद्र के बा'द पेश आया। ग़ज़्वए बद्र में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ारिस बिन आ़मिर को क़त्ल किया था, चुनान्चे बनू ह़ारिस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़रीद लिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के लिये एक दिन मुक़र्रर किया ताकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर के ह़ारिस बिन आ़मिर के क़त्ल का बदला ले सकें। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ैद में डाल दिया गया। एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ारिस की लड़की से उस्तरा मांगा ताकि बाल वग़ैरा काटने के लिये उसे तेज़ करें। लड़की ने उस्तरा दे दिया।

थोड़ी देर बा'द उस लड़की का एक छोटा सा बच्चा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में बैठ गया, उस लड़की को येह बात मा'लूम न थी। जब वोह दोबारा उस त़रफ़ आई और उस ने देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में उस्तरा है और बच्चा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में बैठा हुवा है तो वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुई कि कहीं येह मेरे बच्चे को क़त्ल न कर दे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे ख़ौफ़ ज़दा देखा तो फ़रमाया, क्या तू इस बात से ख़ौफ़ ज़दा है कि मैं इसे क़त्ल कर दूंगा ? उस ने कहा : "हां।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ ऐसा नहीं करूंगा, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बच्चे को उस की त़रफ़ भेज दिया।" वोह लड़की कहा करती थी : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बेहतर कोई क़ैदी नहीं देखा।" मैं ने एक दिन देखा : "ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में अंगूर का एक ख़ोशा था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस में से तनावुल फ़रमा रहे थे ह़ालां कि उन दिनों मक्कए मुकर्रमा में कहीं भी अंगूर न थे, येह रिज़्क़ अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अ़त़ा फ़रमाया था, अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों को ऐसी ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है कि जहां का वह्मो गुमान भी नहीं होता।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के लिये ह़ुदूदे ह़रम से बाहर लाया गया तो उस मर्दे मुजाहिद को कुफ़्फ़ारे मक्का ने चारों त़रफ़ से घेर लिया और तमाशाई बन कर एक सच्चे

आ़शिक़े रसूल और रब्बुल आ़-लमीन की वह़दानियत का अ़लल ए'लान इज़्हार करने वाले मर्दे मोमिन के गिर्द जम्अ़ हो गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल न घबराए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पायए इस्तिक़्लाल में ज़र्रा बराबर भी कमी न आई बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में जलती हुई ईमान की शम्अ़ मज़ीद रोशन हो गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार से फ़रमाया : "मुझे दो रक्अ़त अदा कर लेने दो ताकि मैं अपने उस रब्बे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आख़िरी बार सज्दा रेज़ हो सकूं जिस के नाम पर मुझे शहादत मिल रही है, उन्हों ने इजाज़त दे दी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेड़ियां खोल दीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़िब्ला रू हो कर नमाज़ शुरूअ़ फ़रमा दी।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बड़े इत़्मीनान से नमाज़ अदा की फिर कुफ़्फ़ार से मुख़ात़िब हो कर इर्शाद फ़रमाया : "अगर मुझे इस बात का एह़सास न होता कि मेरी त़वील नमाज़ से शायद तुम येह समझने लगोगे कि मैं मौत के ख़ौफ़ से नमाज़ त़वील कर रहा हूं तो मैं बहुत ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ता और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ूब त़वील सज्दे करता। फिर उन ज़ालिमों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को खजूर के एक तने के साथ बांध दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में इस्तिग़ासा पेश किया और **या मुह़म्मदाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **या मुह़म्मदाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की सदाएं बुलन्द कीं,** फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ दुआ़ की : "ऐ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू इन सब को चुन चुन कर तबाह व बरबाद कर दे और इन में से किसी को भी बाक़ी न रख।" इस के बा'द अबू सरूआ़ बिन उ़क़्बा बिन ह़ारिस आगे बढ़ा और उस ज़ालिम ने एक सच्चे आ़शिक़े रसूल को बड़ी ही बे दर्दी से शहीद कर दिया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

गुलामाने मुह़म्मद जान देने से नहीं डरते
येह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवाह नहीं करते

(मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इस मर्दे मुजाहिद ने जान तो दे दी लेकिन शम्ए ईमान को कुफ़्रो शिर्क की आंधियों से मह़फ़ूज़ रखा, उन की शहादत हमारे लिये मश्अ़ले राह है, उन्हों ने वक़्ते शहादत भी नमाज़ न छोड़ी, बस दिल में येही आरज़ू मचल रही थी कि वक़्ते रुख़्सत भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सर झुका लूं और उस की इ़बादत कर लूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी उन के सदक़े सब्रो इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर 4 : क़ुरआन और नमाज़ का शैदाई

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان के मुजा-हदात और इबादात का ज़िक्र करते हुए शम्ए रिसालत के दो परवानों का वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ किसी गज़्वे में गए, वापसी पर हम पहाड़ी अ़लाक़े से गुज़रे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां क़ियाम का हुक्म फ़रमाया। सब सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان आराम की ख़ातिर वहां ठहर गए, अल्लाह के महबूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आज रात तुम में से कौन पहरा देगा ?" एक मुहाजिर और एक अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا खड़े हुए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह सआ़दत हम हासिल करना चाहते हैं, हमें क़बूल फ़रमा लीजिये।" चुनान्चे वोह दोनों सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इजाज़त पा कर पहरा देने के लिये तय्यार हो गए, दोनों ने मश्वरा किया और अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हम ऐसा करते हैं कि आधी रात हम में से एक पहरा देगा और दूसरा सो जाएगा फिर बक़िय्या आधी रात दूसरा पहरा देगा और पहला सो जाएगा, अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आप आराम फ़रमाएं, मैं जागता हूं फिर आप पहरा देना, पस मुहाजिर सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आराम फ़रमाने लगे और अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहरा देने के लिये तय्यार हो गए। कुछ देर के बा'द उन्हों ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी और सूरए कह्फ़ की क़िराअत करने लगे। दुश्मनों की त़रफ़ से एक शख़्स आया और उस ने पहाड़ी पर चढ़ कर देखा तो उसे एक शख़्स नमाज़ पढ़ता हुवा दिखाई दिया, उस ने कमान पर तीर चढ़ाया और निशाना बांध कर उस सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर तीर चला दिया, तीर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म में पैवस्त हो गया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई ह-र-कत न की और नमाज़ में मश्ग़ूल रहे उस ज़ालिम ने दूसरा तीर मारा, वोह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे अक़्दस में उतर गया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ न तोड़ी फिर उस ने तीसरा तीर मारा, वोह भी सीधा आया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी करता हुवा जिस्म में पैवस्त हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रुकूअ़ व सुजूद किये और नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द अपने रफ़ीक़ को जगाया। जब उस काफ़िर ने देखा कि यहां येह अकेला नहीं बल्कि इस के रु-फ़क़ा भी क़रीब ही मौजूद हैं तो वोह फ़ौरन भाग गया। मुहाजिर सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने रफ़ीक़ की येह ह़ालत देखी तो जल्दी जल्दी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म से तीर निकाले और पूछा : "जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर दुश्मन ने ह़म्ला किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे जगाया क्यूं नहीं ?" इस पर क़ुरआन व नमाज़ के शैदाई उस अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "मैं ने नमाज़ में एक सूरत शुरूअ़ की हुई थी मैं ने येह गवारा न किया कि सूरत को अधूरा छोड़ कर नमाज़ तोड़ डालूं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहरे की ज़िम्मादारी न दी होती तो मैं अपनी जान दे देता लेकिन सूरत को ज़रूर मुकम्मल करता लेकिन मुझे हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहरा देने का हुक्म फ़रमाया था इस लिये मेरी ज़िम्मादारी थी कि इस को अह़सन त़रीक़े से सर अन्जाम दूं। जब मैं ने देखा कि मैं बहुत ज़ियादा ज़ख़्मी

हो गया हूं तो इसी एहसासे ज़िम्मादारी की वजह से नमाज़ को मुख़्तसर कर दिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जगा दिया ताकि दुश्मन मज़ीद ह़म्ला न कर सके।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(سُبْحَانَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! क़ुरबान जाइये ! उन पाक हस्तियों को नमाज़ व क़ुरआन से कैसी मह़ब्बत व लगन थी कि जान की परवाह न की और नमाज़ में मश्ग़ूल रहे और क़ुरआन की तिलावत जारी रखी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के सदक़े हमें भी इ़बादत की ह़क़ीक़ी लज़्ज़त, क़ुरआन की मह़ब्बत और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा इ़श्क़ अ़ता फ़रमाए।)

اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

ह़िकायत नम्बर 5 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पाक दामनी

एक मर्तबा रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहीं सफ़र पर जा रहे थे कि रास्ते में एक यहूदी औ़रत मिली जो अपने मज़्हब की किताबों को ख़ूब जानती थी और वोह काहिना भी थी, उस का नाम "**फ़ातिमा बिन्ते मुर्र**" था, बहुत ज़ियादा ह़सीनो जमील और पारसा थी, लोग उस से शादी की ख़्वाहिश करते थे, हुस्न व ख़ूब सूरती में उस का बहुत चर्चा था, जब उस की नज़र आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर पड़ी तो उसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पेशानी में नूरे नुबुव्वत चमकता हुवा नज़र आया, वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़रीब आ कर कहने लगी : "ऐ नौ जवान ! अगर तू मुझ से अभी मुबाशरत कर ले तो मैं तुझे सो ऊंट दूंगी।" येह सुन कर इ़फ़्फ़त व ह़या के पैकर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "**मुझे ह़राम काम में पड़ने से मौत ज़ियादा अ़ज़ीज़ है** और ह़लाल काम तेरे पास नहीं या'नी तू मेरे लिये ह़लाल नहीं फिर मैं तेरी ख़्वाहिश कैसे पूरी कर सकता हूं।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वापस घर तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से सोह़बत फ़रमाई। चन्द दिनों के बा'द एक मर्तबा फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुलाक़ात उस औ़रत से हुई, उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरए अन्वर पर नूरे नुबुव्वत न पा कर पूछा : "तुम ने मुझ से जुदा होने के बा'द क्या किया ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं अपनी ज़ौजा के पास गया और उस से मुबाशरत की।" येह सुन कर वोह बोली : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं बदकारा नहीं लेकिन मैं ने तुम्हारे चेहरे पर नूरे नुबुव्वत देखा तो मैं ने चाहा कि वोह नूर मुझे मिल जाए मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कुछ और ही मन्ज़ूर था उस ने जहां चाहा उस नूर को रखा।" जब येह बात लोगों को मा'लूम हुई तो उन्हों ने उस औ़रत से पूछा : "क्या वाक़ेई अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तुझे क़बूल न किया, क्या तूने उसे अपनी त़रफ़ दा'वत दी थी ?" येह सुन कर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का तरजमा येह है :

मैं ने एक बिजली देखी जिस ने सियाह बादलों को भी जगमगा दिया, उस बिजली में ऐसा नूर था जो सारे माह़ोल को चौदहवीं के चांद की त़रह़ रोशन कर रहा था, मैं ने चाहा कि उस नूर को ह़ासिल कर लूं ताकि उस पर फ़ख़्र करती रहूं मगर हर पत्थर की रगड़ से आग पैदा नहीं होती मगर ऐ अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! वोह ज़ोहरी औ़रत (या'नी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) बड़ी नसीब वाली है जिस ने तेरे दोनों कपड़े ले लिये वोह क्या जाने कि उस ने कितनी अ़ज़ीम चीज़ ह़ासिल कर ली है। (या'नी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तुम से वोह शहज़ादा ह़ासिल कर लिया जिस के वुजूद पर दो चादरें हैं : एक हुकूमत की और दूसरी नुबुव्वत की) वोह औ़रत अक्सर येह अश्आ़र पढ़ा करती थी।

(इस वाक़िए़ से रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पाक दामनी का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि एक नौ जवान को ह़सीनो जमील मालदार औ़रत गुनाह की दा'वत दे और सिर्फ़ गुनाह की दा'वत ही नहीं बल्कि सो ऊंट भी साथ दे लेकिन फिर वोह ग़ैरत मन्द और इफ़्फ़त व ह़या का पैकर अपनी इ़ज़्ज़त को मह़फ़ूज़ रखने के लिये उस की त़रफ़ बिल्कुल भी तवज्जोह न दे और उस की दा'वत को ठुकरा दे, तो क्या येह अ़मल पाक दामनी, तक़्वा, परहेज़ गारी और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की एक आ'ला तरीन मिसाल नहीं ? यक़ीनन येह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बेहतरीन मिसाल है, ऐसे मर्दे मोमिन की पाक दामनी पर करोड़ों सलाम।

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने **"फ़तावा र-ज़विय्यह शरीफ़"** जिल्द 30 सफ़ह़ा 270 पर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शाफ़ेए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अक़्दस नक़्ल फ़रमाया, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे हमेशा पाक सुथरी पुश्तों से पाक रेह़्मों में मुन्तक़िल फ़रमाता रहा साफ़ सुथरा आरास्ता जब दो शाख़ें पैदा हुईं, मैं उन में बेहतर शाख़ में था।"**

(بحوالہ کنز العمال،ج۱۲، ص۱۹۲،الحدیث:۳۵۴۸۴)

سُبْحَانَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सादिक़ व मस्दूक़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कलाम बिल्कुल बरह़क़ है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन मुबारक हस्तियों के सदक़े हमें भी शर्मो ह़या की अ़ज़ीम ने'मत से मालामाल फ़रमाए।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 6 : फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا

ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हुवा तो मदीने की फ़ज़ा में रन्जो ग़म के आसार थे, हर शख़्स शिद्दते ग़म से निढाल था, हर आंख से अश्क रवां थे, सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان पर उसी त़रह़ परेशानी के आसार थे जैसे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त थे, सारा मदीना ग़म में डूबा हुवा था। फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ग़ुस्ल देने के बा'द कफ़न पहनाया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم तशरीफ़ लाए, और कहने लगे : आज के दिन नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हम से रुख़्सत हो गए। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास खड़े हो गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के औसाफ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बेहतरीन रफ़ीक़, अच्छे मुह़िब्ब, बा ए'तिमाद रफ़ीक़ और मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के राज़ दां थे। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मश्वरा फ़रमाया करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों में सब से पहले मोमिन, ईमान में सब से ज़ियादा मुख़्लिस, पुख़्ता यक़ीन रखने वाले और मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दीन के मुआ़-मलात में बहुत ज़ियादा सख़ी और अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा क़रीबी दोस्त थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सोह़बत सब से अच्छी थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मर्तबा सब से बुलन्द था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमारे लिये बेहतरीन वासित़ा थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही, दा'वत व तब्लीग़ का त़रीक़ा, शफ़्क़तें और अ़त़ाएं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत ज़ियादा ख़िदमत गुज़ार थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और इस्लाम की ख़िदमत की बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दीने मतीन और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ज़ियादा ख़िदमत की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत के शायाने शान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

जिस वक़्त लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ फ़रमाई, हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हर फ़रमान को ह़क़ व सच जाना और हर मुआ़-मले में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ फ़रमाई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में आप को सिद्दीक़ का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِہٖۤ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ (پارہ۲۴،الزمر:۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं।

इस आयत में صَدَّقَ بِہٖ से मुराद सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ या तमाम मुअमिनीन हैं।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने मज़ीद फ़रमाया : ऐ सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! जिस वक़्त लोगों ने बुख़्ल किया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सख़ावत की, लोगों ने मसाइब व आलाम में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ छोड़ दिया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा ब-र-कत से बहुत ज़ियादा फ़ैज़याब हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शान तो येह है कि, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ثانی اثنین का लक़ब मिला, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यारे ग़ार हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर सकीना नाज़िल फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत फ़रमाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ व अमीन और ख़लीफ़ए फ़िद्दीन थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़िलाफ़त का ह़क़ अदा किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुरतद्दों से जिहाद किया, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द लोगों के लिये सहारा बने, जब लोगों में उदासी और मायूसी फैलने लगी तो उस वक़्त भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ौसले बुलन्द रहे। लोगों ने अपने इस्लाम को छुपाया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ईमान का इज़्हार किया, जब लोगों में कमज़ोरी आई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन को तक़्विय्यत बख़्शी, उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई और उन्हें संभाला।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हमेशा नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ए बरह़क़ थे, मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ौसलों को पस्त न कर सके, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ार को ज़लील किया, बाग़ियों पर ख़ूब शिद्दत की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के लिये ग़ैज़ो ग़ज़ब का पहाड़ थे। लोगों ने दीनी उमूर में सुस्ती की लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ब ख़ुशी दीन पर अ़मल किया। लोगों ने ह़क़ बात से ख़ामोशी इख़्तियार की मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़लल ए'लान कलिमए ह़क़ कहा, जब लोग अंधेरों में भटक्ने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ात उन के लिये मिनारए नूर साबित हुई। उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ रुख़ किया और काम्याब हुए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सब से ज़ियादा ज़हीन व फ़तीन, आ'ला किरदार के मालिक, सच्चे, ख़ामोश त़बीअ़त, दूर अन्देश, अच्छी राय के मालिक, बहादुर और सब से ज़ियादा पाकीज़ा ख़स्लत थे।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब लोगों ने दीने इस्लाम से दूरी इख़्तियार की तो सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही ने इस्लाम क़बूल किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुसल्मानों के सरदार थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों पर मुश्फ़िक़ बाप की त़रह़ शफ़्क़तें फ़रमाईं, जिस बोझ से वोह लोग थक कर निढाल हो गए थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें सहारा देते हुए वोह बोझ अपने कन्धों पर लाद लिया। जब लोगों ने बे परवाई का मुज़ा-हरा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ौम की बाग डोर संभाली, जिस चीज़ से लोग बे

ख़बर थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उसे जानते थे और जब लोगों ने बे सब्री का मुज़ा-हरा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सब्र से काम लिया। जो चीज़ लोग त़लब करते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़त़ा फ़रमा देते। लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पैरवी करते रहे और काम्याबी की त़रफ़ बढ़ते रहे। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मश्वरों और ह़िक्मते अ़-मली की वजह से उन्हें ऐसी ऐसी काम्याबियां अ़त़ा हुईं जो उन लोगों के वहमो गुमान में भी न थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब और मोमिनों के लिये रह़मत, शफ़्क़त और मह़फ़ूज़ क़ल्आ़ थे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी मन्ज़िले मक़्सूद की त़रफ़ परवाज़ कर गए। और अपने मक़्सूद को पा लिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राय कभी ग़लत़ न हुई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कभी बुज़दिली का मुज़ा-हरा न किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत निडर थे, कभी भी न घबराते गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जज़्बों और हिम्मतों का ऐसा पहाड़ थे जिसे न तो आंधियां डगमगा सकीं न ही सख़्त गरज वाली बिज्लियां मु-तज़ल्ज़ल कर सकीं।''

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बिल्कुल ऐसे ही थे जैसे ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बदन के ए'तिबार से अगर्चे कमज़ोर थे लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन के मुआ़-मले में बहुत ज़ियादा क़वी व मज़्बूत़ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने आप को बहुत आ़जिज़ समझते, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का रुत्बा बहुत बुलन्द था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों की नज़रों में भी बहुत बा इ़ज़्ज़त व बा वक़ार थे।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ता'रीफ़ करते हुए मज़ीद फ़रमाया : ''आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कभी किसी को ऐब न लगाया, न किसी की ग़ीबत की और न ही कभी लालच किया। बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों पर बहुत ज़ियादा शफ़ीक़ व मेहरबान थे, कमज़ोर व ना तुवां लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक मह़बूब और इ़ज़्ज़त वाले होते, अगर किसी मालदार और त़ाक़त वर शख़्स पर उन का ह़क़ होता तो उन्हें ज़रूर उन का ह़क़ दिलवाते। त़ाक़त और शानो शौकत वालों से जब तक लोगों का ह़क़ न ले लेते वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक कमज़ोर होते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक अमीर व ग़रीब सब बराबर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक लोगों में सब से ज़ियादा मुक़र्रब व मह़बूब वोह था जो सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़ गार था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सिद्क़ व सच्चाई के पैकर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़ैसला अटल होता, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत मज़्बूत़ राय के मालिक और ह़लीम व बुर्दबार थे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हम सब से सब्क़त ले गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द वाले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुक़ाबला नहीं कर सकते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन सब को पीछे छोड़ दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंच गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बहुत अ़ज़ीम काम्याबी ह़ासिल हुई, (ऐ यारे ग़ार !) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस शान से अपने अस्ली वत़न की त़रफ़ कूच किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अ़-ज़मत के डंके आस्मानों में बज रहे हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जुदाई का ग़म सारी दुन्या को रुला रहा है। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن

हम हर ह़ाल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हर फ़ैसले पर राज़ी हैं, हर मुआ-मले में उस की इत़ाअ़त करने वाले हैं। ऐ सिद्दीक़े अक्बर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जुदाई का ग़म मुसल्मानों के लिये सब से बड़ा ग़म है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ात अहले इस्लाम के लिये इ़ज़्ज़त का बाइ़स बनी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुसल्मानों के लिये बहुत बड़ा सहारा और जाए पनाह थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आख़िरी आराम गाह अपने प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब में बनाई। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से अच्छा अज्र अ़त़ा फ़रमाए, और हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द सिराते़ मुस्तक़ीम पर साबित क़दम रखे। और गुमराही से बचाए।" (اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का कलाम ख़ामोशी से सुनते रहे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ामोशी इख़्तियार की तो लोगों ने ज़ारो क़ित़ार रोना शुरूअ़ कर दिया और सब ने ब यक ज़बान हो कर कहा, ऐ ह़ैदरे कर्रार ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिल्कुल सच फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिल्कुल सच फ़रमाया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो !)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 7 : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़म्ला किया गया उस दिन मैं वहीं मौजूद था। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नमाज़े फ़ज्र के लिय सफ़ें दुरुस्त करवा रहे थे। मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बिल्कुल क़रीब खड़ा था, हमारे दरमियान सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ह़ाइल थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सफ़ों के दरमियान से गुज़रते और फ़रमाते : अपनी सफ़ें दुरुस्त कर लो। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने देखा कि सफ़ें बिल्कुल सीधी हो चुकी हैं, नमाज़ियों के दरमियान बिल्कुल ख़ला नहीं रहा और सब के कन्धे मिले हुए हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आगे बढ़े और तक्बीरे तह़रीमा कही।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आ़दते करीमा थी कि सुब्ह़ की नमाज़ में अक्सर **सूरए यूसुफ़** और **सूरए नह़्ल** में से क़िराअत फ़रमाते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पहली रक्अ़त में कुछ ज़ियादा तिलावत फ़रमाते ताकि बा'द में आने वाले भी जमाअ़त में शामिल हो सकें, अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़ शुरूअ़ ही की थी

कि एक मजूसी गुलाम जो पहली सफ़ में छुप कर खड़ा था उस ने मौक़अ़ पाते ही एक दो धारी तेज़ ख़न्जर से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़म्ला कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सुनाई दी कि मुझे किसी कुत्ते ने क़त्ल कर दिया या काट लिया है वोह मजूसी गुलाम ह़म्ला करने के बा'द पीछे पलटा और भागते हुए तेरह नमाज़ियों पर ह़म्ला किया जिन में से सात शहीद हो गए, एक नमाज़ी ने आगे बढ़ कर उस पर कपड़ा डाला और उसे पकड़ लिया, जब उस बद बख़्त गुलाम ने देखा कि अब मैं पकड़ा जा चुका हूं, तो अपने ही ख़न्जर से ख़ुदकुशी कर ली, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़म्ला हुवा तो सफ़ों में दूर दूर खड़े अक्सर नमाज़ी इस ह़म्ले से बे ख़बर थे जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़िराअत न सुनी तो سُبْحَانَ اللّٰہِ سُبْحَانَ اللّٰہِ कहना शुरूअ़ कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आगे बढ़ कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई, अक्सर लोगों को नमाज़ के बा'द वाक़िए का इ़ल्म हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शदीद ज़ख़्मी हो चुके थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मा'लूम करो कि मुझे किस ने ज़ख़्मी किया है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बाहर गए, कुछ देर बा'द वापस आ कर बताया : "मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम (अबू लू लू फ़िरोज़) ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ह़म्ला किया है।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "वोही गुलाम जो लोहार था ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने जवाब दिया : "जी हां।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ग़ारत करे ! मेरी उस से कोई दुश्मनी नहीं थी, बल्कि मैं ने तो उसे नेकी की दा'वत दी थी, मैं तो उस के साथ भलाई का ख़्वाहां था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि मैं किसी मुसल्मान के हाथों ज़ख़्मी न हुवा।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को घर ले जाया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हम लोग भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर की त़रफ़ चल दिये। लोगों पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था। गोया इस से पहले कभी ऐसी परेशानी और मुसीबत से दो चार न हुए थे। लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तसल्ली देने लगे : "ह़ुज़ूर ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ परेशान न हों, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ख़्म जल्द ही ठीक हो जाएंगे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को खजूर की नबीज़ पिलाई गई लेकिन वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पेट से ज़ख़्मों के ज़रीए़ बाहर आ गई। फिर दूध पिलाया गया तो वोह भी ज़ख़्मों के रास्ते पेट से बाहर निकल आया, लोग समझ गए कि अब हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सोह़बत से ज़ियादा देर तक फ़ैज़याब न हो सकेंगे।

फिर लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ता'रीफ़ करना शुरूअ़ कर दी, एक नौ जवान आ कर कहने लगा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! आप को मुबारक हो कि अन्क़रीब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पहले रेह़लत फ़रमाने वाले दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मिला देगा। ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! आप को ख़िलाफ़त का मन्सब अ़त़ा किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़दलो इन्साफ़ से काम लिया,

आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ एक अच्छे ख़लीफ़ा और लोगों के ख़ैर ख़्वाह व मोह़सिन हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने येह सुन कर इर्शाद फ़रमाया : "मैं तो इस बात को पसन्द करता था कि मुझे ब क़द्रे किफ़ायत रिज़्क़ मिले, न कोई मेरा मक़रूज़ हो, न ही मैं किसी का मक़रूज़ होउं।" फिर वोह नौ जवान वापस जाने लगा तो उस का तहबन्द टख़्नों से नीचे था और ज़मीन पर लग रहा था। आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने लोगों से फ़रमाया : "उस नौ जवान को मेरे पास बुलाओ।" जब वोह आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने बड़ी ही शफ़क़त से फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! अपना कपड़ा टख़्नों से ऊंचा कर ले, बेशक इस में तेरे कपड़ों की पाकीज़गी और तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तेरा येह अ़मल तक़्वा और परहेज़ गारी के ज़ियादा क़रीब है।" (سُبۡحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! क़ुरबान जाइये उन पाकीज़ा हस्तियों के जज़्बए तब्लीग़ पर कि आख़िरी लम्ह़ात में भी नेकी की दा'वत देना तर्क न की और इस ह़ालत में भी ख़िलाफ़े शर-अ़ काम बरदाश्त न हो सका। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के सदक़े हमें भी जज़्बए तब्लीग़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم)

फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने अपने साह़िब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ से फ़रमाया : "ह़िसाब लगा कर बताओ, हम पर कितना क़र्ज़ है ?" उन्हों ने ह़िसाब लगा कर बताया : "तक़रीबन छियासी हज़ार (86,000) दिरहम।"

आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "अगर येह क़र्ज़ मेरे माल से अदा हो जाए तो अदा कर देना और अगर मेरा माल काफ़ी न हो तो **बनी अ़दी बिन का'ब** के माल से अदा करना अगर फिर भी ना काफ़ी हो तो क़ुरैश से सुवाल करना, इन के इ़लावा और किसी से सुवाल न करना।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने अपने साह़िब ज़ादे से फ़रमाया : "तुम उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہَا की बारगाह में चले जाओ और उन से अ़र्ज़ करो कि उ़मर बिन ख़त़्त़ाब इस बात की इजाज़त चाहता है कि उसे उस के साथियों के साथ दफ़्न किया जाए और ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब में जगह अ़ता फ़रमाई जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُمَا ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और सलाम अ़र्ज़ किया। आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہَا रो रही थीं, आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ आप को सलाम अ़र्ज़ कर रहे हैं और इस बात की इजाज़त चाहते हैं कि उन्हें उन के साथियों के क़ुर्ब में दफ़्न किया जाए।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہَا ने येह सुन कर इर्शाद फ़रमाया : "येह जगह तो मैं ने अपने लिये रखी थी लेकिन अब मैं येह जगह उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ को ईसार करती हूं, उन्हें जा कर येह ख़ुश ख़बरी सुना दो।" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہَا इजाज़त ले कर वापस तशरीफ़ लाए।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ को बताया गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُمَا आ गए हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "मुझे बिठा दो।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ को सहारा दे कर बिठा दिया गया। आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! क्या ख़बर लाए हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہ ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہَا ने आप

को इजाज़त अ़ता फ़रमा दी हे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खुश हो जाएं, जिस चीज़ को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पसन्द किया करते थे वोह आप को अ़ता कर दी गई है।'' येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''मुझे इस चीज़ से ज़ियादा और किसी चीज़ की फ़िक्र नहीं थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी पसन्दीदा चीज़ अ़ता कर दी गई है।''

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''जब मेरी रूह़ परवाज़ कर जाए तो मुझे उठा कर सरकारे अबदे क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस पर ले जाना, फिर बारगाहे नुबुव्वत में सलाम अ़र्ज़ करना और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ करना : ''उ़मर बिन ख़त्ताब अपने दोस्तों के साथ आराम की इजाज़त चाहता है, अगर वोह इजाज़त दे दें तो मुझे वहां दफ़्न कर देना और अगर इजाज़त न मिले तो मुझे आ़म मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्ना देना।''

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रूह़ ख़ालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिली तो हम लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ले गए, और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने हुजरए मुबा-रका से बाहर खड़े हो कर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सलाम अ़र्ज़ किया, और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुजरए मुबा-रका में दफ़्न करने की इजाज़त त़लब की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इजाज़त अ़ता फ़रमा दी, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहलू में दफ़्न कर दिया गया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

ह़िकायत नम्बर 8 : जन्नत की ख़ुश्बू

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मेरे चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **ग़ज़्वए बद्र** में न जा सके, जब उन से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने अफ़्सोस करते हुए फ़रमाया : ग़ज़्वए बद्र जो कि मुसल्मानों और कुफ़्फ़ार के दरमियान पहली जंग थी मैं उस में ह़ाज़िर न हो सका। अगर अब अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझे किसी ग़ज़्वे में शिर्कत का मौक़अ़ दिया तो तू देखेगा मैं किस बहादुरी से लड़ता हूं, फिर जब **ग़ज़्वए उहुद** का मौक़अ़ आया तो कुछ लोग भागने लगे, मेरे चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! इन भागने वालों में जो मुसल्मान हैं, मैं उन की त़रफ़ से मा'ज़िरत ख़्वाह हूं और जो मुशरिक हैं, मैं उन से बरी हूं।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तलवार ले कर मैदाने कारज़ार की त़रफ़ दीवाना वार बढ़े । रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मुलाक़ात हुई तो फ़रमाया : "ऐ सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! कहां जाते हो ? उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं **उहुद पहाड़** के क़रीब जन्नत की ख़ुश्बू मह़सूस कर रहा हूं (फिर येह कहते हुए आगे बढ़े) वाह जन्नत की हवा कैसी उ़म्दा, ख़ुश गवार और पाकीज़ा है ।" बार बार येही कलिमात दोहराते रहे (और लड़ते लड़ते शहीद हो गए) ।

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जैसा कारनामा उन्हों ने सर अन्जाम दिया हम ऐसा नहीं कर सकते, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ना'श मुबारक को ढूंडा गया तो हम ने उसे शहीदों में पाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जिस्मे मुबारक पर तीरों, तलवारों और नेज़ों के अस्सी (80) से ज़ाइद ज़ख़्म थे, और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आ'ज़ा जगह जगह से काट दिये गए थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पहचानना बहुत मुश्किल हो चुका था । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हमशीरा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को उंग्लियों के निशानात से पहचाना, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देख कर येह आयत पढ़ रहे थे :

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَا هَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ج (پ۲۱،الاحزاب:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था ।

(صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب قول اللّٰه:مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا......الخ، الحدیث ۲۸۰۵،ص۲۲۶)

(السنن الکبری للبیهقی،کتاب السیر، باب من تبرع بالتعرض للقتل.....الخ، الحدیث ۱۷۹۱۷،ج۹،ص۷۵-۷۶)

ह़िकायत नम्बर 9 : अ़ज़ीम मां के अ़ज़ीम बेटे

एक मर्तबा पथ्थर तोड़ने वाले चन्द मज़दूर ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! जिस क़दर मुसीबतों का हमें सामना है क्या हम से पहले लोग भी कभी ऐसी मुसीबतों से दो चार हुए ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने उन की येह बात सुन कर इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम अपनी मुसीबतों और अपने से साबिक़ा लोगों के मसाइब का मुवाज़ना करो तो तुम्हें उन के मसाइब के सामने अपनी मुसीबतें ऐसे मह़सूस होंगी जैसे आग के मुक़ाबले में धुवां (या'नी उन की मुसीबतें आग और तुम्हारी मुसीबतें धुवें की त़रह़ हैं) फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "बनी इस्राईल में एक औ़रत थी, जिस का नाम **सारह** था, उस के सात बेटे थे । जिस मुल्क में वोह रहती थी वहां का बादशाह

बड़ा ज़ालिम था। वोह लोगों को ज़बर दस्ती ख़िन्ज़ीर का गोश्त खिलाता, जो इन्कार करता उसे क़त्ल करवा देता, चुनान्चे उस औ़रत को भी उस के बेटों समेत बादशाह के सामने लाया गया, उस ज़ालिम बादशाह ने सब से बड़े लड़के को बुलवाया और कहा : "येह ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाओ।" उस मर्दे मुजाहिद ने जवाब दिया : **मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम की गई चीज़ को हरगिज़ नहीं खाऊंगा।"** बादशाह ने जब येह सुना तो हुक्म दिया कि इसे सख़्त तरीन सज़ा दी जाए, जल्लाद आगे बढ़ा और उस के हर हर उ़ज़्व को काट डाला और उसे शहीद कर दिया।

फिर ज़ालिम बादशाह ने उस से छोटे लड़के को बुलाया और उस के सामने भी ख़िन्ज़ीर का गोश्त रखते हुए कहा : "इसे खाओ।" उस ने भी जुरअते ईमानी का मुज़ा-हरा करते हुए जवाब दिया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम की गई अश्या कभी भी नहीं खाऊंगा, येह सुन कर ज़ालिम बादशाह आग बगूला हो गया और उस ने हुक्म दिया कि एक तांबे की देग में तेल डाल कर उसे आग पर रख दो, चुनान्चे ऐसा ही किया गया। जब तेल ख़ूब गर्म हो गया तो उस नौ जवान मुजाहिद को तेल में डाल दिया गया। इस त़रह़ उस ने भी जामे शहादत नोश कर लिया।" फिर बादशाह ने उस से छोटे को बुलाया और कहा : "येह गोश्त खाओ।" उस ने बादशाह से कहा : "तू ज़लील व कमज़ोर है, तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं, तू मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी बात पर हरगिज़ आमादा नहीं कर सकता, जो तेरे जी में आए तू कर ले, लेकिन मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या कभी भी नहीं खाऊंगा।" बादशाह येह सुन कर हंसने लगा और लोगों से कहने लगा : "क्या तुम जानते हो कि इस ने मुझे गाली क्यूं दी ?" इस ने येह सोच कर मुझे गाली दी है कि मैं गाली सुन कर तैश में आ जाऊंगा और फ़ौरन इसे क़त्ल करने का हुक्म दे दूंगा, इस त़रह़ येह आसानी से मौत के घाट उतर जाएगा, लेकिन मैं हरगिज़ ऐसा नहीं करूंगा। फिर उस ज़ालिम बादशाह ने हुक्म दिया कि इसे सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाए।

चुनान्चे ज़ालिम बादशाह के हुक्म पर पहले उस नौ जवान की गरदन की खाल काटी गई फिर उस के सर और चेहरे की खाल उतार ली गई। और इस त़रह़ उसे भी शहीद कर दिया गया। बादशाह ने इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ ज़ालिमाना अन्दाज़ में बाक़ी भाइयों को भी शहीद करवा दिया, आख़िर में सब से छोटा भाई बचा, बादशाह ने उस की वालिदा को बुलाया और कहा : "मैं तेरा भी येही ह़श्र करूंगा, अगर तू अपनी और अपने इस बेटे की सलामती चाहती है, तो इसे तन्हाई में ले जा कर समझा अगर येह एक लुक़्मा खाने पर भी राज़ी हो गया तो मैं तुम दोनों को छोड़ दूंगा। फिर तुम मन पसन्द ज़िन्दगी गुज़ारना।" उस औ़रत ने कहा : "ठीक है, मैं इसे समझाने की कोशिश करती हूं।" फिर वोह अपने बेटे को तन्हाई में ले गई और कहा : "ऐ मेरे लख़्ते जिगर ! क्या तू जानता है कि तेरे भाइयों में से हर एक पर मेरा एक ह़क़ है और तुझ पर मेरे दो ह़क़ हैं, वोह इस त़रह़ कि मैं ने तेरे भाइयों को दो दो साल दूध पिलाया था। तेरी पैदाइश से चन्द दिन क़ब्ल तेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया फिर जब तेरी विलादत हुई तो तू बहुत ज़ियादा कमज़ोर था। मुझे तुझ पर बड़ा तरस आया और मैं ने तेरी कमज़ोरी और तुझ से अपनी शदीद मह़ब्बत की वजह से तुझे

चार साल दूध पिलाया। मैं तुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस एह़सान का वासित़ा दे कर कहती हूं जो मैं ने तुझ पर किया कि तू हरगिज़ उस चीज़ को न खाना जिसे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने ह़राम किया है और बरोज़े क़ियामत अपने भाइयों से इस ह़ाल में न मिलना कि तू उन में से न हो।'' जब सआ़दत मन्द बेटे ने मां की येह बातें सुनीं तो कहा : ''मैं तो डर रहा था कि शायद आप मुझे ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने पर उभारेंगी लेकिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मुझे तुम जैसी अ़ज़ीम मां अ़त़ा फ़रमाई।''

फिर वोह औ़रत अपने बेटे को ले कर बादशाह के पास आई और कहा : ''येह लो, अब येह वोही करेगा जो मैं ने इस से कहा है।'' बादशाह बड़ा ख़ुश हुवा और उस की त़रफ़ ख़िन्ज़ीर का गोश्त बढ़ाते हुए कहा : ''येह लो, इस में से कुछ खा लो।'' येह सुन कर बहादुर नौ जवान ने जवाब दिया : ''ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ उस चीज़ को नहीं खाऊंगा जिसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़राम किया है।'' बादशाह को येह सुन कर बहुत ग़ुस्सा आया। चुनान्चे उस ज़ालिम ने उस मर्दे मुजाहिद को भी शहीद करवा दिया। इसी त़रह़ येह भी अपने भाइयों से जा मिला। फिर बादशाह ने उस अ़ज़ीम औ़रत से कहा : ''मेरा ख़याल है कि मुझे तेरे साथ भी वोही सुलूक करना पड़ेगा जो तेरे बेटों के साथ किया है। ऐ बुढ़िया ! तेरी हलाकत हो, तू सिर्फ़ एक लुक़्मा ही खा ले तो मैं तुझे मुंह मांगा इन्आ़म दूंगा, और जो तू कहेगी मैं वोही करूंगा, तू सिर्फ़ एक लुक़्मा खा ले, फिर ऐ़शो इ़श्रत से ज़िन्दगी गुज़ारना।'' येह सुन कर उस अ़ज़ीम मां ने जवाब दिया : ''ऐ ज़ालिम ! तूने मेरे बच्चों को मेरे सामने मार डाला, और अब तू येह चाहता है कि मैं तेरे कहने पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानी भी करूं, अपने बच्चों की मौत के बा'द मुझे ज़िन्दगी से कोई सरोकार नहीं। ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! तू जो कुछ कर सकता है कर ले मैं कभी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ह़राम कर्दा शै नहीं खाऊंगी।'' येह सुन कर उस सफ़्फ़ाक व ज़ालिम बादशाह ने उसे भी शहीद करवा दिया। इस त़रह़ उस अ़ज़ीम मां की रूह़ भी अपने अ़ज़ीम फ़रज़न्दों से जा मिली। (سُبْحٰنَ اللہِ عَزَّ وَجَلَّ ! उन सब ने एक एक कर के अपनी जानें तो दे दीं लेकिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न की)

(अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 10 : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ देख रहा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अक्सर रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरह का दौरा फ़रमाते ताकि अगर किसी को कोई ह़ाजत हो तो उसे पूरा करें, एक रात मैं भी उन के साथ था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ चलते चलते अचानक एक घर के पास रुक गए, अन्दर से एक औ़रत की आवाज़ आ रही थी : ''बेटी दूध में थोड़ा सा

पानी मिला दो।" लड़की येह सुन कर बोली : "अम्मी जान ! क्या आप को मा'लूम नहीं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क्या हुक्म जारी फ़रमाया है ?" उस की मां बोली : "बेटी ! हमारे ख़लीफ़ा ने क्या हुक्म जारी फ़रमाया है ?" लड़की ने कहा : "अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह ए'लान करवाया है कि कोई भी दूध में पानी न मिलाए।"

मां ने येह सुन कर कहा : "बेटी ! अब तो तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नहीं देख रहे, उन्हें क्या मा'लूम कि तुम ने दूध में पानी मिलाया है, जाओ और दूध में पानी मिला दो।" लड़की ने येह सुन कर कहा : "ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकती कि उन के सामने तो उन की फ़रमां बरदारी करूं और उन की ग़ैर मौजूदगी में उन की ना फ़रमानी करूं, इस वक़्त अगर्चे मुझे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नहीं देख रहे, लेकिन **मेरा रब عَزَّ وَجَلَّ तो मुझे देख रहा है,** मैं हरगिज़ दूध में पानी नहीं मिलाऊंगी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मां बेटी के दरमियान होने वाली तमाम गुफ़्त-गू सुन ली थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ अस्लम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! इस घर को अच्छी त़रह़ पहचान लो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सारी रात इसी त़रह़ गलियों में दौरा करते रहे, जब सुब्ह़ हुई तो मुझे अपने पास बुलाया और फ़रमाया : "ऐ अस्लम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! उस घर की त़रफ़ जाओ और मा'लूम करो कि यहां कौन कौन रहता है ? और येह भी मा'लूम करो कि वोह लड़की शादी शुदा है या कंवारी ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं उस घर की त़रफ़ गया और उन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल कीं तो पता चला कि उस घर में एक बेवा औ़रत और उस की बेटी रहती है, और उस की बेटी की अभी तक शादी नहीं हुई।" मा'लूमात ह़ासिल करने के बा'द मैं ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया और उन्हें सारी तफ़्सील बताई।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मेरे तमाम साह़िब ज़ादों को मेरे पास बुला कर लाओ।" जब सब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास जम्अ़ हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई शादी करना चाहता है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "हम तो शादी शुदा हैं।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खड़े हुए और अ़र्ज़ की : "अब्बा जान ! मैं ग़ैरे शादी शुदा हूं, मेरी शादी करा दीजिये।" चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस लड़की को अपने बेटे से शादी के लिये पैग़ाम भेजा जो उस ने ब ख़ुशी क़बूल कर लिया। इस त़रह़ ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शादी उस लड़की से हो गई और फिर उन के हां एक बेटी पैदा हुई जिस से ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत हुई।"

(अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 11 : एक रोटी की ब-र-कत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने तमाम बेटों को अपने पास बुला कर फ़रमाया : "मैं तुम्हें साहि़बुर्रग़ीफ़ (या'नी रोटी वाले) का क़िस्सा सुनाता हूं, इसे हमेशा याद रखना,

फिर फ़रमाया : "एक आ़बिद शख़्स अपनी झोंपड़ी में लोगों से अलग थलग इ़बादत किया करता था। वोह सत्तर साल तक उसी झोंपड़ी में रहा, इस अ़र्से में कभी भी उस ने इ़बादत को तर्क न किया और न ही कभी अपनी झोंपड़ी से बाहर आया। फिर एक दिन वोह झोंपड़ी से बाहर आया तो उसे शैत़ान ने एक औ़रत के फ़ित्ने में मुब्तला कर दिया, और वोह सात दिन या सात रातें उसी औ़रत के साथ रहा, सात दिन के बा'द जब उस की आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हटा तो वोह अपनी इस ह़-र-कत पर बहुत नादिम हुवा, और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में तौबा की, और वहां से रुख़्सत हो गया। वोह अपने इस फ़े'ल पर बहुत नादिम था, अब उस की येह ह़ालत थी कि हर हर क़दम पर नमाज़ पढ़ता और तौबा करता। फिर एक रात वोह ऐसी जगह पहुंचा जहां बारह मिस्कीन रहते थे। वोह बहुत ज़ियादा थका हुवा था, थकावट की वजह से वोह उन मिस्कीनों के क़रीब गिर पड़ा।

एक राहिब रोज़ाना उन बारह मिस्कीनों को एक एक रोटी देता था। जब वोह राहिब आया तो उस ने रोटी देना शुरूअ़ की और उस आ़बिद को भी मिस्कीन समझ कर एक रोटी दे दी, और उन बारह मिस्कीनों में से एक को रोटी न मिली तो उस ने राहिब से कहा : "आज आप ने मुझे रोटी क्यूं नहीं दी ?" राहिब ने जब येह सुना तो कहा : " मैं तो बारह की बारह रोटियां तक़्सीम कर चुका हूं।" फिर उस ने मिस्कीनों से मुख़ात़िब हो कर कहा : "क्या तुम में से किसी को दो रोटियां मिली हैं ?" सब ने कहा : "नहीं हमें तो सिर्फ़ एक एक ही मिली है।"

येह सुन कर राहिब ने उस शख़्स से कहा : "शायद तुम दोबारा रोटी लेना चाहते हो, जाओ आज के बा'द तुम्हें रोटी नहीं मिलेगी।"

जब इस आ़बिद ने येह सुना तो इसे उस मिस्कीन पर बड़ा तरस आया चुनान्चे उस ने वोह रोटी मिस्कीन को दे दी और ख़ुद भूका रहा और इसी भूक की ह़ालत में उस का इन्तिक़ाल हो गया।

जब उस की सत्तर साला इ़बादत और ग़फ़्लत में गुज़री हुई सात रातों का वज़्न किया गया, तो अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी में गुज़ारी हुई रातें उस की सत्तर साला इ़बादत पर ग़ालिब आ गईं। फिर जब उन सात रातों का मुवाज़ना उस रोटी से किया गया जो उस ने मिस्कीन को दी थी तो वोह रोटी उन रातों पर ग़ालिब आ गई और उस की मग़्फ़िरत कर दी गई।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से येही ह़िकायत इस त़रह़ मरवी है : "एक आ़बिद ने सत्तर साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, फिर उस ने एक फ़ाह़िशा औ़रत से गुनाह किया। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ कर दिये, (फिर जब उसे अपने गुनाह का एह़सास हुवा तो वोह

ताइब हो गया) कुछ दिनों के बा'द उसे ऐसी बीमारी लाहिक़ हुई कि वोह चलने फिरने से मा'ज़ूर हो गया। एक दिन उस ने देखा कि एक शख़्स रोटियां तक़्सीम कर रहा है गिरते पड़ते येह भी वहां पहुंचा और इस ने भी एक रोटी ह़ासिल कर ली। अभी उस ने रोटी खाना शुरूअ़ भी न की थी कि उसे एक मिस्कीन नज़र आया, चुनान्चे इस ने वोह रोटी मिस्कीन को दे दी और ख़ुद भूका ही रहा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस का येह अ़मल ऐसा मक़्बूल हुवा कि उस की मग़्फ़िरत कर दी गई और उसे सत्तर साला इ़बादत का सवाब भी लौटा दिया गया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 12 : आस्माने विलायत के आठ सितारे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ताबिई़ने किराम رَحِمَہُمَا اللہ تَعَالٰی में से आठ बुज़ुर्ग ऐसे अ़ज़ीम हैं गोया उन पर ज़ोह्दो तक़्वा की इन्तिहा हो गई।

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी, ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़यान, ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी, ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन यज़ीद, ह़ज़रते सय्यिदुना मस्रूक़ बिन अज्दअ़ और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अबू ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا के मु-तअ़ल्लिक़ बताया : "ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो बहुत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ते। शैत़ान इन को बहकाने के लिये सांप की शक्ल में आता और इन के जिस्म से लिपट जाता, फिर क़मीस में दाख़िल हो कर गरीबान से निकलता, लेकिन आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ न तो उस से ख़ौफ़ ज़दा होते, न ही उसे दूर करते बल्कि इन्तिहाई ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ से अपनी नमाज़ में मगन रहते।"

जब उन से कहा जाता : "आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सांप को अपने आप से दूर क्यूं नहीं करते ? क्या आप को उस से डर नहीं लगता ?" तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते : "मुझे इस बात से ह़या आती है कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और से डरूं।"

फिर किसी कहने वाले ने कहा :"आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जितनी मेह़नत व मशक़्क़त कर रहे हैं इस

के बिग़ैर भी तो जन्नत ह़ासिल की जा सकती है और इस के बिग़ैर भी जहन्नम की आग से बचा जा सकता है।" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तू ख़ूब मुजा-हदात करूंगा और दिन रात अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करूंगा। अगर नजात हो गई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से होगी, और ख़ुदा न ख़्वास्ता जहन्नम में गया तो अपनी मेह़नत व मशक़्क़त में कमी की वजह से जाऊंगा।"

फिर जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। लोगों ने पूछा : "हु़ज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इतना क्यूं रो रहे हैं ? क्या मौत का ख़ौफ़ आप को रुला रहा है ?" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं क्यूं न रोऊं, क्या मुझ से भी ज़ियादा कोई रोने का ह़क़ दार है ?" ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं न तो मौत के ख़ौफ़ से रो रहा हूं, न ही इस बात पर कि दुन्या मुझ से छूट रही है, बल्कि मुझे तो इस बात का ग़म है कि मेरी इ़बादत व रियाज़त, रातों का क़ियाम और सख़्त गर्मियों के रोज़े छूट जाएंगे, फिर कहने लगे : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! दुन्या में ग़म ही ग़म और मुसीबतें ही मुसीबतें हैं और आख़िरत में ह़िसाब व अ़ज़ाब की सख़्तियां फिर इन्सान को आराम व सुकून कैसे नसीब हो ?"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत बुलन्द मर्तबा बुज़ुर्ग थे। जब उन को फ़ालिज का मरज़ लाह़िक़ हुवा तो उन से कहा गया : "हु़ज़ूर ! अगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चाहें तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इ़लाज किया जा सकता है।" येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक इ़लाज ह़क़ है, लेकिन **आ़द व समूद** कैसी बड़ी बड़ी क़ौमें थीं, उन में बड़े बड़े माहिर त़बीब थे, और उन में बीमारियां भी थीं, अब न तो वोह त़बीब बाक़ी रहे न ही मरीज़।" इसी त़रह़ जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा जाता : "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लोगों को वा'ज़ो नसीह़त क्यूं नहीं करते ?" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जवाबन इर्शाद फ़रमाते : "अभी तो मुझे ख़ुद अपनी इस्लाह़ की ज़रूरत है, फिर मैं लोगों को कैसे नसीह़त करूं ? उन्हें कैसे उन के गुनाहों पर मलामत करूं ? बेशक लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दूसरों के गुनाहों के बारे में तो डरते हैं लेकिन अपने गुनाहों के बारे में उस से बे ख़ौफ़ हैं।"

जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा जाता : "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?" तो इर्शाद फ़रमाते : "हम ने सुब्ह़ इस ह़ाल में की, कि अपने आप को कमज़ोर और गुनाहगार पाया, हम अपने ह़िस्से का रिज़्क़ खाते हैं और अपनी मौत के इन्तिज़ार में हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی علیہما फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ को देखते तो **सूरए ह़ज** की आयते मुबा-रका का येह ह़िस्सा "وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِیْنَ" तिलावत करते और फ़रमाते : "ऐ रबीअ़ رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ ! अगर तुझे ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم देखते तो तुझ से बहुत ख़ुश होते ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ अक्सर अपने आप को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया करते : "ऐ रबीअ़ ! अपना ज़ादे राह बांध ले और सफ़रे आख़िरत की ख़ूब तय्यारी कर ले, और सब से पहले अपनी इस्लाह़ कर और अपने नफ़्स को ख़ूब नसीह़त कर ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ وسلَّم

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی علیہما फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ कभी भी किसी ऐसे शख़्स के पास न बैठते जो दुन्यावी बातों में मश्ग़ूल होता । एक मर्तबा आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ मस्जिद में गए तो देखा कि कुछ लोग एक जगह जम्अ़ हैं, आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ ने येह गुमान किया कि येह लोग ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये यहां जम्अ़ हैं । चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ उन के पास जा कर बैठ गए । वोह लोग आपस में बातें कर रहे थे, कोई कह रहा था : "मेरा ग़ुलाम फ़ुलां फ़ुलां जगह गया ।" कोई कह रहा था : "मैं ने ग़ुलाम को सफ़र का सामान मुहय्या कर दिया है ।" अल ग़रज़ इसी त़रह़ की दुन्यावी बातें उस मह़फ़िल में हो रही थीं ।

जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ ने उन की येह बातें सुनीं तो फ़रमाया : "سُبْحَانَ اللہِ عَزَّوَجَلَّ ! मेरा तो तुम्हारे मु-तअ़ल्लिक़ कुछ और ही गुमान था मगर तुम कुछ और निकले । मेरी और तुम्हारी मिसाल तो ऐसी ही है जैसे कोई शख़्स सर्दी के मौसिम में शदीद मूसला धार बारिश में भीग रहा हो फिर अचानक उसे एक बड़ी इमारत नज़र आई, जब वोह पनाह लेने के लिये उस में दाख़िल हुवा तो उसे मा'लूम हुवा कि इस बुलन्दो बाला इमारत पर तो छत ही नहीं, और इस इमारत से कोई फ़ाएदा ह़ासिल नहीं हो सकता ।"

मैं भी तुम्हारे पास इस लिये आया था कि "शायद तुम ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो, लेकिन तुम तो दुन्यादार लोग हो, तुम्हारे पास बैठना फ़ुज़ूल है, येह कहते हुए आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ वहां से तशरीफ़ ले गए ।"

जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ बुढ़ापे की वजह से बहुत ज़ियादा कमज़ोर हो गए तो लोगों ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! अपने मुजा-हदात में कुछ कमी कर दीजिये ।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारा इस बारे में क्या ख़याल है ? अगर तुम मुक़ाबले के लिये मैदान में घोड़ा भेजो तो क्या तुम उस के सुवार को हिदायत नहीं करोगे कि घोड़ा ख़ूब भगाना, और किसी को अपने से आगे न निकलने देना और जब तुम्हें वोह जीत का निशान नज़र आए जिस तक पहुंचना है

तो घोड़े की रफ़्तार मज़ीद तेज़ कर देना।"

लोगों ने कहा : "हुज़ूर ! हम ऐसी ही हिदायतें घुड़ सुवार को करते हैं।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं भी अपनी मौत के बिल्कुल क़रीब पहुंच चुका हूं, फिर मैं अपने अ़मल को कम कैसे कर दूं ? बल्कि अब तो मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की और भी ज़ियादा इबादत करनी चाहिये।" फिर फ़रमाया : "हर कोशिश करने वाले की कोई न कोई ग़ायत होती है, और हर शख़्स की ग़ायत मौत है। कुछ तो अपनी मौत तक पहुंच चुके और जो बाक़ी हैं अन्क़रीब वोह भी पहुंच जाएंगे, बिल आख़िर मरना सब ने है।"

मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है
सुन लगा कर कान आख़िर मौत है

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन यज़ीद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِید

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन यज़ीद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِید इबादत व रियाज़त में ख़ूब कोशिश फ़रमाते। बहुत ज़ियादा मुजा-हदात करते, ब कसरत रोज़े रखते यहां तक कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का रंग सब्ज़ी माइल और पीला पड़ गया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अस्सी (80) ह़ज किये।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه उन से कहते : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कब तक अपने जिस्म पर मशक़्क़त करते रहेंगे ?" येह सुन कर आप फ़रमाते : "मैं अपने जिस्म के आराम व सुकून के लिये ही तो येह सब कुछ कर रहा हूं।" फिर जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه रोने लगे। लोगों ने पूछा : "हुज़ूर ! येह रोना कैसा ?" फ़रमाया : "मैं क्यूं न रोऊं ? क्या मुझ से भी ज़ियादा कोई रोने का ह़क़ दार है ? (फिर आ़जिज़ी करते हुए इर्शाद फ़रमाया) ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श भी दिया तब भी मुझे अपने गुनाहों की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती रहेगी, अगर बन्दा कोई छोटे से छोटा गुनाह भी कर ले और उसे बख़्श भी दिया जाए लेकिन फिर भी उसे अपने गुनाह पर शरमिन्दगी ज़रूर रहेगी।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना मस्रूक़ बिन अज्दअ़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना मस्रूक़ बिन अज्दअ़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا फ़रमाती हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मस्रूक़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمَعْبُوْد नमाज़ में त़वील क़ियाम करते जिस की वजह से आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पिंडलियां सूज जातीं। जब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नमाज़ पढ़ते तो मैं उन के पीछे बैठ जाती, आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ह़ालत देख देख कर मुझे बहुत तरस आता और मैं रोती रहती।

फिर जब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोने लगे। जब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रोने का सबब पूछा गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं क्यूं न रोऊं, इस वक़्त मैं अपने आप को इस ह़ालत में पाता हूं कि मौत मेरे सामने है, मेरे एक त़रफ़ जन्नत और दूसरी त़रफ़ जहन्नम है, अब मा'लूम नहीं कि मौत मुझे जहन्नम की त़रफ़ धकेलती है या जन्नत में ले जाती है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

(6) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی से ज़ियादा ग़मगीन किसी भी शख़्स को नहीं देखा, आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हर वक़्त ग़मगीन व उदास रहते, और फ़रमाया करते : "हम हंसते हैं और हमें इस बात की फ़िक्र ही नहीं कि अगर (बरोज़े क़ियामत) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारे आ'माल के बारे में येह फ़रमा दिया : "जाओ तुम्हारा कोई भी अ़मल मेरे नज़्दीक मक़्बूल नहीं।" (तो हमारा क्या बनेगा)

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते : "ऐ इब्ने आदम ! तेरी हलाकत हो, क्या तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुक़ाबला करना चाहता है ? हां ! हां ! जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की गोया उस ने अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से जंग की। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सत्तर (70) **बद्री सह़ाबए किराम** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मिला हूं, उन में से अक्सर ऊन का लिबास पहनते, अगर तुम उन्हें देखते तो उन्हें दीवाना समझते, और अगर वोह तुम्हारे नेक व परहेज़ गार लोगों को देख लेते तो उन के मु-तअ़ल्लिक़ कहते : "इन के अन्दर कोई क़ाबिले ता'रीफ़ बात नहीं।" और अगर वोह तुम्हारे गुनाहगारों और बुरे लोगों को देख लेते तो उन के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते : "(ऐसा लगता है जैसे) इन लोगों का आख़िरत पर ईमान ही नहीं।"

फिर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने ऐसे लोग भी देखे जिन

के नज़्दीक दुन्या की वुक़्अ़त क़दमों की ख़ाक जितनी भी नहीं, और वोह ऐसे अ़ज़ीम लोग थे कि अगर उन में से किसी को रात के वक़्त थोड़ा सा भी खाना मिलता तो कहता : मैं अकेला येह सारा खाना नहीं खाऊंगा बल्कि इस में से कुछ ज़रूर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर स-दक़ा करूंगा, ह़ालां कि ख़ुद उन की ऐसी ह़ालत होती कि उन पर स-दक़ा किया जाए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इराक़ के गवर्नर बन कर आए तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी और इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को अपने पास बुलाया और उन्हें एक घर दे दिया जिस में आप दोनों ह़ज़रात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا तक़रीबन एक माह क़ियाम फ़रमा रहे। एक दिन सुब्ह़ सुब्ह़ एक ख़ादिम उन के पास आया और कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप से मुलाक़ात के लिये आ रहे हैं, इतनी ही देर में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी लाठी से सहारा लेते हुए वहां आ पहुंचे। आते ही सलाम किया और बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में आप दोनों ह़ज़रात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا के सामने बैठ गए।

फिर (गवर्नरे इराक़) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : "यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने मुझे एक ख़त़ भेजा है जिस में कुछ अह़काम नाफ़िज़ करने का हुक्म दिया गया है, और मैं जानता हूं कि इन अह़काम के नफ़ाज़ में हलाकत ही हलाकत है।" अब अगर मैं उस की इत़ाअ़त करता हूं तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानी होती है, और अगर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इत़ाअ़त करूं तो इस (या'नी यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक) के हुक्म से रू गरदानी होगी, अब आप ह़ज़रात ही कोई ऐसा त़रीक़ा बताएं कि मैं यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के हुक्म से ख़लासी पा जाऊं।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی से फ़रमाया : "ऐ अबू उ़मर ! तुम ही इन के सुवाल का जवाब दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने कुछ इस त़रह़ गुफ़्त-गू की : "ऐ इब्ने हुबैरा ! तुम्हारी सलामती इसी में है कि तुम यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक की बात मान लो।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस बारे में क्या फ़रमाते हैं ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने जो कुछ कहा वोह तो आप सुन चुके।" अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) इस बारे में क्या इर्शाद फ़रमाते हैं ?"

इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने हुबैरा ! अ़न्क़रीब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता तेरे पास आएगा, जो बहुत मज़बूत़ और इन्तिहाई करख़्त लहजे वाला होगा। वोह कभी भी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करता, फिर वोह तुझे तेरे ख़ूब सूरत व कुशादा मह़ल से निकाल कर इन्तिहाई तंग व तारीक क़ब्र में पहुंचा देगा। ऐ इब्ने हुबैरा ! अगर तू अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से

डरेगा तो वोह तुझे यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के शर से मह़फ़ूज़ रखेगा जब कि यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पकड़ से हरगिज़ नहीं बचा सकता।

ऐ इब्ने हुबैरा ! एक बात हमेशा याद रखना, अगर तूने यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक का कोई ऐसा हुक्म माना जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ना फ़रमानी हो तो कहीं ऐसा न हो कि इस की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर निगाहे ग़ज़ब डाले और मग़्फ़िरत के दरवाज़े तुझ पर बन्द कर दे।

मेरी मुलाक़ात इस उम्मत के साबिक़ा लोगों से भी हुई है। वोह दुन्या से इतने ही दूर भागते थे जितनी तुम इस की ख़्वाहिश करते हो, ह़ालां कि दुन्या उन के क़दमों में गिरती थी और तुम से कोसों दूर भागती है। ऐ इब्ने हुबैरा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस मक़ाम से तुझे डराया है, मैं भी तुझे उस मक़ाम से डराता हूं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

ذٰلِکَ لِمَنۡ خَافَ مَقَامِیۡ وَخَافَ وَعِیۡدِ۝

(پ۱۳،ابراہیم:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह इस लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे।

फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के शर से बचाएगा और अगर तू यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक की इत़ाअ़त और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के सिपुर्द कर देगा।''

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह नसीह़त आमोज़ बातें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आंखें भर आईं और वोह ज़ारो क़ित़ार रोते हुए वहां से चले गए।

दूसरे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हुबैरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन दोनों बुज़ुर्गों के लिये तह़ाइफ़ भिजवाए, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى की निस्बत ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के तह़ाइफ़ ज़ियादा थे (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى) मस्जिद की त़रफ़ रवाना हुए और (तह़ाइफ़ देख कर) कहा : ''ऐ लोगो ! तुम में से जो भी इस बात पर क़ादिर हो कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म को दुन्यादारों पर तरजीह़ दे तो उसे ज़रूर ऐसा ही करना चाहिये।

उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! ऐसा नहीं है कि जिस चीज़ को ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى जानते हैं, मैं उस से जाहिल हूं, बल्कि बात दर अस्ल येह है मैं ने इब्ने हुबैरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़ुशनूदी चाही लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस से दूर कर दिया (या'नी मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता)''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(7) ह़ज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के ह़ालात बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के ख़ानदान वालों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मजनून समझा हुवा था, और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये अपने घरों के क़रीब कमरा बनाया हुवा था। दो दो साल गुज़र जाते लेकिन घर वाले आप की त़रफ़ तवज्जोह न देते, न ही आप की ख़बर गीरी करते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी गुज़र बसर इस त़रह़ करते कि खजूर की गुठलियां चुनते, शाम को उन्हें बेचते और उन के बदले जो रद्दी खजूरें वग़ैरा मिलतीं उन्हें इफ़्तारी के लिये रख लेते (और उन्हें खा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते)

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ख़लीफ़ा बने, तो एक मर्तबा आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज के इज्तिमाअ़ में फ़रमाया : "ऐ लोगो ! खड़े हो जाओ।" हुक्म पाते ही तमाम लोग खड़े हो गए। फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "**क़बीला मुराद** के लोगों के इ़लावा सब बैठ जाएं।" (चन्द लोगों के इ़लावा) सब बैठ गए। फिर फ़रमाया : "तुम में से "**क़बीला क़रन**" के लोग खड़े रहें बाक़ी सब बैठ जाएं।" एक शख़्स के इ़लावा सब बैठ गए, येह खड़ा होने वाला शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی का चचा था।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन से पूछा : "क्या आप "**क़बीला क़रन**" के रहने वाले हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ! मैं "**क़रन**" ही का रहने वाला हूं।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पूछा : "क्या आप उवैस क़रनी को जानते हैं ?" उस ने जवाब दिया : "हुज़ूर ! आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जिस उवैस (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल कर रहे हैं वोह तो हमारे हां अह़मक़ मशहूर है, वोह इस लाइक़ कहां कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ उस के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार फ़रमाएं, वोह तो पागल व मजनून है।"

येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रोने लगे, और फ़रमाया : "मैं उस पर नहीं बल्कि तुम पर रो रहा हूं, मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उवैस क़रनी की शफ़ाअ़त से "**क़बीला रबीआ़**" और "**क़बीला मुज़िर**" के बराबर लोगों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث٤٣٢٣،ص٢٧٤٠)

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، باب ما ذکر فی اویس القرنی، الحدیث ١، ج٧،ص٥٣٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "जब मुझ तक येह ह़दीस पहुंची तो मैं फ़ौरन "**कूफ़ा**" की त़रफ़ रवाना हुवा। मेरा वहां जाने का सिर्फ़ येही मक़्सद था कि ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की ज़ियारत कर लूं, और उन की सोहबत से फ़ैज़याब हो सकूं। "**कूफ़ा**" पहुंच कर मैं उन्हें तलाश करता रहा। बिल आख़िर मैं ने उन्हें दो पहर के वक़्त नहरे फ़ुरात के किनारे वुज़ू करते

पाया। जो निशानियां मुझे उन के मु-तअ़ल्लिक़ बताई गई थीं उन की वजह से मैं ने उन्हें फ़ौरन पहचान लिया।

उन का रंग इन्तिहाई गन्दुमी, जिस्म दुबला पतला, सर गर्द आलूद और चेहरा इन्तिहाई बा रो'ब था। मैं ने क़रीब जा कर उन्हें सलाम किया। उन्हों ने सलाम का जवाब दिया, और मेरी त़रफ़ देखा। मैं ने फ़ौरन मुसा-फ़ह़े के लिये हाथ बढ़ाया लेकिन उन्हों ने मुसा-फ़ह़ा न किया। मैं ने कहा : "ऐ उवैस (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कैसे हैं ?" उन को इस ह़ालत में देख कर और उन से शदीद मह़ब्बत की वजह से मेरी आंखें भर आईं और मैं रोने लगा। मुझे रोता देख कर वोह भी रोने लगे।

और मुझ से फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई हरम बिन ह़यान (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कैसे हैं ?" और मेरे बारे में आप को किस ने बताया कि मैं यहां हूं ?" मैं ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तुम्हारी त़रफ़ राह दी है।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" और "سُبْحٰنَ اللّٰه" की सदाएं बुलन्द कीं, और फ़रमाया : "बेशक हमारे रब عَزَّوَجَلَّ का वा'दा ज़रूर पूरा होने वाला है।"

फिर मैं ने उन से पूछा : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मेरा और मेरे वालिद का नाम कैसे मा'लूम हुवा ?" ह़ालां कि आज से पहले न कभी मैं ने आप को देखा और न ही आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझे देखा।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मुझे मेरे अ़लीमो ख़बीर परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने ख़बर दी है। ऐ मेरे **भाई हरम बिन ह़यान** (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان) ! मेरी रूह़ तेरी रूह़ को उस वक़्त से जानती है जब (आ़लमे अरवाह़) में तमाम रूहों की आपस में मुलाक़ात हुई थी। बेशक बा'ज़ मोमिन अपने बा'ज़ मोमिन भाइयों को जानते हैं और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से एक दूसरे से उल्फ़त व मह़ब्बत रखते हैं, अगर्चे उन की ब ज़ाहिर मुलाक़ात न हुई हो, अगर्चे वोह एक दूसरे से बहुत दूर रहते हों।"

फिर मैं ने उन से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की कोई ह़दीस सुनाइये।" येह सुन कर उन्हों ने फ़रमाया : "मेरे आक़ा व मौला हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान ! मुझे न तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबते बा ब-र-कत नसीब हुई और न ही मैं उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो सका, हां ! इतना ज़रूर है कि मैं ने उन अ़ज़ीम हस्तियों की ज़ियारत की है जिन की नज़रें मेरे आक़ा व मौला हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वद्दुहा वाले चेहरे की ज़ियारत कर चुकी हैं। मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि अपने ऊपर इस बात का दरवाज़ा खोलूं कि लोग मुझे मुह़द्दिस, मुफ़्ती या रावी कहें, मैं लोगों से दूर रहना चाहता हूं और अपनी इस ह़ालत पर ख़ुश हूं।"

फिर मैं ने उन से कहा : "ऐ मेरे भाई ! मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलाम से कुछ तिलावत ही सुना

दीजिये, और मुझे नसीह़त फ़रमाइये ताकि मैं इसे याद रखूं । बेशक मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर मह़ब्बत करता हूं । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने मेरा हाथ पकड़ा, और اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ कर फ़रमाया : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का कलाम सब कलामों से अच्छा है । फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सूरए दुख़ान की येह आयतें तिलावत फ़रमाईं :

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ۝ مَا خَلَقْنٰهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ۝ (پ۲۵، الدخان: ۳۸ تا ۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने न बनाए आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है, खेल के त़ौर पर । हम ने इन्हें न बनाया मगर ह़क़ के साथ लेकिन इन में अक्सर जानते नहीं । बेशक फ़ैसले का दिन इन सब की मीआ़द है । जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की मदद होगी, मगर जिस पर अल्लाह रह़्म करे, बेशक वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है ।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह चन्द आयतें पढ़ीं फिर एक ज़ोरदार चीख़ मारी । मेरे गुमान के मुत़ाबिक़ शायद आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बेहोश हो गए थे, जब उन्हें कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाने लगे : ''ऐ इब्ने ह़यान ! तेरा बाप फ़ौत हो चुका, अन्क़रीब तू भी इस दुन्या से रुख़्सत हो जाएगा । फिर या तो तेरा ठिकाना जन्नत में होगा या फिर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में । (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को जहन्नम के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखे)

ऐ इब्ने ह़यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان ! तेरा बाप ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और तेरी मां ''ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़व्वा'' رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस दुन्याए फ़ानी से जा चुके, ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इस दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमा चुके, ख़लीफ़ए अव्वल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का भी इन्तिक़ाल हो गया, और मेरे भाई और दोस्त ख़लीफ़ए सानी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का भी विसाल हो गया । जब मैं ने येह सुना तो फ़ौरन कहा : ''हुज़ूर ! येह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه क्या फ़रमा रहे हैं ? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तो अभी ह़यात हैं, उन का अभी विसाल नहीं हुवा ।'' येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''मुझे मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने ख़बर दी है, और मेरा दिल इस बात की गवाही देता है कि उन का इन्तिक़ाल हो चुका है, अन्क़रीब मैं और आप भी इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो जाएंगे ।''

फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूदो

सलाम के गजरे निछावर किये और आहिस्ता आवाज़ में दुआएं मांगना शुरूअ़ कर दीं।

फिर फ़रमाया : "मेरी एक नसीहत हमेशा याद रखना। किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में तमाम अह्कामात आ चुके, तमाम अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए किराम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم اجمعین का इस दुन्या से कूच कर जाना हमारे लिये एक बहुत बड़ी नसीहत है। हमेशा मौत को याद रखना। अपने दिल को दुन्या में न उल्झाना और जब तू यहां से अपनी क़ौम के पास जाए तो उन्हें (अ़ज़ाबे आख़िरत) से ख़ूब डराना, और तमाम लोगों का ख़ैर ख़्वाह और नासेह़ बन कर रहना और कभी भी जमाअ़त से दूर न होना, अगर तू मुसल्मानों की बड़ी जमाअ़त से जुदा हो गया, तो तू दीन से जुदा हो जाएगा। तुझे मा'लूम भी न होगा और तू जहन्नम में दाख़िल हो जाएगा।"

फिर फ़रमाया :"**ऐ मेरे भाई !** तू अपने लिये भी दुआ़ करना और मुझे भी दुआओं में याद रखना। इस के बा'द आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करने लगे : "ऐ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हरम बिन हयान का गुमान है कि येह मुझ से तेरी ख़ातिर मह़ब्बत करता है और तेरी रिज़ा ही की ख़ातिर मुझ से मुलाक़ात करने आया है। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे जन्नत में इस की पहचान करा देना, और जन्नत में भी मेरी इस से मुलाक़ात करा देना। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जब तक येह दुन्या में बाक़ी रहे इस की हिफ़ाज़त फ़रमा, और इसे थोड़ी ही दुन्या पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे जो ने'मतें तूने अ़ता की हैं उन पर शुक्र करने वाला बना दे, हमारी त़रफ़ से इसे ख़ूब भलाई अ़ता फ़रमा।"

फिर मुझ से फ़रमाया : "ऐ इब्ने हयान ! तुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो और ख़ूब ब-र-कत हो, आज के बा'द मैं तुझ से मुलाक़ात न कर सकूंगा, बेशक मैं शोहरत को पसन्द नहीं करता। जब मैं लोगों के दरमियान होता हूं तो सख़्त परेशान और ग़मगीन रहता हूं। बस मुझे तो तन्हाई बहुत पसन्द है। आज के बा'द तू मेरे मु-तअ़ल्लिक़ किसी से न पूछना। और न ही मुझे तलाश करना। मैं हमेशा तुझे याद रखूंगा, अगर्चे तुम मुझे न देखोगे और मैं तुझे न देख सकूंगा। मेरे भाई ! तू मुझे याद रखना, मैं तुझे याद रखूंगा। मेरे लिये दुआ़ करते रहना। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो मैं तुझे याद रखूंगा और तेरे लिये दुआ़ करता रहूंगा। अब तू उस सम्त चला जा और मैं दूसरी त़रफ़ चला जाता हूं।"

येह कह कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक त़रफ़ चल दिये। मैं ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि कुछ दूर तक आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ चलूं, लेकिन आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्कार फ़रमा दिया, और हम दोनों रोते हुए एक दूसरे से जुदा हो गए।

मैं बार बार आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुड़ मुड़ कर देखता रहा, यहां तक कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक गली की त़रफ़ मुड़ गए। इस के बा'द मैं ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बहुत तलाश किया लेकिन आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझे न मिल सके, और न ही कोई ऐसा शख़्स मिला जो मुझे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर देता। हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर येह करम किया मुझे हफ़्ते में एक, दो मर्तबा ख़्वाब में आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ियारत ज़रूर होती है।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 13 : ह़ज़रते उवैस क़रनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی के फ़ज़ाइल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में से उन को ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है जो मुख़्लिस, परहेज़ गार और गुमनाम होते हैं, जिन के चेहरे गर्द आलूद, भूक की वजह से पेट कमर से मिले हुए, और बाल बिखरे हुए हों, अगर वोह उ-मरा के पास जाना चाहें तो उन्हें इजाज़त न मिले, अगर किसी मह़फ़िल में मौजूद न हों तो कोई उन के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल न करे, और अगर मौजूद हों तो कोई उन्हें अहम्मिय्यत न दे, अगर वोह किसी से मुलाक़ात करें तो लोग उन की मुलाक़ात से खुश न हों, अगर वोह बीमार हो जाएं तो कोई उन की इ़यादत न करे, और जब मर जाएं तो लोग उन के जनाज़े में शरीक न हों।

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐसे लोगों से हमारी मुलाक़ात कैसे हो सकती है ?" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उवैस क़रनी (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی) उन्ही लोगों में से हैं।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उवैस क़रनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی कौन है ?" मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "उस का क़द दरमियाना, सीना चौड़ा, रंग शदीद गन्दुमी, दाढ़ी सीने तक फैली हुई उस की निगाहें झुकी झुकी, अपने सीधे हाथ को उलटे हाथ पर रख कर क़ुरआने पाक की तिलावत करता है,ज़ारो क़ित़ार रोने वाला है, उस के पास दो चादरें हैं, एक बिछाने के लिये और एक ओढ़ने के लिये, दुन्या वालों में गुमनाम है, लेकिन आस्मानों में उस का ख़ूब चर्चा है। अगर वोह किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़रूर उस की क़सम को पूरा करेगा, उस के सीधे कन्धे के नीचे सफ़ेद निशान है। कल बरोज़े क़ियामत नेक लोगों से कहा जाएगा : "तुम लोग जन्नत में दाख़िल हो जाओ।" लेकिन उवैस क़रनी (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی) से कहा जाएगा : "तू ठहर जा और लोगों की सिफ़ारिश कर।" चुनान्चे वोह **क़बीला रबीआ़** और **मुज़िर** के लोगों की ता'दाद के बराबर गुनाहगारों की सिफ़ारिश करेगा।"

(حلیۃ الاولیاء، اویس بن عامر القرنی، الحدیث:١٥٦٧،ج٢، ص٩٦-٩٧)

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل اویس القرنی، الحدیث:٢٢٤(٢٥٤٢)، ص١١٢٣)

फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को मुख़ात़ब कर के इर्शाद फ़रमाया : "जब भी तुम दोनों की मुलाक़ात उवैस क़रनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی से हो, तो उस से अपने लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करवाना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मरसद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا तक़रीबन दस साल तक ह़ज़रते

सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى को तलाश करते रहे, लेकिन उन के बारे में मा'लूमात न हो सकीं। फिर जिस साल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का इन्तिक़ाल हुवा, उसी साल आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज के मौक़अ़ पर ज-बले **"अबू क़ैस"** पर खड़े हो कर लोगों से मुख़ातिब होते हुए बा आवाज़े बुलन्द फ़रमाया :

"ऐ यमन से आने वाले ह़ाजियो ! क्या तुम में कोई **उवैस** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नामी शख़्स मौजूद है ?" येह सुन कर एक बूढ़ा शख़्स खड़ा हुवा और अ़र्ज़ की : "हम नहीं जानते कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ किस **उवैस** के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ रहे हैं ? हां मेरा एक भाई है जिस का नाम **उवैस** है, लेकिन वोह तो बहुत ग़रीब और आ़म सा आदमी है, वोह इस क़ाबिल कहां कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ उस के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल करें, वोह तो हमारा चरवाहा है, और हमारे हां उस की कोई क़द्रो मन्ज़िलत नहीं।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ बहुत ग़मगीन हुए गोया कि ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के बारे में उस शख़्स का इस त़रह़ बोलना आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को सख़्त ना गवार गुज़रा हो।

थोड़ी देर बा'द आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस बूढ़े शख़्स से पूछा : "तेरा वोह भाई कहां है ? क्या वोह हमारे ह़रम में मौजूद है ?" उस ने जवाब दिया : "जी हां ! वोह ह़रम शरीफ़ ही में मौजूद है, शायद ! अब वोह मैदाने अ़-रफ़ात की त़रफ़ होगा।"

येह सुन कर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़ौरन मैदाने अ़-रफ़ात की त़रफ़ चल दिये। जब वहां पहुंचे तो देखा कि वोह आ़शिके़ सादिक़ एक दरख़्त के नीचे नमाज़ पढ़ रहा है, और ऊंट उस के इर्द गिर्द चर रहे हैं। येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا अपनी सुवारियों से नीचे उतर आए और उस आ़शिके़ सादिक़ के पास आ कर सलाम किया।

ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने नमाज़ को मुख़्तसर किया, और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर सलाम का जवाब दिया। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने पूछा : "ऐ शख़्स ! तू कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं अपनी क़ौम का मज़दूर और चरवाहा हूं।" आप दोनों ह़ज़रात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "हम तुझ से इन चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल नहीं कर रहे बल्कि येह बताएं, आप का नाम क्या है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं अ़ब्दुल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का बन्दा) हूं।" फ़रमाया : "येह तो हम भी जानते हैं कि ज़मीन व आस्मान में मौजूद तमाम लोग अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ही के बन्दे हैं, तुम अपना वोह नाम बताओ जो तुम्हारी मां ने रखा है ?"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने अ़र्ज़ की : "आप लोग मुझ से क्या चाहते हैं ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द निशानियां बताई हैं, हम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

की बातों और रंगत के मु-तअ़ल्लिक़ बताई हुई निशानियां तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه में देख चुके हैं, लेकिन हमारे ग़ैबदान आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक निशानी और बताई थी कि उस के सीधे कन्धे के नीचे एक सफ़ेद निशान होगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़रा अपना सीधा कन्धा हमें दिखा दें, अगर वोह निशान मौजूद हुवा तो हम पहचान जाएंगे कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही के मु-तअ़ल्लिक़ हमारे ग़ैबदान आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर दी है।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने अपने कन्धे से चादर हटाई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुबारक कन्धे के नीचे सफ़ेद निशान मौजूद था। निशान देखते ही दोनों सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی को बोसा दिया और फ़रमाया : "हम गवाही देते हैं कि तुम ही वोह उवैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हो जिस के मु-तअ़ल्लिक़ हमें नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी थी। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारे लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करें।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने अ़र्ज़ की : "मैं न तो सिर्फ़ अपने लिये इस्तिग़्फ़ार करता हूं और न ही किसी फ़र्दे मुअ़य्यन के लिये, बल्कि मैं तो हर मोमिन मर्द व औ़रत के लिये इस्तिग़्फ़ार करता हूं। आप लोगों पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मेरा ह़ाल तो मुन्कशिफ़ फ़रमा ही दिया है, अब आप अपने मु-तअ़ल्लिक़ बताएं कि "आप कौन हैं ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने येह सुन कर जवाब दिया : "येह अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं। और मैं अ़ली बिन अबू त़ालिब (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ) हूं।" येह सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی बा अदब खड़े हो गए और अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को सलामत रखे और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए।"

येह सुन कर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर भी रह़्म फ़रमाए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इसी मक़ाम पर मेरा इन्तिज़ार फ़रमाएं ताकि मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये मक्कए मुकर्रमा से कुछ चीज़ें ख़रीद लाऊं और कुछ कपड़े वग़ैरा ले आऊं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे यहीं मिलना।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! आप तकल्लुफ़ न फ़रमाएं, शायद ! आज के बा'द मैं आप की ज़ियारत न कर सकूंगा और वैसे भी मैं कपड़ों और पैसों का क्या करूंगा ? आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ देख ही रहे हैं कि मेरे पास ऊन की दो चादरें मौजूद हैं, मैं इन्हें फाड़ तो नहीं दूंगा। और येह देखें मेरे पास चमड़े के जूते हैं मैं इतनी जल्दी इन्हें बेकार थोड़ा ही करूंगा, बाक़ी रहा पैसों का मस्अला तो मेरी क़ौम मुझे ऊंटों की रखवाली और चराई के बदले चार दिरहम देते हैं जो मेरे लिये काफ़ी हैं।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! मेरे और आप के सामने एक तंग और दुश्वार गुज़ार घाटी है, जिसे सिर्फ़ कमज़ोर और ज़ईफ़ लोग ही उ़बूर कर सकेंगे पस हो सके तो अपने आप को हल्का कर लें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़मो करम फ़रमाए।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना दुर्रा ज़मीन पर मारा और फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! काश ! तुझे तेरी मां ने जना ही न होता, काश ! वोह बांझ होती।"

फिर फ़रमाया : "क्या कोई ऐसा है जो मुझ से ख़िलाफ़त को इस की ज़िम्मादारियों और इस के सवाब के साथ क़बूल कर ले।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! जो कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता है वोह इस (ख़िलाफ़त) से दूर भागता है (हमारी जुदाई का वक़्त आ गया है) अब आप एक त़रफ़ तशरीफ़ ले जाएं और मैं दूसरी त़रफ़ चला जाता हूं।" चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मक्कतुल मुकर्रमा की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ऊंटों को ले कर दूसरी त़रफ़ चल दिये, और ऊंटों को क़ौम के ह़वाले कर दिया।

फिर सब काम छोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए और बिल आख़िर अपने ख़ालिके़ ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 14 : बा हिम्मत व मुख़्लिस मुबल्लिग़

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सफ़्वान बिन अल हतम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा (यमन के गवर्नर) **यूसुफ़ बिन उ़मर** ने मुझे इ़राक़ के एक वफ़्द के साथ ख़लीफ़ा हश्शाम बिन अ़ब्दुल मलिक के पास भेजा, जब मैं वहां पहुंचा तो देखा कि ख़लीफ़ा हश्शाम बिन अ़ब्दुल मलिक अपने लश्कर, अहलो इ़याल, ख़ादिमों और ग़ुलामों के साथ सैरो सियाह़त के लिये रवाना हो रहा है। चुनान्चे मैं भी उस सफ़र में लश्कर के साथ शामिल हो गया। ख़लीफ़ा ने एक ऐसी वादी में लश्कर के पड़ाव का हुक्म दिया जो निहायत वसीअ़ व अ़रीज़, ख़ूब सूरत और साफ़ सुथरी थी। मौसिमे बहार में वहां कई बारिशें हो चुकी थीं जिस की वजह से वादी फूलों और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नबातात से आरास्ता व पैरास्ता थी। वोह वादी ऐसी ख़ूब सूरत और दिल को लुभाने वाली थी कि उसे देखते ही वहां क़ियाम करने को जी चाहता था और वैसे भी वोह हर ए'तिबार से क़ियाम के लिये मोज़ूं थी। वहां की मिट्टी ऐसी थी जैसे काफ़ूर की डलियां, और वहां के ढेले ऐसे साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ थे कि अगर उन्हें उठा कर फेंका जाए तो हाथ बिल्कुल गर्द आलूद न हों। वहां ख़लीफ़ा के लिये वोह रेशमी ख़ैमे नस्ब किये गए जिन्हें यूसुफ़ बिन उ़मर ने यमन से भिजवाया था, फिर उन ख़ैमों में सुर्ख़ रेशम के चार बिस्तर लगाए गए और ऐसे ही सुर्ख़ रेशमी तकिये उन पर रखे गए।

तमाम इन्तिज़ामात के बा'द जब मह़फ़िल सज गई और तमाम लोग अपनी अपनी निशस्तों पर बैठ गए, तो मैं ने सर उठा कर ख़लीफ़ा की त़रफ़ देखा। उस की नज़र भी मुझ पर पड़ गई, उस के देखने का अन्दाज़ ऐसा था गोया वोह कह रहा हो : "बोलो ! क्या बोलना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर अपनी रह़मतें नाज़िल फ़रमाए। और आप को ने'मतों पर शुक्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और उमूरे ख़िलाफ़त में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सीधी राह पर रखे। और आप का अन्जाम ऐसा फ़रमाए जो क़ाबिले ता'रीफ़ हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को येह ने'मतें इस लिये दी हैं ताकि आप इन के ज़रीए तक़्वा इख़्तियार करें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को ब कस्रत पाकीज़ा ने'मतें अ़त़ा की हैं, इन में कोई कदूरत (या'नी मैल) नहीं। और ऐसी ने'मतें अ़त़ा की हैं जिन में ख़ुशियां हैं, ग़म नहीं।

आप मुसल्मानों के लिये एक क़ाबिले ए'तिमाद ख़लीफ़ा हैं और आप इन के लिये ख़ुशी और सुरूर का बाइ़स हैं। जब इन्हें कोई मुसीबत दरपेश होती है तो वोह आप ही की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं, और हर मुश्किल के वक़्त आप इन के लिये जाए पनाह हैं, ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे आप पर फ़िदा करे, जब मुझे आप की हम नशीनी और ज़ियारत का मौक़अ़ मिल ही गया है तो अब मेरा ह़क़ बनता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप पर जो ने'मतें निछावर फ़रमाई हैं और जो जो कमालात अ़त़ा किये हैं, मैं आप को उन की याद दिहानी कराऊं और आप को इन ने'मतों पर शुक्र करने की तरग़ीब दिलाऊं। इस का सब से बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि मैं आप को साबिक़ा बादशाहों के क़िस्से सुनाऊं, क्या आप की त़रफ़ से मुझे इस बात की इजाज़त है ? येह सुन कर ख़लीफ़ा हश्शाम बिन अ़ब्दुल मलिक सीधा हो गया, सब तकिये एक त़रफ़ रख दिये और कहा : "अब मुझे साबिक़ा बादशाहों के ह़ालात बताओ।"

मैं ने कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! साबिक़ा बादशाहों में एक बादशाह था। वोह भी सैरो सियाह़त के लिये ऐसे ही मौसिम में निकला जैसा अब मौसिम है, उस साल भी ख़ूब बारिशें हुई थीं। ज़मीन फूलों और नबातात से मुज़य्यन हो गई थी। जब उस बादशाह ने उन तमाम ने'मतों, अपने मालो मताअ़, ख़ुद्दाम और लश्कर की त़रफ़ नज़र की तो बड़े फ़ख़्र से कहने लगा : "जैसी ने'मतें मेरे पास हैं क्या किसी और को भी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मतें मिली हैं ?" उस वक़्त उस के लश्कर में एक ह़क़ गो मर्दे मुजाहिद भी मौजूद था। उस ने बड़े दिलैराना अन्दाज़ में कहा : "ऐ बादशाह ! तूने एक बहुत बड़े अम्र के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया है। अगर इजाज़त हो तो मैं इस का जवाब दूं ?"

बादशाह ने कहा : "हां तुम जवाब दो।" चुनान्चे उस मर्दे मुजाहिद ने फ़रमाया : "ऐ बादशाह ! येह जो ने'मतें तुम्हारे पास मौजूद हैं क्या येह तमाम की तमाम हमेशा तुम्हारे पास रहेंगी ? क्या इन में कमी वाक़ेअ न होगी ? क्या येह तुझे बत़ौरे मीरास नहीं पहुंचीं ?क्या तुझ से ज़ाइल हो कर येह तेरे बा'द वालों को न मिल जाएंगी ?"

जब बादशाह ने उस **बा हिम्मत व मुख़्लिस मुबल्लिग़** की ह़क़ीक़त पर मब्नी गुफ़्त-गू सुनी तो कहने

लगा : "ऐ नौ जवान ! तूने जो बातें कीं वोह बिल्कुल बरह़क़ हैं, क्यूं कि इन ने'मतों में कमी भी हो जाएगी। और जिस त़रह़ येह मुझे मीरास में मिली हैं उसी त़रह़ मेरे मरने के बा'द मेरे वु-रसा को मिल जाएंगी।"

येह सुन कर उस बा हिम्मत मुबल्लिग़ ने कहा : "ऐ बादशाह ! जब येह सब बातें ह़क़ हैं तो फिर इन मा'मूली ने'मतों पर फ़ख़्र करना एक तअ़ज्जुब ख़ैज़ बात नहीं ? ऐ बादशाह ! येह ने'मतें तेरे पास बहुत कम अ़र्सा रहेंगी, और जब तू इस दुन्या से जाएगा तो ख़ाली हाथ जाएगा। और कल बरोज़े क़ियामत तुझ से इन तमाम ने'मतों का ह़िसाब लिया जाएगा (और येह इन्तिहाई सख़्त अम्र है) फिर भी इस दुन्याए फ़ानी में तेरा दिल क्यूं कर लगा हुवा है ?"

दीन का दर्द रखने वाले मुबल्लिग़ की येह बातें बादशाह के दिल में तासीर का तीर बन कर पैवस्त हो गईं। उस की आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हट गया, और उस ने बे चैन हो कर कहा : "ऐ नौ जवान ! फिर तुम ही मुझे बताओ कि मैं इन मसाइब से नजात पा कर किस त़रह़ अपने मक़्सदे अस्ली तक पहुंच सकता हूं ?" इस पर उस ख़ैर ख़्वाह मुबल्लिग़ ने कहा : "ऐ बादशाह ! तेरे लिये नजात के दो रास्ते हैं : एक तो येह है कि तू अपनी बादशाहत क़ाइम रख। और हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त कर, तमाम फ़ैसले शरीअ़त के मुत़ाबिक़ कर, अदलो इन्साफ़ से काम ले। ख़ुशी व ग़मी, तंगी और फ़राख़ी हर ह़ाल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर। दूसरी सूरत येह है कि तू ताजो तख़्त छोड़ कर दरवेशी लिबास इख़्तियार कर ले, और किसी पहाड़ के दामन में गोशा नशीन हो कर अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो जा। तेरी नजात के येही दो रास्ते हैं तू जिस को चाहे इख़्तियार कर ले।" बादशाह ने कहा : "ऐ नौ जवान ! कल मेरे पास आना, आज रात मैं ग़ौर करूंगा, कि कौन सा रास्ता इख़्तियार करूं। अगर मैं ने बादशाहत वाला रास्ता इख़्तियार किया तो मैं तुझे अपना वज़ीर बनाऊंगा। और हर मुआ़-मले में तेरी इत़ाअ़त करूंगा, कभी भी तेरी ना फ़रमानी न करूंगा।"

और अगर बादशाहत छोड़ कर गोशा नशीनी इख़्तियार करूंगा तो तू मेरे साथ मेरा रफ़ीक़ बन कर रहना। मैं तेरी हर बात मानूंगा। इतना कहने के बा'द बादशाह अपने ख़ैमे की त़रफ़ चला गया।

सुब्ह़ के वक़्त जब वोह मुख़्लिस मुबल्लिग़ बादशाह के पास गया तो उस ने देखा कि बादशाह ने शाही ताज और शाही लिबास उतार कर फ़क़ीरों वाला लिबास पहना हुवा है। उस बादशाह ने पुख़्ता इरादा कर लिया था कि ख़ल्वत में रह कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करूंगा। चुनान्चे वोह ताजो तख़्त और दुन्या की रंगीनियों को छोड़ कर उस मुख़्लिस मुबल्लिग़ के साथ जंगल की त़रफ़ चला गया। और वोह दोनों आख़िरी वक़्त तक वहीं एक पहाड़ पर अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहे।"

बनू तमीम के मशहूर शाइ़र "**अ़दी बिन ज़ैदुल इ़यादी अल मुरादी**" ने उन की शान में चन्द

अश्आ़र कहे, जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है :

तरजमा : (1)...... ऐ ज़माने को गाली देने वाले ! क्या तू हर चीज़ में कामिल, और हर ऐब से बरी है।

(2)...... या तूने ज़माने से पुख़्ता अ़हद ले रखा है ? या तू जाहिल और मग़रूर है ?

(3)...... क्या कोई ऐसा शख़्स भी है जिसे मौत ने छोड़ दिया हो ? या कोई ऐसा शख़्स है जो (तुझे) मौत से बचा ले ?

(4)...... कहां है किस्रा, फ़ारस के बादशाह और उन से पहले के बादशाह ? अबू सासान और साबूर कहां गए ?

(5)...... बहुत शानो शौकत वाले बादशाह और रूमी बादशाह कहां हैं ? उन में से कोई एक भी तो बाक़ी न रहा।

(6)...... वोह बादशाह कहां है जिस ने एक मह़ल बनाया जिस के एक जानिब से दरियाए **दजला** और दूसरी जानिब से दरियाए **"ह़ल्बूर"** बहता था।

(7)...... और उस ने मह़ल को संगे मरमर से आरास्ता किया और उसे मुख़्तलिफ़ रंगों से मुज़य्यन किया और उस में ऐसे बाग़ात लगाए जिन में परिन्दों के घोंसले थे। (या'नी बाग़ में हर वक़्त परिन्दे चहचहाते रहते थे)

(8)...... मौत ने उसे भी न छोड़ा और उस की बादशाहत जाती रही और वोह अ़ज़ीमुश्शान मह़ल भी वीरान हो गया।

(9)...... ख़ूरनक़ के बादशाह ने जब एक दिन ग़ौरो फ़िक्र किया (तो उसे हिदायत की राह मिली) लिहाज़ा हिदायत पाने के लिये ग़ौरो फ़िक्र ज़रूरी है।

(10)...... जब उस ने अपनी ह़ालत पर ग़ौर किया और उन कसीर ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र किया जो उसे अ़ता की गई और जब उस ने वसीअ़ व अ़रीज़ समुन्दर को इ़ब्रत की निगाह से देखा।

(11)...... तो उस का दिल डर गया। और कहा कि ऐसी ज़िन्दगी पर क्या इतराना और क्या ग़ुरूर करना जो मौत की त़रफ़ ले जा रही है।

(12)...... बिल आख़िर उसे हुकूमत, काम्याबी और सरदारी के बा'द क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सफ़्वान बिन अल हतम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم की ज़बानी ख़ूरनक़ के बादशाह का वाक़िआ़ सुन कर ख़लीफ़ा हश्शाम बिन अ़ब्दुल मलिक रोने लगा। और इतना रोया कि उस की दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई। और उस का इमामा भी आंसूओं से भीग गया। फिर ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया : "तमाम ख़ेमे उखाड़ दिये जाएं और तमाम बिस्तर उठा लिये जाएं और तमाम लश्कर फ़ौरन मह़ल की त़रफ़ रवाना हो जाए।"

चुनान्चे ख़लीफ़ा अपने सारे लश्कर को ले कर रोता हुवा मह़ल की त़रफ़ रवाना हो गया। वहां पहुंच कर उस ने (तमाम उमूरे मम्लिकत अपने भाइयों के सिपुर्द किये और ख़ुद) मह़ल का एक कोना संभाल लिया। और तमाम दुन्यावी आसाइशों को छोड़ कर अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया। जब उस के अहले ख़ाना और ख़ुद्दाम वग़ैरा ने ख़लीफ़ा की येह ह़ालत देखी तो वोह सब के सब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सफ़्वान बिन अल हतम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के पास आए, और कहन लगे : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अमीरुल मुअमिनीन की क्या ह़ालत कर दी है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस की तमाम लज़्ज़ात ख़त्म कर दी हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बातें सुन कर उस ने सैरो सियाह़त को भी तर्क कर दिया है।"

तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम सब मुझ से दूर हो जाओ, बेशक मैं ने अपने परवर्द

गार عَزَّوَجَلَّ से वा'दा किया है कि "जब भी मैं किसी बादशाह से मिलूंगा तो उसे नेकी की दा'वत दूंगा और बुरी बातों से मन्अ़ करूंगा। और उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद ज़रूर दिलाऊंगा।" (चुनान्चे ख़लीफ़ा को नसीह़त कर के मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किया हुवा अपना वा'दा पूरा किया है, कोई बुरा काम नहीं किया)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

ह़िकायत नम्बर 15 : जिस दिन क़दम फिसल रहे होंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَھَّاب की ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید को नसीह़त

फ़ज़्ल बिन रबीअ़ का बयान है : "जब ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید ह़ज अदा करने के लिये मक्कतुल मुकर्रमा आए, तो उन दिनों मैं अपने घर ही में मौजूद था। अचानक मुझे इत्तिलाअ़ मिली कि हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید मेरे पास तशरीफ़ ला रहे हैं। इत्तिलाअ़ मिलते ही मैं फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्यूं ज़ह़मत फ़रमाई, मुझे पैग़ाम भिजवा दिया होता मैं ख़ुद ही ह़ाज़िर हो जाता।"

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने रबीअ़ ! मेरे दिल में एक बात खटक रही है, तुम जल्दी से मुझे किसी ऐसे बुज़ुर्ग के पास ले चलो जो मेरी मुश्किल को आसान कर दे, क्या तुम्हारी नज़र में कोई ऐसा शख़्स है ?" मैं ने कहा : "जी हां ! ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मक्कए मुकर्रमा में मौजूद हैं।" ख़लीफ़ा ने कहा : "मुझे फ़ौरन उन के पास ले चलो।"

चुनान्चे हम उन के घर पहुंचे और मैं ने दरवाज़ा खट-खटाया। अन्दर से आवाज़ आई : "कौन है ?" मैं ने कहा : "ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید तशरीफ़ लाए हैं। जल्दी से ह़ाज़िरे ख़िदमत हो जाओ। हारूनुर्रशीद का नाम सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़ौरन बाहर आए और कहा : "हुज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तक्लीफ़ क्यूं की ? मुझे हुक्म नामा भेजा होता मैं ख़ुद ही ह़ाज़िर हो जाता।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए। हम जिस मक़्सद के लिये आए हैं उस के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ इर्शाद फ़रमाइये।" फिर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید ने उन के सामने अपना मस्अला पेश किया और देर तक उन से बातें करते रहे।

फिर उन से पूछा : "क्या आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर किसी का क़र्ज़ है ?" कहा : "जी हां ! मैं मक़रूज़ हूं।" ख़लीफ़ा ने फ़रमाया : "ऐ अ़ब्बास ! इन का क़र्ज़ अदा कर देना।" फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझे ले कर वहां से आगे चल दिये और फ़रमाया : "मैं इन से मुत़्मइन नहीं हुवा, मुझे किसी और बुज़ुर्ग के पास ले चलो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इब्ने हुमाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان के पास चलते हैं।" फ़रमाया : "जल्दी करो, चुनान्चे हम उन के घर पहुंचे और दरवाज़ा खट-खटाया, अन्दर से आवाज़ आई : "कौन है ?" मैं ने कहा : "जल्दी बाहर तशरीफ़ लाइये, ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मिलने आए हैं।" येह सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इब्ने हुमाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان बाहर तशरीफ़ लाए, और कहने लगे : "हुज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्यूं ज़ह़मत फ़रमाई, मुझे पैग़ाम भेजा होता मैं ख़ुद ह़ाज़िर हो जाता।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, हम आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक मक़्सद ले कर ह़ाज़िर हुए हैं, हमारी परेशानी दूर फ़रमा दीजिये।"

फिर ख़लीफ़ा ने उन के सामने अपना मस्अला पेश किया, और कुछ देर उन से बातें करते रहे। फिर फ़रमाया : क्या तुम पर किसी का क़र्ज़ है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "जी हां।" ख़लीफ़ा ने कहा : "ऐ अ़ब्बास ! इन का क़र्ज़ अदा कर देना।" येह कह कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आगे बढ़े, और मुझ से फ़रमाने लगे : "इन के पास आने से भी मेरा मस्अला ह़ल नहीं हुवा, ऐ इब्ने रबीअ़ ! मुझे किसी बहुत कामिल बुज़ुर्ग की बारगाह में ले चलो।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अब हम ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में चलते हैं।" (वहां आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मस्अला ज़रूर ह़ल हो जाएगा) ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید ने फ़रमाया : "ठीक है, उन्हीं की बारगाह में चलते हैं।"

चुनान्चे हम उन के घर पहुंचे देखा तो वोह नमाज़ में मश्ग़ूल थे और बार बार क़ुरआने पाक की किसी आयत को पढ़ रहे थे। मैं ने दरवाज़े पर दस्तक दी, अन्दर से पूछा गया : "कौन है ?" मैं ने कहा : "हुज़ूर बाहर तशरीफ़ लाएं, ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मिलना चाहते हैं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : "मुझे अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से क्या ग़रज़ ? और उन्हें मुझ से क्या काम है ?" मैं ने कहा : "سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! क्या आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर अमीर की इत़ाअ़त वाजिब नहीं ? क्या आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ह़दीसे पाक नहीं सुनी कि "**मोमिन के लिये येह जाइज़ नहीं कि अपने आप को ज़िल्लत में डाले।**"

(جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب لا یتعرض من البلاء لما لا یطیق، الحدیث:۲۲۵٤،ص۱۸۷۹)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नीचे तशरीफ़ ले आए और चराग़ बुझा दिया फिर कमरे के एक कोने में जा कर छुप गए। हम कमरे में दाख़िल हुए और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ढूंडने लगे। अचानक ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید की हथेली आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म से लगी। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाने लगे : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! आप की हथेली कितनी नर्म व नाज़ुक है, ऐ काश ! येह जहन्नम की आग से बच जाए।" येह सुन कर मैं ने दिल में कहा : "आज आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ूब वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाएंगे और अमीरुल

मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ के मु-तअ़ल्लिक़) ख़ूब खुल कर बात करेंगे।"

फिर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! हम आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में एक मस्अला ले कर हाज़िर हुए हैं, ख़ुदारा ! हमारा मस्अला हल फ़रमा दीजिये ताकि मेरे बे क़रार दिल को क़रार आ जाए।"

तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ख़लीफ़ा बने तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब क़ुर्ज़ी और ह़ज़रते सय्यिदुना रजाअ बिन ह़यात رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی को अपने पास बुलाया और उन से कहने लगे : "मैं तो इस ख़िलाफ़त की वजह से सख़्त मुसीबत में गरिफ़्तार हो गया हूं, मुझे उमूरे ख़िलाफ़त के बारे में कुछ मश्वरा दीजिये।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! देखिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने ख़िलाफ़त को मुसीबत समझा लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और आप के साथी इसे ने'मत समझते हैं।"

ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! जब सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने उन ह़ज़रात से मश्वरा लिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बचना चाहता है तो मुसल्मानों में से जो बुज़ुर्ग हैं, उन की इ़ज़्ज़त अपने बाप की त़रह़ कर, और जो दरमियानी उ़म्र के हैं उन्हें अपने भाइयों की त़रह़ जान, और जो तुझ से उ़म्र में छोटे हैं उन्हें अपनी औलाद की त़रह़ समझ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना रजाअ बिन ह़यात رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ! अगर तू अ़ज़ाबे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से बचना चाहता है तो मुसल्मानों से मह़ब्बत कर, और उन के लिये भी वोही पसन्द कर जो अपने लिये पसन्द करता है तो दुन्या व आख़िरत में मामून रहेगा।"

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب ने फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़ा ! मैं भी तुझे समझा रहा हूं और मैं तेरे बारे में उस दिन की सख़्ती से शदीद ख़ौफ़ ज़दा हूं "**जिस दिन क़दम फिसल रहे होंगे**।" ज़रा सोच ! क्या वहां तुझे कोई मश्वरा देने वाला होगा ? क्या वहां तेरे वज़ीर, मुशीर तेरा साथ देंगे ?

न बेली हो सके भाई, न बेटा बाप ते माई
तू क्यूं फिरता है सौदाई, अ़मल ने काम आना है

येह सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد इतना रोए कि उन पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने कहा : "हुज़ूर ! ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर कुछ नर्मी फ़रमाइये।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ रबीअ़ ! मैं इन पर नर्मी ही तो कर रहा हूं जभी तो ऐसी बातें की हैं। ऐ इब्ने रबीअ़ ! ह़क़ीक़त तो येह है कि तू और तेरे दोस्तों ने तो ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बरबाद कर दिया है।"

जब ख़लीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, मुझे कुछ और नसीह़त फ़रमाइये।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! मुझे ख़बर पहुंची है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز के एक गवर्नर ने शिकायत की तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे ख़त़ भेजा जिस में लिखा था :

"मैं तुझे जहन्नमियों की उस शदीद बे चैनी व बे आरामी से डराता हूं जो हमेशा हमेशा के लिये होगी। ख़बरदार ! ऐसे कामों से कोसों दूर भागना जो तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से दूर कर दें। याद रख ! आख़िरी लम्ह़ात में उम्मीदें ख़त्म हो जाएंगी।"

जब उस गवर्नर ने येह ख़त़ पढ़ा तो फ़ौरन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز की त़रफ़ चल दिया। जब वोह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास पहुंचा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से पूछा : "तुझे किस चीज़ ने यहां आने पर मजबूर किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़त़ ने मेरा दिल पारह पारह कर दिया है, अब मैं कभी भी गवर्नर का ओ़हदा क़बूल नहीं करूंगा यहां तक कि मुझे मौत आ जाए।" येह सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे, और फ़रमाया : "ऐ फु़ज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, मज़ीद कुछ नसीह़त फ़रमाइये।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! जब हमारे प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे किसी शहर का ह़ाकिम बना दें तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक अमारत (या'नी हुकूमत) ह़सरत व नदामत है, अगर तुझ से हो सके तो कभी भी (किसी पर) अमीर न बनना।"

(سنن النسائی، کتاب آداب القضاۃ، باب النھی عن مسألۃ الامارۃ، الحدیث:۵۳۸۷، ص۲۴۳۱)

(حلیۃ الاولیاء، الفضیل بن عیاض، الحدیث:۱۱۵۳۶، ج۸، ص۱۰۹)

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد येह सुन कर फिर रोने लगे, और अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, मज़ीद कुछ इर्शाद फ़रमाएं।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ ह़सीनो जमील चेहरे वाले ! याद रख ! कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से मख़्लूक़ के बारे में सुवाल करेगा। अगर तू चाहता है कि तेरा येह ख़ूब सूरत चेहरा जहन्नम की आग से बच जाए तो कभी भी सुब्ह़ या शाम इस ह़ाल में न करना कि तेरे दिल में किसी मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ कीना या अ़दावत हो। बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की कि वोह कीना परवर है तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा।"** (حلیۃ الاولیاء، الفضیل بن عیاض، الحدیث۱۱۵۳۶، ج۸، ص۱۱۰)

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد रोने लगे, और अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

पर किसी का कोई क़र्ज़ वगै़रा है ?" तो आप ने फ़रमाया : "जी हां ! मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर क़र्ज़ है, लेकिन उस ने अभी तक मेरा मुहा-सबा न किया।" अगर उस ने मुझ से सुवाल कर लिया या मेरा हिसाब ले लिया तो मेरे लिये हलाकत होगी, और अगर मुझे जवाब देने की तौफ़ीक़ न दी गई तो मेरी तबाही व बरबादी है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "हुज़ूर ! मेरी मुराद येह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर किसी बन्दे का तो कोई क़र्ज़ वगै़रा नहीं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस का हुक्म नहीं दिया। बेशक मुझे तो येह हुक्म दिया गया है कि मैं उस की इताअ़त करूं, और उस का मुख़्लिस बन्दा बन जाऊं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ0 مَاۤ اُرِیْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَاۤ اُرِیْدُ اَنْ یُّطْعِمُوْنِ0 اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِیْنُ0 (پ۲۷،الذّٰریٰت:۵۶تا۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही इसी लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें। मैं उन से कुछ रिज़्क़ नहीं मांगता और न येह चाहता हूं कि वोह मुझे खाना दें। बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला, कुव्वत वाला, कुदरत वाला है।

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नसीहत आमोज़ बातें सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد के दिल पर बहुत गहरा असर हुवा। फिर ख़लीफ़ा ने एक हज़ार दीनार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को देते हुए अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! येह हक़ीर सा नज़राना क़बूल फ़रमा लें, इन्हें अपने अहलो इयाल पर ख़र्च करें और इन के ज़रीए इबादत पर कुव्वत हासिल करें।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे नजात का रास्ता बता रहा हूं और तू इस के सिले में मुझे येह (हक़ीर) दौलत दे रहा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे नेक आ'माल की तौफ़ीक़ दे, और तुझे सलामत रखे।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश हो गए, और हम से कोई कलाम न फ़रमाया। फ़ज़्ल बिन रबीअ़ कहते हैं : "फिर हम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास से उठ कर चले आए। जब हम दरवाज़े पर पहुंचे तो ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्बास ! जब भी मुझे किसी के पास ले जाना चाहो तो ऐसे ही पाकबाज़ औलियाए किराम के पास ले जाया करो, बेशक ऐसे लोग ही मुसल्मानों के सरदार हैं।"

अभी हम येह बातें कर ही रहे थे कि हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अहले ख़ाना में से एक औ़रत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आई और कहने लगी : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जानते ही हैं कि हम कैसे तंग हालात में ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। अगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वोह रक़म क़बूल कर लेते तो इस में क्या हरज था, हमारे हालात कुछ बेहतर हो जाते।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस औ़रत से फ़रमाया : "मेरी और तुम लोगों की मिसाल उस क़ौम की सी है कि जिन के पास ऊंट हो और वोह उस के ज़रीए रोज़ी हासिल करते हों फिर जब वोह ऊंट बूढ़ा हो जाए तो उसे ज़ब्ह कर लें, और उस का गोश्त

खा लें।" ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد ने जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की गुफ़्त-गू सुनी तो मुझ से कहा : "आओ ! हम दोबारा इन्हें माल पेश करते हैं, शायद अब क़बूल फ़रमा लें।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देखा कि हम दोबारा आ रहे हैं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से उठे और जा कर छत पर बैठ गए।

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास छत पर पहुंच गए, और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ ही ज़मीन पर बैठ गए। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से गुफ़्त-गू करना चाही मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश रहे और जा कर कोई जवाब न दिया।

इतनी देर में एक सियाह फ़ाम लौंडी आई। और कहने लगी : "आप लोग सारी रात इन्हें तंग करते रहे हैं, ख़ुदारा ! अब आप यहां से तशरीफ़ ले जाएं, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए।" चुनान्चे हम वहां से वापस पलट आए।

(अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 16 : रिज़्क़ के ख़ज़ानों का मालिक

फ़ज़्ल बिन रबीअ़ का बयान है : "मैं एक मर्तबा सफ़रे ह़ज में ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد के साथ था। वापसी पर जब हमारा गुज़र "**कूफ़ा**" से हुवा तो देखा कि **ह़ज़रते सय्यिदुना बहलूल दाना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक जगह खड़े हैं और बहुत बुलन्द आवाज़ से चीख़ रहे हैं। मैं ने उन से कहा : "ख़ामोश हो जाइये। ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ़ ला रहे हैं।" येह सुन कर वोह ख़ामोश हो गए। फिर जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد की सुवारी क़रीब आई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़ोर से कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! ज़रा मेरी बात सुनिये।" ख़लीफ़ा ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आवाज़ सुनी तो रुक गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना बहलूल दाना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! मुझे "**ऐमन बिन नायल**" رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़दीस सुनाई कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़िदामा बिन अ़ब्दुल्लाह आ़मिरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को "**वादिये मिना**" में देखा कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सादे से कजावे में तशरीफ़ फ़रमा थे और वहां न मारना था, न इधर उधर हटाना था और न ही येह कि एक त़रफ़ हो जाओ।"

(جامع الترمذی، ابواب الحج، باب ماجاء فی کراھیۃ طرد الناس...الخ، الحدیث:۹۰۳،ص۱۷۳۷)

صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों हों सलामे आ़जिज़ाना म-दनी मदीने वाले

फ़ज़्ल बिन रबीअ़ का बयान है : मैं ने अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से कहा : "हु़ज़ूर ! येह बहलूल दीवाना है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं इन्हें जानता हूं, फिर कहा : "ऐ बहलूल (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ! **मुझे कुछ और नसीह़त करो।**" चुनान्चे उन्हों ने येह दो अ़-रबी अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

तरजमा : (1)...... (बिलफ़र्ज़) अगर तुझे सारी दुन्या की हु़कूमत मिल जाए और तमाम लोग तेरे मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन जाएं,

(2)...... फिर भी क्या तेरा आख़िरी ठिकाना तंगो तारीक क़ब्र नहीं ? (या'नी तेरे मरने के बा'द) लोग बारी बारी तुझ पर मिट्टी डालेंगे।

येह सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِیْد ने कहा : "ऐ बहलूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़क़ बात को पहचान लिया, मुझे कुछ और नसीह़त फ़रमाइये।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस को हु़स्नो जमाल और माल दिया, फिर उस ने अपने आप को गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखा और अपने माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च किया तो उस का नाम नेक लोगों में लिख दिया जाता है।"

फ़ज़्ल बिन रबीअ़ का बयान है : येह गुफ़्त-गू सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِیْد समझे कि शायद येह कुछ माल वग़ैरा त़लब कर रहे हैं लिहाज़ा उन से कहने लगे : "ऐ बहलूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! अगर आप पर किसी का क़र्ज़ वग़ैरा हो तो वोह मैं अदा कर दूंगा।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ऐसा हरगिज़ न कर। क्या तू क़र्ज़ को क़र्ज़ के बदले अदा करना चाहता है ? जा और जा कर ह़क़दारों को उन का ह़क़ अदा कर। और पहले अपने नफ़्स का क़र्ज़ उतार। बेशक तेरे पास एक ही ज़िन्दगी है। जब तू मर जाएगा तो फिर दोबारा दुन्या में न भेजा जाएगा।" फिर अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : "ऐ बहलूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के लिये कुछ वज़ीफ़ा मुक़र्रर करना चाहता हूं।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! ऐसा हरगिज़ न कर। मुझे मेरा अज्र वोही परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ देगा जो तुझे नवाज़ता है, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तुझे तो रिज़्क़ दे, और मुझे मेरे रिज़्क़ से मह़रूम रखे।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه येह अश्आ़र पढ़ते हुए वापस पलट गए :

تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَمَا اَرْجُوْ سِوَى اللّٰهِ

وَمَا الرِّزْقُ مِنَ النَّاسِ بَلِ الرِّزْقُ عَلَى اللّٰهِ

तरजमा : मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया और मैं उस के सिवा किसी और से उम्मीद नहीं रखता लोगों के पास रिज़्क़ नहीं बल्कि रिज़्क़ के ख़ज़ाने तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के पास हैं।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 17 : बा कमाल व बे मिसाल लोग

हज़रते सय्यिदुना अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : ''ग़ज़्वए **यरमूक** के दिन मैं अपने चचाज़ाद भाई को तलाश कर रहा था और मेरे पास एक बरतन में पानी था। मेरा येह इरादा था कि मैं ज़ख़्मियों को पानी पिलाऊंगा। इतनी ही देर में मुझे मेरे चचाज़ाद भाई नज़र आए। मैं उन की त़रफ़ लपका देखा तो वोह ज़ख़्मों से चूर चूर और ख़ून में लत पत थे, मैं ने उन के चेहरे से ख़ून साफ़ किया और पूछा : ''क्या तुम पानी पियोगे ?'' उन्हों ने गरदन के इशारे से हां की तो मैं ने पानी का पियाला उन की त़रफ़ बढ़ा दिया।

अभी उन्हों ने बरतन मुंह के क़रीब ही किया था कि अचानक किसी ज़ख़्मी के कराहने की आवाज़ आई, फ़ौरन पियाला मेरी त़रफ़ बढ़ाया और कहा : ''जाओ, पहले उस ज़ख़्मी को पानी पिलाओ।'' मैं दौड़ कर वहां पहुंचा तो देखा कि वोह हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ के भाई हज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ थे। मैं ने उन से पूछा : ''क्या तुम पानी पीना चाहते हो ?'' उन्हों ने अस्बात में सर हिलाया। मैं ने उन को पानी दिया। इतने में एक और ज़ख़्मी की आवाज़ आई, तो उन्हों ने फ़रमाया : ''जाओ, पहले मेरे उस ज़ख़्मी भाई को पानी पिलाओ।'' मैं दौड़ कर वहां पहुंचा तो वोह जामे शहादत नोश फ़रमा चुके थे, मैं वापस हज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ के पास आया तो वोह भी अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा चुके थे। फिर मैं अपने चचाज़ाद भाई के पास आया तो वोह भी वासिले ब ह़क़ हो चुके थे।

इमाम वाक़दी और हज़रते सय्यिदुना इब्नुल आ'राबी رحمہما اللّٰہ تعالٰی से मरवी है : ''हज़रते सय्यिदुना इ़क्रिमा बिन अबू जह्ल رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को जब पानी दिया गया तो उन्हों ने देखा कि हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ भी शदीद प्यास में मुब्तला हैं और इन की त़रफ़ देख रहे हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ ने पानी न पिया, और फ़रमाया : ''जाओ, पहले मेरे भाई को पानी पिलाओ।''

जब उन को पानी दिया गया तो उन्हों ने देखा कि हज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन हश्शाम رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ भी शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में हैं और शिद्दते प्यास की वजह से उन की त़रफ़ देख रहे हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : ''जाओ, पहले मेरे भाई को पानी पिलाओ, जब उन के पास पहुंचे तो वोह भी दम तोड़ चुके थे। दोबारा जब हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन हारिस और हज़रते सय्यिदुना इ़क्रिमा बिन अबू जह्ल رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما के पास गए तो वोह भी जां ब ह़क़ हो चुके थे।''

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ जब उन के पास से गुज़रे तो इर्शाद फ़रमाया : **''तुम जैसे अ़ज़ीम लोगों पर मेरी जान क़ुरबान हो।''**

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 18 : कन्जूसी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मैसरह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''हम से पहली उम्मतों में एक शख़्स था जिस ने बहुत ज़ियादा माल व मताअ़ जम्अ़ किया हुवा था, और उस की औलाद भी काफ़ी थी, त़रह़ त़रह़ की ने'मतें उसे मुयस्सर थीं, कसीर माल होने के बा वुजूद वोह इन्तिहाई कन्जूस था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में कुछ भी ख़र्च न करता, हर वक़्त इसी कोशिश में रहता कि किसी त़रह़ मेरी दौलत में इज़ाफ़ा हो जाए। जब वोह बहुत ज़ियादा माल जम्अ़ कर चुका तो अपने आप से कहने लगा : ''अब तो मैं ख़ूब ऐ़शो इ़श्रत की ज़िन्दगी गुज़ारूंगा। चुनान्चे वोह अपने अहलो इ़याल के साथ ख़ूब ऐ़शो इ़श्रत से रहने लगा।

बहुत से ख़ुद्दाम हर वक़्त हाथ बांधे उस के हुक्म के मुन्तज़िर रहते, अल गरज़ ! वोह इन दुन्यावी आसाइशों में ऐसा मगन हुवा कि अपनी मौत को बिल्कुल भूल गया। एक दिन म-लकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَیْهِ السَّلَام एक फ़क़ीर की सूरत में उस के घर आए, और दरवाज़ा खट-खटाया। गुलाम फ़ौरन दरवाज़े की त़रफ़ दौड़े, और जैसे ही दरवाज़ा खोला तो सामने एक फ़क़ीर को पाया, उस से पूछा : ''तू यहां किस लिये आया है ?''म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : ''जाओ, अपने मालिक को बाहर भेजो मुझे उसी से काम है।''

ख़ादिमों ने झूट बोलते हुए कहा : ''वोह तो तेरे ही जैसे किसी फ़क़ीर की मदद करने बाहर गए हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام येह सुन कर वहां से चले गए। कुछ देर बा'द दोबारा आए और दरवाज़ा खट-खटाया, गुलाम बाहर आए तो उन से कहा : ''जाओ, और अपने आक़ा से कहो : मैं म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام हूं।''

जब उस मालदार शख़्स ने येह बात सुनी तो बहुत ख़ौफ़ ज़दा हुवा और अपने गुलामों से कहा : ''जाओ, और उन से बहुत नर्मी से गुफ़्त-गू करो।'' ख़ुद्दाम बाहर आए और ह़ज़रते सय्यिदुना म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام से कहने लगे : ''आप हमारे आक़ा के बदले किसी और की रूह़ क़ब्ज़ कर लें और इसे छोड़ दें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए।''

ह़ज़रते सय्यिदुना म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ''ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता।'' फिर म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام अन्दर तशरीफ़ ले गए, और उस मालदार शख़्स से कहा : ''तुझे जो वसिय्यत करनी है कर ले, मैं तेरी रूह़ क़ब्ज़ किये बिग़ैर यहां से नहीं जाऊंगा।''

येह सुन कर सब घर वाले चीख़ उठे, और रोना धोना शुरूअ़ कर दिया, उस शख़्स ने अपने घर वालों और गुलामों से कहा : ''सोने चांदी से भरे हुए सन्दूक़ और ताबूत खोल दो, और मेरी तमाम दौलत मेरे सामने ले आओ।'' फ़ौरन हुक्म की ता'मील हुई, और सारा ख़ज़ाना उस के क़दमों में ढेर कर दिया गया। वोह शख़्स सोने चांदी के ढेर के पास आया और कहने लगा : ''ऐ ज़लील व बद तरीन माल ! तुझ पर ला'नत हो, तूने ही मुझे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रखा, तूने ही मुझे आख़िरत की तय्यारी से रोके रखा।''

येह सुन कर वोह माल उस से कहने लगा : "तू मुझे मलामत न कर, क्या तू वोही नहीं कि दुन्यादारों की नज़रों में ह़क़ीर था ? मैं ने तेरी इ़ज़्ज़त बढ़ाई। मेरी ही वजह से तेरी रसाई बादशाहों के दरबार तक हुई वरना ग़रीब व नेक लोग तो वहां तक पहुंच ही नहीं सकते, मेरी ही वजह से तेरा निकाह़ शहज़ादियों और अमीर ज़ादियों से हुवा। वरना ग़रीब लोग उन से कहां शादी कर सकते हैं। अब येह तो तेरी बद बख़्ती है कि तूने मुझे शैत़ानी कामों में ख़र्च किया। अगर तू मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कामों में ख़र्च करता तो येह ज़िल्लत व रुस्वाई तेरा मुक़द्दर न बनती। क्या मैं ने तुझ से कहा था कि तू मुझे नेक कामों ख़र्च न कर ? आज के दिन मैं नहीं बल्कि तू ज़ियादा मलामत व ला'नत का मुस्तह़िक़ है।"

ऐ इब्ने आदम ! बेशक मैं और तू दोनों ही मिट्टी से पैदा किये गए हैं। पस बहुत से लोग ऐसे हैं जो नेकी की राह पर गामज़न हैं और बहुत से गुनाहों में मुस्तग़रक़ हैं। (इमाम इब्ने जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं :) "गोया माल हर शख़्स से इसी त़रह़ कहता है, लिहाज़ा माल की बुराइयों से बच कर रहो और उसे नेक कामों में ख़र्च करो।"

अजल ने न किसरा ही छोड़ा न दारा
इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा
पड़ा रह गया सब युंही ठाठ सारा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

हि़कायत नम्बर 19 : दो बादशाह, साह़िले समुन्दर पर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत करते हैं : "पहली उम्मतों में एक बादशाह था। ख़ूब शानो शौकत से उस के दिन रात गुज़र रहे थे। एक दिन उस की क़िस्मत का सितारा चमका और वोह अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगा, और सोचने लगा कि मैं जिन दुन्यावी आसाइशों में गुम हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को भूल चुका हूं अ़न्क़रीब येह सारी ने'मतें मुझ से मुन्क़ते़अ़ हो जाएंगी, मेरी हुकूमत व बादशाहत ने तो मुझे अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से ग़ाफ़िल कर रखा है।

चुनान्चे वोह रात की तारीकी में अपने मह़ल से निकला, और सारी रात तेज़ी से सफ़र करता रहा। जब सुब्ह़ हुई तो वोह अपने मुल्क की सरह़द उ़बूर कर चुका था। उस ने साह़िले समुन्दर का रुख़ किया और वहीं रहने लगा। वहां वोह ईंटें बना बना कर बेचता, जो रक़म ह़ासिल होती उस में से कुछ अपने

ख़र्च के लिये रख लेता और बाक़ी सब सदक़ा कर देता।

इसी ह़ालत में उसे काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया। बिल आख़िर उस की ख़बर उस मुल्क के बादशाह को हुई, तो उस बादशाह ने पैग़ाम भेजा : "मुझ से आ कर मिलो।" लेकिन उस ने इन्कार कर दिया, और बादशाह के पास न गया। बादशाह ने फिर अपना क़ासिद भेजा और उसे अपने पास बुलवाया उस ने फिर इन्कार कर दिया, और कहा : "बादशाह को मुझ से क्या ग़रज़, और मुझे बादशाह से क्या काम कि मैं उस के पास जाऊं।"

जब बादशाह को येह बताया गया तो वोह ख़ुद घोड़े पर सुवार हो कर साहिले समुन्दर पर आया। जब उस नेक शख़्स ने देखा कि बादशाह मेरी त़रफ़ आ रहा है तो उस ने एक त़रफ़ दौड़ लगा दी। बादशाह ने जब उसे भागते देखा तो वोह भी उस के पीछे पीछे भागने लगा लेकिन वोह बादशाह की नज़रों से ओझल हो गया। जब बादशाह उसे न ढूंड सका तो बुलन्द आवाज़ से कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे : मैं तुझ से कुछ भी नहीं कहूंगा, तू मुझ से ख़ौफ़ ज़दा न हो (मैं तुझ से मुलाक़ात करना चाहता हूं)।"

जब उस नेक शख़्स ने येह सुना तो वोह बादशाह के सामने आ गया। बादशाह ने उस से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए, तू कौन है ? और कहां से आया है ?" उस ने अपना नाम बताया और कहा : "मैं फ़ुलां मुल्क का बादशाह था, जब मैं ने ग़ौरो फ़िक्र किया तो मुझे मा'लूम हुवा कि मैं जिस दुन्या की दौलत में मस्त हूं, येह तो अ़न्क़रीब फ़ना हो जाएगी, और इस दौलत व हुकूमत ने तो मुझे ग़फ़्लत की नींद सुला रखा है।

वोह है ऐशो इ़श्रत का कोई मह़ल भी — जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह्ल से तू निकल भी — येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

चुनान्चे मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और तमाम दुन्यावी आसाइशों को छोड़ कर दुन्या से अलग थलग अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत शुरूअ़ कर दी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी इस काविश को अपनी बारगाह में क़बूल व मन्ज़ूर फ़रमाए।" जब बादशाह ने येह सुना, तो कहने लगा : "मेरे भाई ! जो कुछ तूने किया मैं तो तुझ से ज़ियादा इस का ह़क़दार हूं।" येह कहते हुए वोह घोड़े से उतरा, और उसे वहीं छोड़ कर उस नेक शख़्स के साथ चल दिया।

चुनान्चे वोह दोनों बादशाह एक साथ रहने लगे, और अब वोह हर वक़्त अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मस्रूफ़ रहते, और उन्हों ने दुआ़ की : "ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें एक साथ मौत देना।" चुनान्चे उन दोनों का एक ही दिन इन्तिक़ाल हुवा और उन की क़ब्रें भी एक साथ ही बनाई गईं।

येह ह़िकायत नक़्ल करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अगर मैं मिस्र में होता तो उन की क़ब्रों की जो निशानियां हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बताई हैं मैं उन की वजह से उन्हें ज़रूर

पहचान लेता और तुम्हें वोह क़ब्रें ज़रूर दिखाता।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحدیث: ۴۳۱۲، ج۲، ص۱۶۶۔۱۶۷)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 20 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नसीह़त आमोज़ फ़रामीन

ह़ज़रते सय्यिदुना कमील बिन ज़ियाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे जंगल की त़रफ़ ले गए । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक जगह बैठ गए और एक आहे सर्द भर कर फ़रमाया : "ऐ कमील (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! येह दिल बरतनों की मानिन्द हैं, इन में सब से बेहतर वोह है जो सब से ज़ियादा नसीह़त क़बूल करने वाला हो । लिहाज़ा मैं तुझे जो नसीह़तें करूं उन्हें अच्छी त़रह़ याद रखना, फिर आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया : "ऐ कमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! लोग तीन त़रह़ के हैं :

(1) आ़लिमे रब्बानी

(2) राहे नजात (या'नी दीन) के त़लबगार

(3) बे वुक़ूफ़ व कमतर लोग : जो हर बुलाने वाले की बात पर कान धरें, हर हवा की त़रफ़ झुक जाएं, इ़ल्म के नूर से कभी मुनव्वर न हुए हों, और न ही किसी मज़बूत़ शै को पनाह गाह बनाया हो ।

ऐ कमील (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! इ़ल्म मालो दौलत से बेहतर है क्यूं कि इ़ल्म तेरी ह़िफ़ाज़त करता है जब कि माल की ह़िफ़ाज़त तुझे करनी पड़ती है, माल ख़र्च करने से कम होता है जब कि इ़ल्म ख़र्च करने से बढ़ता है, इ़ल्म ह़ाकिम है और माल मह़कूम ।

ऐ कमील (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! आ़लिम की मह़ब्बत दीन है और इस मह़ब्बत की वजह से बड़ा अज्र दिया जाएगा । इ़ल्म दुन्यावी ज़िन्दगी में आ़लिम को नेक आ'माल की तरग़ीब दिलाता है और उस की वफ़ात के बा'द उस का बेहतरीन सरमाया है जब कि माल से मिलने वाली आसाइशें उस माल के साथ ही ख़त्म हो जाती हैं ।

ऐ कमील बिन ज़ियाद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! बड़े बड़े मालदार ज़िन्दा होने के बा वुजूद मुर्दों की त़रह़ हैं, उ़-लमाए किराम अगर्चे दुन्या से पर्दा कर चुके लेकिन जब तक ज़माना बाक़ी है तब तक वोह बाक़ी रहेंगे, उन की आंखें अगर्चे बन्द हो गईं लेकिन उन की अ़-ज़मत और शानो शौकत आज भी दिलों में ज़िन्दा व बाक़ी है ।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने सीने की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : "अफ़्सोस ! यहां इ़ल्म तो बहुत जम्अ़ है, काश ! मुझे कोई इस का अहल मिल जाए ताकि मैं सारा इ़ल्म उसे दे दूं, फिर फ़रमाया : "हां ! मेरी कुछ लोगों से मुलाक़ात हुई लेकिन मैं उन से मुत़्मइन न हुवा, वोह दीन को दुन्या के लिये इस्ति'माल करना चाहते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के ज़रीए उस के बन्दों पर बढ़ाई चाहते हैं, और अपने दलाइल के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर पर ग़ालिब आना चाहते हैं। कुछ लोग ऐसे मिले जो अहले ह़क़ के फ़रमां बरदार तो हैं लेकिन उन में बसीरत व ह़िक्मत नहीं, थोड़े से शक व शुबा से उन का दिल डगमगा जाता है, न इधर के न उधर के, बस ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया के पीछे पड़े हैं, हर वक़्त मालो दौलत जम्अ़ करने में मगन हैं। दीन के मुबल्लिग़ीन से उन्हें कोई ग़रज़ नहीं, ऐसे ही लोग हैं जो चौपायों की त़रह़ हैं। इसी त़रह़ अहले इ़ल्म के उठने से इ़ल्म भी उठता जा रहा है।

लेकिन दुन्या में हर वक़्त ऐसे लोग भी मौजूद रहते हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़ुदूद को क़ाइम करने वाले हैं ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियां बिल्कुल मा'दूम न हो जाएं। इन में से कुछ तो मशहूर व मा'रूफ़ होते हैं और कुछ पोशीदा। लेकिन ऐसे लोग बहुत कम हैं, ऐसे लोगों की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत क़द्रो मन्ज़िलत है, इन्हीं के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी निशानियों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। यहां तक कि येह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन निशानियों को अपने जैसे लोगों तक पहुंचा देते हैं और उन के दिलों में येह निशानियां अच्छी त़रह़ रासिख़ कर देते हैं, इ़ल्म ने इन्हें वाज़ेह़ ह़क़ीक़त पर खड़ा कर दिया फिर वोह रास्ते जो (दुन्यादारों के लिये) मुश्किल थे उन के लिये आसान हो जाते हैं। और जिन चीज़ों से जाहिल लोग ख़ौफ़ ज़दा होते हैं येह लोग (या'नी उ़-लमाए रब्बानी) उन से बिल्कुल नहीं डरते।

अहले इ़ल्म दुन्या में ऐसे रहते हैं कि उन के बदन तो दुन्या में होते हैं मगर उन की रूहें मलाए आ'ला में होती हैं।

ऐ कमील बिन ज़ियाद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! ऐसे लोग ही ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लीफ़ा हैं और उस के दीन के मुबल्लिग़ हैं। हाए ! हाए ! मैं ऐसों को देखने का कितना मुशताक़ हूं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 21 : सह़रा की ऊंची क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बिशार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के साथ था। हम एक सह़रा में पहुंचे, वहां एक ऊंची क़ब्र थी। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم उस क़ब्र को देख कर रोने लगे।

मैं ने पूछा : "ह़ुज़ूर ! येह किस की क़ब्र है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह ह़मीद बिन जाबिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر की क़ब्र है जो कि इन तमाम शहरों के ह़ाकिम थे, पहले येह दुन्यावी दौलत के समुन्दर में ग़र्क़ थे, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें हिदायत अ़त़ा फ़रमाई (और इन का शुमार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों में होने लगा)

मुझे इन के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर मिली है कि एक रात येह अपनी लह्वो लइ़ब की मह़फ़िल में मस्त थे, दुन्या की दौलत व आसाइश के धोके में थे, जब काफ़ी रात बीत गई तो अपनी सब से ज़ियादा मह़बूब अहलिया के साथ ख़्वाब गाह में गए और ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े लेने लगे। उसी रात इन्हों ने ख़्वाब देखा कि एक शख़्स अपने हाथ में एक किताब लिये इन के सिरहाने खड़ा है, इन्हों ने उस से वोह किताब त़लब की और उसे खोला तो सुनहरी ह़ुरूफ़ में येह इ़बारत लिखी हुई थी : **"बाक़ी रहने वाली अश्या पर फ़ानी चीज़ों को तरजीह़ न दे।** अपनी बादशाही, अपनी त़ाक़त, अपने ख़ुद्दाम और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात से हरगिज़ धोका न खा, और अपने आप को दुन्या में त़ाक़त वर न समझ, अस्ल त़ाक़त वर ज़ात तो वोह है कि जो मा'दूम न हो। अस्ल बादशाही तो वोह है जिसे ज़वाल न हो, ह़क़ीक़ी ख़ुशी व फ़रह़त तो वोह है जो बिग़ैर लह्वो लइ़ब के ह़ासिल हो।" लिहाज़ा अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक्म की त़रफ़ जल्दी कर। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ۝

(پ۴،اٰل عمران:۱۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं परहेज़ गारों के लिये तय्यार रखी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : "फिर इन की आंख खुल गई। वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा थे। फिर कहने लगे : "येह (ख़्वाब) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मेरे लिये तम्बीह व नसीह़त है।" येह कह कर फ़ौरन अपनी बादशाहत को छोड़ा और अपने मुल्क से निकल कर ऐसी जगह आ गए जहां कोई इन्हें पहचान न सके, और इन्हों ने एक पहाड़ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करना शुरूअ़ कर दी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : "जब मुझे इन के बारे में इ़ल्म हुवा तो मैं इन के पास आया, और इन से इन के ह़ालात दर्याफ़्त किये तो इन्हों ने मुझे अपना येह वाक़िआ़ सुनाया, और मैं ने इन्हें अपने साबिक़ा ह़ालात के बारे में बताया, फिर इन के इन्तिक़ाल तक मैं

अक्सर मुलाक़ात के लिये इन के पास आता, बिल आखि़र इन का इन्तिक़ाल हो गया और इसी जगह इन्हें दफ़्न कर दिया गया, येह उन्हीं की क़ब्र है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 22 : सर्द रात में सो कोड़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वदाआ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़फ़िल में बा क़ाइदगी से ह़ाज़िर हुवा करता था, फिर चन्द दिन मैं ह़ाज़िर न हो सका। जब दोबारा आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : "तुम इतने दिन कहां थे ?" मैं ने कहा : "मेरी अहलिया का इन्तिक़ाल हो गया था बस इसी परेशानी में चन्द दिन ह़ाज़िरी की सआदत ह़ासिल न हो सकी।" येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "तूने मुझे इत्तिलाअ़ क्यूं नहीं दी ताकि मैं भी जनाज़े में शिर्कत करता ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वदाआ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इस पर मैं ख़ामोश रहा।" जब मैं ने रुख़्सत चाही तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम दूसरी शादी करना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "ह़ुज़ूर ! मैं तो बहुत ग़रीब हूं, मेरे पास ब मुश्किल चन्द दिरहम होंगे, मुझ जैसे ग़रीब की शादी कौन करवाएगा।" तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाने लगे : "मैं तेरी शादी करवाऊंगा।" मैं ने ह़ैरान होते हुए अ़र्ज़ की : "क्या आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरी शादी कराएंगे ?" फ़रमाया : "जी हां ! मैं तेरी शादी कराऊंगा।" फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान की और ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ा और मेरी शादी अपनी बेटी से करा दी।

मैं वहां से उठा और घर की त़रफ़ रवाना हुवा। मैं इतना ख़ुश था कि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं, फिर मैं सोचने लगा कि मुझे किस किस से अपना क़र्ज़ा वुसूल करना है, और इसी त़रह़ मैं आने वाले लम्ह़ात के बारे में सोचने लगा फिर मैं ने मग़रिब की नमाज़ मस्जिद में अदा की और दोबारा घर की त़रफ़ चला आया। मैं घर में अकेला ही था, फिर मैं ने ज़ैतून का तेल और रोटी दस्तर ख़्वान पर रखी और खाना शुरूअ़ ही किया था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैं ने पूछा : "कौन ?" आवाज़ आई : "सईद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ।" मैं समझ गया कि ज़रूर येह ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही होंगे। इतनी देर में वोह अन्दर तशरीफ़ ले आए। मैं ने कहा : "आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझे पैग़ाम भेज देते,

मैं खु़द ही ह़ाज़िर हो जाता।'' फ़रमाने लगे : ''नहीं, बल्कि तुम इस बात के ज़ियादा ह़क़दार हो कि तुम्हारे पास आया जाए।'' मैं ने कहा : ''फ़रमाइये ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''अब तुम ग़ैरे शादी शुदा नहीं हो, तुम्हारी शादी हो चुकी है, मैं इस बात को ना पसन्द करता हूं कि तुम शादी हो जाने के बा'द भी अकेले ही रहो, फिर एक त़रफ़ हटे तो उन की बेटी उन के पीछे खड़ी थी। उन्हों ने उस का हाथ पकड़ा और कमरे में छोड़ आए और मुझे फ़रमाया : ''येह तुम्हारी ज़ौजा है।'' इतना कहने के बा'द तशरीफ़ ले गए। मैं दरवाज़े के क़रीब गया और जब इत़्मीनान हो गया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जा चुके हैं तो मैं वापस कमरे में आया तो उस शर्मो ह़या की पैकर को ज़मीन पर बैठे हुए पाया। मैं ने जल्दी से ज़ैतून के तेल और रोटियों वाला बरतन उठा कर एक त़रफ़ रख दिया ताकि वोह उसे न देख सके। फिर मैं अपने मकान की छत पर चढ़ा और अपने पड़ोसियों को आवाज़ देने लगा। थोड़ी ही देर में सब जम्अ़ हो गए और मुझ से पूछने लगे : ''तुम्हें क्या परेशानी है ?'' मैं ने कहा : ''ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी बेटी से मेरी शादी करा दी है और वोह अपनी बेटी को मेरे घर छोड़ गए हैं।'' लोगों ने बे यक़ीनी से पूछा : ''क्या ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तुझ से अपनी बेटी की शादी कराई है ?'' मैं ने कहा : ''अगर तुम्हें यक़ीन नहीं आता तो मेरे घर जा कर देखो, उन की बेटी मेरे घर में मौजूद है।'' येह सुन कर सब मेरे घर आ गए। जब मेरी वालिदा को येह ख़बर मिली तो वोह भी फ़ौरन ही आ गईं और मुझ से फ़रमाने लगीं : ''अगर तीन दिन से पहले तू इस के पास गया तो तुझ पर मेरा चेहरा भी देखना ह़राम है। तीन दिन तक मैं इस की इस्लाह़ कर लूं इस के बा'द ही तू इस से क़ुरबत इख़्तियार करना।'' मैं तीन दिन इन्तिज़ार करता रहा, चौथे दिन जब उस के पास गया और उसे देखा तो देखता ही रह गया। वोह हुस्नो जमाल की शाहकार थी, क़ुरआने पाक की ह़ाफ़िज़ा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को बहुत ज़ियादा जानने वाली और शौहर के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा पहचानने वाली थी। इसी त़रह़ एक महीना गुज़र गया। न तो ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मेरे पास आए और न ही मैं ह़ाज़िर हो सका, फिर मैं ही उन के पास गया। वोह बहुत सारे लोगों के झुरमट में जल्वा फ़रमा थे, मैं ने उन को सलाम किया उन्हों ने जवाब दिया। इस के बा'द मजलिस ख़त्म होने तक उन्हों ने मुझ से कोई बात न की, जब सब लोग जा चुके और मेरे इलावा कोई और न बचा तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : ''उस इन्सान को कैसा पाया ?''

मैं ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! (आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बेटी ऐसी सिफ़ात की ह़ामिल है कि) शायद कोई दुश्मन ही उसे ना पसन्द करे वरना दोस्त तो ऐसी चीज़ों को पसन्द करते हैं।'' फ़रमाया : ''अगर वोह तुझे तंग करे तो लाठी से इस्लाह़ करना।'' फिर जब मैं घर की त़रफ़ रवाना हुवा तो उन्हों ने मुझे बीस हज़ार दिरहम दिये। मैं उन्हें ले कर घर की त़रफ़ चला आया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना सईद

बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की इसी साहि़ब ज़ादी के लिये ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने अपने बेटे वलीद की शादी का पैग़ाम भेजा था लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इन्कार कर दिया, अ़ब्दुल मलिक ने हर त़रह़ कोशिश की के किसी त़रह़ आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه राज़ी हो जाएं लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه बराबर इन्कार करते रहे फिर वोह ज़ुल्मो सितम पर उतर आया और एक सर्द रात उस ज़ालिम ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه को **सो कोड़े** मारे और ऊन का जुब्बा पहना कर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه पर ठन्डा पानी डलवाया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 23 : क़ब्रें फटने और सितारे टूटने का दिन

ह़ज़रते सय्यिदुना मत़रूक़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जिन का नाम **"ह़-ममह"** था। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन के हां रात को क़ियाम किया तो देखा कि वोह सारी रात रोते ही रहे। सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से पूछा : "तुम्हें किस चीज़ ने इतना रुलाया ?" कहने लगे : "मुझे उस दिन की याद ने रुलाया है जिस दिन क़ब्रें फट जाएंगी और अहले क़ुबूर बाहर आ जाएंगे।" इसी त़रह़ एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़-ममह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के हां गुज़ारी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फिर सारी रात रोते रहे। सुब्ह़ उन से पूछा गया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को किस चीज़ ने रुलाया ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه कहने लगे : "मुझे उस दिन की याद ने रुलाया है जिस दिन सितारे टूट फूट जाएंगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मत़रूक़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जब येह दोनों ह़ज़रात (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़यान और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़-ममह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) बाज़ार में जाते और किसी इ़त्र बेचने वाले की दुकान के क़रीब से गुज़रते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जन्नत मांगते, और जब किसी लोहार की दुकान के क़रीब से गुज़रते तो जहन्नम की आग से पनाह मांगते, और फिर अपने अपने घरों की त़रफ़ चले जाते। उन की इ़बादत का अन्दाज़ येह था कि सारी सारी रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 24 : बारह सालों में हिसाबो किताब से फ़ारिग़ हुए

हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे पड़ोसी थे, मैं ने लोगों में उन से ज़ियादा अफ़्ज़ल किसी को नहीं पाया, उन की रातें इबादत में गुज़रतीं, दिन को रोज़ा रखते, और सारा दिन लोगों की हाजात को पूरा करने में गुज़र जाता, जब हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ की : "मुझे हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़्वाब में ज़ियारत हो जाए।" اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मेरी दुआ क़बूल हुई और एक रात मैं ने ख़्वाब देखा कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीना शरीफ़ के बाज़ार की जानिब जा रहे हैं, मैं ने सलाम किया। उन्हों ने जवाब दिया। मैं ने पूछा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क्या हाल है ?" फ़रमाया : "अभी अभी हिसाबो किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं, अगर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ को रहीम व करीम न पाता तो मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती।"

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुआ-मला कैसा रहा ?" फ़रमाने लगे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! बेहतर रहा, क़रीब था कि मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती लेकिन मैं ने अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ को बहुत रहीम व करीम पाया।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से पूछा : "बेटा ! बताओ तुम से जुदा हुए मुझे कितना अर्सा हो गया है ?" मैं ने अर्ज़ की : "तक़रीबन बारह साल हो चुके हैं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं अभी अभी हिसाबो किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 25 : हुस्नो जमाल की पैकर

हज़रते सय्यिदुना हैसम बिन अदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید की ज़ौजा हज़रते फ़ातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक बिन मरवान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के पास एक लौंडी थी जो हुस्नो जमाल में बे मिसाल थी, वोह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बहुत महबूब थी, ख़लीफ़ा बनने से पहले आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी ज़ौजा से कहा : "येह लौंडी मुझे हिबा कर दो।" लेकिन उन्हों ने इन्कार कर दिया।

फिर जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़लीफ़ा बनाया गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ौजए मोह़तरमा उस लौंडी को तय्यार कर के आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में लाईं और अ़र्ज़ की : ''मैं येह लौंडी ब ख़ुशी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को पेश करती हूं क्यूं कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को येह बहुत ज़ियादा पसन्द है।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ख़ुश हुए, और फ़रमाया : ''इसे मेरे पास भेज दो।'' जब वोह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस का हुस्नो जमाल देख कर बहुत मु-तअ़ज्जिब हुए, और उस से क़ुर्बत इख़्तियार करना चाही लेकिन फिर रुक गए, और उस लौंडी से कहा : ''बैठ जाओ, और पहले मुझे येह बताओ : तुम कौन हो और फ़ातिमा के पास तुम कहां से आईं ?''

वोह कहने लगी : ''मैं ''**कूफ़ा**'' के गवर्नर की ग़ुलामी में थी और वोह गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ का बहुत मक़रूज़ था, उस ने मुझे ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के पास भेज दिया। ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने मुझे अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के पास भेज दिया। उन दिनों मेरा लड़क पन था, फिर अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने मुझे अपनी बेटी फ़ातिमा को हिबा कर दिया और यूं मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पहुंच गई।''

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से पूछा : ''उस गवर्नर का क्या हुवा ?'' कहने लगी : ''वोह तो मर गया।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : ''क्या उस की कोई औलाद है ?'' उस ने जवाब दिया : ''जी हां ! उस का एक लड़का है।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''उस का क्या ह़ाल है ?'' कहने लगी : ''उस का ह़ाल बहुत बुरा है, बहुत ज़ियादा मुफ़्लिसी की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है।''

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसी वक़्त कूफ़ा के मौजूदा गवर्नर ''अ़ब्दुल ह़मीद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِیْد'' को ख़त़ लिखा कि फ़ुलां शख़्स को फ़ौरन मेरे पास भेज दो, फ़ौरन हुक्म की ता'मील हुई और वोह शख़्स आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आ गया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : ''तुझ पर कितना क़र्ज़ है ?'' तो उस ने जितना बताया आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सारा अदा कर दिया।

फिर फ़रमाया : ''येह लौंडी भी तुम्हारी है, इसे ले जाओ।'' येह कहते हुए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वोह लौंडी उस के ह़वाले कर दी, जूं ही उस ने लौंडी का हाथ पकड़ना चाहा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''ख़बरदार ! तुम दोनों एक दूसरे की क़ुर्बत से बचना, हो सकता है तेरे वालिद ने इस लौंडी से वत़ी की हो।'' (क्यूं कि औलाद पर अपने बाप, दादा की मौतूअ़ह ह़राम है। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 565 मुलख़्ख़सन)

उस ने कहा : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! येह लौंडी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ही रख लीजिये।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''मुझे अब इस की कोई ह़ाजत नहीं।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''फिर आप मुझ से ख़रीद लें।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फिर इन्कार कर दिया और फ़रमाया : ''जाओ, इसे अपने साथ ही ले जाओ।'' येह सुन कर वोह (लौंडी) कहने लगी : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! आप तो मुझे बहुत चाहते थे, अब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की वोह चाहत कहां गई ?'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''मेरी तुझ से मह़ब्बत व चाहत अपनी जगह बर क़रार है बल्कि अब तो और ज़ियादा बढ़ गई है।'' फिर उन दोनों को रवाना कर दिया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 26 : ह़क़ गोई और समझदारी

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अ़म्र, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन हश्शाम, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और कु़रैश के दीगर बड़े बड़े सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुए। जब वहां पहुंचे तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और इसी त़रह़ के कुछ और बद्री सह़ाबए किराम भी मुलाक़ात के लिये आए हुए थे, जो पहले ग़ुलामी की ज़िन्दगी गुज़ार चुके थे, फिर आज़ाद हो गए और वोह दुन्यावी ए'तिबार से बहुत ग़रीब थे।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले उन्ही ग़रीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुलाया क्यूं कि येह पहले आए हुए थे येह देख कर अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहने लगे : "जैसा आज हम ने देखा है ऐसा कभी नहीं देखा, ग़रीबों को तो बुला लिया गया लेकिन हमारी त़रफ़ तवज्जोह ही न की गई और हमें दरवाज़े से बाहर ही ठहरा दिया गया।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो कि बहुत ह़क़ गो और समझदार थे, कहने लगे : "ऐ लोगो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज मैं तुम्हारे चेहरे पर ना गवारी के आसार देख रहा हूं अगर ग़ुस्सा करना ही है तो अपने आप पर करो क्यूं कि तुम्हें और इन्हें एक साथ इस्लाम की दा'वत दी गई, इन ख़ुश नसीबों ने ह़क़ बात क़बूल करने में जल्दी की और तुम ने सुस्ती से काम लिया। ज़रा ग़ौर तो करो, उस वक़्त तुम क्या करोगे जब बरोज़े क़ियामत इन्हें (जन्नत की त़रफ़) जल्दी बुला लिया जाएगा और तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।"

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने कपड़े झाड़े और वहां से तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिल्कुल ह़क़ फ़रमाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कभी भी अपनी इत़ाअ़त में सब्क़त लेने वाले बन्दे को उस जैसा नहीं बनाता जो उस की इत़ाअ़त में सुस्ती करे।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 27 : **उड़ने वाली देग**

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "गुज़श्ता लोगों में एक बादशाह था, जो बहुत ज़ियादा सरकश था। वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में ह़द से गुज़रा हुवा था। उस दौर के मुसल्मानों ने उस ज़ालिम व सरकश बादशाह से जिहाद किया और उसे ज़िन्दा गरिफ़्तार कर लिया। अब उस को क़त्ल करने के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सज़ाएं तज्वीज़ की जाने लगीं, बिल आख़िर येह तै पाया कि इसे एक तांबे की बड़ी देग में किसी ऊंची जगह पर रखा जाए और उस के नीचे आग जला दी जाए ताकि येह यकदम मरने की बजाए तड़प तड़प कर मरे और इस ज़ालिम को इस के ज़ुल्म की पूरी पूरी सज़ा मिले।

चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया और उसे तांबे की देग में रख कर नीचे आग जला दी। वोह बादशाह बहुत घबराया और अपने झूटे ख़ुदाओं को बारी बारी पुकारना शुरूअ़ कर दिया और कहने लगा : "ऐ मेरे मा'बूदो ! मैं हमेशा तुम्हारी इ़बादत करता रहा, तुम्हें सज्दे करता रहा, अब मुझे इस दर्दनाक अ़ज़ाब से बचाओ।" इसी त़रह़ बारी बारी उस ने तमाम झूटे ख़ुदाओं को पुकारा लेकिन उस का पुकारना राएगां गया। क्यूं कि वोह तो खुद अपनी ह़िफ़ाज़त के मोह़ताज थे, इस की क्या ह़िफ़ाज़त करते। बिल आख़िर वोह अपने झूटे ख़ुदाओं से मायूस हो गया और उस ने अपना चेहरा आस्मान की त़रफ़ उठाया और ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ दिल से मु-तवज्जेह हुवा, और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" की सदाएं बुलन्द करने लगा और गिड़गिड़ा कर सच्चे दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पुकारने लगा।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस की येह मुख़्लिसाना गिर्या व ज़ारी मक़्बूल हुई, और अल्लाह तआ़ला ने एसी बारिश बरसाई कि सारी आग बुझ गई। फिर तेज़ हवा चली और उसे देग समेत उड़ा कर ले गई, अब वोह हवा में उड़ने लगा और येह सदा बुलन्द करता रहा, "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे देग समेत ऐसी क़ौम में उतारा जो मुसल्मान न थी बल्कि सारी क़ौम ही काफ़िर थी, जब लोगों ने देखा कि देग में एक शख़्स है और वोह कलिमए त़य्यिबा "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" पढ़ रहा है तो सब लोग उस के गिर्द जम्अ़ हो गए और कहने लगे : "तेरी हलाकत हो ! येह तू क्या कह रहा है।"

बादशाह ने कहा : "मैं फ़ुलां मुल्क का बादशाह हूं और मेरे साथ येह वाक़िआ़ पेश आया है।" जब लोगों ने बादशाह का क़िस्सा सुना तो सब के सब कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गए और मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करना शुरूअ़ कर दी।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 28 : **समुन्दर में रास्ते**

हज़रते सय्यिदुना क़िदामा बिन ह़माता رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना सहम बिन मिन्जाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना कि "एक मर्तबा हम हज़रते सय्यिदुना उ़ला बिन हज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जंग के लिये "**दारीन**" की त़रफ़ रवाना हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रास्ते में तीन दुआ़एं की और तीनों मक़्बूल हुईं। रास्ते में एक जगह पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया, हम ने एक जगह क़ाफ़िला रोका, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वुज़ू के लिये पानी मंगवाया और वुज़ू करने के बा'द दो रक्अ़तें अदा फ़रमाईं, फिर दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे बन्दे हैं, तेरी राह के मुसाफ़िर हैं, हम तेरे दुश्मनों से क़िताल करेंगे, ऐ हमारे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें **बाराने रह़मत** से सैराब फ़रमा दे ताकि हम वुज़ू करें और अपनी प्यास बुझाएं।"

इस के बा'द क़ाफ़िले ने कूच किया। अभी हम ने थोड़ी सी मुसाफ़त ही तै की थी कि घन्घोर घटाएं छा गईं और यकायक बाराने रह़मत होने लगी, सब ने अपने अपने बरतन भर लिये और फिर हम वहां से आगे चल दिये।

हज़रते सय्यिदुना सहम बिन मिन्जाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "थोड़ी दूर चलने के बा'द मुझे याद आया कि मैं अपना बरतन तो उसी जगह भूल आया हूं जहां बारिश हुई थी। चुनान्चे मैं अपने रु-फ़क़ा को बता कर उस त़रफ़ चल दिया जहां बारिश हुई थी। जब मैं वहां पहुंचा तो येह देख कर मुझे बड़ी ह़ैरानगी हुई कि अभी कुछ देर पहले जहां शदीद बारिश का समां था अब वहां बारिश के आसार तक न थे। ऐसा लगता था जैसे यहां की ज़मीन पर बरसों से एक क़त़रा भी नहीं बरसा। बहर ह़ाल मैं अपने बरतन को ले कर वापस क़ाफ़िले में शामिल हो गया।"

जब हम "**दारीन**" पहुंचे तो हमारे और दुश्मनों के दरमियान ठाठें मारता समुन्दर था। हमारे पास ऐसा साज़ो सामान न था कि हम समुन्दर पार कर सकें। हम बहुत परेशान हुए और मुआ़-मला हज़रते सय्यिदुना उ़ला बिन हज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश किया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ के लिये हाथ उठाए और इन कलिमात के साथ दुआ़ करने लगे : "يَاعَلِیُّ،يَاعَلِيْمُ،يَاحَلِيْمُ،يَاعَظِيْمُ" ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे बन्दे हैं और तेरी राह के मुसाफ़िर हैं, हम तेरे दुश्मनों से क़िताल करेंगे, ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये उन की त़रफ़ कोई रास्ता बना दे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ क़बूल हुई और हमारे लिये समुन्दर में रास्ते बन गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमें ले कर समुन्दर में उतर गए और हम ने इस त़रह समुन्दर पार किया कि हमारे कपड़े भी गीले न हुए। जंग के बा'द जब हमारी वापसी हुई तो रास्ते में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पेट में दर्द होने लगा और इसी दर्द की ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया। हम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ुस्ल देना चाहा लेकिन पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया था। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिग़ैर नहलाए

कफ़न दिया गया, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न कर दिया गया।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन के बा'द हम वहां से रुख़्सत हो गए। एक जगह हमारे क़ाफ़िले को पानी मुयस्सर आया तो हम ने बाहम मश्वरा किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ुस्ल दे कर दोबारा दफ़्न किया जाए। चुनान्चे हम उस जगह पहुंचे जहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न किया था। लेकिन वहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश मौजूद न थी। ख़ूब तलाश किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लाशा मुबारक न मिल सका फिर हमें एक शख़्स ने बताया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ला बिन ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को विसाल से पहले येह दुआ़ करते सुना था : ''**يَاعَلِيُّ،يَاعَلِيمُ،يَاحَلِيمُ،يَاعَظِيمُ**'' ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरी मौत को इन लोगों पर पोशीदा कर देना और मेरे सित्र को किसी पर ज़ाहिर न फ़रमाना। जब हम ने येह सुना तो हम वापस लौट आए और हम समझ गए कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की येह दुआ़ भी क़बूल हो चुकी है, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जिस्मे अत़्हर नहीं मिल रहा।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन साबित बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक मर्तबा बसरा के रहने वाले एक शख़्स के कान में एक कंकरी चली गई, त़बीबों ने बहुत इ़लाज किया मगर वोह न निकली बल्कि मज़ीद अन्दर चली गई और दिमाग़ तक जा पहुंची, उस शख़्स का तक्लीफ़ के मारे बुरा ह़ाल था, रातों की नींद और दिन का आराम व सुकून सब बरबाद हो गया, फिर बसरा में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के रु-फ़क़ा में से एक शख़्स आया। येह ग़म का मारा उस के पास पहुंचा और अपना दर्द बयान किया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के रफ़ीक़ ने कहा : ''तेरा भला हो, अगर तू चाहता है कि तेरी तक्लीफ़ दूर हो जाए तो इन कलिमात के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कर जिन के ज़रीए़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ला बिन ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ़ करते थे, उन्हों ने सह़राओं और समुन्दरों में इन कलिमात से दुआ़ की तो उन की दुआ़ मक़्बूल हुई। पस तू भी इन्हीं कलिमात के ज़रीए़ दुआ़ कर।'' वोह शख़्स अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''वोह कलिमात कौन से हैं ?'' उस ने बताया : ''वोह कलिमात येह हैं : ''**يَاعَلِيُّ،يَاعَلِيمُ،يَاحَلِيمُ،يَاعَظِيمُ**''। जैसे ही उस शख़्स ने इन कलिमात के साथ दुआ़ की फ़ौरन उस के कान से वोह कंकरी निकली और दीवार से जा लगी और उस शख़्स को सुकून नसीब हो गया।

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ला बिन ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम ''अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्माद बिन अक्बर बिन रबीआ़ बिन मालिक बिन औ़फ़ ह़ज़्रमी था।''

आप नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी थे, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ''**बह़रीन**'' का अमीर बना कर भेजा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बह़रीन के अमीर रहे और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बह़रीन का अमीर बर क़रार रखा।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 29 : शाने औलिया

हज़रते सय्यिदुना वहब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है : "एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से उन के हवारियों ने पूछा : "ऐ ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वोह औलियाए किराम رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی कौन हैं जिन पर कोई ख़ौफ़ होगा न ग़म ।"

तो हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह लोग ऐसे हैं कि जब दुन्यादारों की नज़रें दुन्या के ज़ाहिर पर होती हैं तो उन की नज़रें दुन्या के अन्जाम और बातिन पर होती हैं । जिन चीज़ों से उन्हें (दीनी ए'तिबार से) नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा होता है तो उन अश्या को फ़ना कर डालते हैं । जिन चीज़ों के बारे में उन्हें इल्म होता है कि येह अश्या उन्हें छोड़ देंगी तो ऐसी चीज़ों को पहले ही तर्क कर देते हैं, उन की नज़रों में किसी शै की कसरत, इन्तिहाई क़लील होती है और येह लोग आरिज़ी चीज़ों की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं देते ।

जब उन्हें दुन्यवी चीज़ें मिलती हैं तो ग़मगीन हो जाते हैं, दुन्यावी आसाइशों को ख़ातिर में नहीं लाते, जिस रुत्बे और ओहदे के अहल नहीं होते उसे कभी भी क़बूल नहीं करते । उन के नज़्दीक दुन्या पुरानी हो चुकी है, येह उस की तज्दीद नहीं चाहते, दुन्या इन की नज़रों में कुछ भी नहीं, येह इसे कोई वुक़्अत नहीं देते, ख़्वाहिशात इन के सीनों में दम तोड़ चुकी हैं, येह दुन्या को तर्क करने के बा'द दोबारा तलब नहीं करते बल्कि उख़्रवी ने'मतों के ख़्वाहिश मन्द रहते हैं, उन्हों ने अपनी दुन्यवी ने'मतों के बदले उख़्रवी व दाइमी ने'मतों को ख़रीद लिया है, और येह इस सौदे पर बहुत ख़ुश हैं और इसे नफ़्अ़ बख़्श समझते हैं । जब उन्हों ने देखा कि अहले दुन्या, दुन्या के हुसूल के लिये एक दूसरे से दस्तो गरीबां हैं और दुन्या उन्हें धुत्कार कर चली गई तो उन्हों ने मौत की याद को अपना मश्ग़ला बना लिया और ज़िन्दगी के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र तर्क कर दिया । येह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ज़िक्र से महब्बत करते हैं और उस के नूर से फ़ैज़याब हो कर मुनव्वर हो जाते हैं ।

इन की बातें अजीबो ग़रीब और इन की हालत हैरान कुन होती है, किताबुल्लाह में ऐसे लोगों के लिये ख़ुश ख़बरियां हैं और येह किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर अ़मल करने वाले हैं । क़ुरआने हकीम में इन की सिफ़ात बयान की गई हैं, और येह क़ुरआने पाक की ख़ूब तिलावत करते हैं, इन के मु-तअ़ल्लिक़ क़ुरआने करीम में मा'लूमात हैं और येही लोग क़ुरआने पाक को सहीह समझने वाले हैं । येह अपने नेक आ'माल को ज़ियादा गुमान नहीं करते बल्कि उन्हें बहुत कम ख़याल करते हैं, और जिस (या'नी सवाब व इन्आ़म) की उन्हें आख़िरत में उम्मीद है उस के इलावा (दुन्या की) किसी और ने'मत की उम्मीद नहीं रखते और (उख़्रवी अ़ज़ाब के इलावा) किसी और चीज़ से नहीं डरते बल्कि हर वक़्त जहन्नम के ख़ौफ़ से लरज़ां रहते हैं ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 30 : आंखें बे नूर हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब मस्जिद से अपने घर की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते तो दरवाज़े पर पहुंच कर ''अल्लाहु अक्बर'' की सदा बुलन्द करते, जवाब में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا भी ''अल्लाहु अक्बर'' कहतीं। फिर जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सेह़न में जाते तो ''अल्लाहु अक्बर'' कहते, जवाब में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا भी ''अल्लाहु अक्बर'' कहतीं। जब कमरे में दाख़िल होते तो फिर ''अल्लाहु अक्बर'' कहते और जवाब में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا भी ''अल्लाहु अक्बर'' कहतीं, येह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हर रोज़ का मा'मूल था।

एक रात जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ घर तशरीफ़ लाए और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरवाज़े पर पहुंच कर ह़स्बे मा'मूल ''अल्लाहु अक्बर'' कहा लेकिन जवाब न मिला, फिर जब सेह़न में पहुंच कर ''अल्लाहु अक्बर'' कहा तब भी जवाब न मिला। जब कमरे में पहुंचे और ''अल्लाहु अक्बर'' कहा तब भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा ने जवाबन ''अल्लाहु अक्बर'' न कहा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को खाना दिया और चुपचाप ज़मीन पर बैठी रही, ऐसा लगता था जैसे वोह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से नाराज़ हैं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर में रोशनी के लिये चराग़ तक नहीं था (लेकिन आप फिर भी साबिरो शाकिर थे)। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी ज़ौजा को नाराज़ पाया तो उन से दरयाफ़्त किया : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू क्यूं परेशान है ?''

येह सुन कर वोह कहने लगी : ''तुम्हारा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां बड़ा मर्तबा है, वोह तुम्हारी बहुत ता'ज़ीम करते हैं, अगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन से एक ख़ादिम मांग लें तो वोह ज़रूर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इनायत फ़रमा देंगे, हमारे पास एक भी ख़ादिम नहीं जो हमारी ख़िदमत कर सके, ख़ादिम आ जाएगा तो हमें आसानी हो जाएगी।'' येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और इस त़रह़ बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ''ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! उसे अन्धा कर दे जिस ने मेरे घर वालों का ज़ेह़न ख़राब किया है और हम में फूट डालने की कोशिश की है।''

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुआ़ का असर फ़ौरन ज़ाहिर हुवा और पड़ोसियों की एक औ़रत की आंखें अचानक बे नूर हो गईं जो अपने घर में थी और उसी ने आ कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा से कहा था कि अगर तू अपने ख़ाविन्द से कहे तो वोह अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से गुलाम ह़ासिल कर सकते हैं, और अगर तुम्हें गुलाम मिल गया तो इस त़रह़ तुम्हारी ज़िन्दगी पुर सुकून हो जाएगी। कुछ नज़र न आने की बिना पर उस ने घर वालों से कहा : ''तुम ने चराग़ क्यूं बुझा दिये ?'' घर वालों ने कहा : ''चराग़ तो जल रहे हैं, शायद तुम्हारी आंखें बेकार हो चुकी हैं।'' अब वोह औ़रत बहुत परेशान हुई और जब उसे मा'लूम हुवा कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम

ख़ौलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुआ़ का असर है तो वोह अपनी ह़-र-कत पर बहुत शरमिन्दा हुई और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुआ़फ़ी चाही और ज़ारो क़ित़ार रोने लगी, और अ़र्ज़ करने लगी : "मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर मुआ़फ़ फ़रमा दें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ फ़रमाएं कि मेरी बीनाई लौट आए।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उस पर तरस आने लगा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और उस की बीनाई के लिये दुआ़ की। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अभी दुआ़ से फ़ारिग़ भी न हुए थे कि उस औ़रत की आंखें मुनव्वर हो गईं और वोह बिल्कुल ठीक हो गई।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 31 : इ़बादत गुज़ार और साह़िबे करामत मुजाहिद

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन जा'फ़र बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं : "मुझे मेरे वालिद ने बताया कि एक मर्तबा हमारा लश्कर जिहाद के लिये "**काबुल**" की त़रफ़ गया। हमारे साथ ह़ज़रते सय्यिदुना **सिला बिन अशीम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे, रात के वक़्त लश्कर ने एक जगह क़ियाम किया, मैं ने दिल में ठान ली कि आज मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सिला बिन अशीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ूब ग़ौर से देखूंगा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस त़रह़ इ़बादत करते हैं क्यूं कि लोगों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़बादत का ख़ूब चर्चा है लिहाज़ा मैं उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ पढ़ी और फिर लैट गए और लोगों के सोने का इन्तिज़ार करने लगे, जब लोग ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े लेने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दम उठे और क़रीबी जंगल की त़रफ़ चल दिये। मैं भी चुपके चुपके आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे चल दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वुज़ू किया और नमाज़ के लिये खड़े हो गए, यकायक एक ख़ूंख़ार शेर नुमूदार हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ बढ़ने लगा। मैं बहुत ख़ौफ़ ज़दा हुवा और दरख़्त पर चढ़ गया, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शुजाअ़त पर क़ुरबान जाऊं, न तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शेर से डरे, न ही उस की त़रफ़ तवज्जोह दी बल्कि नमाज़ ही में मगन रहे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सज्दे में गए तो मैं ने गुमान किया कि अब शेर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ह़म्ला करेगा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चीर फाड़ देगा लेकिन शेर ज़मीन पर बैठ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इत़्मीनान से नमाज़ मुकम्मल की और सलाम फैरने के बा'द शेर की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "**ऐ जंगली दरिन्दे ! जा किसी दूसरी जगह अपना रिज़्क़ तलाश कर।**" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इतना फ़रमाना था कि शेर उल्टे क़दमों चल पड़ा। वोह ऐसी आवाज़ से दहाड़ रहा था कि लगता था कि

पहाड़ भी इस की दहाड़ से फट जाएंगे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए, तुलूए़ फ़ज्र से कुछ देर क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठ गए और ऐसे पाकीज़ा अल्फ़ाज़ में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ह़म्द की के मैं ने कभी ह़म्द के ऐसे कलिमात न सुने थे, मगर जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, वोह जिस पर चाहे अपना ख़ास करम करे।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और यूं दुआ़ करने लगे : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इल्तिजा करता हूं कि मुझे जहन्नम की आग से बचा, मैं इस क़ाबिल कहां कि तुझ से जन्नत त़लब करूं।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस लश्कर की त़रफ़ लौट आए। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की के आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल तरो ताज़ा थे। ऐसा लगता था कि गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारी रात बिस्तर पर गुज़ारी हो, और मुझ पर जो थकावट और सुस्ती त़ारी थी उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है।

फिर लश्कर ने दुश्मन की त़रफ़ पेश क़दमी की और जब दुश्मन की सरह़द के क़रीब पहुंचे तो अमीरे लश्कर ने ए'लान किया कि कोई सुवार अपनी सुवारी पर भारी सामान न छोड़े, तमाम मुजाहिदीन अपनी अपनी सुवारियां हल्की कर लें।

इत्तिफ़ाक़ी बात थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिला बिन अशीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़च्चर सामान समेत कहीं भाग गया। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़बर हुई तो आप ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। लोगों ने कहा : "हुज़ूर ! सारा लश्कर जा चुका है और आप अभी यहीं मौजूद हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ के लिये हाथ उठाए और इस त़रह़ बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मेरी सुवारी मुझे सामान समेत लौटा दे।" अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ़ से फ़ारिग़ भी न हुए थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुवारी सामान समेत सामने मौजूद थी। फिर जब दुश्मनों से जंग छिड़ी और दा'वते मुबारज़त दी गई तो हमारे लश्कर की त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना सिला बिन अशीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैदाने जंग में उतरे और ऐसे जंगी जौहर दिखाए कि जिस त़रफ़ जाते दुश्मनों की लाशें बिखेर देते, जो दुश्मन सामने आता उसे वासिले जहन्नम कर देते, नेज़ा ज़नी और शमशीर ज़नी के ऐसे जौहर दिखाए कि दुश्मनों के पाउं उखड़ गए, उन के हौसले पस्त हो गए और वोह कहने लगे : "जब अ़रब के दो शह सुवारों ने हमारा येह ह़ाल कर दिया तो अगर पूरा अ़-रबी लश्कर हम से लड़ा तो हमारा क्या अन्जाम होगा, बेहतरी इसी में है कि हम मुसल्मानों से सुल्ह़ कर लें। चुनान्चे उन्हों ने हम से जिज़्या की शर्त़ पर सुल्ह़ कर ली और मुसल्मानों का लश्कर फ़त्ह़ याब हो कर वापस पलटा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 32 : सब्र की अनोखी दास्तान

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बेटा जो कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बत़्न से था वोह फ़ौत हो गया, ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तमाम घर वालों से कहा कि जब तक मैं अबू त़ल्ह़ा को बेटे की वफ़ात का न बताऊं उस वक़्त तक कोई भी उन्हें इस के मु-तअ़ल्लिक़ न बताए। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम को घर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन्हें रात का खाना पेश किया और जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खाने से फ़ारिग हो चुके तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ऐसा बनाओ सिंघार किया कि इस से पहले कभी न किया था फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से हम बिस्तरी की और जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रागत पा चुके तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : "ऐ अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप का क्या ख़याल है कि अगर किसी क़ौम को कोई चीज़ अमानत के त़ौर पर दी जाए और फिर वोह अमानत उन से त़लब की जाए तो उन्हें वोह अमानत वापस करनी चाहिये या नहीं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उन्हें ज़रूर वोह अमानत अदा करनी चाहिये ।" येह जवाब सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : "बस फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बेटे को इसी त़रह़ गुमान करें (या'नी वोह भी एक अमानत थी जो वापस ले ली गई) ।"

उन्हों ने सुब्ह़ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ सुनाया तो ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ फ़रमाई : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी इस रात में तुम्हारे लिये ब-र-कत अ़त़ा फ़रमाए ।" फिर ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ामिला हो गईं।

एक मर्तबा सफ़र में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए तो रात का वक़्त था। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र से वापसी पर रात को मदीने में न जाते। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना शरीफ़ के क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दर्दे ज़िह उठा, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के पास ठहरा दिया गया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आगे आगे तशरीफ़ ले गए, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू ख़ूब जानता है कि मैं तो इस बात को पसन्द करता हूं कि जब मदीनए त़य्यिबा से निकलूं तब भी तेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ हो, और जब मदीनए मुनव्वरह में दाख़िला हो तब भी तेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त नसीब हो, और तुझे मा'लूम है कि अब मैं कैसी आज़माइश में मुब्तला हो गया हूं।" ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अब मैं पहले की त़रह़ शदीद दर्द मह़सूस नहीं कर रही।" चुनान्चे हम चल पड़े और जब मदीनए मुनव्वरह आए उन्हें दोबारा दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हो गया और ख़ुशियां लुटाता एक म-दनी मुन्ना

तवल्लुद हुवा।

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि फिर मेरी वालिदा ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! तुम जब तक सुब्ह़ इस बच्चे को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में न ले जाओ उस वक़्त तक कोई भी इसे दूध न पिलाए।" चुनान्चे मैं सुब्ह़ बच्चे को ले कर बारगाहे न-बवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िर हो गया, उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में ऊंटों को दाग़ने वाला आला था। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत जब मुझ पर पड़ी तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "शायद ! उम्मे सुलैम के हां बेटे की विलादत हुई है ?" मैं ने कहा : "जी हां।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह लौहे का आला रख दिया। मैं बच्चे को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले आया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपनी आग़ोशे रह़मत में ले लिया और मदीनए मुनव्वरह की "अ़ज्वा" खजूर मंगवाई, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दहने अक़्दस में ले कर चबाई, जब वोह ख़ूब नर्म हो गई तो बच्चे के मुंह में डाल दी, बच्चे ने उसे चूसना शुरूअ़ कर दिया। येह देख कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे के चेहरे पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरा और उस बच्चे का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखा।

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل ابی طلحۃ الأنصاری، الحدیث:۱۰۷(۲۱۴۴)،ص۱۱۰۹)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 33 : ने'मत पर ग़मगीन और मुसीबत पर ख़ुश होने वाली औ़रत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने यसार मुस्लिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُنْعِم फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं तिजारत की ग़रज़ से "**बहरीन**" की त़रफ़ गया, वहां मैं ने देखा कि एक घर की त़रफ़ बहुत लोगों का आना जाना है, मैं भी उस त़रफ़ चल दिया। वहां जा कर देखा कि एक औ़रत निहायत अफ़्सुर्दा और ग़मगीन फटे पुराने कपड़े पहने मुसल्ले पर बैठी है और उस के इर्द गिर्द गुलामों और लौंडियों की कसरत है, उस के कई बेटे और बेटियां हैं, तिजारत का बहुत सारा साज़ो सामान उस की मिल्कियत में है, ख़रीदारों का हुजूम लगा हुवा है, वोह औ़रत हर त़रह़ की ने'मतों के बा वुजूद निहायत ही ग़मगीन थी न किसी से बात करती, न ही हंसती।

मैं वहां से वापस लौट आया और अपने कामों से फ़ारिग़ होने के बा'द दोबारा उसी घर की त़रफ़ चल दिया। वहां जा कर मैं ने उस औ़रत को सलाम किया। उस ने जवाब दिया और कहने लगी : "अगर कभी दोबारा यहां आना हो और कोई काम हो तो हमारे पास ज़रूर आना, फिर मैं वापस अपने शहर चला

आया । कुछ अ़र्से बा'द मुझे दोबारा किसी काम के लिये उसी औ़रत के शहर में जाना पड़ा । जब मैं उस के घर गया तो देखा कि अब वहां किसी त़रह़ की चहल पहल नहीं । न तिजारती सामान है, न ख़ुद्दाम व लौंडियां नज़र आ रही हैं और न ही उस औ़रत के लड़के मौजूद हैं, हर त़रफ़ वीरानी छाई हुई है । मैं बड़ा ह़ैरान हुवा और मैं ने दरवाज़ा खट-खटाया तो अन्दर से किसी के हंसने और बातें करने की आवाज़ आने लगी । जब दरवाज़ा खोला गया और मैं अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि वोही औ़रत अब निहायत क़ीमती और ख़ुश रंग लिबास में मल्बूस बड़ी ख़ुश व ख़ुर्रम नज़र आ रही थी, और उस के साथ सिर्फ़ एक औ़रत घर में मौजूद थी । इस के इलावा कोई और न था । मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और मैं ने उस औ़रत से पूछा : "जब मैं पिछली मर्तबा तुम्हारे पास आया था तो तुम कसीर ने'मतों के बा वुजूद ग़मगीन और निहायत अफ़्सुर्दा थीं लेकिन अब ख़ादिमों, लौंडियों और दौलत की अ़दम मौजूदगी में भी बहुत ख़ुश और मुत़्मइन नज़र आ रही हो, इस में क्या राज़ है ?"

तो वोह औ़रत कहने लगी : "तुम तअ़ज्जुब न करो, बात दर अस्ल येह है कि जब पिछली मर्तबा तुम मुझ से मिले तो मेरे पास दुन्यावी ने'मतों की बोहतात थी, मेरे पास मालो दौलत और औलाद की कसरत थी, उस ह़ालत में मुझे येह ख़ौफ़ हुवा कि शायद ! मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ है, इस वजह से मुझे कोई मुसीबत और ग़म नहीं पहुंचता वरना उस के पसन्दीदा बन्दे तो आज़माइशों और मुसीबतों में मुब्तला रहते हैं । उस वक़्त येही सोच कर मैं परेशान व ग़मगीन थी और मैं ने अपनी ह़ालत ऐसी बनाई हुई थी ।

इस के बा'द मेरे माल व औलाद पर मुसल्सल मुसीबतें टूटती रहीं, मेरा सारा असासा ज़ाएअ़ हो गया, मेरे तमाम बेटों और बेटियों का इन्तिक़ाल हो गया, ख़ुद्दाम व लौंडियां सब जाती रहीं और मेरी तमाम दुन्यावी ने'मतें मुझ से छिन गईं । अब मैं बहुत ख़ुश हूं कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से ख़ुश है इसी वजह से तो उस ने मुझे आज़माइश में मुब्तला किया है । पस मैं इस ह़ालत में अपने आप को बहुत ख़ुश नसीब समझ रही हूं, इसी लिये मैं ने अच्छा लिबास पहना हुवा है । ह़ज़रते सय्यिदुना यसार मुस्लिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُنْعِم फ़रमाते हैं : इस के बा'द मैं वहां से चला आया और मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को उस औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ बताया तो वोह फ़रमाने लगे : "उस औ़रत का ह़ाल तो ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रह़ है और मेरा तो येह ह़ाल है कि एक मर्तबा मेरी चादर फट गई मैं ने उसे ठीक करवाया लेकिन वोह मेरी मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ ठीक न हुई तो मुझे इस बात ने काफ़ी दिन ग़मगीन रखा ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 34 :
ह़जाम और दो हज़ार दीनार

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद जा'फ़र رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली हुसैन बिन ख़ैरान को येह कहते हुए सुना कि एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़जाम के पास गए और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मेरे सर के बाल मूंड दो ।" ह़जाम ने कहा : "बैठ जाइये ।" आप बैठ गए और ह़जाम ने आप के बाल मूंडना शुरूअ़ कर दिये, इसी दौरान उस शहर के ह़ाकिम का वहां से गुज़र हुवा तो उस ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه को देख कर अपने ख़ुद्दाम से पूछा : "क्या येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی तो नहीं ?" ख़ुद्दाम ने कहा : "जी हां ! येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ही हैं ।" ह़ाकिम ने ख़ुद्दाम से कहा : "तुम्हारे पास इस वक़्त कितनी रक़म मौजूद है ?" एक ख़ादिम ने कहा : "हुज़ूर ! मेरे पास इस वक़्त इस चमड़े के बेग में एक हज़ार दीनार हैं ।" ह़ाकिम ने कहा : "जब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ल्क़ करवा चुकें तो आप को हमारी त़रफ़ से येह हज़ार दीनार नज़राना पेश करना और मा'ज़िरत भी करना कि इस वक़्त हमारे पास इतने ही मौजूद थे वरना कुछ ज़ियादा नज़राना पेश करते ।"

ख़ादिम आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आया और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "हुज़ूर ! येह कुछ रक़म ह़ाकिमे शहर ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के लिये भिजवाई है और उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه को सलाम अ़र्ज़ किया है, और कहा है कि हमारे पास अभी इसी क़दर रक़म मौजूद थी वरना कुछ ज़ियादा पेश करते, येह ह़क़ीर सा नज़राना क़बूल फ़रमा लें ।" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह सुन कर कहा : "येह रक़म इस ह़जाम को दे दो ।" ह़जाम फ़ौरन बोला : "मैं इतनी रक़म का क्या करूंगा ?" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "येह रक़म ले लो ।" ह़जाम ने अ़र्ज़ की : "मैं येह रक़म कभी भी क़बूल नहीं करूंगा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर येह दो हज़ार दीनार भी होते फिर भी मैं इन्हें क़बूल न करता ।" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस ख़ादिम से फ़रमाया : "येह रक़म वापस अपने ह़ाकिम के पास ले जाओ और उस से कहना कि येह तो ह़जाम ने भी क़बूल नहीं की, इसे आप अपने पास रखें और अपने उन उमूर में ख़र्च करें जो आप के ज़िम्मे हैं ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 35 : इसे कफ़न कौन देगा...... ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक मस्जिद में मुअज़्ज़िन थे । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मेरा एक नौ जवान पड़ोसी था, जैसे ही मैं अज़ान देता वोह फ़ौरन मस्जिद में आ जाता और हर नमाज़ मेरे साथ बा जमाअ़त पढ़ता, नमाज़ के फ़ौरन बा'द जूते पहनता और अपने घर की त़रफ़ रवाना हो जाता, मेरी येह ख़्वाहिश थी, ऐ काश ! येह नौ जवान मुझ से गुफ़्त-गू करे या मुझ से अपनी कोई ह़ाजत त़लब करे, फिर एक दिन वोह नौ जवान मेरे पास आया और कहने लगा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! क्या तुम मुझे कुछ देर के लिये आ़रियतन क़ुरआने पाक देता सकते हो ताकि मैं तिलावत कर सकूं ?" मैं ने उसे क़ुरआने पाक दे दिया, उस ने क़ुरआने ह़कीम को अपने सीने से लगाया और कहने लगा : "आज हमें ज़रूर कोई अ़ज़ीम वाक़िआ़ पेश आने वाला है ।" येह कह कर वोह नौ जवान अपने घर की त़रफ़ रवाना हो गया और सारा दिन मुझे नज़र न आया । मैं ने मग़रिब की अज़ान दी और नमाज़ पढ़ी लेकिन वोह नौ जवान न आया फिर इशा की नमाज़ में भी वोह न आया तो मुझे बड़ी तशवीश हुई । नमाज़ के फ़ौरन बा'द मैं उस के घर की त़रफ़ रवाना हो गया । जब वहां पहुंचा तो देखा कि उस नौ जवान की मय्यित वहां मौजूद है और एक त़रफ़ बाल्टी और लोटा पड़ा हुवा है और क़ुरआने पाक उस नौ जवान की गोद में है । मैं ने क़ुरआने पाक उठाया और लोगों को उस की मौत की ख़बर दी और फिर हम ने उसे उठा कर चारपाई पर रखा । मैं सारी रात येह सोचता रहा कि इस का कफ़न किस से मांगूं ? इसे कफ़न कौन देगा ? जब नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हुवा तो मैं ने अज़ान दी और फिर जैसे ही मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मुझे मेह़राब में एक नूर सा नज़र आया । जब वहां पहुंचा तो देखा कि एक कफ़न वहां पड़ा हुवा है, मैं ने उसे उठाया और अपने घर रख आया और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का शुक्र अदा किया कि उस ने कफ़न का मस्अला ह़ल फ़रमा दिया फिर मैं ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ना शुरूअ़ की जब सलाम फेरा तो देखा कि मेरी दाईं त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई, ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब फ़ारसी और ह़ज़रते सय्यिदुना सालिहुल मुर्री رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی मौजूद हैं । मैं ने उन से पूछा : "ऐ मेरे भाइयो ! आज सुब्ह़ सुब्ह़ आप लोग यहां कैसे तशरीफ़ लाए ? ख़ैरियत तो है ?" वोह फ़रमाने लगे : "क्या तुम्हारे पड़ोस में आज रात किसी का इन्तिक़ाल हुवा है ?" मैं ने कहा : "जी हां ! एक नौ जवान का इन्तिक़ाल हुवा है जो मेरे साथ ही नमाज़ पढ़ा करता था ।" उन्हों ने कहा : "हमें उस के पास ले चलो ।" मैं उन्हें ले कर उस नौ जवान के घर पहुंचा तो ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने उस के चेहरे से कपड़ा हटाया और उस के सज्दे वाली जगह को बोसा देने लगे, फिर फ़रमाया : "ऐ ह़ज्जाज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! मेरे मां बाप तुझ पर क़ुरबान ! जहां भी तेरा ह़ाल लोगों पर ज़ाहिर हुवा तूने उस जगह को छोड़ दिया और ऐसी जगह सुकूनत इख़्तियार कर ली जहां कोई तुझे जानने वाला न था ।"

इस के बा'द उन बुज़ुर्गों ने उस नौ जवान को ग़ुस्ल देना शुरूअ़ किया । उन में से हर एक के पास

एक कफ़न था, हर एक येही कहने लगा : "इस नौ जवान को मैं कफ़न दूंगा।" जब मुआ़-मला तूल पकड़ गया तो मैं ने उन से कहा : "मैं सारी रात इसी परेशानी में रहा कि इस नौ जवान को कफ़न कौन देगा, फिर सुब्ह़ जब मैं मस्जिद में आया और अज़ान देने के बा'द नमाज़ पढ़ने लगा तो सामने मेह़राब में मुझे येह कफ़न नज़र आया, मैं नहीं जानता कि किस ने येह कफ़न वहां रखा था।" इस पर सभी कहने लगे : "इस नौ जवान को येही कफ़न दिया जाएगा।" फिर हम ने उसे वोही कफ़न दिया और उसे ले कर क़ब्रिस्तान की त़रफ़ चल दिये, उस नौ जवान के जनाज़े में इतने लोग शरीक हुए कि हमें कन्धा देने का भी मौक़अ़ न मिल सका, मा'लूम नहीं कि इतने ज़ियादा लोग कहां से उस नौ जवान के जनाज़े में शिर्कत के लिये आ गए थे ?

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 36 : रेशमी कफ़न

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बरासी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बरज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बताया : "मेरी कफ़ालत में एक कोढ़ ज़दा नौ जवान दिया गया जिस के हाथ पाउं कटे हुए थे और आंखों से भी अन्धा था, मैं ने उसे कोढ़ ज़दा लोगों के साथ कर दिया, इसी त़रह़ काफ़ी दिन गुज़र गए कि मैं उस से बिल्कुल ग़ाफ़िल रहा। फिर मुझे उस का ख़याल आया, चुनान्चे मैं उस के पास गया और उस से कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तुम्हारा क्या ह़ाल है ? मैं तुम्हारी त़रफ़ से काफ़ी दिन ग़फ़्लत में रहा, तुम से तुम्हारा ह़ाल दरयाफ़्त न कर सका।"

वोह कहने लगा : "मेरा एक दोस्त है जिस की मह़ब्बत ने मेरी तमाम तक्लीफ़ों का इह़ात़ा किया हुवा है, उस की मह़ब्बत की वजह से मुझे अपना दर्द व ग़म मह़सूस नहीं होता, मेरा वोह दोस्त मुझ से कभी भी ग़ाफ़िल नहीं होता।"

मैं ने कहा : "(मुझे मुआ़फ़ करना) मैं तुम्हें भूल गया था।" वोह कहने लगा : "मुझे तुम्हारे भूलने की कोई परवाह नहीं, मुझे याद करने वाला मौजूद है, और येह कैसे हो सकता है कि एक दोस्त दूसरे दोस्त को याद न रखे, मेरा दोस्त हर वक़्त मेरा ख़याल रखता है।" मैं ने उस से कहा : "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी शादी किसी ऐसी औ़रत से करा दूं जो तुम्हारी इस गन्दगी को दूर कर दे और तुम्हारे ज़ख़्मों की देखभाल करे।" तो वोह रोने लगा, फिर एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और आस्मान की त़रफ़ नज़र उठाते हुए कहने लगा : "ऐ मेरे दिलो जान से प्यारे दोस्त ! " इतना कह कर उस पर बेहोशी त़ारी हो गई, फिर जब इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने उस से पूछा : "तुम क्या कहते हो ? क्या तुम्हारी शादी करा दूं ?" कहने

लगा : "तुम मेरी शादी कैसे कराओगे हालां कि मैं तो दुन्या का बादशाह और सरदार हूं।" मैं ने कहा : "तेरे पास दुन्या की कौन सी ने'मत है ?" हाथ पाउं तेरे नहीं, आंखों से तू अन्धा है और तू अपने मुंह से इस तरह खाता है जैसे जानवर खाते हैं, फिर भला तू दुन्या का सरदार कैसे हो सकता है ?" वोह कहने लगा : "मैं अपने मौला से राज़ी हूं कि उस ने मेरे जिस्म को आज़माइश में मुब्तला किया और मेरी ज़बान को अपने ज़िक्र से तरो ताज़ा रखा, येह मेरी सब से बड़ी खुश नसीबी है।"

फिर वोह शख़्स मेरे पास से चला गया और कुछ ही अ़र्सा बा'द उस का इन्तिक़ाल हो गया, मैं उस के लिये कफ़न ले कर आया जो कुछ बड़ा था, मैं ने बड़ा हिस्सा काट लिया और उस को कफ़न पहना कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर उसे दफ़्ना दिया गया, रात को मैं ने ख़्वाब देखा तो कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ ख़लफ़ ! तुम ने हमारे वली और दोस्त के कफ़न में कन्जूसी की, येह लो तुम्हारा कफ़न तुम्हें वापस दिया जाता है, और हम ने अपने इस वली को सुन्दुस व रेशम का क़ीमती कफ़न पहना दिया है। जब मैं बेदार हुवा तो मैं ने देखा कि मेरा दिया हुवा कफ़न घर में पड़ा हुवा था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 37 : चमक्ते हुए चराग़

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَارِث फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं मुल्के शाम रवाना हुवा, रास्ते में मेरी मुलाक़ात एक अ़जीबो ग़रीब शख़्स से हुई, उस के जिस्म पर एक फटा पुराना कुर्ता था जिस में जगह जगह गिर्हें लगी हुई थीं, वोह बड़ा हैरानो परेशान एक जगह बैठा हुवा था गोया कि वोह किसी ख़ौफ़नाक चीज़ से वहशत ज़दा है। मैं उस के क़रीब गया और कहा : "ऐ भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए, आप कहां से आए हैं ?" कहने लगा : "उसी के पास से आया हूं।" मैं ने पूछा : "कहां का इरादा है ?" कहने लगा : "उसी की त़रफ़।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम करे, नजात किस चीज़ में है ?" कहने लगा : "तक़्वा व परहेज़ गारी और उस ज़ात के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने में जिस के तुम त़ालिब हो।"

मैं ने कहा : "मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये।" वोह शख़्स कहने लगा : "मैं तुम्हें इस क़ाबिल नहीं समझता कि तुम नसीहत क़बूल करोगे।" मैं ने कहा : "اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं नसीहत क़बूल करूंगा।" येह सुन कर उस ने कहा : "लोगों से हमेशा दूर भागना, कभी उन की क़ुर्बत इख़्तियार न करना, दुन्या से हमेशा बे रग़्बत रहना वरना येह तुझे हलाकतों के मुंह में डाल देगी। जिस ने दुन्या की हक़ीक़त को जान लिया वोह कभी भी इस की त़रफ़ से मुत़्मइन नहीं होगा, जिस ने इस की तकालीफ़ को देख लिया उस ने उन तकालीफ़ की दवाएं भी तय्यार कर लीं, और जिस ने आख़िरत को जान लिया वोह उस के हुसूल में मगन हो गया। जो शख़्स भी आख़िरत की ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करता है वोह ज़रूर उन को त़लब करता है और मुश्किल

तरीन नेक आ'माल उस के लिये आसान हो जाते हैं। जब उन उख़्रवी ने'मतों की त़रफ़ हर समझदार का दिल माइल होता है तो जिस परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने येह ने'मतें बनाईं और उन्हें पाकीज़ा व सुरूर कुन बनाया वोह ज़ात इस बात की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि उस की त़रफ़ रग़्बत की जाए, और उसी की रिज़ा के लिये आ'माले सालिह़ा किये जाएं। लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द लोग मख़्लूक़ की बजाए ख़ालिक़ की त़रफ़ दिल लगाए हुए हैं, उसी की मह़ब्बत के असीर हैं। वोह परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपनी मह़ब्बत के जाम पिलाता है और येह लोग अपनी ज़िन्दगी में हर वक़्त उस की मह़ब्बत के प्यासे हैं, उन्हें सैरयाबी होती ही नहीं, वोह हर वक़्त अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के इ़श्क़ में मस्त रहते हैं।''

फिर वोह मुझ से मुख़ात़िब हो कर पूछने लगा : ''क्या तुम इन बातों को समझ चुके हो जो मैं ने बयान कीं ?'' मैं ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, जो कुछ आप ने बयान किया मैं वोह तमाम बातें समझ चुका हूं।'' कहने लगा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने तुम्हें येह बातें समझा दीं।'' येह कहते वक़्त उस के चेहरे पर एक ख़ुशी की लहर दौड़ गई, फिर मुझ से कहा : ''तुम्हारे लिये वोह लोग मश्अ़ले राह हैं जो उस की मह़ब्बत के प्यासे हैं और वोह जामे इ़श्क़ से सैर नहीं होते, उन के दिलों में ह़िक्मत के चश्मे मोजज़न हैं, येह लोग बहुत अ़क़्ल मन्द व तेज़ फ़ह्म हैं, इन की ख़्वाहिशात इन्हें गुमराह नहीं कर सकतीं और न ही कोई इन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत से ग़ाफ़िल कर सकता है, अपनी मज़बूती और दिलेरी में येह शेर की त़रह़ हैं, अपने तवक्कुल में ग़नी हैं, मुसीबतों में साबित क़दम रहने वाले हैं, मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा नर्म दिल और अनीस हैं, शर्मो ह़या के मुआ़-मले में बहुत शदीद हैं और अपने मक़ासिद में बहुत शरीफ़। न ग़ुरूर व तकब्बुर करते हैं, न ही झूटी आ़जिज़ी करते हैं। पस येह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुख़्लिस बन्दे और मख़्लूक़ के लिये चमक्ते हुए चराग़ हैं।''

फिर मुझ से कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन चन्द कलिमात का अच्छा सिला अ़त़ा फ़रमाए।'' फिर उस ने सलाम किया और जाने लगा तो मैं ने कहा : ''मैं आप की सोह़बत में रहना चाहता हूं।'' मगर उस ने इन्कार कर दिया और कहा : ''मैं तुझे याद रखूंगा तू मुझे याद रखना।'' येह कह कर वोह चला गया, और मैं वहीं खड़ा उसे देखता रहा।

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث फ़रमाते हैं : ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा बिन यूनुस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मेरी मुलाक़ात हुई और मैं ने उन्हें येह वाक़िआ़ सुनाया तो वोह फ़रमाने लगे कि ''उस ने तुझ से मह़ब्बत का इज़्हार किया, वोह बहुत नेक शख़्स है और उस का शुमार बड़े बड़े औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی में होता है, उस ने एक पहाड़ पर रिहाइश रखी हुई है, सिर्फ़ नमाज़े जुमुआ़ के लिये शहर में आता है और उस दिन सूखी लकड़ियां बेचता है, उन से जो रक़म मिलती है वोह उसे पूरे हफ़्ते किफ़ायत करती है। मुझे तो तअ़ज्जुब है कि उस ने तुझ से बातचीत की और तूने उस से सुनी हुई नसीह़तों को याद कर लिया।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 38 : ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब अपनी आंख निकाल दी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बहुत से लोगों को ले कर बारिश की दुआ़ करने चले, वह्य नाज़िल हुई कि "जब तक तुम्हारे साथ गुनाहगार लोग मौजूद हैं बारिश नहीं बरसाई जाएगी।" चुनान्चे आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ए'लान किया : "तुम में से जो जो गुनाहगार है वोह चला जाए, जिस ने कोई गुनाह किया हो वोह हमारे साथ न रुके।" येह सुन कर तमाम लोग वापस पलट गए लेकिन एक ऐसा शख़्स बाक़ी रहा जिस की एक आंख ज़ाएअ़ हो चुकी थी। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से दर्याफ़्त फ़रमाया : "तुम वापस क्यूं नहीं गए ?" वोह शख़्स अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रूह़ल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! मैं ने लम्ह़ा भर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं की, अलबत्ता ! एक मर्तबा बिला क़स्द मेरी नज़र एक अजनबी औ़रत के पाउं पर पड़ गई थी, अपने इस फ़े'ल पर मैं बहुत शरमिन्दा हुवा और अपनी सीधी आंख निकाल फेंकी। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मेरी दूसरी आंख ऐसी ख़त़ा करती तो मैं उसे भी निकाल फेंकता।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام रोने लगे और इतना रोए कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुबारक दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई, फिर उस शख़्स से फ़रमाया : "तू हमारे लिये दुआ़ कर मेरी निस्बत तू ज़ियादा दुआ़ करने का ह़क़दार है क्यूं कि मैं तो नुबुव्वत की वजह से गुनाहों से मा'सूम हूं, और तू मा'सूम भी नहीं लेकिन फिर भी सारी ज़िन्दगी गुनाहों से बचता रहा।"

चुनान्चे वोह शख़्स आगे बढ़ा और अपने हाथ बुलन्द कर दिये, फिर कुछ इस त़रह़ से बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तूने ही हमें पैदा फ़रमाया और तू हमारी पैदाइश से पहले भी जानता था कि हम क्या अ़मल करने वाले हैं, फिर भी तूने हमें पैदा फ़रमाया, जब तूने हमें पैदा फ़रमा दिया तो तू ही हमारे रिज़्क़ का कफ़ील है। ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें बाराने रह़मत अ़त़ा फ़रमा।"

रावी फ़रमाते हैं : उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) की जान है ! अभी वोह शख़्स दुआ़ से फ़ारिग़ भी न होने पाया था कि ऐसी बारिश आई गोया आस्मान फट पड़ा हो और उस की दुआ़ की ब-र-कत से प्यासे सैराब हो गए।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 39 : **ऐसे होते हैं डरने वाले !**

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं, मैं एक अंधेरी रात सफ़र पर रवाना हुवा, मैं रास्ते में एक जगह बैठ गया, अचानक मैं ने किसी नौ जवान के रोने की आवाज़ सुनी जो रोते हुए इस त़रह़ कह रहा था : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ने तेरी ना फ़रमानी तेरी मुख़ालिफ़त की बिना पर नहीं की और न ही गुनाह करते वक़्त मैं तेरे अ़ज़ाब से बे ख़बर था बल्कि मेरी बद बख़्ती ने गुनाह को मेरे लिये मुज़य्यन कर दिया, और मैं तेरी सि-फ़ते सत्तारी की वजह से गुनाहों पर दिलेर हो गया। तू बार बार मेरे गुनाहों पर पर्दा डालता रहा, मैं गुनाहों पर जुरअत करता रहा। हाए मेरी बरबादी ! अब मुझे तेरे अ़ज़ाब से कौन बचाएगा ? अगर तूने मुझ से तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर दिया तो मैं किस से रिश्ता क़ाइम करूंगा। हाए अफ़्सोस ! मैं ने सारी जवानी तेरी ना फ़रमानी में गुज़ार दी, मैं बार बार तौबा करता फिर गुनाह कर डालता, अब तो तौबा करते हुए शर्म आती है।"

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "उस नौ जवान की गिर्या व ज़ारी सुन कर मैं ने कुरआने पाक की येह आयत तिलावत की :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ (پ۲۸، تحریم:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर सख़्त कर्रे (त़ाक़त वर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं।"

जब मैं ने येह आयत तिलावत की तो मुझे एक चीख़ सुनाई दी और फिर ख़ामोशी त़ारी हो गई। इस के बा'द मैं वहां से आगे रवाना हो गया, सुब्ह़ जब मैं दोबारा उसी मकान के क़रीब आया तो वहां किसी का जनाज़ा रखा हुवा था, और एक बूढ़ी औ़रत वहां मौजूद थी। मैं ने उस से पूछा : "येह किस का जनाज़ा है ?" कहने लगी : "तू कौन है ? और इस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ कर मेरे ग़म को क्यूं ताज़ा करना चाहता है ?" मैं ने कहा : "मैं एक मुसाफ़िर हूं।" फिर उस बूढ़ी औ़रत ने बताया : "येह मेरे बेटे की लाश है, कल रात येह नमाज़ पढ़ रहा था कि कोई शख़्स गली से गुज़रा और उस ने ऐसी आयत पढ़ी जिस में जहन्नम की आग का तज़्किरा था, पस उस आयत को सुन कर मेरा बेटा तड़पने लगा और उस ने रोते रोते जान दे दी।"

येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار वहां से चले आए और अपने आप को मुख़ात़ब कर के फ़रमाने लगे : "ऐ इब्ने अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ! "**ऐसे होते हैं डरने वाले**।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 40 : तिलावते कुरआने करीम की चाश्नी

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار मेरे पास आए और फ़रमाने लगे : "कल सुब्ह़ फ़ुलां जगह पहुंच जाना, मेरे कुछ और दोस्त भी वहां पहुंच जाएंगे, फिर हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मुलाक़ात के लिये चलेंगे ।" मैं ने कहा : "ठीक है, मैं मुक़र्ररा वक़्त पर वहां पहुंच जाऊंगा ।" जब मैं सुब्ह़ उस जगह पहुंचा जहां का मुझे कहा गया था तो ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار मुझ से पहले ही वहां मौजूद थे और उन के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़, ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब رَحْمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ भी मौजूद थे । मैं ने उन सब को एक साथ देख कर दिल में कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज का दिन बहुत ख़ुश कुन होगा ।" फिर हम सब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ चल दिये । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने घर में इ़बादत के लिये एक जगह मख़्सूस कर रखी थी । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه "**बसरा शहर**" में सिर्फ़ नमाज़े जुमुआ़ के लिये तशरीफ़ लाते और नमाज़ के बा'द फ़ौरन ही वापस तशरीफ़ ले जाते ।

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "हम एक इन्तिहाई ख़ूब सूरत जगह से गुज़रे तो ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : "ऐ साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! इस जगह नमाज़ पढ़ लो, कल बरोज़े क़ियामत येह जगह तुम्हारी गवाही देगी ।" फिर हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के घर पहुंचे और उन के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो पता चला कि वोह नमाज़ पढ़ने गए हैं, हम उन का इन्तिज़ार करने लगे, कुछ ही देर बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तशरीफ़ लाए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه निहायत ग़मज़दा, परेशान ह़ाल और बहुत कमज़ोर थे, ऐसा लगता था जैसे अभी क़ब्र से निकल कर आ रहे हों । फिर उन्हों ने मुख़्तसर सी नमाज़ पढ़ी और निहायत ग़मगीन ह़ालत में एक जगह बैठ गए । उन से मुसा-फ़ह़ा करने के लिये सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه गए और उन्हों ने सलाम किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाब दिया और पूछा : "तुम कौन हो ? मैं तुम्हारी आवाज़ नहीं पहचान पाया ।" ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अ़र्ज़ की : "मैं बसरा से आया हूं ।" पूछा : "तुम्हारा नाम क्या है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाब दिया : "मेरा नाम मुह़म्मद बिन वासेअ़ है ।" येह सुन कर फ़रमाने लगे : "मरह़बा, मरह़बा ! क्या तुम ही मुह़म्मद बिन वासेअ़ हो जिन के मु-तअ़ल्लिक़ बसरा वाले येह कहते हैं कि सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले येही हैं, ख़ुश आ-मदीद बैठ जाइये ।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सलाम किया, उन से भी नाम पूछा तो उन्हों ने बताया : "मेरा नाम साबित बुनाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه है ।" येह सुन कर फ़रमाने लगे : "मरह़बा, ऐ साबित ! क्या तुम्हारे ही मु-तअ़ल्लिक़ लोगों में मशहूर है कि सब से ज़ियादा लम्बी नमाज़ पढ़ने वाले साबित बुनाई हैं, ख़ुश आ-मदीद ! आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) तशरीफ़ रखें ।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه सलाम के लिये ह़ाज़िर हुए । उन से पूछा : "तुम्हारा

नाम क्या है ?'' अ़र्ज़ की : ''ह़बीब ।'' फ़रमाया : ''क्या तुम ही वोह ह़बीब हो जिन के मु-तअ़ल्लिक़ मशहूर है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कभी किसी से कोई सुवाल नहीं करते, ख़ुश आ-मदीद ! तशरीफ़ रखिये ।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने सलाम किया और जब अपना नाम बताया तो फ़रमाया : ''मरह़बा ! मरह़बा ! ऐ मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ! तुम्हारे ही मु-तअ़ल्लिक़ मशहूर है कि तुम सब से ज़ियादा मुजा-हदा करने वाले हो ।'' फिर उन्हें भी अपने पास बिठा लिया ।

फिर मैं सलाम के लिये ह़ाज़िर हुवा । जब मेरा नाम पूछा तो मैं ने अपना नाम बताया, फ़रमाने लगे : ''अच्छा ! तुम्हारे ही मु-तअ़ल्लिक़ मशहूर है कि तुम क़ुरआन बहुत अच्छा पढ़ते हो, मेरी बड़ी ख़्वाहिश थी कि तुम से क़ुरआन सुनूं, आज मुझे क़ुरआन सुनाओ ।'' हुक्म मिलते ही मैं ने तिलावत शुरूअ़ कर दी । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी मैं तअ़व्वुज़ (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم) भी मुकम्मल न कर पाया था कि वोह बेहोश हो गए । जब इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाने लगे : ''ऐ सालेह़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! मुझे क़ुरआन सुनाओ ।'' चुनान्चे मैं ने क़ुरआने पाक की येह आयत तिलावत की :

وَقَدِمْنَاۤ اِلٰی مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰہُ ھَبَآءً مَّنْثُوْرًا۝

(پ۱۹، الفرقان:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं ।

जैसे ही उन्हों ने येह आयत सुनी एक चीख़ मारी और फिर उन के गले से अ़जीबो ग़रीब आवाज़ आने लगी और तड़पने लगे फिर यकदम साकित हो गए । हम उन के क़रीब पहुंचे तो देखा कि उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी, हम ने लोगों से पूछा : ''क्या इन के घर वालों में से कोई मौजूद है ?'' लोगों ने बताया : ''एक बूढ़ी औ़रत इन की ख़िदमत करती है ।'' जब उस बूढ़ी औ़रत को बुलाया गया तो उस ने पूछा : ''किस त़रह़ इन का इन्तिक़ाल हुवा ?'' हम ने बताया : '' उन के सामने क़ुरआन की एक आयत पढ़ी गई जिसे सुनते ही इन की रूह़ परवाज़ कर गई ।''

उस औ़रत ने पूछा : ''तिलावत किस ने की थी ? शायद ! ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तिलावत की होगी ।'' हम ने कहा : ''जी हां ! तिलावत तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ही ने की है लेकिन तुम इन्हें किस त़रह़ जानती हो ?'' कहने लगी : ''मैं इन्हें जानती तो नहीं मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर फ़रमाया करते थे कि अगर मेरे सामने ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने तिलावत की तो मैं उन की तिलावत सुनते ही मर जाऊंगा ।''

फिर उस औ़रत ने कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (की पुरदर्द आवाज़) ने हमारे ह़बीब को क़त्ल कर डाला ।'' येह कह कर वोह औ़रत रोने लगी । फिर हम सब ने मिल कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जहेज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तज्हीज़ो तक्फ़ीन की ।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 41 : अ़क्ल के चोर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहि़द बिन यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं एक राहिब के पास से गुज़रा जो लोगों से अलग थलग अपने सौ-मआ़ (या'नी इबादत ख़ाना) में रहता था। मैं ने उस से पूछा : "ऐ राहिब ! तू किस की इ़बादत करता है ?" कहने लगा : "मैं उस की इ़बादत करता हूं जिस ने मुझे और तुझे पैदा किया।" मैं ने पूछा : "उस की अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी का क्या आ़लम है ?" उस ने जवाब दिया : "वोह बड़ी अ़-ज़मत व मर्तबत का मालिक है, उस की अ़-ज़मत हर चीज़ से बढ़ कर है।" मैं ने पूछा : "इन्सान को दौलते इ़श्क़ कब नसीब होती है ?" तो वोह कहने लगा : "जब उस की मह़ब्बत बे ग़रज़ हो और वोह अपने मुआ़-मले में मुख़्लिस हो।"

मैं ने पूछा : "मह़ब्बत कब ख़ालिस व बे ग़रज़ होती है ?" उस ने जवाब दिया : "जब ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो और वोह मह़बूब की इत़ाअ़त में लग जाए।" मैं ने कहा : "मह़ब्बत में इख़्लास की पहचान क्या है ?" कहने लगा : "जब ग़मे फ़ुरक़त के इ़लावा कोई और ग़म न हो।"

मैं ने पूछा : "तुम ने ख़ल्वत नशीनी को क्यूं पसन्द किया ?" कहने लगा : "अगर तू तन्हाई व ख़ल्वत की लज़्ज़त से आशना हो जाए तो तुझे अपने आप से भी वह़शत मह़सूस होने लगे।"

मैं ने पूछा : "इन्सान को ख़ल्वत नशीनी से क्या फ़ाएदा ह़ासिल होता है ?" राहिब ने जवाब दिया : "लोगों के शर से अमान मिल जाती है और उन की आमदो रफ़्त की आफ़त से जान छूट जाती है।" मैं ने कहा : "मुझे कुछ और नसीह़त कर।" तो वोह कहने लगा : "हमेशा रिज़्क़े ह़लाल खाओ फिर जहां चाहो सो जाओ तुम्हें ग़म व परेशानी न होगी।" मैं ने पूछा : "राह़त व सुकून किस अ़मल में है ?" उस ने कहा : "ख़िलाफ़े नफ़्स काम करने में।" मैं ने पूछा : "इन्सान को राह़त व सुकून कब मुयस्सर आएगा ?" तो वोह कहने लगा : "जब वोह जन्नत में पहुंच जाएगा।"

मैं ने पूछा : "ऐ राहिब ! तूने दुन्या से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर इस सौ-मआ़ (या'नी इबादत ख़ाना) को क्यूं इख़्तियार कर लिया ?" कहने लगा : "जो शख़्स ज़मीन पर चलता है वोह औंधे मुंह गिर जाता है और दुन्यादारों को हर वक़्त चोरों का ख़ौफ़ रहता है, पस मैं ने दुन्यादारों से तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर लिया और दुन्या के फ़ित्ना व फ़साद से मह़फ़ूज़ रहने के लिये अपने आप को उस ज़ात के सिपुर्द कर दिया जिस की बादशाही ज़मीन व आस्मान में है, दुन्यादार लोग **अ़क्ल के चोर** हैं पस मुझे ख़ौफ़ हुवा कि येह मेरी अ़क्ल चुरा लेंगे और ह़क़ीक़ी बात येह है कि जब इन्सान अपने दिल को तमाम ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया और बुराइयों से पाक कर लेता है तो उस के लिये ज़मीन तंग हो जाती है (या'नी उसे दुन्या क़ैदख़ाना मा'लूम होती है) फिर वोह आस्मानों की त़रफ़ बुलन्दी चाहता है और क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ का मु-तमन्नी हो जाता है और इस बात को पसन्द करता है कि अभी फ़ौरन अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले।"

फिर मैं ने उस से पूछा : “ऐ राहिब ! तू कहां से खाता है ?” कहने लगा : “मैं ऐसी खेती से अपना रिज़्क़ ह़ासिल करता हूं जिसे मैं ने काश्त नहीं किया बल्कि इसे तो उस ज़ात ने पैदा फ़रमाया है जिस ने येह चक्की या'नी दाढ़ें मेरे मुंह में नस्ब कीं, मैं उसी का दिया हुवा रिज़्क़ खाता हूं।” मैं ने पूछा : “तुम अपने आप को कैसा मह़सूस करते हो ?” कहने लगा : “उस मुसाफ़िर का क्या ह़ाल होगा जो बहुत दुश्वार गुज़ार सफ़र के लिये बिग़ैर ज़ादे राह के रवाना हुवा हो, और उस शख़्स का क्या ह़ाल होगा जो अंधेरी और वह़शत नाक क़ब्र में अकेला रहेगा, वहां कोई ग़म ख़्वार व मूनिस न होगा फिर उस का सामना उस अ़ज़ीम व क़ह्हार ज़ात से होगा जो अह़्-कमुल ह़ाकिमीन है जिस की बादशाही तमाम जहानों में है।” इतना कहने के बा'द वोह राहिब ज़ारो क़ित़ार रोने लगा।

मैं ने पूछा : “तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?” कहने लगा : “मुझे जवानी के गुज़रे हुए वोह अय्याम रुला रहे हैं जिन में, मैं कुछ नेकी न कर सका और सफ़रे आख़िरत में ज़ादे राह की कमी मुझे रुला रही है, क्या मा'लूम मेरा ठिकाना जहन्नम है या जन्नत ?”

मैं ने पूछा : “ग़रीब कौन है ?” कहने लगा : “ग़रीब और क़ाबिले रह़्म वोह शख़्स नहीं जो रोज़ी के लिये शहर ब शहर फिरे बल्कि ग़रीब (और क़ाबिले रह़्म) तो वोह शख़्स है जो नेक हो और फ़ासिक़ों में फंस जाए।”

बार बार सिर्फ़ (ज़बान से) इस्तिग़्फ़ार करना (और दिल से तौबा न करना) तो झूटों का त़रीक़ा है, अगर ज़बान को मा'लूम हो जाता कि किस अ़ज़ीम ज़ात से मग़्फ़िरत त़लब की जा रही है तो वोह मुंह में ख़ुश्क हो जाती। जब कोई दुन्या से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करता है तो मौत उस का तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर देती है।

फिर वोह कहने लगा : “अगर इन्सान सच्चे दिल से तौबा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बड़े बड़े गुनाहों को भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है, और जब बन्दा गुनाहों को छोड़ने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर ले तो उस के लिये आस्मानों से फ़ुतूह़ात उतरती हैं, और उस की दुआ़एं क़बूल की जाती है, और उन दुआ़ओं की ब-र-कत से उस के सारे ग़म काफ़ूर हो जाते हैं।” राहिब की ह़िक्मत भरी बातें सुन कर मैं ने उस से कहा : “मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं, क्या तुम इस बात को पसन्द करोगे ?” तो वोह राहिब कहने लगा : “मैं तुम्हारे साथ रह कर क्या करूंगा, मुझे तो उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब नसीब है जो रज़्ज़ाक़ है और रूहों को क़ब्ज़ करने वाला है, वोही मौत व ह़यात देने वाला है, वोही मुझे रिज़्क़ देता है, कोई और ऐसी सिफ़ात का मालिक हो ही नहीं सकता (या'नी मुझे वोह ज़ात काफ़ी है, मैं किसी ग़ैर का मोह़ताज नहीं)।”

ह़िकायत नम्बर 42 : शहज़ादे की अंगूठी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अल फ़र्जुल आ़बिद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मुझे किसी ता'मीरी काम के लिये मज़दूर की ज़रूरत पड़ी, मैं बाज़ार आया और किसी ऐसे मज़दूर को तलाश करने लगा जो मेरी ख़्वाहिश के मुताबिक़ हो, यकायक मेरी नज़र एक नौ जवान पर पड़ी जो सब से आख़िर में बैठा हुवा था। चेहरा शराफ़त व इबादत के नूर से चमक रहा था, उस का जिस्म बहुत ही कमज़ोर था, उस के सामने एक ज़म्बील और रस्सी पड़ी हुई थी, उस ने ऊन का जुब्बा पहना हुवा था और एक मोटी चादर का तहबन्द बांधा हुवा था।

मैं उस के पास आया और पूछा : "ऐ नौ जवान ! क्या तुम मज़दूरी करोगे !" कहने लगा : "जी हां।" मैं ने पूछा : "कितनी उजरत लोगे ?" उस ने जवाब दिया : "एक दिरहम और एक दानिक़ (या'नी दिरहम का छटा हिस्सा) लूंगा।" मैं ने कहा : "ठीक है, मेरे साथ चलो।" वोह नौ जवान कहने लगा : "जैसे ही मुअज़्ज़िन ज़ोहर की अज़ान देगा मैं काम छोड़ कर नमाज़ की तय्यारी करूंगा और नमाज़ के बा'द दोबारा काम शुरूअ़ कर दूंगा, फिर जब अ़स्र की अज़ान होगी तो मैं फ़ौरन काम छोड़ कर नमाज़ की तय्यारी करूंगा और नमाज़ के बा'द काम करूंगा, अगर तुम्हें येह शर्त़ मन्ज़ूर है तो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं वरना कोई और मज़दूर ढूंड लो।" मैं ने कहा : "मुझे तुम्हारी येह शर्त़ मन्ज़ूर है।" मैं उसे ले कर अपने घर आया और काम की तफ़्सील बता दी, उस ने काम के लिये कमर बांधी और अपने काम में मश्ग़ूल हो गया। और मुझ से कोई बात न की। जब मुअज़्ज़िन ने ज़ोहर की अज़ान दी तो उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुअज़्ज़िन ने अज़ान दे दी है।" मैं ने कहा : "आप जाइये और नमाज़ की तय्यारी कीजिये।" नमाज़ से फ़राग़त के बा'द वोह अ़ज़ीम नौ जवान दोबारा अपने काम में मश्ग़ूल हो गया और बड़ी दियानत दारी से अह़सन अन्दाज़ में काम करने लगा। अ़स्र की अज़ान होते ही उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्दुल्लाह मुअज़्ज़िन अज़ान दे चुका।" मैं ने कहा : "जाइये और नमाज़ पढ़ लीजिये।" नमाज़ के बा'द वोह दोबारा काम में मश्ग़ूल हो गया और ग़ुरूबे आफ़्ताब तक काम करता रहा फिर मैं ने उसे तै शुदा उजरत दी और वोह वहां से रुख़्सत हो गया।

कुछ दिनों के बा'द मुझे दोबारा मज़दूर की ज़रूरत पड़ी तो मुझ से मेरी ज़ौजा ने कहा : "उसी नौ जवान को ले कर आना क्यूं कि उस के अ़मल से हमें बहुत नसीह़त ह़ासिल हुई है और वोह बहुत दियानत दार है।" चुनान्चे मैं बाज़ार गया तो मुझे वोह नौ जवान कहीं नज़र न आया। मैं ने लोगों से उस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो वोह कहने लगे : "क्या आप उसी कमज़ोर व नह़ीफ़ नौ जवान के बारे में पूछ रहे हैं जो सब से आख़िर में बैठता है ?" मैं ने कहा : "जी हां, मैं उसी के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ रहा हूं।" तो उन्हों ने कहा : "वोह तो सिर्फ़ हफ़्ता के दिन आता है, इस के इ़लावा किसी दिन काम नहीं करता।" येह सुन कर मैं वापस आ गया और हफ़्ते का इन्तिज़ार करने लगा फिर बरोज़ हफ़्ता मैं दोबारा बाज़ार गया तो मैं ने उस पुर कशिश और अ़ज़ीम नौ जवान को उसी जगह मौजूद पाया। मैं उस के पास गया और उस से

पूछा : "क्या तुम मज़्दूरी करोगे ?" उस ने कहा : "जी हां, लेकिन मेरी वोही शराइत़ होंगी जो मैं ने पहले बताई थीं।" मैं ने कहा : "मुझे मन्ज़ूर है, तुम मेरे साथ चलो।" वोह मेरे साथ मेरे घर आया और मैं ने उसे काम की तफ़्सील बता दी वोह बड़ी दियानत दारी से पहले की त़रह़ काम करता रहा और उस ने कई मज़्दूरों जितना काम किया, शाम को मैं ने उसे तै शुदा उजरत से ज़ियादा रक़म देना चाही तो उस ने ज़ाइद रक़म लेने से इन्कार कर दिया। मैं ने बहुत इस्रार किया मगर वोह न माना और उजरत लिये बिग़ैर ही वहां से जाने लगा मुझे इस बात से बड़ा रन्ज हुवा कि वोह बिग़ैर उजरत लिये ही जा रहा है। मैं ने उस का पीछा किया और ब सद आ़जिज़ी उसे उजरत दी। उस ने ज़ाइद रक़म वापस कर दी और तै शुदा मज़्दूरी ले कर वहां से रवाना हो गया। कुछ दिनों के बा'द जब दोबारा हमें मज़्दूर की ज़रूरत पड़ी तो मैं हफ़्ता के दिन बाज़ार गया और उसी नौ जवान को तलाश करने लगा लेकिन वोह मुझे कहीं नज़र न आया मैं ने उस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो लोगों ने बताया कि वोह हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन काम करता है और मज़्दूरी में एक दिरहम और एक दानिक (या'नी दिरहम का छटा हिस्सा) उजरत लेता है, वोह रोज़ाना एक दानिक अपने इस्ति'माल में लाता है। आज वोह बीमार था इस लिये नहीं आया। मैं ने पूछा : "वोह कहां रहता है ?" लोगों ने बताया : "फ़ुलां मकान में रहता है।" मैं वहां पहुंचा तो वोह एक बुढ़िया के मकान में मौजूद था। बुढ़िया ने बताया कि येह कई दिनों से बीमार है। मैं उस के पास पहुंचा तो देखा कि वोह सख़्त बीमारी में मुब्तला है और ईंटों का तकिया बनाया हुवा है, मैं ने उसे सलाम किया और पूछा : "ऐ मेरे भाई ! क्या तुम्हारी कोई ह़ाजत है ?" कहने लगा : "जी हां, मुझे तुम से एक ज़रूरी काम है, क्या तुम उसे पूरा करोगे ?" मैं ने कहा : "اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّ وَجَلَّ मैं तुम्हारा काम ज़रूर पूरा करूंगा, बताओ ! क्या काम है ?"

उस नौ जवान ने कहा : "जब मैं मर जाऊं तो येह लोटा और ज़म्बील बेच कर गोरकन को उजरत दे देना और कफ़न के लिये मुझे मेरा येही ऊन का जुब्बा और चादर काफ़ी है, मुझे इसी लिबास में सिपुर्दे ख़ाक कर देना और मेरी जेब में एक अंगूठी है उसे अपने पास रखना और मेरी तदफ़ीन के बा'द उसे अमीरुल मुअमिनीन हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد के पास ले जाना, जब उन की शाही सुवारी फ़ुलां दिन फ़ुलां मक़ाम से गुज़रे तो उन्हें कहना : "मेरे पास आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक अमानत है फिर उन्हें येह अंगूठी दिखा देना, वोह ख़ुद ही तुम्हें अपने पास बुला लेंगे और इस बात का ख़याल रखना कि येह काम मेरी तदफ़ीन के बा'द ही करना।" मैं ने कहा : "ठीक है, मैं तुम्हारी वसिय्यत पर अ़मल करूंगा।"

फिर उस अ़ज़ीम नौ जवान की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। मुझे उस की मौत का बहुत दुख हुवा, बहर ह़ाल मैं ने उस की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन की और फिर इन्तिज़ार करने लगा कि ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد की सुवारी किस दिन निकलती है। जब वोह दिन आया तो मैं रास्ते में बैठ गया, अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जाहो जलाल के आ़लम में हज़ारों शह सुवारों के साथ बड़ी शानो शौकत से चले आ रहे थे। जब उन की सुवारी मेरे क़रीब से गुज़री तो मैं ने बुलन्द आवाज़ से कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)! मेरे पास आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

की एक अमानत है।" फिर मैं ने वोह अंगूठी दिखाई, उन्हों ने अंगूठी देख कर हुक्म दिया कि इसे हमारे मेहमान ख़ाने में ले जाओ मैं इस से अ़लाह़िदगी में गुफ़्त-गू करूंगा।

चुनान्चे मुझे महल में पहुंचा दिया गया, जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد की वापसी हुई तो उन्हों ने मुझे अपने पास बुलाया और बाक़ी तमाम लोगों को बाहर जाने का हुक्म दिया, फिर मुझ से पूछा : "तुम कौन हो ?" मैं ने कहा : "मेरा नाम अ़ब्दुल्लाह बिन फ़र्ज है।" उन्हों ने पूछा : "तुम्हारे पास येह अंगूठी कहां से आई ?" मैं ने उस अ़ज़ीम नौ जवान का सारा वाक़िआ़ ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد को सुना दिया।

येह सुन कर वोह इस क़दर रोए कि मुझे उन पर तरस आने लगा। फिर जब वोह मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए तो मैं ने उन से पूछा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ! उस नौ जवान से आप का क्या रिश्ता था ?" आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "वोह मेरा बेटा था।" मैं ने पूछा : "उस की येह ह़ालत कैसे हुई ?" आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "वोह मुझे ख़िलाफ़त मिलने से पहले पैदा हुवा था।" हम ने उस की ख़ूब नेक माह़ोल में परवरिश की और उस ने कुरआन का इ़ल्म सीखा फिर जब मुझे ख़िलाफ़त की ज़िम्मादारी सोंपी गई तो उस ने मुझे छोड़ दिया, और मेरी दुन्यावी दौलत से कोई फ़ाएदा ह़ासिल न किया, येह अपनी मां का बहुत फ़रमां बरदार था, मैं ने इस की मां को एक अंगूठी दी जिस में बहुत ही क़ीमती याक़ूत था और उस से कहा : "येह मेरे बेटे को दे दो ताकि ब वक़्ते ज़रूरत इसे बेच कर अपनी ह़ाजत पूरी कर सके।" इस के बा'द वोह हमें छोड़ कर चला गया और हमें उस के मु-तअ़ल्लिक़ बिल्कुल मा'लूमात न मिल सकीं, आज तुम ने उस के मु-तअ़ल्लिक़ बताया है, फिर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ रोने लगे और कहा : "आज रात मुझे उस की क़ब्र पर ले चलना।"

जब रात हुई और हम दोनों उस की क़ब्र पर पहुंचे तो ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد उस की क़ब्र के पास बैठ गए और ज़ारो क़ित़ार रोना शुरूअ़ कर दिया और सारी रात रोते रोते गुज़ार दी जब सुब्ह़ हुई तो हम वहां से वापस आ गए। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ मुझ से फ़रमाने लगे : "तुम रोज़ाना रात के वक़्त मेरे पास आया करो, हम दोनों उस की क़ब्र पर आया करेंगे।" चुनान्चे मैं हर रात उन के पास जाता, वोह मेरे साथ क़ब्र पर आते और रोना शुरूअ़ कर देते फिर वापस चले जाते। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "मुझे मा'लूम नहीं था कि वोह नौ जवान ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन हारूनुर्रशीद عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد का शहज़ादा था। मुझे तो उस वक़्त मा'लूम हुवा जब ख़ुद अमीरुल मुअमिनीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने बताया कि वोह मेरा बेटा था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 43 : तीस हज़ार दिरहम

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन अस्वद किलाबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को मैं ने अपने बाग़ की देख भाल के लिये अजीर (या'नी मुलाज़िम) रखा, तक़रीबन एक साल बा'द मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ बाग़ में गया और हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से कहा : ''हमारे लिये चन्द मीठे अनार तोड़ लाओ।'' वोह गए और चन्द अनार हमारे सामने रखे। जब हम ने उन्हें खाया तो वोह बहुत खट्टे थे, मैं ने उन से कहा : ''तुम्हें इस बाग़ में पूरा एक साल गुज़र चुका है, अभी तक तुम्हें मीठे और खट्टे अनारों की भी पहचान न हो सकी ?'' तो वोह फ़रमाने लगे : ''आप मुझे बता दीजिये कि किस दरख़्त के अनार मीठे हैं, मैं अभी हाज़िर कर दूंगा।'' फिर मैं ने उन्हें मीठे अनारों के बारे में बताया तो वोह मीठे अनार ले आए।

फिर एक शख़्स उम्दा ऊंट पर सुवार हो कर हमारे पास आया और उस ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के बारे में पूछा : ''इब्राहीम बिन अदहम कौन हैं ?'' मैं ने उसे बताया : ''आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ुलां जगह मौजूद हैं।'' वोह शख़्स आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दस्त बोसी की और निहायत मुअद्दबाना अन्दाज़ में खड़ा हो गया। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम यहां किस सिल्सिले में आए हो ?'' वोह शख़्स कहने लगा : ''मैं ''**बल्ख़ शहर**'' से आया हूं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चन्द गुलामों का इन्तिक़ाल हो गया है, मैं उन का माल ले कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा हूं। येह तीस हज़ार दिरहम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही के हैं, आप इन्हें क़बूल फ़रमा लें।''

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : ''तुम्हें मेरे पास आने की क्या ज़रूरत थी ?'' वोह कहने लगा : ''हुज़ूर ! मैं इतनी दूर से सफ़र की तकालीफ़ बरदाश्त कर के हाज़िर हुवा हूं, बराए करम ! येह रक़म क़बूल फ़रमा लीजिये।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''एक चादर बिछाओ और सारा माल उस पर डाल दो।'' उस ने ऐसा ही किया। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''इस माल के बराबर बराबर तीन हिस्से करो।'' उस ने तीन हिस्से कर दिये तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''एक हिस्सा तेरे लिये क्यूं कि तू सफ़र की सुऊबतें और मुश्किलात बरदाश्त कर के यहां पहुंचा है, और दूसरा हिस्सा ले जाओ और इसे बल्ख़ के गु-रबा व मसाकीन में तक़्सीम कर देना।''

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना यह्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए जिन के बाग़ में आप बतौरे अजीर काम करते थे और उन से फ़रमाया : ''येह एक हिस्सा तुम ले लो और इसे ''**अस्क़लान**'' के गु-रबा व फु-क़रा में तक़्सीम कर देना।'' इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से तशरीफ़ ले गए और उन तीस हज़ार दराहिम में से एक दिरहम भी न लिया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 44 : दुश्वार गुज़ार घाटी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد ख़लीफ़ा बन गए तो एक दिन मैं उन से मुलाक़ात के लिये गया। वोह कुछ लोगों में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं उन्हें न पहच॰ान सका लेकिन उन्हों ने मुझे पहचान लिया और फ़रमाया : "ऐ अबू ह़ाज़िम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم) ! मेरे क़रीब आओ।" मैं उन के क़रीब गया और अ़र्ज़ की : "क्या आप ही अमीरुल मुअमिनीन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد) हैं ?" उन्हों ने फ़रमाया : "जी हां मैं ही उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हूं।"

मैं बहुत ह़ैरान हुवा और अ़र्ज़ की : "जिस वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मदीनए मुनव्वरह में हमारे अमीर थे उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ह़ुस्नो जमाल उ़रूज पर था, चेहरा इन्तिहाई ताबां और रोशन था, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास बेहतरीन लिबास और बहुत ही उ़म्दा सुवारियां थीं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कसीर ख़ुद्दाम थे, और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रिहाइश गाह बहुत ही उ़म्दा थी। अब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को किस चीज़ ने इस ह़ाल में पहुंचा दिया ? ह़ालां कि अब तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अमीरुल मुअमिनीन हैं, अब तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास ज़ियादा आसाइशें होनी चाहिये थीं।" अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد येह सुन कर रोने लगे और फ़रमाया : "ऐ अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم ! उस वक़्त मेरा क्या ह़ाल होगा जब मैं अंधेरी क़ब्र में पहुंच जाऊंगा और मेरी आंखें बह कर मेरे रुख़्सारों पर आ जाएंगी, मेरा पेट फट जाएगा, ज़बान ख़ुश्क हो जाएगी और कीड़े मेरे जिस्म पर रेंग रहे होंगे चाहे मैं कितना ही इन्कार करूं।"

फिर रोते हुए फ़रमाने लगे : "ऐ अबू ह़ाज़िम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم) ! मुझे वोह ह़दीस सुनाओ जो तुम ने मुझे मदीनए मुनव्वरह में सुनाई थी।" तो मैं ने कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह फ़रमाते हुए सुना कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"तुम्हारे सामने दुश्वार गुज़ार घाटी है जिस से सिर्फ़ कमज़ोर और नह़ीफ़ लोग ही गुज़र सकेंगे।"**

(حلية الاولياء،مسند عمر بن عبد العزيز،رقم:۷۲۹۸،ج۵،ص۳۳۳)

येह ह़दीसे पाक सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد बहुत देर तक रोते रहे, फिर फ़रमाया : "ऐ अबू ह़ाज़िम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم) ! क्या मेरे लिये येह बेहतर नहीं कि मैं अपने जिस्म को कमज़ोर व नह़ीफ़ बना लूं ताकि उस होलनाक वादी से गुज़र सकूं ? लेकिन मुझे इस ख़िलाफ़त की आज़माइश में मुब्तला कर दिया गया है, पस मा'लूम नहीं कि मुझे नजात मिलेगी या नहीं।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ग़शी त़ारी हो गई। लोगों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मु-तअ़ल्लिक़ बातें बनाना शुरूअ़ कर दीं, मैं ने लोगों से कहा : "तुम अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मु-तअ़ल्लिक़ बातें न बनाओ, तुम्हें क्या मा'लूम ! येह किस मुसीबत से दो चार हैं।"

फिर उन्हों ने अचानक रोना शुरूअ़ कर दिया और इतना ज़ोर से रोए कि हम सब ने उन की आवाज़ सुनी, फिर यकदम हंसने लगे। मैं ने कहा : "ह़ुज़ूर ! हम ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बड़ी तअ़ज्जुब ख़ैज़ ह़ालत में देखा। पहले तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ूब रोए फिर हंसना शुरूअ़ कर दिया, इस में क्या राज़ है ?" उन्हों ने पूछा : "क्या तुम ने मुझे इस ह़ालत में देख लिया ?" मैं ने कहा : "जी हां ! हम सब ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की येह तअ़ज्जुब ख़ैज़ ह़ालत देखी है।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाने लगे : "ऐ अबू ह़ाज़िम (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم) ! बात दर अस्ल येह है कि जब मुझ पर ग़शी त़ारी हुई तो मैं ने ख़्वाब देखा कि क़ियामत क़ाइम हो चुकी है, और मख़्लूक़ ह़िसाबो किताब के लिये मैदाने मह़शर में जम्अ़ है, तमाम उम्मतों की 120 सफ़ें हैं जिन में से अस्सी (80) सफ़ें उम्मते मुह़म्मदिय्यह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की हैं। तमाम लोग मुन्तज़िर हैं कि कब ह़िसाब किताब शुरूअ़ होता है।

अचानक निदा दी गई : "अ़ब्दुल्लाह बिन उ़स्मान अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) कहां हैं ?" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़िरिश्तों ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया। उन से मुख़्तसर ह़िसाब लिया गया और उन्हें दाईं जानिब जन्नत की त़रफ़ जाने का हुक्म हुवा। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को आवाज़ दी गई। वोह भी बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किये गए और मुख़्तसर ह़िसाब के बा'द उन्हें भी जन्नत का मुज़्दा सुना दिया गया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भी मुख़्तसर ह़िसाब के बा'द जन्नत में जाने का हुक्म सुनाया गया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को निदा दी गई। चुनान्चे वोह भी बारगाहे अह़-कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर हो गए और उन्हें भी मुख़्तसर ह़िसाब के बा'द जन्नत का परवाना मिल गया।

जब मैं ने देखा कि अब मेरी बारी आने वाली है तो मैं मुंह के बल गिर पड़ा और मुझे मा'लूम नहीं कि ख़ु-लफ़ाए अर-बआ़ رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के बा'द वालों के साथ क्या मुआ़-मला पेश आया, फिर निदा दी गई कि उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ कहां है ? मेरी ह़ालत ख़राब होने लगी और मैं पसीने में शराबोर हो गया, मुझे बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया गया और मुझ से ह़िसाब किताब शुरूअ़ हुवा और हर उस फ़ैसले के बारे में पूछा गया जो मैं ने किया ह़त्ता कि गुठली, उस के धागे और गुठली के छिल्के तक के बारे में पूछ गछ की गई, फिर मुझे बख़्श दिया गया (और जन्नत में जाने का हुक्म सादिर हुवा) रास्ते में मेरी मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से हुई जो गले सड़े जिस्म के साथ राख पर पड़ा था। मैं ने फ़िरिश्तों से पूछा : "येह कौन है ?" तो फ़िरिश्तों ने कहा : "आप इस से बात कीजिये, येह आप को जवाब देगा।" मैं उस के पास गया और उसे ठोकर मारी तो उस ने आंखें खोल दीं और सर उठा कर मेरी त़रफ़ देखने लगा। मैं ने उस से पूछा : "तू कौन है ?" उस ने कहा : "आप कौन हो ?" मैं ने कहा : "मैं उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हूं।" फिर उस ने पूछा : "अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" मैं ने कहा : "मुझे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्लो करम से बख़्श दिया और मेरे साथ भी

वोही मुआ-मला फ़रमाया जो खु़-लफ़ाए अर-बआ़ عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के साथ फ़रमाया और मुझे भी जन्नत में जाने का हुक्म हुवा है। इन के इ़लावा बाक़ी लोगों के बारे में मुझे मा'लूम नहीं कि उन के साथ क्या मुआ-मला हुवा।" वोह शख़्स कहने लगा : "आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को बहुत बहुत मुबारक हो कि आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ काम्याब हो गए।" मैं ने पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने कहा : "मेरा नाम ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ है, मुझे जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किया गया तो मैं ने अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ को बहुत ग़ज़बो क़ह्र के आ़लम में पाया और मुझे हर उस क़त्ल के बदले सख़्त अ़ज़ाब दिया गया जो मैं ने दुन्या में किया था जिन त़रीक़ों से मैं ने दुन्या में बे गुनाह लोगों को क़त्ल किया था उन्ही त़रीक़ों से मुझे भी सख़्त अ़ज़ाब दिया गया। अब में यहां पड़ा हुवा हूं और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का उम्मीद वार हूं जिस त़रह़ कि सब मुवह़्ह़िदीन मुन्तज़िर हैं। अब या तो हमारा ठिकाना जन्नत होगा या जहन्नम।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد के इस ख़्वाब के बा'द मैं ने अ़ह्द कर लिया कि आइन्दा कभी भी किसी मुसल्मान को क़त़ई जहन्नमी नहीं कहूंगा।" (या'नी बन्दा चाहे कितना ही गुनाहगार क्यूं न हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बड़ी वसीअ़ है वोह जिसे चाहे बख़्श दे)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 45 : मक्कार सांप

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़यैना رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना हु़मैरी बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ शिकार के लिये गए। जब वोह एक वीरान जगह पहुंचे तो अचानक उन की सुवारी के सामने एक सांप आ गया और अपनी दुम पर खड़ा हो गया और बड़ी लजाजत से ह़ज़रते सय्यिदुना हु़मैरी बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "(खु़दा के लिये) मुझे मेरे दुश्मन से पनाह दीजिये, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को अपने अ़र्शे अ़ज़ीम के साए में उस दिन पनाह देगा जिस दिन उस के अ़र्श के इ़लावा कोई साया न होगा, बराए करम ! मुझे मेरे दुश्मन से बचा लीजिये वरना वोह मेरे टुकड़े टुकड़े कर देगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना हु़मैरी बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "मैं तुझे कहां छुपाऊं ?" वोह सांप कहने लगा : "अगर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ नेकी करना चाहते हैं तो मुझे अपने पेट में पनाह दे दीजिये।" आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने पूछा : "आख़िर तू है कौन और मुझ से पनाह क्यूं चाहता है ?" सांप ने कहा : "मैं मुसल्मान हूं, मुझे मुसल्मान समझ कर पनाह दे दीजिये।" ह़ज़रते सय्यिदुना हु़मैरी बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस के लिये अपना मुंह खोल दिया और उसे अपने पेट में जाने दिया। कुछ देर के बा'द एक नौ जवान आया जिस ने एक तेज़ तलवार अपने कन्धे पर

लटकाई हुई थी। उस ने आते ही कहा : "ऐ शैख़ ! क्या तुम ने एक सांप देखा है ? मुझे गुमान है कि शायद तुम ने उसे अपनी चादर में छुपा रखा है।" ह़ज़रते सय्यिदुना हुमैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : "मैं ने किसी सांप को नहीं देखा।" नौ जवान येह बात सुन कर वहां से चला गया। उस नौ जवान के जाते ही सांप ने अपना मुंह निकाला और पूछा : "क्या मेरा दुश्मन जा चुका ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "हां ! वोह जा चुका, अब तू भी मेरे जिस्म से बाहर आ जा ताकि मुझे तक्लीफ़ न हो।" तो वोह **मक्कार सांप** कहने लगा : "अब तो मैं तेरे जिस्म से बाहर नहीं आऊंगा, अब तेरे लिये दो रास्ते हैं या तो मैं तुझे ज़हर से हलाक कर दूंगा या तेरे दिल में सूराख़ कर दूंगा।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से कहा : "तू मुझे किस दुश्मनी की वजह से सज़ा देना चाहता है ?" सांप ने कहा : "तू बहुत अह़मक़ है कि तूने मुझे नेकी के लिये मुन्तख़ब किया, क्या तू मुझे नहीं जानता कि मैं ने तेरे बाप आदम से किस त़रह़ दुश्मनी की आख़िर तूने मेरे साथ एह़सान क्यूं किया ? आख़िर तुझे मुझ से क्या लालच था, न तो मेरे पास मालो दौलत है और न ही कोई सुवारी वग़ैरा है कि जिसे बत़ौरे इन्आ़म तुझे दूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं ने तो सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये तेरे साथ नेकी की थी, अगर तू मुझे मारना ही चाहता है तो मुझे पहाड़ पर जाने दे ताकि मैं वहीं रह कर अपनी जान दे दूं।" सांप ने कहा : "ठीक है, तुम पहाड़ पर चले जाओ।" चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पहाड़ पर आए और मौत का इन्तिज़ार करने लगे।

जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पहाड़ पर पहुंचे तो अचानक वहां एक नौ जवान नज़र आया जिस का चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ रोशन था, उस ने कहा : "ऐ शैख़ ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه यहां ज़िन्दगी से मायूस हो कर मौत का इन्तिज़ार क्यूं कर रहे हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सांप वाला सारा वाक़िआ़ बताया और कहा : "अब सांप मेरे पेट में मौजूद है, मैं ने तो इसे दुश्मन से बचाने के लिये पनाह दी थी मगर येह मुझे मारना चाहता है।"

उस नौ जवान ने कहा : "मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मदद के लिये आया हूं।" फिर उस ने अपनी चादर से एक बूटी निकाली और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को खिलाई। जैसे ही आप ने वोह बूटी खाई आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का चेहरा मु-तग़य्यर हो गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कप-कपाने लगे फिर उस नौ जवान ने दोबारा वोही बूटी खिलाई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पेट में शदीद हलचल हुई और दर्द सा मह़सूस होने लगा, फिर जब तीसरी बार वोह बूटी खिलाई तो सांप टुकड़े टुकड़े हो कर पीछे के मक़ाम से निकल गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को सुकून ह़ासिल हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस नौ जवान से पूछा : "ऐ मोह़सिन ! आप येह तो बताओ कि आप कौन हो ? आज आप ने मुझ पर बहुत बड़ा एह़सान किया है।"

वोह नौ जवान कहने लगा : "क्या आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझे नहीं पहचाना ? अरे मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नेक अ़मल हूं। जब सांप ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को धोका दिया और आप

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की जान के दर पै हो गया तो तमाम मलाएका ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस को सांप के शर से मह़फ़ूज़ रख।" चुनान्चे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां बन्दे के नेक अ़मल ! तू जा कर मेरे बन्दे की मदद कर और उस से कह कि तूने मह़ज़ हमारी रिज़ा की ख़ातिर नेकी की, जा तेरी इस नेकी के बदले हम ने तुझे एह़सान करने वालों में शामिल कर लिया और हम तेरा अन्जाम भी मुह़सिनीन के साथ फ़रमाएंगे और हम तेरे दुश्मनों से तेरी हि़फ़ाज़त करेंगे।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

वज़ाह़त : येह हि़कायत इस लिये पेश की गई है कि गुनाह व मआ़सी से इन्सान को हमेशा दूर रहना चाहिये वरना शैत़ान हर त़रह़ इन्सान को वर-ग़लाने की कोशिश करता है और इस हि़कायत से येह भी मा'लूम हुवा कि अगर इन्सान मह़ज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये नेकी करे तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُه उस की मदद फ़रमाता है, और येह भी मा'लूम हुवा कि शैत़ान इन्सान का खुला दुश्मन है वोह हर सूरत में आ कर हर त़रह़ की झूटी क़स्में खा कर इन्सान को वर-ग़लाता है लिहाज़ा समझदार वोही है जो अपने दुश्मन की जानिब से हर वक़्त चोकन्ना रहे, और उस के हर वार को नाकाम बना दे।

हि़कायत नम्बर 46 :

मक़्सद में काम्याबी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सह्ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : मैं तक़रीबन तीस साल ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की सोह़बते बा ब-र-कत में रहा, एक दिन उन्हों ने मुझ से पूछा : "ऐ ह़ातिम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم) ! तुम इतने दिन हमारे साथ रहे, तुम ने क्या सीखा ?" मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोह़बत में रह कर जो अहम बातें सीखी थीं, वोह बयान करनी शुरूअ़ कर दीं कि "जब मैं ने ग़ौर किया तो मा'लूम हुवा कि मेरे रिज़्क़ का मालिक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त है, मेरे हि़स्से का रिज़्क़ उसी की मिल्किय्यत में है तो मैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के इ़लावा तमाम मख़्लूक़ से बे नियाज़ हो गया।

फिर मैं ने देखा कि अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन ने मुझ पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमाए हैं जो मेरी हर बात को लिखते हैं तो मैं ने अपने ऊपर येह बात लाज़िम कर ली कि ह़क़ के सिवा कुछ न बोलूंगा। फिर मैं ने ग़ौर किया कि मख़्लूक़ की नज़र ज़ाहिर पर होती है और ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ इन्सान की बात़िनी कैफ़िय्यत को देखता है तो मैं ने अपने बात़िन की इस्लाह़ में तगो दौ शुरूअ़ कर दी और लोगों से पहलू तही इख़्तियार कर ली।

फिर जब मैं ने देखा कि म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हमें अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में ज़रूर ले जाएंगे, तो मैं ने अपने आप को उन की आमद से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होने के लिये तय्यार कर लिया ताकि उन की आमद के वक़्त मैं किसी चीज़ की त़रफ़ मोह़ताज न होउं।''

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने फ़रमाया : ''ऐ ह़ातिमे असम ! तुम्हारी कोशिश बेकार न गई बल्कि तुम अपने मक़्सद में काम्याब हो गए।''

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : ''एक मर्तबा मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''लोग चार चीज़ों का दा'वा तो करते हैं लेकिन उन का अ़मल उन के दा'वे के बिल्कुल ख़िलाफ़ है :

(1)...... लोग दा'वा तो येह करते हैं कि हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ुलाम हैं मगर वोह अ़मल आज़ाद लोगों वाले करते हैं।

(2)...... उन का दा'वा तो येह है कि हमारे रिज़्क़ का कफ़ील अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ही है लेकिन वोह इस बात पर मुत्मइन नहीं होते।

(3)...... उन का दा'वा तो येह है कि आख़िरत की ज़िन्दगी दुन्यावी ज़िन्दगी से बेहतर है लेकिन फिर भी वोह दुन्या का माल जम्अ़ करने में सर गरदां हैं।

(4)...... उन का दा'वा तो येह है कि मौत बरह़क़ है लेकिन उन के आ'माल ऐसे हैं जैसे उन्हों ने मरना ही नहीं।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 47 : जन्नत के सब्ज़ हुल्ले

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं ने अबू आ़मिर वाइ़ज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد को येह फ़रमाते हुए सुना : ''एक मर्तबा मैं मस्जिदे न-बवी शरीफ़ की नूर बार फ़ज़ाओं में बैठा हुवा था कि अचानक एक काला ग़ुलाम आया जिस के पास एक ख़त़ था, उस ने वोह ख़त़ मुझे दिया और पढ़ने को कहा। मैं ने ख़त़ खोला तो उस में येह मज़मून लिखा था।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

(ऐ अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه !) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उमूरे आख़िरत में ग़ौरो ख़ौज़ करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को (लोगों से) इब्रत ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ बख़्शी, और ख़ल्वत नशीनी की अ़ज़ीम दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया, ऐ अबू आ़मिर ! बेशक मैं भी

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के उन भाइयों में से हूं जो सफ़रे आख़िरत के मुसाफ़िर हैं। मुझे ख़बर मिली है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मदीनए मुनव्वरह में आए हुए हैं, मुझे इस बात से बहुत ख़ुशी हुई और मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत का मु-तमन्नी हूं और मुझे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोहबत इख़्तियार करने और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की गुफ़्त-गू सुनने का इतना शौक़ है कि मेरा रुवां रुवां आप के दीदार की त़लब में तड़प रहा है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उस करीम ज़ात का वासित़ा जिस ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मह़ब्बत के जाम पिलाए मुझे अपनी क़दम बोसी और ज़ियारत से मह़रूम न कीजियेगा (बराए करम मेरे ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाइये और मुर्दा दिलों को जिला बख़्शिये)।

वस्सलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं उसी वक़्त उस ख़त़ लाने वाले ग़ुलाम के साथ उस के आक़ा के घर की त़रफ़ चल दिया, हम चलते हुए एक वीरान जगह पर पहुंचे, वहां एक ख़स्ता ह़ाल टूटा फूटा घर था। ग़ुलाम ने मुझे दरवाज़े के पास खड़ा किया और कहा : "आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) थोड़ी देर यहां इन्तिज़ार फ़रमाएं, मैं आप के लिये इजाज़त त़लब करता हूं। चुनान्चे मैं वहां इन्तिज़ार करने लगा। कुछ देर के बा'द ग़ुलाम ने आ कर कहा : "हुज़ूर ! अन्दर तशरीफ़ ले आइये।" जब मैं कमरे में दाख़िल हुवा तो देखा कि कमरा निहायत बोसीदा और ख़ाली है, उस का दरवाज़ा खजूर के तने से बना हुवा है और एक निहायत कमज़ोर व नहीफ़ शख़्स क़िब्ला रू बैठा हुवा है, चेहरे पर ख़ौफ़ व कर्ब के आसार नुमायां हैं और उसे देख कर मुझे एह़सास हुवा कि येह शदीद ग़म व परेशानी में है। कस्रते बुका (या'नी बहुत ज़ियादा रोने) की वजह से उस की आंखें भी ज़ाएअ़ हो चुकी थीं। मैं ने उसे सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया। जब मैं ने ग़ौर से देखा तो मा'लूम हुवा कि वोह अन्धा और अपाहज भी है और निहायत ग़म व अलम में मुब्तला है और उसे जुज़ाम की बीमारी भी लाह़िक़ है। फिर उस ने मुझ से कहा : "ऐ अबू आ़मिर (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दिल को गुनाहों की बीमारी से ह़िफ़ाज़त में रखे, मैं हमेशा इस बात का ख़्वाहिश मन्द रहा हूं कि आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) की सोह़बत इख़्तियार करूं और आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) से नसीह़त आमोज़ गुफ़्त-गू सुनूं, ऐ अबू आ़मिर (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! मुझे एक ऐसा ज़ख़्मे दिल लाह़िक़ है कि तमाम वाइज़ीन व नासिह़ीन भी उस का इ़लाज न कर सके और अत़िब्बा उस के इ़लाज से आ़जिज़ आ चुके हैं। मुझे ख़बर मिली है कि आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) की तजवीज़ कर्दा दवा और मरहम ज़ख़्मों के लिये बे ह़द सूद मन्द है, बराए करम ! मेरे ज़ख़्मी दिल का इ़लाज फ़रमाएं अगर्चे दवा कितनी ही तल्ख़ व ना गवार क्यूं न हो, मैं शिफ़ा की उम्मीद लगाए दवा की तल्ख़ी व ना गवारी बरदाश्त कर लूंगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस बुज़ुर्ग की येह बात सुन कर मुझ पर रो'ब व दबदबा त़ारी हो गया, उस की बातों में मुझे बड़ी ह़क़ीक़त नज़र आई। मैं काफ़ी देर ख़ामोश रहा और ग़ौरो फ़िक्र करता रहा फिर मैं ने उस बुज़ुर्ग से कहा : "अगर तुम अपनी बीमारी का इ़लाज चाहते हो

तो अपनी नज़र को आ़लमे म-लकूत की त़रफ़ फैरो, अपने कानों को उसी आ़लम की त़रफ़ मश्ग़ूल कर लो और अपने ईमान की ह़क़ीक़त को जन्नते मअवा की त़रफ़ मुन्तक़िल कर लो। अगर ऐसा करोगे तो रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने अपने मुक़र्रब बन्दों के लिये जो ने'मतें और आसाइशें उस में रखी हैं वोह तुम पर मुन्कशिफ़ हो जाएंगी। इसी त़रह़ फिर अपनी तमाम तवज्जोह जहन्नम की त़रफ़ करो और उस में ग़ौरो फ़िक्र करो और ह़क़ीक़ी नज़र से उस को देखो तो तुम्हें वोह तमाम अ़ज़ाब व मसाइब नज़र आ जाएंगे जो अल्लाह جَلَّ جَلَالُہٗ के दुश्मनों और ना फ़रमानों के लिये तय्यार किये गए हैं। अगर इस त़रह़ करोगे तो तुम्हें दोनों चीज़ों में फ़र्क़ मा'लूम हो जाएगा और येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाएगी कि नेकों और बदों की मौत बराबर नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मेरी येह बात सुन कर वोह बुज़ुर्ग रोने लगे और सर्द आहें भरने लगे और एक चीख़ मार कर कहने लगे : "ऐ अबू आ़मिर (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारी दवा ने फ़ौरन मेरे ज़ख़्मी दिल पर असर किया है, मैं उम्मीद रखता हूं कि तुम्हारे पास मुझे ज़रूर शिफ़ा नसीब हो जाएगी, रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए। मुझे मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, फिर मैं ने उस बुज़ुर्ग से कहा : "ऐ मर्दे सालेह़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे उस वक़्त भी देखता है जब तू तन्हाई में होता है और जब तू जल्वत में होता है तो भी वोह तुझे देखता है।" तो उस बुज़ुर्ग ने पहले की त़रह़ फिर चीख़ मारी फिर फ़रमाया : "वोह कौन सी हस्ती है जो मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ करे, जो मेरे ग़म व हु़ज़्न को दूर करे और मेरी ख़त़ाओं को मुआ़फ़ करे ? ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तेरी ही ज़ात ऐसी है जो मेरी मददगार है, और मैं तुझी पर भरोसा करता हूं और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ लाता हूं।" इतना कहने के बा'द वोह बुज़ुर्ग ज़मीन पर गिरे और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कुछ देर बा'द एक लड़की वहां आई जिस ने ऊन का कुर्ता पहना हुवा था और ऊन ही की चादर ओढ़ी हुई थी और उस के माथे पर सज्दों की कस्रत की वजह से नूरानी निशानात बन चुके थे, रोज़ों की कसरत की वजह से उस का रंग ज़र्द हो गया था और त़वील क़ियाम की वजह से पाउं सूझे हुए थे। उस ने मुझ से कहा : "ऐ आ़रिफ़ीन के दिलों को तक़्विय्यत देने वाले और ऐ ग़मज़दों की मुसीबतों को ह़ल करने वाले ! तूने बहुत अच्छा किया, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा येह अ़मल राएगां नहीं जाएगा, ऐ अबू आ़मिर ! येह बुज़ुर्ग मेरे वालिद थे और तक़रीबन बीस साल से कोढ़ की बीमारी इन्हें लाह़िक़ थी, येह हर वक़्त नमाज़ ही में मश्ग़ूल रहते यहां तक कि येह अपाहज हो गए, रोने की कसरत की वजह से इन की आंखें ज़ाएअ़ हो गईं और येह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से उम्मीद रखते

थे कि आप से मुलाक़ात ज़रूर होगी।" और येह फ़रमाया करते थे : "मैं एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर वाइज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हुवा था। उन की पुर असर बातों ने मेरे मुर्दा दिल को ज़िन्दा कर दिया, और मुझे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार कर दिया, अगर दोबारा कभी मैं उन की मह़फ़िल में चला गया या उन की बातें सुन लीं तो मैं उन की बातें सुन कर हलाक हो जाऊंगा, फिर वोह लड़की कहने लगी : "ऐ अबू आ़मिर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए कि तुम ने मेरे वालिद को वा'ज़ो नसीह़त की और इन को सुकून व आराम मुहय्या किया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस का अच्छा सिला अ़ता फ़रमाए।"

फिर वोह लड़की अपने बाप के पास आई और उस की आंखों को बोसा देने लगी और रोते हुए कहने लगी : "ऐ वोह अ़ज़ीम शख़्स जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रो रो कर अपनी आंखें गंवा दीं ! ऐ मेरे करीम बाप ! तुझे तेरे रब عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब की वई़दों ने हलाक कर दिया, तुम हमेशा अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से गिर्या व ज़ारी करते रहे और दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल रहे।"

मैं ने उस से पूछा : "ऐ नेक बन्दी ! तू इतना क्यूं रो रही है ? और इतनी ग़मज़दा क्यूं हो रही है, तुम्हारे वालिदे गिरामी तो अब दारुल जज़ा में जा चुके हैं और वोह अपने हर अ़मल का बदला देख चुके होंगे और इन के आ'माल इन के सामने पेश कर दिये जाएंगे अगर इन के आ'माल अच्छे थे तो इन के लिये ख़ुश ख़बरी है और अगर आ'माल ना मक़्बूल थे तो येह अफ़्सोस नाक बात है।"

येह सुन कर उस लड़की ने भी अपने बाप की त़रह़ चीख़ मारी और तड़पने लगी और इसी ह़ालत में उन की रूह़ भी आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई। फिर मैं अ़स्र की नमाज़ के लिये मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुवा और मैं ने नमाज़ के बा'द उन दोनों बाप बेटी के लिये ख़ूब रो रो कर दुआ़ की, फिर वोह ग़ुलाम आया और उस ने इत्तिलाअ़ दी कि उन दोनों की तक्फ़ीन हो चुकी है, आप नमाज़े जनाज़ा के लिये तशरीफ़ ले चलें। फिर हम ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उन्हें दफ़्ना दिया गया। फिर मैं ने लोगों से दरयाफ़्त किया : "येह बाप बेटी कौन थे ?" तो मुझे बताया गया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की औलाद से हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझे काफ़ी दिनों तक उन की मौत का अफ़्सोस रहा फिर एक रात मैं ने उन दोनों बाप बेटी को ख़्वाब में देखा, उन्हों ने **सब्ज़ जन्नती ह़ुल्ले** ज़ैबे तन किये हुए थे। मैं ने उन को देख कर कहा : "मरह़बा ! तुम्हें मुबारक हो, मैं तो तुम्हारी वजह से बहुत ग़मगीन था, तुम्हारे साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : "हमें बख़्श दिया गया और हमें ने'मतें मिलीं, इन में तुम भी हमारे साथ शरीक हो।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 48 : मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मरना, फ़िक्रे आख़िरत सिखा गया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन दावूद देनूरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ हरवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना : ''एक मर्तबा मैं बसरा में मौजूद था कि मेरे पास ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़यूती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तशरीफ़ लाए और मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया : ''चलो, हम **उबुल्लह** चलते हैं।'' (येह बसरा के एक क़स्बे का नाम है)

चुनान्चे हम सफ़र पर रवाना हुए। बद्रे कामिल ने अपनी रोशनी से सारे क़स्बे को नूरबार किया हुवा था, हर त़रफ़ ख़ामोशी का समां था, जब हम उस क़स्बे के क़रीब पहुंचे तो वहां एक अ़ज़ीमुश्शान इ़मारत नज़र आई जो किसी रईस की मिल्किय्यत में थी, फिर यकायक ख़ामोश फ़ज़ाओं में सारंगी बजने की आवाज़ आई। जब हम उस सम्त गए तो देखा कि एक लौंडी मह़ल के क़रीब बैठी सारंगी बजा रही है और बार बार एक शे'र गुनगुना रही है, जिस का मफ़्हूम येह है : ''तुम रोज़ाना बदलते हो, क्या तुम्हें इस के इलावा भी कोई शै ज़ैबा है।''

उस इ़मारत की एक त़रफ़ एक फ़क़ीर दो चादरों में लिपटा हुवा बैठा था। जब उस ने येह शे'र सुना तो ज़ोर ज़ोर से चीख़ने लगा और लौंडी से कहने लगा : ''ख़ुदारा ! वोह शे'र मुझे दोबारा सुनाओ, हाए अफ़्सोस ! मेरा ह़ाल भी मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के साथ ऐसा ही है। जल्दी करो, मुझे दोबारा वोह शे'र सुनाओ, जब उस लौंडी के मालिक ने येह ह़ालत देखी तो लौंडी से कहा : ''सारंगी बजाना छोड़ दो और उस फ़क़ीर को जा कर शे'र सुनाओ, येह ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग है।'' चुनान्चे वोह लौंडी उस फ़क़ीर के पास आई और दोबारा येही शे'र पढ़ा, वोह शे'र पढ़ती जाती और फ़क़ीर चीख़ता जाता और कहता : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी ह़ालत भी मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के साथ ऐसी ही है।'' फिर यकदम उस ने एक दिल ख़राश चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर पड़ा। हम उस के पास गए और उसे हिला जुला कर देखा तो उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी।

जब येह ख़बर उस अ़ज़ीमुश्शान इ़मारत के मालिक को पहुंची तो वोह नीचे आया और उस फ़क़ीर की लाश को अपने घर ले गया। हमें उस वाक़िए पर बहुत अफ़्सोस हुवा, फिर हम अपने काम के सिल्सिले में आगे रवाना हो गए। जाते वक़्त हम ने देखा कि उस साह़िबे इ़मारत ने अपने सामने मौजूद तमाम आलाते लह्वो लइब तोड़ दिये थे, फिर हम वहां से रवाना हो गए।

फिर जब सुब्ह़ हमारा गुज़र उसी मक़ाम से हुवा तो देखा कि उस इ़मारत के गिर्द लोगों का जम्मे ग़फ़ीर है और वहां उस फ़क़ीर का जनाज़ा रखा हुवा है, ऐसा लगता था गोया पूरे शहरे बसरा में इस फ़क़ीर की मौत की इत्तिलाअ़ पहुंचा दी गई है, शहर का हर आ़म व ख़ास उस के जनाज़े में शिर्कत के लिये मौजूद था, क़ाज़ी और हुक्काम भी वहां मौजूद थे।

फिर उस ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग के जनाज़े को सूए क़ब्रिस्तान ले जाया गया। उस के पीछे फ़ौजी लश्कर और अ़वामो ख़वास का हुजूम था, सब के सब नंगे सर और नंगे पाउं थे, सब अफ़्सुर्दा व ग़मगीन थे, जब उस मर्दे क़लन्दर को दफ़्नाया गया तो उस इ़मारत वाले रईस ने लोगों से कहा : ''तुम सब लोग गवाह

हो जाओ, मेरे तमाम गुलाम और लौंडियां आज के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर आज़ाद हैं, मेरी तमाम जागीर और मालो दौलत सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में वक़्फ़ है, मेरी मिल्किय्यत में चार हज़ार दीनार हैं, मैं उन्हें भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में वक़्फ़ करता हूं।'' फिर उस ने अपना क़ीमती लिबास उतार कर फेंक दिया, अब उस के पास सिर्फ़ एक शलवार बाक़ी बची। उस नेक बख़्त रईस की येह ह़ालत देख कर क़ाज़ी ने कहा : ''मेरे पास दो चादरें मौजूद हैं, आप वोह क़बूल फ़रमा लें।'' चुनान्चे क़ाज़ी साहिब ने उस रईस को वोह दो चादरें दे दीं। उस ने एक को ओढ़ लिया और दूसरी को बतौरे तहबन्द इस्ति'माल किया, लोग मय्यित से ज़ियादा रईस की इस ह़ालत पर रोए, फिर वोह नेक बख़्त रईस मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर अपनी तमाम दौलत छोड़ कर दाइमी ने'मतों के ह़ुसूल के लिये एक ना मा'लूम सम्त रवाना हो गया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 49 : अमीरुल मुअमिनीन के नाम ''नसीह़तों भरा मक्तूब''

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید ने ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ एक तह़रीर भेजी जिस का मज़मून कुछ इस त़रह़ था। अस्सलामु अ़लय-कुम : उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की त़रफ़ से आप पर सलामती हो।

वह़-दहू ला शरीक ज़ात जो रह़ीमो करीम है, उस की ह़म्दो सना के बा'द उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़र्ज़ करता है : ''ऐ सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इस उम्मत की ह़ुकूमत का बोझ मेरे कन्धों पर डाल दिया है और मेरे मश्वरे के बिग़ैर ही उमूरे ख़िलाफ़त मेरे सिपुर्द कर दिये गए, मैं ने कभी भी ख़िलाफ़त की ख़्वाहिश न की थी, बस अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मरज़ी, अब उस के ह़ुक्म से मुझे ख़िलाफ़त की ज़िम्मादारी मिली है। लिहाज़ा मैं उमूरे ख़िलाफ़त के तमाम मसाइल में उसी करीम ज़ात से मदद त़लब करता हूं कि वोह मुझे अच्छे आ'माल और इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और मुझे मख़्लूक़ पर शफ़्क़त व नर्मी की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। वोही ज़ात मेरी मदद करने वाली है, (ऐ मेरे भाई) जब आप के पास मेरी येह तह़रीर पहुंचे तो तू मुझे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सीरत के मु-तअ़ल्लिक़ और उन के फ़ैसलों के बारे में कुछ मा'लूमात फ़राहम करना और येह बताना कि उन्हों ने मुसल्मानों और ज़िम्मियों के साथ अपने दौरे ख़िलाफ़त में कैसा रवय्या इख़्तियार किया ? मैं उमूरे ख़िलाफ़त में उन की पैरवी करना चाहता हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी मदद फ़रमाएगा।''

वस्सलाम : मिन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید)

जब येह तह़रीर ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को पहुंची तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد को इस का जवाब लिखा जिस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ था : ''ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد) ! तुम पर सलामती हो, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ह़म्दो सना और ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम के बा'द मैं कहता हूं : ''अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त क़ादिरे मुत़्लक़ है, उस की अ़-ज़मत व बुलन्दी को कोई नहीं पहुंच सकता, उस का कोई शरीक नहीं, वोह किसी ग़ैर के शरीक होने से मुनज़्ज़ह व मुबर्रा है, जब उस ने चाहा दुन्या को पैदा फ़रमाया और जब तक चाहेगा बाक़ी रखेगा, उस ने दुन्या की इब्तिदा व इन्तिहा के दरमियान बहुत क़लील मुद्दत रखी जो ह़क़ी-क़तन दिन के कुछ ह़िस्से के बराबर भी नहीं। फिर अल्लाह तआ़ला ने इस दुन्या और इस में मौजूद तमाम मख़्लूक़ात की फ़ना का फ़ैसला भी फ़रमा दिया और येह सब चीज़ें फ़ानी हैं, सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात ही को बक़ा है, उस के सिवा बाक़ी सब चीज़ें फ़ानी हैं जैसा कि क़ुरआने करीम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ۠ (پ۲۰،القصص:۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के, उसी का ह़ुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे।

(ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد !) बेशक दुन्या वाले दुन्या की किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं, वोह ख़ुद मुख़्तार नहीं, जब उन्हें ह़ुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ होगा वोह इस दुन्या को छोड़ देंगे और येह बे वफ़ा दुन्या उन को छोड़ देगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (लोगों की रहनुमाई के लिये) क़ुरआने करीम और दीगर कुतुबे समाविया नाज़िल फ़रमाईं, अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाए, अपनी किताब में जज़ा व सज़ा बयान फ़रमाई, मिसालें बयान फ़रमाईं और अपने दीन की वज़ाह़त क़ुरआने करीम में फ़रमा दी, ह़राम व ह़लाल अश्या का बयान इसी किताब में फ़रमा दिया और इ़ब्रत आमोज़ वाक़िआ़त इस में बयान फ़रमाए।

ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد) ! क्या तुझ से इस बात का वा'दा नहीं लिया गया कि तू हर एक इन्सान के खाने पीने का ज़िम्मादार है और तू इन को काफ़ी है बल्कि तुझे तो ख़िलाफ़त दी गई है, बेशक तुझे भी इतना कुछ ही खाना और लिबास काफ़ी है जितना कि एक आ़म इन्सान को काफ़ी है, बेशक तुझे जो ज़िम्मादारी मिली है येह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की त़रफ़ से मिली है। अगर तुझ में इतनी इस्तित़ाअ़त है कि तू अपने आप को और अपने अहले ख़ाना को नुक़्सान व बरबादी से बचा सकता है तो ज़रूर बचा और क़ियामत की होलनाकियों से बच और नेकी करने की त़ाक़त और बुराई से बचने की तौफ़ीक़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की त़रफ़ से है। बेशक जो लोग तुझ से पहले गुज़रे उन्हों ने जो कुछ करना था वोह किया, जो तरक़्क़ियाती काम करने थे किये, जिन चीज़ों को ख़त्म करना था ख़त्म किया, और हर शख़्स अपने अपने अन्दाज़ में अपनी ज़िम्मादारियों को अदा करता रहा और येही समझता रहा कि अस्ल त़रीक़ा येही है जो मैं ने इख़्तियार किया है, उन में से बा'ज़ लोगों ने क़ाबिले गरिफ़्त लोगों से भी निहायत नर्मी से काम लिया और उन की सरकशी के बा वुजूद उन्हें बे जा ढील दी तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने ऐसे लोगों

पर आज़्माइश का दरवाज़ा खोल दिया। अगर तू भी किसी क़ाबिले गरिफ़्त शख़्स से नर्मी का बरताव करना चाहता है तो कर, फिर इस का अन्जाम ख़ुद ही देख लेगा अगर तूने किसी मुजरिम से किसी दीनी मुआ़-मले में नर्मी का बरताव किया तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त तुझ पर भी आज़्माइश के दरवाज़े खोल देगा, अगर तू किसी को गवर्नर बनने के क़ाबिल न समझे तो बे धड़क उस को ओ़हदे से मा'ज़ूल कर दे और किसी का ख़ौफ़ न कर और इस बात से न डर कि अब कौन गवर्नर व ह़ाकिम बनेगा। इस बात का मालिक अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन है, वोह तेरे लिये उन ना अहल गवर्नरों और ह़ाकिमों से भी अच्छे मददगार लोग अ़ता फ़रमा देगा, तू मख़्लूक़ से बिल्कुल भी न डर और अपनी निय्यत को ख़ालिस रख। हर इन्सान की मदद उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ की जाती है, जिस की निय्यत कामिल है तो उस को अज्र भी कामिल ही मिलेगा और जिस की निय्यत में फ़ुतूर होगा उस को सिला भी ऐसा ही दिया जाएगा। अल ग़रज़ इन्सान की मदद उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ की जाती है।

ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد) ! अगर तू येह चाहता है कि बरोज़े क़ियामत तू इस ह़ाल में आए कि कोई तेरे ख़िलाफ़ ज़ुल्म का दा'वेदार न हो और जो लोग तुझ से पहले गुज़र गए वोह तुझ पर रश्क करते हों कि इस के मुत्तबिईन को इस से कोई शिकायत नहीं, इस की रिआ़या इस से ख़ुश है तो तू ऐसे आ'माल कर कि तुझे उस दिन वोह मक़ाम ह़ासिल हो जाए या'नी अपने आ'माल अच्छे रख और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से नेकी करने की क़ुव्वत दी जाती है और बुराई से भी वोही ज़ात बचाने वाली है।

और जो लोग मौत और उस की होलनाकियों से ख़ौफ़ खाते थे मरने के बा'द उन की वोह आंखें चेहरों पर बह गईं जो दुन्यवी लज़्ज़तों से सैर ही न होती थीं, उन के पेट फट गए और वोह तमाम चीज़ें भी ज़ाएअ़ हो गईं जो वोह खाया करते थे, उन की वोह गरदनें जो नर्म नाज़ुक तकियों पर आराम करने की आ़दी थीं आज क़ब्र की मिट्टी में बोसीदा ह़ालत में पड़ी हैं। जब वोह दुन्या में थे तो लोग उन से ख़ुश होते और उन की ख़िदमत करते लेकिन आज येही लोग मौत के बा'द ऐसी ह़ालत में हैं कि इन के जिस्म गल सड़ गए, अगर इन लोगों को और इन की दुन्यवी ग़िज़ाओं को आज किसी मिस्कीन के सामने रख दिया जाए तो वोह भी इस की बदबू से अज़िय्यत मह़सूस करे, अब अगर इन के तअ़फ़्फ़ुन ज़दा जिस्मों पर ख़ूब ख़ुश्बू मली जाए तब भी इन की बदबू ख़त्म न हो बल्कि ख़ुश्बू मलना इस्राफ़ होगा।

हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे अपनी रह़मते ख़ास्सा से ह़िस्सा अ़ता फ़रमाए और उसे दाइमी ने'मतें अ़ता फ़रमाए, बेशक हम सब उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं।

ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد) ! तेरे साथ वाक़ेई एक बहुत बड़ा मुआ़-मला दरपेश है, तू कभी भी जिज़्या और ज़कात वुसूल करने के लिये ऐसे आ़मिल मुक़र्रर न करना जो बहुत ज़ियादा सख़्ती करें और लोगों से बहुत ज़ियादा तुर्श रूई से पेश आएं और बे जा उन का ख़ून बहाएं। ऐ उ़मर ! इस त़रह़ माल ह़ासिल करने से बच, ऐसी ख़ूनरेज़ी से हमेशा कोसों दूर भाग, और अगर तुझे किसी

गवर्नर के बारे में येह ख़बर मिले कि वोह लोगों पर ज़ुल्म करता है और फिर भी तू उसे गवर्नरी के ओ़हदे से मा'ज़ूल न करे तो याद रख ! अगर तू इस त़रह़ की जुरअतें करेगा तो तुझे जहन्नम से बचाने वाला कोई न होगा और तू रुस्वाई व ज़िल्लत की त़रफ़ माइल हो जाएगा। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हम सब को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, आमीन। और अगर तू इन तमाम ज़ुल्मो ज़ियादती वाले उमूर से इज्तिनाब करता रहा तो तुझे दिली सुकून ह़ासिल होगा और तू मुत़्मइन रहेगा। (اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّ وَجَلَّ)

ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید) ! तूने मुझ से कहा कि मैं अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत और उन के फ़ैसलों के मु-तअ़ल्लिक़ तुझे मा'लूमात फ़राहम करूं तो ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید) ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौर के मुत़ाबिक़ फ़ैसले किये। जैसी उन की रिआ़या थी अब ऐसी नहीं, उन के फ़ैसले उस दौर के ए'तिबार से थे और तुम अपने दौर के ए'तिबार से फ़ैसले करो, और अपने दौर के लोगों को मद्दे नज़र रखते हुए उन से मुआ़-मलात करो, अगर तुम ऐसा करोगे तो मुझे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से उम्मीद है कि वोह तुम्हें भी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी मदद व नुसरत अ़त़ा फ़रमाएगा और जन्नत में उन के साथ मक़ाम अ़त़ा फ़रमाएगा। और ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! तुम येह आयते मुबा-रका पढ़ा करो :

وَمَآ اُرِیْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِیْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِیْقِیْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَیْهِ اُنِیْبُ ۝

(پ۱۲، ھود:۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस के ख़िलाफ़ करने लगूं, मैं तो जहां तक बने संवारना ही चाहता हूं, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की त़रफ़ से है, मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं।

ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِید) ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त तुझे अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे और दारैन की सआ़दतें अ़त़ा फ़रमाए।" आमीन

वस्सलाम : मिन सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 50 : नफ़्स कुशी का काम्याब त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम अम्बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं, मुझे एक शख़्स ने बताया कि "मैं एक दिन सुब्ह़ सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث से मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा। जैसे ही मैं दरवाज़े के क़रीब पहुंचा तो अन्दर से किसी की दर्द भरी आवाज़ सुनाई दी। मैं दरवाज़ा खट-खटाने से बाज़ रहा और कान लगा कर घर से आने वाली दर्द भरी आवाज़ सुनने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث के सामने एक ख़रबूज़ा रखा हुवा था और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शदीद ख़्वाहिश के बा वुजूद उस को नहीं खा रहे थे बल्कि अपने नफ़्स को मलामत करते हुए कह रहे थे : "ऐ नफ़्स ! तेरा नास हो, क्या तू इसे खाना चाहता है तुझे इस की त़रफ़ रग़्बत क्यूं हुई ?"

इसी त़रह़ बार बार अपने नफ़्स को मलामत कर रहे थे, जब मैं ने देखा कि मुआ़-मला तूल पकड़ गया है और दिन बुलन्द हो रहा है तो मुझ से न रहा गया और मैं ने दरवाज़े पर दस्तक दे दी, आवाज़ आई : "कौन ?" मैं ने अपना नाम बताया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अन्दर आ जाओ।" मैं अन्दर दाख़िल हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास बैठ गया और मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू नस्र बिशर बिन ह़ारिस (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث) ! आप अपने नफ़्स पर इतनी सख़्ती क्यूं कर रहे हैं ? इसे ह़लाल चीज़ के खाने से क्यूं रोक रहे हैं ? क्या अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ ने बन्दों को रुख़्सत और रिआ़यतें अ़त़ा न फ़रमाईं ? क्या येह चीज़ें हमारे लिये ह़लाल नहीं हैं ? फिर आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) अपने ऊपर इतनी सख़्ती क्यूं कर रहे हो ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث फ़रमाने लगे : "ऐ मेरे भाई ! मैं ने काफ़ी अ़र्से से अपने नफ़्स को सब्र का आ़दी बना रखा है। जब कभी येह किसी चीज़ की ख़्वाहिश करता है तो मैं इसे सब्र की तल्क़ीन करता हूं और येह सब्र करने पर आमादा हो जाता है, अगर इस को ढील दी जाए तो येह मज़ीद ख़्वाहिशात का मु-तमन्नी होता है। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शे'र पढ़ा जिस का मफ़्हूम येह है : "नफ़्स के लिये येही बेहतर है कि इन्सान इसे ख़्वाहिशात से रोके रखे। अगर इसे इस की दिल पसन्द चीज़ खिलाओगे तो वोह मज़ीद त़लब करेगा और उसे हर त़रह़ ह़ासिल करने की कोशिश करेगा।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने वोह ख़रबूज़ा फेंक दिया और कहा : "इसे यहां से उठा लो।" फिर कुछ अश्आ़र पढ़ने लगे, जिन का मफ़्हूम येह है : "बेशक मेरा नफ़्स मुझ से मुत़ा-लबा करता है कि मैं पेट भर कर इस की मन पसन्द ग़िज़ाएं खाऊं और अपने दीन को दाव पर लगा दूं, मगर येह ना मुम्किन बात है, और जो शख़्स दुन्या ह़ासिल कर ले लेकिन दीन से मह़रूम रहे तो वोह बहुत ज़ियादा ख़सारे में है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 51 : सफ़र हो तो ऐसा, रफ़ीके सफ़र हो तो ऐसा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन हु़सैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना मख़ूल ने मुझे बताया कि "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना बहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मेरे पास आए और मुझ से फ़रमाने लगे : "मेरा ह़ज का इरादा है, अगर तुम्हारे इ़ल्म में कोई ऐसा शख़्स है जो ह़ज का इरादा रखता हो तो मुझे उस के बारे में बताओ ताकि हम दोनों सफ़रे ह़ज पर रवाना हों और एक दूसरे की रफ़ाक़त में ह़ज की सआ़दत ह़ासिल करें।" मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बहीम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) से अ़र्ज़ की : "हमारे पड़ोस में एक दीनदार और बहुत नेक शख़्स रहता है वोह भी ह़ज का इरादा रखता है, आइये मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की उस से मुलाक़ात करा देता हूं।" चुनान्चे मैं उन्हें अपने उस दोस्त के पास ले गया और उसे सूरते ह़ाल से आगाह किया तो वोह तय्यार हो गया और कहा : "اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम एक साथ सफ़रे ह़ज पर रवाना होंगे।"

फिर हम वहां से चले आए और ह़ज़रते सय्यिदुना बहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने घर तशरीफ़ ले गए। कुछ ही दिनों बा'द मेरा वोही दोस्त मेरे पास आया और कहने लगा : "मैं येह चाहता हूं कि जिस शख़्स को आप ने मेरा रफ़ीक़ बनाया है आप उसे मेरा रफ़ीक़ न बनाएं बल्कि उस के लिये कोई और रफ़ीक़ तलाश कर लें, मैं उस के साथ सफ़र नहीं कर सकता।" जब मैं ने येह सुना तो अपने उस दोस्त से कहा : "तुझ पर अफ़्सोस है ! आख़िर क्यूं तू उस के साथ सफ़र करने को तय्यार नहीं ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! पूरे कूफ़ा में मेरे नज़्दीक इन से बढ़ कर कोई मुत्तक़ी व परहेज़ गार नहीं, मैं ने इन के साथ कई समुन्दरी और सह़राई सफ़र किये हैं, मैं ने इन में हमेशा भलाई और ख़ैर ही को पाया और तुम हो कि इन की रफ़ाक़त से मह़रूम रहना चाहते हो, आख़िर वजह क्या है ?" वोह कहने लगा : "मुझे ख़बर मिली है कि जिसे आप मेरा रफ़ीक़ बनाना चाहते हैं वोह तो हर वक़्त रोते ही रहते हैं और उन्हें रोने से कभी फ़ुरसत ही नहीं मिलती, हर वक़्त आहो बुका करते रहते हैं, अब आप ही बताइये कि मैं ऐसे शख़्स के साथ सफ़र कैसे कर सकता हूं ? उन के रोने की वजह से हमारा सफ़र ख़ुश गवार नहीं रहेगा और हमें बहुत परेशानी होगी।"

मैं ने अपने उस दोस्त से कहा : "बा'ज़ अवक़ात इन्सान वा'ज़ो नसीह़त सुन कर रो पड़ता है तो इस में क्या ह़रज है ? येह तो रिक़्क़ते क़ल्बी की वजह से होता है क्या आप कभी वा'ज़ो नसीह़त सुन कर नहीं रोए ?" उस ने कहा : "येह तो आप बजा फ़रमा रहे हैं लेकिन उन के बारे में तो मुझे येह ख़बर मिली है कि वोह हर वक़्त ही रोते रहते हैं और उन का रोना बहुत त़वील होता है।"

मैं ने कहा : "आप उस की सोह़बत इख़्तियार करें, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त आप को उस मर्दे सालेह़ के ज़रीए़ ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाएगा, आप बे फ़िक्र हो कर उन के साथ सफ़र करें।" चुनान्चे मेरा वोह दोस्त तय्यार हो गया और कहने लगा : "ठीक है, मैं उन के साथ सफ़र करने को तय्यार हूं, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमारे इस सफ़र में ख़ैरो ब-र-कत अ़त़ा फ़रमाए।"

फिर जिस दिन उन की ह़ज के लिये रवानगी थी तो मैं और मेरा दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना बहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास पहुंचे तो देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक दीवार के साए तले बैठे ज़ारो क़िताr रो रहे हैं और आप के आंसूं दाढ़ी मुबारक को तर करते हुए ज़मीन पर गिर रहे हैं।

जब मेरे दोस्त ने येह देखा तो मुझ से कहने लगा : "देखो ! इन्हों ने तो अभी से रोना शुरूअ़ कर दिया, बक़िय्या सफ़र में इन का क्या ह़ाल होगा। आप ने तो मुझे बड़ी आज़माइश में डाल दिया है, मैं इन के साथ सफ़र किस त़रह़ कर सकूंगा ?" मैं ने कहा : "हो सकता है कि येह अपने अहलो इ़याल से जुदाई की वजह से रो रहे हों।" मेरी येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना बहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सुन ली और कहा : "ऐ मखूल ! मैं घर वालों से जुदाई की वजह से नहीं रो रहा बल्कि मुझे तो सफ़रे आख़िरत की त़वालत और सुऊ़बतें रुला रही हैं।" येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फिर रोने लगे।

मुझ से मेरा दोस्त कहने लगा : "इन की रफ़ाक़त के लाइक़ तो ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई और ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम अबुल अख़्वस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا जैसे बुज़ुर्ग हैं क्यूं कि वोह भी ऐसे ही रोने वाले हैं। जब येह सब जम्अ़ होंगे तो इन्हें क़रार नसीब हो जाएगा या फिर सारे ही रो रो कर जान दे देंगे, मैं इन की रफ़ाक़त के क़ाबिल नहीं।"

मैं ने फिर अपने दोस्त को समझाया और कहा : "आप थोड़ा सब्र से काम लें और इन्हें बरदाश्त करें, हो सकता है येह सफ़र आप के लिये ज़रीअ़ए नजात बन जाए।" बिल आख़िर वोह कहने लगा : "अक्सर लोग जब ह़ज पर रवाना होते हैं तो वोह ख़ुश ख़ुश और बहुत ज़ियादा ज़ादे राह ले कर जाते हैं और उन में कोई भी ग़म ज़दा या मोह़ताज नहीं होता। मैं ने तो हमेशा ऐसे ही ख़ुशह़ाल लोगों के साथ सफ़र किया है, अब पहली मर्तबा मुझे ऐसे शख़्स की रफ़ाक़त मिल रही है जो गिर्या व ज़ारी करने वाला है। बहर ह़ाल मैं इन के साथ सफ़र ज़रूर करूंगा शायद ! येह सफ़र मेरे लिये ख़ैरो ब-र-कत का सबब बने।" बिल आख़िर मेरा वोह दोस्त सफ़र करने के लिये तय्यार हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना बहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को हमारे माबैन होने वाली गुफ़्त-गू का इ़ल्म न था वरना वोह अगर हमारी येह बातें सुन लेते तो कभी भी मेरे उस दोस्त के साथ सफ़र न करते। बहर ह़ाल मैं ने उन दोनों को सूए ह़रम रवाना कर दिया।

मदीने जाने वालो ! जाओ जाओ फ़ी अमानिल्लाह (عَزَّوَجَلَّ)
कभी तो अपना भी लग जाएगा बिस्तर मदीने में

फिर जब ह़ाजियों के क़ाफ़िले फ़रीज़ए ह़ज अदा कर के और अपनी आंखों से ख़ानए क़ा'बा और रौज़ए रसूल के जल्वे देख कर वापस कूफ़ा पहुंचे तो मैं अपने उस दोस्त के पास गया उसे सलाम किया और पूछा : "आप ने अपने रफ़ीक़ को कैसा पाया ?" तो उस ने मुझे दुआ़एं देते हुए कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

आप को मेरी त़रफ़ से अच्छा बदला अ़ता फ़रमाए, खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने जिस मर्दे क़लन्दर को मेरा रफ़ीक़ बनाया मुझे उन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के जल्वे नज़र आते थे, उन्हों ने ह़क़्क़े सोह़बत खू़ब अदा किया। वोह खु़द तंगदस्त होने के बा वुजूद मुझ पर ख़र्च करते रहे ह़ालां कि मैं अपने साथ बहुत सारा ज़ादे राह ले गया था मगर वोह मुझ पर अपने ज़ादे राह से ख़र्च करते रहे, मैं जवान था और वोह ज़ईफ़ुल उ़म्र। लेकिन फिर भी उन्हों ने मेरी ख़िदमत की। वोह मेरे लिये खाना तय्यार करते और मुझे खिलाते और खु़द सारा दिन रोज़ा रखते, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उन्हें जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

मैं ने अपने दोस्त से पूछा : "आप ख़ौफ़ ज़दा थे कि वोह रोते बहुत ज़ियादा हैं, उस का क्या हुवा ? क्या तुम्हें उन के रोने से परेशानी नहीं हुई ?" वोह कहने लगा : "खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे उन से मह़ब्बत हो गई और उन के रोने की वजह से मुझे क़ल्बी सुकून मिलता और मैं भी उन के साथ रोया करता था। फिर इब्तिदाअन तो हमारे रोने की वजह से दूसरे रु-फ़क़ा को परेशानी हुई लेकिन फिर वोह भी हम से मानूस हो गए फिर ऐसा होता कि हमें रोता देख कर वोह भी रोना शुरूअ़ कर देते और उन सब ने हम से प्यार व मह़ब्बत भरा सुलूक किया और जब हम रोते तो हमारे रु-फ़क़ा भी येह कहते हुए रोने लगते : "जिस ग़म ने इन्हें रुलाया है वोह सफ़रे आख़िरत का ग़म तो हमें भी लाह़िक़ है फिर हम क्यूं न रोएं लिहाज़ा वोह भी हमारे साथ रोने लगते। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारा येह सफ़र बहुत अच्छा रहा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।"

फिर मैं सय्यिदुना बहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया और उन से पूछा : "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने रफ़ीक़ को कैसा पाया ?" वोह फ़रमाने लगे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! वोह बहुत अच्छे रफ़ीक़ साबित हुए, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कसरत से करने वाले, कु़रआने पाक की बहुत ज़ियादा तिलावत करने वाले, बहुत जल्द रो देने वाले और अपने हम सफ़र की लग़्ज़िशों से दर गुज़र करने वाले थे।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 52 : रोने वाली आंखें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद बिन जाबिर عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَادِر फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मरसद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَاحِد से पूछा : "मैं ने हमेशा आप (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) को रोते हुए ही देखा है कभी आप की आंखें आंसूओं से ख़ाली नहीं होतीं ? आख़िर आप (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) इतना क्यूं रोते हैं ?" तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "आप येह सुवाल क्यूं कर रहे हैं ?" मैं ने कहा : "इस उम्मीद पर कि शायद मुझे इस सुवाल की वजह से कुछ फ़ाएदा ह़ासिल हो और मुझे कोई नसीह़त आमेज़ जवाब मिले।" आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : "मेरे रोने की वजह तुम पर ज़ाहिर है।" मैं ने फिर पूछा : "आप (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) सिर्फ़ तन्हाई में ही ऐसी गिर्या व ज़ारी करते हैं या इस के इ़लावा भी रोते हैं ?" आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने येह सुन कर फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ पर येह ह़ालत अक्सर त़ारी रहती है। कभी मेरे सामने खाना लाया जाता है तो मुझ पर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रिक़्क़त त़ारी हो जाती है और मैं खाने से बे परवाह हो जाता हूं। कभी ऐसा भी होता है कि मैं अपने अहलो इ़याल के साथ होता हूं तो अचानक मुझ पर येह कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती हैं और मैं बे इख़्तियार रोना शुरूअ़ कर देता हूं, मुझे देख कर मेरे बच्चे और तमाम घर वाले भी रोना शुरूअ़ कर देते हैं ह़ालां कि उन्हें मा'लूम भी नहीं होता कि वोह क्यूं रो रहे हैं बस मेरे रोने की वजह से वोह भी मेरे साथ रोने लगते हैं।

मेरी ज़ौजा अक्सर येह शिकायत करती है कि हाए अफ़्सोस ! शायद ही मुसल्मानों की औ़रतों में कोई ऐसी औ़रत होगी जिस के शोहर को आप (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) जैसा ग़म लाह़िक़ हो, मैं तो तुम्हारी मह़ब्बत व प्यार को तरस गई हूं, औ़रतों को जो ख़ुशी और सुरूर अपने शोहर की ख़ुशी से मिलता है मैं उस से मह़रूम हूं, आप (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) पर कभी ऐसी ख़ुशी त़ारी नहीं होती जिसे देख कर मेरी आंखें ठन्डी हों।"

मैं ने पूछा : "ऐ मेरे भाई ! आख़िर वोह कौन सी चीज़ है जिस ने आप (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) को इतना ग़म ज़दा और ख़ौफ़ व ह़ुज़्न का मुजस्समा बना दिया है ?" तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाने लगे : "ऐ मेरे भाई ! अगर मेरी ना फ़रमानियों के सिले में मुझे गर्म पानी में ग़ोत़े लगाने का फ़ैसला सुना दिया जाता तो फिर भी येह इतनी सख़्त सज़ा है कि इस की वजह से रोना चाहिये लेकिन मुआ़-मला तो इस से कहीं ज़ियादा सख़्त है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों की वजह से मुजरिमों को जहन्नम की आग में क़ैद किया जाएगा और वोह आग हमारी बरदाश्त से बाहर है, फिर मैं उस आग के ख़ौफ़ से क्यूं न रोऊं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَسَلَّم

दर्दे सर हो या बुख़ार आए तड़प जाता हूं
मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

हिकायत नम्बर 53 : हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दौरे ख़िलाफ़त

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन यहूया अल मरूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की वफ़ात के बा'द जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे दफ़्न कर दिया और क़ब्रिस्तान से वापस आने लगे तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को शाही सुवारी पेश की गई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : ''येह क्या है ?'' अ़र्ज़ की गई, ''येह वोह सुवारी है जिस पर खु-लफ़ा सुवार हुवा करते हैं चूंकि अब आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ही हमारे ख़लीफ़ा हैं लिहाज़ा शाही सुवारी हाज़िरे ख़िदमत है, क़बूल फ़रमाइये।''

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''इसे मुझ से दूर कर दो, मेरे लिये मेरा ख़च्चर ही काफ़ी है।'' चुनान्चे आप ने शाही सुवारी को छोड़ा और अपने ख़च्चर पर सुवार हो गए फिर एक ख़ादिम आया और अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! चलिये, मैं आप के ख़च्चर की लगाम पकड़ कर साथ साथ चलता हूं।'' आप ने इस से भी इन्कार फ़रमा दिया और ख़ुद ही अपने ख़च्चर पर सुवार हो कर रवाना हो गए और लोगों से फ़रमाया : ''तुम मुझे अ़जीबो ग़रीब मख़्लूक़ न समझो मैं भी तुम्हारी ही त़रह़ एक आ़म मुसल्मान हूं, मुझे अपने जैसा ही समझो।''

सब लोग आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पीछे पीछे आ रहे थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद में दाख़िल हुए और मिम्बर पर चढ़ कर ख़ुत्बा देने लगे। तमाम लोग जम्अ़ हो गए और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कलाम सुनने लगे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! मेरे कन्धों पर ख़िलाफ़त का बारे गिरां रख दिया गया है मगर मैं इसे सर अन्जाम देने की त़ाक़त नहीं रखता लिहाज़ा जिस ने मेरी बैअ़त की है मैं उसे इख़्तियार देता हूं कि वोह मेरे इ़लावा जिस के हाथ पर चाहे बैअ़त कर ले मैं येह ख़िलाफ़त क़बूल नहीं करता लिहाज़ा मुसल्मानों में से तुम जिसे चाहो अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर लो।'' जब लोगों ने येह सुना तो उन की चीख़ें बुलन्द होने लगीं और सब ने बयक ज़बान कहा : ''ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! हम ने आप ही को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया, हम आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) से राज़ी हैं, हम सब आप ही की ख़िलाफ़त पर मुत्तफ़िक़ हैं। आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर उमूरे ख़िलाफ़त सर अन्जाम दें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस में ब-र-कत देगा।'' जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने लोगों की येह अ़क़ीदत देखी और आप को इस बात का यक़ीन हो गया कि लोग ब ख़ुशी मेरी ख़िलाफ़त क़बूल करने पर आमादा हैं तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की और हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ने के बा'द लोगों से कुछ इस त़रह़ मुख़ात़िब हुए : ''**ऐ लोगो !** मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं, तुम तक़्वा इख़्तियार करो और अपनी आख़िरत के लिये आ'माले सालिह़ा करो। बेशक जो शख़्स आख़िरत के लिये नेक आ'माल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दुन्यवी ह़ाजात को ख़ुद पूरा फ़रमाएगा।

ऐ लोगो ! तुम अपने बात़िन की इस्लाह़ की कोशिश करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़ाहिर की इस्लाह़ फ़रमाएगा। मौत को कसरत से याद किया करो और मौत से पहले अपने आ'माले सालिह़ा का

ख़ज़ाना इकठ्ठा कर लो, मौत तमाम लज़्ज़ात ख़त्म कर देगी । **ऐ लोगो !** तुम अपने आबाओ अजदाद के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र किया करो वोह भी दुन्या में आए और ज़िन्दगी गुज़ार कर चले गए इसी त़रह़ तुम भी चले जाओगे । अगर तुम उन के अह़वाल को याद न रखोगे तो मौत तुम्हारे लिये बहुत सख़्ती का बाइ़स होगी लिहाज़ा मौत से पहले मौत की तय्यारी कर लो ।

और बेशक येह उम्मते मुस्लिमा अपने रब عَزَّوَجَلَّ, उस के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उस की किताब क़ुरआने मजीद के बारे में एक दूसरे से झगड़ा नहीं करेगी, इस मस्अले में उन के दरमियान इख़्तिलाफ़ न होगा बल्कि उन के दरमियान अ़दावत व फ़साद तो दराहिम व दनानीर की वजह से होगा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं किसी एक को भी ना ह़क़ कोई चीज़ न दूंगा और ह़क़दार को उस का ह़क़ ज़रूर दूंगा ।" फिर आप ने मज़ीद फ़रमाया : "**ऐ लोगो !** जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करे, तुम पर उस की इत़ाअ़त वाजिब है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त न करे उस की इत़ाअ़त हरगिज़ न करो । जब तक मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करता रहूं उस वक़्त तक तुम मेरी इत़ाअ़त करना अगर तुम देखो कि (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त नहीं कर रहा तो इस मुआ़-मले में तुम मेरी हरगिज़ इत़ाअ़त न करना ।"

येह ख़ुत़्बा दे कर आप मिम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आए । अपना मालो दौलत और तमाम कपड़े वग़ैरा मंगवाए और उन्हें बैतुल माल में जम्अ़ करा दिया फिर तमाम शाही लिबास जो ख़ु-लफ़ा के लिये थे और तमाम आराइशी चीज़ें मंगवाईं और हुक्म दिया कि इन को बेच कर बैतुल माल में जम्अ़ करा दो । आप के हुक्म की ता'मील हुई और तमाम रक़म मुसल्मानों के बैतुल माल में जम्अ़ कर दी गई ।

आप दिन रात लोगों के मसाइल ह़ल करने में मसरूफ़ रहते कभी तो ऐसा भी होता कि आराम के लिये बिल्कुल वक़्त न मिलता और आप लोगों के मसाइल की वजह से आराम को तर्क कर देते । एक दिन ज़ोहर की नमाज़ से क़ब्ल बहुत ज़ियादा थकावट मह़सूस होने लगी तो कुछ देर क़ैलूला करने के लिये कमरे में तशरीफ़ ले गए अभी आप लैटे ही थे कि आप के साह़िब ज़ादे ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) यहां कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ?" आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया : "मुझे मुसल्सल बे आरामी की वजह से बहुत ज़ियादा थकावट हो रही थी इस लिये कुछ देर के लिये आराम की ग़रज़ से आया हूं ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साह़िब ज़ादे ने कहा : "ह़ुज़ूर ! लोग आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के मुन्तज़िर हैं और मज़्लूम अपनी फ़रियाद ले कर ह़ाज़िर हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यहां आराम फ़रमा हैं ।" आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया : "मैं सारी रात नहीं सो सका अब थोड़ी देर आराम कर के ज़ोहर के बा'द लोगों के मसाइल ह़ल करूंगा ।" तो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के अ़ज़ीम साह़िब ज़ादे ने कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! क्या आप को यक़ीन है कि आप ज़ोहर तक ज़िन्दा रहेंगे ?"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब अपने लख़्ते जिगर का फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर येह जुम्ला सुना तो फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मेरे क़रीब आओ ।" जब वोह क़रीब आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की पेशानी को बोसा दिया और फ़रमाने लगे : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे ऐसी

औलाद अ़ता फ़रमाई जो दीन के मुआ़-मले में मेरी मदद करती है।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन ही आराम किये बिग़ैर बाहर तशरीफ़ लाए और ए'लान करवा दिया कि जिस का किसी पर कोई ह़क़ है या जिस को कोई मस्अला दरपेश है वोह आ जाए मैं उसे उस का ह़क़ दिलवाऊंगा और उस के मसाइल ह़ल करूंगा। थोड़ी देर में एक ज़िम्मी काफ़िर आया और कहने लगा : "मैं ह़िम्स से आया हूं और आप से किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ फ़ैसला चाहता हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "आख़िर तुम्हारा मुआ़-मला क्या है ? तुम किस बात का फ़ैसला चाहते हो ?" वोह ज़िम्मी जवाबन कहने लगा : "अ़ब्बास बिन वलीद ने मेरी ज़मीन मुझ से ग़सब कर ली है।" अ़ब्बास बिन वलीद भी उसी मजलिस में मौजूद थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "ऐ अ़ब्बास ! तुम इस बारे में क्या कहते हो ?" अ़ब्बास बिन वलीद कहने लगे : "ह़ुज़ूर येह ज़मीन मुझे अमीरुल मुअमिनीन वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने दी थी, उन की लिखी हुई सनद मेरे पास मौजूद है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़िम्मी से फ़रमाया : "ऐ ज़िम्मी ! तू इस बारे में क्या कहता है ? इस के पास तो ज़मीन की मिल्किय्यत की सनद वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की त़रफ़ से मौजूद है जिस के मुत़ाबिक़ येह ज़मीन अ़ब्बास की मिल्किय्यत में है।" ज़िम्मी कहने लगा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! मैं आप से किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ फ़ैसला चाहता हूं।" अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की किताब (या'नी सनद) की बजाए किताबुल्लाह ज़ियादा लाइक़ है कि इस की पैरवी की जाए। लिहाज़ा ऐ अ़ब्बास ! तू येह ज़मीन इस ज़िम्मी को वापस कर दे।" चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह ज़मीन अ़ब्बास बिन वलीद से ले कर उस ज़िम्मी को दिलवाई तब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़रार ह़ासिल हुवा। इसी त़रह़ जो भी जाएदाद और ज़मीन वग़ैरा शाही ख़ानदान के पास ना ह़क़ मौजूद थी वोह सब की सब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के ह़क़दारों को वापस करा दी, जिन लोगों के अमवाल ना ह़क़ मक्बूज़ थे सब उन को वापस कर दिये गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिहाई अ़दलो इन्साफ़ का मुज़ा-हरा किया और शाही ख़ानदान के पास कोई चीज़ भी ऐसी न छोड़ी जिस पर किसी दूसरे का ह़क़ साबित हो रहा हो।

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़दलो इन्साफ़ पर मब्नी इन फ़ैसलों की ख़बर उ़मर बिन वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक को पहुंची तो उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ एक मक्तूब भेजा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत ज़ियादा सख़्त अल्फ़ाज़ से मुख़ात़ब किया। चुनान्चे उस ने लिखा :

"ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد ! तुम ने अपने से पहले तमाम ख़ु-लफ़ा पर ऐ़ब लगाया है और तुम ह़द से तजावुज़ कर गए हो, तुम ने बुग़्ज़ो इ़नाद की वजह से अपने पहलों के त़रीक़ों को छोड़ दिया है और उन के ख़िलाफ़ चल रहे हो, तुम ने क़ुरैश और उन की औलाद की मीरास को जब्रन बैतुल माल में दाख़िल कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की है और क़त़्ए रेह़मी से काम लिया है। ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और इस बात का ख़याल करो कि तुम ज़ुल्मो ज़ियादती से काम ले रहे हो, ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! अभी तुम्हारे पाउं सह़ीह़ त़ौर पर तख़्ते ख़िलाफ़त पर जमे

भी नहीं और तुम ने ऐसे सख़्त फ़ैसले करना शुरूअ़ कर दिये हैं। याद रखो ! तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निगाह में हो जो बहुत जब्बार व क़हहार है।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस का येह ख़त़ मिला तो आप ने उस को पढ़ कर उसी अन्दाज़ में उसे अ़दलो इन्साफ़ और जुरअते ईमानी से भरपूर ख़त़ रवाना किया जिस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की त़रफ़ से उ़मर बिन वलीद को। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है और सलाम हो तमाम रसूलों पर। **अम्मा बा'द !** ऐ उ़मर बिन वलीद ! मुझे तुम्हारी त़रफ़ से जो मक्तूब मिला है उस का जवाब उसी अन्दाज़ में लिख रहा हूं। ऐ उ़मर बिन वलीद ! तू ज़रा अपने आप को पहचान कि किस की औलाद है ? तू एक ऐसी लौंडी के बत़्न से पैदा हुवा था जिसे **ज़िब्यान बिन दय्यान** ने ख़रीदा था और उस की क़ीमत बैतुल माल से अदा की थी फिर उस ने वोह लौंडी तेरे वालिद को तोह़फ़तन दे दी थी। और अब तू इतना शदीद व सख़्त बन रहा है और तू गुमान कर रहा है कि मैं ने ह़ुदूदुल्लाह नाफ़िज़ कर के ज़ुल्म किया है। याद रख ! वोह ज़मीन और जाएदाद जो तुम्हारे ख़ानदान वालों के पास ना ह़क़ थी वोह मैं ने उन के ह़क़दारों को दे कर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया है। ज़ालिम तो वोह शख़्स है जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम का लिह़ाज़ न रखा और जिस ने ऐसे लोगों को गवर्नर और बुलन्द ह़ुकूमती ओ़हदे दिये जो सिर्फ़ अपने अहले ख़ाना और अपनी औलाद का भला चाहते थे और मुसल्मानों की मुश्किलात और उन के ह़ुक़ूक़ से उन्हें कोई ग़रज़ न थी और वोह अपनी मरज़ी से फ़ैसले करते थे। ऐ उ़मर बिन वलीद ! तुझ पर और तेरे बाप पर बहुत ज़ियादा अफ़्सोस है, बरोज़े क़ियामत तुम दोनों से ह़क़ मांगने वालों की ता'दाद बहुत ज़ियादा होगी, उस दिन लोग तुम से अपने ह़ुक़ूक़ का मुत़ा-लबा करेंगे और मुझ से ज़ियादा ज़ालिम तो **ह़ज्जाज बिन यूसुफ़** था जिस ने ना ह़क़ ख़ून बहाया और माले ह़राम पर क़ब्ज़ा किया और मुझ से ज़ियादा ज़ालिम व ना फ़रमान तो वोह शख़्स था जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़ुदूद क़ाइम करने के लिये **क़ुर्रह बिन शरीक** जैसे शख़्स को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया ह़ालां कि वोह निरा जाहिल था, उस ने शराब को आ़म किया और आलाते लह्वो लइब को ख़ूब परवान चढ़ाया।

ऐ उ़मर बिन वलीद ! तुम्हें मोहलत है कि जिन जिन का ह़क़ तुम पर है जल्द उन को वापस कर दो वरना तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के पास जो भी ऐसा माल है कि उस में किसी ग़ैर का ह़क़ शामिल है तो मैं उसे ह़क़दारों में तक़्सीम कर दूंगा और अगर तुम ग़ौरो फ़िक्र करो तो तुम्हारे अमवाल में बहुत सारे लोगों का ह़क़ शामिल है। अगर दुन्या व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो दूसरों के ह़क़ वापस कर दो। وَالسَّلَامُ عَلَیْنَا وَلَا سَلَامُ اللّٰهِ عَلَی الظّٰلِمِیْن या'नी हम पर सलामती हो और ज़ालिमों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सलामती न हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत व किरदार से आप के

दुश्मन भी मु-तअस्सिर हुए बिग़ैर न रह सके और उन्हों ने भी ए'तिराफ़ किया कि येह मर्दे मुजाहिद वाक़ेई ख़िलाफ़त के लाइक़ है। यहां तक कि जो लोग आप की जान के दर पै थे उन्हों ने भी आप رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہ की अच्छी सीरत और किरदार से मु-तअस्सिर हो कर अपने इरादों को तर्क कर दिया। ख़्वारिज भी आप رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہ से दुश्मनी रखते थे और आप رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہ को क़त्ल करना चाहते थे लेकिन जब उन को आप رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہ की सीरत और त़र्ज़े हुकूमत की ख़बर हुई तो उन्हों ने आपस में येह तै किया कि हम ऐसे अ़ज़ीम शख़्स से जंग करें और उसे क़त्ल कर दें, येह काम हमें ज़ैब नहीं देता लिहाज़ा वोह अपने इस मज़मूम फ़े'ल से बाज़ रहे और जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा आप निहायत अ़दलो इन्साफ़ से उमूरे ख़िलाफ़त अन्जाम देते रहे।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 54 : त़वील तरीन सफ़र "दो दिनों" में तै कर लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم ने अपनी तौबा से क़ब्ल का एक वाक़िआ़ बताया। जो वाक़िआ़त आप की तौबा का सबब बने उन में येह सब से पहला वाक़िआ़ था, आप फ़रमाते हैं : "मौसिमें गर्मा की एक सख़्त दो पहर, मैं अपने मह़ल के बाला ख़ाने में दुन्या की रंगीनियों में मगन था, मुझे हर त़रह़ की सहूलत मुयस्सर थी, मह़ल की एक खिड़की शारेए़ आ़म की त़रफ़ खुलती थी जिस से मैं बाहर के नज़ारों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हुवा करता था। उस दिन बहुत शदीद गर्मी थी लेकिन मैं अपने आराम देह, ठन्डे, हवादार बाला ख़ाने में अपने रु-फ़क़ा के साथ बड़े सुकून से ख़ुश गप्पियों में मसरूफ़ था। यकायक मेरी नज़र उस खिड़की की त़रफ़ पड़ी जो शारेए़ आ़म की त़रफ़ खुलती थी। में ने देखा कि उस सख़्त गर्मी में एक बुज़ुर्ग बोसीदा सी चादर में लिपटा दुन्या के ग़मों से बे फ़िक्र मह़ल की दीवार के साए तले बड़े सुकून से बैठा है। मैं उस की येह ह़ालत देख कर बहुत ह़ैरान हुवा। मैं ने फ़ौरन ख़ादिम को बुलाया और कहा : "उस बुज़ुर्ग के पास जाओ और उसे मेरी त़रफ़ से सलाम अ़र्ज़ करना और कहना कि आप कुछ देर मह़ल में तशरीफ़ ले चलें, हमारा बादशाह आप को बुला रहा है।" ख़ादिम फ़ौरन बुज़ुर्ग के पास गया और उसे मेरा पैग़ाम दिया। वोह ख़ादिम के साथ मेरे पास आया और मुझे सलाम किया। मैं ने जवाब दिया और उसे अपने पहलू में बिठाया उस की क़ुर्बत से मुझे दिली सुकून नसीब हुवा और मेरे दिल से दुन्या की मह़ब्बत ज़ाइल होने लगी। मैं ने उस बुज़ुर्ग के लिये खाना मंगवाया तो उस ने खाने से इन्कार कर दिया। मैं ने उस से पूछा : "आप कहां से तशरीफ़ लाए हैं ?" फ़रमाने लगे : "मैं **वराउन्नहर** से आया हूं।" मैं ने पूछा : "कहां का इरादा है ?" फ़रमाने लगे :

"إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हज का इरादा है।" मैं बहुत हैरान हुवा क्यूं कि उस दिन ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम की दो तारीख़ थी। मैं ने पूछा : "आप ह़ज के लिये अब रवाना हुए हैं हा़लां कि ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम की दो तारीख़ हो चुकी है, आप इतने कम वक़्त में ह़-रमैने शरीफै़न क्यूं कर पहुंच पाएंगे ?" तो वोह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है करता है, वोह हर शै पर क़ादिर है।" मैं ने कहा : "हु़ज़ूर ! अगर आप क़बूल फ़रमाएं तो मैं भी आप के साथ ह़-रमैने शरीफै़न की हा़ज़िरी के लिये चलूं।" फ़रमाया : "जैसे तुम्हारी मरज़ी।" चुनान्चे मैं ने उसी वक़्त इरादा कर लिया कि इस बुज़ुर्ग की सोह़बत ज़रूर हा़सिल करूंगा और इस के साथ ह़ज करने जाऊंगा। जब रात हुई तो उस बुज़ुर्ग ने मुझ से फ़रमाया : "चलो ! हम अपने सफ़र पर रवाना होते हैं।" मैं सफ़र की कुछ ज़रूरी चीजें ले कर उन के साथ चलने को तय्यार हो गया। उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और हम रात ही को **बल्ख़** से रवाना हो गए। हम ने रात के कुछ ही हि़स्से में काफ़ी फ़ासिला तै़ कर लिया फिर हम एक गाउं में पहुंचे तो मुझे एक शख़्स मिला मैं ने उसे चन्द ज़रूरी अश्या लाने को कहा तो उस ने फ़ौरन वोह चीजें हा़ज़िर कर दीं फिर हमें खाना पेश किया। हम ने खाना खाया, पानी पिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। फिर उस बुज़ुर्ग ने मुझ से फ़रमाया : "उठिये, फिर उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और चल दिये। हम मन्ज़िल पर मन्ज़िल तै़ करते जाते। मुझे ऐसा मह़सूस हो रहा था कि ज़मीन हमारे लिये समेट दी गई है और ख़ुद ब ख़ुद हमें खींच कर मन्ज़िल की त़रफ़ ले जा रही है। हम कई शहरों और बस्तियों को पीछे छोड़ते हुए अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ रवां दवां थे। जब भी कोई शहर आता तो वोह बुज़ुर्ग मुझे बताते कि येह फ़ुलां शहर है, येह फ़ुलां जगह है।

जब हम कूफ़ा पहुंचे तो उन्हों ने मुझ से कहा : "तुम मुझे रात को फ़ुलां वक़्त फ़ुलां जगह मिलना।" इतना कहने के बा'द वोह वहां से चले गए। जब मैं वक़्ते मुक़र्ररा पर उस जगह पहुंचा तो वोह बुज़ुर्ग वहीं मौजूद थे। उन्हों ने मुझे देखा तो मेरा हाथ पकड़ा और फिर मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये। मैं है़रान था कि उस बुज़ुर्ग की सोह़बत में न तो मुझे थकावट का एह़सास हो रहा था और न ही किसी क़िस्म की वह़शत मह़सूस हो रही थी। हमारी मन्ज़िल क़रीब से क़रीब तर होती जा रही थी। फिर उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! अब हम अपनी अ़क़ीदतों के मर्कज़ और उ़श्शाक़ की आंखों की ठन्डक "**मदीनए मुनव्वरह**" की नूरबार फ़ज़ाओं में दाख़िल होने वाले हैं।"

हम धड़क्ते दिल के साथ रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर हा़ज़िर हुए और दुरूदो सलाम के नज़राने पेश किये, मेरे दिल को काफ़ी क़रार नसीब हुवा, मैं रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर फ़ज़ाओं में गुम हो गया।

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें
ढूंडा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

फिर उस बुज़ुर्ग ने मुझ से फ़रमाया : "अब मैं किसी काम से जा रहा हूं और रात के फ़ुलां हिस्से में तुम मुझे फ़ुलां जगह मिलना।" इतना कहने के बा'द वोह बुज़ुर्ग मेरी नज़रों से ओझल हो गए फिर जब मैं मुक़र्ररा वक़्त पर उस जगह पहुंचा तो देखा कि वोह वहां मुझ से पहले ही मौजूद हैं और नमाज़ में मश्ग़ूल हैं। नमाज़ से फ़रागत के बा'द उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा : "चलो अब "**मक्कए मुकर्रमा**" की त़रफ़ चलते हैं।" हम ने चलना शुरूअ़ कर दिया और थोड़ी ही देर बा'द हम "**मक्कए मुकर्रमा**" की मुश्कबार फ़ज़ाओं में सांस ले रहे थे।" अब उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! अब तुम **मक्कए मुकर्रमा** पहुंच चुके हो, अब मैं तुम से जुदाई चाहता हूं।" येह सुनते ही मैं ने उन का दामन थाम लिया और अ़र्ज़ की : "मैं आप की सोह़बते बा ब-र-कत से मज़ीद फ़ैज़याब होना चाहता हूं।" उस अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : "मैं मुल्के शाम जाना चाहता हूं।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मुझे भी अपनी रफ़ाक़त में शाम ले चलें।" फ़रमाने लगे : "जब तुम ह़ज मुकम्मल कर लो तो मुझे **बीरे ज़मज़म** के पास मिलना, मैं वहीं तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा।" इतना कहने के बा'द वोह बुज़ुर्ग वहां से तशरीफ़ ले गए और मैं ह़सरत भरी निगाहों से उन को देखता रहा। जब मैं फ़रीज़ए ह़ज अदा कर चुका तो मुक़र्ररा वक़्त पर **बीरे ज़मज़म** के पास पहुंचा। वोह अ़ज़ीम बुज़ुर्ग वहां मेरे मुन्तज़िर थे मुझे देख कर उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और हम ने ख़ानए का'बा का त़वाफ़ किया, फिर हम **मक्कए मुकर्रमा** को ह़सरत भरी निगाहों से देखते हुए मुल्के शाम की त़रफ़ रवाना हो गए।

हम जब शाम की त़रफ़ रवाना हुए तो उस बुज़ुर्ग ने एक मक़ाम पर पहुंच कर पहले ही की त़रह़ मुझ से फ़रमाया : "तुम यहां मेरा इन्तिज़ार करना मैं फ़ुलां वक़्त तुम्हें यहीं मिलूंगा।" वोह वक़्ते मुक़र्ररा पर वहां पहुंच गए इसी त़रह़ उन्हों ने तीन मर्तबा किया फिर हमें बहुत जल्द शाम की सरह़दें नज़र आने लगीं। हम बहुत ही क़लील वक़्त में मक्कए मुकर्रमा से शाम पहुंच गए। वोह बुज़ुर्ग मुझे ले कर "**बैतुल मुक़द्दस**" पहुंचे और मस्जिद में दाख़िल हुए और मुझ से फ़रमाने लगे : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! येही मेरी रिहाइश गाह है। अब हमारी जुदाई का वक़्त आ गया है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे और तुम पर सलामती हो।"

इस के बा'द वोह बुज़ुर्ग अचानक मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गए। मैं ने उन को बहुत तलाश किया लेकिन मुझे वोह न मिल सके और न ही उन के मु-तअ़ल्लिक़ किसी से कोई मा'लूमात मिल सकीं और मैं येह भी न जान सका कि जिस अ़ज़ीम हस्ती की कुछ दिनों की सोह़बत ने मेरी ज़िन्दगी की काया पलट दी, मेरे दिल से दुन्या की मह़ब्बत ख़त्म कर दी मेरे उस मोह़सिन का नाम क्या है। मैं उस के नाम से भी ना वाक़िफ़ रहा फिर **मैं अपने दिल में उस बुज़ुर्ग की जुदाई का ग़म लिये शाम से बल्ख़ की त़रफ़ रवाना हुवा और अब मैं इस सफ़र को बहुत त़वील मह़सूस कर रहा था और मेरा वापसी का सफ़र मुझ पर बहुत सख़्त हो गया था मुझे उस बुज़ुर्ग की रफ़ाक़त में गुज़रे हुए नूरानी लम्ह़ात बार बार याद आ रहे थे**। बिल आख़िर मैं सफ़र की काफ़ी सुऊ़बतें बरदाश्त कर के कई दिनों के बा'द अपने शहर बल्ख़ पहुंचा।

जो वाक़िआत मेरी तौबा का सबब बने येह उन में सब से पहला वाक़िआ़ था और इस की वजह से मैं दुन्यावी ज़िन्दगी से काफ़ी बेज़ार हो चुका था, मुझे उस बुज़ुर्ग के साथ गुज़रे हुए लम्ह़ात बार बार याद आते और मैं उन के दीदार का मुशताक़ रहा ही लेकिन दोबारा उन से मुलाक़ात न हो सकी।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 55 : फ़िक्रे आख़िरत के लिये कोई नहीं रोता

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन सलत अल जोशी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं अपने एक आ़बिदो ज़ाहिद दोस्त से मिलने बसरा गया। जब मैं उन के घर पहुंचा तो देखा कि उन की ह़ालत बहुत नाज़ुक है और शिद्दते मरज़ से क़रीबुल मर्ग हैं, उन के बच्चे, ज़ौजा और मां बाप इर्द गिर्द खड़े रो रहे हैं और सब के चेहरों पर मायूसी इ़यां है। मैं ने जा कर सलाम किया और पूछा : "आप इस वक़्त क्या मह़सूस कर रहे हैं ?" येह सुन कर मेरे वोह दोस्त कहने लगे : "मैं इस वक़्त ऐसा मह़सूस कर रहा हूं जैसे मेरे जिस्म के अन्दर च्यूंटियां घूम फिर रही हों।"

इतनी देर में उन के वालिद रोने लगे तो मेरे दोस्त ने पूछा : "ऐ मेरे शफ़ीक़ बाप ! आप को किस चीज़ ने रुलाया ?" कहने लगे : "मेरे लाल ! तेरी जुदाई का ग़म मुझे रुला रहा है, तेरे मरने के बा'द हमारा क्या बनेगा।" फिर उन की मां, बच्चे और ज़ौजा भी रोने लगी। मेरे दोस्त ने अपनी वालिदा से पूछा : "ऐ मेरी मेहरबान व शफ़ीक़ मां ! तुम क्यूं रो रही हो ?" मां ने जवाब दिया : "मेरे जिगर के टुकड़े ! मुझे तेरी फ़ुरक़त का ग़म रुला रहा है, मैं तेरे बिग़ैर कैसे रह पाऊंगी।" फिर अपनी बीवी से पूछा : "तुम्हें किस चीज़ ने रोने पर मजबूर किया ?" उस ने भी कहा : "मेरे सरताज ! तेरे बिग़ैर हमारी ज़िन्दगी अजीरन हो जाएगी, जुदाई का ग़म मेरे दिल को घाइल कर रहा है, तेरे बा'द मेरा क्या होगा ?" फिर अपने रोते हुए बच्चों को क़रीब बुलाया और पूछा : "मेरे बच्चो ! तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया है ?" बच्चे कहने लगे : "आप के विसाल के बा'द हम यतीम हो जाएंगे, हमारे सर से सायए पिदरी उठ जाएगा, आप के बा'द हमारा क्या बनेगा ? आप की जुदाई का ग़म हमें रुला रहा है।"

उन सब की येह बातें सुन कर मेरे दोस्त ने कहा : "मुझे बिठा दो।" जब उन्हें बिठा दिया गया तो घर वालों से कहने लगे : "तुम सब दुन्या के लिये रो रहे हो। तुम में से हर शख़्स मेरे लिये नहीं बल्कि अपना नफ़्अ़ ख़त्म हो जाने के ख़ौफ़ से रो रहा है, क्या तुम में से कोई ऐसा भी है जिसे इस बात

ने रुलाया हो कि मरने के बा'द क़ब्र में मेरा क्या ह़ाल होगा, अन्क़रीब मुझे वह़शत नाक तंगो तारीक क़ब्र में छोड़ दिया जाएगा, क्या तुम में से कोई इस बात पर भी रोया कि मुझे मरने के बा'द मुन्कर व नकीर से वासित़ा पड़ेगा ? क्या तुम में से कोई इस ख़ौफ़ से भी रोया कि मुझे मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के सामने (ह़िसाबो किताब के लिये) खड़ा किया जाएगा ? तुम में से कोई भी मेरी उख़्रवी परेशानियों की वजह से नहीं रोया बल्कि हर एक अपनी दुन्या की वजह से रो रहा है, फिर एक चीख़ मारी और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 56 : चौथे आस्मान का फ़िरिश्ता

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तिजारत किया करते थे, एक मुल्क से दूसरे मुल्क और एक शहर से दूसरे शहर माले तिजारत ले जाते, वोह बहुत मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे और उन की आ़दत थी कि अकेले ही सफ़र करते ।

इसी त़रह़ एक मर्तबा वोह सामाने तिजारत ले कर सफ़र पर रवाना हुए । जब एक जंगल में पहुंचे तो अचानक आहनी ज़िरह पहने एक मुसल्लह़ डाकू ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रोक लिया और कहा : "अपना सारा माल मेरे ह़वाले कर दो और क़त्ल होने के लिये तय्यार हो जाओ ।" येह सुन कर वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे : "तुम्हारा मक़्सूद माल है तुम मेरा सारा माल ले लो और मुझे जाने दो, मुझे क़त्ल करने से तुम्हें क्या फ़ाएदा होगा ? येह लो मैं अपना तमाम माल तुम्हारे ह़वाले करता हूं ।"

येह सुन कर डाकू ने कहा : "मैं तुम्हारा माल तो लूंगा ही मगर तुम्हें क़त्ल भी ज़रूर करूंगा ।" इतना कहने के बा'द जब वोह ह़म्ला करने के लिये आगे बढ़ा तो उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "जब तुम मेरे क़त्ल का इरादा कर ही चुके हो तो मुझे थोड़ी मोहलत दो ताकि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सज्दा कर लूं और उस से दुआ़ कर लूं ।" येह सुन कर डाकू ने कहा : "जो करना है जल्दी करो मैं तुम्हें क़त्ल ज़रूर करूंगा, जल्दी से नमाज़ वग़ैरा पढ़ लो ।" उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वुज़ू किया, चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, फिर सज्दे की ह़ालत में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से इस त़रह़ दुआ़ मांगने लगे :

"یَا وَدُوْدُ یَا ذَاالْعَرْشِ الْمَجِیْدِ، یَا فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ، اَسْئَلُکَ بِعِزِّکَ الَّذِیْ لَا یُرَامُ وَمُلْکِکَ الَّذِیْ لَا یُضَامُ، بِنُوْرِکَ الَّذِیْ مَلَأَ اَرْکَانَ عَرْشِکَ اَنْ تَکْفِیَنِیْ شَرَّ ھٰذَا اللِّصِّ، یَا مُغِیْثُ اَغِثْنِیْ، یَا مُغِیْثُ اَغِثْنِیْ، یَا مُغِیْثُ اَغِثْنِیْ

तरजमा : ऐ वदूद ! ऐ अ़र्शे मजीद के मालिक ! ऐ वोह ज़ात जो हर इरादे को पूरा करने वाली है ! मैं तेरी इ़ज़्ज़त का वासित़ा देता हूं ऐसी इ़ज़्ज़त जिस की कोई इन्तिहा नहीं और ऐ ऐसी बादशाहत के मालिक ! जिस पर कोई दबाव नहीं डाल सकता, मैं तुझे तेरे उस नूर का वासित़ा दे कर सुवाल करता हूं जिस ने तेरे अ़र्श के अरकान को मुनव्वर किया हुवा है, ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस डाकू के शर से मह़फ़ूज़ रख, ऐ मदद करने वाले ! मेरी मदद फ़रमा, ऐ मदद करने वाले ! मेरी मदद फ़रमा, ऐ मदद करने वाले ! मेरी मदद फ़रमा ।"

उस सह़ाबी ने बड़ी आहो ज़ारी के साथ इन कलिमात के ज़रीए तीन मर्तबा बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की, अभी वोह दुआ़ से फ़ारिग़ भी न होने पाए थे कि एक जानिब से एक शह सुवार हाथ में नेज़ा लिये नुमूदार हुवा और उस डाकू की त़रफ़ बढ़ा, जब डाकू ने उसे देखा तो उस पर ह़म्ला करना चाहा लेकिन सुवार ने नेज़े के एक ही वार से डाकू का काम तमाम कर दिया । फिर वोह सुवार उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास आया और कहा : "खड़े हो जाइये ।"

येह सुन कर वोह सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه खड़े हुए और उस सुवार से कहने लगे : "ऐ अ़ज़ीम शख़्स ! मेरे मां बाप तुम पर क़ुरबान हों ! आज इस मुसीबत के दिन तुम ने मेरी मदद की है, तुम कौन हो ?" सुवार ने कहा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता हूं और चौथे आस्मान से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मदद के लिये आया हूं, जब आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने (इन पाकीज़ा कलिमात के साथ) पहली बार दुआ़ की तो आस्मान के दरवाज़ों की आवाज़ हमें सुनाई दी, फिर जब दूसरी मर्तबा दुआ़ की तो हम ने आस्मान में एक चीख़ो पुकार सुनी, फिर जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तीसरी मर्तबा येही दुआ़ की तो हमें येह आवाज़ सुनाई दी : "येह एक परेशान ह़ाल की दुआ़ है । लिहाज़ा मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : " या रब्बल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस मज़्लूम की मदद करने और उस डाकू को क़त्ल करने की इजाज़त दे ।" चुनान्चे मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मदद करने आया हूं ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जो शख़्स वुज़ू करे और चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े फिर इन मज़्कूरा बाला कलिमात के साथ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करे तो उस की दुआ़ क़बूल हो जाती है, चाहे दुआ़ करने वाला ह़ालते कर्ब में दुआ़ करे या इस के इ़लावा (या'नी जब भी दुआ़ करे उस की दुआ़ क़बूल की जाती है) ।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب مجابی الدعوة، الحدیث:۲۳، ج۲، ص۳۲۱-۳۲۳)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ जो दुआ़ए नेक मैं तुझ से करूं
क़ुदसियों के लब से आमीं रब्बना का साथ हो

हि़कायत नम्बर 57 : पुर असरार जज़ीरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हैसम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ग़ालिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा मैं अपने चन्द साथियों के साथ बह़री सफ़र पर रवाना हुवा, हमारी कश्ती समुन्दर के सीने को चीरती हुई जानिबे मन्ज़िल चली जा रही थी। अचानक हमारी कश्ती एक जज़ीरे के क़रीब जा पहुंची, हम ने वहां कश्ती रोकी तो वोह एक वीरान और बड़ी होलनाक जगह थी वहां हमें कोई शख़्स नज़र न आया। मैं ने इरादा किया कि मैं इस जगह को ज़रूर देखूंगा शायद यहां कोई अ़जीबो ग़रीब शै नज़र आए। चुनान्चे मैं कश्ती से उतरा और अकेला ही उस **पुर असरार जज़ीरे** की त़रफ़ चल दिया, वहां का मन्ज़र बड़ा होलनाक था, मुझे न तो वहां कोई इन्सान नज़र आया न ही कोई घर वग़ैरा। फिर कुछ दूर एक घर नज़र आया, मैं ने जान लिया कि इस में ज़रूर कोई न कोई रहता होगा और यहां कोई अ़जीबो ग़रीब बात ज़रूर होगी क्यूं कि इस वीराने में किसी घर का मौजूद होना एक अ़जीब सी बात थी।

मैं ने तहिय्या कर लिया कि इस घर के राज़ को ज़रूर जानूंगा, चुनान्चे मैं वहां से वापस अपने दोस्तों के पास आया और उन से कहा : "मुझे तुम से एक काम है, अगर तुम इसे पूरा कर दो तो एह़सान होगा।" उन्हों ने पूछा : "बताइये क्या काम है ?" मैं ने जवाब दिया : "आज रात हम इसी जज़ीरे में क़ियाम करेंगे और सुब्ह़ सफ़र पर रवाना होंगे।" मेरे रु-फ़क़ा मेरी इस ख़्वाहिश पर वहीं रात बसर करने के लिये तय्यार हो गए। मैं फिर येह सोचते हुए उस घर की त़रफ़ चल दिया कि जब रात होगी तो उस घर में रहने वाले ज़रूर यहां आएंगे और मैं उन से मुलाक़ात कर लूंगा। चुनान्चे मैं वहीं ठहर गया फिर येह सोच कर मैं उस घर में दाख़िल हो गया कि आख़िर देखूं तो सही कि इस में क्या है। मैं ने उस छोटे से घर को बिल्कुल ख़ाली पाया, उस में सिर्फ़ एक घड़ा था और वोह भी बिल्कुल ख़ाली और एक बड़ा सा थाल था जिस में कुछ न था, इन के इ़लावा उस घर में कोई शै नहीं थी। मैं एक जगह छुप कर बैठ गया और रात होने का इन्तिज़ार करने लगा, जब सूरज ग़ुरूब हो गया और रात ने अपने पर फैला दिये तो मुझे अचानक एक आहट सी मह़सूस हुई और पहाड़ की जानिब से हल्की हल्की आवाज़ आने लगी, मैं मोह़तात़ हो कर बैठ गया और ग़ौर से उस आवाज़ को सुनने लगा। येह किसी नौ जवान की आवाज़ थी जो اَللّٰہُ اَکْبَر ,سُبْحَانَ اللّٰہِ عَزَّ وَجَلَّ ,اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّ وَجَلَّ की सदाएं लगाता हुवा इसी घर की त़रफ़ आ रहा था। कुछ देर बा'द एक पुर कशिश नूरानी शक्ल व सूरत वाला नौ जवान उस घर में दाख़िल हुवा, उस ने आते ही नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी और काफ़ी देर नमाज़ में मश्ग़ूल रहा, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द वोह उस बरतन की त़रफ़ बढ़ा जो बिल्कुल ख़ाली था। नौ जवान ने उस बरतन से खाना शुरूअ़ कर दिया ह़ालां कि मैं देख चुका था कि वोह बरतन बिल्कुल ख़ाली था लेकिन वोह नौ जवान उसी बरतन में से न जाने क्या खा रहा था ? कुछ देर बा'द वोह उठा और घड़े की त़रफ़ आया और ऐसा लगा गोया कि उस में से पानी पी रहा हो ह़ालां कि मैं ने देखा

था कि उस घड़े में पानी का एक क़तरा भी न था, मैं बड़ा हैरान हुवा और छुप कर बैठा रहा।

उस नौ जवान ने खाने पीने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और दोबारा नमाज़ में मश्गूल हो गया और फ़ज्र तक नमाज़ पढ़ता रहा, फ़ज्र के वक़्त मुझ से रहा न गया पस मैं उस के सामने ज़ाहिर हो गया। उस की इक़्तिदा में नमाज़े फ़ज्र अदा की, नमाज़ के बा'द वोह नौ जवान मुझ से मुख़ातिब हो कर कहने लगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू कौन है और मेरी इजाज़त के बिग़ैर मेरे घर में कैसे दाख़िल हो गया ?" मैं ने कहा : "ऐ मर्दे सालेह़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए मैं किसी बुरी निय्यत यहां से नहीं आया बल्कि मैं तो भलाई ही के लिये यहां आया हूं, मुझे चन्द बातों से बड़ी हैरानी हुई है, मैं ने आप के आने से पहले घड़े को देखा था तो उस में पानी बिल्कुल न था लेकिन आप ने उसी में से पानी पिया, इसी त़रह़ जिस बरतन से आप ने खाना खाया वोह तो बिल्कुल ख़ाली था फिर आप ने कैसे खाना खाया ? मेरे लिये येह बातें बड़ी हैरान कुन हैं।" येह सुन कर वोह नौ जवान कहने लगा : "तुम ने बिल्कुल ठीक कहा कि वोह बरतन और घड़ा ख़ाली था लेकिन मैं ने जो खाना इस बरतन से खाया वोह ऐसा खाना नहीं जिसे लोग त़लब करते हैं, इसी त़रह़ मैं ने जो पानी पिया वोह ऐसा नहीं जैसा लोग पीते हैं।"

येह सुन कर मैं ने उस नौ जवान से कहा : "अगर आप चाहें तो मैं आप को ताज़ा मछली ला कर दूं ?" नौ जवान कहने लगा : "क्या तुम मुझे (दुन्यवी) ग़िज़ा की दा'वत दे रहे हो ?" मैं ने कहा : "ऐ नौ जवान ! इस उम्मत को येह हुक्म नहीं दिया गया जैसे आप कर रहे हैं बल्कि हमें तो येह हुक्म दिया गया कि जमाअ़त के साथ रहें, मसाजिद में ह़ाज़िर हों, बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत ह़ासिल करें, मरीज़ों की इ़यादत करें, मुसल्मानों के जनाज़ों में ह़ाज़िर हों और मख़्लूक़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ख़ैर ख़्वाही करें, लेकिन आप ने येह सब काम छोड़ कर गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली है और इन सआ़दतों से मह़रूम हो गए हैं।" येह सुन कर वोह नौ जवान कहने लगा : "आप ने जो बातें ज़िक्र कीं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे वोह तमाम सआ़दतें ह़ासिल हैं, यहां क़रीब ही एक बस्ती है जहां जा कर मैं अ़वामुन्नास की ख़ैर ख़्वाही भी करता हूं और आप के ज़िक्र कर्दा बाक़ी उमूर भी सर अन्जाम देता हूं।" इतना कहने के बा'द उस नौ जवान ने एक पर्चे पर कुछ लिखा और फिर ज़मीन पर लैट गया मैं समझा की शायद इस का इन्तिक़ाल हो गया, क़रीब जा कर देखा तो वोह वाक़ेई ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले थे। जब उन की क़ब्र खोदी गई तो उस से मुश्क की ख़ुश्बू आ रही थी।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 58 : नसीह़त आमोज़ चार अश्आ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुह़म्मद सूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं कि मैं एक बार मौसिमे सर्मा की बहुत सर्द रात किसी काम से "**ह़ल्वान**" की पहाड़ियों में गया। सर्दी अपनी इन्तिहा को पहुंच चुकी थी, मैं ने अपने जिस्म पर दोहरा लिबास पहना हुवा था और एक मोटा कम्बल भी ओढ़ रखा था लेकिन फिर भी सर्दी की वजह से मुझे बहुत परेशानी हो रही थी। अचानक मेरी नज़र एक नौ जवान पर पड़ी जिस के जिस्म पर सिर्फ़ दो चादरें थीं जिन से सिर्फ़ सित्र पोशी हो सकती थी, इस के इलावा उस के पास कोई कपड़ा नहीं था। वोह बिल्कुल मुत़्मइन नज़र आ रहा था गोया सर्दी की वजह से उसे कोई परेशानी ही नहीं। मैं उस की जानिब बढ़ा लेकिन वोह मुझ से दूर हट कर चलने लगा। मैं फिर उस के क़रीब गया लेकिन वोह मुझ से दूर हो गया, फिर मैं जल्दी जल्दी चला और उस के पास पहुंच गया और पूछा : "तुम मुझ से दूर क्यूं भाग रहे हो ? क्या में कोई दरिन्दा हूं जो तुम मुझ से दूरी चाह रहे हो ? येह सुन कर उस नौ जवान ने कहा : "अगर सत्तर (70) दरिन्दे मेरे सामने आ जाएं तो मुझे उन से इतनी परेशानी नहीं होगी जितनी तुम्हारी मुलाक़ात से हो रही है।"

मैं ने उस से कहा : "इतनी सख़्त सर्दी में तुम ने सिर्फ़ दो मा'मूली चादरें जिस्म पर लपेटी हुई हैं और तुम्हें सर्दी का एह़सास तक नहीं हो रहा और मेरी ह़ालत येह है कि सर्दी से हि़फ़ाज़त के लिये कई कपड़े मौजूद हैं फिर भी सर्दी मह़सूस कर रहा हूं, तुम मुझे कोई नसीह़त करो ताकि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ कर लूं और मेरे दिल में उस की मह़ब्बत रासिख़ हो जाए।" वोह नौ जवान कहने लगा : "क्या तुम नसीह़त आमोज़ बातें सुनना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "हां।" फिर उस नौ जवान ने येह चार अश्आ़र पढ़े :

اِذَامَاعَدَتِ النَّفْسُ عَنِ الْحَقِّ زَجَرْنَاهَا
وَاِنَّ مَالَتْ اِلَى الدُّنْيَاعَنِ الْاُخْرٰى مَنَعْنَاهَا
تُخَادِعُنَاوَنَخْدَعُهَاوَبِالصَّبْرِ غَلَبْنَاهَا
لَهَاخَوْفٌ مِنَ الْفَقْرِ وَفِىْ الْفَقْرِ اَنَخْنَاهَا

तरजमा : (1)...... जब कभी नफ़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में कोताही करता है तो हम उसे ज़ज्र व तौबीख़ करते हैं।

(2)...... जब उख़्रवी ने'मतो को छोड़ कर दुन्या की त़रफ़ माइल होता है तो हम उसे मन्अ़ कर देते हैं।

(3)...... नफ़्स हमें धोका देना चाहता है तो हम भी उस का मुक़ाबला करते हैं और सब्र की वजह से उस पर ग़ालिब आ जाते हैं।

(4)...... नफ़्स फ़क़्रो फ़ाक़ा से ख़ौफ़ ज़दा होता है जब कि हम फ़क़्रो फ़ाक़ा की वजह से ख़ुश होते हैं।

इस के बा'द वोह नौ जवान मेरी नज़रों से ओझल हो गया। तीन या चार दिन के बा'द जब मेरी वापसी हुई तो मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان से मुलाक़ात की और उस नौ

जवान की बातों की वजह से मेरी येह ह़ालत थी कि मैं ने कम्बल उतार फेंका था और सिर्फ़ सादा लिबास पहना हुवा था ह़ालां कि सख़्त सर्दी थी, जब मैं इब्राहीम बिन शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के पास पहुंचा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से पूछा : "सफ़र में तुम्हारी मुलाक़ात किस से हुई ?" मैं ने उस नौ जवान का वाक़िआ़ बताया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाने लगे : "वोह अबू मुह़म्मद बिस्त़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى थे और उस दिन वोह मुझ से मुलाक़ात कर के गए थे, जो अश्आ़र उन्हों ने तुम्हें सुनाए वोह हमें भी सुनाओ।" मैं ने वोह अश्आ़र सुनाना शुरूअ़ किये तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने साह़िब ज़ादे से फ़रमाया : "येह अश्आ़र बहुत नसीह़त आमोज़ हैं, इन्हें लिख लो।" चुनान्चे उन्हों ने वोह अश्आ़र क़लम बन्द कर लिये।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 59 : और वोह ज़िन्दा हो गया...... !

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम एक अन्सारी नौ जवान की इ़यादत के लिये गए, वोह अपनी बूढ़ी मां का इक्लौता बेटा था और वोह म-रजुल मौत में मुब्तला था, इ़यादत के बा'द हम वापस होने वाले ही थे कि उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। हम वहीं ठहर गए, उस की आंखें बन्द कीं और उस पर चादर डाल दी। उस नौ जवान की बूढ़ी मां हमारे क़रीब ही खड़ी थी, हम ने उसे तसल्ली देते हुए कहा : "येह जो मुसीबत तुझ पर आन पड़ी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर इस पर सब्र कर।" येह सुन कर वोह बुढ़िया कहने लगी : "क्या हुवा, क्या मेरा बेटा मर गया ?" हम ने कहा : "जी हां।" उस ने कहा : "क्या तुम सच कह रहे हो ?" हम ने कहा : "हम सच कह रहे हैं, वाक़ेई तुम्हारे बेटे का इन्तिक़ाल हो चुका है।" येह सुन कर उस बूढ़ी औ़रत ने दुआ़ के लिये अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द किये और बड़ी आहो ज़ारी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुई :

"ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ पर ईमान लाई और तेरे मह़बूब रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मैं ने हिजरत की, मुझे तेरी ज़ात से उम्मीदे वासिक़ है कि तू हर मुसीबत में मेरी मदद करेगा। ऐ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! आज के दिन मुझ पर (मेरे बेटे की जुदाई की) मुसीबत का बोझ न डाल।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, अभी वोह बुढ़िया अपनी दुआ़ से फ़ारिग़ भी न होने पाई थी कि उस के मुर्दा बेटे के मुंह से कपड़ा हट गया और वोह (मुस्कराता हुवा) उठ बैठा और फिर हम सब ने मिल कर खाना खाया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हाथ उठते ही बर आए हर मुद्दआ़ वोह दुआ़ओं में मौला असर चाहिये

हिकायत नम्बर 60 : आस्मानी लश्कर

हज़रते सय्यिदुना अबू उत्बा अल ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : मेरी मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से हुई जो उन अज़ीम हस्तियों में से था जिन्हों ने अपने आप को इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये वक़्फ़ कर रखा था और लोगों की नज़रों से ओझल हो कर पहाड़ों मे इबादत किया करते थे। उस शख़्स ने मुझे बताया : "दुन्या में मुझे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی और अब्दालों से मुलाक़ात करने और उन की सोहबत से ब-र-कतें लूटने से ज़ियादा कोई चीज़ मरग़ूब व महबूब न थी, मैं बुज़ुर्गों की तलाश में जगह जगह फिरता, जंगलों और पहाड़ों में जाता इस उम्मीद पर कि शायद किसी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली से मुलाक़ात हो जाए।"

एक मर्तबा इसी त़रह़ घूमता फिरता मैं एक ऐसे साहिल पर पहुंच गया जहां बिल्कुल आबादी न थी और न ही उस साहिल की त़रफ़ किश्तियां आती थीं, वोह एक वीरान जगह थी, अचानक मेरी नज़र एक शख़्स पर पड़ी जो पहाड़ की ओट से आ रहा था, जब उस ने मुझे देखा तो एक त़रफ़ दौड़ लगा दी। मैं भी उस की त़रफ़ दौड़ा कि शायद येह कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली है, मैं इस से मुलाक़ात ज़रूर करूंगा, मैं उस के पीछे पीछे भाग रहा था कि अचानक उस का पाउं फिसला और वोह गिर पड़ा, मैं उस के क़रीब पहुंच गया और उस से पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू मुझ से ख़ौफ़ ज़दा हो कर क्यूं भाग रहा है ?"

वोह ख़ामोश रहा और मुझ से कोई बात न की। मैं ने उस से कहा : "मैं तो तुझ से नसीह़त आमोज़ और ख़ैर की बातें सुनना चाहता हूं, मुझे कुछ ख़ैर व भलाई की बातें बताओ।" येह सुन कर वोह शख़्स कहने लगा : "तुम जहां भी रहो ह़क़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपनी ऐसी अच्छाइयां नहीं पाता जिन की मिस्ल तुम्हें दा'वत दूं कि तुम भी ऐसी ही अच्छाइयां करो।" फिर उस शख़्स ने चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर पड़ा। जब उसे देखा तो पता चला कि उस की रूह़ जिस्म से जुदा हो चुकी है।

मैं बहुत परेशान हुवा कि इस वीराने में इस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन कैसे करूंगा, यहां मेरी मदद को कौन आएगा, यहां तो दूर दूर तक आबादी का नामो निशान नहीं। मैं इसी शशो पन्ज में रहा यहां तक कि रात ने अपने पर फैलाना शुरूअ़ कर दिये और हर त़रफ़ तारीकी छा गई। मैं एक त़रफ़ जा कर बैठ गया थोड़ी ही देर बा'द मुझ पर नींद का ग़-लबा हो गया। मैं ने ख़्वाब में देखा की आस्मान से चार लश्कर उस पहाड़ पर उतरे और उन्हों ने उस शख़्स के लिये क़ब्र खोदी, फिर उसे कफ़न पहनाया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उसे दफ़्न कर दिया।

अचानक मेरी आंख खुल गई और मैं ख़्वाब से बहुत ख़ौफ़ ज़दा था। बाक़ी रात मैं ने जाग कर गुज़ारी, नींद मेरी आंखों से बहुत दूर थी। जब सुब्ह़ हुई तो मैं उसी जगह पहुंचा जहां उस शख़्स को मुर्दा ह़ालत में छोड़ा था तो येह देख कर हैरान रह गया कि वहां उस की लाश मौजूद न थी। मैं ने ख़ूब तलाश किया लेकिन उस की लाश न मिल सकी फिर मुझे वहां से कुछ फ़ासिले पर एक ताज़ा क़ब्र नज़र आई, मैं समझ

गया कि येह वोही क़ब्र है जिसे मैं ने ख़्वाब में देखा था।

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

न पाऊं मैं अपना पता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 61 : समुन्दर की लहरों पर चलने वाला नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अल ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की सोह़बत में रहते हुए मुझे काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया और मैं उन से बहुत ज़ियादा मानूस हो गया।

तो एक मर्तबा मैं ने हिम्मत कर के उन से पूछा : "ह़ुज़ूर ! आप को सब से पहले कौन सा अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया ?" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : "मैं अय्यामे जवानी में ख़ूब लह्वो लइब की मह़फ़िलों में मगन रहता और दुन्या की रंगीनियों ने मेरी आंखों पर ग़फ़्लत का पर्दा डाल रखा था फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और मैं तमाम मुआ़-मलात छोड़ कर ह़ज के इरादे से साह़िले समुन्दर पर आया, वहां मैं ने एक बह़री जहाज़ पाया जिस में मिस्री ताजिर सुवार थे, मैं भी उन के साथ जा मिला।

उस जहाज़ में हमारे साथ एक निहायत ह़सीनो जमील नौ जवान भी था जिस की पेशानी से सज्दों का नूर झलक रहा था और उस के मुनव्वर चेहरे ने गोया सारी फ़ज़ा को नूरबार किया हुवा था। जब हमारा जहाज़ काफ़ी फ़ासिला तै़ कर चुका और वस्ते़ समुन्दर में आ गया तो जहाज़ के मालिक की रक़म से भरी थैली गुम हो गई। उस ने पूछ गछ की लेकिन थैली न मिली, लिहाज़ा उस ने सब सुवारों को जम्अ़ किया और सब की तलाशी लेना शुरूअ़ कर दी लेकिन थैली किसी के पास भी न मिली बिल आख़िर जब तलाशी लेने वाला उस नौ जवान के पास आया तो उस नौ जवान ने अचानक जहाज़ से समुन्दर में छलांग लगा दी। येह देख कर मैं ह़ैरत में डूब गया कि समुन्दर की मौजों ने उसे न डुबोया बल्कि वोह उस के लिये तख़्त की त़रह़ हो गईं और वोह नौ जवान उन लहरों पर इस त़रह़ बैठ गया जिस त़रह़ कोई तख़्त पर बैठता है, हम सब मुसाफ़िर बड़ी ह़ैरानगी से उसे देख रहे थे। फिर उस नौ जवान ने कहा :

"ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! इन लोगों ने मुझ पर चोरी की तोहमत लगाई है। ऐ मेरे दिल के मह़बूब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि तू समुन्दर के तमाम जानवरों को हुक्म फ़रमा कि वोह अपने अपने मूंहों में हीरे जवाहिरात ले कर ज़ाहिर हो जाएं।"

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि अभी उस अ़ज़ीम नौ जवान का कलाम मुकम्मल भी न होने पाया था कि जहाज़ के चारों जानिब समुन्दरी जानवर ज़ाहिर हो गए, सब के मूंहों में इतने ज़ियादा हीरे जवाहरात थे कि उन की चमक से सारा समुन्दर रोशन हो गया और हमारी आंखें चुंधियाने लगीं फिर उस नौ जवान ने पानी की मौजों से छलांग लगाई और लहरों पर चलता हुवा हमारी निगाहों से ओझल हो गया, वोह अ़ज़ीम नौ जवान येह आयत तिलावत करता जा रहा था :

اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ﴿۴﴾ (پ۱،الفاتحۃ:۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें।

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : येही वोह पहला वाक़िआ़ है जिस की वजह से मुझे सैरो सियाह़त का शौक़ हुवा क्यूं कि सैरो सियाह़त में अक्सर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن से मुलाक़ात होती है और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है :

"मेरी उम्मत में हमेशा 30 मर्द ऐसे रहेंगे जिन के दिल हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عَلَیْهِ السَّلَام) के दिल पर होंगे जब उन में से कोई एक मर जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की जगह दूसरा बदल देगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبادۃ بن الصامت، الحدیث:۲۲۸۱۵،ج۸،ص ۴۱۰۔۴۱۱)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 62 : बारह सुवारों का क़ाफ़िला

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुझे एक बुज़ुर्ग ने येह वाक़िआ़ सुनाया कि मैं औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की तलाश में हर वक़्त सरगर्दां रहता और उन की क़ियाम गाहों को ढूंडने के लिये सह़राओं, पहाड़ों और जंगलों में फिरता ताकि उन की सोह़बत से फ़ैज़याब हो सकूं।

एक मर्तबा इसी मक़्सद के लिये मिस्र की त़रफ़ रवाना हुवा, जब मैं मिस्र के क़रीब पहुंचा तो वीरान सी जगह में एक ख़ैमा देखा, जिस में एक ऐसा शख़्स मौजूद था जिस के हाथ, पाउं और आंखें (जुज़ाम की) बीमारी से ज़ाएअ़ हो चुकी थीं लेकिन इस ह़ालत में भी वोह मर्दे अ़ज़ीम इन अल्फ़ाज़ के साथ अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना कर रहा था :

"ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी वोह ह़म्द करता हूं जो तेरी तमाम मख़्लूक़ की ह़म्द के बराबर हो। ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू तमाम मख़्लूक़ का ख़ालिक़ है और तू सब पर फ़ज़ीलत रखता है, मैं इस इन्आ़म पर तेरी ह़म्द करता हूं कि तूने मुझे अपनी मख़्लूक़ में कई लोगों से अफ़्ज़ल बनाया।"

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब मैं ने उस शख़्स की येह ह़ालत देखी तो मैं ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस शख़्स से येह ज़रूर पूछूंगा कि क्या ह़म्द के येह पाकीज़ा कलिमात तुम्हें सिखाए गए हैं या तुम्हें इल्हाम हुए हैं ?" चुनान्चे इसी इरादे से मैं उस के पास गया और उसे सलाम किया, उस ने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैं ने कहा : "ऐ मर्दे सालेह़ ! मैं तुम से एक चीज़ के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल करना चाहता हूं क्या तुम मुझे जवाब दोगे ?" वोह कहने लगा : "अगर मुझे मा'लूम हुवा तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर जवाब दूंगा।" मैं ने कहा : "वोह कौन सी ने'मत है जिस पर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द कर रहे हो और वोह कौन सी फ़ज़ीलत है जिस पर तुम शुक्र अदा कर रहे हो ?" (ह़ालां कि तुम्हारे हाथ, पाउं और आंखें वग़ैरा सब ज़ाएअ़ हो चुकी हैं फिर भी तुम किस ने'मत पर ह़म्द बजा ला रहे हो।)

वोह शख़्स कहने लगा : "क्या तू देखता नहीं कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं, मैं सब देख चुका हूं।" फिर वोह कहने लगा : "देखो ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो मुझ पर आस्मान से आग बरसा देता जो मुझे जला कर राख बना देती, अगर वोह परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ चाहता तो पहाड़ों को हुक्म देता और वोह मुझे तबाह व बरबाद कर डालते, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो समुन्दर को हुक्म फ़रमाता जो मुझे ग़र्क़ कर देता या फिर ज़मीन को हुक्म फ़रमाता तो वोह मुझे अपने अन्दर धंसा देती लेकिन देखो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इन तमाम मुसीबतों से मह़फ़ूज़ रखा फिर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र क्यूं न अदा करूं, उस की ह़म्द क्यूं न करूं और उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत क्यूं न करूं ?"

फिर मुझ से कहने लगा : "मुझे तुम से एक काम है, अगर कर दोगे तो तुम्हारा एह़सान होगा, चुनान्चे वोह कहने लगा : "मेरा एक बेटा है जो नमाज़ के अवक़ात में आता है और मेरी ज़रूरियात पूरी करता है और इसी त़रह़ इफ़्त़ारी के वक़्त भी आता है लेकिन कल से वोह मेरे पास नहीं आया, अगर तुम उस के बारे में मा'लूमात फ़राहम कर दो तो तुम्हारा एह़सान होगा।" मैं ने कहा : "मैं तुम्हारे बेटे को ज़रूर तलाश करूंगा और फिर मैं येह सोचते हुए वहां से चल पड़ा कि अगर मैं ने उस मर्दे सालेह़ की ज़रूरत पूरी कर दी तो शायद इसी नेकी की वजह से मेरी मग़्फ़िरत हो जाए।" चुनान्चे मैं उस के बेटे की तलाश में एक त़रफ़ चल दिया, चलते चलते जब रैत के दो टीलों के दरमियान पहुंचा तो वहां का मन्ज़र देख कर मैं ठिठक कर रुक गया। मैं ने देखा कि एक दरिन्दा एक लड़के को चीर फाड़ कर उस का गोश्त खा रहा है, मैं समझ गया कि येह उसी शख़्स का बेटा है, मुझे उस की मौत पर बहुत अफ़्सोस हुवा और मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن कहा और वापस उसी शख़्स के ख़ैमे की त़रफ़ चल दिया।

मैं येह सोच रहा था कि अगर मैं ने उस परेशान ह़ाल शख़्स को उस के बेटे की मौत की ख़बर

फ़ौरन ही सुना दी तो वोह येह ख़बर सुन कर कहीं मर ही न जाए, आख़िर किस त़रह़ उसे येह ग़मनाक ख़बर सुनाऊं कि उसे सब्र नसीब हो जाए चुनान्चे मैं उस शख़्स के पास पहुंचा, उसे सलाम किया उस ने जवाब दिया, फिर मैं ने उस से पूछा : "मैं तुम से एक सुवाल करना चाहता हूं क्या तुम जवाब दोगे ?" येह सुन कर वोह कहने लगा कि अगर मुझे मा'लूम हुवा तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ज़रूर जवाब दूंगा। मैं ने कहा : "तुम येह बताओ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़ाम व मर्तबा ज़ियादा है या आप का ?" येह सुन कर वोह कहने लगा : "यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मर्तबा व मक़ाम ही ज़ियादा है।" फिर मैं ने कहा : "जब आप عَلَیْهِ السَّلَام को मुसीबतें पहुंचीं तो आप عَلَیْهِ السَّلَام ने उन बड़ी बड़ी मुसीबतों पर सब्र किया या नहीं ?" वोह कहने लगा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कमा ह़क़्क़ुहू मुसीबतों पर सब्र किया।" फिर मैं ने कहा : "उन को तो इस क़दर बीमारी और मुसीबतें पहुंचीं कि जो लोग उन से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत किया करते थे उन्हों ने भी आप عَلَیْهِ السَّلَام से दूरी इख़्तियार कर ली और राह चलने वाले आप عَلَیْهِ السَّلَام से ए'राज़ करते हुए चलते थे। क्या आप عَلَیْهِ السَّلَام ने ऐसी ह़ालत में सब्र से काम लिया या नहीं ?" वोह शख़्स कहने लगा : "आप عَلَیْهِ السَّلَام ने ऐसी ह़ालत में भी सब्रो शुक्र से काम लिया और सब्रो शुक्र का ह़क़ अदा किया।" येह सुन कर मैं ने उस शख़्स से कहा : "फिर तुम भी सब्र से काम लो, सुनो ! अपने जिस बेटे का तुम ने तज़्किरा किया था उस को दरिन्दा खा गया है।"

येह सुन कर उस शख़्स ने कहा : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरे दिल में दुन्या की ह़सरत डाली।" फिर वोह शख़्स रोने लगा और रोते रोते उस ने जान दे दी। मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ कहा और सोचने लगा कि मैं इस जंगल बियाबान में अकेले इस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन कैसे करूंगा, यहां इस वीराने में मेरी मदद को कौन आएगा। अभी मैं येह सोच ही रहा था कि अचानक एक सम्त मुझे दस बारह सुवारों का क़ाफ़िला नज़र आया। मैं ने उन्हें इशारे से अपनी त़रफ़ बुलाया तो वोह मेरे पास आए और मुझ से पूछा : "तुम कौन हो और येह मुर्दा शख़्स कौन है ?" मैं ने उन्हें सारा वाक़िआ़ सुनाया तो वोह वहीं रुक गए और उस शख़्स को समुन्दर के पानी से ग़ुस्ल दिया और उसे वोह कफ़न पहनाया जो उन के पास था फिर मुझे उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने को कहा तो मैं ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उन्हों ने मेरी इक़्तिदा में नमाज़े जनाज़ा अदा की।

फिर हम ने उस अ़ज़ीम शख़्स को उसी ख़ैमे में दफ़्न कर दिया। उन नूरानी चेहरों वाले बुज़ुर्गों का क़ाफ़िला एक त़रफ़ रवाना हो गया, मैं वहीं अकेला रह गया, रात हो चुकी थी लेकिन मेरा वहां से जाने को दिल नहीं चाह रहा था, मुझे उस साबिरो शाकिर इन्सान से मह़ब्बत हो गई थी मैं उस की क़ब्र के पास ही बैठ गया, कुछ देर बा'द मुझ पर नींद का ग़-लबा हुवा तो मैं ने ख़्वाब में एक नूरानी मन्ज़र देखा कि मैं और वोह शख़्स एक सब्ज़ क़ुब्बे में मौजूद हैं और वोह सब्ज़ लिबास ज़ैबे तन किये खड़े हो कर क़ुरआने ह़कीम की तिलावत कर रहा है। मैं ने उस से पूछा : "क्या तू मेरा वोही दोस्त नहीं जिस पर मुसीबतें टूट पड़ी थीं और

वोह इन्तिक़ाल कर गया था ?'' उस ने मुस्कराते हुए कहा : ''हां ! मैं वोही हूं।'' फिर मैं ने पूछा : ''तुम्हें येह अ़ज़ीमुश्शान मर्तबा कैसे मिला और तुम्हारे साथ क्या मुआ-मला पेश आया ?'' येह सुन कर वोह कहने लगा : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों के साथ जन्नत में मक़ाम अ़ता फ़रमाया है जो मुसीबतों पर सब्र करते हैं और जब उन्हें कोई ख़ुशी पहुंचती है तो शुक्र अदा करते हैं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने जब से उस बुज़ुर्ग से येह वाक़िआ़ सुना है तब से मैं अहले मुसीबत से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करने लगा हूं।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

वोह कर के मुब्तला बन्दों को अपने आज़माता है — मसाइब में कभी ह़र्फ़े शिकायत लब पे मत लाना
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते — ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते

ह़िकायत नम्बर 63 : क़ुदरत का करिश्मा

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिद ने बताया कि एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के दरमियान जल्वा फ़रमा थे कि अचानक हमारे क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिस ने अपने बच्चे को कन्धों पर बिठा रखा था। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उन बाप बेटे को देखा तो फ़रमाया : ''जितनी मुशाबहत इन दोनों में पाई जा रही है मैं ने आज तक ऐसी मुशाबहत और किसी में नहीं देखी।'' येह सुन कर उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मेरे इस बच्चे का वाक़िआ़ बहुत अ़जीबो ग़रीब है, इस की मां के फ़ौत होने के बा'द इस की विलादत हुई है।'' येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''पूरा वाक़िआ़ बयान करो।'' वोह शख़्स अ़र्ज़ करने लगा : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं जिहाद के लिये जाने लगा तो इस की वालिदा ह़ामिला थी, मैं ने जाते वक़्त दुआ़ की : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़ौजा के पेट में जो ह़म्ल है मैं उसे तेरे ह़वाले करता हूं, तू ही इस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाना।''

येह दुआ़ कर के मैं जिहाद के लिये रवाना हो गया जब मैं वापस आया तो मुझे बताया गया कि मेरी ज़ौजा का इन्तिक़ाल हो गया है, मुझे बहुत अफ़्सोस हुवा। एक रात मैं ने अपने चचाज़ाद भाई से कहा : ''मुझे मेरी बीवी की क़ब्र पर ले चलो।'' चुनान्चे हम जन्नतुल बक़ीअ़ में पहुंचे और उस ने मेरी बीवी की क़ब्र की निशान देही की। जब हम वहां पहुंचे तो देखा कि क़ब्र से रोशनी की किरनें बाहर आ रही हैं। मैं ने अपने

चचाज़ाद भाई से कहा : "येह रोशनी कैसी है ?" उस ने जवाब दिया : "इस क़ब्र से हर रात इसी त़रह़ रोशनी ज़ाहिर होती है न जाने इस में क्या राज़ है ?" जब मैं ने येह सुना तो इरादा किया कि मैं ज़रूर इस क़ब्र को खोद कर देखूंगा। चुनान्चे मैं ने फावड़ा मंगवाया अभी क़ब्र खोदने का इरादा ही किया था कि क़ब्र खुद ब खुद खुल गई। जब मैं ने उस में झांका तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की **क़ुदरत का करिश्मा** नज़र आया कि येह मेरा बच्चा अपनी मां की गोद में बैठा खेल रहा था जब मैं क़ब्र में उतरा तो किसी निदा देने वाले ने निदा दी : "तूने जो अमानत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास रखी थी वोह तुझे वापस की जाती है, जा ! अपने बच्चे को ले जा, अगर तू इस की मां को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर जाता तो उसे भी सह़ीह़ व सलामत पाता।" पस मैं ने अपने बच्चे को उठाया और क़ब्र से बाहर निकाला जैसे ही मैं क़ब्र से बाहर निकला क़ब्र पहले की त़रह़ दोबारा बन्द हो गई।

(**मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना बेटा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे क़ब्र में भी ज़िन्दा रखा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम भी अपना ईमान तेरे सिपुर्द करते हैं तू हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाना और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाना)

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से — *हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ*

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 64 : एक पुर असर पैग़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ त़ाही رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मेरा गुज़र ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से हुवा तो उन्हों ने मुझ से पूछा : "तुम कौन हो ?" मैं ने कहा : "मैं इराक़ का रहने वाला हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जानते हो ?" मैं ने कहा : "जी हां।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे साथ पढ़ा करते थे और मेरे बहुत गहरे दोस्त थे, फिर उन्हों ने हुकूमती ओ़हदा त़लब किया और बसरा के वाली बन गए, तुम जब बसरा पहुंचो तो उन के पास जाना। जब वोह पूछें : "क्या तुम्हें कोई ह़ाजत है ?" तो कहना : "मैं आप से तन्हाई में गुफ़्त-गू करना चाहता हूं।" फिर जब वोह तन्हाई में तुम से मुलाक़ात करें तो कहना : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पैग़ाम ले कर आया हूं, उन्हों ने आप को सलाम भेजा है और कहा है : "हम खजूरें खाते हैं और पानी पीते हैं, ज़िन्दगी हमारी भी गुज़र रही है और तुम्हारी भी गुज़र रही है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ त़ाही رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवा और उन्हों ने मुझ से पूछा : "क्या तुम्हें मुझ से कोई काम है ?" मैं ने कहा : "मैं अ़लाह़ीदगी में गुफ़्त-गू करना चाहता हूं।" फिर मैं ने कहा : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पैग़ाम ले कर आया हूं।" जैसे ही उन्हों ने येह सुना तो मुझे ऐसा लगा जैसे वोह कांप रहे हों, मैं ने कहा : उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सलाम भेजा है और फ़रमाया है कि "हम तो खजूरें खा कर और पानी पी कर गुज़ारा कर लेते हैं, ज़िन्दगी हमारी भी गुज़र रही है और तुम्हारी भी।" इतना सुनना था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना मुंह चादर में छुपाया और इतना रोए कि चादर आंसूओं से तर हो गई।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 65 : रोते रोते हिचकियां बंध गईं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैम अल हज़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَادِر ने जो आख़िरी ख़ुत़्बा दिया वोह इन कलिमात पर मुश्तमिल था : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और दुरूदो सलाम हो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर,

अम्मा बा'द : ऐ लोगो ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने तुम्हें फ़ुज़ूल पैदा नहीं फ़रमाया और न ही तुम्हारे मुआ़-मलात यूंही छोड़ दिये जाएंगे या'नी तुम्हारे उमूर नज़र अन्दाज़ नहीं किये जाएंगे, बेशक तुम्हारे लिये एक दिन मुक़र्रर है जिस में तुम्हारा ह़िसाबो किताब होगा और उस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे आ'माल का फ़ैसला फ़रमाएगा, उस दिन जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मह़रूम रहा और उस जन्नत के ह़ुसूल से मह़रूम रहा जिस की चौड़ाई ज़मीन व आस्मान के बराबर है तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह शदीद नुक़्सान और घाटे में रहा जो थोड़ी चीज़ों को ज़ियादा चीज़ों के बदले ख़रीदता है और बाक़ी रहने वाली उख़्रवी ने'मतों के बदले फ़ानी (दुन्यवी ने'मतों) को ख़रीदता है, और अम्न के बदले ख़ौफ़ को तरजीह़ देता है, क्या तुम्हें येह बात मा'लूम नहीं कि तुम जिन की औलाद हो वोह इस दुन्या से जा चुके और मौत का मज़ा चख चुके इसी त़रह़ अ़न्क़रीब तुम भी इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो जाओगे और तुम्हारी जगह तुम्हारी औलाद आ जाएगी और इसी त़रह़ येह सिल्सिला चलता रहेगा, बिल आख़िर सब के सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे, इस दुन्या में जिस की मुद्दते ह़यात ख़त्म हो जाती है वोह ज़मीन के गहरे गढ़े में पहुंच जाता है और तुम लोग उसे अपने हाथों से क़ब्र में उतारते हो और वोह ऐसी ह़ालत में क़ब्र में तन्हा होता है कि न तो उस के लिये बिस्तर होता है न तकिया, फिर तुम उसे बे यारो मददगार छोड़ कर चले आते हो, उस के अ़ज़ीज़ व अक़ारिब उस से जुदा हो जाते हैं, उस का मालो मताअ़ सब दुन्या ही में रह जाता है और

उस का मस्कन मिट्टी की क़ब्र होती है, अब वोह होगा और उस के आ'माल होंगे और वोह अपने अच्छे आ'माल का मोह़ताज होगा या'नी उसे अपने किये हुए अच्छे आ'माल काम आएंगे बाक़ी तमाम दुन्यावी मुआ़-मलात से उसे कोई ग़रज़ न होगी जो दुन्यावी चीजे़ं उस ने पीछे छोड़ीं वोह उसे कुछ नफ़्अ़ न देंगी, पस ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और मौत से पहले मौत की तय्यारी कर लो, फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपने आप को तुम सब से ज़ियादा गुनाहगार समझता हूं।"

ऐ लोगो ! जब भी मुझे येह मा'लूम हुवा कि तुम में से किसी को कोई ह़ाजत है तो मैं ने उस की ह़ाजत पूरी करने की भरपूर कोशिश की, इसी त़रह़ जब भी तुम्हें किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी जो मेरे पास थी और मेरे इख़्तियार में थी तो मैं ने उसे कभी भी तुम से नहीं रोका और मैं ने इस बात को पसन्द किया कि मैं भी तुम्हारी ही त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ारूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं हुकूमत व अमारत को इन बातों के इ़लावा किसी और ग़रज़ के लिये इस्ति'माल करता और हुकूमत की वजह से दुन्यावी ऐ़शो इश्रत चाही होती तो मेरी ज़बान इस बयान में मेरा साथ न देती जो मैं ने तुम्हारे सामने किया क्यूं कि वोह मेरी ह़ालत से वाक़िफ़ है कि मैं ने हुकूमत व अमारत को सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ की ख़ैर ख़्वाही के लिये ही इस्ति'माल किया और क़ुरआने करीम हमारे दरमियान मौजूद है जो हमें सच्चा क़ानून बताता, हमारी रहनुमाई फ़रमाता, हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त का हुक्म देता है और उस की ना फ़रमानी से रोकता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैम अल हज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इतना ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी चादर अपने मुंह पर रखी और रोने लगे, रोते रोते आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की हिचकियां बंध गईं और आप इतना रोए कि लोगों ने भी रोना शुरूअ़ कर दिया और येह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का आख़िरी ख़ुत़्बा था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा वर पैदा

ह़िकायत नम्बर : 66 : महबूब से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब आ गया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना रिब्ई़ बिन ख़राश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने बताया : "हम तीन भाई थे और हम में सब से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार और सब से ज़ियादा रोज़े रखने वाला हमारा मंझला (या'नी दरमियाना) भाई था। एक मर्तबा मैं अपने दोनों भाइयों को छोड़ कर एक जंगल की त़रफ़ निकल गया, फिर जब मैं वापस घर पहुंचा तो मुझे बताया गया कि मेरा वोही इ़बादत गुज़ार भाई म-रज़ुल मौत में मुब्तला है। जब मैं उस के पास पहुंचा तो मा'लूम हुवा कि अभी कुछ देर पहले उस का इन्तिक़ाल हो चुका है। लोगों ने उसे एक कपड़े में लपेटा हुवा था। मैं उस के लिये कफ़न लेने चला गया, जब कफ़न ले कर आया तो यकायक मेरे उस मुर्दा भाई के चेहरे से कपड़ा हट गया। उस ने मुझे मुस्कराते हुए सलाम किया। मैं ने बड़ी ह़ैरानगी के आ़लम में जवाब दिया और उस से पूछा : **"ऐ मेरे भाई !** क्या तू मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा हो गया ?" उस ने कहा : "जी हां ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं दोबारा ज़िन्दा हो चुका हूं, और तुम से जुदा होने के बा'द मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से बहुत ख़ुश है, और वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ नहीं। उस ने मुझे सब्ज़ रंग के रेशमी ह़ुल्ले अ़त़ा फ़रमाए, और मैं ने अपना मुआ़-मला तुम्हारे मुआ़-मले से बहुत आसान पाया लिहाज़ा तुम नेक आ'माल की त़रफ़ ख़ूब रग़बत करो और सुस्ती बिल्कुल न करो, और (मौत) से बे ख़बर न रहो। दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मेरी मुलाक़ात, मेरी ह़स्रतों के मह़्वर ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हुई, उन्हों ने करम करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "जब तक तुम नहीं आओगे मैं तुम्हारी क़ब्र से नहीं जाऊंगा। लिहाज़ा तुम मेरी तज्हीज़ व तक्फ़ीन में जल्दी करो और बिल्कुल देर न करो, क़ब्र में मेरी मुलाक़ात ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से होगी।" ब क़ौल शाइ़र :

क़ब्र में सरकार आएं तो मैं क़दमों पर गिरूं
गर फ़िरिश्ते भी उठाएं तो मैं उन से यूं कहूं
अब तो पाए नाज़ से मैं ऐ फ़िरिश्तो क्यूं उठूं
मर के पहुंचा हूं यहां इस दिलरुबा के वासित़े

फिर उस की आंखें बन्द हो गईं, और उस की रूह़ इस त़रह़ आसानी से उस के बदन से निकली जैसे कोई कंकर जब पानी में डाला जाता है तो आसानी से तह में उतर जाता है।

जब तेरी याद में दुन्या से गया है कोई
जान लेने को दुल्हन बन के क़ज़ा आई है

जब येह वाक़िआ़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सामने बयान किया गया तो उन्हों ने इस की तस्दीक़ फ़रमाई और फ़रमाया : "हम येह ह़दीस बयान करते थे कि इस उम्मत में एक शख़्स ऐसा होगा जो मरने के बा'द बात करेगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना रिब्ई़ बिन ख़राश رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا फ़रमाते हैं : "मेरा वोह भाई सख़्त सर्दी की रातों में बहुत ज़ियादा क़ियाम करता, और सख़्त गर्मियों के दिनों में हम से ज़ियादा रोज़े रखता था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 67 : ख़ूंख़ार दरिन्दों की वादी

इस हिकायत के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र अस्साएह़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ हैं, वोह फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ अपने ज़माने के आ़बिदों में सब से अफ़्ज़ल थे। उन्हों ने अपने ऊपर येह बात लाज़िम कर ली थी कि मैं रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल पढूंगा। चुनान्चे वोह इशराक़ से ले कर अ़स्र तक नवाफ़िल में मशग़ूल रहते फिर जब घर आते तो उन के पिंडलियां और क़दम मु-तवर्रिम (या'नी सूझे हुए) होते, ऐसा लगता जैसे अभी फट जाएंगे। इतनी इ़बादत के बा वुजूद आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ की आ़जिज़ी का येह आ़लम था कि अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के कहते : "ऐ बुराइयों पर उभारने वाले नफ़्स ! तू इ़बादत के लिये पैदा किया गया है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इतने नेक आ'माल करूंगा कि तुझे एक पल भी सुकून मुयस्सर न होगा और तू बिस्तर से बिल्कुल दूर रहेगा, मैं तुझे हर वक़्त मस्रूफ़े अ़मल रखूंगा।"

एक मर्तबा आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ एक ऐसी वादी में तशरीफ़ ले गए जिस के बारे में मशहूर था कि येह **ख़ूंख़ार दरिन्दों की आमाजगाह है**। उस वादी में "ह़-ममह" नामी एक ह़ब्शी इ़बादत गुज़ार भी रहता था। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ भी वहां रहने लगे। दोनों बुज़ुर्ग उस एक वादी में रहते लेकिन एक दूसरे से मुलाक़ात न करते। ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ वादी की एक सम्त में रहते और ह़-ममह आ़बिद दूसरी सम्त में रहता। उन दोनों की इ़बादत येह आ़लम था कि जब फ़र्ज़ नमाज़ों से फ़ारिग़ हो जाते तो नवाफ़िल पढ़ना शुरूअ़ कर देते। इसी त़रह़ इन दोनों बुज़ुर्गों को इस एक ही वादी में चालीस दिन और चालीस रातें गुज़र गई।"

चालीस दिन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़-ममह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास गए, सलाम किया और पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए, तू कौन है ?" तो वोह कहने लगा : "तुम मुझे छोड़ दो और मेरे बारे में फ़िक्र मन्द न हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं तुझे क़सम देता हूं, तुम मुझे अपने बारे में बताओ कि तुम कौन हो ?" वोह कहने लगा : "मेरा नाम ह़-ममह है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर तू वोही ह़-ममह है जिस के बारे में मुझे ख़बर दी गई है तो फिर दुन्या में सब से बड़ा इ़बादत गुज़ार तू ही है, आख़िर तुम्हारे अन्दर वोह कौन सी ख़ूबी है जिस की वजह से तुम्हें येह मर्तबा मिला है ?"

ह़-ममह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आ़जिज़ी करते हुए कहा : "मैं तो बहुत ज़ियादा सुस्त और कोताह हूं (या'नी मुझ में ऐसी कोई फ़ज़ीलत वाली बात नहीं) हां ! मेरी येह ख़्वाहिश है कि अगर फ़र्ज़ नमाज़ों की वजह से मुझे क़ियाम व सुजूद न करना पड़ता तो मैं अपनी सारी ज़िन्दगी रुकूअ़ में ही गुज़ारता और अपना चेहरा कभी भी ऊपर न उठाता यहां तक कि मेरी ज़िन्दगी तमाम हो जाती और इसी ह़ालत में अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिलता, लेकिन क्या करूं फ़राइज़ की वजह से मुझे क़ियाम वग़ैरा करना पड़ता है। अच्छा ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने बारे में बताएं कि "आप कौन हैं ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरा नाम आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه है।" तो ह़-ममह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कहा : "अगर आप वोही आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस है जिन के बारे में मुझे ख़बर मिली है, तो फिर लोगों में सब से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार आप ही हैं, आप बताएं कि आप के अन्दर ऐसी कौन सी ख़ूबी है जिस की वजह से आप को येह मर्तबा मिला ?"

तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाने लगे : "मैं तो बहुत सुस्त और कोताह हूं हां ! एक बात है कि मेरे दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हैबत और रो'ब घर कर गया है, अब उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा मुझे किसी चीज़ से ख़ौफ़ नहीं आता, मैं सिर्फ़ उसी वह़-दहू ला शरीक ज़ात से डरता हूं, उस के इ़लावा किसी और से नहीं डरता।" अभी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह बात कह ही रहे थे कि अचानक बहुत से दरिन्दों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को चारों त़रफ़ से घेर लिया और एक ख़ूंख़ार दरिन्दे ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पीछे से आप पर छलांग लगा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कन्धों पर सुवार हो गया लेकिन क़ुरबान जाएं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दिलेरी पर कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस की त़रफ़ कोई तवज्जोह न फ़रमाई और बिल्कुल ख़ौफ़ज़दा न हुए, बस क़ुरआने करीम की येह आयत तिलावत करते रहे :

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ (پ١٢،ھود:١٠٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह दिन है जिस में सब लोग इकठ्ठे होंगे और वोह दिन ह़ाज़िरी का है।

कुछ देर बा'द दरिन्दा आप को नुक़्सान पहुंचाए बिग़ैर वहां से चला गया। येह मन्ज़र देख कर

ह़-ममह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा : "जो मन्ज़र आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने देखा क्या आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस से ख़ौफ़ ज़दा नहीं हुए ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "मुझे इस से ह़या आती है कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और से डरूं।"

फिर ह़-ममह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : "क्या करूं मुझे इस पेट की आज़माइश में मुब्तला कर दिया गया है जिस की वजह से खाना वग़ैरा खाना पड़ता है और फिर बौल व बराज़ की ह़ाजत होती है। अगर येह मुआ-मलात न होते तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे हमेशा रुकूअ़ व सुजूद की ह़ालत में देखता।"ह़-ममह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की इ़बादत का येह आ़लम था कि दिन रात में आठ सो रक्अ़त नवाफ़िल पढ़ते। फिर भी अपने नफ़्स को डांटते हुए कहते : मैं तो बहुत सुस्त और कोताह हूं, मैं बहुत सुस्त और कोताह हूं, कुछ भी इ़बादत न कर सका।

(मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! अ़मल हो तो ऐसा और आ़जिज़ी और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हो तो ऐसा कि रोज़ाना हज़ार हज़ार रक्अ़त पढ़ें, जिस्म को लम्ह़ा भर भी आराम न दें, हर वक़्त इ़बादत में मश्ग़ूल रहें और ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत जो वक़्त ब क़द्रे ज़रूरत खाने वग़ैरा में गुज़र जाए उस पर भी अफ़्सोस करें कि काश ! हमें खाने की ज़रूरत ही न पड़ती ताकि जो वक़्त यहां गुज़रता है वोह भी इ़बादत ही में गुज़रता। ऐसी अ़ज़ीम इ़बादत के बा वुजूद आ़जिज़ी करते हुए अपने आप को सुस्त और कोताह समझना उन अ़ज़ीम हस्तियों ही का ह़िस्सा था। और एक हमारी ह़ालत है कि अव्वलन तो अ़मल करते ही नहीं, अगर कभी दो चार नवाफ़िल पढ़ भी लें तो अपने आप को औलिया की सफ़ में शुमार करने लगते हैं और अपने आप को बड़ा मुत्तक़ी और इ़बादत गुज़ार तसव्वुर करने लगते हैं और अगर कहीं आ़जिज़ी करते हैं तो वोह भी झूटी आ़जिज़ी जिस की दिल तस्दीक़ नहीं कर रहा होता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमाए और उन अ़ज़ीम बुज़ुर्गों की इ़बादत और सच्ची आ़जिज़ी के सदक़े हमें भी कस्रते इ़बादत और सच्ची आ़जिज़ी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और उन बुज़ुर्गों के सदक़े हम बुरों को भी भला बनाए। आमीन)

हर भले की भलाई का सदक़ा
इस बुरे को भी कर भला या रब عَزَّوَجَلَّ

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 68 : चरवाहे की ह़कीमाना बातें

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما के साथ मदीनए मुनव्वरह की एक वादी में गया। हमारे साथ कुछ और लोग भी थे। गर्मी अपने जोबन पर थी गोया सूरज आग बरसा रहा था। हम ने एक साया दार जगह में दस्तर ख़्वान लगाया और सब मिल कर खाना खाने लगे। थोड़ी देर बा'द हमारे क़रीब से एक चरवाहा गुज़रा, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما ने उस से फ़रमाया : "आइये ! आप भी हमारे साथ खाना तनावुल फ़रमाइये।" चरवाहे ने जवाब दिया : "मेरा रोज़ा है।"

आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ ने उस से फ़रमाया : "तू इस शदीद गर्मी के आ़लम मे सारा दिन जंगल में बकरियां चराता है, तू इतनी मशक़्क़त का काम करता है और फिर भी तू ने नफ़्ली रोज़ा रखा हुवा है ? क्या तुझ पर नफ़्ली रोज़ा रखना ज़रूरी है ?"

येह सुन कर वोह चरवाहा कहने लगा : "क्या वोह वक़्त आ गया जिन के बारे में क़ुरआने पाक में फ़रमाया गया :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ (پ۲۹، الحاقۃ: ۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा, सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما उस **चरवाहे की ह़कीमाना बातें** सुन कर बड़े हैरान हुए और उस से फ़रमाने लगे : "तुम हमें एक बकरी फ़रोख़्त कर दो हम उसे ज़ब्ह़ करेंगे, और तुम्हें बकरी की मुनासिब क़ीमत भी देंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ की येह बात सुन कर वोह चरवाहा अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "हुज़ूर ! येह बकरियां मेरी मिल्किय्यत में नहीं बल्कि येह मेरे आक़ा की हैं, मैं तो ग़ुलाम हूं मैं इन्हें कैसे फ़रोख़्त कर सकता हूं ?" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ उस की अमानत दारी से बहुत मु-तअस्सिर हुए। और हम से फ़रमाया : "येह भी तो मुम्किन था कि येह चरवाहा हमें बकरी बेच देता और जब इस का आक़ा पूछता तो झूट बोल देता कि बकरी को भेड़िया खा गया लेकिन देखो येह कितना अमीन व मुत्तक़ी चरवाहा है।"

चरवाहे ने भी येह बात सुन ली। उस ने आस्मान की त़रफ़ उंगली उठाई और येह कहते हुए वहां से चला गया, "अगर्चे मेरा आक़ा मुझे नहीं देख रहा लेकिन मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तो मुझे देख रहा है, मेरा रब عَزَّوَجَلَّ तो मेरे हर हर फ़े'ल से बा ख़बर है।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما उस चरवाहे की बातों और नेक सीरत से बहुत मु-तअस्सिर हुए और आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ उस चरवाहे के मालिक के पास पहुंचे और उस नेक चरवाहे को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया और सारी बकरियां भी ख़रीद कर उस चरवाहे को हिबा कर दीं।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 69 : धोकेबाज़ दुल्हन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِید को येह नसीह़त आमोज़ ख़त़ लिखा :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

अम्मा बा'द : ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِین) ! जान लीजिये कि येह दुन्या धोकेबाज़ और बे वफ़ा है, येह दाइमी इक़ामत गाह नहीं, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को यहां दुन्या में आज़माइश के लिये भेजा गया, तह़क़ीक़ ऐसे उमूर जिन पर सवाब दिया जाता है उन का ह़िसाब लिया जाएगा और जिन पर अ़िक़ाब है उन पर सज़ा होगी, ख़्वाह उन पर सवाब व अ़ज़ाब का ह़क़दार होने का किसी को इ़ल्म हो या न हो बहर ह़ाल ह़िसाब ज़रूरी है, हर दौर में दुन्या को पछाड़ना ज़रूरी है, और इस को पछाड़ना आ़म पछाड़ने की मानिन्द नहीं बल्कि जो इसे शिकस्त देता है येह उस की ता'ज़ीम करती है, और जो इस की ता'ज़ीम करता है येह उसे ज़लीलो ख़्वार कर देती है। हर दौर में येह डाइन (या'नी दुन्या) किसी न किसी को तबाह व बरबाद ज़रूर करती है, येह मीठे ज़हर की मानिन्द है कि लोग इसे फ़ाएदा मन्द शै समझ कर खा लेते हैं ह़ालां कि वोह हलाकत ख़ेज़ होती है। दुन्या में ज़ादे राह येह है कि दुन्यवी आसाइशों को तर्क कर दिया जाए, दुन्या में तंगदस्ती ग़िना है, जो यहां फ़क्रो फ़ाक़ा का शिकार है दर ह़क़ीक़त वोही ग़नी है।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِین) ! दुन्या में उस मरीज़ की त़रह़ रहो जो अपने मरज़ के इ़लाज की ख़ात़िर दवाओं की सख़्ती बरदाश्त करता है ताकि उस का ज़ख़्म और मरज़ मज़ीद न बढ़े, इस थोड़ी तक्लीफ़ को बरदाश्त कर लो जिस की वजह से बड़ी तक्लीफ़ से बचा जा सके।

बेशक अ़-ज़मत और फ़ज़ीलत के लाइक़ वोह लोग हैं जो हमेशा ह़क़ बात कहते हैं, इन्किसारी व तवाज़ोअ़ से चलते हैं, उन का रिज़्क़ ह़लाल व त़य्यिब होता है, हमेशा ह़राम चीज़ों से अपनी निगाहों को मह़फ़ूज़ रखते हैं, वोह ख़ुश्की में ऐसे ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं जैसे समुन्दरी मुसाफ़िर, और ख़ुशह़ाली में ऐसे दुआएं करते हैं जैसे मसाइब व आलाम में दुआ़ की जाती है। अगर मौत का वक़्त मु-तअ़य्यन न होता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के शौक़, सवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से उन की रूहें उन के अज्साम में लम्ह़ा भर भी न ठहरतीं, ख़ालिक़े लम यज़ल की अ़-ज़मत और हैबत उन के दिलों में रासिख़ है और मख़्लूक़ उन की नज़रों में कोई ह़ैसियत नहीं रखती। (या'नी वोह फ़क़त रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के त़लबगार होते हैं)

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِین) ! जान लीजिये ! "ग़ौरो फ़िक्र करना, आ'माले सालिह़ा और भलाई की त़रफ़ ले जाता है, गुनाहों पर नदामत आ'माले क़बीह़ा को छोड़ने की त़रफ़ ले जाने

वाली है, फ़ानी अश्या अगर्चे कसीर हों बाक़ी रहने वाली अश्या की मानिन्द नहीं, अगर्चे लोग फ़ानी अश्या के ज़ियादा त़ालिब हैं। उस तक्लीफ़ का बरदाश्त कर लेना जिस के बा'द त़वील व दाइमी राह़त हो, उस राह़त के ह़ुसूल से बेहतर है जिस के बा'द त़वील ग़म व अलम, तकालीफ़ और नदामत व ज़िल्लत का सामना करना पड़े।

इस बे वफ़ा, शिकस्त ख़ूर्दा और ज़ालिम दुन्या से आख़िरत की ज़िन्दगी कई द-रजे बेहतर है। येह धोकेबाज़, लोगों के सामने मुज़य्यन हो कर आती है और ख़ूब धोका दे कर तबाह व बरबाद कर डालती है, लोग इस की झूटी उम्मीदों की वजह से हलाकत में पड़ जाते हैं, येह उस **धोकेबाज़ दुल्हन** की त़रह़ है जो किसी को निकाह़ का पैग़ाम दे, फिर आरास्ता व पैरास्ता हो कर सामने आ जाए, लोग उस पर फ़रेफ़्ता हो रहे हों, उस का बनावटी ह़ुस्नो जमाल आंखों को ख़ीरा करने लगे, दिल उस की त़रफ़ माइल हो जाएं, उस की ज़ाहिरी ख़ूब सूरती दिलो दिमाग़ पर छा जाए, फिर जब उस का शोहर उस के क़रीब जाए तो वोह उसे ज़ालिमाना अन्दाज़ में क़त्ल कर डाले।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن) ! गुज़रे हुए ज़माने से कोई इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करता और न ही मौजूदा सूरते ह़ाल से लोग इ़ब्रत ह़ासिल करते हैं, और न ही मौजूदा लोग गुज़रे हुओं से इ़ब्रत ह़ासिल करते हैं हर शख़्स अपनी ही दुन्या में मगन है अ़क़्ल मन्द लोग भी तज्रिबा के बा वुजूद अपने तज्रिबों से फ़ाएदा नहीं उठाते, और समझदार लोग भी इ़ब्रत आमोज़ वाक़िआ़त से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते।

अब तो सूरते ह़ाल येह है कि हर शख़्स इस ज़ालिम दुन्या का शैदाई है, इस की मह़ब्बत में ग़र्क़ हो चुका है, और येह मह़ब्बत इ़श्क़ के द-रजे तक जा पहुंची है, इस का आ़शिक़ इस को छोड़ कर किसी और शै की त़रफ़ राग़िब होता ही नहीं, दुन्या और इस का चाहने वाला दोनों ही एक दूसरे के त़लबगार हैं। दुन्या का शैदाई येह समझता है कि मैं ह़ुसूले दुन्या के बा'द काम्याब हो गया हूं ह़ालां कि वोह हलाकत के अ़मीक़ गढ़ों में गिर चुका होता है वोह धोका खा कर इस की मह़ब्बत में इस त़रह़ गरिफ़्तार हो जाता है कि ह़िसाबो किताब और अपने मक़्सदे ह़यात को भूल जाता है, अपनी नेकियों को ज़ाएअ़ कर बैठता है, फिर वोह इस बे वफ़ा दुन्या के इ़श्क़ में इस क़दर पागल हो जाता है कि उस के क़दम फिसल जाते हैं। जब उसे होश आता है तो मा'लूम होता है कि मैं ने तो अपनी तमाम ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार दी, मैं तो तबाहो बरबाद हो गया मुझे तो बहुत बड़ा धोका दिया गया, हाए ! मैं ने झूटी उम्मीदों पर आसरा क्यूं किया ? अब उस शख़्स की परेशानी व ग़म क़ाबिले दीद होता है, फिर ह़ालते नज़्अ़ में सख़्तियां बढ़ जातीं हैं वोह परेशानियों और ग़मों के समुन्दर में ग़र्क़ हो रहा होता है, वोही शख़्स जो अपने तईं काम्याबी ह़ासिल कर चुका था अब उसे मा'लूम होता है कि दर ह़क़ीक़त मैं धोकेबाज़ दुन्या से बुरी त़रह़ शिकस्त खा चुका हूं, फिर वोह आ़शिक़े ना शाद व ना मुराद इस दुन्या से इसी ह़ालत में रुख़्सत हो जाता है, और बे वफ़ा दुन्या उस का साथ छोड़ कर किसी और को धोका देने चली जाती है, अब येह शख़्स दुश्वार गुज़ार सफ़र की त़रफ़ बिग़ैर हम सफ़र और बिग़ैर ज़ादे

राह के रवाना होता है।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين) ! इस दुन्या और इस की फ़रेब कारियों से बचिये, इस दुन्या की मिसाल उस सांप की त़रह़ है जिसे हाथ लगाएं तो नर्म व नाज़ुक मा'लूम होता है लेकिन उस का ज़हर जान लेवा होता है, (इसी त़रह़ येह दुन्या भी देखने में बहुत अच्छी है लेकिन ह़क़ीक़त में बहुत बुरी है) इस दुन्या की जो शै अच्छी लगे उसे तर्क कर दीजिये, ग़मे दुन्या की वजह से हल्का न हों इस के ग़मों की परवाह भी न कीजिये, दुन्या से हरगिज़ मह़ब्बत न कीजियेगा क्यूं कि इस का अन्जाम बहुत बुरा है।

दुन्या का आ़शिक़ जब दुन्या ह़ासिल करने में काम्याब हो जाता है तो येह बे वफ़ा दुन्या उसे त़रह़ त़रह़ से परेशान करती है, उस की ख़ुशियों को ग़म में बदल देती है, जो इस की फ़ानी अश्या के मिलने पर ख़ुश होता है वोह बहुत बड़े धोके में पड़ा है इस का फ़ाएदा पाने वाला दर ह़क़ीक़त शदीद नुक़्सान में है, दुन्यावी आसाइशों तक पहुंचने के लिये इन्सान तकालीफ़ व मसाइब का सामना करता है, जब उसे ख़ुशी मिलती है तो येह ख़ुशी ग़म व मलाल में तब्दील हो जाती है न तो इस की ख़ुशी दाइमी है और न ही इस की ने'मतें, इन का साथ तो पल भर का है।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين) ! इस दुन्या को तारिकुदुन्या की नज़र से देखिये, न कि आ़शिक़े दुन्या की नज़र से, जो इस दारे ना पाएदार में आया वोह यहां से ज़रूर रुख़्सत होगा। न ही यहां से जाने वाला कभी वापस आता है, और न ही उसे उम्मीद होती है कि कोई इस की वापसी का इन्तिज़ार कर रहा होगा, इस की धोका देने वाली उम्मीदों में हरगिज़ न पड़िये, इस दुन्या से हर दम बचिये, इस की जो अश्या ब ज़ाहिर साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ हैं दर ह़क़ीक़त वोह गदली व बेकार हैं।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين) ! येह दुन्यवी ज़िन्दगी बहुत कम है, इस की उम्मीदें झूटी हैं जब तक आप दुन्या में हैं ख़त़रा ही ख़त़रा है, बहर ह़ाल इस की ने'मतें बहुत जल्द ख़त्म हो जाएंगी और मुसीबत पैहम उतरती रहेंगी अ़क़्ल मन्द शख़्स हमेशा इस के धोकों से मह़फ़ूज़ रहता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या से बचने की ख़ूब ताकीद फ़रमाई।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में दुन्या की वुक़्अ़त कुछ भी नहीं इस का वज़्न उस की बारगाह में एक छोटी सी कंकरी की त़रह़ भी नहीं, जो लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को चाहने वाले हैं और उसी की मह़ब्बत के त़लबगार हैं, वोह लोग दुन्या से बहुत नफ़रत करते हैं।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين) ! सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्या और इस के ख़ज़ानों की चाबियां अ़त़ा की गईं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लेने से इन्कार फ़रमा दिया, ह़ालां कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन की त़लब से मन्अ़ न फ़रमाया गया था और अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन चीज़ों को क़बूल भी फ़रमा लेते तब भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मर्तबे में कोई कमी वाक़ेअ़ न होती और जिस मक़ाम व मर्तबा का आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वा'दा किया गया है वोह ज़रूर

आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मिलता, लेकिन हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जानते थे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को येह दुन्या ना पसन्द है लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस को क़बूल न फ़रमाया, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इस की कोई वुक़्अ़त नहीं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस को कोई वुक़्अ़त न दी, अगर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इसे क़बूल फ़रमा लेते तो लोगों के लिये दलील बन जाती कि शायद आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस से महब्बत करते हैं, लेकिन आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे क़बूल न फ़रमाया, क्यूं कि येह कैसे हो सकता है एक शै अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ना पसन्द हो और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे क़बूल फ़रमा लें।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن) ! मौत से पहले जितनी नेकियां हो सकती हैं कर लीजिये वरना ब वक़्ते नज़्अ़ फ़ाएदा न होगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन नसीह़त आमोज़ बातों से हमें और आप को खूब नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे।" वस्सलाम

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 70 : जुरअत मन्द मुबल्लिग़ और ज़ालिम हुक्मरान

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन फ़ुज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं : "साबिक़ा उम्मतों में "**उ़कैब**" नामी बुज़ुर्ग लोगों से अलग थलग एक पहाड़ी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करते थे। एक मर्तबा उन्हें ख़बर मिली कि क़रीबी शहर में एक ज़ालिमो जाबिर बादशाह है जो लोगों पर बहुत ज़ुल्म करता है। और बिला वजह उन के हाथ पाउं और नाक, कान वग़ैरा काट डालता है। जब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह इत्तिलाअ़ मिली तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अन्दर اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) का अ़ज़ीम जज़्बा शिद्दत से उभरा और अपने आप से कहने लगे : "मुझ पर येह लाज़िम है कि मैं उस ज़ालिम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की तल्क़ीन करूं और उसे अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डराऊं।" चुनान्चे आप اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْکَر के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़त पहाड़ से उतरे और उस ज़ालिम हुक्मरान के पास पहुंच कर उस से बड़े ही जुरअत मन्दाना अन्दाज़ में फ़रमाया : "तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर।" वोह बद बख़्त ज़ालिम बादशाह आग बगूला हो गया और बड़े मु-तकब्बिराना अन्दाज़ में गुस्ताख़ाना जुम्ले बकते हुए उस बुज़ुर्ग से कहने लगा : "ऐ कुत्ते ! तेरे जैसा ह़क़ीर शख़्स मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने का हुक्म दे रहा है, मैं तुझे इस गुस्ताख़ी की ज़रूर सज़ा दूंगा और तुझे ऐसी सज़ा दूंगा कि आज तक दुन्या में ऐसी सज़ा किसी को नहीं दी गई होगी।"

फिर उस ज़ालिम ने हुक्म दिया कि इस के क़दमों से इस की खाल उतारना शुरूअ़ करो और सर

तक इस की खाल उतार लो ताकि येह दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला हो और इस की रूह़ तड़प तड़प कर तन से जुदा हो। हुक्म पाते ही जल्लाद आगे बढ़े। उस अ़ज़ीम मुबल्लिग़ को पकड़ कर ज़मीन पर लिटाया और उस के क़दमों से खाल उतारना शुरूअ़ कर दी। वोह सब्रो शुक्र का पैकर बने रहे, ज़बान से उफ़ तक न कहा। लेकिन जब उन की खाल पेट तक उतार ली गई तो दर्द की शिद्दत से उन के मुंह से दर्द भरी आह निकली। उन्हें फ़ौरन हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पहुंचा : "ऐ उ़क़ैब ! सब्र से काम लो, हम तुझे ग़म व हुज़्न के घर से निकाल कर राह़तो आराम के घर (या'नी जन्नत) में दाख़िल करेंगे और इस तंगो तारीक दुन्या से निकाल कर वसीअ़ व अ़रीज़ जन्नत में दाख़िल करेंगे।" हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पा कर वोह अ़ज़ीम मुबल्लिग़ ख़ामोश हो गए और उस दर्दनाक तक्लीफ़ को सब्र से बरदाश्त करते रहे।

जब ज़ालिमों ने उन की खाल चेहरे तक उतार ली तो शिद्दते दर्द से दोबारा उन के मुंह से बे इख़्तियार दर्द भरी आह निकली। उन्हें फिर हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पहुंचा : "ऐ उ़क़ैब ! तेरी इस मुसीबत पर दुन्या और आस्मान की मख़्लूक़ रो रही है, तुम्हारी इस तक्लीफ़ ने फ़िरिश्तों की तवज्जोह तुम्हारी त़रफ़ करा दी है। अगर तूने तीसरी मर्तबा भी ऐसी ही पुरदर्द आह भरी तो मैं इस ज़ालिम क़ौम पर दर्दनाक अ़ज़ाब भेजूंगा। और इन्हें शदीद अ़ज़ाब का मज़ा चखाऊंगा।"

येह हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पा कर वोह ख़ामोश हो गए। और फिर बिल्कुल भी मुंह से आवाज़ न निकाली, इस ख़ौफ़ से कि कहीं मेरी आहो ज़ारी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी इस क़ौम को अ़ज़ाब में मुब्तला न कर दे, मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से कोई अ़ज़ाब में मुब्तला हो, बिल आख़िर उस मर्दे मुजाहिद की तमाम खाल उतार ली गई लेकिन उस ने दोबारा सिसकी तक न ली और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी।

(आफ़रीन, ऐ अ़ज़ीम बहादुर मुबल्लिग़ ! आफ़रीन, तेरे जज़्बए तब्लीग़ और उम्मत से ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे पर लाखों सलाम। तूने नेकी की दा'वत की ख़ातिर कितनी शदीद तकालीफ़ बरदाश्त कीं, और ज़ालिमो जाबिर ह़ाकिम का ज़ुल्म व जब्र तुझे اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر के अ़ज़ीम मक़्सद से न रोक सका। और तूने उस के सामने ह़क़ बात कह कर जिहादे अक्बर किया फिर उम्मत की ख़ैर ख़्वाही की ख़ातिर शदीद तक्लीफ़ के बा वुजूद उफ़ तक न कहा और जान दे दी। ऐ मर्दे मुजाहिद ! तेरी इन पाकीज़ा ख़स्लतों पर हमारी हज़ारों जानें क़ुरबान हों, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हमारी त़रफ़ से अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए, और तेरे सदक़े हमें भी नेकी की दा'वत आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। ख़ैर ख़्वाहिये उम्मत का अ़ज़ीम जज़्बा हमें भी अ़त़ा फ़रमाए, और हर वक़्त सुन्नतों की तब्लीग़ की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।)

शहा ! ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं खूब सीख जाऊं (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)
तेरी सुन्नतें सिखाना म-दनी मदीने वाले (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 71 : "यौमे उ़क़्बा" की तय्यारी

ह़ज़रते सय्यिदुना शबीब बिन शैबा अल ख़त़ीब عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ اللَّطِيۡف फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा हम **मक्कए मुकर्रमा** (زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا) के सह़राई रास्तों में सफ़र पर थे। एक जगह हम ने क़ियाम किया, दस्तर ख़्वान लगाया और खाना खाने लगे। गर्मी की शिद्दत से ज़मीन तांबे की त़रह़ दहक रही थी, गर्म गर्म हवाएं जिस्म को झुल्सा रही थीं। हम ने अभी खाना शुरूअ़ ही किया था कि एक आ'राबी अपनी ह़ब्शी लौंडी के साथ हमारे पास आया।

हम ने उस से कहा : "आइये ! हमारे साथ खाना खाइये।" तो वोह कहने लगा : "मैं रोज़े से हूं।" हम उस के इस जवाब से बहुत मु-तअ़ज्जिब हुए (और ऐसी शदीद गर्मी में नफ़्ली रोज़ा रखना वाक़ेई तअ़ज्जुब ख़ैज़ बात थी) फिर वोह आ'राबी हम से कहने लगा : "क्या तुम में कोई क़ुरआने पाक का क़ारी और कातिब है कि मैं उस से कोई चीज़ लिखवाना चाहता हूं क्या तुम में से कोई मेरी इस ह़ाजत को पूरा कर सकता है ?"

जब हम खाने वग़ैरा से फ़राग़त पा चुके, तो हम ने उस से पूछा : "अब बताइये आप हम से क्या चाहते हैं ?" (ह़त्तल इम्कान हम आप की मदद करेंगे) वोह आ'राबी कहने लगा : "ऐ मेरे भाई ! बेशक येह दुन्या पहले से मौजूद थी लेकिन मैं इस में न था (फिर मैं पैदा हुवा) अब येह दुन्या एक मुक़र्ररा मुद्दत तक बाक़ी रहेगी लेकिन मैं इसे अ़न्क़रीब छोड़ जाऊंगा।"

दिला ग़ाफ़िल न हो यकदम येह दुन्या छोड़ जाना है
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीन अन्दर समाना है

ऐ मेरे भाई ! मैं चाहता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर "**यौमे उ़क़्बा**" के लिये अपनी इस लौंडी को आज़ाद कर दूं, क्या तुम जानते हो कि "**यौमे उ़क़्बा**" क्या है ? क़ुरआने करीम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे पाक है :

فَلَا اقۡتَحَمَ الۡعَقَبَةَ ۝ وَمَآ اَدۡرٰىكَ مَا الۡعَقَبَةُ ۝ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ (پ٣٠، البلد: ١١تا١٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर बे तअम्मुल घाटी में न कूदा। और तूने क्या जाना वोह घाटी क्या है। किसी बन्दे की गरदन छुड़ाना।

लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि इस लौंडी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और यौमे उ़क़्बा के लिये आज़ाद कर दूं। अब मैं तुम से जो लिखवाऊं वोह मुझे लिख दो और मेरे अल्फ़ाज़ के इ़लावा एक लफ़्ज़ भी ज़ाइद न लिखना। फिर उस ने लिखवाना शुरूअ़ किया, उस के अल्फ़ाज़ का मफ़्हूम येह था :"येह मेरी लौंडी है, और मैं ने इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर, यौमे उ़क़्बा के लिये आज़ाद किया।" इतना लिखवाने के बा'द वोह आ'राबी उस लौंडी को आज़ाद कर के एक सम्त रवाना हो गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना शबीब عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ اللَّطِيۡف फ़रमाते हैं : "मैं फिर बसरा वापस आ गया और जब

बग़दाद में मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना महदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی से हुई तो मैं ने उन्हें उस आ'राबी और लौंडी वाला वाक़िआ़ बताया। तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाने लगे : "उस आ'राबी ने इसी त़रह़ अपने सो ग़ुलाम और लौंडियां आज़ाद की हैं। और वोह जब भी कोई लौंडी या ग़ुलाम आज़ाद करता है तो इसी त़रह़ एक मज़्मून लिखवा कर अपने पास रख लेता है और लौंडी या ग़ुलाम को आज़ाद कर देता है।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 72 : शराबी की हिदायत का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के साथ एक तालाब के किनारे मौजूद था। अचानक हमारी नज़र एक बहुत बड़े बिच्छू पर पड़ी जो तालाब के किनारे बैठा हुवा था, इतनी देर में एक बड़ा सा मेंडक तालाब से निकला और वोह उस बिच्छू के क़रीब किनारे पर आ गया। बिच्छू उस मेंडक पर सुवार हुवा और मेंडक उसे ले कर तैरता हुवा तालाब के दूसरे किनारे की त़रफ़ बढ़ने लगा। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से फ़रमाया : "चलो ! हम भी तालाब के दूसरे किनारे चलते हैं उस त़रफ़ ज़रूर कोई अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आने वाला है।"

चुनान्चे हम भी तालाब के दूसरे किनारे पहुंचे, किनारे पर पहुंच कर मेंडक ने बिच्छू को उतार दिया, बिच्छू तेज़ी से एक सम्त चलने लगा। हम भी उस के पीछे पीछे चलने लगे, कुछ दूर जा कर हम ने एक अ़जीबो ग़रीब ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखा। एक नौ जवान नशे की ह़ालत में बेहोश पड़ा है, अचानक एक अज़्दहा एक जानिब से उस नौ जवान की जानिब बढ़ा और उस के सीने पर चढ़ गया। जैसे ही उस ने नौ जवान को डसना चाहा बिच्छू ने उस पर ह़म्ला किया और उस को ऐसा ज़हरीला डंक मारा कि वोह अज़्दहा तड़पने लगा और नौ जवान के जिस्म से दूर हट गया, फिर तड़प तड़प कर मर गया। जब सांप मर गया तो बिच्छू वापस तालाब की त़रफ़ गया, वहां मेंडक पहले ही मौजूद था। उस पर सुवार हो कर बिच्छू दोबारा दूसरे किनारे की त़रफ़ चला गया।

फ़ानूस बन कर जिस की ह़िफ़ाज़त हवा करे
वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे

फिर हम उस नौ जवान के पास आए, वोह अभी तक नशे की ह़ालत में बेहोश पड़ा था। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने उस शख़्स को हिलाया तो उस ने आंखें खोल दीं, आप

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! देख तेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने किस त़रह़ तेरी जान बचाई है, येह जो मुर्दा सांप तुम देख रहे हो, येह तुझे हलाक करने आया था लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी ह़िफ़ाज़त इस त़रह़ की के तालाब के दूसरे किनारे से एक बिच्छू ने आ कर इस अज़्दहे को मार डाला और इस त़रह़ तू अज़्दहे के ह़म्ले से मह़फ़ूज़ रहा।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस नौ जवान को सारा वाक़िआ़ बताया और येह अश्आ़र पढ़ने लगे :

يَا غَافِلًا وَ الْجَلِيلُ يَحْرُسُهُ مِنْ ‏ كُلِّ سُوْءٍ يَدُوْرُ فِي الظُّلَمِ

كَيْفَ تَنَامُ الْعُيُوْنُ عَنْ مَلِكٍ ‏ يَأْتِيْكَ مِنْهُ فَوَائِدُ النِّعَمِ

तरजमा : ऐ ग़ाफ़िल ! (उठ) रब्बे जलील (अपने बन्दे की) हर उस बुराई से ह़िफ़ाज़त करता है जो अंधेरों में घूमती है, फिर तेरी आंखें उस मालिके ह़क़ीक़ी से ग़ाफ़िल हो कर क्यूं सो गईं जिस की त़रफ़ से तुझे ने'मतों के फ़ाएदे पहुंचते हैं।

नौ जवान ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़बाने बा असर से जब येह ह़िक्मत भरे अश्आ़र सुने, तो वोह ख़्वाबे ग़फ़्लत से जाग गया, और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ताइब हो गया, और कहने लगा : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! जब तू अपने ना फ़रमान बन्दों के साथ ऐसा रह़मत भरा बरताव करता है, तो अपने इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों पर तेरी रह़मत की बरसात किस क़दर होती होगी।"

इस के बा'द वोह नौ जवान एक जानिब जाने लगा तो मैं ने उस से पूछा : "ऐ नौ जवान ! कहां का इरादा है ?" उस ने कहा : "अब मैं जंगलों में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत करूंगा, और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आइन्दा कभी भी दुन्या की रंगीनियों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करूंगा और शहर की त़रफ़ कभी भी क़दम न बढ़ाऊंगा।" इतना कहने के बा'द वोह नौ जवान जंगल की त़रफ़ रवाना हो गया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 73 : वीरान पहाड़ियां

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू अ़ब्दुल्लाह ख़ज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "शाम के रहने वाले एक शख़्स ने मुझे बताया कि "एक मर्तबा मैं वीरान पहाड़ियों में पहुंचा, वोह ऐसी जगह थी कि लोग ऐसी जगहों की त़रफ़ कम ही आते हैं, वहां मैं ने एक बूढ़े शख़्स को देखा जिस की भवें भी सफ़ेद हो चुकी थीं वोह गरदन झुकाए बैठा था और इस त़रह़ सदाएं बुलन्द कर रहा था : "अगर तूने दुन्यवी ज़िन्दगी

में मेरी मेह़नत व मशक़्क़त को त़वील कर दिया, और उख़्रवी ज़िन्दगी में बद बख़्ती व शक़ावत को त़वील कर दिया तो ऐ करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ फिर तो मैं बिल्कुल बेकार हो गया तेरी रह़मत से दूर हो गया, वोह शामी शख़्स कहता है कि, मैं उस बूढ़े शख़्स के पास गया, उसे सलाम किया तो उस ने अपना सर ऊपर उठाया, उस का सारा चेहरा आंसूओं से तर था और आंसूओं ने ज़मीन को तर कर दिया था फिर वोह मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "क्या दुन्या तुम्हारे लिये वसीअ़ व अ़रीज़ नहीं, क्या वहां के लोग तुम से मानूस नहीं ? जब मैं ने उस का येह अ़क़्ल मन्दाना कलाम सुना तो मैं बहुत मु-तअस्सिर हुवा और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए तुम ने लोगों से दूरी इख़्तियार कर ली है और तुम इस वीरान जगह आ गए हो, तुम ने ऐसा क्यूं किया ?"

येह सुन कर उस ने कहा : "ऐ नौ जवान ! जिस रास्ते को तुम क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ के ह़ुसूल के लिये बेहतर समझते हो, वोही रास्ता इख़्तियार करो, इस के इ़लावा तुम्हारे लिये कोई और रास्ता नहीं ।"

मैं ने पूछा : "तुम कहां से खाते हो ?" कहा मुझे खाने की कम ही ह़ाजत पड़ती है, बहर ह़ाल जब मुझे बहुत ज़ियादा भूक मह़सूस होती है तो दरख़्तों के पत्ते और घास वग़ैरा खा कर गुज़ारा कर लेता हूं। मैं ने कहा : "ऐ बुज़ुर्ग ! अगर चाहो तो मैं तुम्हें इस वीरान जगह से निकाल कर सर सब्ज़ो शादाब जगह ले चलता हूं ?" येह सुन कर उस ने रोते हुए कहा : "बहारें और सर सब्ज़ो शादाब अ़लाक़ों में उस वक़्त रहना बेहतर है जब वहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी की जाए, अब मैं बूढ़ा हो चुका हूं और मरने के क़रीब हूं, न अब मुझे लोगों के पास जाने की ह़ाजत है और न ही सर सब्ज़ो शादाब अ़लाक़ों मे जाने की तमन्ना ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 74 :

ज़र्द चेहरे वाला मोची

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लद बिन अय्यूब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल के एक आ़बिद ने पहाड़ की चोटी पर साठ साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की । एक रात उस ने ख़्वाब देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है : "फ़ुलां मोची तुझ से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार है और उस का मर्तबा तुझ से ज़ियादा है ।"

जब वोह आ़बिद नींद से बेदार हुवा तो ख़्वाब के बारे में सोचा, फिर ख़ुद ही कहने लगा : "येह तो मह़ज़ ख़्वाब है, इस का क्या ए'तिबार ।" लिहाज़ा उस ने ख़्वाब की त़रफ़ तवज्जोह न दी, कुछ अ़र्से बा'द उसे फिर उसी त़रह़ ख़्वाब में कहा गया कि फ़ुलां मोची तुझ से अफ़्ज़ल है । मगर अब की बार भी उस ने

ख़्वाब की त़रफ़ कोई तवज्जोह न दी, तीसरी मर्तबा फिर उसे ख़्वाब में इसी त़रह़ कहा गया। बार बार ख़्वाब में जब उसे मोची की फ़ज़ीलत के बारे में बताया गया तो वोह पहाड़ से उतरा और उस मोची के पास पहुंचा। मोची ने जब उसे देखा तो अपना काम छोड़ कर ता'ज़ीमन खड़ा हो गया और बड़ी अ़क़ीदत से उस आ़बिद की दस्त बोसी करने लगा, फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "हु़ज़ूर ! आप को किस चीज़ ने इ़बादत ख़ाने से निकलने पर मजबूर किया है ?"

वोह आ़बिद कहने लगा : मैं तेरी वजह से यहां आया हूं, मुझे बताया गया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तेरा मर्तबा मुझ से ज़ियादा है। इस वजह से मैं तेरी ज़ियारत करने आया हूं, मुझे बता कि वोह कौन सा अ़मल है जिस की वजह से तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ'ला मक़ाम ह़ासिल है ?" वोह मोची ख़ामोश रहा, गोया वोह अपने अ़मल के बारे में बताने से हिचकिचाहट मह़सूस कर रहा था। फिर कहने लगा : "मेरा और तो कोई ख़ास अ़मल नहीं, हां ! इतना ज़रूर है कि मैं सारा दिन रिज़्क़े ह़लाल कमाने में मश्ग़ूल रहता हूं और ह़राम माल से बचता हूं फिर अल्लाह तआ़ला मुझे सारे दिन में जितना रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है मैं उस में से आधा उस की राह में स-दक़ा कर देता हूं और आधा अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करता हूं। दूसरा अ़मल येह है कि मैं कसरत से रोज़े रखता हूं, इस के इ़लावा कोई और चीज़ मेरे अन्दर ऐसी नहीं जो बाइ़से फ़ज़ीलत हो।"

येह सुन कर आ़बिद उस नेक मोची के पास से चला गया और दोबारा इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया। कुछ अ़र्सा बा'द फिर उसे ख़्वाब में कहा गया : "उस मोची से पूछो कि किस चीज़ के ख़ौफ़ ने तुम्हारा चेहरा ज़र्द कर दिया है ?" चुनान्चे वोह आ़बिद दोबारा मोची के पास आया, और उस से पूछा : "तुम्हारा चेहरा ज़र्द क्यूं है ? आख़िर तुम्हें किस चीज़ का ख़ौफ़ दामन गीर है ?" मोची ने जवाब दिया : "जब भी मैं किसी शख़्स को देखता हूं तो मुझे येह गुमान होता है कि येह शख़्स मुझ से अच्छा है, येह जन्नती है और मैं जहन्नम के लाइक़ हूं, मैं अपने आप को सब से ह़क़ीर जानता हूं और अपने आप को सब से ज़ियादा गुनाहगार तसव्वुर करता हूं और मुझे हर वक़्त जहन्नम का ख़ौफ़ खाए जा रहा है। बस येही वजह है कि मेरा चेहरा ज़र्द हो गया है।" वोह आ़बिद वापस अपने इ़बादत ख़ाने में चला गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लद बिन अय्यूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "उस मोची को उस इ़बादत गुज़ार शख़्स पर इसी लिये फ़ज़ीलत दी गई कि वोह दूसरों के मुक़ाबले में अपने आप को ह़क़ीर समझता था और अपने इ़लावा सब को जन्नती समझता था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 75 : ह़ज़रते सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़दविया رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के शबो रोज़

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मर्हूम अ़त्तार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "एक नेक सीरत लौंडी ह़ज़रते सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़दविया رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की ख़िदमत में रहा करती थी। उस लौंडी ने मुझे ह़ज़रते सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़दविया رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की इ़बादत व रियाज़त के बारे में बताया कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا सारी सारी रात नमाज़ में मश्ग़ूल रहतीं। जब सुब्ह़े सादिक़ होती तो थोड़ी देर के लिये अपने मुसल्ले पर लैट जातीं, और जब हल्का हल्का उजाला होने लगता तो फ़ौरन उठ खड़ी होतीं और अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के कहतीं : "ऐ नफ़्स ! तू इस ना पाएदार दुन्या में कब तक सोता रहेगा ? येह दुन्या तो तंगी का घर है, फिर इस में इतनी नींद क्यूं ? आज कुछ देर जाग ले कुछ नेक आ'माल कर ले, फिर क़ब्र में ख़ूब मीठी नींद सो जाना, वहां तुझे क़ियामत तक कोई नहीं जगाएगा, अ़मल यहां कर ले आराम वहां करना।"

जागना है जाग ले अफ़्लाक के साए तले
ह़श्र तक सोता रहेगा ख़ाक के साए तले

फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا उठ बैठतीं और दोबारा इ़बादत में मश्ग़ूल हो जातीं आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने पूरी ज़िन्दगी इसी त़रह़ इ़बादत व रियाज़त में गुज़ारी। जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मुझे बुला कर फ़रमाने लगीं : "मेरी मौत की वजह से मुझे अज़िय्यत न देना या'नी मेरे मरने के बा'द चीख़ो पुकार न करना, और इसी ऊन के जुब्बे में मेरी तक्फ़ीन करना।"

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا उसी जुब्बे को पहन कर सारी सारी रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहतीं, लोग नींद के मज़े ले रहे होते लेकिन येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी लज़्ज़ते इ़बादत से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रही होती।

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की वफ़ात के बा'द हम ने आप को उसी जुब्बे में कफ़न दिया जिस की आप ने वसिय्यत फ़रमाई थी, और वोह चादर भी कफ़न में शामिल कर दी जिसे ओढ़ कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا इ़बादत किया करती थीं।

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की वफ़ात के तक़रीबन एक साल बा'द मैं ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا को ख़्वाब में देखा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا जन्नत के आ'ला द-रजों में हैं और आप ने सब्ज़ रेशम का बेहतरीन लिबास ज़ैबे बदन किया हुवा है, और सब्ज़ रेशम का दुपट्टा ओढ़ा हुवा है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने कभी ऐसा ख़ूब सुरत लिबास नहीं देखा था जैसा आप ने पहना हुवा था।

मैं ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا से पूछा : "ऐ राबिआ़ ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के उस जुब्बे और चादर का क्या हुवा जिस में हम ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا को कफ़न दिया था ?" तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह लिबास मुझ से ले लिया गया, और उस की जगह येह बेहतरीन लिबास मुझे अ़त़ा किया गया है जिसे तुम देख रही हो, और मेरे उस जुब्बे और चादर को लपेट कर उस पर मोहर

लगा दी गई और उसे मक़ामे इल्लिय्यीन में रख दिया गया है ताकि क़ियामत के दिन उस के बदले मुझे सवाब अ़ता किया जाए।" मैं ने पूछा : "आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا को अपने दुन्या में किये हुए आ'माल के बदले में और क्या क्या ने'मतें अ़ता की गईं ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا फ़रमाने लगीं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने नेक बन्दों के लिये जो ने'मतें तय्यार कर रखी हैं, वोह बयान से बाहर हैं। तुम ने तो अभी उन ने'मतों की एक झलक ही देखी है, इस के इ़लावा न जाने क्या क्या ने'मतें उस ने अपने औलिया के लिये तय्यार कर रखी हैं।"

फिर मैं ने पूछा : "उ़बैदा बिन्ते अबू किलाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب के साथ आख़िरत में क्या मुआ़-मला पेश आया ?" फ़रमाने लगीं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह हम से सब्क़त ले गईं और हम से आ'ला मर्तबों में उन्हें रखा गया है।" मैं ने पूछा : "किस वजह से उन्हें आप पर फ़ज़ीलत दी गई ? ह़ालां कि लोगों की नज़रों में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا का मर्तबा उन से ज़ियादा था।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : "वोह हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करती थीं, और दुन्यावी फ़िक्रों से परेशान न होती थीं।" फिर मैं ने पूछा : "अबू मालिक ज़ैग़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के साथ कैसा बरताव किया गया ?" फ़रमाने लगीं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बहुत बड़ा इन्आ़म अ़ता फ़रमाया है, वोह जब चाहते हैं अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की ज़ियारत कर लेते हैं, उन का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत मर्तबा व मक़ाम है।"

मैं ने पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر के साथ क्या हुवा ?" फ़रमाने लगीं : "उन का मर्तबा तो क़ाबिले रश्क है, उन्हें तो ऐसी ऐसी ने'मतों से नवाज़ा गया है जिन के बारे में उन्हों ने कभी सोचा भी न होगा।"

फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे किसी ऐसे अ़मल के मु-तअ़ल्लिक़ बता दीजिये जिस के ज़रीए़ मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब और उस की रिज़ा नसीब हो जाए।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : "कसरत से ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करो, हर वक़्त अपने ऊपर ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ को लाज़िम कर लो। अगर ऐसा करोगी तो कुछ बई़द नहीं कि तुम्हारी क़ब्र में तुम्हें ऐसी ने'मतों से नवाज़ा जाए कि तुम क़ाबिले रश्क हो जाओ।"

मैं बेकार बातों से बच कर हमेशा
करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी इन बुज़ुर्ग हस्तियों के सदक़े ऐसी ज़बान अ़ता फ़रमा जो हर वक़्त तेरे ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे। ऐसा जिस्म अ़ता फ़रमा जो दीन की राह में आने वाली मुसीबतों पर सब्र करे और ऐसा दिल अ़ता फ़रमा जो हर वक़्त तेरा शुक्र अदा करता रहे।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 76: ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की करामत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा ज़माने के मशहूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की ज़ौजए मोह़्तरमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : "हमारे पास आटा बिल्कुल ख़त्म हो गया है, और खाने के लिये कुछ भी नहीं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "क्या तेरे पास कुछ रक़म वग़ैरा है जिस से आटा ख़रीदा जा सके ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास एक दिरहम है जो ऊन बेच कर ह़ासिल हुवा है।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "लाओ वोह दिरहम मुझे दो, मैं आटा ख़रीद लाता हूं।"

चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक दिरहम और थैला ले कर बाज़ार की त़रफ़ गए। जब दुकान से आटा ख़रीदना चाहा तो अचानक एक फ़क़ीर आ गया और उस ने कहा : "ऐ अबू मुस्लिम ख़ौलानी ! येह दिरहम मुझ पर स-दक़ा कर दो।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वहां से पलटे और दूसरी दुकान पर पहुंचे, जैसे ही आप ने आटा ख़रीदना चाहा दोबारा वोही फ़क़ीर आ गया और कहने लगा : "ऐ अबू मुस्लिम ख़ौलानी ! मैं बहुत मजबूर हूं, येह दिरहम मुझ पर स-दक़ा कर दो।" इसी त़रह़ वोह फ़क़ीर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पीछे लगा रहा बिल आख़िर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वोह दिरहम फ़क़ीर को दे दिया। अब सोचने लगे कि घर वालों को क्या जवाब दूंगा, वोह तो ख़ाली थैला देख कर परेशान हो जाएंगे।

चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बढ़ई की दुकान पर गए और वहां से थैले में लकड़ी का बुरादा और मिट्टी भरी और घर की त़रफ़ चल दिये। घर पहुंच कर दरवाज़ा खट-खटाया, जैसे ही दरवाज़ा खुला आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वोह थैला घर वालों के ह़वाले किया, और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ घर में दाख़िल हुए बिग़ैर ही वापस पलट गए, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ परेशान थे कि जब थैला खोला जाएगा तो उस में से मिट्टी और बुरादा निकलेगा और घर वाले आटा न मिलने की वजह से बहुत परेशान होंगे, इसी ख़ौफ़ व परेशानी की वजह से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सारा दिन घर न गए।

जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़्तरमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने थैला खोला तो वोह निहायत ही उ़म्दा आटे से भरा हुवा था। चुनान्चे उन्हों ने जल्दी जल्दी खाना तय्यार किया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिज़ार करने लगीं। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रात गए चुपके से घर में दाख़िल हुए तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़्तरमा फ़ौरन आप के लिये बेहतरीन क़िस्म की रोटियां ले कर आईं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोटियां देख कर हैरान हुए, और पूछा : "येह रोटियां कहां से आईं ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़्तरमा ने कहा : "येह उसी आटे की रोटियां हैं जिसे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ले कर आए थे।" येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोने लगे, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया कि उस ने लाज रख ली और मिट्टी को उ़म्दा आटे में तब्दील कर दिया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 77 : बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दर्द भरी मुनाजात

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन सह्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान फ़रमाते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक अ़ज़ीम वली ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़रवह साबेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि मैं एक मर्तबा बा'ज़ वीरान पहाड़ियों में घूम रहा था कि एक पहाड़ के पीछे से मुझे किसी की आवाज़ सुनाई दी, मैं ने कहा : यहां ज़रूर कोई ख़ास बात है, लिहाज़ा मैं उसी सम्त चल दीया जिधर से आवाज़ आ रही थी। जब वहां पहुंचा तो एक शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह इल्तिजा कर रहा था : "ऐ वोह पाक ज़ात जिस ने अपने पाक ज़िक्र से मुझे उन्सिय्यत बख़्शी और मख़्लूक़ की मह़ब्बत मेरे दिल से निकाल दी ! ऐ अर-ह़मर्राह़िमीन ! मुझे तेरी याद में आंसू बहाना बहुत मह़बूब है, ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी ऐसी मा'रिफ़त अ़ता फ़रमा कि मुझे तेरा क़ुर्ब नसीब हो जाए, ऐ अपने मुह़िब्बीन पर एह़सान करने वाले ! मुझे भी अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा ले।"

फिर मैं ने एक ज़ोरदार चीख़ सुनी, लेकिन आस पास कोई भी मौजूद न था, मैं उसी सम्त चलता रहा जहां से आवाज़ आ रही थी। जब वहां पहुंचा तो देखा कि एक बूढ़ा शख़्स बेहोश पड़ा है और उस का जिस्म कप-कपा रहा है, काफ़ी देर वोह इसी ह़ालत में रहा, मैं भी वहीं खड़ा रहा। फिर जब उसे इफ़ाक़ा हुवा तो मुझ से पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, आप कौन हैं ?" मैं ने कहा : "मैं बनी आदम का एक फ़र्द हूं।" फिर उस ने कहा : "जाओ ! मुझ से दूर हो जाओ, मैं इन्सानों से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत समझता हूं।" इतना कहने के बा'द वोह बुज़ुर्ग उठ खड़े हुए और रोते हुए एक जानिब चल दिये। मैं ने उन से अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, मुझे रास्ता तो बताते जाएं।" तो उन्हों ने आस्मान की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया : **"अस्ल मन्ज़िल वहां है, अस्ल मन्ज़िल वहां है।"**

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 78 : ना फ़रमान पाउं की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं : "बनी इसराईल में एक इ़बादत गुज़ार शख़्स था। जो दिन रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहता, इसी त़रह़ इ़बादत करते हुए उसे काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया, एक मर्तबा वोह छत पर चढ़ा तो अचानक उस की नज़र बाहर खड़ी हुई एक ह़सीनो जमील औ़रत पर पड़ी तो उस का दिल औ़रत की त़रफ़ माइल हो गया, वोह नीचे उतरा और उस ने इरादा किया कि उस औ़रत की त़रफ़ जाऊं, जैसे ही उस ने गुनाह के इरादे से अपना एक क़दम दरवाज़े से बाहर निकाला फ़ौरन उस की इ़बादत उस के काम आ गई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने

उस की साबिक़ा इ़बादत के सबब उसे उस गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा, चुनान्चे वोह आ़बिद अपने इस फ़े'ल पर बहुत नादिम हुवा और कहने लगा : "येह मैं क्या करने जा रहा हूं (या'नी मेरा दिल गुनाह की त़रफ़ क्यूं माइल हो गया) चुनान्चे वोह वहीं रुक गया और कहने लगा : "जिस क़दम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये सब्क़त की मैं उसे वापस इस इ़बादत गाह में न लाऊंगा, ऐ ना फ़रमान पाउं ! तुझ पर अफ़्सोस है कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये बाहर निकला, अब तू सज़ा का मुस्तह़िक़ है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुझे कभी भी वापस इ़बादत गाह में न लाऊंगा।"

चुनान्चे आ़बिद ने अपने उस पाउं को बाहर ही रहने दिया। मुसल्सल सर्दी, गर्मी, बारिश और धूप वग़ैरा से उस का पाउं गल सड़ कर जिस्म से अ़लाह़िदा हो गया तो उस आ़बिद ने कहा : "जो पाउं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये बढ़े उस की येही सज़ा है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे उस पाउं से नजात दी जो तेरी ना फ़रमानी के लिये बढ़ा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 79 : जन्नत की अ-बदी ने'मतें

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद **वालान बिन ईसा** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने ज़माने के मशहूर औलियाए किराम में से थे, वोह बहुत इ़बादत गुज़ार शख़्स थे। उन्हों ने मुझे बताया : "एक मर्तबा मैं रात के पिछले पहर तहज्जुद के लिये मस्जिद में गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जितनी तौफ़ीक़ दी उतनी देर मैं ने नमाज़ पढ़ी और ज़िक्र किया, फिर मुझ पर नींद का ग़-लबा हो गया, मैं ने ख़्वाब देखा कि एक क़ाफ़िला मस्जिद में आया है, अहले क़ाफ़िला के चेहरे निहायत ह़सीनो जमील और नूरानी हैं, मैं ने जान लिया कि येह इन्सान नहीं बल्कि कोई और मख़्लूक़ है। उन के हाथों में थाल हैं, जिन में उ़म्दा आटे की बर्फ़ की त़रह़ सफ़ेद रोटियां हैं, हर रोटी पर अंगूरों की त़रह़ छोटे छोटे क़ीमती मोती हैं। अहले क़ाफ़िला मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और कहने लगे : "येह रोटियां खा लो।" मैं ने कहा : "मेरा तो रोज़ा है।" तो वोह कहने लगे : "येह मस्जिद जिस का घर है उस ने हुक्म दिया है कि तुम येह खाना खा लो।" मैं ने खाना शुरूअ़ कर दिया कि जब मेरा मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ मुझे हुक्म दे रहा तो फिर मैं क्यूं न खाऊं। खाने के बा'द मैं ने वोह मोती उठाना चाहे तो मुझे कहा गया : "इन्हें छोड़ दो, हम तुम्हारे लिये इन के बदले ऐसे दरख़्त लगाएंगे जिन के फल इन मोतियों से बेहतर होंगे।"

मैं ने कहा : "वोह दरख़्त कहां लगाए जाएंगे ?" कहा गया : "ऐसे घर में जो कभी बरबाद न होगा, और वहां हमेशा फल उगते रहेंगे, कभी ख़त्म न होंगे और न ही ख़राब होंगे, वोह ऐसा मुल्क है जो कभी मुन्क़त़ेअ़ न होगा, वहां ऐसे कपड़े होंगे जो कभी पुराने न होंगे, उस घर (या'नी जन्नत) में ख़ुशी ही ख़ुशी है, मीठे पानी के चश्मे हैं, वहां सुकून व आराम है और ऐसी पाकबाज़ बीवियां हैं जो फ़रमां बरदार, हमेशा ख़ुश

रहने वालियां और दिल को भाने वाली हैं, वोह न तो कभी नाराज़ होंगी और न ही नाराज़ करेंगी। लिहाज़ा दुन्या में जितना हो सके तुम नेक आ'माल की कसरत करो। येह दुन्या तो नींद की मानिन्द है कि आंख खुलते ही रुख़्सत हो जाएगी, लिहाज़ा इस में जितना हो सके अ़मल करो और जल्दी से जन्नत की त़रफ़ आ जाओ जहां दाइमी ने'मतें हैं।"

फिर मेरी आंख खुल गई लेकिन अभी तक मेरे ज़ेह्‌न में वोह ख़्वाब समाया हुवा था और मैं जल्दी जल्दी उस घर (या'नी जन्नत) में पहुंचना चाहता था जिस का मुझ से वा'दा किया गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी बिन यह़्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना वालान बिन ईसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तक़रीबन पन्दरह दिन ज़िन्दा रहे फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इन्तिक़ाल हो गया। जिस रात इन्तिक़ाल हुवा मैं ने उसी रात उन को ख़्वाब में देखा, मुझ से फ़रमाने लगे : "क्या तुम इन दरख़्तों के फलों को देख कर मु-तअ़ज्जिब हो रहे हो कि इन में कैसे कैसे फल लगे हुए हैं ?" मैं ने पूछा : "तुम्हारे लिये जो दरख़्त जन्नत में लगाए गए है उन में किस त़रह़ के फल हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "वोह तो ऐसे फल हैं कि जिन की ता'रीफ़ बयान नहीं की जा सकती।"

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मेहमान बनता है तो वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी ऐसी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाता है जिन के औसाफ़ बयान नहीं हो सकते, उस के करम की कोई इन्तिहा नहीं, वोह अपने बन्दों पर बे इन्तिहा करम फ़रमाता है।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम गुनाहगारों पर भी अपना ख़ुसूसी करम फ़रमाए, और हमें भी अपने म-दनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़त़ा फ़रमाए)

छुप छुप के जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं
जन्नत में मुझे ऐसी जगह मेरे ख़ुदा दे (عَزَّوَجَلَّ)

हिकायत नम्बर 80 : सब से बड़ा इ़बादत गुज़ार

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुआ़विया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, हमें हमारे शैख़ ने बताया : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام की आपस में मुलाक़ात हुई, ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील

عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : "मुझे किसी ऐसे शख़्स के पास ले चलो जो ज़मीन में सब से बड़ा इ़बादत गुज़ार हो।" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आप عَلَيْهِ السَّلَام को एक ऐसे शख़्स के पास ले गए जो जुज़ाम का मरीज़ था और उस बीमारी की वजह से उस के हाथ पाउं गल सड़ कर जिस्म से जुदा हो गए थे, और वोह साबिरो शाकिर शख़्स कह रहा था : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! जब तक तूने चाहा इन आ'ज़ा से मुझे फ़ाएदा बख़्शा और जब तूने चाहा ले लिया, तेरा शुक्र है कि तूने मेरी उम्मीद सिर्फ़ अपनी ज़ात में बाक़ी रखी, ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरा मत़्लूब तो बस तू ही तू है (या'नी मैं तेरी रिज़ा पर राज़ी हूं)।"

उस शख़्स को देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : "ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! मैं ने तो तुझे ऐसे शख़्स के बारे में कहा था जो बहुत ज़ियादा नमाज़ पढ़ने वाला हो और ख़ूब रोज़े रखने वाला हो।" येह सुन कर जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : "इन मुसीबतों के नाज़िल होने से पहले येह ख़ूब रोज़े रखता और ख़ूब नमाज़ें पढ़ता था और अब मुझे येह हुक्म दिया गया है कि मैं इस की आंखें भी ले लूं।" येह कह कर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स की आंखों की त़रफ़ इशारा किया तो उस की दोनों आंखें बाहर उमंड आईं।

आ़बिद फिर वोही अल्फ़ाज़ दोहराने लगा : "ऐ मेरे मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ जब तक तूने चाहा मुझे इन आंखों से फ़ाएदा बख़्शा और जब चाहा ले लिया और अपनी ज़ात में मेरी मह़ब्बत को बाक़ी रखा (ऐ मौला तेरा शुक्र है) मेरा मत़्लूब तो बस तू ही तू है।"

येह ह़ालत देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने उस अ़ज़ीम साबिरो शाकिर शख़्स से कहा : "आओ, हम सब मिल कर दुआ़ करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरी आंखें, और हाथ पाउं लौटा दे और तुझे इस बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाए ताकि तुम पहले की त़रह़ इ़बादत करो और रोज़े रखो।" वोह शख़्स कहने लगा : "मैं इस बात को पसन्द नहीं करता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "आख़िर क्यूं तुम इस बात को पसन्द नहीं करते ?" वोह आ़बिद बोला : "अगर मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा इसी में है कि मैं बीमार रहूं तो फिर मुझे तन्दुरुस्ती व सिह़्ह़त नहीं चाहिये, मैं तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी हूं, वोह मुझे जिस ह़ाल में रखे मैं उसी में राज़ी हूं।"

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी मैं सुख नूं चुल्लहे पावां

उस आ़बिद की येह गुफ़्त-गू सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! वाके़ई मैं ने आज तक इस से बढ़ कर कोई इ़बादत गुज़ार शख़्स नहीं देखा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : "येह ऐसा अ़ज़ीम रास्ता है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के

हुसूल के लिये इस से अफ़्ज़ल कोई और रास्ता नहीं ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 81 : छोटी मुसीबत ने बड़ी मुसीबत से बचा लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّحِیْم ने अपने बेटे को (नसीह़त करते हुए) फ़रमाया : "ऐ मेरे प्यारे बेटे ! जब भी तुझे कोई मुसीबत पहुंचे तो तू उसे अपने ह़क़ में बेहतर जान और येह बात दिल में बिठा ले कि मेरे लिये इसी में भलाई है अगर्चे ब ज़ाहिर वोह मुसीबत ही नज़र आ रही है लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि वोह तेरे ह़क़ में बेहतर होगी ।"

येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बेटा कहने लगा : "जो कुछ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया मैं ने उस को सुन लिया और इस का मत़्लब भी समझ लिया लेकिन येह बात मेरे बस में नहीं कि मैं हर मुसीबत को अपने लिये बेहतर समझूं, मेरा यक़ीन अभी इतना पुख़्ता नहीं हुवा ।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّحِیْم ने अपने बेटे की येह बात सुनी तो फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में वक़्तन फ़ वक़्तन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाए, हमारे ज़माने में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नबी عَلَیْہِ السَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाया है आओ, हम उस नबी عَلَیْہِ السَّلَام की सोह़बते बा ब-र-कत से फ़ैज़याब होने चलते हैं, उन की बातें सुन कर तेरे यक़ीन को तक़्विय्यत ह़ासिल होगी ।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बेटा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर होने के लिये तय्यार हो गया ।

चुनान्चे उन दोनों ने अपना सामाने सफ़र तय्यार किया, और ख़च्चर पर सुवार हो कर अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ रवाना हो गए । कई दिन, रात उन्हों ने सफ़र जारी रखा, रास्ते में एक वीरान जंगल आया वोह अपने सामान समेत जंगल में दाख़िल हो गए, अल्लाह तआला ने उन को जितनी हिम्मत दी उतना उन्हों ने जंगल में सफ़र किया, फिर दो पहर हो गई, गर्मी अपने ज़ोरों पर थी, गर्म हवाएं चल रही थीं, दरीं अस्ना उन का पानी और खाना वग़ैरा भी ख़त्म हो गया, ख़च्चर भी थक चुके थे, प्यास की शिद्दत से वोह भी हांपने लगे, येह देख कर ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और आप का बेटा ख़च्चरों से नीचे उतर आए और पैदल ही चलने लगे । चलते चलते ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बहुत दूर एक साया और धुवां सा नज़र आया, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने गुमान किया कि वहां शायद कोई आबादी है, और येह किसी दरख़्त वग़ैरा का साया है, चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उसी त़रफ़ चलने लगे । रास्ते में आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

के बेटे को ठोकर लगी और उस के पाउं में एक हड्डी इस त़रह़ घुसी कि वोह पाउं के तल्वे से पार हो कर ज़ाहिर क़दम तक निकल आई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बेटा दर्द की शिद्दत से बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे अपने सीने से चिमटा लिया, फिर अपने दांतों से हड्डी निकालने लगे। काफ़ी मशक़्क़त के बा'द बिल आख़िर वोह हड्डी निकल गई।

बेटे की येह ह़ालत देख कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه शफ़्क़ते पिदराना की वजह से रोने लगे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने इ़मामे से कुछ कपड़ा फाड़ा और उसे ज़ख़्म पर बांध दिया। ह़ज़रते लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की आंखों से बहने वाले आंसू जब उन के बेटे के चेहरे पर गिरे तो उसे होश आ गया, जब उस ने देखा कि मेरे वालिद रो रहे हैं तो कहने लगा : "ऐ अब्बा जान ! आप तो मुझ से फ़रमा रहे थे कि हर मुसीबत में भलाई है। लेकिन अब मेरी इस मुसीबत को देख कर आप रोने क्यूं लगे ?" और येह मुसीबत मेरे ह़क़ में बेहतर किस त़रह़ हो सकती है ? ह़ालां कि हमारी खाने पीने की तमाम अश्या ख़त्म हो चुकी हैं, और हम यहां इस वीरान जंगल में तन्हा रह गए हैं, अगर आप मुझे यहीं छोड़ कर चले जाएंगे तो आप को मेरी इस मुसीबत की वजह से बहुत रन्ज व ग़म लाह़िक़ रहेगा, और अगर आप यहीं मेरे साथ रहेंगे तो हम दोनों यहां इस वीराने में भूके प्यासे मर जाएंगे, अब आप खु़द ही बताएं कि इस मुसीबत में मेरे लिये क्या बेहतरी है ?"

बेटे की येह बातें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मेरा रोना इस वजह से था कि मैं एक बाप हूं और हर बाप का अपनी औलाद के दुख दर्द की वजह से ग़मगीन हो जाना एक फ़ित्री अ़मल है, बाक़ी रही येह बात कि इस मुसीबत में तुम्हारे लिये क्या भलाई है ? तो हो सकता है इस छोटी मुसीबत में तुझे मुब्तला कर के तुझ से कोई बहुत बड़ी मुसीबत दूर कर दी गई हो, और येह मुसीबत उस मुसीबत के मुक़ाबले में छोटी हो जो तुझ से दूर कर दी गई है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बेटा ख़ामोश हो गया।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सामने नज़र की तो अब वहां न तो धुवां था और न ही साया वग़ैरा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दिल में कहने लगे : "मैं ने अभी तो इस त़रफ़ धुवां और साया देखा था लेकिन अब वोह कहां ग़ाइब हो गया, हो सकता है कि हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने हमारी मदद के लिये किसी को भेजा हो।" अभी आप इसी सोच बिचार में थे कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दूर एक शख़्स नज़र आया जो सफ़ेद लिबास ज़ैबे तन किये, सफ़ेद इ़मामा सर पर सजाए, चितकब्रे घोड़े पर सुवार आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ बड़ी तेज़ी से बढ़ा चला आ रहा है, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस सुवार को अपनी त़रफ़ आता देखते रहे यहां तक कि वोह आप के बिल्कुल क़रीब हो गया, फिर वोह सुवार अचानक नज़रों से ओझल हो गया।"

फिर एक आवाज़ सुनाई दी : "क्या तुम ही लुक़्मान हो ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जी हां ! मैं ही लुक़्मान हूं।" फिर आवाज़ आई : "क्या तुम ह़कीम हो ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मुझे ही लुक़्मान ह़कीम कहा जाता है।" फिर आवाज़ आई : "तुम्हारे इस ना समझ बेटे ने तुम से क्या कहा है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू कौन है ? हमें सिर्फ़ तेरी आवाज़ सुनाई दे रही है और तू ख़ुद नज़र नहीं आ रहा।" फिर आवाज़ आई : "मैं जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) हूं और मुझे सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और मुक़र्रब फ़िरिश्ते ही देख सकते हैं, इस वजह से मैं तुझे नज़र नहीं आ रहा, सुनो ! मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं फ़ुलां शहर और उस के आस पास के लोगों को ज़मीन में धंसा दूं। मुझे ख़बर दी गई कि तुम दोनों भी इस शहर की त़रफ़ आ रहे हो तो मैं ने अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि वोह तुम्हें उस शहर में जाने से रोके। लिहाज़ा उस ने तुम्हें इस आज़्माइश में डाल दिया और तेरे बेटे के पाउं में हड्डी चुभ गई, इस त़रह़ तुम इस छोटी मुसीबत की वजह से एक बहुत बड़ी मुसीबत (या'नी ज़मीन में धंसने) से बच गए हो।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना हाथ उस ज़ख़्मी लड़के के पाउं पर फैरा तो उस का ज़ख़्म फ़ौरन ठीक हो गया। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना हाथ उस बरतन पर फैरा जिस में पानी बिल्कुल ख़त्म हो चुका था तो हाथ फैरते ही वोह बरतन पानी से भर गया और जब खाने वाले बरतन पर हाथ फैरा तो वोह भी खाने से भर गया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, आप के बेटे और आप की सुवारियों को सामान समेत उठाया और कुछ ही देर में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने बेटे और सारे सामान समेत अपने घर में मौजूद थे ह़ालां कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का घर उस जंगल से काफ़ी दिन की मुसाफ़त पर था।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम से हमारी तमाम मुसीबतें दूर फ़रमा दे, हम पर आने वाली बलाओं को शहीदे करबला इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सदक़े रद फ़रमा दे। हमें अपने फ़ज़्लो करम से मसाइब पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और बे सब्री से बचा)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ हर जगह तेरी अ़त़ा का साथ हो　　जब पड़े मुश्किल, शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

और............ ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा के वासित़े　　कर बलाएं रद शहीदे करबला के वासित़े

ह़िकायत नम्बर 82 : चांद जैसा नूरानी चेहरा

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना : "एक मर्तबा मैं लुबनान की पहाड़ियों में रात के वक़्त सफ़र पर था, चलते चलते मुझे एक दरख़्त नज़र आया जिस के क़रीब एक ख़ैमा नुमा झोंपडी थी। यकायक उस झोंपड़ी से एक ह़सीनो जमील नौ जवान ने अपना चांद सा नूरानी चेहरा बाहर निकाला और कहने लगा : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरा दिल हर ह़ाल में (चाहे ख़ुशी हो या ग़मी) इस बात की गवाही देता है कि तेरी ही ज़ात ऐसी है जो तमाम सिफ़ाते कमालिया से मुत्तसिफ़ है (या'नी तमाम फ़ज़ीलतें और अ-ज़मतें तेरे ही लिये हैं) मेरा दिल इस बात की गवाही क्यूं न दे, ह़ालां कि मेरे दिल में तेरे सिवा और किसी की मह़ब्बत समाई ही नहीं, मैं तो बस तुझ ही से मह़ब्बत करता हूं, अफ़्सोस ! सद हज़ार अफ़्सोस ! उन लोगों पर जिन्हों ने तुझ से मह़ब्बत न की, और कोताही करते रहे।"

फिर उस नौ जवान ने अपना नूरानी चेहरा झोंपड़ी में दाख़िल कर लिया। मैं उस की बातें सुन कर बड़ा ह़ैरान हुवा, और मुझे उस की बातें भूल गईं, मैं वहीं ह़ैरान व परेशान खड़ा रहा यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो गया, उस नौ जवान ने फिर अपना नूरबार चेहरा झोंपड़ी से बाहर निकाला, और चांद की त़रफ़ देखते हुए कहने लगा : "ऐ मेरे मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ही नूर से ज़मीन व आस्मान रोशन हैं, तेरा ही नूर अंधेरों को ख़त्म करता है और इसी से हर जगह उजाला होता है, ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तेरा जल्वा हमारी आंखों से ह़िजाब में है, और तेरी मा'रिफ़त अहले मा'रिफ़त को ह़ासिल होती है, ऐ मेरे रह़ीम व करीम मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस रन्जो ग़म की ह़ालत में सिर्फ़ तुझ ही से इल्तिजा करता हूं कि तू मुझ पर करम की ऐसी नज़र फ़रमा जैसी अपने फ़रमां बरदार बन्दों पर डालता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब मैं ने नौ जवान की येह बातें सुनीं, तो मुझ से न रहा गया और मैं उस के पास गया उसे सलाम किया, उस ने जवाब दिया, मैं ने कहा : "ऐ नौ जवान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए, मैं तुझ से एक सुवाल करना चाहता हूं।" नौ जवान ने कहा : "नहीं, तू मुझ से सुवाल न कर।" मैं ने कहा : "तू मुझे सुवाल करने से क्यूं मन्अ़ कर रहा है ?" उस ने कहा : "इस लिये कि अभी तक मेरे दिल से तेरा रो'ब नहीं निकला, मैं अभी तक तुझ से ख़ौफ़ज़दा हूं।" मैं ने कहा : "ऐ नेक सीरत नौ जवान ! मैं ने ऐसी कौन सी ह़-र-कत की जिस ने तुझे ख़ौफ़ज़दा कर दिया है ?" वोह नौ जवान कहने लगा : "तुम काम (या'नी इ़बादत) के दिनों में बेकार फिर रहे हो, और आख़िरत की तय्यारी के लिये कुछ भी अ़मल नहीं कर रहे, ऐ ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ! तुम ने सिर्फ़ अच्छे गुमान पर तकिया किया हुवा है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं उस नौ जवान की येह बातें सुन

कर बेहोश हो गया और ज़मीन पर गिर पड़ा, मैं काफ़ी देर बेहोश रहा, फिर सूरज की तेज़ धूप की वजह से मुझे होश आया, मैं ने अपना सर उठा कर देखा तो बड़ा हैरान हुवा कि अब मेरे सामने न तो कोई दरख़्त है न झोंपड़ी और न ही वोह नौ जवान। येह सब चीजें न जाने कहां ग़ाइब हो गईं, मैं काफ़ी देर इसी त़रह़ हैरान व परेशान वहां खड़ा रहा, उस नौ जवान की बातें अब तक मेरे दिलो दिमाग़ में घूम रही हैं, फिर मैं अपने सफ़र पर रवाना हो गया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हमें भी हर वक़्त अपने जल्वों में गुम रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, फ़िक्रे दुन्या से बचा कर फ़िक्रे आख़िरत नसीब फ़रमा, और अपनी मह़ब्बत का ऐसा जाम पिला कि हम हर वक़्त तेरे जल्वों में ऐसे गुम हो जाएं कि हमें अपना भी होश न रहे)

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ !
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ

ह़िकायत नम्बर 83 :

माल का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना लैस عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر से रिवायत करते हैं : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सफ़र पर रवाना हुए, रास्ते में एक शख़्स मिला, उस ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझे भी अपनी बा ब-र-कत सोह़बत में रहने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दें, मैं भी आप عَلَیْہِ السَّلَام के साथ सफ़र करना चाहता हूं।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे अपनी हमराही की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी और दोनों एक साथ सफ़र करने लगे। रास्ते में एक पत्थर के क़रीब आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "आओ हम यहां खाना खा लेते हैं।" चुनान्चे दोनों खाना खाने लगे, आप عَلَیْہِ السَّلَام के पास तीन रोटियां थीं, एक एक रोटी दोनों ने खा ली, और तीसरी रोटी बची रही। आप عَلَیْہِ السَّلَام रोटी को वहीं छोड़ कर नहर पर गए और पानी पिया, फिर जब वापस आए तो देखा कि रोटी ग़ाइब है, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस शख़्स से पूछा : "तीसरी रोटी कहां गई ?" उस ने कहा : मुझे मा'लूम नहीं। फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "आओ हम अपने सफ़र पर चलते हैं।" वोह शख़्स उठा और आप عَلَیْہِ السَّلَام के साथ चलने लगा, रास्ते में एक हिरनी अपने दो ख़ूब सूरत बच्चों के साथ खड़ी थी, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने हिरनी के एक बच्चे को अपनी त़रफ़ बुलाया तो वोह आप عَلَیْہِ السَّلَام का हुक्म पाते ही फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे

ज़ब्ह़ किया, उसे भूना और दोनों ने उस का गोश्त खाया, फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस की हड्डियां एक जगह जम्अ़ कीं और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से खड़ा हो जा, यकायक वोह हड्डियां दोबारा हिरनी का बच्चा बन गईं और वोह बच्चा अपनी मां की त़रफ़ रवाना हो गया, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! तुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस ने तुझे मेरे हाथों येह मो'जिज़ा दिखाया, तू सच सच बता कि वोह रोटी किस ने ली थी ?" वोह शख़्स बोला : "मुझे मा'लूम नहीं कि रोटी किस ने ली थी ?" आप عَلَیْہِ السَّلَام उस शख़्स को ले कर दोबारा सफ़र पर रवाना हुए, रास्ते में एक दरिया आया आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस शख़्स का हाथ पकड़ा और उसे ले कर पानी पर चलते हुए दरिया पार कर लिया, फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : "तुझे उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने तुझे मेरे हाथों येह मो'जिज़ा दिखाया सच सच बता कि तीसरी रोटी किस ने ली थी ?" उस ने फिर वोही जवाब दिया कि मुझे मा'लूम नहीं । आप عَلَیْہِ السَّلَام उस शख़्स को ले कर आगे बढ़े, रास्तें में एक वीरान सह़रा आ गया । आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : "बैठ जाओ, फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने कुछ रैत जम्अ़ की और फ़रमाया : "ऐ रैत ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से सोना बन जा ।" तो वोह रैत फ़ौरन सोने में तब्दील हो गई । आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस के तीन हिस्से किये और फ़रमाया : "एक हिस्सा मेरा दूसरा तेरा और तीसरा हिस्सा उस के लिये है जिस ने वोह रोटी ली थी ।" येह सुन कर वोह शख़्स बोला : "वोह रोटी मैं ने ही छुपाई थी ।"

हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : "येह तीनों हिस्से तुम ही ले लो ।" इतना कहने के बा'द आप عَلَیْہِ السَّلَام उस शख़्स को वहीं छोड़ कर आगे रवाना हो गए । वोह इतना ज़ियादा सोना मिलने पर बहुत ख़ुश हुवा, और उस ने वोह सारा सोना उठा लिया इतने में वहां दो और शख़्स पहुंचे जब उन्हों ने देखा कि इस वीराने में अकेला शख़्स है और इस के पास बहुत सा सोना है तो उन्हों ने इरादा किया कि हम इस शख़्स को क़त्ल कर देते हैं और इस से सोना छीन लेते हैं जब वोह उसे क़त्ल करने के लिये आगे बढ़े तो उस शख़्स ने कहा : "तुम मुझे क़त्ल न करो बल्कि हम इस सोने को बाहम तक़्सीम कर लेते हैं ।" इस पर वोह दोनों शख़्स क़त्ल से बाज़ रहे और इस बात पर राज़ी हो गए कि हम येह सोना बराबर बराबर तक़्सीम कर लेते हैं, फिर उस शख़्स ने कहा : "ऐसा करते हैं कि हम में से एक शख़्स जा कर क़रीबी बाज़ार से खाना ख़रीद लाए खाना खाने के बा'द हम येह सोना बाहम तक़्सीम कर लेंगे ।" चुनान्चे उन में से एक शख़्स बाज़ार गया, जब उस ने खाना ख़रीदा तो उस के दिल में येह शैत़ानी ख़याल आया कि मैं इस खाने में ज़ह्र मिला देता हूं जैसे ही वोह दोनों इसे खाएंगे तो मर जाएंगे और सारा सोना मैं ले लूंगा, चुनान्चे उस ने खाने में ज़ह्र मिला दिया और अपने साथियों की त़रफ़ चल दिया, वहां उन दोनों की निय्यतों में भी सोना देख कर फ़ुतूर आ गया और उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि जैसे ही हमारा तीसरा साथी खाना ले कर आएगा हम उसे क़त्ल कर देंगे और सोना हम दोनों आपस में बांट लेंगे, चुनान्चे जैसे ही वोह खाना ले कर उन के पास पहुंचा उन दोनों ने उसे क़त्ल कर दिया और बड़े मज़े से ज़ह्र मिला खाना खाने लगे, कुछ ही देर बा'द ज़ह्र

ने अपना असर दिखाया और वोह दोनों भी वहीं ढेर हो गए और सोना वैसे ही वहां पड़ा रहा।

कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दोबारा वहीं से गुज़रे तो देखा कि सोना वहीं मौजूद है और वहां तीन लाशें पड़ी हैं। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने येह देख कर लोगों से फ़रमाया : "येह दुन्या एक धोका है लिहाज़ा इस से बचो (या'नी जो इस के लालच में फंसा वोह हलाक हो गया)।"

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें दुन्या के लालच से बचा कर अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा इ़श्क़ अ़ता फ़रमा और माल के वबाल से बचा)

न मुझ को आज़मा दुन्या का मालो ज़र अ़ता कर के
अ़ता कर अपना ग़म और चश्मे गिरयां या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 84 : राहे इ़ल्म की मशक़्क़तों में सब्र पर इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन फ़क़ीह सफ़्फ़ार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "हम मशहूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सुफ़्यान अन्नसवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की ख़िदमते बा ब-र-कत में रहा करते थे, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इ़ल्मिय्यत का डंका मुल्क भर में बज रहा था, लोग तह़सीले इ़ल्म के लिये दूर दराज़ से सफ़र कर के आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अह़ादीस सुन कर लिख लेते, अल ग़रज़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दौर के मशहूर व मा'रूफ़ मुह़द्दिस और फ़क़ीह थे और आप के काशानए अ़त़्हर पर तु-लबा का हुजूम लगा रहता और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन इ़ल्मे दीन के मतवालों को अह़ादीसे मुबा-रका लिखवाते और उन्हें फ़िक़्ह के मसाइल से आगाह करते।"

एक मर्तबा जब हम आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मजलिसे इ़ल्म में ह़ाज़िर हुए तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़दीस लिखवाने के बजाए लोगों से फ़रमाया : "पहले आज तुम लोग तवज्जोह से मेरी बात सुनो इस के बा'द तुम्हें ह़दीस लिखवाऊंगा।" तमाम लोग बड़ी तवज्जोह से आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बात सुनने लगे, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ दीन का इ़ल्म सीखने के लिये दूर दराज़ से सफ़र की सुऊ़बतें और तकालीफ़ झेल कर आने वालो ! बेशक मैं जानता हूं कि तुम ख़ूब नाज़ो निअ़म में पले हो और अहले फ़ज़ीलत में से हो, तुम ने दीन की ख़ात़िर अपने अहलो इ़याल और वत़नों को छोड़ा (येह यक़ीनन तुम्हारी

क़ुरबानी है) लेकिन ख़बरदार ! तुम्हारे दिल में हरगिज़ येह ख़याल न आए कि तुम ने जो सफ़र की मशक़्क़तें और तकालीफ़ बरदाश्त की हैं और ह़ुसूले इ़ल्मे दीन के लिये अपने अहलो इ़याल से दूरी इख़्तियार की है और बहुत सी ख़्वाहिशों को क़ुरबान किया मगर इन तमाम मुश्किलात पर सब्र कर के तुम ने इ़ल्मे दीन सीखने का ह़क़ अदा नहीं किया क्यूं कि तुम्हारी तक्लीफ़ें दीन की राह में बहुत कम हैं। आओ मैं तुम्हें अपने ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी की कुछ तकालीफ़ सुनाता हूं ताकि तुम्हें भी तकालीफ़ पर सब्र करने की हिम्मत व रग़बत मिले।"

सुनो ! जब मुझे इ़ल्मे दीन सीखने का शौक़ हुवा तो उस वक़्त मैं आ़लमे शबाब में था, मेरी शदीद ख़्वाहिश थी कि मैं ह़दीस व फ़िक़्ह का इ़ल्म ह़ासिल करूं। चुनान्चे हम चन्द दोस्त ह़ुसूले इ़ल्मे दीन के लिये मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए और हम ने ऐसे असातिज़ा और मुह़द्दिसीन की तलाश शुरूअ़ कर दी जो अपने दौर के सब से ज़ियादा माहिरे ह़दीस और सब से बड़े फ़क़ीह और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस हों, बड़ी तलाश के बा'द हम उस ज़माने के सब से बड़े मुह़द्दिस के पास पहुंचे, वोह हमें रोज़ाना बहुत कम ता'दाद में अह़ादीस इम्ला करवाते (या'नी लिखवाते) वक़्त गुज़रता रहा यहां तक कि मुद्दत त़वील हो गई और हमारा साथ लाया हुवा नान व न-फ़क़ा भी ख़त्म होने लगा। जब सब खाना वग़ैरा ख़त्म हो गया तो हम ने अपने ज़ाइद कपड़े और चादरें वग़ैरा फ़रोख़्त कीं और कुछ खाना वग़ैरा ख़रीदा, फिर जब वोह भी ख़त्म हो गया तो फ़ाक़ों की नोबत आ गई। हम सब दोस्त एक मस्जिद में रहा करते थे, कोई हमारी मशक़्क़तों और तकालीफ़ से वाक़िफ़ न था और न ही हम ने कभी अपनी तंगदस्ती और ग़ुरबत की किसी से शिकायत की, हम सब्रो शुक्र से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते रहे, अब हमारे पास खाने को कुछ भी न रहा बिल आख़िर हम ने तीन दिन और तीन रातें भूक की ह़ालत में गुज़ार दीं। हमारी कमज़ोरी इतनी बढ़ गई कि हम ह़-र-कत भी न कर सकते थे। चौथे दिन भूक की वजह से हमारी ह़ालत बहुत ख़राब थी, हम ने सोचा कि अब हम ऐसी ह़ालत को पहुंच चुके हैं कि हमें सुवाल करना जाइज़ है क्यूं न हम लोगों से अपनी ह़ाजत बयान करें ताकि हमें कुछ खाने को मिल जाए लेकिन हमारी ख़ुद्दारी और इ़ज़्ज़ते नफ़्स ने हमें इस पर आमादा न होने दिया कि हम लोगों के सामने हाथ फैलाएं और अपनी परेशानी उन पर ज़ाहिर करें, हम में से हर शख़्स इस बात से इन्कार करने लगा कि वोह लोगों के सामने हाथ फैलाए लेकिन ह़ालत ऐसी थी कि हम सब क़रीबुल मर्ग थे और मजबूर हो गए थे। चुनान्चे येह त़ै पाया कि हम क़ुरआ़ डालते हैं जिस का नाम आ गया वोही सब के लिये लोगों से खाना त़लब करेगा ताकि हम अपनी भूक ख़त्म कर सकें जब सब के नाम लिख कर क़ुरआ़ डाला गया तो क़ुरआ़ मेरे नाम निकला, चुनान्चे मैं बा दिले न ख़्वास्ता लोगों से अपनी ह़ाजत बयान करने के लिये तय्यार हो गया लेकिन मेरी ग़ैरत इस बात की इजाज़त न दे रही थी, पस मैं इ़ज़्ज़ते नफ़्स की वजह से लोगों के पास मांगने के लिये न जा सका और मैं ने मस्जिद के एक कोने में जा कर नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी और बहुत त़वील दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के पाकीज़ा और बा ब-र-कत नामों के वसीले से दुआ़ की, कि वोह हम से इस परेशानी और तक्लीफ़ को दूर कर दे और हमें अपने इ़लावा किसी का मोह़ताज न

बनाए। अभी मैं दुआ़ से फ़ारिग़ भी न हुवा था कि मस्जिद में एक ह़सीनो जमील नौ जवान दाख़िल हुवा। उस ने निहायत उ़म्दा कपड़े पहने थे, उस के साथ एक ख़ादिम था जिस के हाथ में रुमाल था। उस नौ जवान ने मस्जिद में दाख़िल होते ही पूछा : "तुम में से ह़सन बिन सुफ़्यान (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) कौन है ?" येह सुन कर मैं ने सज्दे से सर उठाया और कहा : "मेरा नाम ह़सन बिन सुफ़्यान है, तुम्हें मुझ से क्या काम है ?" वोह नौ जवान बोला : "हमारे शहर के ह़ाकिम "तूलून" ने तुम्हें सलाम भेजा है और वोह इस बात पर मा'ज़िरत ख़्वाह है कि तुम ऐसी सख़्त तक्लीफ़ में हो और उसे मा'लूम ही नहीं कि तुम्हारी ह़ालत फ़ाक़ों तक पहुंच चुकी है, हमारा ह़ाकिम अपनी इस कोताही पर आप लोगों से मुआ़फ़ी का त़लबगार है, उस ने आप के लिये येह खाना भिजवाया है, कल वोह ख़ुद आप लोगों की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर मा'ज़िरत करेगा, बराए करम ! आप येह खाना क़बूल फ़रमा लें।" फिर उस नौ जवान ने खाना और कुछ थैलियां हमारे सामने रखीं जिन में हम सब अह़बाब के लिये एक एक सो दीनार थे, हम सब येह देख कर बहुत ह़ैरान हुए।

मैं ने उस नौ जवान से कहा : "येह सब क्या क़िस्सा है और तुम्हारे ह़ाकिम को हमारे बारे में किस ने ख़बर दी है ?" तो वोह नौ जवान कहने लगा : "मैं अपने ह़ाकिम का ख़ादिमे ख़ास हूं। आज सुब्ह़ जब मैं उस की मह़फ़िल में गया तो उस के पास और भी बहुत से ख़ुद्दाम और दरबारी मौजूद थे, कुछ देर बा'द हमारे ह़ाकिम "तूलून" ने कहा : "मैं कुछ देर ख़ल्वत चाहता हूं लिहाज़ा तुम सब यहां से चले जाओ चुनान्चे हम सब उसे तन्हा छोड़ कर अपने अपने घरों की त़रफ़ पलट गए, मैं घर पहुंचा और अभी मैं बैठा भी न था कि अमीर तूलून का क़ासिद मेरे पास आया, उस ने आते ही कहा : "तुम्हें अमीर तूलून बुला रहे हैं, जितना जल्दी हो सके उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाओ।" मैं बहुत ह़ैरान हुवा कि अभी तो वहां से आया हूं फिर ऐसी क्या बात हो गई कि मुझे त़लब किया गया है बहर ह़ाल मैं जल्दी से ह़ाज़िरे दरबार हुवा जब मैं उस के कमरे में पहुंचा तो देखा कि वोह अकेला ही कमरे में मौजूद है। उस ने अपना दायां हाथ अपने पहलू पर रखा हुवा है और शदीद तक्लीफ़ की ह़ालत में है। अमीर तूलून के पहलू में शदीद दर्द हो रहा था जैसे ही मैं उन के पास पहुंचा तो मुझ से कहने लगे : "क्या तुम ह़सन बिन सुफ़्यान और उन के रफ़ीक़ तु-लबा को जानते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं।"

तो कहने लगे : "फ़ुलां मह़ल्ला की फ़ुलां मस्जिद में जाओ, येह खाना और रक़म भी ले जाओ और ब सद एह़तिराम उन लोगों की बारगाह में पेश करना, वोह दीन के त़ालिबे इ़ल्म तीन दिन और तीन रातों से भूके हैं, और मेरी त़रफ़ से उन से मा'ज़िरत करना कि मैं उन की ह़ालत से ना वाक़िफ़ रहा ह़ालां कि वोह मेरे शहर में थे, मैं अपनी इस ह़-र-कत पर बहुत शरमिन्दा हूं, कल मैं ख़ुद उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मुआ़फ़ी मांगूंगा।" उस नौ जवान ने हमें बताया कि जब मैं ने अमीर तूलून से येह बातें सुनीं तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! आख़िर क्या वाक़िआ़ पेश आया है और आप को येह कमर की तक्लीफ़ यकदम कैसे हो गई ह़ालां कि अभी थोड़ी देर पहले आप बिल्कुल ठीक ठाक थे ?"

अमीर तूलून ने मुझे बताया कि "जब तुम लोग यहां से चले गए तो मैं आराम के लिये अपने बिस्तर पर लैटा, अभी मेरी आंखें बन्द ही हुई थीं कि मैं ने ख़्वाब में एक शह सुवार को देखा जो हवा में इस त़रह़ उड़ता आ रहा था जैसे कोई शह सुवार ज़मीन पर चलता है, उस के हाथ में एक नेज़ा था। मुझे उस की येह ह़ालत देख कर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, वोह उड़ता हुवा मेरे दरवाज़े पर आया फिर घोड़े से उतरा और नेज़े की नोक मेरे पहलू में रख दी और कहने लगा : "फ़ौरन उठो और ह़सन बिन सुफ़्यान और उन के रु-फ़क़ा को तलाश करो, जल्दी उठो, जल्दी करो, वोह दीन के त़ु-लबा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िर तीन दिन से भूके हैं और फ़ुलां मस्जिद में क़ियाम फ़रमा हैं।"

मैं ने उस पुर असरार शह सुवार से पूछा : "आप कौन हैं ?" उस ने कहा : "मैं जन्नत के फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता हूं, और तुम्हें उन दीन के त़ु-लबा की ह़ालत से ख़बरदार करने आया हूं, फ़ौरन उन की ख़िदमत का इन्तिज़ाम करो।" इतना कहने के बा'द वोह सुवार मेरी नज़रों से ओझल हो गया और मेरी आंख खुल गई बस उस वक़्त से मेरे पहलू में शदीद दर्द हो रहा है। तुम जल्दी करो और येह सारा माल और खाना वग़ैरा ले कर उन दीन के त़ु-लबा की ख़िदमत में पेश करो ताकि मुझ से येह तक्लीफ़ दूर हो जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस नौ जवान से येह बातें सुन कर हम सब बड़े ह़ैरान हुए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और उस रह़ीम व करीम मालिक की अ़त़ा पर सर ब सुजूद हो गए।"

फिर हम सब दोस्तों ने येह फ़ैसला किया कि अभी रात ही को हमें इस जगह से कूच कर जाना चाहिये वरना हमारा वाक़िआ़ लोगों में मशहूर हो जाएगा और ह़ाकिमे शहर हमारी ह़ालत से वाक़िफ़ हो कर हमारा अदब व एह़तिराम करेगा, इस त़रह़ लोगों में हमारी नेक नामी हो जाएगी, हो सकता है फिर हम रियाकारी और तकब्बुर की आफ़त में मुब्तला हो जाएं। हमें लोगों से इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई नहीं चाहिये, हमें तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी चाहिये। हम अपना अ़मल सिर्फ़ अपने मालिके ह़क़ीक़ी के लिये ही करना चाहते हैं, लोगों के लिये हम अ़मल करते ही नहीं और न ही हमें येह बात पसन्द है कि हमारे आ'माल से लोग वाक़िफ़ हों। चुनान्चे हम सब दोस्तों ने रातों रात वहां से सफ़र किया, उस अ़लाक़े को ख़ैरबाद कहा, और हम मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में चले गए। **इ़ल्मे दीन की राह में ऐसी मशक़्क़तों और तकालीफ़ पर सब्र शुक्र करने की वजह से हम में से हर एक अपने दौर का बेहतरीन मुह़द्दिस और माहिर फ़क़ीह बना और इ़ल्मे दीन की ब-र-कत से हमें बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में आ'ला मक़ाम अ़त़ा किया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٥ حَمْدًا كَثِيْرًا।**

फिर जब सुब्ह़ अमीर तूलून उस मह़ल्ले में आया और उसे मा'लूम हुवा कि हम यहां से जा चुके हैं तो उस ने उस तमाम मह़ल्ले को ख़रीदा और वहां एक बहुत बड़ा **जामिआ़** बनवा कर उसे ऐसे त़ु-लबा के लिये वक़्फ़ कर दिया जो वहां दीन का इ़ल्म सीखें, फिर उस ने तमाम त़ु-लबा की ख़ूराक और दीगर ज़रूरियात अपने ज़िम्मे ले लीं और सब की कफ़ालत ख़ुद ही करने लगा ताकि आइन्दा किसी त़ालिबे इ़ल्म

को कभी ऐसी परेशानी न हो जैसी हमें हुई थी, हमें जो सआ़दतें मिलीं वोह सब इ़ल्मे दीन की ब-र-कत और हमारे यक़ीने कामिल का नतीजा थीं। हमें अपने रब्बे करीम पर मुकम्मल भरोसा है वोह अपने बन्दों को बे यारो मददगार नहीं छोड़ता, वोह हम सब का वाली व मालिक है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम तु-लबा को ख़ुद्दारी और यक़ीने कामिल की दौलत नसीब फ़रमाए और इन की ख़िदमत करने वालों को दारैन की सआ़दतें अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 85 : हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के पन्दो नसाएह़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन सीलम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने ह़वारियों के पास इस ह़ालत में तशरीफ़ ले गए कि आप عَلَیْہِ السَّلَام के जिस्मे अन्वर पर ऊन का जुब्बा था और एक आ़म सी शलवार पहनी हुई थी, नंगे पाउं थे और सर पर भी कोई कपड़ा वग़ैरा नहीं था, आंखों से आंसू रवां थे, भूक की वजह से आप عَلَیْہِ السَّلَام का रंग मु-तग़य्यर हो गया था और प्यास की शिद्दत से होंट बिल्कुल ख़ुश्क हो चुके थे।

आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों को सलाम किया, और फ़रमाया : "ऐ बनी इसराईल ! अगर मैं चाहूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से दुन्या तमाम तर ने'मतों के साथ मेरे क़दमों में आ जाए लेकिन मैं इस बात को पसन्द नहीं करता। ऐ बनी इसराईल ! तुम दुन्या को हमेशा ह़क़ीर जानो, इसे कोई वुक़्अ़त न दो येह ख़ुद तुम्हारे लिये नर्म हो जाएगी, तुम दुन्या की मज़म्मत करो तुम्हारे लिये आख़िरत मुज़य्यन हो जाएगी, ऐसा हरगिज़ न करना कि तुम आख़िरत को पसे पुश्त डाल दो और दुन्या की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो, बेशक दुन्या कोई क़ाबिले एह़तिराम शै नहीं कि इस की ता'ज़ीम की जाए। दुन्या तो तुम्हें हर रोज़ किसी न किसी नई आफ़त या नुक़्सान की त़रफ़ बुलाती है लिहाज़ा इस के धोके से बचो।"

फिर फ़रमाया : "ऐ लोगो ! क्या तुम जानते हो कि मेरा घर कहां है ?" लोगों ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَیْہِ السَّلَام ! आप का घर कहां है ?" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "मसाजिद मेरी क़ियाम गाह हैं, मेरी ख़ुश्बू और इ़त्रियात पानी है, मेरा भूका रहना ही मेरी शिकम सैरी है, मेरे पाउं मेरी सुवारी हैं, रात को चमकता हुवा चांद मेरा चराग़ है, सख़्त सर्दियों की रातों में नमाज़ पढ़ना मेरा मह़बूब तरीन अ़मल है, मेरा खाना ख़ुश्क पत्ते वग़ैरा हैं, ज़मीन की घास और नबातात मेरे लिये फलों की मानिन्द हैं, उन्ही से जानवरों को ख़ूराक मिलती है, वोही सब्ज़ी और नबातात मैं खा लेता हूं, मेरा लिबास ऊन है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना मेरा शिआ़र है, और मसाकीन व फु-क़रा मेरे मह़बूब तरीन रु-फ़क़ा हैं।

मैं सुब्ह़ इस ह़ालत में करता हूं कि मेरे पास दुन्यावी अश्या में से कोई शै नहीं होती और ऐसी ही ह़ालत में शाम करता हूं कि मेरे पास कोई दुन्यावी शै नहीं होती लेकिन फिर भी मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि फ़ुलां शख़्स इतना मालदार है। मैं अपनी इस ह़ालत में अपने आप को बहुत ख़ुश क़िस्मत और बहुत ज़ियादा ग़नी समझता हूं (या'नी मैं इस ह़ाल में भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी हूं)।"

आप عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में येह भी बयान किया जाता है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام दुन्या से बहुत ज़ियादा बे रग़बत थे, कभी भी दुन्यवी ने'मतों को ख़ातिर में न लाते, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने एक ही ऊन के जुब्बे में अपनी ज़िन्दगी के दस साल गुज़ार दिये, जब वोह जुब्बा कहीं से फट जाता तो उसे रस्सी से बांध लेते या पैवन्द लगा लेते, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने चार साल तक अपने मुबारक बालों में तेल न लगाया, फिर चार साल बा'द चर्बी की चिक्नाई बालों में लगाई और चर्बी को तेल की जगह इस्ति'माल फ़रमाया।

आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसे की तल्क़ीन करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बनी इसराईल ! मसाजिद को लाज़िम पकड़ लो, और इन्ही में पड़े रहो, तुम्हारे अस्ली घर तो तुम्हारी क़ब्रें हैं, दुन्या में तो तुम एक मेहमान की ह़ैसियत से हो, अ़न्क़रीब यहां से अपने अस्ली घर (या'नी क़ब्र) की त़रफ़ चले जाओगे। क्या तुम देखते नहीं कि परिन्दे आस्मान की त़रफ़ परवाज़ करते हैं, न तो वोह खेती उगाते हैं, न ही फ़स्ल काटते हैं लेकिन फिर भी तमाम जहानों का परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उन्हें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है। ऐ लोगो ! जव की रोटी खा कर बसरे अवक़ात करो, और ज़मीन के नबातात और सब्ज़ी वग़ैरा खा कर पेट भर लिया करो। अगर तुम इतनी ही दुन्या पर क़नाअ़त कर लो तब भी तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का शुक्र अदा नहीं कर सकते और अगर तुम कसीर ने'मतों के त़लबगार बनोगे और इन से फ़ाएदा उठाओगे तो फिर किस त़रह़ इन ने'मतों का शुक्र अदा करोगे।"

एक मर्तबा आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों से फ़रमाया : "अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें अपना दोस्त और रफ़ीक़ रखूं तो तुम दुन्यादारों से बिल्कुल किनारा कशी इख़्तियार कर लो, मालदारों से बिल्कुल जुदा रहो, अगर तुम ने ऐसा न किया तो फिर मैं तुम्हें अपने साथ न रखूंगा और तुम्हारा रफ़ीक़ भी न बनूंगा। बेशक तुम्हें अपने मक़्सद में काम्याबी उसी वक़्त होगी जब तुम अपनी ख़्वाहिशात को तर्क कर दोगे, तुम उस वक़्त तक अपनी पसन्दीदा चीज़ को ह़ासिल नहीं कर सकते जब तक तुम ना पसन्दीदा चीज़ों पर सब्र न करो, और ख़बरदार ! बद निगाही से हमेशा बचते रहना क्यूं कि बद निगाही की वजह से दिल में शहवत उभरती है।

ख़ुश ख़बरी है उस अ़ज़ीम शख़्स के लिये जिस की नज़र अपने दिल पर होती है, वोह सोच समझ कर नज़र उठाता है और अपने दिल को नज़र के ताबेअ़ नहीं करता बल्कि नज़र को दिल के ताबेअ़ रखता है। अफ़्सोस है उस शख़्स पर जो दुन्या के लिये इतनी मशक़्क़तें बरदाश्त करता है ह़ालां कि येह बे वफ़ा दुन्या उसे छोड़ कर चली जाएगी और मौत उसे दुन्या से जुदा कर देगी, कितना बे वुक़ूफ़ है वोह शख़्स जो दुन्या की फ़िक्र में सरगर्दां है और दुन्या उसे धोका देती जा रही है वोह दुन्या पर ए'तिमाद करता है और

दुन्या उसे धोका देती है और उस से बे वफ़ाई करती है।

अफ़्सोस है उन लोगों पर जो दुन्या के धोके में फंसे हुए हैं। अ़न्क़रीब उन्हें वोह चीज़ (या'नी मौत) पहुंचने वाली है जिसे वोह ना पसन्द करते हैं और जिस दिन का उन से वा'दा किया गया है वोह दिन (या'नी क़ियामत का दिन) उन से बहुत क़रीब है। जिस चीज़ को वोह पसन्द करते हैं और जो मह़बूब अश्या उन के पास हैं अ़न्क़रीब वोह इन तमाम चीज़ों को छोड़ कर इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो जाएंगे।

ऐ लोगो ! तुम फ़ुज़ूल गोई से बचते रहो, कभी भी ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा अपनी ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकालो, वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे, बेशक दिल नर्म होते हैं लेकिन फ़ुज़ूल गोई इन्हें सख़्त कर देती है।

और जिस शख़्स का दिल सख़्त हो जाए वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मह़रूम हो जाता है (या'नी अगर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के उम्मीद वार हो तो अपने दिलों को सख़्ती से बचाओ)।"

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें क़सावते क़ल्बी की बीमारी से बचा, और हमारे दिलों को अपनी याद से मा'मूर रख, फ़ुज़ूल गोई से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और हर वक़्त अपना ज़िक्र करने वाली ज़बान अ़ता फ़रमा।)

मैं बेकार बातों से बच कर हमेशा
करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*

ह़िकायत नम्बर 86 : शायद इसी में भलाई हो !

ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश बिन मसरूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقُدُّوْس से रिवायत है : "एक नेक शख़्स किसी जंगल में रहा करता था उस मर्दे सालेह़ के पास एक मुर्ग़, एक गधा और एक कुत्ता था, मुर्ग़ सुब्ह़ सवेरे उसे नमाज़ के लिये जगाता, गधे पर वोह पानी और दीगर सामान लाद कर लाता और कुत्ता उस के मालो मताअ़ और दीगर चीज़ों की रखवाली करता।

एक दिन ऐसा हुवा कि उस के मुर्ग़ को एक लोमड़ी खा गई जब उस नेक शख़्स को मा'लूम हुवा तो उस ने कहा : मेरे लिये इस में बेहतरी होगी (या'नी वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहा और सब्र का दामन न छोड़ा) लेकिन घर वाले इस से बहुत परेशान हुए कि हमारा नुक़्सान हो गया। चन्द दिन के बा'द एक भेड़िया आया और उस ने उन के गधे को चीर फाड़ डाला जब घर वालों को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह बहुत ग़मगीन हुए और आहो ज़ारी करने लगे कि हमारा बहुत बड़ा नुक़्सान हो गया।

लेकिन उस नेक शख़्स ने कोई बे सब्री वाले जुम्ले ज़बान से न निकाले बल्कि कहा कि इस गधे के मर जाने ही में हमारी आ़फ़िय्यत होगी, फिर कुछ अ़र्से के बा'द कुत्ते को भी बीमारी ने आ लिया और वोह भी मर गया, लेकिन उस साबिरो शाकिर शख़्स ने फिर भी बे सब्री और ना शुक्री का मुज़ा-हरा न किया बल्कि वोही अल्फ़ाज़ दोहराए कि हमारे लिये इस के हलाक हो जाने में ही आ़फ़िय्यत होगी।

वक़्त गुज़रता रहा कुछ दिनों के बा'द दुश्मनों ने रात को उस जंगल की आबादी पर ह़म्ला किया और उन तमाम लोगों को पकड़ कर ले गए जो उस जंगल में रहते थे उन सब की क़ैद का सबब येह बना कि उन के पास जानवर वग़ैरा मौजूद थे जिन की आवाज़ सुन कर दुश्मन मु-तवज्जेह हो गया और दुश्मनों ने जानवरों की आवाज़ से उन की रिहाइश की जगह मा'लूम कर ली फिर उन सब को उन के माल व अस्बाब समेत क़ैद कर के ले गए।

लेकिन वोह नेक शख़्स और उस का साज़ो सामान सब बिल्कुल मह़फ़ूज़ रहा क्यूं कि उस के पास कोई जानवर ही न था जिस की आवाज़ सुन कर दुश्मन उस के घर की त़रफ़ आते। अब उस नेक मर्द का यक़ीन इस बात पर मज़ीद पुख़्ता हो गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर काम में कोई न कोई ह़िक्मत ज़रूर होती है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(मीठे इस्लामी भाइयो! उस मर्दे कामिल का इस बात पर पुख़्ता यक़ीन था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब भी हमें किसी मुसीबत में मुब्तला करता है उस में हमारा ही फ़ाएदा और हमारी ही भलाई पेशे नज़र होती है अगर्चे ब ज़ाहिर नज़र न भी आए)

ह़िकायत नम्बर 87 :

जुस्त-जू बढ़ती गई

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़बैद ज़ाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "मेरे पास एक लौंडी थी जिसे मैं ने बेच दिया, बा'द में ख़याल आया कि उस लौंडी को नहीं बेचना चाहिये था वोह मेरे पास ही रहती तो बेहतर था, उसे दोबारा ह़ासिल करने की मुझे बहुत ज़ियादा जुस्त-जू हुई लिहाज़ा मैं लौंडी के नए मालिक के पास पहुंचा और उस से कहा : "तुम येह लौंडी मुझे वापस दे दो और अदा कर्दा क़ीमत के इ़लावा बीस दीनार मज़ीद ले लो, वोह इस बात पर राज़ी न हुवा चुनान्चे मैं वहां से वापस आ गया, लेकिन उस लौंडी को वापस लेने की ख़्वाहिश मज़ीद बढ़ने लगी मैं ने अपने आप को बहुत समझाया मगर बे सूद, सारी रात इसी परेशानी में जागते हुए गुज़ार दी, लेकिन मस्अला फिर भी ह़ल न हुवा,

उस लौंडी का नया मालिक लौंडी को ले कर मदाइन चला गया, उसे येह ख़ौफ़ था कि कहीं मैं उस से दुश्मनी न कर लूं और ज़बर दस्ती उस से लौंडी न छीन लूं, जब मुझे येह इत्त़िलाअ़ मिली तो मैं मज़ीद बे क़रार हो गया, बिल आख़िर मैं ने उसी लौंडी का नाम अपने सेह़न की दीवार पर लिख दिया, जब

भी कोई मुसाफ़िर आता और वोह उस नाम को देख कर उस के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल करता तो मैं आस्मान की त़रफ़ अपनी हथेलियां उठाता और कहता : "ऐ मेरे सरदार ! मेरा येह मुआ़-मला है।" दो दिन इसी त़रह़ गुज़र गए तीसरी सुब्ह़ किसी ने मेरा दरवाज़ा खट-खटाया मैं ने पूछा : "कौन है ?" कहा : "मैं तुम्हारी साबिक़ा लौंडी का मालिक हूं मैं ने ही तुम से येह लौंडी ख़रीदी थी, अब मैं ब ख़ुशी येह लौंडी तुम्हें देता हूं, येह लो अपनी लौंडी संभालो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस में ब-र-कत अ़त़ा फ़रमाए, मैं न तो तुम से इस की क़ीमत लूंगा और न ही इस पर किसी क़िस्म का नफ़्अ़, मैं येह लौंडी तुम्हें तोह़फ़े में पेश करता हूं।" मैं ने कहा : "आख़िर तुम येह सब कुछ क्यूं कर रहे हो ?" उस ने कहा : "कल रात मुझे ख़्वाब में किसी कहने वाले ने कहा : "येह लौंडी मुह़म्मद बिन अ़ली इब्ने उ़बैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को वापस कर दो।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 88 : क़स्साब की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल का एक क़स्साब अपने पड़ोसी की लौंडी पर आ़शिक़ हो गया। इत्तिफ़ाक़ से एक दिन लौंडी को उस के मालिक ने दूसरे गाउं किसी काम से भेजा, क़स्साब को मौक़अ़ मिल गया और वोह भी उस लौंडी के पीछे हो लिया, जब लौंडी जंगल से गुज़री तो अचानक क़स्साब ने सामने आ कर उसे पकड़ लिया और उसे गुनाह पर आमादा करने लगा। जब उस लौंडी ने देखा कि इस क़स्साब की निय्यत ख़राब है तो उस ने कहा :

"ऐ नौ जवान ! तू इस गुनाह में न पड़ ! ह़क़ीक़त येह है कि जितना तू मुझ से मह़ब्बत करता है उस से कहीं ज़ियादा मैं तेरी मह़ब्बत में गरिफ्तार हूं लेकिन मुझे अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ इस गुनाह के इर्तिकाब से रोक रहा है।"

उस नेक सीरत और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाली लौंडी की ज़बान से निकले हुए येह अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर उस क़स्साब के दिल में पैवस्त हो गए और उस ने कहा : "जब तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस क़दर डर रही है तो मैं अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से क्यूं न डरूं, मैं भी तो उसी मालिक عَزَّوَجَلَّ का बन्दा हूं, जा ! तू बे ख़ौफ़ हो कर चली जा।" इतना कहने के बा'द उस क़स्साब ने अपने गुनाहों से सच्ची तौबा की और वापस पलट गया।

रास्ते में उसे शदीद प्यास मह़सूस हुई लेकिन उस वीरान जंगल में कहीं पानी का दूर दूर तक कोई नामो निशान न था क़रीब था कि गर्मी और प्यास की शिद्दत से उस का दम निकल जाता, इतने में

उसे उस ज़माने के नबी عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का एक क़ासिद मिला, जब उस ने क़स्साब की येह ह़ालत देखी तो पूछा : "तुझे क्या परेशानी है ?" कहा : "मुझे सख़्त प्यास लगी है।" येह सुन कर क़ासिद ने कहा : "आओ ! हम दोनों मिल कर दुआ़ करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर अपनी रह़मत के बादल भेजे और हमें सैराब करे यहां तक कि हम अपनी बस्ती में दाख़िल हो जाएं।" क़स्साब ने जब येह सुना तो कहने लगा : "मेरे पास तो कोई ऐसा नेक अ़मल नहीं जिस का वसीला दे कर दुआ़ करूं, आप नेक शख़्स हैं आप ही दुआ़ फ़रमाएं।"

उस क़ासिद ने कहा : मैं दुआ़ करता हूं, तुम आमीन कहना, फिर क़ासिद ने दुआ़ करना शुरूअ़ की और वोह क़स्साब आमीन कहता रहा, थोड़ी ही देर में बादल के एक टुकड़े ने उन दोनों को ढांप लिया और वोह बादल का टुकड़ा उन पर साया फ़िगन हो कर उन के साथ साथ चलता रहा।

जब वोह दोनों बस्ती में पहुंचे तो क़स्साब अपने घर की जानिब रवाना हुवा और वोह क़ासिद अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ जाने लगा, बादल भी क़स्साब के साथ साथ रहा जब उस क़ासिद ने येह माजरा देखा तो क़स्साब को बुलाया और कहने लगा : "तुम ने तो कहा था कि मेरे पास कोई नेकी नहीं, और तुम ने दुआ़ करने से इन्कार कर दिया था, फिर मैं ने दुआ़ की और तुम आमीन कहते रहे, लेकिन अब ह़ाल येह है कि बादल तुम्हारे साथ हो लिया है और तुम्हारे सर पर साया फ़िगन है, सच सच बताओ ! तुम ने ऐसी कौन सी अ़ज़ीम नेकी की है जिस की वजह से तुम पर येह ख़ास करम हुवा ?" येह सुन कर क़स्साब ने अपना सारा वाक़िआ़ सुनाया। इस पर उस क़ासिद ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गुनाहों से तौबा करने वालों का जो मक़ाम व मर्तबा है वोह दूसरे लोगों का नहीं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी अपने गुनाहों से सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हमें अपना ख़ौफ़ अ़त़ा फ़रमा, अपने ख़ौफ़ से रोने वाली आंखें अ़त़ा फ़रमा, गुनाहों के मरज़ से नजात अ़त़ा फ़रमा कर बीमारे मदीना बना दे, दुन्या के ग़मों से बचा कर ग़मे आख़िरत नसीब फ़रमा, हर वक़्त तेरे ख़ौफ़ और तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़म में रोने वाली आंखें अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَسَلَّم)

मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही عَزَّوَجَلَّ !
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा

रोती हुई वोह आंख मुझे मेरे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ दे
बहती रहे हर वक़्त जो सरकार के ग़म में

नेक कब ऐ मेरे अल्लाह बनूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ
कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ !

हि़कायत नम्बर 89 : शहवत परस्त बादशाह और लालची औ़रत पर क़हरे इलाही عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल में एक बहुत इ़बादत गुज़ार लकड़हारा था, उस की बीवी बनी इसराईल की औ़रतों में सब से ज़ियादा ह़सीनो जमील थी, दोनों मियां बीवी हंसी ख़ुशी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, जब उस मुल्क के बादशाह को लकड़हारे की बीवी के हु़स्नो जमाल की ख़बर मिली तो उस के दिल में शैत़ानी ख़याल आया और उस ने तहय्या कर लिया कि मैं किसी त़रह़ उस औ़रत को ज़रूर ह़ासिल करूंगा, चुनान्चे उस ज़ालिम और शहवत परस्त बादशाह ने एक बुढ़िया को उस लकड़हारे की बीवी के पास भेजा ताकि वोह उसे वरग़लाए और लालच दे कर इस बात पर आमादा करे कि वोह लकड़हारे को छोड़ कर शाही मह़ल में मलिका बन कर ज़िन्दगी गुज़ारे।

चुनान्चे वोह मक्कार बुढ़िया लकड़हारे की बीवी के पास गई और उस से कहा : "तू कितनी अ़जीब औ़रत है कि इतने हु़स्नो जमाल के बा वुजूद ऐसे शख़्स के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रही है जो निहायत ही मुफ़्लिस और ग़रीब है जो तुझे आसाइश व आराम फ़राहम नहीं कर सकता, अगर तू चाहे तो बादशाह की मलिका बन सकती है। बादशाह ने पैग़ाम भेजा है कि अगर तू लकड़हारे को छोड़ देगी तो मैं तुझे इस झोंपड़ी से निकाल कर अपने मह़ल की ज़ीनत बनाऊंगा, तुझे हीरे जवाहिरात से आरास्ता व पैरास्ता कर दूंगा, तेरे लिये रेशम और उ़म्दा कपड़ों का लिबास होगा, हर वक़्त तेरी ख़िदमत के लिये कनीज़ें और ख़ुद्दाम हाथ बांधे खड़े होंगे और तुझे आ'ला द-रजे के बिस्तर और तमाम सहूलतें मिल जाएंगी बस तू इस ग़रीब लकड़हारे को छोड़ कर मेरे पास चली आ।" जब उस औ़रत ने येह बातें सुनीं तो लालच में आ गई और उस की नज़रों में बुलन्दो बाला मह़ल्लात और उस की आसाइशें घूमने लगीं। चुनान्चे उस ने लकड़हारे से बे रुख़ी इख़्तियार कर ली और हर वक़्त उस से नाराज़ रहने लगी, जब उस नेक शख़्स ने मह़सूस किया कि येह मुझ से बे रुख़ी इख़्तियार कर रही है तो उस ने पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तुम ने येह रवय्या क्यूं इख़्तियार कर लिया है ?" येह सुन कर उस लालची औ़रत ने मज़ीद सख़्त रविय्या इख़्तियार कर लिया, बिल आख़िर लकड़हारे ने मजबूरन उस ह़सीनो जमील बे वफ़ा लालची औ़रत को त़लाक़ दे दी, वोह ख़ुशी ख़ुशी बादशाह के पास पहुंची।

बादशाह उसे देख कर फूला न समाया, उस ने फ़ौरन उस से शादी कर ली, बड़ी धूम धाम से जश्न मनाया गया फिर जब बादशाह अपनी नई दुल्हन के पास हु़जरए अ़रूसी में पहुंचा और पर्दा हटाया तो यकदम बादशाह भी अन्धा हो गया और वोह औ़रत भी अन्धी हो गई, न तो वोह औ़रत उस बादशाह को देख सकी न ही बादशाह उस लालची व बे वफ़ा औ़रत के हु़स्नो जमाल का जल्वा देख सका। फिर बादशाह ने अपनी दुल्हन की त़रफ़ हाथ बढ़ाया ताकि उसे छू सके लेकिन उस का हाथ ख़ुश्क हो गया फिर उस औ़रत ने बादशाह को छूना चाहा तो उस के हाथ भी ख़ुश्क हो गए, जब उन्हों ने एक दूसरे से बात करना चाही तो दोनों ही बहरे और गूंगे हो गए और उन की शहवत बिल्कुल ख़त्म हो गई, अब वोह दोनों बहुत परेशान हुए। सुब्ह़ जब ख़ुद्दाम ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए, तो देखा कि बादशाह और उस की नई मलिका दोनों ही गूंगे, बहरे और

अन्धे हो चुके हैं और उन के हाथ भी बिलकुल बेकार हो चुके हैं।

जब येह ख़बर उस दौर के नबी عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंची तो उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन दोनों के बारे में अ़र्ज़ की तो बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से इर्शाद हुवा : "मैं हरगिज़ इन दोनों को मुआ़फ़ नहीं करूंगा, क्या इन्हों ने येह गुमान कर लिया कि जो ह़-र-कत इन्हों ने लकड़हारे के साथ की मैं उस से बे ख़बर हूं।"

(ऐ हमारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रख और हमें दुन्या और औ़रत के फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रख, हमारी ख़त़ाओं को अपने फ़ज़्लो करम से मुआ़फ़ फ़रमा, दुन्या की मह़ब्बत से बचा कर अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़श्क़े ह़क़ीक़ी की दौलत से मालामाल फ़रमा।)

दिल इ़श्क़े मुह़म्मद में तड़पता रहे हर दम *सीने को मदीना मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बना दे*

(आमीन)

ह़िकायत नम्बर 90 :

शैत़ान का जाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ियाद बिन अन्अ़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मह़फ़िल में तशरीफ़ फ़रमा थे कि इब्लीसे मल्ऊ़न आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया, उस ने अपने सर पर मुख़्तलिफ़ रंगों वाली बड़ी सी टोपी पहन रखी थी, इब्लीस आप (عَلَيْهِ السَّلَام) के क़रीब आया और रंगीन टोपी उतार कर आप عَلَيْهِ السَّلَام के सामने रख दी, फिर कहने लगा : ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! आप पर सलामती हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से पूछा : "तू कौन है ?" उस ने कहा : "मैं इब्लीस हूं।" आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह सुन कर फ़रमाया : "तू इब्लीस है, अल्लाह तआ़ला तुझे सलामती न दे बल्कि बरबाद करे, तू मेरे पास क्यूं आया है ?" उस लई़न ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप (عَلَيْهِ السَّلَام) का मक़ाम बहुत बुलन्दो बरतर है, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा पैग़म्बर हैं, मैं इसी लिये आप की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करने आया हूं।"

आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पूछा : "येह मुख़्तलिफ़ रंगों वाली टोपी क्या है और तूने येह क्यूं पहन रखी है ?" इब्लीस ने जवाब दिया : "येह मेरा जाल है, मैं इस के ज़रीए़ लोगों के दिलों को शिकार करता हूं, उन्हें अपने जाल में फंसाता हूं और उन पर ह़ावी हो जाता हूं।"

येह सुन कर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "किस सबब से तू नेक लोगों पर ह़ावी हो जाता है ?" शैत़ान ने कहा : "जब इन्सान (अपने आ'माल पर) मग़रूर हो जाए, अपनी नेकियों को बहुत ज़ियादा शुमार करने लगे और गुनाहों को भूल जाए तो मैं उस पर ग़ालिब आ जाता हूं और उसे मज़बूत़ी से जकड़ लेता हूं।"

ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मैं आप को तीन बातों से ख़बरदार करता हूं,

(1)...... कभी भी किसी ऐसी अ़ौरत के साथ तन्हाई में न रहना जो अज्नबिया (या'नी ग़ैर मह़रम) हो क्यूं कि जब इन्सान किसी ग़ैर मह़रम अ़ौरत के साथ होता है तो उन दोनों के दरमियान तीसरा मैं होता हूं और उन्हें गुनाह में मुब्तला कर देता हूं।

(2)...... जब कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई वा'दा करो तो उसे ज़रूर पूरा करो, और उसे पूरा करने में जल्दी करो क्यूं कि जब भी कोई शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से वा'दा करता है तो मैं और मेरे साथी उस को वा'दा पूरा करने से रोकते हैं।

(3)...... जब भी किसी पर स-दक़ा करने का इरादा करो तो फ़ौरन उस पर अ़मल करो क्यूं कि जब भी कोई शख़्स ऐसा नेक इरादा करता है तो मैं और मेरे साथी उसे वरग़लाते हैं और उसे इस नेक अ़मल से रोकते हैं। इतना कहने के बा'द शैत़ान मरदूद आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास से रुख़्सत हो गया वोह येह कहता जा रहा था : "हाए अफ़्सोस ! मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) मेरे तीनों वारों से वाक़िफ़ हो गए, इन के ज़रीए ही तो मैं लोगों को बहकाता हूं, अब मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) तो लोगों को इन बातों से आगाह कर देंगे।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ान के ह़म्लों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 91 : अ़ौरत का फ़ित्ना

ह़ज़रते अ़ब्दुल मुन्इ़म बिन इदरीस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "बनी इसराईल में एक इ़बादत गुज़ार शख़्स था जो अपने ज़माने का सब से बड़ा इ़बादत गुज़ार शुमार किया जाता था, वोह बस्ती से अलग थलग एक मकान में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करता, उसी बस्ती में तीन भाई अपनी एक जवान कंवारी बहन के साथ रहा करते थे, अचानक उन के मुल्क पर दुश्मन ह़म्ला आवर हो गया, उन तीनों बहादुर नौ जवानों ने जिहाद पर जाने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया, लेकिन उन्हें इस बात की फ़िक्र लाह़िक़ हुई कि हम अपनी जवान

बहन किस के सिपुर्द कर के जाएं उन्हों ने बहुत ग़ौरो फ़िक्र किया लेकिन कोई ऐसा क़ाबिले ए'तिमाद शख़्स नज़र न आया जिस के पास वोह अपनी जवान कंवारी बहन को छोड़ कर जाते, फिर उन्हें उस आ़बिद का ख़याल आया और वोह सब इस बात पर राज़ी हो गए कि येह आ़बिद क़ाबिले ए'तिमाद है, हम अपनी बहन को इस की निगरानी में छोड़ कर चले जाते हैं।

चुनान्चे वोह तीनों उस आ़बिद के पास आए और उसे सूरते ह़ाल से आगाह किया। आ़बिद ने साफ़ इन्कार करते हुए कहा : "मैं येह ज़िम्मादारी हरगिज़ क़बूल नहीं करूंगा, लेकिन वोह तीनों भाई उस की मिन्नत समाजत करते रहे बिल आख़िर वोह आ़बिद इस बात पर राज़ी हो गया कि मैं तुम्हारी बहन को अपने साथ नहीं रखूंगा बल्कि मेरे मकान के सामने जो ख़ाली मकान है तुम अपनी बहन को उस में छोड़ जाओ, वोह तीनों भाई इस पर राज़ी हो गए और अपनी बहन को उस आ़बिद के मकान के सामने वाले मकान में छोड़ कर जिहाद पर रवाना हो गए।

वोह आ़बिद रोज़ाना अपने इ़बादत ख़ाने से नीचे उतरता और दरवाज़े पर खाना रख देता फिर अपने इ़बादत ख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर के ऊपर अपने इ़बादत ख़ाने में चला जाता फिर लड़की को आवाज़ देता कि खाना ले जाओ, लड़की वहां से खाना ले कर चली जाती।

इस त़रह़ काफ़ी अ़र्से तक आ़बिद और उस लड़की का आमना सामना न हुवा। वक़्त गुज़रता रहा, एक मर्तबा शैत़ान मरदूद ने उस आ़बिद के दिल में येह वस्वसा डाला कि वोह बेचारी अकेली लड़की है, रोज़ाना यहां खाना लेने आती है, अगर किसी दिन उस पर किसी मर्द की नज़र पड़ गई और वोह इस के इ़श्क़ में गरिफ़्तार हो गया तो येह कितनी बुरी बात है, कम अज़ कम इतना तो कर कि दिन के वक़्त तू उस लड़की के दरवाज़े पर खाना रख आया कर, ताकि उसे बाहर न निकलना पड़े, इस त़रह़ तुझे ज़ियादा अज्र भी मिलेगा और वोह लड़की ग़ैर मर्दों के शर से भी मह़फ़ूज़ रहेगी, उस आ़बिद के दिल में येह वस्वसा घर कर गया और वोह शैत़ान के जाल में फंस गया।

चुनान्चे वोह रोज़ाना दिन में लड़की के मकान पर जाता और खाना दे कर वापस आ जाता लेकिन उस से गुफ़्त-गू न करता फिर कुछ अ़र्से बा'द शैत़ान ने उसे तरग़ीब दिलाई कि तेरे लिये नेकी कमाने का कितना अ़ज़ीम मौक़अ़ है कि तू खाना उस के घर में पहुंचा दिया कर, ताकि उस लड़की को परेशानी न हो, इस त़रह़ तुझे उस की ख़िदमत का सवाब ज़ियादा मिलेगा, चुनान्चे उस आ़बिद ने अब घर में जा कर खाना देना शुरूअ़ कर दिया कुछ अ़र्से इसी त़रह़ मुआ़-मला चलता रहा, शैत़ान ने उसे फिर मश्वरा दिया कि देख वोह लड़की कितने दिनों से अकेली उस मकान में रह रही है, उसे तन्हाई में वह़शत होती होगी, अगर तू उस से कुछ देर बात कर ले और उस के पास थोड़ी बहुत देर बैठ जाए तो उस की वह़शत ख़त्म हो जाएगी और इस त़रह़ तुझे बहुत अज्रो सवाब मिलेगा। आ़बिद फिर शैत़ाने लईन के चक्कर में फंस गया और उस ने अब लड़की के पास बैठना और उस से बात चीत करना शुरूअ़ कर दी, पहले पहल तो इस त़रह़ हुवा कि वोह आ़बिद अपने इ़बादत ख़ाने से बात करता और लड़की अपने मकान से, फिर वोह दोनों दरवाज़ों पर आ कर गुफ़्त-गू करने लगे, फिर शैत़ान के उक्साने पर वोह आ़बिद उस लड़की के मकान में जा कर उस के पास

बैठता और बातें करता, बिल आख़िर शैत़ान ने अब उसे वरग़लाना शुरूअ़ कर दिया कि देख येह लड़की कितनी ख़ूब सूरत है ! कितनी ह़सीनो जमील है ! जब उस ने जवान लड़की की जवानी पर नज़र डाली तो उस के दिल में गुनाह का इरादा हुवा । एक दिन उस ने लड़की से बहुत ज़ियादा क़ुर्बत इख़्तियार की और उस की रान पर हाथ रखा फिर उस से बोस व किनार किया, बिल आख़िर उस बद बख़्त आ़बिद ने शैत़ान के बहकावे में आ कर उस लड़की से ज़िना किया जिस के नतीजे में लड़की ह़ामिला हो गई और उस ह़म्ल से एक बच्चा पैदा हुवा ।

फिर शैत़ान मरदूद ने उस आ़बिद के पास आ कर कहा : "देख ! तेरी ह़-र-कत की वजह से येह सब कुछ हुवा है, तेरा क्या ख़याल है कि जब इस लड़की के भाई आएंगे और वोह अपनी बहन को इस ह़ालत में देखेंगे तो तुझे कितनी रुस्वाई होगी और वोह तेरे साथ क्या मुआ-मला करेंगे ? तेरी बेहतरी इसी में है कि तू इस बच्चे को मार डाल ताकि उन्हें इस वाक़िए़ की ख़बर ही न हो और तू रुस्वाई से बच जाए ।" चुनान्चे उस बद बख़्त ने बच्चे को ज़ब्ह़ कर डाला और एक जगह दफ़्न कर दिया, अब वोह मुत़्मइन हो गया कि लड़की अपनी रुस्वाई के ख़ौफ़ से अपने भाइयों को इस वाक़िए़ की ख़बर न देगी लेकिन शैत़ाने मल्ऊ़न दोबारा उस आ़बिद के पास आया और कहा : ऐ जाहिल इन्सान ! क्या तूने येह गुमान कर लिया है कि येह लड़की अपने भाइयों को कुछ नहीं बताएगी, येह तेरी भूल है, येह ज़रूर तेरी ह़-र-कतों के बारे में अपने भाइयों को आगाह करेगी और तुझे ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा, तेरी बेहतरी इसी में है कि तू इस लड़की को भी क़त्ल कर के दफ़्न कर दे ताकि मुआ-मला ही ख़त्म हो जाए । आ़बिद ने शैत़ान के मश्वरे पर अ़मल किया और लड़की को क़त्ल कर के उसे भी बच्चे के साथ ही दफ़्न कर दिया और आ़बिद दोबारा मस्रूफ़े इ़बादत हो गया ।

वक़्त गुज़रता रहा जब उस लड़की के भाई जिहाद से वापस आए तो उन्हों ने उस मकान में अपनी बहन को न पा कर आ़बिद से पूछा तो उस ने बड़े मग़मूम अन्दाज़ में रोते हुए जवाब दिया : "तुम्हारे जाने के बा'द तुम्हारी बहन का इन्तिक़ाल हो गया और येह उस की क़ब्र है, वोह बहुत नेक लड़की थी, इतना कहने के बा'द वोह आ़बिद रोने लगा और उस के भाई भी क़ब्र के पास रोने लगे । काफ़ी दिन वोह उसी मकान में अपनी बहन की क़ब्र के पास रहे फिर अपने घरों को लौट गए और उन्हें उस आ़बिद की बातों पर यक़ीन आ गया ।

एक रात जब वोह तीनों भाई अपने अपने बिस्तरों पर आराम के लिये लैटे और उन की आंख लग गई तो शैत़ान उन तीनों के ख़्वाब में आया और सब से बड़े भाई से सुवाल किया : "तुम्हारी बहन कहां है ?" उस ने कहा : "वोह तो मर चुकी है और फ़ुलां जगह उस की क़ब्र है ।" शैत़ान ने कहा : "उस आ़बिद ने तुम से झूट बोला है, उस ने तुम्हारी बहन के साथ ज़िना किया और उस से बच्चा पैदा हुवा, फिर उस ने रुस्वाई के ख़ौफ़ से तुम्हारी बहन और उस बच्चे को मार डाला और उन दोनों को एक साथ दफ़्न कर दिया, अगर तुम्हें यक़ीन नहीं आए तो तुम वोह जगह खोद कर देख लो ।" इस त़रह़ उस ने तीनों भाइयों को ख़्वाब में आ कर उन की बहन के मु-तअ़ल्लिक़ बताया, जब सुब्ह़ सब की आंख खुली तो सब ह़ैरान हो कर

एक दूसरे से कहने लगे : "रात तो हम ने अ़जीबो ग़रीब ख़्वाब देखा है।" फिर सब ने अपना अपना ख़्वाब बयान किया, बड़ा भाई कहने लगा : "येह मह़्ज़ एक झूटा ख़्वाब है, इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं, लिहाज़ा इसे ज़ेह्न से निकाल दो।" छोटे भाई ने कहा : "मैं इस की ज़रूर तह़क़ीक़ करूंगा और ज़रूर उस जगह को खोद कर देखूंगा।"

चुनान्चे वोह तीनों भाई उसी मकान में पहुंचे और जब उस जगह को खोदा जिस की शैत़ान ने निशान देही की थी तो वोह येह देख कर ह़ैरान रह गए कि वहां उन की बहन और एक बच्चा ज़ब्ह़ शुदा ह़ालत में मौजूद हैं। चुनान्चे वोह उस बद बख़्त आ़बिद के पास पहुंचे और उस से पूछा : "सच सच बता तूने हमारी बहन के साथ क्या किया है ?" आ़बिद ने जब उन का ग़ुस्सा देखा तो अपने गुनाह का ए'तिराफ़ कर लिया और सब कुछ बता दिया। चुनान्चे वोह तीनों भाई उसे पकड़ कर बादशाह के दरबार में ले गए, बादशाह ने सारी बात सुन कर उसे फांसी का हुक्म दे दिया।

जब उस बद बख़्त आ़बिद को फांसी दी जाने लगी तो शैत़ान मरदूद अपना आख़िरी वार करने फिर उस के पास आया और उसे कहा : "मैं ही तेरा वोह साथी हूं जिस के मश्वरों पर अ़मल कर के तू औ़रत के फ़ित्ने में मुब्तला हुवा, फिर तूने उसे और उस के बच्चे को क़त्ल कर दिया, हां ! अगर आज तू मेरी बात मान लेगा तो मैं तुझे फांसी से रिहाई दिलवा दूंगा।" आ़बिद ने कहा : "अब तू मुझ से क्या चाहता है ?" शैत़ाने लईन बोला : "**तू अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की वह़दानियत का इन्कार कर दे** और काफ़िर हो जा, अगर तू ऐसा करेगा तो मैं तुझे आज़ाद करवा दूंगा।" येह सुन कर कुछ देर तो आ़बिद सोचता रहा लेकिन फिर दुन्यावी अ़ज़ाब से बचने की ख़ात़िर उस ने अपनी ज़बान से कुफ़्रिय्या कलिमात बके और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानियत का मुन्किर हो गया (وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی)। जब शैत़ान मल्ऊ़न ने उस बद बख़्त आ़बिद का ईमान भी बरबाद करवा दिया तो उसे ह़ालते कुफ़्र में फांसी दे दी गई और वोह फ़ौरन अपने साथियों समेत वहां से ग़ाइब हो गया।"

शैत़ान की शैत़ानियत के बारे में क़ुरआने करीम बयान फ़रमाता है :

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ۝ (پ٢٨،الحشر:١٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : शैत़ान की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उस ने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब।

(تفسیر القرطبی، سورۃ الحشر، تحت الآیۃ:١٦، الجزء الثامن عشر، جلد٩، ص٣٠ تا٣٢)

(ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! औ़रत के फ़ित्नों और शैत़ान की मक्कारियों से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा, हमें दुन्यवी और उख़्रवी ज़िल्लतो रुस्वाई और अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ फ़रमा, हमारी इस्मतों और हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी ही अ़त़ा से मुसलमान हैं, तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमा)

मुसल्मां है अत्तार तेरी अता से

हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 92 : सादात से महब्बत पर दुगना इन्आम

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह वाक़दी क़ाज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा ईद के मौक़अ पर हमारे पास ख़र्च वग़ैरा के लिये कुछ भी रक़म न थी, बड़ी तंगदस्ती के दिन थे, उन दिनों यहूया बिन ख़ालिद बरमकी हाकिम था, ईद रोज़ बरोज़ क़रीब आ रही थी, हमारे पास कुछ भी न था, चुनान्चे मेरी एक ख़ादिमा मेरे पास आई और कहने लगी : "ईद बिल्कुल क़रीब है और घर में कुछ भी ख़र्चा वग़ैरा नहीं, आप कोई तरकीब कीजिये ताकि घर वाले ईद की ख़ुशियों में शरीक हो सकें।"

ख़ादिमा की येह बात सुन कर मैं अपने एक ताजिर दोस्त के पास गया और उस के सामने अपनी हालते ज़ार बयान की। उन्हों ने फ़ौरन मुझे एक मोहर बन्द थैली दी, जिस में बारह सो दिरहम थे, मैं उन्हें ले कर घर आया और वोह थैली घर वालों के हवाले कर दी, घर वालों को कुछ ढारस हुई कि अब ईद अच्छी गुज़र जाएगी, अभी हम ने उस थैली को खोला भी न था कि मेरा एक दोस्त मेरे पास आया जिस का तअल्लुक़ सादात के घराने से था, उस ने आ कर बताया : "इन दिनों हमारे हालात बहुत ख़राब हैं और ईद भी क़रीब आ गई है, घर में ख़र्चा वग़ैरा बिल्कुल नहीं, अगर हो सके तो मुझे कुछ रक़म क़र्ज़ दे दो।" अपने उस दोस्त की बात सुन कर मैं अपनी ज़ौजा के पास गया और उसे सूरते हाल से आगाह किया, वोह कहने लगी : "अब आप का क्या इरादा है ?" मैं ने कहा : "हम इस तरह करते हैं कि आधी रक़म इस सय्यिद ज़ादे को क़र्ज़ दे देते हैं और आधी हम ख़र्च में ले आएंगे, इस तरह दोनों का गुज़ारा हो जाएगा।"

येह सुन कर मेरी ज़ौजा ने इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में डूबा हुवा जुम्ला कहा जिस ने मेरे दिल में बहुत असर किया, वोह कहने लगी : "जब तेरे जैसा एक आम शख़्स अपने दोस्त के पास अपनी हाजत मन्दी का सुवाल ले कर गया तो उस ने तुझे बारह सो दिरहम की थैली अता की, और अब जब कि तेरे पास दो आलम के मुख़्तार, सय्यिदुल अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की औलाद में से एक शहज़ादा अपनी हाजत ले कर आया है तो तू उसे आधी रक़म देना चाहता है क्या तेरा इश्क़ इस बात को गवारा करता है ? येह सारी रक़म उस सय्यिद ज़ादे के क़दमों पर निछावर कर दे।" अपनी ज़ौजा से येह महब्बत भरा कलाम सुन कर मैं ने वोह सारी रक़म उठाई और ब ख़ुशी अपने दोस्त को दे दी, वोह दुआएं देता हुवा चला गया।

मेरा वोह सय्यिद ज़ादा दोस्त जैसे ही अपने घर पहुंचा तो उस के पास मेरा वोही ताजिर दोस्त आया और उस से कहा : "मैं इन दिनों बहुत तंगदस्ती का शिकार हूं, मुझे कुछ रक़म उधार दे दो।" येह सुन कर उस सय्यिद ज़ादे ने वोह रक़म की थैली मेरे उस ताजिर दोस्त को दे दी जो मैं उसी (ताजिर) से ले कर आया था, जब मेरे उस ताजिर दोस्त ने वोह रक़म की थैली देखी तो फ़ौरन पहचान गया और मेरे पास आ कर पूछने लगा : "जो रक़म तुम मुझ से ले कर आए हो, वोह कहां है ?" मैं ने उसे तमाम वाक़िआ़ बताया तो वोह कहने लगा : "इत्तिफ़ाक़ से वोही सय्यिद ज़ादा मेरा भी दोस्त है, मेरे पास सिर्फ़ येही बारह सो दिरहम थे जो मैं ने आप को दे दिये, आप ने उस सय्यिद ज़ादे को दिये और उस ने वोह मुझे दे दिये इस त़रह़ हम में से हर एक ने अपने आप पर दूसरे को तरजीह़ दी और दूसरे की ख़ुशी की ख़ात़िर अपनी ख़ुशी क़ुरबान कर दी।"

हमारे इस वाक़िए की ख़बर किसी त़रह़ ह़ाकिमे वक़्त यह़्या बिन ख़ालिद बरमकी को पहुंच गई, उस ने फ़ौरन अपना क़ासिद भेजा जिस ने मेरे पास आ कर यह़्या बिन ख़ालिद बरमकी का पैग़ाम दिया : "मैं अपनी कुछ मस्रूफ़ियात की बिना पर आप की त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहा और मुझे आप के ह़ालात के बारे में पता न चल सका, अब मैं ग़ुलाम के हाथ दस हज़ार दीनार भेज रहा हूं, इन में से दो हज़ार आप के लिये, दो हज़ार आप के ताजिर दोस्त के लिये और दो हज़ार उस सय्यिद ज़ादे के लिये बाक़ी चार हज़ार दीनार तुम्हारी अ़ज़ीम व सआ़दत मन्द बीवी के लिये क्यूं कि वोह तुम सब से ज़ियादा ग़नी, अफ़्ज़ल और इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैकर है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी इन पाकीज़ा और नेक सीरत लोगों के सदक़े अपने मुसल्मान भाइयों के साथ ख़ूब ख़ैर ख़्वाही करने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा और मिलजुल कर दीन का काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

हि़कायत नम्बर 93 : सफ़ेद महल

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दस अफ़राद पर मुश्तमिल एक क़ाफ़िला यमन की जानिब रवाना फ़रमाया। मैं भी उस क़ाफ़िले में शरीक था, क़ाफ़िला जानिबे मन्ज़िल रवां दवां था, दौराने सफ़र हमारा क़ाफ़िला एक ऐसी बस्ती के क़रीब से गुज़रा जिसे देख कर हमें बहुत ज़ियादा ह़ैरत हुई। उस बस्ती में बेहतरीन क़िस्म की इ़मारतें थीं, हमारे रु-फ़क़ा ने कहा : "क्या ही अच्छा हो अगर हम इस बस्ती में दाख़िल हो जाएं और यहां के ह़ालात मा'लूम करें।"

चुनान्चे हमारा क़ाफ़िला उस ख़ूब सूरत बस्ती में दाख़िल हुवा, उस की ख़ूब सूरती देख कर हमारी

हैरानगी इन्तिहा को पहुंच चुकी थी, ऐसा लग रहा था जैसे उस की तमाम इमारतों को सोने चांदी से ढांप दिया गया हो, उस की इमारतें ऐसी थीं जैसी हम ने कभी न देखी थीं, उस बस्ती में एक **सफ़ेद महल** था जिस की सफ़ेदी ख़ालिस बर्फ़ जैसी थी और उस का सेहन भी इसी त़रह सफ़ेद था, वहां पर बेहतरीन लिबास में मल्बूस चन्द कंवारी ख़ूब सूरत नौ जवान लड़कियां मौजूद थीं, उन के दरमियान में एक निहायत ही ह़सीनो जमील दोशीज़ा थी जिस का ह़ुस्न उन सब लड़कियों पर ग़ालिब था, दूसरी लड़कियां उस के गिर्द घूम रही थीं और वोह दफ़ बजाते हुए येह शे'र गुनगुना रही थी :

مَعْشَرَ الْحُسَّادِ مُوْتُوا كَمَدًا   كَذَا تَكُوْنُ مَا بَقِيْنَا أَبَدًا

غُيِّبَ عَنَّا مَنْ نَعَانَا حَسَدًا   وَكَانَ وَحْدَهُ الِتقٰى الْأَنْكَدَا

तरजमा : ऐ ह़सद करने वालो ! तुम शिद्दते ग़म से मर जाओ, हम तो इसी त़रह ऐ़शो इ़श्रत से ज़िन्दगी गुज़ारेंगी, जो हम से ह़सद करते हुए हमें मौत की ख़बर देता है वोह ख़ुद ही ग़मगीन और मह़रूम हो कर फेंक दिया जाता है (या'नी मर जाता है) ।

वोह दोशीज़ा इन्ही अश्आ़र की तक्रार कर रही थी, वहां उस बस्ती में एक बेहतरीन ह़ौज़ बना हुवा था, जिस में साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी था, क़रीब ही एक छोटी सी बेहतरीन चरागाह थी जिस में बेहतरीन क़िस्म के जानवर चर रहे थे, उ़म्दा नस्ल के घोड़े, ऊंट गाय और घोड़े के छोटे छोटे बच्चे वहां मौजूद थे, क़रीब ही एक गोल मह़ल बना हुवा था । हम उस जगह का ह़ुस्नो जमाल और ज़ैबो ज़ीनत देख कर मह़्वे ह़ैरत थे । हमारे बा'ज़ रु-फ़क़ा ने कहा : "हम कुछ देर यहां क़ियाम कर लेते हैं ताकि यहां के मनाज़िर से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो सकें और हमें इस ख़ूब सूरत बस्ती में कुछ देर आराम मुयस्सर आ जाए ।" चुनान्चे हम ने वहीं अपने कजावे उतारे (और सामान को तरतीब देने लगे) इतने में मह़ल की जानिब से कुछ लोग आए, उन के पास चटाइयां थीं, उन्हों ने आते ही वोह चटाइयां बिछा दीं फिर उन पर अन्वाअ़ व अक़्साम के खाने चुन दिये, फिर हमें खाने की दा'वत दी । हम ने खाना खाया, इस के बा'द कुछ देर आराम किया और वहां के नज़ारों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते रहे फिर हम ने वहां से कूच करने का इरादा किया और अपने कजावे कसने लगे ।

हमें जाता देख कर मह़ल की जानिब से चन्द लोग आए और कहा : "हमारा सरदार तुम्हें सलाम कहता है और उस ने पैग़ाम भिजवाया है कि मैं मा'ज़िरत ख़्वाह हूं कि आप से मुलाक़ात न कर सका और कमा ह़क़्क़ुहू आप की ख़िदमत न कर सका, इन दिनों हमारे यहां एक जश्न की तय्यारी हो रही है जिस की मस्रूफ़ियत इतनी ज़ियादा है कि मैं आप लोगों से मुलाक़ात नहीं कर सकता, बराए करम ! मेरी इस तक़्सीर को मुआ़फ़ फ़रमाना, आप लोग हमारे मेहमान हैं, आप जब तक चाहें हमारे हां क़ियाम फ़रमाएं ।"

बादशाह का येह पैग़ाम सुन कर हम ने उन लोगों से कहा : "अब हम यहां मज़ीद नहीं ठहर सकते, हमारी मन्ज़िल अभी बहुत दूर है, हम अब जाना चाहते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस मेहमान नवाज़ी की अच्छी जज़ा और ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए ।"

जब हम जाने लगे तो उन ख़ादिमों ने हमें बहुत सा खाना और काफ़ी साज़ो सामान दिया और

इतना ज़ादे राह दिया कि वोह हमारे तमाम सफ़र के लिये काफ़ी था। फिर हम वहां से रुख़्सत हो कर अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये, जब हमारी वापसी हुई तो हम उस रास्ते को छोड़ कर दूसरे रास्ते से मदीनए मुनव्वरह पहुंचे। काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया और जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा बने तो उन के एक वफ़्द के साथ मैं दोबारा सूए यमन रवाना हुवा, मैं ने अपने रु-फ़क़ा को उस बस्ती के मु-तअ़ल्लिक़ बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में हम ने एक अ़ज़ीमुश्शान बस्ती देखी थी, फिर मैं ने उन को वोह सारा वाक़िआ़ बताया। येह सुन कर उन का तजस्सुस बढ़ा और उन में से एक शख़्स ने कहा : "क्या ही बेहतर हो अगर हम भी उस बस्ती को देख लें।"

चुनान्चे हम उसी बस्ती की त़रफ़ चल दिये। जब हम वहां पहुंचे तो मैं उस जगह को देख कर बहुत ह़ैरान हुवा क्यूं कि अब तो वहां का नक़्शा ही बदल चुका था, अब वहां अ़ज़ीमुश्शान मह़ल था न ही उस का बेहतरीन सफ़ेद फ़र्श बल्कि वहां वीरानी छाई हुई थी और रैत के ढेर लगे हुए थे, इमारतें खन्डरात में तब्दील हो चुकी थीं, चरागाह में जानवरों का नामो निशान तक न था, बड़ी बड़ी ख़ुदरौ घास ने सारी चरागाह को वह़शत नाक बना दिया था, तालाब में पानी का एक क़त़रा भी न था।

अल ग़रज़ ! चन्द साल क़ब्ल जहां हर क़िस्म की ज़ैबो ज़ीनत थी अब वहां वीरानी छाई हुई थी, अब वहां न तो ख़ुद्दाम थे न ही लौंडियां। हम सब उस मन्ज़र को देख कर मह़्वे ह़ैरत थे कि हमें उन तबाह व बरबाद इमारतों में एक शख़्स नज़र आया। मैं ने अपने एक रफ़ीक़ को येह कहते हुए भेजा कि "हम उस शख़्स से दूर ही रहते हैं, तुम जाओ और वहां के ह़ालात मा'लूम कर के आओ और देखो ! येह शख़्स कौन है ?" मेरा साथी वहां गया और कुछ ही देर बा'द वोह ख़ौफ़ज़दा सा हमारी जानिब पलटा। मैं ने पूछा : "तुम ने वहां क्या देखा है कि इतने परेशान हो रहे हो ?" वोह कहने लगा : "जब मैं उस शख़्स के पास पहुंचा तो देखा कि वोह एक बूढ़ी और अन्धी औ़रत है, जब उस ने मेरी आहट मह़सूस की तो कहने लगी : तुझे उस की क़सम जिस ने तुझे सह़ीहो़ सालिम भेजा है, मेरी आंखों का नूर तो ज़ाएअ़ हो चुका तुम जो भी हो मेरे पास आओ (येह सुन कर मैं वहां से वापस आ गया हूं)।"

ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : फिर मैं बोसीदा और टूटी फूटी सीढ़ियां चढ़ता हुवा उस वीरान इमारत में पहुंचा जहां वोह बुढ़िया मौजूद थी। उस बुढ़िया ने कहा : "तुम मुझ से क्या पूछना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "तू कौन है और यहां इस वीराने में तेरे साथ कौन कौन रहता है ?" येह सुन कर बुढ़िया बोली : मेरा नाम **"उ़मैरा"** है और मैं इस बस्ती के सरदार **ज़वील** की बेटी हूं, मेरा बाप ऐसा सख़ी और फ़य्याज़ था कि राहगीरों को बुला बुला कर मेहमान नवाज़ी करता और लोग हमारी इस बस्ती में क़ियाम किया करते थे और यहां चन्द साल पहले मेहमानों की ख़ूब ज़ियाफ़तें हुवा करती थीं, फिर उस बुढ़िया ने येह शे'र पढ़ा :

وَمِنْ مَعْشَرٍ صَارُوْا رَمِيْمًا　　اَبُوْهُمْ كَرِيْمٌ اَبُوْالْجِحَافِ بِالْخَيْرِ ذُوَيْلُ

तरजमा : और वोह लश्कर बोसीदा व ख़राब बे यारो मददगार हो गए जिन का बाप ज़वील ऐसा करीम था जो ख़ैर की त़रफ़ बहुत रग़्बत करता था।

मैं ने उस बुढ़िया से कहा : "तुम्हारे बाप और तुम्हारी बाक़ी क़ौम का क्या हुवा ?" कहने लगी : "उन्हें मौत ने आ लिया, वोह इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गए, ज़माने ने उन्हें फ़ना कर दिया, उन के बा'द मैं उस परिन्दे के बच्चे की त़रह़ हो गई हूं जो कमज़ोर घोंसले में अकेला बैठा हो।" मैं ने उस से कहा : "क्या तुम्हें याद है कि चन्द साल पहले एक मर्तबा हम यहां से गुज़रे थे, उस वक़्त येह जगह आबाद थी और यहां जश्न की तय्यारियां हो रही थीं, इस मह़ल के सेह़न में चन्द लड़कियां एक ह़सीनो जमील दोशीज़ा के गिर्द जम्अ़ थीं और वोह दोशीज़ा दफ़ बजाते हुए येह शे'र गुनगुना रही थी :

مَعْشَرَ الْحُسَّادِ مُوْتُوْا كَمَدًا

तरजमा : ऐ ह़ासिदो ! तुम शिद्दते ग़म से मर जाओ।

येह सुन कर बूढ़ी औ़रत ने रोते हुए कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे वोह दिन अच्छी त़रह़ याद है, उन लड़कियों में मेरी बहन भी थी और दफ़ बजा कर शे'र गुनगुनाने वाली दोशीज़ा मैं ही थी।"

येह सुन कर मैं ने कहा : "अगर तुम पसन्द करो तो हम तुम्हें अपने साथ अपने वत़न ले जाएं और तुम हमारे अहले ख़ाना के साथ रहो ?" मेरी येह बात सुन कर उस ने कहा : "येह बात मुझ पर बहुत गिरां है कि मैं अपनी इस जगह को छोड़ दूं, मैं इसी जगह रहना पसन्द करूंगी यहां तक कि मुझे भी अपने बाप और क़ौम की त़रह़ मौत आ जाए और मैं भी इस दुन्याए ना पाएदार से रुख़्सत हो जाऊं।"

फिर मैं ने पूछा : "तुम्हारे खाने पीने का बन्दो बस्त किस त़रह़ होता है ?" उस ने कहा : "यहां से क़ाफ़िले गुज़रते हैं और मेरे लिये खाना वग़ैरा फेंक जाते हैं, मैं उसे खा कर गुज़ारा कर लेती हूं और यहां एक घड़ा मौजूद है जो पानी से भरा रहता है, मैं नहीं जानती कि इसे कौन भरता है, बस इसी में से मैं पानी पी लेती हूं, इस त़रह़ मेरी ज़िन्दगी के दिन गुज़र रहे हैं।"

फिर उस ने मुझ से पूछा : "ऐ मुसाफ़िर ! क्या तुम्हारे क़ाफ़िले में कोई औ़रत है ?" मैं ने कहा : "नहीं।" फिर पूछा : "क्या तुम्हारे पास कोई सफ़ेद चादर है ?" मैं ने कहा : "हां, चादर तो है।" फिर मैं ने उसे दो चादरें ला कर दीं जो बिल्कुल नई थीं। चादरें ले कर वोह एक त़रफ़ चली गई, कुछ देर बा'द उन्हें पहन कर वापस आई और कहने लगी : "मैं ने आज रात ख़्वाब में देखा कि मैं दुल्हन बनी हुई हूं और एक घर से दूसरे घर की जानिब जा रही हूं, येह ख़्वाब देख कर मुझे गुमान हो रहा है कि मैं आज मर जाऊंगी, काश ! कोई औ़रत होती जो मेरे ग़ुस्ल वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर देती।" अभी वोह बूढ़ी औ़रत मुझ से येह बातें कर ही रही थी कि यकदम ज़मीन पर गिरी और उस की रूह़ क़-फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। हम ने उसे तयम्मुम कराया और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर उसे वहीं दफ़्न कर दिया।

जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और उन्हें येह वाक़िआ़ बताया तो वोह रोने लगे और फ़रमाया : "अगर मैं तुम्हारी जगह वहां होता तो ज़रूर एक करीम व फ़य्याज़ बाप की उस बेकस व बेबस बेटी को अपने साथ ले आता लेकिन मुक़द्दर की बात है, उस के नसीब में येही लिखा था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाए और हमें ग़ैरों की मोहताजी से बचा कर सिर्फ़ अपना मोहताज रखे, चार रोज़ा इस नैरंगिये दुन्या के धोके से मह़फ़ूज़ रखे और मौत से पहले मौत की तय्यारी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, हमें अपने अन्जाम को हर वक़्त पेशे नज़र रखते हुए आख़िरत की तय्यारी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, दुन्यवी ने'मतों पर ग़ुरूर व तकब्बुर करने से हमें मह़फ़ूज़ रखे, सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी रिज़ा की ख़ातिर तमाम नेक आ'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और सब्रो क़नाअ़त की दौलत अ़ता फ़रमाए और हमें मुफ़्लिसी से बचाए। आमीन)

न मोहताज कर तू जहां में किसी का

मुझे मुफ़्लिसी से बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

ह़िकायत नम्बर 94 : **चन्द नसीह़तें**

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़फ़्स अल जमह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा एक क़ाफ़िला सफ़र पर रवाना हुवा और अहले क़ाफ़िला रास्ता भूल गए, उन्हें बड़ी परेशानी हुई, बिल आख़िर एक त़रफ़ उन्हें आबादी के आसार नज़र आए और वोह उसी सम्त चल दिये। बस्ती से दूर एक राहिब अपनी इ़बादत गाह में मश्ग़ूले इ़बादत था। सारे क़ाफ़िले वाले वहां पहुंचे और राहिब को आवाज़ दी। राहिब ने आवाज़ सुन कर नीचे झांका तो क़ाफ़िले वालों ने कहा : "हम रास्ता भूल गए गए हैं, बराए करम ! सह़ीह़ रास्ते की त़रफ़ हमारी रहनुमाई करो।" येह सुन कर उस राहिब ने आस्मान की त़रफ़ इशारा किया और कहा : "तुम्हारी (अस्ली) मन्ज़िल उस त़रफ़ है।" राहिब की येह बात सुन कर क़ाफ़िले वाले जान गए कि राहिब हमें येह समझाना चाहता है कि अस्ली मन्ज़िल तो आख़िरत की मन्ज़िल है।

फिर क़ाफ़िले वालों में से बा'ज़ ने कहा : "हम इस राहिब से कुछ नसीह़त आमोज़ बातें सुन लें तो बेहतर होगा।" चुनान्चे वोह राहिब से कहने लगे : "हम तुझ से कुछ सुवालात करना चाहते हैं, क्या तुम जवाब देना पसन्द करोगे ?" येह सुन कर वोह बोला : "जो पूछना है जल्दी पूछो लेकिन सुवालात में कसरत न करना क्यूं कि जो दिन गुज़र गया वोह कभी लौट कर नहीं आएगा और जो उ़म्र गुज़र गई वोह कभी पलट कर नहीं आएगी पस जो आख़िरत में काम्याबी का त़ालिब हो उसे चाहिये कि जल्द अज़ जल्द अपनी आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार कर ले।" क़ाफ़िले वाले उस राहिब से येह ह़िक्मत भरी बातें सुन कर बहुत ह़ैरान हुए और उस से पूछा : "कल बरोज़े क़ियामत मख़्लूक़ अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सामने किस ह़ालत में होगी ?" उस ने जवाब दिया : "अपनी अपनी निय्यतों के मुत़ाबिक़ वोह बारगाहे

ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में हाज़िर होंगे।" फिर उन्हों ने पूछा : "नजात का बेहतरीन रास्ता क्या है ?"

राहिब ने जवाब दिया : "तुम्हारे नेक आ'माल जो तुम आगे भेजते हो वोह तुम्हारी नजात का बाइस बनेंगे।" अहले क़ाफ़िला ने कहा : "ऐ राहिब ! हमें मज़ीद नसीहत करो।" उस ने कहा : "अपने लिये उतना ही ज़ादे राह लो जितना तुम्हारा सफ़र है और दुन्यावी सफ़र के लिये सिर्फ़ इतना ही तोशा काफ़ी है जितना एक जानवर के लिये होता है।" इस के बा'द राहिब ने अहले क़ाफ़िला को रास्ता बताया और अपनी इबादत गाह में दाख़िल हो गया।"

हिकायत नम्बर 95 : इख़्लास फ़रोश मुसल्मान

हज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ुज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं : "किसी अ़लाक़े में एक बहुत बड़ा दरख़्त था, लोग उस की पूजा किया करते थे और इस तरह़ उस अ़लाक़े में कुफ़्रो शिर्क की वबा बहुत तेज़ी से फैल रही थी। एक मुसल्मान शख़्स का वहां से गुज़र हुवा तो उसे येह देख कर बहुत ग़ुस्सा आया कि यहां ग़ैरुल्लाह की इबादत की जा रही है। चुनान्चे वोह जज़्बए तौहीद से मा'मूर बड़ी ग़ज़ब नाक ह़ालत में कुल्हाड़ा ले कर उस दरख़्त को काटने चला, उस के ईमान ने येह गवारा न किया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और की इबादत की जाए। इसी जज़्बे के तह़त वोह दरख़्त काटने जा रहा था कि शैत़ान मरदूद उस के सामने इन्सानी शक्ल में आया और कहने लगा : "तू इतनी ग़ज़ब नाक ह़ालत में कहां जा रहा है ?" उस मुसल्मान ने जवाब दिया : "मैं उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं जिस की लोग इबादत करते हैं।" येह सुन कर शैत़ान मरदूद ने कहा : "जब तू उस दरख़्त की इबादत नहीं करता तो दूसरों का इस दरख़्त की इबादत करना तुझे क्या नुक़्सान देता है ? तू अपने इस इरादे से बाज़ रह और वापस चला जा।" उस मुसल्मान ने कहा : "मैं हरगिज़ वापस नहीं जाऊंगा।" मुआ़-मला बढ़ा और शैत़ान ने कहा : "मैं तुझे वोह दरख़्त नहीं काटने दूंगा।"

चुनान्चे दोनों में कुश्ती हो गई और उस मुसल्मान ने शैत़ान को पछाड़ दिया, फिर शैत़ान ने उसे लालच देते हुए कहा : "अगर तू इस दरख़्त को काट भी देगा तो तुझे इस से क्या फ़ाएदा ह़ासिल होगा। मेरा मश्वरा है कि तू इस दरख़्त को न काट, अगर तू ऐसा करेगा तो रोज़ाना तुझे अपने तकिये के नीचे से दो दीनार मिला करेंगे।" वोह शख़्स कहने लगा : "कौन मेरे लिये दो दीनार रखा करेगा।" शैत़ान ने कहा : "मैं तुझ से वा'दा करता हूं कि रोज़ाना तुझे अपने तकिये के नीचे से दो दीनार मिला करेंगे।" वोह शख़्स शैत़ान की इन लालच भरी बातों में आ गया और दो दीनार की लालच में उस ने दरख़्त काटने का इरादा तर्क किया और वापस घर लौट आया। फिर जब सुब्ह़ बेदार हुवा तो उस ने देखा कि तकिये के

नीचे दो दीनार मौजूद थे।

फिर दूसरी सुब्ह़ जब उस ने तकिया उठाया तो वहां दीनार मौजूद न थे, उसे बड़ा ग़ुस्सा आया और कुल्हाड़ा उठा कर फिर दरख़्त काटने चला। शैत़ान फिर इन्सान की शक्ल में उस के पास आया और कहा : ''कहां का इरादा है ?'' वोह कहने लगा : ''मैं उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं जिस की लोग इ़बादत करते हैं, मैं येह बरदाश्त नहीं कर सकता कि लोग ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत करें, लिहाज़ा मैं उस दरख़्त को काट कर ही दम लूंगा।'' शैत़ान ने कहा : ''तू झूट बोल रहा है, अब तू कभी भी उस दरख़्त को नहीं काट सकता।'' चुनान्चे शैत़ान और उस शख़्स के दरमियान फिर से कुश्ती शुरूअ़ हो गई। इस मर्तबा शैत़ान ने उस शख़्स को बुरी त़रह़ पछाड़ दिया और उस का गला दबाने लगा क़रीब था कि उस शख़्स की मौत वाक़ेअ़ हो जाती। उस ने शैत़ान से पूछा : ''येह तो बता कि तू है कौन ?'' शैत़ान ने कहा : ''मैं इब्लीस हूं और जब तू पहली मर्तबा दरख़्त काटने चला था तो उस वक़्त भी मैं ने ही तुझे रोका था लेकिन उस वक़्त तूने मुझे गिरा दिया था उस की वजह येह थी कि उस वक़्त तेरा ग़ुस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये था लेकिन इस मर्तबा मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया हूं क्यूं कि अब तेरा ग़ुस्सा अल्लाह तआ़ला के लिये नहीं बल्कि दीनारों के न मिलने की वजह से है। लिहाज़ा अब तू कभी भी मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता।''

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर अ़मल में इख़्लास अ़त़ा फ़रमा और रियाकारी की मज़्मूम बीमारी से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा कर हमें हर अ़मल सिर्फ़ अपनी रिज़ा की ख़ात़िर करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हमें अपने मुख़्लिस बन्दों में शामिल फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

☆☆☆☆☆☆☆☆

हि़कायत नम्बर 96 : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم की करामत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बिशार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ''मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم की सोह़बते बा ब-र-कत में छ साल और कुछ माह रहा। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर ख़ामोश रहते और हम से कभी भी कोई बात न पूछते बल्कि हम ही उन से कलाम करते। हमें ऐसा मह़सूस होता जैसे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुंह में कोई चीज़ डाल कर कलाम करने से रोक दिया गया हो। मैं जब भी आप को देखता तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ह़ालत ऐसी होती जैसी उस मां की होती है जिस का बच्चा गुम हो गया हो और मुझे दुन्या में सब से ज़ियादा आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही ग़मगीन नज़र आते और

ऐसा लगता जैसे आप पर मसाइब के पहाड़ टूट पड़े हों और आप के कलेजे को ग़मों ने छल्नी कर दिया हो, आप के पाख़ाना और पेशाब में ख़ून की आमैज़िश होती। हमें इस की वजह येही नज़र आती कि शिद्दते ग़म की वजह से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह ह़ालत हो गई है।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमें वसिय्यत करते हुए फ़रमाते : "लोगों से किनारा कशी इख़्तियार कर लो, जिसे तुम नहीं जानते उसे जानने की कोशिश न करो और जिसे जानते हो उस से भी दूर रहने में ही आ़फ़िय्यत है।"

इसी त़रह़ की नसीह़तें आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बिशार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ मैं, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ अल ग़सूली और ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह सन्जारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जिहाद के लिये रवाना हुए, चुनान्चे हम चारों साह़िले समुन्दर पर पहुंचे और कश्ती में सुवार हो गए। जब कश्ती चलने लगी तो उस में से एक शख़्स खड़ा हुवा और कहने लगा : "सब मुसाफ़िर एक एक दीनार किराया अदा करें।" चुनान्चे सब ने किराया देना शुरूअ़ किया। हमारी ह़ालत येह थी कि हमारे लिबास के इलावा हमारे पास कोई शै न थी। जब वोह शख़्स हमारे पास आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه खड़े हुए और कश्ती से उतर कर साह़िल पर चले गए, थोड़ी ही देर के बा'द आप वापस आए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास चार ऐसे दीनार थे जिन की चमक से आंखें चुंधिया रही थीं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन दीनारों से किराया अदा किया।

कश्ती के लंगर उठा दिये गए और सफ़र शुरूअ़ हो गया, हमारी कश्ती के साथ दूसरे मुमालिक **अस्कन्दरिया, अ़स्क़लान, तिन्नीस और दक़्यात** वग़ैरा की कश्तियां भी सफ़र कर रही थीं। इस त़रह़ तक़रीबन सोलह या सत्तरह कश्तियों ने एक साथ सफ़र शुरूअ़ किया, क़ाफ़िले जानिबे मन्ज़िल रवां दवां थे कि एक रात अचानक तेज़ हवाएं चलना शुरूअ़ हो गईं, हर त़रफ़ अंधेरा ही अंधेरा छा गया, समुन्दर में भोंचाल सा आ गया, तूफ़ान का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया, मौजों में इज़्तिराब बढ़ता ही जा रहा था, हमें अपनी हलाकत का यक़ीन हो चुका था, सब लोगों ने हाथ उठाए और गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगने लगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी चादर ओढ़े इत़्मीनान व सुकून से एक जानिब सो रहे थे। एक शख़्स ने जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इस त़रह़ सोते देखा तो आप के क़रीब आ कर कहने लगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! समुन्दर में तूफ़ान आया हुवा है, हम सब मौत के मुंह में पहुंच चुके हैं फिर भी आप इत़्मीनान से सो रहे हैं। आप भी हमारे साथ मिल कर दुआ़ करें कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस मुसीबत से नजात अ़त़ा फ़रमाए।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आस्मान की त़रफ़ सर उठाया। हम ने न तो आप के होंट

हिलते देखे और न ही आप के मुंह से कोई कलाम सुना, यकायक एक ग़ैबी आवाज़ गूंजी, कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ आने वाली शदीद हवाओ ! और ऐ मुज़्तरिब मौजो ! तुम ठहर जाओ ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि तुम्हारे ऊपर इब्राहीम बिन अदहम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم) मौजूद है।" येह आवाज़ गूंज रही थी लेकिन मा'लूम नहीं कि येह आवाज़ कहां से आ रही थी। न तो समुन्दर में कोई शख़्स नज़र आ रहा था न ही आस्मान की त़रफ़ कोई ऐसा शख़्स था जो येह सदा बुलन्द कर रहा हो, फिर उस आवाज़ के गूंजते ही हवाएं बिल्कुल बन्द हो गईं, अंधेरा छट गया और समुन्दर में सुकून आ गया, एक बार फिर सारी कश्तियां एक साथ सफ़र करने लगीं।

फिर सब कश्तियों के मालिकों ने आपस में मुलाक़ात की, उन में से किसी ने कहा : "क्या तुम ने समुन्दरी तूफ़ान के वक़्त ग़ैबी आवाज़ सुनी थी !" सब ने ब यक ज़बान कहा : "हां ! हम ने आवाज़ सुनी थी।" फिर सब ने मश्वरा किया कि जब हम साहिल पर पहुंचेंगे तो हर शख़्स को उस के रु-फ़क़ा के साथ कर देंगे ताकि हमें मा'लूम हो जाए कि वोह ग़ैबी आवाज़ किस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ थी फिर हम उस अ़ज़ीम शख़्स से दुआ़ करवाएंगे जिस की ब-र-कत से हम हलाकत से बच गए।

जब कश्तियां साहिले समुन्दर पर पहुंची तो सब लोगों ने मत़्लूबा क़ल्ए़ की त़रफ़ पेश क़दमी की। जब क़रीब पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि येह क़ल्अ़ा तो बहुत मज़बूत़ है और इस के दरवाज़े लोहे के हैं, ब ज़ाहिर उस को फ़त्ह़ करना बहुत दुश्वार था, सब शशो पन्ज में थे। बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! जिस त़रह़ मैं कहूं तुम भी इसी त़रह़ कहना।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह कलिमात कहे : " لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ "। लोगों ने भी येह पाकीज़ा कलिमात कहे, यकायक क़ल्ए़ की दीवार से एक बहुत बड़ा पथ्थर गिर पड़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दोबारा फ़रमाया : "जिस त़रह़ मैं कहूं तुम भी ऐसे ही कहना।" चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फिर येही कलिमात फ़रमाए : " لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ. "।" लोगों ने भी येह कलिमात दोहराए फिर एक बहुत बड़ा पथ्थर क़ल्ए़ की दीवार से गिर गया।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तीसरी बार भी येही कलिमात दोहराए और लोगों ने भी कहे तो दीवार से फिर एक पथ्थर गिर गया और दीवार में इतना शिगाफ़ हो गया कि बा आसानी उस से गुज़रा जा सके।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! जाओ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर क़ल्ए़ में दाख़िल हो जाओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत अ़ता फ़रमाएगा लेकिन मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूं : "तुम किसी पर ज़ुल्म मत करना और ह़द से तजावुज़ न करना, मेरी इस बात को अच्छी त़रह़ याद रखना।" लोग आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नसीह़तें सुनने के बा'द क़ल्ए़ में दाख़िल हो गए। वोह कहते हैं कि वहां से हमें बिग़ैर जिहाद किये इतना माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा कि हमारी कश्तियां बोझ से भर गईं।

फिर हम वापस हुए और तमाम कश्तियां दोबारा एक साथ चलने लगीं जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें ख़ैरियत से अपनी मन्ज़िल तक पहुंचा दिया, तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने रु-फ़क़ा के साथ बन्दर गाह की त़रफ़ रवाना हुए। आप ने माले ग़नीमत की तक़्सीम पर कोई ए'तिराज़ न किया ह़ालां कि उन लोगों ने हमें माले ग़नीमत में से एक दीनार भी न दिया था। हम ने बाक़ी मुसाफ़िरों में से एक से पूछा : "तुम्हें कितना कितना हिस्सा माले ग़नीमत मिला ?" उस ने कहा : "हम में से हर एक को तक़रीबन एक सो बीस सोने की अशरफ़ियां मिलीं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! कुरबान जाएं बुज़ुर्गों की शाने बे नियाज़ी पर कि जिन की ब-र-कत से फ़त्ह़ हुई उन को एक दिरहम भी न मिला लेकिन फिर भी मुत़ा-लबा न किया, वोह दुन्यावी दौलत के ख़्वाहां न थे बल्कि उन्हें तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा मत़्लूब थी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी उन बुज़ुर्गों के सदक़े इख़्लास की दौलत से मालामाल फ़रमाए और दुन्यावी माल के वबाल से बचाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर 97 : एक नाशपाती से चार दिन की भूक जाती रही

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "एक दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे। आप की बारगाह में उस वक़्त ज़ाहिदों और मुह़द्दिसीन की कसीर ता'दाद मौजूद थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाने लगे : "एक दिन मैं ने रोज़ा रखा और इरादा किया कि उस वक़्त तक कोई शै नहीं खाऊंगा जब तक मुझे मा'लूम न हो जाए कि येह बिलकुल ह़लाल ज़रीए से ह़ासिल की गई है और उस में किसी क़िस्म का शुबा नहीं."

इस त़रह़ मेरा एक दिन गुज़र गया लेकिन ऐसी कोई शै न मिली फिर दूसरा दिन गुज़र गया लेकिन मैं ने कोई चीज़ न खाई यहां तक कि तीन दिन गुज़र गए लेकिन मैं ने कोई चीज़ न खाई सिर्फ़ चन्द घूंट पानी पी कर गुज़ारा किया। चौथे दिन मैं ने कहा कि आज मैं उस अ़ज़ीम हस्ती के हां खाना खाऊंगा जिस के रिज़्क़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़लाल व त़य्यिब रखा है और उस में किसी क़िस्म का शुबा नहीं। चुनान्चे मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये रवाना हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद में थे, मैं ने सलाम किया और आप के पास बैठ गया। मग़रिब की नमाज़ के बा'द सब नमाज़ी चले गए। हम दोनों के इ़लावा सिर्फ़ एक और शख़्स मस्जिद में बाक़ी रहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "ऐ तूसी।" मैं ने कहा : "हुज़ूर मैं ह़ाज़िर हूं।"

आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ तूसी ! तू अपने भाई के पास इस लिये आया है कि वोह तेरे साथ ऐशो इश्रत की ज़िन्दगी गुज़ारे ।" मैं ने दिल में कहा : "मैं ने तो चार दिनों से कुछ भी नहीं खाया और भूक से मेरी ह़ालत ख़राब हो रही है, मेरे पास रात के खाने को कुछ भी नहीं ।" आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कुछ देर ख़ामोश रहे, फिर फ़रमाया : "मेरे क़रीब आओ ।" मैं बड़ी मुश्किल से उठा कमज़ोरी की वजह से उठना मुश्किल हो रहा था बहर ह़ाल मैं क़रीब चला गया । आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मेरा सीधा हाथ पकड़ा और उसे अपनी उल्टी आस्तीन में दाख़िल किया तो मुझे वहां नाशपाती जैसा एक फल मिला जो कुछ सख़्त था और ऐसा मह़सूस होता था जैसे उसे दांतों से चबाया गया हो ।

मैं ने वोह फल खाया तो उस में मुझे बेहतरीन क़िस्म का ज़ाएक़ा मह़सूस हुवा । वोह फल इतना लज़ीज़ था कि उस का ज़ाएक़ा बयान से बाहर है । उसे खाते ही मेरी भूक ख़त्म हो गई और पानी की भी ह़ाजत न रही, येह देख कर मस्जिद में बैठे हुए उस अज्नबी शख़्स ने कहा : क्या तुम ही अबू जा'फ़र हो ? मैं ने कहा : "जी हां ! मैं ही अबू जा'फ़र हूं और मैं ने आज तक कभी भी ऐसा लज़ीज़ और ख़ुश ज़ाएक़ा फल नहीं खाया जैसा आज खाया है ।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْغَفُوْر हमारी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "जब तक मैं दुन्या में ज़िन्दा रहूं तुम मेरे इस वाक़िए की हरगिज़ तश्हीर न करना ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 98 :

गुदड़ी में ला'ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन बक्र رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह फ़रमाते हुए सुना कि "एक मर्तबा सफ़र करते हुए मैं एक वीरान जंगल में पहुंचा । कुछ दूर बांस की बनी हुई एक झोंपड़ी नज़र आई । मैं उसी त़रफ़ चल दिया । वहां मैं ने एक बूढ़ा शख़्स देखा जो कोढ़ के मरज़ में मुब्तला था और कीड़े उस के जिस्म को खा रहे थे । उस की येह ह़ालत देख कर मुझे उस पर बहुत तरस आया, मैं ने कहा : "ऐ बुज़ुर्ग ! अगर आप चाहें तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करूं कि वोह आप को सिह़्ह़त अ़त़ा फ़रमा दे ?" मेरी येह बात सुन कर जब उस बुज़ुर्ग ने अपना सर ऊपर उठाया तो मा'लूम हुवा कि वोह नाबीना है । फिर उस ने कहा : "ऐ यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! अगर तुझे अपनी दुआ़ की क़बूलिय्यत पर इतना ही नाज़ है तो अपने लिये दुआ़ क्यूं नहीं करता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे दिल से अनारों की मह़ब्बत निकाल दे ?" उस बुज़ुर्ग की येह बात सुन कर मैं बहुत ह़ैरान हुवा । मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अ़हद किया था कि नफ़्सानी ख़्वाहिश की ख़ात़िर कभी भी कोई चीज़ न खाऊंगा बल्कि जिस चीज़ की नफ़्स तमन्ना करेगा उसे तर्क कर दूंगा लेकिन मुझे अनार बहुत पसन्द थे, उन्हें तर्क करने पर

मैं क़ादिर न हो सका। उस बुज़ुर्ग ने मेरी इस ह़ालत को जान लिया और कहा : "पहले अपने लिये दुआ़ करो, मैं इस बीमारी की ह़ालत में भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से राज़ी हूं।" फिर उस बुज़ुर्ग ने मुझ से कहा : "जाओ ! और कभी भी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से टक्कर न लेना।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 99 : मिलावट करने की सज़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुल ह़मीद बिन मह़मूद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि एक शख़्स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास आया और अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! हम बहुत से लोग ह़ज करने आए हैं। सफ़ा व मर्वह की सा'य के दौरान हमारे एक दोस्त का इन्तिक़ाल हो गया। ग़ुस्ल व तक्फ़ीन वग़ैरा के बा'द उसे क़ब्रिस्तान ले जाया गया। जब उस के लिये क़ब्र खोदी तो हम येह देख कर हैरान रह गए कि एक बहुत बड़ा **अज़्दहा क़ब्र** में मौजूद है। हम ने उसे छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी। वहां भी वोही अज़्दहा मौजूद था। फिर तीसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी वोही ख़ौफ़नाक सांप कुंडली मारे बैठा था। हमें बड़ी परेशानी लाह़िक़ हुई। अब हम उस मय्यित को वहीं छोड़ कर आप की बारगाह में मस्अला दर्याफ़्त करने आए हैं कि इस ख़ौफ़नाक सूरते ह़ाल में क्या करें ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "वोह अज़्दहा उस का बुरा अ़मल है जो वोह दुन्या में किया करता था। तुम जाओ और उन तीन क़ब्रों में से किसी एक में उसे दफ़्न कर दो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम उस शख़्स के लिये सारी ज़मीन भी खोद डालो तब भी वहां उस अज़्दहे को ज़रूर पाओगे।"

वोह शख़्स वापस चला गया और उस फ़ौत शुदा शख़्स को उन खोदी हुई क़ब्रों में से एक क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया और अज़्दहा ब दस्तूर उस क़ब्र में मौजूद था। फिर जब हमारा क़ाफ़िला ह़ज के बा'द अपने अ़लाक़े में पहुंचा तो लोगों ने उस शख़्स की ज़ौजा से पूछा : "तुम्हारा शोहर ऐसा कौन सा गुनाह करता था जिस की वजह से उस को ऐसी दर्दनाक सज़ा मिली ?" उस औ़रत ने अफ़्सोस करते हुए कहा : "मेरा शोहर ग़ल्ले का ताजिर था और वोह ग़ल्ले में मिलावट किया करता था रोज़ाना घर वालों की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ गन्दुम निकाल लेता और उतनी मिक़्दार में जव का भूसा गन्दुम में मिला देता, येह उस का रोज़ का मा'मूल था। बस इस (मिलावट के) गुनाह की इस को सज़ा दी गई है।"

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखना, हमारी क़ब्र में सांप और बिच्छू

न आएं बल्कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आ-वरी हो और उन के नूरानी जिस्म से हमारी क़ब्र मुनव्वर हो जाए। (اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

जब फ़िरिश्ते क़ब्र में जल्वा दिखाएं आप का हो ज़बां पर प्यारे आक़ा اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام
या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख़्त रात उन के प्यारे मुंह की सुब्हे जां फ़िज़ा का साथ हो

हि़कायत नम्बर 100 : अन्धे, गन्जे और कोढ़ी का इम्तिहा़न

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बनी इसराईल में तीन शख़्स थे। एक बरस (कोढ़) का मरीज़, दूसरा गन्जा, तीसरा अन्धा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की आज़माइश के लिये एक फ़िरिश्ता (ब-शरी सूरत में) उन के पास भेजा। पहले वोह बरस के मरीज़ के पास आया और उस से पूछा : "तुझे सब से ज़ियादा कौन सी चीज़ मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे अच्छा रंग और अच्छी जिल्द पसन्द है और मेरी ख़्वाहिश है कि जिस बीमारी की वजह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं वोह मुझ से दूर हो जाए।" फ़िरिश्ते ने उस के जिस्म पर हाथ फैरा तो उस की वोह बीमारी जाती रही, उस का रंग भी अच्छा हो गया और जिल्द भी अच्छी हो गई। फ़िरिश्ते ने फिर उस से पूछा : "तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ?" उस ने कहा : "मुझे ऊंटनी पसन्द है।" उसी वक़्त उसे दस माह की ह़ामिला ऊंटनी दे दी गई, और फ़िरिश्ते ने दुआ़ दी : "अल्लाह तआ़ला तुझे इस में ब-र-कत दे।"

फिर वोह फ़िरिश्ता गन्जे के पास आया और उस से पूछा : "तुझे कौन सी शै सब से ज़ियादा मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे ख़ूब सूरत बाल ज़ियादा पसन्द हैं और मैं चाहता हूं कि जिस चीज़ की वजह से लोग मुझ से घिन खाते हैं वोह दूर हो जाए।" फ़िरिश्ते ने उस पर हाथ फैरा तो उस की वोह शै जाती रही जिस से लोग घिन खाते थे और उस के सर पर बेहतरीन बाल आ गए। फ़िरिश्ते ने पूछा : "तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ?" उस ने कहा : "मुझे गाय बहुत पसन्द है।" चुनान्चे उसे एक गाभन गाय दे दी गई। फ़िरिश्ते ने उस के लिये दुआ़ की : "अल्लाह तआ़ला तेरे लिये इस में ब-र-कत दे।"

फिर फ़िरिश्ता अन्धे के पास आया और उस से कहा : "तुझे सब से ज़ियादा कौन सी चीज़ मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे येह पसन्द है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी बीनाई मुझे वापस कर दे ताकि मैं लोगों को देख सकूं।" फ़िरिश्ते ने उस पर हाथ फैरा तो उस की आंखें रोशन हो गईं। फिर उस से पूछा : "तुझे कौन सा माल ज़ियादा मह़बूब है ?" उस ने कहा : "बकरियां।" चुनान्चे उसे एक गाभन बकरी दे दी गई।

अब ऊंटनी, गाय और बकरी ने बच्चे देना शुरूअ़ किये। कुछ ही अ़र्से में उन के जानवर इतने बढ़े कि एक के ऊंटों, दूसरे की गाइयों और तीसरे की बकरियों से एक पूरी वादी भर गई। फिर फ़िरिश्ता उस बरस के मरीज़ के पास उस की पहली सूरत या'नी बरस की ह़ालत में आया और उस से कहा : "मैं एक ग़रीब व मिस्कीन शख़्स हूं, मेरे पास ज़ादे राह ख़त्म हो गया है और वापस जाने की कोई सूरत नज़र नहीं आती मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है और मैं तेरी मदद का त़लबगार हूं। जिस ज़ात ने तुझे ख़ूब सूरत रंग, अच्छी जिल्द और माल अ़त़ा किया मैं तुझे उस का वासित़ा देता हूं कि आज मुझे एक ऊंट दे दे ताकि मैं अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकूं।" येह सुन कर उस ने इन्कार करते हुए कहा : "मेरे हु़क़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं।" तो फ़िरिश्ते ने कहा : "मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुझे जानता हूं, क्या तू वोही नहीं जिस को कोढ़ की बीमारी लाह़िक़ थी और लोग तुझ से नफ़रत किया करते थे और तू फ़क़ीर व मोह़ताज था, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे माल अ़त़ा किया।" उस ने कहा : "मुझे तो येह सारा माल विरासत में मिला है और नस्ल दर नस्ल येह माल मुझ तक पहुंचा है।" फ़िरिश्ते ने कहा : "अगर तू अपनी इस बात में झूटा है तो अल्लाह तआ़ला तुझे ऐसा ही कर दे जैसा तू पहले था।"

फिर वोह फ़िरिश्ता गन्जे के पास उस की पहली सूरत में आया और उस से भी वोही बात कही जो बरस वाले से कही थी। उस ने भी बरस वाले की त़रह़ जवाब दिया। फ़िरिश्ते ने कहा : "अगर तू अपनी बात में झूटा है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरी साबिक़ा ह़ालत पर लौटा दे।" फिर फ़िरिश्ता अन्धे के पास उस की पहली ह़ालत में आया और कहा : "मैं एक मिस्कीन मुसाफ़िर हूं और मेरा ज़ादे राह ख़त्म हो चुका है। आज के दिन मैं अपनी मन्ज़िल तक नहीं पहुंच सकता मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से उम्मीद है और उस के बा'द मुझे तेरा आसरा है। मैं उसी ज़ात का वासित़ा दे कर तुझ से सुवाल करता हूं जिस ने तुझे आंखें अ़त़ा फ़रमाईं कि मुझे एक बकरी दे दे ताकि मैं अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकूं।" तो वोह कहने लगा : "मैं तो पहले अन्धा था फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आंखें अ़त़ा फ़रमाईं तू जितना चाहे इस माल में से ले ले और जितना चाहे छोड़ दे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू जितना माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर लेना चाहे ले ले, मैं तुझे मशक़्क़त में न डालूंगा (या'नी मन्अ़ न करूंगा)।" येह सुन कर फ़िरिश्ते ने कहा : "तेरा माल तुझे मुबारक हो, येह सारा माल तू अपने पास ही रख। तुम तीनों शख़्सों का इम्तिह़ान लिया गया था, तेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है और तेरे दोनों दोस्तों (या'नी कोढ़ी और गन्जे) के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी है।"

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! हमें माल के वबाल और अपनी नाराज़ी से बचा कर अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमा, और हम से ऐसा राज़ी हो जा कि फिर कभी नाराज़ न हो।)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

ह़िकायत नम्बर 101 : एक आ़बिद की सख़ावत और यक़ीने कामिल

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नासेह़ अल मसीसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक ग़रीब शख़्स बहुत इ़बादत गुज़ार और कसीरुल इ़याल था। घर का ख़र्च वग़ैरा इस त़रह़ चलता कि घर वाले ऊन की रस्सियां बनाते और वोह उन्हें फ़रोख़्त कर के खाने पीने का सामान ख़रीद लाता, जितना मिल जाता उसी को खा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते।"

ह़स्बे मा'मूल एक मर्तबा वोह नेक शख़्स ऊन की रस्सियां बेचने बाज़ार गया जब रस्सियां बिक गईं तो वोह घर वालों के लिये खाने का सामान ख़रीदने लगा। इतने में उस का एक दोस्त उस के पास आया और कहा : "मैं सख़्त ह़ाजत मन्द हूं, मुझे कुछ रक़म दे दो।" उस रह़्म दिल इ़बादत गुज़ार शख़्स ने वोह सारी रक़म उस ग़रीब ह़ाजत मन्द साइल को दे दी और ख़ुद ख़ाली हाथ घर लौट आया।

जब घर वालों ने पूछा : "खाना कहां है ?" तो उस ने जवाब दिया : "मुझ से एक ह़ाजत मन्द ने सुवाल किया वोह हम से ज़ियादा ह़ाजत मन्द था लिहाज़ा मैं ने सारी रक़म उस को दे दी।" घर वालों ने कहा : "अब हम क्या खाएंगे ? हमारे पास तो घर में कुछ भी नहीं।" उस नेक शख़्स ने घर में नज़र दौड़ाई तो उसे एक टूटा हुवा पियाला और घड़ा नज़र आया। उस ने वोह दोनों चीज़ें लीं और बाज़ार की त़रफ़ चल दिया इस उम्मीद पर कि शायद इन्हें कोई ख़रीद ले और मैं कुछ खाने का सामान ले आऊं।

चुनान्चे वोह बाज़ार पहुंचा लेकिन किसी ने भी उस से वोह टूटा हुवा पियाला और घड़ा न ख़रीदा। इतने में एक शख़्स गुज़रा जिस के पास एक ख़राब फूली हुई मछली थी, मछली वाले ने कहा : "तू मेरा ख़राब माल अपने ख़राब माल के बदले ख़रीद ले या'नी येह टूटा हुवा पियाला और घड़ा मुझे दे दे और मुझ से येह फूली हुई ख़राब मछली ले ले।" उस आ़बिद शख़्स ने येह सौदा मन्ज़ूर कर लिया और ख़राब मछली ले कर घर पलट आया और घर वालों के ह़वाले कर दी।

जब उन्हों ने उस मछली को देखा तो कहने लगे : "हम इस बेकार मछली का क्या करें ?" उस आ़बिद शख़्स ने कहा : "तुम इसे भून लो हम इसे ही खालेंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से उम्मीद है कि वोह मुझे रिज़्क़ ज़रूर अ़त़ा करेगा।" चुनान्चे घर वालों ने मछली को काटना शुरूअ़ कर दिया, जब उस का पेट चाक किया तो उस के अन्दर से एक निहायत **क़ीमती मोती** निकला, घर वालों ने उस आ़बिद को ख़बर दी। उस ने कहा : "देखो ! इस मोती में सूराख़ है या नहीं। अगर सूराख़ है तो येह किसी का इस्ति'माली मोती होगा और हमारे पास येह अमानत है। अगर इस में सूराख़ नहीं तो फिर येह रिज़्क़ है जिसे अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये भेजा है।" जब उस मोती को देखा गया तो उस में सूराख़ वग़ैरा नहीं था, वोह किसी का इस्ति'माली मोती नहीं था। उन सब ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया।

फिर जब सुब्ह़ हुई तो वोह आ़बिद शख़्स उस मोती को ले कर जौहरी के पास गया और उस से

पूछा : "इस मोती की कितनी क़ीमत होगी ?" जब जौहरी ने वोह मोती देखा तो उस की आंखें फटी की फटी रह गईं और वोह हैरान हो कर कहने लगा : "तेरे पास येह मोती कहां से आया है ?" उस नेक आदमी ने जवाब दिया : "हमें अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने येह रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया है।" जौहरी ने कहा : "येह तो बहुत क़ीमती मोती है और मैं तो इस की सिर्फ़ तीस हज़ार (दिरहम) क़ीमत अदा कर सकता हूं, ह़क़ीक़त येह है कि इस की मालिय्यत इस से कहीं ज़ियादा है। तुम ऐसा करो कि फ़ुलां जौहरी के पास चले जाओ वोह तुम्हें इस की पूरी क़ीमत दे सकेगा।"

चुनान्चे वोह नेक शख़्स उस मोती को ले कर दूसरे जौहरी के पास पहुंचा। जब उस ने क़ीमती मोती देखा तो वोह भी उसे देख कर हैरान रह गया और पूछा : "येह तुम्हारे पास कहां से आया ?" उस आ़बिद ने वोही जवाब दिया कि येह हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रिज़्क़ अ़ता किया गया है। जौहरी ने कहा : "इस की क़ीमत कम अज़ कम सत्तर हज़ार (दिरहम) है, मुझे तो उस शख़्स पर अफ़्सोस हो रहा है जिस ने तुम्हें इतना क़ीमती मोती दिया है बहर ह़ाल सत्तर हज़ार दिरहम ले लो और येह मोती मुझे दे दो।"

मैं तुम्हारे साथ दो मज़दूर भेजता हूं, वोह सारी रक़म उठा कर तुम्हारे घर तक छोड़ आएंगे। चुनान्चे उस जौहरी ने दो मज़दूरों को दिरहम दे कर उस नेक शख़्स के साथ रवाना कर दिया। जब वोह आ़बिद अपने घर पहुंचा तो उस के पास एक साइल आया और उस ने कहा : "मुझे इस माल में से कुछ माल दे दो जो तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़ता किया है।"

तो उस नेक शख़्स ने कहा : "हम भी कल तक तुम्हारी त़रह़ मोह़ताज और ग़रीब थे। येह लो तुम इस में से आधा माल ले जाओ।" फिर उस ने माल तक़्सीम करना शुरूअ़ कर दिया। येह देख कर उस साइल ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ब-र-कतें अ़ता फ़रमाए, मैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हूं, मुझे तुम्हारी आज़माइश के लिये भेजा गया था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह ह़क़ीक़त है कि जो शख़्स किसी की मदद करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मदद करता है। दूसरों का ख़ैर ख़्वाह कभी ना मुराद नहीं होता, जो किसी पर रह़म करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़म करता है, और स-दक़ा करने से माल में कमी नहीं आती बल्कि ब-र-कत होती है और जो लोग माल की मह़ब्बत दिल में नहीं बिठाते वोही लोग सख़ावत जैसी ने'मत से ह़िस्सा पाते हैं। जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीदे वासिक़ रखे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को कभी रुस्वा नहीं फ़रमाता।) इस **ह़िकायत** में एक नेक शख़्स की सख़ावत और यक़ीने कामिल की अ़ज़ीम मिसाल मौजूद है कि उस ने एक साइल को आधा माल देना मन्ज़ूर कर लिया और दूसरा येह कि ख़ुद अपने लिये खाने की शदीद ह़ाजत के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर अपना ह़िस्सा अपने दूसरे ह़ाजत मन्द भाई को दे दिया, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी उसे ऐसा नवाज़ा और ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता किया जहां से उस का वह्मो गुमान भी न था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हर वक़्त अपनी रह़मते कामिला का साया अ़ता फ़रमाए रखे और सख़ावत व

ईसार और यक़ीने कामिल की अ़ज़ीम ने'मतें अ़ता फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
मज़्कूरा ह़िकायत की त़रह़ का एक वाक़िआ़ कुतुबे अह़ादीस में मौजूद है । चुनान्चे हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया कि, "बनी इसराईल में तीन शख़्स थे । एक बरस (कोढ़) का मरीज़, दूसरा गन्जा, तीसरा अन्धा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की आज़्माइश के लिये एक फ़िरिश्ता (ब-शरी सूरत में) उन के पास भेजा । पहले वोह बरस के मरीज़ के पास आया और उस से पूछा : "तुझे सब से ज़ियादा कौन सी चीज़ मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे अच्छा रंग और अच्छी जिल्द पसन्द है और मेरी ख़्वाहिश है कि जिस बीमारी की वजह से लोग मुझ से नफ़्रत करते हैं वोह मुझ से दूर हो जाए ।" फ़िरिश्ते ने उस के जिस्म पर हाथ फैरा तो उस की वोह बीमारी जाती रही, उस का रंग भी अच्छा हो गया और जिल्द भी अच्छी हो गई । फ़िरिश्ते ने फिर उस से पूछा : "तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ?" उस ने कहा : "मुझे ऊंटनी पसन्द है ।" उसी वक़्त उसे दस माह की ह़ामिला ऊंटनी दे दी गई, और फ़िरिश्ते ने दुआ़ दी : "अल्लाह तआ़ला तुझे इस में ब-र-कत दे ।"

फिर फ़िरिश्ता गन्जे के पास आया और उस से पूछा : "तुझे कौन सी शै सब से ज़ियादा मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे ख़ूब सूरत बाल ज़ियादा पसन्द हैं और मैं चाहता हूं कि जिस चीज़ की वजह से लोग मुझ से घिन खाते हैं वोह दूर हो जाए ।" फ़िरिश्ते ने उस पर हाथ फैरा तो उस की वोह शै जाती रही जिस से लोग घिन खाते थे और उस के सर पर बेहतरीन बाल आ गए । फ़िरिश्ते ने पूछा : "तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ?" उस ने कहा : "मुझे गाय बहुत पसन्द है ।" चुनान्चे उसे एक गाभन गाय दे दी गई । फ़िरिश्ते ने उस के लिये दुआ़ की : "अल्लाह तआ़ला तेरे लिये इस में ब-र-कत दे ।"

फिर फ़िरिश्ता अन्धे के पास आया और उस से कहा : "तुझे सब से ज़ियादा कौन सी चीज़ मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे येह पसन्द है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी बीनाई मुझे वापस कर दे ताकि मैं लोगों को देख सकूं ।" फ़िरिश्ते ने उस पर हाथ फैरा तो उस की आंखें रोशन हो गईं । फिर उस से पूछा : "तुझे कौन सा माल ज़ियादा मह़बूब है ?" उस ने कहा : "मुझे बकरियां (बहुत जियादा मह़बूब हैं) ।" चुनान्चे उसे एक गाभन बकरी दे दी गई ।

अब ऊंटनी, गाय और बकरी ने बच्चे देना शुरूअ़ किये । कुछ ही अ़र्से में उन के जानवर इतने बढ़े कि एक के ऊंटों, दूसरे की गाइयों और तीसरे की बकरियों से एक पूरी वादी भर गई । फिर फ़िरिश्ता उस बरस के मरीज़ के पास उस की पहली सूरत या'नी बरस की ह़ालत में आया और उस से कहा : "मैं एक ग़रीब व मिस्कीन शख़्स हूं, मेरे पास ज़ादे राह ख़त्म हो गया है और वापस जाने की कोई सूरत नज़र नहीं आती मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है और मैं तेरी मदद का त़लबगार हूं । जिस ज़ात ने तुझे ख़ूब सूरत रंग, अच्छी जिल्द और माल अ़ता किया मैं तुझे उस का वासित़ा देता हूं कि आज मुझे एक ऊंट दे दे ताकि

मैं अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकूं।" येह सुन कर उस ने इन्कार करते हुए कहा : "मेरे हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं।" तो फ़िरिश्ते ने कहा : "मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुझे जानता हूं, क्या तू वोही नहीं जिस को कोढ़ की बीमारी लाहिक़ थी और लोग तुझ से नफ़रत किया करते थे और तू फ़क़ीर व मोहताज था, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे माल अ़ता किया।" उस ने कहा : "मुझे तो येह सारा माल विरासत में मिला है और नस्ल दर नस्ल येह माल मुझ तक पहुंचा है।" फ़िरिश्ते ने कहा : "अगर तू अपनी इस बात में झूटा है तो अल्लाह तआ़ला तुझे ऐसा ही कर दे जैसा तू पहले था।"

फिर वोह फ़िरिश्ता गन्जे के पास उस की पहली सूरत में आया और उस से भी वोही बात कही जो बरस वाले से कही थी। उस ने भी बरस वाले की त़रह़ जवाब दिया। फ़िरिश्ते ने कहा : "अगर तू अपनी बात में झूटा है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरी साबिक़ा ह़ालत पर लौटा दे।" फिर फ़िरिश्ता अन्धे के पास उस की पहली ह़ालत में आया और कहा : "मैं एक मिस्कीन मुसाफ़िर हूं और मेरा ज़ादे राह ख़त्म हो चुका है। आज के दिन मैं अपनी मन्ज़िल तक नहीं पहुंच सकता मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से उम्मीद है और उस के बा'द मुझे तेरा आसरा है। मैं उसी ज़ात का वासित़ा दे कर तुझ से सुवाल करता हूं जिस ने तुझे आंखें अ़ता फ़रमाईं कि मुझे एक बकरी दे दे ताकि मैं अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकूं।" तो वोह कहने लगा : "मैं तो पहले अन्धा था फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आंखें अ़ता फ़रमाईं तू जितना चाहे इस माल में से ले ले और जितना चाहे छोड़ दे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू जितना माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर लेना चाहे ले ले, मैं तुझे मशक़्क़त में न डालूंगा (या'नी मन्अ़ न करूंगा)।" येह सुन कर फ़िरिश्ते ने कहा : "तेरा माल तुझे मुबारक हो, येह सारा माल तू अपने पास ही रख। तुम तीनों शख़्सों का इम्तिहान लिया गया था, तेरे लिये अल्लाह की रिज़ा है और तेरे दोनों दोस्तों (या'नी कोढ़ी और गन्जे) के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी है।"

(بخاری شریف ،کتاب احادیث الانبیاء، باب حدیث ابرص واعمیٰ واقرع......الخ،الحدیث: ٣٤٦٤،ص٢٨٢،٢٨٣)

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें माल के वबाल और अपनी नाराज़ी से बचा कर अपनी दाइमी रिज़ा अ़ता फ़रमा, और हम से ऐसा राज़ी हो जा कि फिर कभी नाराज़ न हो।)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 102 : नौ जवानों को कैसा होना चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद ह़र्बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाया करते थे : "कुछ नौ जवान ऐसे हैं कि अपनी

नौ जवानी और कम उ़म्री के बा वुजूद उधेड़ उ़म्र के दिखाई देते हैं, इन की नज़रें कभी भी ह़राम चीज़ की त़रफ़ नहीं उठतीं, इन के कान हमेशा ह़राम और लह्वो लइ़ब की बातें सुनने से मह़फ़ूज़ रहते हैं, इन के क़दम ह़राम व बात़िल अश्या की त़रफ़ नहीं उठते बल्कि बहुत ज़ियादा बोझल हो जाते हैं, इन के पेट में कभी भी ह़राम अश्या दाख़िल नहीं होतीं। ऐसे लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब हैं।

आधी रात को वोह क़ुरआने करीम की तिलावत करते हैं और रुकूअ़ व सुजूद करते हैं तो अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ उन पर रह़मत भरी नज़र फ़रमाता है, उन की ह़ालत येह होती है कि क़ुरआने पाक पढ़ते वक़्त उन की आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं। जब कभी वोह ऐसी आयत की तिलावत करते हैं जिस में जन्नत का तज़्किरा होता है तो उस जन्नत की मह़ब्बत में रोने लगते हैं और जब ऐसी आयत तिलावत करते हैं जिस में जहन्नम का तज़्किरा हो तो जहन्नम के ख़ौफ़ से चीख़ने लगते हैं। ऐसा लगता है जैसे वोह जहन्नम की चिंघाड़ को सुन रहे हैं और आख़िरत बिल्कुल उन की नज़रों के सामने है।

येह पाकीज़ा नौ जवान इतनी कसरत से नमाज़ पढ़ते हैं कि ज़मीन इन की पेशानियों और घुटनों को खा गई है (या'नी कसरते सुजूद की वजह से इन की नूरानी पेशानियों और घुटनों पर दाग़ पड़ गए हैं और गोश्त ख़ुश्क हो चुका है)

शब भर क़ियाम करने और दिन भर रोज़ा रखने की वजह से इन के रंग मु-तग़य्यर हो गए हैं, येह लोग मौत की तय्यारी में मश्ग़ूल हैं और इन की येह तय्यारी कितनी अ़ज़ीम है और इन की कोशिशें कितनी उ़म्दा हैं, सारी सारी रात रो कर गुज़ार देते हैं और अपनी आंखों से नींद को दूर रखते हैं, इन का दिन इस ह़ालत में गुज़रता है कि येह रोज़ा रखते हैं और आख़िरत की फ़िक्र में ग़मगीन रहते हैं, उन्हें हर वक़्त ग़मे आख़िरत लाह़िक़ रहता है। जब कभी इन के सामने दुन्या का तज़्किरा होता है तो इन की दुन्या से बे रग़बती में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है क्यूं कि येह दुन्या की ह़क़ीक़त को जानते हैं कि येह दुन्या फ़ानी है। फिर जब कभी इन के सामने आख़िरत का तज़्किरा होता है तो आख़िरत की त़रफ़ इन्हें मज़ीद रग़बत पैदा होती है क्यूं कि येह जानते हैं कि आख़िरत की ने'मतें हमेशा रहने वाली हैं। दुन्या इन की नज़रों में बहुत ह़क़ीर है और येह उस से शदीद नफ़रत करते हैं।

इन के नज़दीक दुन्यवी ज़िन्दगी मुसीबत है क्यूं कि इस में फ़ितने ही फ़ितने हैं और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद होना इन्हें बहुत ज़ियादा मह़बूब है क्यूं कि इन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से उम्मीद है कि शहादत के बा'द राह़तो आराम और ऐ़शो इ़श्रत की ज़िन्दगी है। येह कभी भी नहीं हंसते, येह अपने लिये नेक आ'माल का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर रहे हैं क्यूं कि इन्हें आख़िरत की होल नाकियों का अन्दाज़ा है।

जिहाद का ए'लान सुन कर येह फ़ौरन अपनी सुवारियों पर बैठते हैं, और मैदाने कारज़ार की त़रफ़ रवाना हो जाते हैं गोया पहले ही से इन्हों ने अपने आप को जिहाद के लिये तय्यार कर रखा है। फिर जब सफ़ बन्दी होती है और लश्कर आपस में मिलते हैं और येह देखते हैं कि दुश्मनों की त़रफ़ से नेज़ा बाज़ी शुरूअ़ हो गई है, तीर बरसने लगे हैं, तलवारें आपस में टकराने लगी हैं, हर त़रफ़ मौत की गरज सुनाई दे

रही है और लाशें गिर रही हैं तो येह लोग मौत की गरजती हुई आवाज़ से नहीं डरते बल्कि मैदाने कारज़ार में बे धड़क मर्दाना वार कूद पड़ते हैं और उन्हें मौत से बिल्कुल डर नहीं लगता बल्कि इन्हें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दामनगीर रहता है।

येह बे ख़ौफ़ो ख़त़र दुश्मन पर झपट पड़ते हैं और लड़ते लड़ते इन में से बा'ज़ के सर तन से जुदा हो जाते हैं और इन के घोड़े लश्करों में गुम हो जाते हैं इन की लाशों को घोड़ों के सुमों से रौंद दिया जाता है फिर जब जंग ख़त्म हो जाती है और लश्कर वापस चले जाते हैं तो इन में से जिन की लाशें मैदाने जंग में बाक़ी रह जाती हैं उन पर दरिन्दे और आस्मानी परिन्दे टूट पड़ते हैं और इन्हें खा जाते हैं येह अ़ज़ीम लोग बिल आख़िर अपनी मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच जाते हैं।

येह लोग ख़ुश बख़्त और काम्याब हैं क्यूं कि इन्हों ने अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल कर ली है और जैसे ही इन के ख़ून का पहला क़त़रा ज़मीन पर गिरता है फ़ौरन इन के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और इन के जिस्म क़ब्र में फटने और गल सड़ने से मह़फ़ूज़ हैं फिर जब बरोज़े क़ियामत येह अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो बहुत ज़ियादा मसरूर होंगे और अपनी तलवारों को लहराते हुए मैदाने ह़श्र की त़रफ़ जाएंगे और येह इस ह़ाल में वहां पहुंचेंगे कि अ़ज़ाब से नजात पा चुके होंगे। इन्हें ह़िसाबो किताब के सख़्त मरह़ले से भी नहीं गुज़रना पड़ेगा और बिग़ैर ह़िसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

वोह जन्नत कितनी अ़ज़ीम है जहां इन अ़ज़ीम लोगों की मेहमान नवाज़ी होगी, और वोह ने'मतें कैसी दाइमी और अ़ज़ीम हैं जिन की त़रफ़ इन्हों ने सब्क़त की।

अब जन्नत में उन पर न तो कोई मुसीबत नाज़िल होगी, न ही इन्हें आफ़ात व बलिय्यात का सामना करना पड़ेगा। येह जन्नत में अम्नो सुकून के साथ रहेंगे फिर इन का निकाह़ हूरे ईन से किया जाएगा (जो जन्नत की सब से ह़सीन हूरें हैं), इन की ख़िदमत के लिये हर वक़्त ख़ुद्दाम ह़ाज़िर होंगे जो इन के बुलाने से पहले ही इन के पास पहुंच जाएंगे, वहां की ने'मतें ऐसी दाइमी ने'मतें हैं कि जो शख़्स उन की मा'रिफ़त ह़ासिल कर ले वोह हर वक़्त उन की त़लब में लगा रहे।

ऐ लोगो ! अगर तुम मौत को हर वक़्त पेशे नज़र रखोगे और अपनी अस्ली मन्ज़िल (जन्नत) को याद रखोगे तो फिर कभी भी तुम्हें नेक आ'माल में सुस्ती न होगी और न ही तुम दुन्या के धोके में पड़ोगे।"

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

(ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी उन अ़ज़ीम नौ जवानों जैसी सिफ़ात से मुत्तसिफ़ फ़रमा और उन के जज़्बए इ़बादत व रियाज़त में से हमें भी कुछ ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा, जिस त़रह़ उन की नज़रों में दुन्या की कोई ह़ैसियत नहीं इसी त़रह़ हमें भी दुन्या से बे रग़बती अ़त़ा फ़रमा और हर वक़्त हमें अपनी याद और अपने

प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुम रख।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें ऐसा जज़्बा अ़ता फ़रमा दे कि हम हर वक़्त अपना माल अपनी जान और अपनी तमाम चीज़ें तेरे नाम पर कु़रबान करने के लिये तय्यार रहें, हमें शहादत की दौलत अ़ता फ़रमा और कस्रते इ़बादत की तौफ़ीक़ दे। हमारे तमाम आ'ज़ा को गुनाहों से मह़फ़ूज़ रख और हमें जन्नतुल फ़िरदौस में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में जगह अ़ता फ़रमा। (اٰمين بجاہ النبی الامين صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم)

जन्नत में आक़ा का पड़ोसी बन जाए अ़त्तार इलाही (عَزَّوَجَلَّ)
बहरे रज़ा और क़ुत़्बे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे (عَزَّوَجَلَّ)

हि़कायत नम्बर 103 : मां को क़त्ल करने वाले का इ़ब्रतनाक अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : "एक मर्तबा ह़ज के मौसिम में, मैं ख़ानए का'बा का त़वाफ़ कर रहा था। ह़ाजियों और उ़म्रह करने वालों की इतनी कस्रत थी कि उन्हें देख कर तअ़ज्जुब होता था। मेरे दिल में येह ख़्वाहिश उभरी कि काश ! किसी त़रह़ मुझे मा'लूम हो जाए कि इन लोगों में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कौन मक़्बूल है ताकि मैं उस को मुबारक बाद दूं और जिस के बारे में मा'लूम हो जाए कि येह मरदूद है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस का ह़ज क़बूल नहीं तो उस को नेकी की दा'वत दूं और उस के लिये दुआ़ करूं।"

जब रात को मैं सोया तो ख़्वाब में किसी कहने वाले ने कहा : "ऐ मालिक बिन दीनार ! तू ह़ाजियों और उ़म्रह करने वालों के बारे में फ़िक्र मन्द है ? तो सुन ! इस मर्तबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर छोटे बड़े, मर्द व औ़रत, सफ़ेद व सियाह रंगत वाले, अ़-रबी व अ़-जमी अल ग़रज़ हर ह़ज और उ़म्रह करने वाले को बख़्श दिया है लेकिन एक शख़्स की मग़्फ़िरत नहीं की गई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का उस शख़्स पर बहुत ज़ियादा ग़ज़ब है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ है। उस का ह़ज क़बूल नहीं किया गया बल्कि उस के मुंह पर मार दिया गया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस ख़्वाब के बा'द मेरी जो ह़ालत हुई उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है।" मैं ने येह गुमान कर लिया कि वोह मग़्ज़ूब शख़्स शायद मैं ही हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ है। मैं बहुत परेशान रहा। सारा दिन इसी ग़म और फ़िक्र में गुज़र गया फिर दूसरी रात थोड़ी देर के लिये मेरी आंख लगी तो फिर मुझे उसी त़रह़ का ख़्वाब नज़र

आया और ऐसी ही ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी, फिर कहा गया : "ऐ मालिक बिन दीनार ! तू वोह नहीं जिस का ज़िक्र किया जा रहा है बल्कि वोह तो **ख़ुरासान** का एक शख़्स है जो बल्ख़ शहर में रहता है, उस का नाम **मुह़म्मद बिन हरून बल्ख़ी** है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से शदीद नाराज़ है, उस का ह़ज मरदूद है और उस के मुंह पर मार दिया गया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं सुब्ह़ ख़ुरासान से आए हुए ह़ाजियों के क़ाफ़िले में गया उन्हें सलाम किया और उन से पूछा : "क्या तुम में बल्ख़ शहर के हुज्जाज मौजूद हैं ?" उन्हों ने कहा : "हां ! हम में बल्ख़ के कई ह़ाजी मौजूद हैं।" मैं ने फिर पूछा : "क्या तुम में कोई मुह़म्मद बिन हरून बल्ख़ी है ?" उन्हों ने कहा : "मरह़बा ! उस नेक शख़्स को कौन नहीं जानता, उस से बढ़ कर आ़बिदो ज़ाहिद पूरे ख़ुरासान में कोई नहीं।"

(ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि) मुझे उन लोगों की ज़बानी उस की ता'रीफ़ सुन कर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा क्यूं कि ख़्वाब में मुआ़-मला इस के बर अ़क्स था। बहर ह़ाल मैं ने उन से पूछा : "इस वक़्त वोह कहां होगा ?" लोगों ने कहा : "वोह चालीस साल से मुसल्सल रोज़े रख रहा है और सारी सारी रात इबादत में गुज़ार देता है, अगर तुम उसे तलाश करना चाहते हो तो मक्कए मुकर्रमा के किसी टूटे फूटे मकान में तलाश करो वोह ऐसी ही जगहों में क़ियाम करता है।"

उन लोगों से येह मा'लूमात ह़ासिल करने के बा'द मैं मक्का शरीफ़ के वीरान अ़लाक़े की त़रफ़ गया और उस **इब्ने हरून** को ढूंडने लगा। बिल आख़िर एक दीवार के पीछे मैं ने एक शख़्स को देखा। मैं ने जान लिया कि येही **इब्ने हरून** है। उस की ह़ालत येह थी कि उस का सीधा हाथ कटा हुवा था और उस हाथ की हड्डी में सूराख़ कर के ज़न्जीर डाल दी गई थी।

इब्ने हरून ने अपने कटे हुए हाथ को ज़न्जीर की मदद से गरदन से लटकाया हुवा था। इसी त़रह़ उस ने अपने क़दमों में भी बेड़ियां डाल रखी थीं और वोह मश्ग़ूले इबादत था। जब उस ने मेरे क़दमों की आहट सुनी तो वोह मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू कौन है और कहां से आया है ?" मैं ने कहा : "मेरा नाम मालिक बिन दीनार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار) है और मैं बसरा का रहने वाला हूं।" वोह कहने लगा : "अच्छा ! तुम वोही मालिक बिन दीनार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار) हो जिन की इ़ल्मिय्यत और ज़ोहदो तक़्वे के डंके पूरे इराक़ में बज रहे हैं।" मैं ने कहा : "आ़लिम तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है और ज़ाहिद व आ़बिद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد हैं, वोह अगर चाहें तो ख़ूब ऐशो इश्रत से ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं लेकिन बादशाहत के बा वुजूद उन्हों ने ज़ोहदो तक़्वा इख़्तियार किया और दुन्या से बे रग़बती उन के अन्दर ब द-र-जए अतम पाई जाती है, हमें तो दुन्यावी ने'मतें मुयस्सर ही नहीं इस लिये इन से दूर हैं।"

उस ने मुझ से कहा : "ऐ मालिक बिन दीनार (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! तुम मेरे पास किस लिये

आए हो ? अगर तुम ने मेरे बारे में कोई ख़्वाब देखा है तो बयान करो।" मैं ने कहा : "मुझे तुम्हारे सामने वोह ख़्वाब बयान करते हुए शर्म मह़सूस हो रही है।" तो वोह कहने लगा : "ऐ मालिक बिन दीनार (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ! तुम ने जो ख़्वाब देखा है वोह बयान करो और मुझ से शर्म न करो।"

(ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि) बिल आख़िर मैं ने उसे अपना ख़्वाब सुनाया। ख़्वाब सुन कर वोह काफ़ी देर तक रोता रहा, फिर कहने लगा : "ऐ मालिक बिन दीनार (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ! मुसल्सल चालीस साल से मेरे बारे में ह़ज के मौक़अ़ पर इसी त़रह़ का ख़्वाब किसी नेक व ज़ाहिद बन्दे को दिखाया जाता है और उसे बताया जाता है कि मैं जहन्नमी हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि येह सुन कर मैं ने उस से पूछा : "क्या तेरे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई बहुत बड़ा गुनाह ह़ाइल है ?" उस ने कहा : "हां ! मेरा गुनाह ज़मीनो आस्मां और अ़र्श व कुरसी से भी बड़ा है।" मैं ने कहा : "मुझे तुम अपना वोह गुनाह बताओ ताकि मैं लोगों को उस के इर्तिकाब से बचाऊं और उन्हें उस गुनाह से डराऊं जिस की सज़ा तुम भुगत रहे हो।"

तो वोह कहने लगा : "ऐ मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! मैं शराब का आ़दी था और हर वक़्त शराब के नशे में मदहोश रहता। एक मर्तबा मैं अपने एक शराबी दोस्त के पास गया। मैं ने वहां ख़ूब शराब पी फिर जब मुझ पर नशा त़ारी होने लगा और मेरी अ़क़्ल पर पर्दा पड़ गया तो मैं नशे की ह़ालत में गिरता पड़ता अपने घर पहुंचा और दरवाज़ा खट-खटाया। मेरी ज़ौजा ने दरवाज़ा खोला। मैं घर में दाख़िल हुवा तो मेरी वालिदा तन्नूर में आग जला कर लकड़ियां डाल रही थी और उस में ख़ूब आग भड़क रही थी।"

जब मेरी वालिदा ने मुझे नशे की ह़ालत में देखा तो मेरी त़रफ़ आई। मैं लड़खड़ा कर गिरने लगा तो उस ने मुझे थाम लिया और कहने लगी : "आज शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की आख़िरी तारीख़ है और र-मज़ानुल मुबारक की पहली रात शुरूअ़ होने वाली है, लोग सुब्ह़ रोज़ा रखेंगे और तेरी सुब्ह़ इस ह़ालत में होगी कि तू शराब के नशे में होगा, क्या तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या नहीं आती ?" येह सुन कर मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैं ने एक घूंसा अपनी वालिदा के सीने पर मारा और उसे उठा कर जलते हुए तन्नूर में डाल दिया, मैं उस वक़्त नशे में था और मेरे होशो ह़वास बह़ाल न थे, जब मेरी ज़ौजा ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो उस ने मुझे धकेल कर एक कोठड़ी में बन्द कर दिया और बाहर से कुन्डी लगा दी ताकि पड़ोसी मेरी आवाज़ न सुन सकें और उन्हें मुआ़-मले की ख़बर न हो।

मैं इसी त़रह़ नशे की ह़ालत में पड़ा रहा जब रात काफ़ी गुज़र गई तो मुझे होश आया अब मेरा नशा दूर हो चुका था। मैं दरवाज़े की त़रफ़ बढ़ा तो दरवाज़ा बन्द था। मैं ने अपनी ज़ौजा को आवाज़ दी कि दरवाज़ा खोलो। उस ने बड़े सख़्त लहजे में जवाब दिया : "मैं दरवाज़ा नहीं खोलूंगी।" मैं ने कहा : "आख़िर तुम मुझ से इतनी नाराज़ क्यूं हो ? आख़िर मैं ने ऐसी कौन सी ख़त़ा की है ?" उस ने कहा : "तूने इतनी बड़ी ख़त़ा की है कि तू इस लाइक़ ही नहीं कि तुझ पर रह़म किया जाए।" मैं ने कहा : "आख़िर

बात क्या है ? मुझे भी तो मा'लूम हो कि मैं ने क्या बुरी ह़-र-कत की है ?" मेरी ज़ौजा ने कहा : "तूने अपनी मां को क़त्ल कर दिया है और उसे जलते हुए तन्नूर में डाल दिया है और अब वोह जल कर कोएला बन चुकी है।"

जब मैं ने येह बात सुनी तो मुझ से न रहा गया और मैं ने दरवाज़ा उखाड़ फेंका और तन्नूर की त़रफ़ लपका, जब तन्नूर में देखा तो मेरी वालिदा जल कर कोएला हो चुकी थी। मैं येह ह़ालत देख कर बहुत अफ़्सुर्दा हुवा और उल्टे क़दमों टूटे हुए दरवाज़े की त़रफ़ बढ़ा अपना हाथ चौखट पर रखा और उस हाथ को काट डाला जिस से मैं ने अपनी मां को घूंसा मारा था, फिर मैं ने लौहा गर्म कर के इस हाथ की हड्डी में सूराख़ किया और उस में ज़न्जीर डाल कर गले में लटका लिया फिर अपने दोनों पाउं में भी बेड़ी डाल ली। उस वक़्त मेरी मिल्किय्यत में आठ हज़ार दीनार थे वोह सब के सब मैं ने ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल स-दक़ा कर दिये। 26 लौंडियां और 23 ग़ुलाम आज़ाद किये और अपनी तमाम जाएदाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर वक़्फ़ कर दी।

अब मुसल्सल चालीस साल से मेरी येह ह़ालत है कि दिन में रोज़ा रखता हूं और सारी सारी रात अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता हूं और चालीस दिन के बा'द खाना खाता हूं। सिर्फ़ इफ़्त़ारी के वक़्त थोड़ा सा पानी और कोई मा'मूली सी चीज़ खा लेता हूं। मैं हर साल ह़ज करने आता हूं और हर साल किसी आ़लिम व ज़ाहिद को मेरे मु-तअ़ल्लिक़ ऐसा ही ख़्वाब दिखाया जाता है जैसा आप को दिखाया गया है, येह है मेरी सारी दास्ताने इ़ब्रत निशान।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "येह सुन कर मैं ने उस के चेहरे की त़रफ़ अपना हाथ बढ़ाया और कहा : "ऐ मन्ह़ूस इन्सान ! क़रीब है कि जो आग तुझ पर नाज़िल होने वाली है वोह सारी ज़मीन को जला डाले।" फिर मैं वहां से एक त़रफ़ हो गया और एक जगह छुप गया ताकि वोह मुझे न देख सके। जब उस ने मह़सूस किया कि मैं जा चुका हूं तो उस ने अपना हाथ आस्मान की त़रफ़ उठाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस त़रह़ मुनाजात करने लगा :

"ऐ ग़मों और मुसीबतों को दूर करने वाले ! ऐ मजबूर और परेशान ह़ाल लोगों की दुआ़एं क़बूल करने वाले ! ऐ मेरी उम्मीदों की लाज रखने वाले ! ऐ गहरे समुन्दरों को पैदा करने वाले ! ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! ऐ वोह ज़ात जिस के दस्ते क़ुदरत में तमाम भलाइयां हैं ! मैं तेरी रिज़ा चाहता हूं और तेरी नाराज़गी से पनाह मांगता हूं, तू अपने अ़फ़्वो करम के सदक़े मुझे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रख और मुझे अपनी नाराज़गी से बचा। ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं कमा ह़क़्क़ुहू तेरी ता'रीफ़ नहीं कर सकता, तू ऐसा ही है जैसा तूने अपनी ता'रीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाई, ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरी उम्मीदों की लाज रख ले, बेशक मैं तुझ से तेरी रह़मत का त़ालिब हूं। (मुझे यक़ीन है) कि तू मेरी दुआ़ को रद नहीं करेगा। मैं सिर्फ़ तुझ ही से दुआ़ करता हूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मौत से पहले मुझे अपनी रिज़ा का मुज़्दा सुना

दे और मुझे अपने अ़फ़्वो करम की एक झलक दिखा दे ।"

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि उस की येह रिक़्क़त अंगेज मुनाजात सुन कर मैं अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ लौट आया । फिर जब रात को नींद आई तो दिल की आंखें खुल गईं । मुझे ख़्वाब में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मालिक बिन दीनार ! तू लोगों को अल्लाह की रह़मत और उस के अ़फ़्वो करम से मायूस मत कर ।" बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **मुहम्मद बिन हरून** के अफ़्आ़ल से बा ख़बर है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा कर उस की लग़्ज़िशों और ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दिया है तू सुब्ह़ उस के पास जाना और उस से कहना : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत मैदाने मह़शर में तमाम अव्वलीन व आख़िरीन को जम्अ़ फ़रमाएगा । अगर किसी सींग वाले जानवर ने बिग़ैर सींग वाले जानवर को मारा होगा तो उस को बदला दिलवाएगा और ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब लेगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब लूंगा और अगर किसी ने ज़र्रा भर भी ज़ुल्म किया होगा तो मज़्लूम को ज़ालिम से उस का ह़क़ दिलवाऊंगा । ऐ **इब्ने हरून !** कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे और तेरी मां को इकठ्ठा करेगा और तेरे बारे में फ़ैसला होगा । फ़िरिश्ते तुझे मज़बूत़ ज़न्जीरों में जकड़ कर जहन्नम की त़रफ़ धकेल देंगे फिर तू दुन्यवी तीन दिन और तीन रात के बराबर जहन्नम की आग का मज़ा चखेगा क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं ने अपने ऊपर येह बात लाज़िम कर ली है कि मेरा जो बन्दा भी ना ह़क़ किसी जान को क़त्ल करेगा या शराब पियेगा तो मैं उसे जहन्नम की आग का मज़ा ज़रूर चखाऊंगा अगर्चे वोह कैसा ही बरगुज़ीदा क्यूं न हो ।" ऐ इब्ने हरून ! फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी मां के दिल में तेरे लिये रह़्म डालेगा और उस के दिल में येह बात डाल देगा कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करे कि : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे बेटे को बख़्श दे ।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे, तेरी वालिदा के ह़वाले कर देगा, तेरी वालिदा तेरा हाथ पकड़ कर तुझे जन्नत में ले जाएगी ।"

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जब सुब्ह़ हुई तो मैं फ़ौरन इब्ने हरून के पास गया और उसे बिशारत दी कि आज रात ख़्वाब में मुझे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे तेरे बारे में इस त़रह़ बताया है फिर मैं ने उसे अपना पूरा ख़्वाब सुनाया । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरा ख़्वाब सुन कर वोह झूम उठा और उस की रूह़ इस त़रह़ आसानी से उस के तन से जुदा हुई जैसा कि पथ्थर को जब पानी में डाला जाए तो वोह आसानी से नीचे की जानिब चला जाता है । फिर उस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम किया गया और मैं ने उस के जनाज़े में शिर्कत की ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म फ़रमाए और हम सब को अपनी रह़मते कामिला का साया अ़त़ा फ़रमाए, हमें लम्हा भर के लिये भी जहन्नम की आग में न डाले, हमारे कमज़ोर जिस्म जहन्नम की आग को बरदाश्त नहीं कर सकते, हम से तो दुन्यावी आग की चिंगारी भी बरदाश्त नहीं होती जहन्नम की वोह सख़्त आग किस त़रह़ बरदाश्त होगी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े नारे जहन्नम से मह़फ़ूज़ रखे और हमारी ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमाए, हमें दीन व दुन्या की भलाइयां अ़त़ा फ़रमाए और अपनी दाइमी रिज़ा से मालामाल फ़रमाए, सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमाए। (اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर 104 : **तक़्वा हो तो ऐसा**

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : "मैं ने बा'ज़ मशाइख़ से पूछा कि मैं रिज़्क़े ह़लाल किस त़रह़ और कहां से ह़ासिल करूं ।" मेरे इस सुवाल पर मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने फ़रमाया : "अगर तू रिज़्क़े ह़लाल का त़ालिब है तो मुल्के शाम चला जा, वहां तुझे रिज़्क़े ह़लाल कमाने के वसाइल मुयस्सर आ जाएंगे ।" मैं ने मुल्के शाम की त़रफ़ कूच किया और उस के एक शहर "**मसीसा**" में पहुंच गया। वहां मैं काफ़ी दिन रहा और लोगों से पूछता रहा कि मैं कौन सा काम करूं जिस के ज़रीए मुझे रिज़्क़े ह़लाल ह़ासिल हो और उस में किसी क़िस्म का शुबा न हो लेकिन मेरी सह़ीह़ त़रह़ कोई रहनुमाई न कर सका।

बिल आख़िर मैं ने अपना मस्अला वहां के मशाइख़ की ख़िदमत में पेश किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "अगर तू रिज़्क़े ह़लाल का त़ालिब है तो "**त़रसूस**" नामी शहर में चला जा। वहां اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुझे कस्बे ह़लाल के ज़रीए रिज़्क़े ह़लाल मुयस्सर आ जाएगा।" चुनान्चे मैं त़रसूस शहर पहुंचा और वहां अपने मक़्सद की ख़ात़िर इधर उधर घूमता रहा। एक दिन मैं साह़िले समुन्दर पर गया ताकि वहां कोई काम तलाश करूं जिस के ज़रीए रिज़्क़े ह़लाल ह़ासिल हो सके। मैं साह़िले समुन्दर पर था कि एक शख़्स आया और उस ने कहा : "मुझे अपने अंगूरों के बाग़ की देखभाल के लिये एक बाग़बान की ज़रूरत है क्या तुम उजरत पर मेरे बाग़ की निगहबानी के लिये तय्यार हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं तय्यार हूं।"

चुनान्चे मैं उस शख़्स के साथ चला गया और ख़ूब मेह़नत व लगन से अपना काम करता रहा। मुझे उस बाग़ में काम करते हुए जब काफ़ी दिन गुज़र गए तो एक दिन बाग़ का मालिक अपने कुछ दोस्तों के साथ बाग़ में आया और मुझे बुला कर कहा : "हमारे लिये बेहतरीन क़िस्म के मीठे अंगूर तोड़ कर लाओ।"

येह सुन कर मैं ने अपनी टोकरी उठाई और एक बेल से काफ़ी अंगूर ला कर उस बाग़ के मालिक के सामने रख दिये। जब उस ने अंगूर का दाना खाया तो वोह खट्टा था। उस ने मुझ से कहा : "ऐ बाग़बान ! तुझ पर अफ़्सोस है, क्या तुझे ह़या नहीं आती कि तू इतने दिनों से इस बाग़ में काम कर रहा है और अभी तक तुझे खट्टे और मीठे अंगूरों की पहचान न हो सकी ह़ालां कि तू यहां से अंगूर वग़ैरा ख़ूब खाता होगा।"

मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने आज तक इस बाग़ से अंगूर का एक दाना भी नहीं खाया, फिर मुझे खट्टे और मीठे अंगूरों की पहचान किस त़रह़ ह़ासिल हो सकती है, मुझे तो सिर्फ़ इस बाग़ की देख भाल के लिये ख़ादिम रखा गया था, लिहाज़ा मैं देख भाल तो करता रहा लेकिन इस बाग़ में से अंगूर का एक दाना भी न खाया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से येह जवाब सुन कर बाग़ का मालिक अपने दोस्तों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "तुम्हारी क्या राय है ? क्या इस से भी ज़ियादा कोई अ़जीब बात हो सकती है कि एक शख़्स इतने अ़र्से तक बाग़ में रहे और फिर इतनी ईमानदारी से रहे कि वहां से एक दाना भी न खाए ? येह शख़्स तो इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रह़ मुत्तक़ी और परहेज़ गार मा'लूम होता है।" (उस बाग़ वाले को मा'लूम न था कि येही ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हैं) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "फिर मैं अपने काम में लग गया और बाग़ का मालिक वहां से रुख़्सत हो गया।"

दूसरे दिन मैं ने देखा कि आज फिर बाग़ का मालिक बहुत सारे लोगों के साथ बाग़ की त़रफ़ आ रहा है। मैं समझ गया कि मेरे उस वाक़िए की ख़बर इस ने लोगों को दी होगी इस लिये लोग मुझे मिलने आ रहे हैं। चुनान्चे मैं छुप कर बाग़ से निकल गया, वोह लोग बाग़ में दाख़िल हुए, उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा थी। वोह मुझे बाग़ में तलाश करते रहे लेकिन मैं उन्हें न मिला, मैं वहां होता तो उन्हें मिलता मैं तो वहां से बाहर आ गया था। वोह लोग काफ़ी देर तक मुझे ढूंडते रहे बिल आख़िर थक हार कर वापस चले गए और मैं ने किसी से भी मुलाक़ात न की।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! तक़्वा हो तो ऐसा कि इतना अ़र्सा बाग़ में रहने के बा वुजूद भी वहां से कोई चीज़ न खाई ह़ालां कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अगर वहां से अंगूर खाते तो मालिक को कोई ए'तिराज़ न होता लेकिन येह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कमाल द-रजा एह़तियात़ थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के सदक़े हमें भी तक़्वा व परहेज़ गारी की दौलत से मालामाल फ़रमाए और रिज़्क़े ह़राम से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

रहूं मस्तो बे ख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

ह़िकायत नम्बर 105 : तीस साल तक रोटी न खाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह देनूरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मेरे पास एक फ़क़ीर आया। उसे देख कर अन्दाज़ा होता था कि येह किसी सख़्त मुसीबत से दो चार और किसी सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तला है। उस की ह़ालत देख कर मेरे दिल में रह़्म आ गया और मैं ने सोचा कि इसे कोई चीज़ दूं और इस की मदद करूं। मैं ने इरादा किया कि अपनी जूतियां इसे दे दूं जैसे ही मैं ने येह इरादा किया फ़ौरन नफ़्स ने मुझे रोक दिया और कहा : "अगर तू अपनी जूतियां इसे दे देगा तो तू नंगे पाउं रह जाएगा और इस त़रह़ तू अपने पाउं वग़ैरा को नजासत से किस त़रह़ बचाएगा ?"

फिर मैं ने इरादा किया कि इसे अपना मश्कीज़ा दे दूं नफ़्स ने फिर मुझे रोक दिया और कहा : "अगर मश्कीज़ा इसे दे देगा तो तू वुज़ू वग़ैरा कैसे करेगा ?" फिर मैं ने इरादा किया कि मैं अपना रुमाल इसे स-दक़ा कर देता हूं, नफ़्से बदकार ने फिर मुझे मन्अ़ किया और कहा : "अगर तू रुमाल इसे दे देगा तो फिर तू ख़ुद नंगे सर रह जाएगा और तुझे इस त़रह़ परेशानी होगी।"

मैं अभी इसी शशो पन्ज में था कि फ़क़ीर यकायक अपनी लाठी ले कर उठा फिर मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर बोला : "ऐ नफ़्से बदकार की बात मानने वाले ! तू अपना रुमाल अपने पास ही रख, मैं जा रहा हूं और मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से येह अ़हद कर रखा है कि मैं उस वक़्त तक एक लुक़्मा भी नहीं खाऊंगा जब तक मुझे मख़्लूक़ से मांगे बिग़ैर ख़ुद ब ख़ुद रिज़्क़ न मिल जाए।" इतना कहने के बा'द वोह फ़क़ीर वहां से चला गया। उस के बारे में कहा जाता है कि उस ने 30 साल से रोटी नहीं खाई थी।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत में मख़्लूक़ से सुवाल न करने के बारे में कितना ज़बर दस्त दर्स मौजूद है। वाक़ेई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कामिल भरोसा रखते हुए ग़ैरुल्लाह से बे नियाज़ हो जाना कामिल हस्तियों का ही ह़िस्सा था। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी ऐसा तवक्कुल अ़त़ा फ़रमा और अपनी राह में ख़ूब ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, शैत़ानी वस्वसों और नफ़्स की चालों से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

हि़कायत नम्बर 106 : ख़ुदा तरस औ़रत को डूबा हुवा बच्चा कैसे मिला ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़क्रिमा رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि एक मुल्क का बादशाह बहुत ज़ालिम और कन्जूस था। उस ने अपने मुल्क में येह ए'लान कर दिया कि "कोई भी शख़्स किसी फ़क़ीर या मिस्कीन पर कोई चीज़ स-दक़ा न करे, कोई किसी ग़रीब की मदद न करे। अगर किसी ने ऐसा किया तो मैं उस का हाथ काट दूंगा।"

येह ख़बर सुन कर लोगों में सनसनी मच गई, अब हर कोई स-दक़ा देने से डरने लगा। एक दिन एक फ़क़ीर मजबूर हो कर एक औ़रत के पास आया और उस ने कहा : "अल्लाह عزّوجلّ की रिज़ा की ख़ातिर मुझे कोई चीज़ खाने के लिये दो।" तो वोह औ़रत बोली : "हमारे मुल्क के बादशाह ने ए'लान किया है कि जो कोई किसी को स-दक़ा देगा उस का हाथ काट दिया जाएगा, अब मैं तुम्हें किस त़रह़ कोई चीज़ दूं ?" फ़क़ीर ने कहा : "तुम मुझे अल्लाह عزّوجلّ की रिज़ा की ख़ातिर कोई खाने की चीज़ दे दो।" औ़रत को उस फ़क़ीर पर बहुत तरस आया और उस ने बादशाह की नाराज़गी और सज़ा की परवाह किये बिग़ैर अल्लाह عزّوجلّ की रिज़ा के लिये उस फ़क़ीर को दो रोटियां दे दीं। फ़क़ीर रोटियां ले कर दुआएं देता हुवा वहां से चला गया।

जब बादशाह को मा'लूम हुवा कि फ़ुलां औ़रत ने मेरे हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है तो उस ने औ़रत की त़रफ़ अपने सिपाही भेजे और औ़रत के दोनों हाथ काट दिये गए। कुछ अ़र्से बा'द बादशाह ने अपनी वालिदा से कहा : "मुझे किसी ऐसी औ़रत के बारे में बताओ जो सब से ज़ियादा ह़सीनो जमील हो ताकि मैं उस से शादी करूं।" तो उस की वालिदा ने उसे बताया : "हमारे मुल्क में एक ऐसी ख़ूब सूरत और बे मिसाल ह़ुस्नो जमाल की पैकर औ़रत रहती है कि मैं ने आज तक उस जैसी ह़सीनो जमील औ़रत नहीं देखी लेकिन उस में एक बहुत बड़ा ऐ़ब है।" बादशाह ने पूछा : "उस में क्या ऐ़ब है ?" उस की वालिदा ने जवाब दिया : "उस के दोनों हाथ कटे हुए हैं।"

बादशाह ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि फ़ुलां औ़रत को मेरे पास ह़ाज़िर किया जाए। चन्द सिपाही गए और उसी औ़रत को बादशाह के पास ले आए जिस के हाथ फ़क़ीर को रोटियां देने की वजह से काट दिये गए थे। जब बादशाह ने उस औ़रत को देखा तो उस के ह़ुस्नो जमाल ने बादशाह को ह़ैरत में डाल दिया। बादशाह ने उस से कहा : "क्या तुम मुझ से शादी करना चाहती हो ?" औ़रत ने कहा : "मुझे कोई ए'तिराज़ नहीं अगर तुम मुझ से शादी करना चाहो तो मुझे मन्ज़ूर है।" चुनान्चे उन दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से हुई, जश्न मनाया गया और इस त़रह़ वोह हंसी ख़ुशी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

बादशाह की दूसरी बीवियों को उस औ़रत से ह़सद हो गया और वोह दिन रात ह़सद की आग में जलने लगीं, उन के दिल में येह बात बैठ गई कि बादशाह अब हमें इतनी वुक़्अ़त नहीं देता जितनी इस ग़रीब व नादार नई दुल्हन को देता है।

चुनान्चे वोह हर वक़्त इसी फ़िक्र में रहतीं कि किसी त़रह़ नई दुल्हन को बादशाह की नज़रों से गिरा दिया जाए लेकिन वोह अपने इस मज़्मूम इरादे में काम्याब न हो सकीं। फिर अचानक बादशाह किसी मह़ाज़ पर रवाना हो गया और वहां उसे काफ़ी दिन दुश्मनों से लड़ना पड़ा। बादशाह की बीवियों को येह बहुत अच्छा मौक़अ़ मिल गया। उन्हों ने बादशाह को ख़त़ लिखा कि तुम्हारे पीछे से तुम्हारी नई दुल्हन ने तुम्हारी इ़ज़्ज़त को दाग़दार कर दिया है और वोह बदकारा हो गई है और इस बदकारी के नतीजे में उस के हां बच्चा भी पैदा हुवा है। जब बादशाह को येह ख़त़ मिला तो वोह आग बगूला हो गया। उस ने फ़ौरन अपने क़ासिद को येह पैग़ाम दे कर अपनी वालिदा के पास भेजा कि उस बदकारा औ़रत को उस के बच्चे समेत मेरे मुल्क से निकाल दो, उस के गले में कपड़ा बांध कर बच्चा उस में डाल दो और उन्हें किसी जंगल में छोड़ दो।

जब उस की वालिदा को येह पैग़ाम मिला तो उस ने ऐसा ही किया और उस के गले में कपड़ा डाल कर बच्चा उस में डाल दिया फिर उसे मुल्क से दूर एक जंगल में छोड़ दिया गया। अब वोह बेचारी तन्हा जंगल में रह गई लेकिन उसे अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किसी क़िस्म का कोई शिक्वा न था, वोह तो उस की रिज़ा पर राज़ी थी। वोह बेचारी इसी त़रह़ जंगल में घूमती रही, प्यास की शिद्दत ने उसे परेशान कर रखा था बिल आख़िर उसे दूर एक नहर नज़र आई वोह नहर पर गई और जैसे ही पानी पीने के लिये झुकी तो उस का बच्चा गहरे पानी में जा गिरा और डूबने लगा।

जब औ़रत ने अपने बच्चे को डूबता देखा तो वोह रोने लगी। इतने में उस के पास दो ख़ूब सूरत नौ जवान आए और उस से पूछा : "तुम क्यूं रो रही हो ?" उस ने कहा : "मैं पानी पीने के लिये झुकी तो मेरा बेटा इस नहर में गिर कर डूब गया, मैं इसी ग़म में रो रही हूं।" उन ख़ूब सूरत नौ जवानों ने पूछा : "क्या तू चाहती है कि हम तेरे बच्चे को निकाल लाएं ?" औ़रत ने बेताब हो कर कहा : "हां ! मैं चाहती हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरा बच्चा वापस लौटा दे।"

उन नौ जवानों ने दुआ़ की और उस का बच्चा निकाल कर उसे दे दिया। फिर उन्हों ने पूछा : "ऐ रह़म दिल औ़रत ! क्या तू चाहती है कि तेरे हाथ तुझे वापस कर दिये जाएं और तू ठीक हो जाए ?" उस ने कहा : "हां ! मैं चाहती हूं।" चुनान्चे उन दोनों नौ जवानों ने दुआ़ की और उस के दोनों हाथ बिल्कुल ठीक हो गए। औ़रत ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और ह़ैरान कुन नज़रों से उन नौ जवानों को देखने लगी जिन की ब-र-कत से उसे डूबा हुवा बच्चा भी मिल गया और उस के हाथ भी उसे लौटा दिये गए। फिर उन नौ जवानों ने पूछा : "ऐ अ़ज़ीम औ़रत ! क्या तू जानती है कि हम कौन हैं ?" औ़रत ने कहा : "मैं आप को नहीं पहचानती।" औ़रत का येह जवाब सुन कर उन्हों ने कहा : "हम तेरी वोही दो रोटियां हैं जो तूने एक मजबूर साइल को दी थीं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحَانَ اللہِ عَزَّوَجَلَّ ! इस ह़िकायत में हमारे लिये कैसी कैसी नसीह़तें

हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर जो नेक अ़मल किया जाता है वोह कभी राएगां नहीं जाता, आख़िरत में तो उस का अज्र मिलता ही है लेकिन दुन्या में भी उस के स–मरात ज़ाहिर होते हैं, जिस त़रह़ उस अ़ज़ीम औ़रत के साथ हुवा कि दुन्या ही में उस को नेकी का बदला मिल गया। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि अपना हर अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर करें। जो अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर किया जाता है वोह कभी राएगां नहीं जाता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर बहुत मेहरबान है, वोह अपनी रह़मत से किसी को मायूस नहीं करता। इस ह़िकायत से येह भी दर्स मिला कि जो किसी के साथ भला करता है उस के साथ भी भला होता है, उस की भरपूर मदद की जाती है और उसे मायूस नहीं किया जाता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपने मुसल्मान भाइयों पर ख़ूब शफ़्क़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और एक दूसरे की मदद करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 107 : दरियाए नील के नाम एक ख़त़

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अल ह़ज्जाज عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب से मरवी है : "जब मिस्र फ़त्ह़ हुवा तो वहां के कुछ लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के पास अ़–जमी महीनों में से किसी महीने की तारीख़ को आए (उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ मिस्र के गवर्नर थे), उन लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे मोहतरम अमीर ! हमारे इस दरियाए नील की एक पुरानी रस्म है जब तक वोह रस्म अदा न की जाए उस वक़्त तक येह जारी नहीं होता।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह कौन सी रस्म है जिस के अदा किये बिग़ैर येह दरिया जारी नहीं होता ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "इस माह की बारह तारीख़ हम किसी नौ जवान ख़ूब सूरत लड़की के वालिदैन के पास जाते हैं और उन्हें इस बात पर राज़ी करते हैं कि वोह अपनी ख़ूब सूरत दोशीज़ा को दरियाए नील में डालने के लिये हमारे ह़वाले कर दें ताकि येह दरिया जारी हो और हम सब सैराब हो सकें फिर हम उस नौ जवान ख़ूब सूरत लड़की को उ़म्दा कपड़े पहना कर ज़ेवरात से आरास्ता करते हैं फिर उसे दरियाए नील में डाल देते हैं। इस त़रह़ हर साल हम अपनी एक जवान लड़की की क़ुरबानी देते हैं तब दरियाए नील जारी होता है।" उन लोगों की येह अ़जीबो ग़रीब बात सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस्लाम में ऐसी कोई बे हूदा रस्म जाइज़ नहीं, बेशक इस्लाम ने ऐसी तमाम बात़िल रस्में मिटा दी हैं, तुम इस मर्तबा इस रस्म पर हरगिज़ अ़मल न करना।"

लोग आप की बात सुन कर वापस चले गए और उन्हों ने इस मर्तबा किसी भी लड़की को दरिया में न फेंका, दरियाए नील ख़ुश्क रहा और इस मर्तबा उस में बिल्कुल भी पानी न आया। लोग बहुत परेशान हुए और उन्हों ने इरादा कर लिया कि हम येह मुल्क छोड़ कर किसी और जगह चले जाते हैं।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों की येह ह़ालत देखी तो उन्हों ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जानिब ख़त़ लिखा और उन्हें सारी सूरते ह़ाल से आगाह किया, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़त़ मिला तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाबन लिखवा कर भेजा : "तुम ने बिल्कुल सच कहा कि इस्लाम बे हूदा पुरानी रस्मों को मिटा देता है। मैं तुम्हारी त़रफ़ मक्तूब में एक रुक़्आ़ भेज रहा हूं जब तुम्हारे पास मेरा येह मक्तूब और रुक़्आ़ पहुंचे तो तुम इस रुक़्ए़ को दरियाए नील में डाल देना।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुबारक मक्तूब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मिला तो उस में एक छोटा सा रुक़्आ़ भी था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वोह रुक़्आ़ लिया और उसे पढ़ना शुरूअ़ किया। उस मुबारक रुक़्ए़ में दर्ज अल्फ़ाज़ का मफ़्हूम येह है :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे अमीरुल मुअमिनीन (ह़ज़रते सय्यिदुना) उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की जानिब से मिस्र के दरिया "**नील**" की त़रफ़ !

अम्मा बा'द ! "ऐ दरियाए नील ! अगर तू अपनी मरज़ी से जारी होता है तो जारी मत हो (हमें तेरी कोई ह़ाजत नहीं) और अगर तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वाह़िदे क़ह्हार जारी फ़रमाता है तो हम उस से सुवाल करते हैं कि वोह तुझे जारी फ़रमा दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वोह रुक़्आ़ पढ़ा और दरियाए नील में डाल दिया जिस वक़्त येह रुक़्आ़ दरिया में डाला गया उस वक़्त दरिया बिल्कुल ख़ुश्क था और लोगों ने उस मुल्क को छोड़ने का इरादा कर लिया था लेकिन जब लोग सुब्ह़ दरियाए नील पर पहुंचे तो उन्हों ने देखा कि एक ही रात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के रुक़्ए़ की ब-र-कत से) दरिया में सोलह गज़ पानी जारी फ़रमा दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह रस्मे बात़िल मिटा दी और आज तक येह रस्म ख़त्म है। (दरियाए नील उस के बा'द आज तक ख़ुश्क नहीं हुवा)

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार का आ़लम क्या होगा

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! इस्लाम कितना अ़ज़ीम है कि इस ने आ कर मज़्लूमों को ज़ुल्म से नजात दिलवाई, बे सहारों को सहारा दिया और दीने इस्लाम ऐसे अ़ज़ीम अह़काम का मजमूआ़ है कि जिन में लोगों की दुन्या और आख़िरत की भलाई है। इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि जो कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हो जाता है हर चीज़ उस के ताबेअ़ कर दी जाती है जो अपने गले में नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी का पट्टा डाल लेता है वोह दर ह़क़ीक़त जहां का सरदार बन जाता है :

मदीने के गदा देखें हैं दुन्या के इमाम अक्सर बदल देते हैं तक़्दीरें मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम अक्सर

ऐसे अ़ज़ीम लोग अस्बाब पर नहीं बल्कि ख़ालिक़े अस्बाब पर नज़र रखते हैं। इन का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर

तवक्कुल बहुत कामिल होता है। जब गुलामों का येह ह़ाल है तो सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़ाक़त और इख़्तियारात का क्या आ़लम होगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची गुलामी अ़त़ा फ़रमाए और इन के जल्वों में शहादत की मौत अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 108 : टोकरियों वाला नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल में एक निहायत ही पाकबाज ह़सीनो जमील नौ जवान था जिस के हुस्न की मिसाल न थी, वोह टोकरियां बना कर बेचा करता। इस त़रह़ उस की गुज़र बसर हो रही थी। एक रोज़ वोह टोकरियां बेचता हुवा शाही मह़ल के क़रीब से गुज़रा। एक ख़ादिमा की उस नौ जवान पर नज़र पड़ी तो वोह फ़ौरन शहज़ादी के पास गई और उसे बताया कि बाहर एक नौ जवान टोकरियां बेच रहा है, वोह इतना ख़ूब सूरत है कि मैं ने आज तक ऐसा ख़ूब सूरत नौ जवान नहीं देखा। येह सुन कर शहज़ादी ने कहा : "उसे मेरे पास बुला लाओ।" ख़ादिमा बाहर गई और नौ जवान से कहा : "अन्दर आ जाओ।"

(नौ जवान समझा शायद इन्हें टोकरियां चाहिएं) पस वोह उस के साथ मह़ल में दाख़िल हो गया। वोह उसे एक कमरे में ले गई जैसे ही वोह कमरे में दाख़िल हुवा उस ख़ादिमा ने दरवाज़ा बन्द कर दिया, फिर उसे दूसरे कमरे में ले गई और इसी त़रह़ उस का दरवाज़ा भी बन्द कर दिया। जब वोह तीसरे कमरे में पहुंचा तो उस के सामने एक ख़ूब सूरत नौ जवान शहज़ादी मौजूद थी, उस ने अपना नक़ाब उठाया हुवा था और सीना भी उ़र्यां था। जब नौ जवान ने शहज़ादी को इस ह़ालत में देखा तो कहने लगा : "जो चीज़ तुम ने ख़रीदनी है जल्दी से ख़रीद लो।" शहज़ादी कहने लगी : "मैं ने तुझे कोई चीज़ ख़रीदने के लिये नहीं बुलाया बल्कि मैं तो तुझ से क़ुर्ब चाहती हूं और अपनी ख़्वाहिश की तस्कीन चाहती हूं, आओ और मेरी शहवत को तस्कीन दो।" उस पाकबाज़ नौ जवान ने कहा : "ऐ शहज़ादी ! तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर।" उस नेक नौ जवान ने शहज़ादी को बहुत समझाया लेकिन वोह न मानी और बार बार बुराई का मुत़ा-लबा करती रही। फिर उस नौ जवान से कहने लगी : "अगर तूने मेरी बात न मानी तो बादशाह को शिकायत कर दूंगी कि येह नौ जवान बुराई के इरादे से मह़ल में घुस आया है फिर तुझे बहुत सख़्त सज़ा दी जाएगी, तेरी बेहतरी इसी में है कि तू मेरी बात मान ले और मेरी ख़्वाहिश पूरी कर दे।" नौ जवान ने फिर इन्कार किया और उसे नसीह़त करने लगा बिल आख़िर जब वोह बाज़ न आई तो उस अ़ज़ीम नौ जवान ने कहा : "मैं वुज़ू करना चाहता हूं, मेरे लिये वुज़ू का इन्तिज़ाम कर दो।" येह सुन कर शहज़ादी बोली : "क्या तू मुझे धोका देना चाहता है।" फिर

उस ने ख़ादिमा से कहा : "इस के लिये मह़ल की छत पर वुज़ू का बरतन ले जाओ ताकि येह फ़रार न हो सके।"

चुनान्चे उस नौ जवान को छत पर ले जाया गया। मह़ल की छत सत़्ह़े ज़मीन से तक़रीबन 40 गज़ ऊंची थी जिस से छलांग लगाना मौत को दा'वत देने के मु-तरादिफ़ था। जब नौ जवान छत पर पहुंच गया तो उस ने अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तेरी ना फ़रमानी पर मजबूर किया जा रहा है और मैं इस बुराई से बचना चाहता हूं, मुझे येह तो मन्ज़ूर है कि अपने आप को इस बुलन्दो बाला छत से नीचे गिरा दूं लेकिन येह पसन्द नहीं कि मैं तेरी ना फ़रमानी करूं।"

चुनान्चे उस ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर छत से छलांग लगा दी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ते को भेजा जिस ने उस नौ जवान को बाज़ू से पकड़ा और ज़मीन पर बड़े सुकून से उतार दिया और उसे किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न हुई, नौ जवान ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू चाहे तो मुझे इन टोकरियों की तिजारत के बिग़ैर भी रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा सकता है। ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस तिजारत से बे नियाज़ कर दे।" जब उस ने येह दुआ़ की तो अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उस की त़रफ़ एक बोरी भेजी जो सोने से भरी हुई थी। उस ने बोरी से सोना भरना शुरूअ़ कर दिया यहां तक कि उस की चादर भर गई। फिर उस अ़ज़ीम नौ जवान ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह उसी रिज़्क़ का ह़िस्सा है जो मुझे दुन्या में मिलना था तो इस में ब-र-कत अ़त़ा फ़रमा और अगर येह उस अज्र का ह़िस्सा है जो मुझे आख़िरत में मिलना है और इस की वजह से मेरे आख़िरत के अज्र में कमी होगी तो मुझे येह दौलत नहीं चाहिये।"

जब उस नौ जवान ने येह कहा तो उसे एक आवाज़ सुनाई दी : "येह जो सोना तुझे अ़त़ा किया गया है येह उस अज्र का पच्चीसवां ह़िस्सा है जो तुझे इस गुनाह से सब्र करने पर मिला है।" तो उस अ़ज़ीम नौ जवान ने कहा : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ऐसे माल की ह़ाजत नहीं जो मेरे आख़िरत के ख़ज़ाने में कमी का बाइ़स बने।" जब नौ जवान ने येह बात कही तो वोह सारा सोना ग़ाइब हो गया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 109 : ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का तबर्रुक

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन या'क़ूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हमारे पास एक नेक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए जिन का नाम अबू अ़ब्दुल्लाह था। उन्हों ने मुझे बताया कि एक मर्तबा मैं तहज्जुद के वक़्त **मस्जिदुल ह़राम** में गया और बीरे ज़मज़म के क़रीब बैठ गया। इतने में एक बुज़ुर्ग आए उन्हों ने अपने चेहरे पर रुमाल डाला हुवा था। वोह कूंएं के क़रीब आए और उस से पानी निकाल कर पीने लगे। जब वोह पी चुके तो थोड़ा सा बरतन में बच गया। मैं ने उन से ले कर वोह पानी पिया तो वोह बहुत उ़म्दा और लज़ीज़ था और उस में बादामों का सत्तू मिला हुवा था। मैं ने ऐसा ख़ुश ज़ाएक़ा और लज़ीज़ पानी कभी नहीं पिया था। जब मैं ने उस बुज़ुर्ग की त़रफ़ देखा तो वोह वहां मौजूद न थे।

दूसरी रात फिर तहज्जुद के वक़्त मैं बीरे ज़मज़म के पास बैठ गया। वोही बुज़ुर्ग फिर कूंएं के पास आए पानी निकाला और पीने लगे कुछ पानी बच गया। जब मैं ने बुज़ुर्ग का बचा हुवा पानी पिया तो वोह सादा पानी न था बल्कि उस में ख़ालिस शहद मिला हुवा था और ऐसा लज़ीज़ व उ़म्दा था जैसा मैं ने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं पिया था। पानी पीने के बा'द जब मैं ने उस बुज़ुर्ग की त़रफ़ देखा तो वोह वहां से जा चुके थे।

मैं बहुत ह़ैरान हुवा कि येह अ़ज़ीमुश्शान बुज़ुर्ग कौन हैं ? तीसरी रात फिर मैं तहज्जुद के वक़्त कूंएं के पास बैठ गया। कुछ देर बा'द वोह बुज़ुर्ग भी तशरीफ़ ले आए, कूंएं से डोल भर कर पानी निकाला और नोश फ़रमाने लगे। आज फिर कुछ पानी बच गया मैं ने उन का बचा हुवा पानी पिया। आज उस का ज़ाएक़ा ऐसा था जैसे उस में ख़ालिस दूध मिला दिया गया हो। ऐसा उ़म्दा व लज़ीज़ पानी मैं ने कभी न पिया था। पानी पीने के फ़ौरन बा'द मैं ने उस बुज़ुर्ग का दामन थाम लिया और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ! आप को उसी ज़ाते करीम का वासित़ा जिस ने आप को येह करामत अ़त़ा की है, मुझे बताएं कि आप कौन हैं और आप का नाम क्या है ?" तो वोह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे : "अगर तुम मुझ से वा'दा करो कि जब तक मैं इस दुन्या में ज़िन्दा हूं तब तक मेरे इस राज़ को छुपाए रखोगे और लोगों पर ज़ाहिर न करोगे तो मैं तुम्हें अपना नाम बताता हूं, क्या तुम मुझ से वा'दा करते हो ?" मैं ने कहा : "जी हां।" वोह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे : "मैं **सुफ़्यान बिन सईद सौरी** हूं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 110 : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की चन्द नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा अल ताजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं, एक मर्तबा हम ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए जब कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमार थे और इसी बीमारी की ह़ालत में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया। हम लोगों ने ख़िदमते आ़लिया में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया और बड़ी ख़ुशी से फ़रमाने लगे : "मरह़बा ! ख़ुश आ-मदीद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें दराज़िये उ़म्र बिल ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए और हम सब को जन्नत में आ'ला मर्तबा अ़त़ा फ़रमाए।"

फिर इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द नसीह़त आमोज़ बातें बताता हूं, इन्हें तवज्जोह से सुनना ऐसा न हो कि एक कान से सुनो और दूसरे कान से निकाल दो। सुनो ! जिस ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुब्ह़ो शाम ज़ियारत की उस ने अ़मल की राह को इख़्तियार किया और कभी भी अपने वक़्त को ज़ाएअ़ न किया, हर आन अपने अ़मल में इज़ाफ़े की कोशिश की। जब भी उसे किसी बात का इ़ल्म हुवा उस ने फ़ौरन उस इ़ल्म पर अ़मल किया फिर तुम लोग आ'माले सालिह़ा की त़रफ़ सा'य क्यूं नहीं करते। रब्बे का'बा की क़सम ! तुम्हारे आ'माल तुम्हारे साथ हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जिस ने अपनी ज़िन्दगी आख़िरत के लिये वक़्फ़ कर दी। अपना मक़्सद सिर्फ़ आख़िरत की तय्यारी ही को रखा, सूखी रोटी खा कर ही गुज़ारा कर लिया, फटे पुराने कपड़े पहन कर और ज़मीन को बिछौना बना कर गुज़र बसर की और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ख़ूब इ़बादत की, अपनी ख़त़ाओं पर शरमिन्दगी के आंसू बहाए, आख़िरत के ख़ौफ़ से हर वक़्त लर्ज़ां व तर्सां रहा और अपनी सारी ज़िन्दगी इसी ह़ाल में गुज़ार दी यहां तक कि इस फ़ानी दुन्या में उस की मुद्दत ख़त्म हो गई और वोह इ़बादत व रियाज़त करते हुए इस दारे फ़ानी को छोड़ कर राह़त व सुकून की जगह (या'नी जन्नत) की त़रफ़ पहुंच गया। वोह शख़्स बहुत ही ख़ुश क़िस्मत है जिस ने अपनी ज़िन्दगी इस त़रह़ इ़बादत व रियाज़त में गुज़ार दी।

ऐ बे वुक़ूफ़ इन्सान ! अगर तुझे कोई दुन्यावी ने'मत न मिले और तू इस पर वावेला करना शुरूअ़ कर दे कि मुझे येह ने'मत क्यूं नहीं मिली तो येह तेरी बे वुक़ूफ़ी है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे जो अ़त़ा करे और जिस से चाहे अपनी ने'मतों को रोक ले और अगर तुझे कोई दुन्यावी ने'मत न मिली तो उस के न मिलने में ही तेरी भलाई होगी। फिर भी अगर तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम पर राज़ी नहीं होगा तो बरोज़े क़ियामत उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से तेरी मुलाक़ात इस ह़ाल में होगी कि तेरे सारे आ'माल अकारत हो चुके होंगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस मर्दे सालेह़ पर रह़मत फ़रमाए जिस ने ह़लाल रिज़्क़ कमाया और फिर ब ख़ुशी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपना माल ख़र्च कर के अपनी आख़िरत के लिये जम्अ़ कर लिया ताकि वहां मोह़ताजी न हो और अपने माल को ऐसी जगह इस्ति'माल किया जहां ख़र्च करने का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हु़क्म फ़रमाया

है और फ़ुज़ूल कामों में अपने माल को इस्ति'माल न किया।

बेशक तुम्हारे अस्लाफ़ दुन्या से ब क़द्रे ज़रूरत माल इस्ति'माल में लाते। बाक़ी तमाम माल अपने रब عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर देते और उन्हों ने अपने माल व जान का जन्नत के बदले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सौदा कर लिया था।

ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या को आज़माइश के लिये और आख़िरत को जज़ा के लिये बनाया है और इन्सान को ईमान की दौलत सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता ही से नसीब होती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है ईमान की अ़ज़ीम दौलत से मालामाल फ़रमा देता है बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने का एक ही रास्ता है जिस की बुन्याद हिदायत है। जो इस रास्ते पर सीधा चलता जाएगा उस का ठिकाना जन्नत है और शैत़ान के कई रास्ते हैं जिन की इब्तिदा ही गुमराही से होती है और जो इन रास्तों में से किसी भी रास्ते पर चलेगा वोह सीधा जहन्नम की भड़क्ती हुई आग में जा गिरेगा।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ईमान सिर्फ़ ज़बानी कलामी दा'वों का नाम नहीं कि इन्सान दा'वे करता फिरे कि मैं ईमान वाला हूं बल्कि ईमान तो दिल की तस्दीक़ का नाम है जिस का इक़रार ज़बान से होता है। जब दिल में पुख़्ता यक़ीन होता है तो येह यक़ीन की पुख़्तगी ईमान कहलाती है और आ'माले सालेह़ा इस ईमान की तस्दीक़ करते हैं, लिहाज़ा ऐ ईमान वालो ! नेक आ'माल के लिये ख़ूब सा'य करो।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 111 : बेहतरीन ज़ादे राह क्या है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद मदाइनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है, एक मर्तबा शेरे ख़ुदा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم एक जगह खड़े हुए और रोते हुए यूं नसीह़त फ़रमाई : "ऐ लोगो ! येह दुन्या उस के लिये ह़क़ाइक़ और सच्चाइयों का घर है जो इस की ह़क़ीक़त को पहचान ले, येह उस के लिये दारे आ़फ़िय्यत है जो इसे अच्छी त़रह़ समझ जाए, जो यहां समझदारी से तिजारत करता है उसे नफ़्अ़ मिलता है, इस दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मसाजिद हैं, दुन्या में ही अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام पर वह़्य नाज़िल हुई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मलाएका दुन्या में भी उस की इ़बादत करते हैं, येह दुन्या औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی से मुज़य्यन है। इस दुन्या में रह कर ख़ूब नेक अ़मल करो और आ़फ़िय्यत ह़ासिल करो। जो शख़्स दुन्या की ख़्वाह म ख़्वाह मज़म्मत करता है वोह अज़िय्यत में मुब्तला रहता है, वोह अपने नफ़्स और अहले दुन्या की ता'रीफ़ करता रहता है दुन्या अपनी तमाम तर मुसीबतों के साथ बलाओं

की सूरत इख़्तियार कर के उस के पास आ जाती है, और येही दुन्या अपनी ख़ुशियों और आराइशों के साथ मुज़य्यन है, पस इस दुन्या से ख़ौफ़ ज़दा भी रहना चाहिये, इस से बचना भी चाहिये और (ब क़द्रे ज़रूरत) इस की त़रफ़ रग़बत करनी चाहिये।

कुछ लोग दुन्या की मज़म्मत करते हैं और कुछ लोग इस की ता'रीफ़ करते हैं और दुन्या तो इ़ब्रत और नसीह़त की जगह है, जो चाहे इस से इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करे।

ऐ दुन्या की धोके बाज़ियों की वजह से दुन्या को मलामत करने वाले ! क्या दुन्या ने तुझे ज़बर दस्ती ज़िल्लत में डाला है ? इस ने कब तुझे तेरी मन्ज़िले मक़्सूद से दूर किया ? क्या इस ने तेरे आबाओ अजदाद को मुसीबत में गरिफ़्तार न किया ? ऐ इन्सान ! तू ख़ुद अपने ही हाथों बीमारी में मुब्तला है अगर तू चाहे तो म-रज़े दुन्या का इलाज ख़ुद ही कर सकता है, तुझे अत़िब्बा के पास जाने की ह़ाजत नहीं, आज जो करना है कर ले, दुन्या में ग़र्क़ होने से बच, ब क़द्रे किफ़ायत इस से नफ़्अ़ ह़ासिल कर ले, कल तुझे तेरी तदाबीर काम न आएंगी। आज जो करना है कर ले, येह दुन्या नए नए रंगों वाली और पछाड़ने वाली है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद मदाइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, इस नसीह़त आमोज़ तक़रीर के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ क़ब्रिस्तान वालों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "ऐ अहले क़ुबूर ! तुम्हारे मरने के बा'द तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी औ़रतों ने शादी कर ली, ऐ अहले क़ुबूर ! तुम्हारे मरने के बा'द तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, औ़रतों ने नए निकाह़ कर लिये, येह तो तुम्हारे बा'द हमारी ख़बर है, अब तुम बताओ कि तुम्हारे साथ क्या मुआ़-मला हुवा ?" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ हमारी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अगर इन्हें कलाम करने की इजाज़त होती तो इस त़रह़ कहते : "बेशक **बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा** है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 112 : एक आ़लिमे रब्बानी की लिल्लाहिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना मक़ातिल बिन सालेह़ ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दौलत ख़ाना पर ह़ाज़िर हुवा। आप के घर में सिर्फ़ एक चटाई थी जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तशरीफ़ फ़रमा थे और आप के सामने क़ुरआने पाक रखा हुवा था और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तिलावत फ़रमा रहे थे। इस के इ़लावा घर में एक थैला रखा हुवा था जिस में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की किताबें रखी हुई थीं। एक बरतन था जिस से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

वुज़ू वग़ैरा किया करते थे, इन अश्या के इ़लावा घर में और कोई चीज़ न थी।

मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास बैठा हुवा था कि किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने एक बच्चे को भेजा : "देखो ! दरवाज़े पर कौन आया है ?" बच्चा बाहर गया और कुछ देर बा'द आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : "कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "ख़लीफ़ा का क़ासिद आना चाहता है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जाओ और उस से कहो कि सिर्फ़ तुम अकेले अन्दर आ जाओ और किसी को साथ न लाना।" बच्चे ने क़ासिद को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का पैग़ाम दिया। चुनान्चे क़ासिद आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आया और एक ख़त़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में पेश किया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोह ख़त़ लिया और उसे खोला तो उस में येह अल्फ़ाज़ लिखे थे :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

मुह़म्मद बिन सलमान की जानिब से ह़म्माद बिन स-लमह की त़रफ़,

अम्मा बा'द !

ऐ ह़म्माद बिन स-लमह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) की सुब्ह़ ख़ैरियत से करे जैसे वोह अपने औलिया और इत़ाअ़त करने वालों की सुब्ह़ करता है। हुज़ूर ! मुझे एक मस्अला दरपेश है जिस के मु-तअ़ल्लिक़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से गुफ़्त-गू करनी है।

वस्सलाम

येह ख़त़ पढ़ कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बेटे से फ़रमाया : "जाओ क़लम दवात ले कर आओ।" फिर मुझे फ़रमाया कि इस ख़त़ के पीछे येह इ़बारत लिखो :

अम्मा बा'द !

(ऐ ख़लीफ़ा मुह़म्मद बिन सलमान !) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी सुब्ह़ ख़ैर से करे जिस त़रह़ अपने फ़रमां बरदारों और नेक बन्दों की सुब्ह़ करता है। बेशक मैं ने उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की सोह़बत पाई है और उन की येह आ़दत रही है कि वोह किसी दुन्यादार के पास मस्अला बताने के लिये नहीं जाते। लिहाज़ा अगर तुझे कोई मस्अला दरपेश है तो तू मेरे पास आ जा। फिर मुझ से सुवाल कर मैं तुझे जवाब दूंगा। जब तू मेरे पास आए तो अकेले ही आना और घोड़े वग़ैरा पर सुवार हो कर न आना, न ही अपने साथ सिपाही वग़ैरा लाना। मैं न तो तुझे नसीह़त करने वाला हूं और न ही अपने आप को।

वस्सलाम

ख़लीफ़ए वक़्त मुह़म्मद बिन सलमान का क़ासिद ख़त़ ले कर वहां से चला गया। मैं आप के पास ही बैठा रहा। कुछ देर बा'द फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जाओ देखो ! दरवाज़े पर कौन है ?" बच्चा फ़ौरन गया और वापस आ कर जवाब दिया : "ख़लीफ़ा मुह़म्मद बिन

सलमान आया है।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''उस से जा कर कहो कि अकेला अन्दर आ जाए।''

चुनान्चे ख़लीफ़ा मुह़म्मद बिन सलमान अकेला ही अन्दर दाख़िल हुवा और आ कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को सलाम किया। फिर आप के सामने दो ज़ानू बैठ गया और कहने लगा : ''हुज़ूर ! एक बात बताएं जैसे ही मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को देखा मुझ पर रो'ब व दबदबा त़ारी हो गया और मैं ख़ौफ़ की सी कैफ़िय्यत मह़सूस कर रहा हूं, इस में क्या राज़ है ?''

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को सुना है, वोह फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''बेशक जब आ़लिम अपने इ़ल्म के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहता है तो हर चीज़ उस से डरती है और जो इ़ल्म के ज़रीए़ दुन्या की दौलत चाहता है वोह (आ़लिम) हर चीज़ से डरता है।''

(فردوس الأخبار للديلمي، باب العين، فضل العالم، الحديث ٤٠٤٠، ج٢،ص٨٣تا٨٤)

फिर मुह़म्मद बिन सलमान अ़र्ज़ करने लगा : ''हुज़ूर ! मैं आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) से येह मस्अला दर्याफ़्त करने आया था कि अगर किसी शख़्स के दो बेटे हों और एक उसे ज़ियादा मह़बूब हो और वोह इरादा करे कि अपनी ज़िन्दगी में ही अपने माल का तीसरा ह़िस्सा उसे दे दे तो क्या उस के लिये ऐसा करना जाइज़ है ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''हरगिज़ ऐसा न करना। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से येह ह़दीसे पाक सुनी है, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब अपने बन्दे के साथ येह इरादा करता है कि उस के माल की वजह से उसे अ़ज़ाब न दे तो उस की मौत के वक़्त उसे जाइज़ वसिय्यत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा देता है।''

(كنز العمال، كتاب الوصية/قسم الأفعال، محظورات الوصية، الحديث٤٦١٢٣، ج١٦،ص٢٦٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़बानी येह ह़दीसे मुबा-रका सुनने के बा'द मुह़म्मद बिन सलमान कहने लगा : ''हुज़ूर ! अगर आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) की कोई ह़ाजत हो तो इर्शाद फ़रमाएं।''

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''अगर तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज़ है जिस में दीन का कुछ नुक़्सान नहीं तो वोह ले आओ।'' मुह़म्मद बिन सलमान ने कहा : ''हुज़ूर ! मैं आप की बारगाह में चालीस हज़ार दिरहम पेश करता हूं, आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) इन्हें बत़ौरे नज़राना क़बूल फ़रमा लें।'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''इस दौलत को उन मज़्लूमों की त़रफ़ लौटा दे जिन से येह ज़ुल्मन वुसूल की गई है।'' मुह़म्मद बिन सलमान ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो रक़म मैं आप की ख़िदमत में पेश कर रहा हूं येह मुझे विरसे में मिली है, मैं ने इसे ज़ुल्मन ह़ासिल नहीं किया।''

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मुझे इस दौलत की कोई ह़ाजत नहीं, इसे फ़ौरन मुझ से दूर कर ले, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत तुझ से वज़्न को दूर करे।" मुह़म्मद बिन सलमान ने फिर कहा : "हुज़ूर ! और कोई ह़ाजत हो तो इर्शाद फ़रमाएं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर कोई ऐसी चीज़ है जिस में दीन का नुक़्सान नहीं तो वोह ले आ।" मुह़म्मद बिन सलमान ने कहा : "अगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह रक़म अपने पास नहीं रखना चाहते तो अपने दस्ते मुबारक से फु-क़रा में तक़्सीम कर दें।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाने लगे : "अगर मैं येह रक़म लोगों में तक़्सीम करूं और ख़ूब अ़द्लो इन्साफ़ से काम लूं लेकिन फिर भी अगर किसी ह़क़दार को उस का ह़क़ न मिला और उस ने बद गुमानी करते हुए येह कह दिया कि मैं ने अ़द्लो इन्साफ़ से काम नहीं लिया तो ऐसा शख़्स गुनाहगार होगा। लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि तू येह मालो दौलत मुझ से दूर ले जा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत तेरे वज़्न को हल्का फ़रमाए।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 113 : तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बिन इब्राहीम बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मै ह़ज के इरादे से सफ़र पर रवाना हुवा। मक़ामे क़ादिसिया में हमारा क़ाफ़िला ठहरा। वहां और भी बहुत से आ़ज़िमीने ह़-रमैने शरीफ़ैन मौजूद थे, बहुत सुहाना मन्ज़र था, बहुत से हुज्जाजे किराम वहां ठहरे हुए थे। मैं उन्हें देख देख कर खुश हो रहा था कि येह खुश क़िस्मत लोग सफ़र व हिज्र की सुऊबतें बरदाश्त कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर ह़ज करने जा रहे हैं। मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरे बन्दों का लश्कर है, इन्हें नाकाम न लौटा बल्कि ह़ज क़बूल फ़रमाते हुए काम्याबी की दौलत से हम किनार फ़रमा।"

दुआ़ के बा'द मेरी नज़र एक नौ जवान पर पड़ी जिस के गन्दुमी रंग में ऐसी नूरानियत थी कि नज़रें उस के चेहरे से हटती ही न थीं। उस ने ऊन का लिबास ज़ैबे तन किया हुवा था और सर पर इमामा सजाया हुवा था। वोह लोगों से अलग थलग एक जगह बैठा हुवा था। मेरे दिल में शैत़ानी वस्वसा आया कि येह अपने आप को सूफ़ी ज़ाहिर करना चाहता है ताकि लोग इस की ता'ज़ीम करें और इसे अपने क़ाफ़िले के साथ ह़ज के लिये ले जाएं। येह ख़याल आते ही मैं ने दिल में कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ज़रूर इस की निगरानी करूंगा और इसे मलामत करूंगा कि इस त़रह़ का बनावटी अन्दाज़ दुरुस्त नहीं।" चुनान्चे मैं उस नौ जवान के क़रीब गया जैसे ही मैं उस के क़रीब पहुंचा, उस ने मेरी त़रफ़ देखा और मेरा नाम

ले कर कहा : "ऐ शफ़ीक़ "(رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ! और येह आयते मुबा-रका तिलावत करने लगा :

اِجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (پ۲۶،الحجرات:۱۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

इतना कहने के बा'द वोह पुर असरार नौ जवान मुझे वहीं छोड़ कर रुख़्सत हो गया, मैं ने अपने दिल में कहा : "येह तो बहुत ह़ैरान कुन बात है कि उस नौ जवान ने मेरे दिल की बात जान ली और मुझे मेरा नाम ले कर पुकारा ह़ालां कि मेरी कभी भी इस से मुलाक़ात नहीं हुई। येह ज़रूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मक़्बूल बन्दा है मैं ने ख़्वाह म ख़्वाह इस के बारे में बद गुमानी की, मैं ज़रूर इस नौ जवान से मुलाक़ात करूंगा और मा'ज़िरत करूंगा।" चुनान्चे मैं उस नौ जवान के पीछे हो लिया लेकिन काफ़ी तगो दौ के बा'द भी मैं उसे न ढूंड सका।

फिर हमारे क़ाफ़िले ने मक़ामे "**वाक़िसा**" में क़ियाम किया वहां मैं ने उस नौ जवान को ह़ालते नमाज़ में पाया। उस का सारा वुजूद कांप रहा था और आंखों से सैले अश्क रवां थे। मैं ने उसे पहचान लिया और उस के क़रीब गया ताकि उस से मा'ज़िरत करूं, वोह नौ जवान नमाज़ में मश्ग़ूल था। मैं उस के क़रीब ही बैठ गया, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द वोह मेरी जानिब मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "ऐ शफ़ीक़! येह आयत पढ़ो :

وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰی ۝ (پ۱۶،طٰہٰ:۸۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।

इतना कहने के बा'द वोह नौ जवान फिर वहां से रुख़्सत हो गया। मैं ने कहा : "येह नौ जवान ज़रूर अब्दालों में से है।" दो मर्तबा इस ने मेरे दिल की बातों को जान लिया और मुझे मेरे नाम के साथ मुख़ात़ब किया। मैं उस नौ जवान से बहुत ज़ियादा मु-तअस्सिर हो चुका था।

फिर जब हमारे क़ाफ़िले ने मक़ामे "**रबाल**" में पड़ाव किया तो वोही नौ जवान मुझे एक कूंएं के पास नज़र आया। उस के हाथ में चमड़े का एक थैला था और वोह कूंएं से पानी निकालना चाहता था। अचानक उस के हाथ से वोह थैला छूट कर कूंएं में गिर गया, उस नौ जवान ने आस्मान की जानिब नज़र उठाई और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! जब मुझे प्यास सताती है तो तू ही मेरी प्यास बुझाता है, जब मुझे भूक लगती है तो तू ही मुझे खाना अ़त़ा फ़रमाता है, मेरी उम्मीद गाह बस तू ही तू है, ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरे पास इस थैले के सिवा और कोई शै नहीं, मुझे मेरा थैला वापस लौटा दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी उस नौ जवान के येह कलिमात ख़त्म ही हुए थे कि कूंएं का पानी ऊपर आना शुरूअ़ हो गया। उस नौ जवान ने अपना हाथ बढ़ाया, आसानी से थैला निकाला और उसे पानी से भर लिया कूंएं का पानी वापस नीचे चला गया। नौ जवान ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने लगा। नमाज़ से फ़राग़त के बा'द वोह एक रैत

के टीले की त़रफ़ गया। मैं भी चुपके से उस के पीछे हो लिया। वहां जा कर उस ने रैत उठाई और उस थैले में डालने लगा फिर थैले को हिलाया और उस में मौजूद रैत मिले हुए पानी को पीने लगा। मैं उस के क़रीब गया और सलाम अ़र्ज़ किया। उस ने जवाब दिया।

फिर मैं ने कहा : "ऐ नेक सीरत नौ जवान ! जो रिज़्क़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे अ़त़ा किया है उस में से कुछ मुझे भी अ़त़ा कर।" येह सुन कर उस नौ जवान ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर हर वक़्त फ़ज़्लो करम फ़रमाता रहता है, कोई आन ऐसी नहीं गुज़रती जिस में वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर ने'मतें नाज़िल न फ़रमाता हो, ऐ शफ़ीक़ ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हमेशा अच्छा गुमान रखना चाहिये।" इतना कहने के बा'द उस नौ जवान ने वोह चमड़े का थैला मेरी त़रफ़ बढ़ाया जैसे ही मैं ने उस में से पिया तो वोह शकर और ख़ालिस सत्तू मिला हुवा बेहतरीन पानी था। ऐसा ख़ुश ज़ाएक़ा पानी मैं ने आज तक न पिया था, मैं ने ख़ूब सैर हो कर पानी पिया।

मैं ह़ैरान था कि अभी मेरे सामने इस थैले में रैत डाली गई है लेकिन इस नौ जवान की ब-र-कत से वोह रैत सत्तू और शकर में बदल गई है, वोह पानी पीने के बा'द कई दिन तक मुझे पानी और खाने की त़लब न हुई।

फिर हमारा क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा पहुंचा, वहां मैं ने उसी नौ जवान को एक कोने में आधी रात को नमाज़ की ह़ालत में देखा। वोह बड़े ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ रहा था, आंखों से सैले अश्क रवां था। उस ने इसी त़रह़ नमाज़ की ह़ालत में सारी रात गुज़ार दी फिर जब फ़ज्र का वक़्त हुवा तो वोह अपने मुसल्ले पर ही बैठ गया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करने लगा, फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बा'द उस ने त़वाफ़ किया और एक जानिब चल दिया मैं भी उस के पीछे हो लिया। इस मर्तबा मेरी नज़रों के सामने एक ह़ैरान कुन मन्ज़र था, उस नौ जवान के इर्द गिर्द कई ख़ुद्दाम हाथ बांधे खड़े थे और लोग जूक़ दर जूक़ उस की दस्त बोसी और सलाम के लिये ह़ाज़िर हो रहे थे। मैं येह ह़ालत देख कर ह़ैरान व परेशान खड़ा था।

फिर मैं ने एक शख़्स से पूछा : "येह अ़ज़ीम नौ जवान कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन जा'फ़र बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَنْهُم हैं।" मैं ने कहा : "इतनी करामात का ज़ाहिर होना इस सय्यिद ज़ादे की शान के लाइक़ है, येही वोह हस्तियां हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इतनी करामात से नवाज़ता है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

हि़कायत नम्बर 114 : यक़ीने कामिल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन आ़सिम अन्ताकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "मैं ने लोगों से पूछा कि बसरा में सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़ गार शख़्स कौन है ? तो उन्हों ने आप की त़रफ़ मेरी रहनुमाई की, कि आप पूरे बसरा में सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़ गार हैं ।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "तुम मेरे साथ चलो मैं तुम्हें बसरा के सब से बेहतर और बड़े इबादत गुज़ार से मिलवाता हूं ।" येह कह कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रोटी का टुकड़ा अपनी जैब में डाला और उस शख़्स को ले कर एक जानिब चल दिये ।

फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बसरा शहर के एक गाउं में गए वहां एक शख़्स के पास पहुंचे, जिस के दो नन्हे बच्चे थे, वोह भूक की वजह से रो रहे थे और अपने वालिद से कह रहे थे कि हमें कोई चीज़ खाने को दो लेकिन उस शख़्स के पास उस वक़्त कोई भी शै नहीं थी ।

उस शख़्स ने बच्चों को समझाते हुए कहा : "मेरे बच्चो ! मैं तुम्हारा ख़ालिक़ नहीं हूं, तुम्हारा ख़ालिक़ तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, उस ने ही तुम्हें पैदा किया, तुम्हें क़ुव्वते गोयाई और क़ुव्वते बसारत अ़त़ा फ़रमाई, वोही तमाम जहानों को रिज़्क़ देने वाला है, जिस करीम ज़ात ने तुम्हें पैदा किया है वोह तुम्हें रिज़्क़ भी ज़रूर देगा । उस की ज़ात पर कामिल यक़ीन रखो, वोह अ़न्क़रीब तुम्हें तुम्हारे ह़िस्से का रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा ।"

अ़ल्लामा इब्ने सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने अपने रफ़ीक़ से फ़रमाया : "इस अ़ज़ीम मर्द का **तवक्कुल** देखो और इस की ईमान अफ़रोज़ बातें सुनो, इस को अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ पर कितना यक़ीन है ।" फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दोस्त के साथ उस शख़्स के पास पहुंचे और फ़रमाया : "हम येह रोटी ले कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आए हैं, आप इसे क़बूल फ़रमा लें ।" येह सुन कर उस शख़्स ने कहा : "आप सह़ीह़ वक़्त पर पहुंचे हैं ।"

इसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار भी तशरीफ़ ले आए, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आते ही उस शख़्स से फ़रमाया : "मैं येह दो दिरहम आप (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के पास ले कर आया हूं, इन्हें क़बूल फ़रमा लीजिये ।" वोह शख़्स कहने लगा : "इन दिरहमों की अब कोई ज़रूरत नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे पास आज का रिज़्क़ पहुंच चुका है, वोह हमें आज के लिये काफ़ी है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने इर्शाद फ़रमाया : "आप येह दो दिरहम अपने पास रखें ताकि कल आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन से खाने की कोई चीज़ ख़रीद सकें ।"

येह सुन कर वोह शख़्स कहने लगा : "क्या तुम मुझे इस बात से ख़ौफ़ ज़दा कर रहे हो कि कल हमें रिज़्क़ कहां से मिलेगा ? ह़ालां कि तुम देख चुके हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मेरा आज का रिज़्क़ आज अ़ता फ़रमा दिया है और इसी त़रह़ वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हमें रोज़ाना हमारा रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है, मेरा उस की ज़ात पर पुख़्ता यक़ीन है। आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) अपने दिरहम वापस ले जाएं, कल हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हमें हमारे ह़िस्से का रिज़्क़ ज़रूर अ़ता फ़रमाएगा, वोह हमारा ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ है वोह हमें हरगिज़ बे यारो मददगार न छोड़ेगा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ

ह़िकायत नम्बर 115 : दीवार से खजूरें निकल पड़ीं

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है : "एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मह़फ़िल में जल्वा गर थे। आस पास मो'तक़िदीन व मुह़िब्बीन का हुजूम था। उस बा ब-र-कत मह़फ़िल में औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का ज़िक्रे ख़ैर हो रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लोगों से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की करामात सुन रहे थे।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم का ज़िक्रे ख़ैर होने लगा। लोगों ने कहा : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ने बहुत सी ख़ूबियों से नवाज़ा था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बहुत सी करामात का सुदूर हुवा। एक मर्तबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने चन्द रु-फ़क़ा के साथ किसी पहाड़ पर बैठे थे कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के एक रफ़ीक़ ने कहा : "फ़ुलां बुज़ुर्ग की बड़ी शान है, वोह अपने चराग़ में तेल की बजाए पानी डालते हैं और उन का चराग़ पानी से जलता है और सारी सारी रात जलता रहता है।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने फ़रमाया : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुख़्लिस व सादिक़ बन्दा किसी पहाड़ को हुक्म दे कि वोह अपनी जगह से हट जाए तो पहाड़ अपनी जगह छोड़ देता है।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पहाड़ को ठोकर मारी तो यकायक पहाड़ ह़-र-कत में आ गया, येह देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के रु-फ़क़ा ख़ौफ़ ज़दा हो गए।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दोबारा पहाड़ को ठोकर मारी और फ़रमाया : "ऐ पहाड़ ! साकिन हो जा, मैं ने तो अपने साथियों को समझाने और मिसाल बयान करने के लिये तुझे ठोकर मारी थी, अब साकिन हो जा।" चुनान्चे पहाड़ फ़ौरन साकिन हो गया।

जब लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की बारगाहे आ़लिया में ह़ज़रते

सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم की येह करामत बयान की तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा यक़ीने कामिल के साथ दीवार से कहे कि हमें खजूरें खिला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस पर क़ादिर है कि वोह अपने बन्दे को दीवार से ताज़ा खजूरें खिला दे।" येह कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दीवार पर अपना दस्ते करामत मारा तो दीवार से ताज़ा व उ़म्दा खजूरें गिरना शुरूअ़ हो गईं। लोगों ने आज पहली मर्तबा ऐसी खजूरें खाईं जो दरख़्त से नहीं बल्कि एक वलिय्युल्लाह की करामत से दीवार से ह़ासिल हुईं। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मग़्मूम हो गए, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि तू मुझ पर नाराज़ हो, मुझे अपनी नाराज़गी से हमेशा मह़फ़ूज़ रखना, कभी भी मुझ से नाराज़ न होना।"

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
येह करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 116 :
ख़ुश्क ज़बानें

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन हु़सैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विया अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد को मक़ामे "**त़रतूस**" में आधी रात के वक़्त देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ारो क़ित़ार रो रहे थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बाने मुबारक पर येह नसीह़त आमोज़ कलिमात जारी थे :

ख़बरदार ! जिस शख़्स ने दुन्या ही को अपना मक़्सदे अ़ज़ीम बना लिया और हर वक़्त इस की तगो दौ में लगा रहा तो कल बरोज़े क़ियामत उसे बहुत ज़ियादा ग़म व परेशानी का सामना करना पड़ेगा और जो शख़्स आख़िरत में पेश आने वाले मुआ़-मलात को याद रखता है और बरोज़े क़ियामत पेश आने वाली सख़्तियों और घबराहटों को हर दम पेशे नज़र रखता है तो उस का दिल दुन्या से उचाट हो जाता है और जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब की वई़दों से डरता है वोह भी दुन्यावी ख़्वाहिशात को छोड़ देता है।

ऐ मिस्कीन ! अगर तू चाहता है कि तुझे राह़त व सुकून और अ़ज़ीम ने'मतें मिलें तो रात को कम सोया कर और शब बेदारी को अपना मा'मूल बना ले, जब तुझे कोई नसीह़त करे, नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्अ़ करे तो उस की दा'वत क़बूल कर। तू अपने पीछे वालों के रिज़्क़ की फ़िक्र में ग़मगीन न हो क्यूं कि तू उन के रिज़्क़ का मुकल्लफ़ नहीं बनाया गया।

तू अपने आप को उस अ़ज़ीम दिन के लिये तय्यार रख जब तेरा सामना ख़ालिक़े काएनात عَزَّوَجَلَّ से होगा तू उस की बारगाह में ह़ाज़िर होगा फिर तुझ से सुवाल व जवाब होंगे। उस सख़्त दिन की तय्यारी में हर वक़्त मश्ग़ूल रह, नेक आ'माल की कसरत कर और अपने आख़िरत के ख़ज़ाने को आ'माले सालिहा की दौलत से जल्द अज़ जल्द भरने की कोशिश कर, फ़ुज़ूल मशाग़िल को तर्क कर दे और मौत से पहले मौत की तय्यारी कर ले वरना बा'द में बहुत पछतावा होगा। जिस वक़्त तेरी रूह़ निकल रही होगी और गले तक पहुंच जाएगी तो तेरी तमाम मह़बूब अश्या जिन की तू ख़्वाहिश किया करता था, सब की सब दुन्या ही में रह जाएंगी और उस वक़्त तेरी ह़सरत इन्तिहा को पहुंच चुकी होगी लिहाज़ा उस वक़्त से पहले आख़िरत की तय्यारी कर ले।"

आख़िरत की तय्यारी का बेहतरीन त़रीक़ा :

(आख़िरत की तय्यारी का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि) तू हर वक़्त येह तसव्वुर रख कि बस मौत आ पहुंची है, रूह़ मेरे गले में अटकी हुई है, बस चन्द सांस बाक़ी हैं और मैं सकरात के अ़ालम में ग़मगीन व परेशान हूं। मेरी तमाम ख़्वाहिशात मलिया मैट हो गईं, घर वालों के लिये जो तमन्नाएं थीं वो ख़ाक में मिल गईं। मेरे इर्द गिर्द मेरे अहलो इ़याल खड़े हैं और मैं उन्हें बड़ी ह़सरत से देख रहा हूं, इन में से कोई भी मेरे साथ क़ब्र में जाने को तय्यार नहीं। बस मेरे आ'माल मेरे साथ होंगे, अगर आ'माल अच्छे हुए तो आख़िरत में आसानी होगी और अगर (مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ) आ'माल बुरे हुए तो वहां की तक्लीफ़ बरदाश्त न हो सकेगी।

न बेली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई
तो क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विया अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد ने फ़रमाया : "तमाम उमूर में सब से ज़ियादा अज्रो सवाब का बाइ़स **सब्र** है, मसाइब पर सब्र करना बहुत अ़ज़ीम अम्र है, लिहाज़ा सब्र से काम ले। अपनी ज़बान को हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रख। कभी भी उस के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रह, हर हर सांस पर उस की पाकी बयान कर।"

ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती पे न हो ग़ुर्रा
ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दोबारा रोना शुरूअ़ कर दिया।

फिर फ़रमाने लगे : "हाए अफ़्सोस ! वोह दिन कैसा ख़ौफ़्नाक होगा जिस दिन मेरा रंग मु-तग़य्यर हो जाएगा, उस दिन का ख़ौफ़ मुझे खाए जाता है, जब ज़बानें ख़ुश्क हो जाएंगी, अगर बरोज़े क़ियामत मेरा ज़ादे आख़िरत कम पड़ गया तो मेरा क्या बनेगा, उस वक़्त मैं कहां जाऊंगा ? कौन मेरी मदद करेगा ?" इतना कहने के बा'द फिर दर्द भरे अन्दाज़ में रोने लगे।

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है

जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया : "हुज़ूर ! येह नसीह़त आमोज़ और अ़ज़ीम बातें किस के लिये हैं और आप ने कहां से सीखी हैं ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "येह हर अ़क़्ल मन्द के लिये मुफ़ीद बातें हैं, जो भी इन पर अ़मल करेगा फ़लाह़ व कामरानी से मुशर्रफ़ होगा और येह तमाम बातें मैं ने एक बहुत ही दाना शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से सीखी हैं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 117 : ज़मीन सोना बन गई

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन दावूद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُوْد फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान मग़रिबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते सुना : "मैं रिज़्क़े ह़लाल ह़ासिल करने के लिये पहाड़ से लकड़ियां काट कर लाता और उन्हें बेच कर अपनी ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदता, इस त़रह़ मेरा गुज़र बसर होता था। मैं ह़द द-रजा एह़तियात़ करता कि कहीं मेरे रिज़्क़े ह़लाल में शुबे वाली या ना जाइज़ चीज़ शामिल न हो जाए। अल ग़रज़ ! मैं ख़ूब एह़तियात़ से काम लेता और शुकूक व शुब्हात वाली चीज़ों को तर्क कर देता।

एक रात मुझे ख़्वाब में बसरा के मशहूर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की ज़ियारत हुई, उन में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار भी शामिल थे।

मैं ने उन्हें अपने ह़ालात से आगाह किया और अ़र्ज़ की : "आप लोग मुसल्मानों के इमाम व मुक़्तदा हैं, मुझे रिज़्क़े ह़लाल के ह़ुसूल का कोई ऐसा त़रीक़ा बताएं कि जिस में न ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी हो, न मख़्लूक़ में से किसी का एह़सान हो।" मेरी येह बात सुन कर उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे मक़ामे "**त़रत़ूस**" से दूर एक ऐसी जगह ले गए जहां ह़लाल परिन्दों की कसरत थी। उन बुज़ुर्गों ने मुझे यहां छोड़ दिया और फ़रमाया : "तुम यहां रहो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें खाओ। येही वोह त़रीक़ा है जिस में न ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी है, न मख़्लूक़ में से किसी का एह़सान।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान मग़रिबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं तक़रीबन छ माह उस जगह ठहरा रहा, वहां से ह़लाल परिन्दे शिकार करता, कभी उन को भून कर और कभी कच्चा ही खा लेता और फिर शाम को एक मुसाफ़िर ख़ाने में जा कर क़ियाम करता। मेरी इस ह़ालत से लोग बा ख़बर हो गए और जब मैं मशहूर हो गया तो लोग मेरी इ़ज़्ज़त करने लगे। मैं ने अपने दिल में सोचा कि अब यहां रहना

मुनासिब नहीं। अगर मज़ीद यहां रहा तो रियाकारी या गुरूर व तकब्बुर जैसे फ़ितनों में मुब्तला होने का अन्देशा है। चुनान्चे मैं ने उस मुसाफ़िर ख़ाने में जाना छोड़ दिया और तीन माह किसी और जगह रिहाइश रखी। अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मैं अपने दिल को पाक व साफ़ और मुत्मइन पाता और मेरी ह़ालत ऐसी हो चुकी थी कि मुझे लोगों की बातों से बिल्कुल उन्स भी न रहा।

एक मर्तबा मैं मक़ामे **"मदीफ़"** की त़रफ़ गया और रास्ते में बैठ गया। अचानक मेरी नज़र एक नौ जवान पर पड़ी जो **"लामैस"** से **"त़रत़ूस"** की जानिब जा रहा था। मेरे पास कुछ रक़म थी जो मैं ने उस वक़्त से बचा कर रखी थी जब मैं लकड़ियां बेचा करता था। मैं ने सोचा, मैं तो ह़लाल परिन्दों का गोश्त खा कर गुज़ारा कर लेता हूं, क्या ही अच्छा हो अगर मैं येह रक़म इस मुसाफ़िर को दे दूं ताकि जब येह तरतूस शहर में दाख़िल हो तो वहां से कोई चीज़ ख़रीद कर खा ले। इस ख़याल के आते ही मैं उस नौ जवान की त़रफ़ बढ़ा और रक़म की थैली निकालने के लिये जैसे ही मैं ने जैब में हाथ डाला तो उस मुसाफ़िर नौ जवान के होंटों ने ह़-र-कत की और मेरे आस पास की सारी **ज़मीन सोना बन गई**। क़रीब था कि उस की चमक से मेरी आंखों की रोशनी ज़ाएअ़ हो जाती, मुझ पर यकदम ऐसी वह़शत त़ारी हुई कि मैं आगे बढ़ कर उसे सलाम भी न कर सका और वोह वहां से आगे गुज़र गया। फिर कुछ अ़र्से बा'द उस अ़ज़ीम नौ जवान से दोबारा मेरी मुलाक़ात हुई, वोह त़रत़ूस के अ़लाक़े में एक बुर्ज के नीचे बैठा था और ऊस के सामने एक बरतन में पानी रखा हुवा था। मैं उस के पास गया, सलाम किया और दर-ख़्वास्त की : "हुज़ूर ! मुझे कुछ नसीह़त कीजिये।" मेरी इस बात पर नौ जवान ने अपना पाउं फैलाया और उस बरतन को उल्टा दिया जिस में पानी था, सारा पानी बह गया और उसे ज़मीन ने फ़ौरन जज़्ब कर लिया। फिर उस नौ जवान ने कहा : "फ़ुज़ूल गोई नेकियों को इस त़रह़ चूस लेती है जिस त़रह़ ख़ुश्क ज़मीन पानी को चूस लेती है, पस अब तुम जाओ तुम्हारे लिये इतनी ही नसीह़त काफ़ी है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

मैं बेकार बातों से बच कर हमेशा
करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

ह़िकायत नम्बर 118 : गुस्ताख़े सह़ाबा का इ़ब्रतनाक अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सीब बशीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बताया कि मैं तिजारत किया करता था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से काफ़ी मालदार था। मुझे हर त़रह़ की आसाइशें मुयस्सर थीं और मैं अक्सर ईरान के शहरों में रहा करता था।

एक मर्तबा मेरे एक मज़दूर ने मुझे ख़बर दी कि फ़ुलां मुसाफ़िर ख़ाने में एक शख़्स मर गया है, वहां उस का कोई भी वारिस नहीं, अब उस की लाश बे गोरो कफ़न पड़ी है। जब मैं ने येह सुना तो मैं मुसाफ़िर ख़ाने पहुंचा, वहां मैं ने एक शख़्स को मुर्दा ह़ालत में पाया, उस के पेट पर कच्ची ईंटें रखी हुई थीं। मैं ने एक चादर उस पर डाल दी, उस के पास उस के कुछ साथी भी थे। उन्हों ने मुझे बताया : "येह शख़्स बहुत इ़बादत गुज़ार और नेक था लेकिन आज इसे कफ़न भी मुयस्सर नहीं और हमारे पास इतनी रक़म भी नहीं कि इस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन कर सकें।" जब मैं ने येह सुना तो उजरत दे कर एक शख़्स को कफ़न लेने के लिये और एक को क़ब्र खोदने के लिये भेजा और हम उस के लिये कच्ची ईंटें तय्यार करने लगे फिर मैं ने पानी गर्म किया ताकि उसे ग़ुस्ल दें। अभी हम लोग इन्हीं कामों में मश्ग़ूल थे कि यकायक वोह मुर्दा उठ बैठा, ईंटें उस के पेट से गिर गईं फिर वोह बड़ी भयानक आवाज़ में चीख़ने लगा : हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! जब उस के साथियों ने येह ख़ौफ़्नाक मन्ज़र देखा तो वोह वहां से भाग गए। मैं उस के क़रीब गया और उस का बाज़ू पकड़ कर हिलाया। फिर उस से पूछा : "तू कौन है और तेरा क्या मुआ़-मला है ?"

वोह कहने लगा : "मैं कूफ़ा का रिहाइशी था और बद क़िस्मती से मुझे ऐसे बुरे लोगों की सोह़बत मिली जो ह़ज़राते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को गालियां दिया करते थे। उन की सोह़बते बद की वजह से मैं भी उन के साथ मिल कर शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को गालियां दिया करता और उन से नफ़रत करता था।"

सय्यिदुना अबुल ख़सीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ اللَّطِیْف फ़रमाते हैं, मैं ने उस की येह बात सुन कर इस्तिग़फ़ार पढ़ा और कहा : "ऐ बद बख़्त ! फिर तो तुझे सख़्त सज़ा मिलनी चाहिये और तू मरने के बा'द ज़िन्दा कैसे हो गया ?" तो उस ने जवाब दिया : "मेरे नेक आ'माल ने मुझे कोई फ़ाएदा न दिया। सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان की गुस्ताख़ी की वजह से मुझे मरने के बा'द घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया गया और वहां मुझे मेरा ठिकाना दिखाया गया, वहां की आग बहुत भड़क रही थी।

फिर मुझ से कहा गया : "अ़न्क़रीब तुझे दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा ताकि तू अपने बद अ़क़ीदा साथियों को अपने दर्दनाक अन्जाम की ख़बर दे और उन्हें बताए कि जो कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से दुश्मनी रखता है उस का आख़िरत में कैसा दर्दनाक अन्जाम होता है, जब तू उन को अपने बारे में बता देगा तो फिर दोबारा तुझे तेरे अस्ली ठिकाने (या'नी जहन्नम) में डाल दिया जाएगा।"

येह ख़बर देने के लिये मुझे दोबारा ज़िन्दा किया गया है ताकि मेरी इस ह़ालत से गुस्ताख़ाने सह़ाबा इ़ब्रत ह़ासिल करें और अपनी गुस्ताख़ियों से बाज़ आ जाएं वरना जो कोई इन ह़ज़रात की शान में गुस्ताख़ी करेगा उस का अन्जाम भी मेरी त़रह़ होगा।"

इतना कहने के बा'द वोह शख़्स दोबारा मुर्दा ह़ालत में हो गया। मैं ने भी और दीगर लोगों ने भी उस की येह इ़ब्रतनाक बातें सुनीं, इतनी ही देर में मज़दूर कफ़न ख़रीद लाया, मैं ने वोह कफ़न लिया

और कहा : "मैं ऐसे बद नसीब शख़्स की हरगिज़ तज्हीज़ व तक्फ़ीन नहीं करूंगा जो शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का गुस्ताख़ हो, तुम अपने साथी को संभालो मैं इस के पास ठहरना भी गवारा नहीं करता।"

इस के बा'द मैं वहां से वापस चला आया फिर मुझे बताया गया कि उस के बद अ़क़ीदा साथियों ने ही उसे गुस्ल व कफ़न दिया और उन चन्द बन्दों ही ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढी, उन के इलावा किसी ने भी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत न की, उस के बद अ़क़ीदा साथियों की बद बख़्ती देखो कि वोह फिर भी लोगों से पूछ रहे थे कि तुम ने हमारे साथी की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत क्यूं नहीं की ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡاَعۡظَم फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सीब عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ اللَّطِیۡف से पूछा : "क्या तुम इस वाक़िए के वक़्त वहां मौजूद थे ?" उन्हों ने जवाब दिया : "जी हां ! मैं ने अपनी आंखों से उस बद बख़्त को दोबारा ज़िन्दा होते देखा और अपने कानों से उस की बातें सुनीं।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡاَعۡظَم ने फ़रमाया : "अब मैं भी उस बे अदब व गुस्ताख़ शख़्स की इस बद तरीन ह़ालत की ख़बर लोगों को ज़रूर दूंगा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की शान में गुस्ताख़ी और बे अ-दबी से मह़फ़ूज़ रखे और तमाम सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की सच्ची मह़ब्बत अ़ता फ़रमाए, इन की ख़ूब ख़ूब ता'ज़ीम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इ़नायत या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

हिकायत नम्बर 119 : बदनामे ज़माना फ़ाह़िशा ने तौबा कैसे की ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "एक फ़ाह़िशा औ़रत के बारे में मशहूर था कि उसे दुन्या का तिहाई हुस्न दिया गया है। उस की बदकारी भी इन्तिहा को पहुंच चुकी थी, जब तक वोह सो दीनार न ले लेती अपने क़रीब किसी को न आने देती। लोग उस के हुस्न की वजह से इतनी भारी रक़म अदा कर के भी उस से बदकारी करते।

एक मर्तबा एक आ़बिद की उस औ़रत पर अचानक नज़र पड़ गई, इतनी ह़सीनो जमील औ़रत को देख कर वोह आ़बिद उस के इ़श्क़ में मुब्तला हो गया और उस ने इरादा किया कि मैं इस ह़सीनो जमील औ़रत का क़ुर्ब ज़रूर ह़ासिल करूंगा, जब उसे मा'लूम हुवा कि 100 दीनार दिये बिग़ैर मेरी येह

ह़सरत पूरी नहीं हो सकती तो उस ने मत़्लूबा रक़म ह़ासिल करने के लिये दिन रात मज़दूरी की। काफ़ी तगो दौ के बा'द जब 100 दीनार जम्अ़ हो गए तो वोह उस बदकार औ़रत के पास पहुंचा और कहा : "ऐ हुस्नो जमाल की पैकर ! मैं पहली ही नज़र में तेरा दीवाना हो गया था, तेरा क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये मैं ने मज़दूरी की और अब सो दीनार ले कर तेरे पास आया हूं।"

येह सुन कर उस फ़ाह़िशा औ़रत ने कहा : "अन्दर आ जाओ।" जब वोह आ़बिद कमरे में दाख़िल हुवा तो देखा कि वोह ह़सीनो जमील औ़रत सोने के तख़्त पर बैठी है। उस ने आ़बिद से कहा : "मेरे क़रीब आओ और अपनी देरीना ख़्वाहिश पूरी कर लो, मैं ह़ाज़िर हूं, आओ ! मेरे क़रीब आओ।" वोह आ़बिद बेताब हो कर उस की त़रफ़ बढ़ा और उस के क़रीब तख़्त पर जा बैठा। जब वोह दोनों बदकारी के लिये बिल्कुल तय्यार हो गए तो उस आ़बिद की साबिक़ा इ़बादत उस के काम आ गई और उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी का दिन याद आ गया। बस येह ख़याल आना था कि उस के जिस्म पर कपकपी त़ारी हो गई, उस की शहवत ख़त्म हो गई और उसे अपने इस फ़े'ले बद के इरादे पर बड़ी शरमिन्दगी हुई। उस ने औ़रत से कहा : "मुझे जाने दो और येह सो दीनार भी तुम अपने पास रखो, मैं इस गुनाह से बाज़ आया।" उस औ़रत ने ह़ैरान हो कर पूछा : "आख़िर तुम्हें क्या हुवा ? तुम तो कह रहे थे कि तुम्हारा हुस्नो जमाल देख कर मैं दीवाना हो गया हूं और मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये तुम ने बहुत जतन किये, अब जब कि तुम मेरे क़ुर्ब में हो और मैं ने अपने आप को तुम्हारे ह़वाले कर दिया है तो अब तुम मुझ से दूर भाग रहे हो, आख़िर क्या चीज़ तुम्हें मेरे क़ुर्ब से मानेअ़ है ?"

येह सुन कर उस आ़बिद ने कहा : "मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डर लग रहा है और उस का ख़ौफ़ तेरी त़रफ़ माइल नहीं होने दे रहा, मुझे उस दिन का ख़ौफ़ दामन गीर है जब मैं अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होउंगा, अगर मैं ने येह गुनाह कर लिया तो कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी का सामना किस त़रह़ कर सकूंगा, लिहाज़ा अब मेरा दिल तुझ से उचाट हो चुका है, मुझे यहां से जाने दो।"

आ़बिद की येह बातें सुन कर फ़ाह़िशा औ़रत बहुत ह़ैरान हुई और कहने लगी : "अगर तुम अपनी इस गुफ़्त-गू में सच्चे हो तो मैं भी पुख़्ता इरादा करती हूं कि तुम्हारे इ़लावा कोई और मेरा शोहर हरगिज़ नहीं बन सकता, मैं तुम ही से शादी करूंगी।" आ़बिद कहने लगा : "तुम मुझे छोड़ दो मुझे बहुत घबराहट हो रही है।" औ़रत ने कहा : "अगर तुम मुझ से शादी कर लो तो मैं तुम्हें छोड़ देती हूं।" आ़बिद ने कहा : "जब तक मैं यहां से चला न जाऊं उस वक़्त तक मैं शादी के लिये तय्यार नहीं।" औ़रत ने कहा : "अच्छा ! अभी तुम चले जाओ लेकिन मैं तुम्हारे पास आऊंगी और तुम ही से शादी करूंगी।" फिर वोह आ़बिद सर पर कपड़ा डाले मुंह छुपाए शरमिन्दा शरमिन्दा वहां से निकला और अपने शहर की त़रफ़ रवाना हो गया।

फ़ाह़िशा औ़रत के दिल में उस आ़बिद की बातें असर कर चुकी थीं। चुनान्चे उस ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली, फिर उस ने अपने शहर को ख़ैरबाद कहा और उस आ़बिद के बारे में पूछती पूछती बिल आख़िर उस के घर पहुंच गई। लोगों ने आ़बिद को बताया कि फ़ुलां औ़रत तुम से मुलाक़ात करना चाहती है। आ़बिद बाहर आया जैसे ही उस की नज़र औ़रत पर पड़ी तो एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह़ आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई। औ़रत उस की त़रफ़ बढ़ी तो देखा कि उस का जिस्म साकित हो चुका था। वोह बहुत ज़ियादा ग़मज़दा हुई और उस ने लोगों से पूछा : "क्या इस का कोई क़रीबी रिश्तेदार है ?" लोगों ने कहा : "हां, इस का भाई है लेकिन वोह बहुत ग़रीब है।" येह सुन कर उस औ़रत ने कहा : "मैं तो इस नेक आ़बिद से शादी करना चाहती थी लेकिन येह तो दुन्या से रुख़्सत हो गया, अब मैं इस की मह़ब्बत में इस के भाई से शादी करूंगी।"

चुनान्चे उस औ़रत और आ़बिद के भाई की शादी हो गई, अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उन्हें नेक व सालेह़ औलाद अ़त़ा फ़रमाई और उन के हां सात बेटे हुए जो सब के सब अपने ज़माने के मशहूर वली बने।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी अपना ऐसा ख़ौफ़ अ़त़ा फ़रमा कि हम हर क़िस्म के गुनाहों से मह़फ़ूज़ रहें, हमारा कोई उ़ज़्व कभी भी तेरी ना फ़रमानी वाले कामों की त़रफ़ सब्क़त न करे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें इ़बादत की लज़्ज़त व चाश्नी अ़त़ा फ़रमा, अगर ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत हम से गुनाह सरज़द हो जाए तो अपने फ़ज़्लो करम से फ़ौरन तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, अपनी नाराज़गी से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा, हमें गुनाहों पर शरमिन्दगी अ़त़ा फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ही गुनाहगारों के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है, अपने मह़बूबों के सदक़े हमारी तमाम ख़त़ाएं मुआ़फ़ फ़रमा दे और अपनी दाइमी रिज़ा की दौलत से हमारी झोलियां भर दे। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

बख़्श हमारी सारी ख़त़ाएं खोल दे हम पर अपनी अ़त़ाएं
बरसा दे रह़मत की बरखा, या अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरी झोली भर दे

ह़िकायत नम्बर 120 : मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ रखने वाली बूढ़ी औ़रत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान रज़ा-ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं किसी ज़रूरी काम के सिल्सिले में बैतल मुक़द्दस से एक गाउं की त़रफ़ रवाना हुवा। रास्ते में एक बूढ़ी औ़रत मिली जिस ने ऊन का जुब्बा पहना हुवा था और ऊन ही की चादर ओढ़ी हुई थी। मैं ने उसे सलाम किया उस ने जवाब

दिया और पूछा : "बेटा ! तुम कहां से आ रहे हो और कहां का इरादा है ?" मैं ने बताया : "मैं बैतल मुक़द्दस से आ रहा हूं और फ़ुलां गाउं किसी काम के सिल्सिले में जा रहा हूं।" उस बूढ़ी औ़रत ने फिर पूछा : "जहां से तुम आए हो और जहां जाने का तुम्हारा इरादा है इन दोनों अ़लाक़ों के दरमियान कितना फ़ासिला है ?" मैं ने कहा : "तक़रीबन 18 मील का फ़ासिला होगा।" वोह कहने लगी : "बेटे ! फिर तो तुम्हारा काम बहुत ज़रूरी होगा जिस के लिये तुम ने इतनी मशक़्क़त बरदाश्त की है ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मुझे वाक़ेई बहुत ज़रूरी काम है।" उस ने पूछा : "तुम्हारा नाम क्या है ?" मैं ने कहा : "उ़स्मान।" वोह कहने लगी : "ऐ उ़स्मान ! तुम जिस गाउं में अपने काम से जा रहे हो उस के मालिक से अ़र्ज़ क्यूं नहीं करते कि वोह तुम्हें थकाए बिग़ैर तुम्हारी ह़ाजत पूरी कर दे और तुम्हें सफ़र की सुऊ़बतें बरदाश्त न करनी पड़ें।"

मैं इस कलाम से उस ज़ईफ़ औ़रत की मुराद न समझ सका और कहा : "मेरे और उस बस्ती के मालिक के दरमियान कोई ख़ास तअ़ल्लुक़ नहीं कि वोह मेरी ह़ाजत को इस त़रह़ पूरा कर दे।" उस औ़रत ने फिर पूछा : "ऐ उ़स्मान ! वोह कौन सी शै है जिस ने तुझे उस गाउं के मालिके ह़क़ीक़ी की मा'रिफ़त से ना बलद रखा है और तुम्हारा उस मालिक से तअ़ल्लुक़ मुन्क़तेअ़ हो गया है।"

अब मैं उस बूढ़ी औ़रत की मुराद समझ गया कि येह मुझे क्या समझाना चाहती है या'नी येह मेरी तवज्जोह इस बात की त़रफ़ दिला रही है कि ख़ालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से अपना तअ़ल्लुक़ मज़बूत़ क्यूं नहीं रखा और तू उस की मा'रिफ़त में अभी तक कामिल क्यूं नहीं हुवा ? जब मुझे उस की बात समझ आई तो मैं रोने लगा। उस बुढ़िया ने पूछा : "ऐ उ़स्मान ! तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" क्या कोई ऐसा काम है कि तूने वोह सर अन्जाम दिया और अब तू उसे भूल गया या फिर कोई ऐसी बात है कि पहले तू उसे भूला हुवा था अब वोह तुझे याद आ गई है ?" मैं ने कहा : "वाक़ेई अब तक मैं ग़फ़्लत में था और अब ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो चुका हूं।" येह सुन कर उस औ़रत ने कहा : "शुक्र है उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का जिस ने तुझे ग़फ़्लत से बेदार किया और अपनी त़रफ़ राह दी।"

ऐ उ़स्मान ! "क्या तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करता हूं।" उस ने फिर पूछा : "क्या तुम अपने इस दा'वे में सच्चे हो ?" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस से बहुत मह़ब्बत करता हूं।"

बुढ़िया ने कहा : "ऐ उ़स्मान ! जिस पाक ज़ात से तुम ने मह़ब्बत की है क्या तुम जानते हो कि उस ने तुम्हें किस किस ह़िक्मत से नवाज़ा और कौन सी कौन सी भलाइयां अ़त़ा फ़रमाईं ?" मैं इस बात का जवाब न दे सका और ख़ामोश रहा। उस ने कहा : "ऐ उ़स्मान ! शायद तू उन लोगों में से है जो अपनी मह़ब्बत को पोशीदा रखना चाहते हैं और लोगों पर ज़ाहिर नहीं होने देते।" इस पर भी मैं उसे कोई जवाब न दे सका और मैं ने रोना शुरूअ़ कर दिया मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या जवाब दूं।

मेरी इस ह़ालत को देख कर उस अ़ज़ीम बूढ़ी औ़रत ने कहा : "ऐ उ़स्मान ! अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त अपनी ह़िक्मत के चश्मे, अपनी मा'रिफ़त की दौलत और अपनी पोशीदा मह़ब्बत ना लाइक़ों को अ़ता नहीं फ़रमाता, वोह ना लाइक़ों और ना अहलों से येह तमाम ने'मतें दूर रखता है।"

मैं ने उस अ़ज़ीम औ़रत से अ़र्ज़ की : "आप मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी सच्ची मह़ब्बत अ़ता फ़रमाए।" कुछ देर के बा'द मैं ने फिर उस औ़रत से दुआ़ के लिये अ़र्ज़ की तो उस ने कहा : "ऐ उ़स्मान ! वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तो दिलों के भेदों को भी जानता है, वोह अपने चाहने वालों के दिलों से बा ख़बर है कि कौन उस से कितनी मह़ब्बत करता है और कौन उस की मह़ब्बत का त़ालिब है ? ऐ उ़स्मान ! तुम अपने मत़्लूबा काम के लिये जाओ, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे अपनी मा'रिफ़त के सल्ब हो जाने का ख़ौफ़ न होता तो ऐसे ऐसे अ़जाइबात ज़ाहिर करती कि तू हैरान रह जाता।" फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और कहने लगी : "ऐ उ़स्मान ! जब तक तुम ख़ुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत के लिये नहीं तड़पोगे उस वक़्त तक तुम्हें कोई फ़ाएदा ह़ासिल न होगा और तुम्हें ग़म से उस वक़्त तक तस्कीन ह़ासिल न होगी जब तक तुम ख़ुद नहीं चाहोगे। बन्दा हमेशा अपनी सच्ची त़लब और शौक़े कामिल से अपनी मन्ज़िल को पाता है।"

इतना कहने के बा'द वोह अ़ज़ीम औ़रत वहां से रुख़्सत हो गई। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "जब भी मुझे उस बूढ़ी औ़रत की वोह बातें और मुलाक़ात याद आती है तो मैं बे इख़्तियार रोने लगता हूं और मुझ पर ग़शी त़ारी हो जाती है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपनी दाइमी मह़ब्बत अ़ता फ़रमा और अपने मह़बूब बन्दों में शामिल फ़रमा ले। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे उन औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين का वासित़ा जिन के दिलों में तेरी मह़ब्बत की शम्एं रोशन हैं और वोह हर वक़्त तेरी मह़ब्बत में गुम रहते हैं तू हमें अपनी मह़ब्बत व विलायत की ख़ैरात से मालामाल कर दे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ !　　न पाऊं मैं अपना पता या इलाही عَزَّوَجَلَّ !
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे　　मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

ह़िकायत नम्बर 121 : चार अ़ज़ीम ने'मतें

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के साथ "**लुबनान**" के पहाड़ों में सफ़र पर था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक

मक़ाम पर पहुंच कर मुझ से फ़रमाया : "ऐ सालिम ! जब तक मैं वापस न आ जाऊं तुम इसी जगह ठहरना।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक पहाड़ की सम्त गए और मेरी नज़रों से ओझल हो गए। दो दिन गुज़र गए लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस तशरीफ़ न लाए। मैं अकेला उस वीरान जगह परेशान था, जब मुझे भूक लगती तो पत्ते और सब्ज़ी खा लेता, जब प्यास की शिद्दत होती तो क़रीबी तालाब से पानी पी लेता। बिल आख़िर तीन दिन बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی तशरीफ़ लाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के चेहरे का रंग मु-तग़य्यिर था और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ज़ियादा परेशानी के आ़लम में थे। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ह़ालत कुछ संभली तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! क्या किसी दरिन्दे की वजह से आप पर ख़ौफ़ त़ारी है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाबन फ़रमाया : "नहीं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इतने ख़ौफ़ ज़दा और परेशान क्यूं हैं ?" फ़रमाने लगे : "यहां से जाने के बा'द मैं एक ग़ार की त़रफ़ निकल गया। जब मैं उस में दाख़िल हुवा तो एक ऐसे बुज़ुर्ग को देखा जिन की दाढ़ी और सर के बाल बिल्कुल सफ़ेद हो चुके थे, जिस्म बहुत कमज़ोर व लाग़र था ऐसा मा'लूम होता था जैसे येह बुज़ुर्ग अभी क़ब्र से निकल कर आ रहे हैं, वोह निहायत ग़मगीन ह़ालत में अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल थे और निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ रहे थे। जब उन्हों ने सलाम फैरा तो मैं ने आगे बढ़ कर उन्हें सलाम किया।" उन्हों ने जवाब दिया और दोबारा नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए, अ़स्र तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहे फिर एक पथ्थर से टेक लगा कर बैठ गए और سُبْحٰنَ الله سُبْحٰنَ الله की सदाएं बुलन्द करने लगे। उन्हों ने मुझ से कोई बात न की बिल आख़िर मैं ने ही उन से अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये और मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ कीजिये।"

उस बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ बेटा ! मैं दुआ़ करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अपनी सच्ची मह़ब्बत और अपने क़ुर्बे ख़ास की दौलत से मालामाल फ़रमाए। इतना कहने के बा'द वोह बुज़ुर्ग चुप हो गए।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! कुछ और नसीह़त फ़रमाइये।" फ़रमाया : "जिस शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने क़ुर्ब की दौलत से नवाज़ता है उसे चार अ़ज़ीम ने'मतें अ़त़ा फ़रमाता है :

(1)...... बिग़ैर ख़ानदानी शानो शौकत के इ़ज़्ज़त।

(2)...... बिग़ैर त़लब के इ़ल्म।

(3)...... बिग़ैर माल के ग़िना।

(4)...... बिग़ैर जमाअ़त के उन्स व उल्फ़त।"

इतना कहने के बा'द उस बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक दर्दनाक चीख़ मारी और बेहोश हो गए। मैं ने गुमान किया कि शायद येह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं लेकिन तीन दिन के बा'द

उन्हें इफ़ाक़ा हुवा, फ़ौरन क़रीबी चश्मे पर गए। वुज़ू किया और मुझ से पूछा : "ऐ बेटा इस ह़ालत में मेरी कितनी नमाज़ें फ़ौत हो गईं दो या तीन नमाज़ें ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! आप की तीन दिन और तीन रातों की नमाज़ें फ़ौत हो चुकी हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तीन दिन तक बेहोशी की ह़ालत में रहे हैं।" पस उन्हों ने अपनी नमाज़ें मुकम्मल कीं।

फिर मुझ से फ़रमाया : "जब मैं अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हूं तो मेरा शौक़े मुलाक़ात बढ़ जाता है, मुझ पर वज्दानी कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है, मैं मख़्लूक़ से मुलाक़ात पसन्द नहीं करता क्यूं कि लोगों की मुलाक़ात मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर देती है। बेटा ! अब तुम यहां से चले जाओ ताकि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत कर सकूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे।"

जब मैं ने येह सुना तो मुझे रोना आ गया और मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! मैं मुसल्सल तीन दिन आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर रहा हूं, मुझे मज़ीद कुछ नसीह़त फ़रमाइये।"

तो वोह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे : "ऐ मेरे बेटे ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सच्ची मह़ब्बत कर, उस की मह़ब्बत के इ़वज़ कोई चीज़ त़लब न कर, उस से बे ग़रज़ मह़ब्बत कर। बेशक जो लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हैं वोह लोगों के सरदार हैं, ज़ाहिदों की निशानियां हैं। ऐसे लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुन्तख़ब शुदा बन्दे हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी मह़ब्बत के लिये मुन्तख़ब फ़रमा लिया है, येह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दे हैं।" इतना कहने के बा'द उस नेक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक चीख़ मारी और उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

कुछ ही देर बा'द मैं ने देखा कि मुख़्तलिफ़ सम्तों से बहुत से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पहाड़ों से उतर कर आ रहे हैं। उन्हों ने उस बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तक्फ़ीन की, नमाज़े जनाज़ा अदा की और उसे दफ़्न कर दिया।

जब वोह जाने लगे तो मैं ने उन से पूछा : "येह बुज़ुर्ग कौन थे और इन का नाम क्या था ?" उन्हों ने बताया : "इन का नाम **शैबानुल मुसाब** عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَهَّاب है।" इतना कहने के बा'द वोह तमाम सालिह़ीन वहां से चले गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अहले शाम से ह़ज़रते सय्यिदुना शैबानुल मुसाब عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَهَّاب के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा : "उन्हों ने बताया कि लोग उन्हें दीवाना समझते थे और बच्चे उन्हें पागल समझ कर तंग करते और पथ्थर मारते इसी लिये वोह यहां से चले गए और पहाड़ों में मश्ग़ूले इ़बादत हो गए।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी अपना कुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमा, दुन्या की मह़ब्बत से बचा कर अपनी मह़ब्बत की ला ज़वाल दौलत से सरफ़राज़ फ़रमा, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की त़रह़ खूब इ़बादत व रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ अ़ता फ़रमा, हर वक़्त अपने और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुम रहने की सआ़दत अ़ता फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर 122 : क़त्ल की धमकी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अल ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं : "अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने एक शख़्स को ह़ाकिम बना कर मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا भेजा ताकि वोह बैअ़त वग़ैरा का सिल्सिला करे और इन्तिज़ामात संभाले।" चुनान्चे मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के पास गया और उन से कहा : "आओ हम सब अपने शहर के नए ह़ाकिम के पास चलते हैं ताकि उस से मुलाक़ात करें और उसे ए'तिमाद में लें।"

चुनान्चे हम उस ह़ाकिम के पास गए और उसे सलाम किया, उस ने हमें अपने पास बुलाया और कहा : "तुम में (ह़ज़रते सय्यिदुना) सई़द बिन मुसय्यब (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) कौन है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया : "ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उ-मरा से तअ़ल्लुक़ नहीं रखते उन्हों ने मस्जिद में रहने को लाज़िम कर लिया है, वोह हर वक़्त दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूले इ़बादत रहते हैं, दुन्यादारों से उन्हें कोई ग़रज़ नहीं, वोह उ-मरा के दरबारों में जाना पसन्द नहीं फ़रमाते।"

उस ह़ाकिम ने कहा : "तुम लोग उसे मेरे पास आने की तरग़ीब दिलाओ और उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह न आया तो मैं उसे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा।" उस ह़ाकिम ने तीन मर्तबा क़सम खा कर इन अल्फ़ाज़ के साथ क़त्ल की धमकी दी। ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस ज़ालिम हुक्मरान की येह धमकी सुन कर हम बहुत परेशान हुए और वापस चले आए। मैं सीधा मस्जिद में गया और ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास पहुंचा, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक सुतून से टेक लगाए बैठे थे। मैं ने उन्हें सारी सूरते ह़ाल से आगाह किया और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मेरी तो राय येह है कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उ़म्रह करने चले जाएं और कुछ अ़र्सा मक्कए मुकर्रमा में गुज़ारें ताकि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस शरीर ह़ाकिम की नज़रों से ओझल रहें और मुआ़-मला रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो जाए।"

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "मैं इस अ़मल में अपनी निय्यत ह़ाज़िर नहीं पाता और मेरे नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल वोह है जो खुलूसे निय्यत से हो और सिर्फ़ रिज़ाए

इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये हो।'' मैं ने कहा : ''फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस त़रह़ करें कि चन्द दिन के लिये किसी दोस्त के हां क़ियाम फ़रमाएं इस त़रह़ जब किसी शख़्स की आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर नज़र नहीं पड़ेगी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में नहीं होंगे तो चन्द दिनों में मुआ़-मला ख़त्म हो जाएगा और ह़ाकिम येही समझेगा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहीं चले गए हैं।''

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अगर मैं ऐसा करूं और किसी के घर में क़ियाम करूं, तो जब मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ، حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ की सदाएं बुलन्द कर के मुझे दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाएगा तो मैं उस के हुक्म से रू गरदानी किस त़रह़ कर सकूंगा, दिन रात मुझे मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की जानिब से मस्जिद में ह़ाज़िरी का हुक्म मिले और मैं एक ज़ालिम हुक्मरान की वजह से अह़-कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ए'राज़ करूं। येह बात मैं कभी भी गवारा नहीं कर सकता, चाहे मेरी जान ही क्यूं न चली जाए मैं मस्जिद को हरगिज़ हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा।''

येह जुरअत मन्दाना जवाब सुन कर मैं ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस त़रह़ करें कि किसी और मस्जिद में नमाज़ अदा फ़रमा लिया करें और अपनी मजलिसे इ़ल्म किसी और जगह क़ाइम कर लिया करें। इस त़रह़ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ह़ाकिम की नज़रों से ओझल रह सकते हैं।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि ''मैं अ़र्सए दराज़ से इसी मस्जिद में इसी सुतून के पास अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत कर रहा हूं, अब किसी ज़ालिम के ख़ौफ़ से मैं इस जगह को छोड़ दूं येह मुझे हरगिज़ मन्ज़ूर नहीं,मैं इसी मस्जिद में इसी सुतून के पास इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मशग़ूल रहूंगा।''

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरी तीनों बातों से इन्कार फ़रमा दिया तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रह़्म फ़रमाए, क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी मौत से डर नहीं लगता लोग तो मौत के नाम से भी कांप जाते हैं और आप हैं कि ह़ाकिम की शदीद धमकी के बा वुजूद ज़र्रा बराबर भी ख़ौफ़ ज़दा नहीं हुए।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी से भी नहीं डरता, मुझे सिर्फ़ उसी पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है उस के इ़लावा मैं मख़्लूक़ में किसी से नहीं डरता।''

मैं ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! ह़ाकिम ने शदीद धमकी दी है, मैं तो बहुत परेशान हो गया हूं कहीं वोह ज़ालिम ह़ाकिम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कोई नुक़्सान न पहुंचा दे।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ क़ासिम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! तुम बे फ़िक्र रहो, मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा और اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेहतरी होगी। मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ जो कि अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है, उस की बारगाह में दुआ़ करता हूं कि वोह मेरे मुआ़-मले को इस ज़ालिम ह़ाकिम से भुला दे।

ऐ क़ासिम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! तुम बे फ़िक्र रहो, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर होगा।'' येह सुन

कर मैं वहां से चला आया, मुझे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से बहुत परेशानी का सामना था। मैं रोज़ाना लोगों से पूछता कि आज शहर में कोई ख़ास वाक़िआ़ तो पेश नहीं आया। आज ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कोई ना खुश गवार वाक़िआ़ तो पेश नहीं आया लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे हर मर्तबा ख़ैर ही की ख़बर मिलती। इसी त़रह़ एक साल अम्नो अमान से गुज़र गया वोह ह़ाकिम एक साल वहां रहा लेकिन वोह ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाल भी बीका न कर सका। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में मक़्बूल हुई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र उस ह़ाकिम को भुला दिया गया। एक साल बा'द वोह ह़ाकिम मा'ज़ूल कर दिया गया और उसे किसी और जगह का ह़ाकिम बना दिया गया, एक दिन उस ह़ाकिम ने अपने ग़ुलाम से कहा : "तेरा नास हो! मैं ने अ़ली बिन हुसैन, क़ासिम बिन मुह़म्मद और सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह के सामने तीन मर्तबा क़सम खाई थी कि मैं सईद बिन मुसय्यब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को क़त्ल करूंगा लेकिन जब तक मैं मदीनए मुनव्वरह में रहा मुझे सईद बिन मुसय्यब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का ख़याल तक न आया, न जाने मुझे क्या हो गया था। अब मैं तो उन ह़ज़रात के सामने रुस्वा हो कर रह गया कि मैं अपनी क़सम को पूरा न कर सका।"

उस ग़ुलाम ने कहा : "अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं कुछ अ़र्ज़ करूं ?" ह़ाकिम ने कहा : "तुम्हें इजाज़त है जो कहना चाहो बे धड़क कहो।" ग़ुलाम ने कहा : "ह़ुज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप से ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़िक्र को भुला दिया और आप को उन के क़त्ल के गुनाह में मुलव्वस न होने दिया। येह तो आप के ह़क़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बहुत बेहतर फ़ैसला फ़रमाया है, वरना (क़त्ले ना ह़क़ का) जो इरादा आप ने किया था उस में सरासर आप का नुक़्सान था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ैसला आप के ह़क़ में यक़ीनन बेहतर है।" ग़ुलाम की येह बात सुन कर ह़ाकिम ने कहा : "ऐ ग़ुलाम ! जाओ तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर आज़ाद हो।"

اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

ह़िकायत नम्बर 123 :

ख़बीस जिन्न

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ मुह़म्मद बिन रशीद मो'तसिम बिल्लाह से मरवी है : "बह़्‍री जहाज़ समुन्दर के सीने को चीरता क़ुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुज़ा-हरा करता हुवा जानिबे मन्ज़िल झूमता चला जा रहा था। उस जहाज़ में एक शख़्स के पास दस हज़ार सोने की अशरफ़ियां थीं। बह़्‍री जहाज़ के मुसाफ़िर अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ गामज़न थे। अचानक किसी कहने वाले ने कहा : "मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं कि अगर कोई शख़्स उसे कैसी ही बड़ी मुसीबत में पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस मुसीबत को इस पाकीज़ा कलिमे की ब-र-कत से दूर फ़रमा देगा, क्या कोई शख़्स मुझ से येह कलिमा सीखना चाहता है ? जो शख़्स सोने की दस हज़ार अशरफ़ियां ख़र्च करेगा मैं उसे येह पाकीज़ा कलिमा सिखाऊंगा।" जिस के पास दस हज़ार सोने की

अशरफ़ियां थीं उस ने सुन कर कहा : "मैं येह अ़मल आप से सीखना चाहता हूं।" कहने वाले ने कहा : "अपनी सारी रक़म समुन्दर में डाल दो।"

उस मर्दे सालेह़ ने सारी रक़म समुन्दर में डाल दी, कहने वाले ने कहा : "पढ़ ! वोह कलिमा येह आयते मुबा-रका है :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ (پ۲۸، الطلاق: ۲-۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा। और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।

उस नौ जवान ने येह आयाते मुबा-रका याद कर ली और उसे यक़ीन हो गया कि मैं ने बहुत बड़ी दौलत ह़ासिल कर ली और मेरी रक़म राएगां नहीं गई।

जब बाक़ी मुसाफ़िरों ने उस शख़्स का येह त़र्ज़े अ़मल देखा तो कहने लगे : "ऐ मुसाफ़िर ! येह तूने क्या किया ? तूने ख़्वाह म ख़्वाह अपनी रक़म समुन्दर में फेंक दी और अपनी सारी दौलत से मह़रूम हो गया।"

अभी उन मुसाफ़िरों की येह बात मुकम्मल भी न होने पाई थी कि हर त़रफ़ से काली घटाएं छाने लगीं, समुन्दर में त़ुग़्यानी आ गई, सरकश मौजों ने आन की आन में बह़री जहाज़ को तबाहो बरबाद कर डाला और सारे मुसाफ़िर ग़र्क़ हो गए। आयाते मुबा-रका सीखने वाला शख़्स कहता है कि जब जहाज़ तूफ़ान की नज़्र होने लगा तो मैं ने यक़ीने कामिल के साथ उन्हीं आयाते मुबा-रका का विर्द शुरूअ़ कर दिया। थोड़ी ही देर में मुझे एक तख़्ता नज़र आया मैं ने उस का सहारा लिया। मेरी ज़बान पर मुसल्सल वोही आयाते मुबा-रका जारी थीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया और मैं उस तख़्ते के सहारे साह़िल तक पहुंच गया।

मैं समुन्दर से बाहर निकला और आस पास का जाएज़ा लिया तो मुझे क़रीब ही एक ख़ूब सूरत मह़ल नज़र आया। मैं उस में दाख़िल हुवा तो वहां एक ह़सीनो जमील औ़रत मौजूद थी। मैं ने उस से पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने कहा : "मैं बसरा की रहने वाली हूं और मुझे एक जिन्न ने यहां क़ैद कर रखा है। इस समुन्दर में जो भी जहाज़ ग़र्क़ होता है वोह **ख़बीस जिन्न** उस का तमाम मालो अस्बाब यहां इस मह़ल में ले आता है। शायद तुम्हारा जहाज़ भी ग़र्क़ हो गया है, अब वोह ख़बीस जिन्न आने वाला है, तुम फ़ौरन कहीं छुप जाओ वरना वोह तुम्हें देखते ही क़त्ल कर देगा, जल्दी करो उस के आने का वक़्त हो गया है।"

वोह शख़्स कहता है कि हम अभी येह बातें कर ही रहे थे कि एक जानिब मुझे शदीद काला धुवां नज़र आया। मैं समझ गया कि येह वोही जिन्न है, मैं ने फ़ौरन बुलन्द आवाज़ से उन्हीं आयाते मुबा-रका का विर्द शुरूअ़ कर दिया, जब आयते मुबा-रका की आवाज़ फ़ज़ा में बुलन्द हुई तो वोह सारा धुवां ख़ाक हो कर हवा में उड़ गया, अब वहां किसी जिन्न का नामो निशान भी न था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इन आयाते

मुबा-रका की ब-र-कत से हमें उस ज़ालिम जिन्न से नजात मिल गई। मैं ने उस औ़रत से कहा : "चलो उठो ! अब तुम आज़ाद हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस **ख़बीस जिन्न** का काम तमाम कर दिया है।"

चुनान्चे हम दोनों वहां से उठे और मह़ल के ख़ज़ाने से बहुत सारी दौलत जम्अ़ की। जितना हम से हो सका हम ने वहां से ख़ज़ाना उठाया यहां तक कि हमारे पास मज़ीद कोई ऐसी चीज़ न बची जिस में हम मालो दौलत रखते। फिर हम साहि़ले समुन्दर पर आए और किसी जहाज़ का इन्तिज़ार करने लगे। कुछ ही देर बा'द हमें दूर से एक जहाज़ दिखाई दिया हम ने कपड़ा लहरा कर उसे अपनी त़रफ़ बुलाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जहाज़ हमारी त़रफ़ आया और इत्तिफ़ाक़ की बात थी कि वोह जहाज़ बसरा ही की जानिब जा रहा था। चुनान्चे हम दोनों उस में सुवार हो गए, बसरा पहुंच कर उस औ़रत ने कहा : "तुम फ़ुलां जगह जाओ और उन से मेरे मु-तअ़ल्लिक़ पूछो कि वोह कहां है ?" मैं मत़्लूबा जगह पहुंचा और लोगों से उस औ़रत के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने कहा : "वोह बेचारी तो तक़रीबन तीन साल से ला पता है, हम उस की वजह से बहुत परेशान हैं।"

मैं ने कहा : "तुम मेरे साथ आओ, मैं उस से तुम्हारी मुलाक़ात कराता हूं।" वोह लोग ह़ैरानी और ख़ुशी के आ़लम में मेरे साथ हो लिये। जब उन्हों ने उस औ़रत को देखा तो बड़ी अ़क़ीदत से उस के सामने मुअद्दबाना अन्दाज़ में खड़े हो गए। आज वोह लोग बहुत ज़ियादा ख़ुश व ख़ुर्रम थे क्यूं कि उन्हें उन की गुमशुदा मलिका मिल चुकी थी। फिर उस औ़रत ने अपने ख़ादिमों और दूसरे अ़ज़ीज़ो अक़रिबा से कहा : "इस शख़्स ने मुझ पर बहुत बड़ा एह़सान किया है लिहाज़ा मैं इसी से शादी करूंगी।" पस उन दोनों की शादी कर दी गई और वोह हंसी ख़ुशी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे इस्लामी भाइयो !** मज़्कूरा बाला आयात बहुत बा ब-र-कत हैं। अगर कोई शख़्स बहुत ज़ियादा परेशान हो तो वोह इन आयाते मुबा-रका का विर्द करे और फिर इन की ब-र-कतें देखे। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इन आयात की ब-र-कत से हर परेशानी दूर होगी और सुकून व इत़्मीनान नसीब होगा। ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हमें यक़ीने कामिल की दौलत से मालामाल फ़रमा और हर परेशानी व मुसीबत में शिक्वा व शिकायत करने के बजाए सब्रो शुक्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे आ़जिज़ बन्दे हैं, हर दुश्मन से हमारी हि़फ़ाज़त फ़रमा, दीन व दुन्या में आ़फ़िय्यत व करम वाला मुआ़-मला फ़रमा, शरीअ़त के दाएरे में रह कर हमें अपने तमाम मुआ़-मलात ह़ल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हर वक़्त अपनी हि़फ़्ज़ो अमान में रख। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 124 : ख़लीफ़ा मन्सूर को एक लालची की नसीह़त

अबुल फ़ज़्ल रिब्ई़ के वालिद से मरवी है, एक मर्तबा ख़लीफ़ा मन्सूर ने मिम्बर पर चढ़ कर ख़ुत़्बा देना शुरूअ़ किया। लोगों को बुरी बातों से बाज़ रहने और आ'माले सालिह़ा की तरग़ीब दिलाई। ख़ुत़्बा देते हुए उस की आवाज़ भर्रा गई, फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। इसी दौरान मज्मअ़ में से एक शख़्स खड़ा हुवा और बड़े जुरअत मन्दाना अन्दाज़ में गरज कर कहा : "ऐ नसीह़त करने वाले ! ऐसी बातों की नसीह़त कर जिन पर तू ख़ुद भी अ़मल करता है और ऐसी बातों से लोगों को मन्अ़ कर जिन से तू ख़ुद भी बचता है, सब से पहले इन्सान को अपनी इस्लाह़ करनी चाहिये, फिर दूसरों को नसीह़त करनी चाहिये लिहाज़ा पहले तू अपनी इस्लाह़ कर फिर दूसरों को नसीह़त करना।"

भरे मज्मअ़ में ख़लीफ़ा मन्सूर उस शख़्स की येह गुफ़्त-गू सुन कर ख़ामोश हो गया। कुछ देर बा'द अपने मुशीरे ख़ास से कहा : "इस शख़्स को यहां से ले जाओ।" चुनान्चे उस शख़्स को वहां से दूर ले जाया गया। ख़लीफ़ा मन्सूर ने दोबारा ख़ुत़्बा शुरूअ़ किया फिर नमाज़ पढ़ी और अपने मह़ल की त़रफ़ आया और अपने मुशीरे ख़ास को बुला कर उस से पूछा : "वोह शख़्स कहां है ?" अ़र्ज़ की : "उस को क़ैद में डाल दिया गया है।" ख़लीफ़ा मन्सूर ने कहा : "उसे ढील दो, उस के साथ नर्मी से पेश आओ, फिर उसे मालो दौलत का लालच दो। अगर वोह इन तमाम बातों से ए'राज़ करे और मालो दौलत की त़रफ़ तवज्जोह न दे तो वोह शख़्स मुख़्लिस है और उस ने इस्लाह़ की निय्यत से मुझे दौराने ख़ुत़्बा टोका होगा और वोह मेरी भलाई का ख़्वाहां होगा और अगर मालो दौलत की त़रफ़ राग़िब हो और दुन्यावी ने'मतें देख कर ख़ुश हो जाए तो फिर वोह अपनी इस दा'वत में मुख़्लिस नहीं बल्कि उस का भरे दरबार में ख़लीफ़ा को डांटना इस बात पर दलालत करता है कि इस दा'वत के ज़रीए़ वोह अपना रो'ब जमाना चाहता है, वोह दुन्यावी माल का ह़रीस है और ख़ु-लफ़ा पर ता'न व तश्नीअ़ करना उस की आ़दत है। अगर ऐसी बात है तो मैं उसे दर्दनाक सज़ा दूंगा, जाओ और जा कर उसे आज़्माओ।"

पस मुशीर चला गया और उस शख़्स को अपने घर नाश्ते की दा'वत दी। अन्वाओ़ अक़्साम के खाने चुने गए, ख़ूब पुर तकल्लुफ़ दा'वत का एहतिमाम किया गया। जब वोह शख़्स वहां पहुंचा तो मुशीर ने उस से पूछा : "तुझे किस चीज़ ने इस बात पर उभारा कि तू भरे दरबार में ख़लीफ़ा को सर-ज़निश करे और लोगों के सामने उसे इतने सख़्त कलिमात से नसीह़त करे ?" तो उस ने कहा : "येह मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से ह़क़ था जिसे मैं ने अदा किया, पस मैं ने जो कुछ किया दुरुस्त किया।" येह सुन कर मुशीर ने कहा : "अच्छा ! आओ हम ने तुम्हारे लिये दा'वत का एहतिमाम किया है, हमारी दा'वत क़बूल करो और हमारे साथ खाना खाओ।" वोह कहने लगा : "मुझे तुम्हारी दा'वत की कोई ह़ाजत नहीं।"

मुशीर बोला : "अगर तुम्हारी निय्यत अच्छी है तो हमारी दा'वत क़बूल करने में क्या ह़रज है ? आओ ! देखो तुम्हारे सामने अन्वाओ़ अक़्साम के खाने मौजूद हैं।" जब उस शख़्स ने त़रह़ त़रह़ के खाने

देखे तो उस से न रहा गया और उस ने ख़ूब सैर हो कर खाना खाया फिर मुशीर ने उसे वापस भेज दिया।

कुछ दिनों बा'द दोबारा मुशीर ने उसे अपने पास बुलाया और कहा : "ऐ शख़्स ! ख़लीफ़ा तुम्हारे मुआ़-मले को भूल चुका है और तुम अभी तक क़ैद में हो, मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें एक लौंडी दे दूं जो तुम्हारी ख़िदमत करे और तुम उस से तस्कीन ह़ासिल करो।" इस पर वोह शख़्स लालच में आ गया और कहने लगा : "अगर ऐसा हो जाए तो आप की मेहरबानी होगी।" चुनान्चे उस को लौंडी भी दे दी गई और उसे अच्छा खाना भी दिया जाने लगा। कुछ दिन के बा'द मुशीर ने उस से कहा : "अगर तुम चाहो तो मैं ख़लीफ़ा की बारगाह में अ़र्ज़ करूं कि वोह तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये कुछ रोज़ मर्रा के ख़र्च का बन्दोबस्त कर दे।" तो वोह लालची शख़्स कहने लगा : "येह तो आप का बड़ा एह़सान होगा।" चुनान्चे उस के लिये और उस के घर वालों के लिये रोज़ मर्रा के ख़र्च का इन्तिज़ाम कर दिया गया।

दिन गुज़रते रहे, एक दिन मुशीर उस शख़्स के पास आया और कहा : "ऐ शख़्स ! मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं, अगर तुम चाहो तो एक ऐसी राह तुम्हें बताता हूं जिस के ज़रीए़ तुम ख़लीफ़ा का क़ुर्ब ह़ासिल कर सकते हो।" उस शख़्स ने बेताब हो कर कहा : "जल्दी बताओ, वोह कौन सा त़रीक़ा है जिस के ज़रीए़ मुझे दरबारे शाही में कोई मक़ाम मिल जाए और मैं ख़लीफ़ा का मुक़र्रब बन जाऊं।" मुशीर ने कहा : "मैं तुम्हें मोह़्तसिब मुक़र्रर करता हूं तुम जहां भी ख़िलाफ़े शर-अ़ काम होता देखो उसे बन्द करा दो, जहां कहीं ज़ुल्म हो रहा हो ज़ालिमों को सज़ा दो, आज से तुम भी सरकारी ओ़हदा दारों में शामिल हो जाओ और अपना काम संभालो, लोगों को ना जाइज़ उमूर से रोको और अच्छी बातों का हुक्म दो।" येह सुन कर उस लालची शख़्स की ख़ुशी की इन्तिहा न रही। इसी त़रह़ उस का तक़रीबन एक महीना गुज़र गया।

मुशीर ख़लीफ़ा मन्सूर के पास आया और उस से कहा : "हुज़ूर ! मैं ने उस शख़्स को ख़ूब आज़मा लिया है, जब उसे खाने की दा'वत दी गई तो उस ने क़बूल कर ली, मालो दौलत के लालच में भी बुरी त़रह़ फंस गया है फिर उसे सरकारी ओ़हदे की पेशकश की तो उस ने ब ख़ुशी क़बूल कर ली और अब वोह बड़े सुकून से ज़िन्दगी बसर कर रहा है। अगर आप पसन्द फ़रमाएं तो उसे आप के दरबार में ह़ाज़िर करूं। अब उस की येह ह़ालत है कि वोह ख़ूब ऐ़शो इ़श्रत की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, लोगों को तो बुरी बातों से मन्अ़ करता है लेकिन ख़ुद बुराइयों में मुब्तला है।"

ख़लीफ़ा मन्सूर ने कहा : "जाओ और उसे हमारे दरबार में ह़ाज़िर करो।" मुशीर फ़ौरन उस शख़्स के पास पहुंचा और कहा : "मैं ने ख़लीफ़ा को बता दिया है कि तुम अब उस के सरकारी ओ़हदा दारों में शामिल हो और तुम्हारे ज़िम्मे येह काम है कि बुरी बातों से लोगों को मन्अ़ करो, ज़ालिमों को ज़ुल्म से रोको और अच्छी बातें आ़म करो। अब ख़लीफ़ा तुम से मुलाक़ात करना चाहता है तुम उस के दरबार में ह़ाज़िर हो जाओ जैसा लिबास तुम कहोगे तुम्हें मुहय्या कर दिया जाएगा।" येह सुन कर वोह शख़्स बहुत ख़ुश हुवा कि आज तो ख़लीफ़ा ने मेरी मे'राज करा दी।

चुनान्चे उस ने एक बेहतरीन जुब्बा पहना, ख़न्जर लिया, गले में तलवार लटकाई और बड़ी मग़रूराना चाल चलते हुए दरबार की त़रफ़ रवाना हुवा। उस के बाल इतने बड़े थे कि कन्धों से भी नीचे आ रहे थे। वोह ख़ुशी ख़ुशी दरबार में पहुंचा और जा कर बड़े अदब से ख़लीफ़ा मन्सूर को सलाम किया।

ख़लीफ़ा ने जवाब दिया और कहा : "क्या तू वोही शख़्स है जिस ने उ-मरा, वु-ज़रा और अ़वाम के भरे मज्मअ़ में मुझे सर-ज़निश की थी और बड़े सख़्त कलिमात के साथ मुझे नसीह़त की थी ?" उस ने कहा : "हां, मैं वोही शख़्स हूं।" येह सुन कर ख़लीफ़ा ने कहा : "फिर अब तुझे क्या हो गया है, अब तो तू ख़ुद ऐसी ह़ालत में है कि तुझे सख़्त सज़ा दी जाए। उस दिन तुम्हें कैसे जुरअत हुई कि तुम ने भरे दरबार में मुझे रुस्वा किया और अब तुम्हारी येह ह़ालत है कि मेरे सामने झुक रहे हो, उस वक़्त क्या था और अब क्या है ?" तो वोह लालची शख़्स कहने लगा : "ऐ मेहरबान ख़लीफ़ा ! उस वाक़िए के बा'द मैं ने ग़ौरो फ़िक्र किया तो मुझे अपनी ग़-लती का एह़सास हुवा कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था, उस वक़्त मैं ने वाक़ेई ग़-लती की, आप मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें, आप ह़क़ पर थे मैं ने आप पर बे जा तन्क़ीद की थी, आप की हां में हां मिलाना ही बेहतर था।"

येह सुन कर ख़लीफ़ा मन्सूर ने कहा : "ऐ शख़्स ! तुझ पर अफ़्सोस है, तू अपने मोक़िफ़ से फिर गया ह़ालां कि तूने बिल्कुल ह़क़ बात की थी लेकिन तू अपनी निय्यत में मुख़्लिस न था, तेरा ग़ुस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर न था। जब तूने मुझे रुस्वा किया था तो मैं येह समझा था तेरा ग़ज़ब व ग़ुस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर है इस लिये मैं ने तुझे उस वक़्त कोई सज़ा न दी और तेरे मुआ़-मले में तवक़्क़ुफ़ किया लेकिन अब मुझ पर येह बात ज़ाहिर हो गई कि तेरा ग़ुस्सा व ग़ज़ब दुन्या ह़ासिल करने के लिये था और तू अपनी नेकी की दा'वत में मुख़्लिस न था। रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरा मक़्सूद न था बल्कि तू हुब्बे जाह और दुन्यावी दौलत का त़ालिब था, अब मैं तुझे ऐसी दर्दनाक सज़ा दूंगा कि आइन्दा किसी को इस बात की जुरअत न होगी कि बादशाहों के दरबार में उन की बे इ़ज़्ज़ती करे और जिस त़रह़ चाहे उन्हें डांट दे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुझे इ़ब्रत का निशान बना दूंगा ताकि लोग तुझ से इ़ब्रत पकड़ें।"

येह कह कर ख़लीफ़ा मन्सूर ने जल्लाद को हुक्म दिया कि इस दुन्यादार का सर क़लम कर दिया जाए, जल्लाद आगे बढ़ा और भरे दरबार में उस की गरदन उड़ा दी गई।

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें इख़्लास की दौलत से मालामाल फ़रमा और दुन्यावी माल के वबाल से बचा, हर काम अपनी रिज़ा की ख़ात़िर करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। हमारा मत़्लूब बस अपनी ही ज़ात को बनाए रख, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! हमें सिर्फ़ अपनी रिज़ा की ख़ात़िर सुन्नतों की तब्लीग़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*

हिकायत नम्बर 125 : जिस का अ़मल हो बे ग़रज़, उस की जज़ा कुछ और है

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मरवी है कि ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم को मदीनए मुनव्वरह का क़ाज़ी बना कर भेजा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां गए और ब ख़ूबी अपनी ज़िम्मादारी सर अन्जाम देने लगे। ख़ूब अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते, हुदूदुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पासदारी करते। जब ह़ज का सुहाना मौसिम क़रीब आने लगा तो ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद ने भी ह़ज करने का इरादा किया। चुनान्चे उस ने उ़म्दा क़िस्म का ख़ैमा बनवाया और उस की निय्यत येह थी कि जब मैं ह़ज करने जाऊंगा तो इस ख़ैमे को ख़ानए का'बा के क़रीब नस्ब करवा दूंगा। इस त़रह़ मैं, मेरे दोस्त अह़बाब और अहलो इ़याल उस ख़ैमे के अन्दर रह कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करेंगे और अ़वामुन्नास बाहर से त़वाफ़ करेंगे।

वलीद बिन यज़ीद बड़ा ही सख़्त मिज़ाज और मु-तकब्बिर शख़्स था। जिस काम का इरादा कर लेता उसे पूरा करने की भरपूर कोशिश करता चाहे किसी पर कितना ही ज़ुल्म करना पड़े। जब बेहतरीन क़िस्म का उ़म्दा ख़ैमा तय्यार हो गया तो उस ने वोह ख़ैमा एक हज़ार शह सुवारों के साथ मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ रवाना किया और उस लश्कर को बहुत सारा मालो अस्बाब दिया कि इस सारे माल को अहले मदीना में तक़्सीम कर देना। वलीद ख़ुद अभी मुल्के शाम ही में था, लश्कर बड़ी शानो शौकत से चला और मदीनए मुनव्वरह पहुंच गया फिर वोह ख़ैमा हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुसल्ले के क़रीब नस्ब कर दिया गया। लोगों ने जब येह मुआ-मला देखा तो बहुत ख़ौफ़ ज़दा हुए और सब ने जम्अ़ हो कर मश्वरा किया कि अब हमें क्या करना चाहिये। ख़लीफ़ा ने तो येह हुक्म सादिर कर दिया है, अब उस के हुक्म को कौन टाल सकता है। सब को मा'लूम था कि वलीद बिन यज़ीद कैसा बद मिज़ाज ख़लीफ़ा है पस किसी को भी हिम्मत न हुई कि वोह लश्कर वालों को मुसल्लए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ैमा नस्ब करने से मन्अ़ करे। बिल आख़िर येह तै पाया कि हम अपने क़ाज़ी सा'द बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم को जा कर इस मुआ-मले की ख़बर देते हैं।

चुनान्चे सब लोग जम्अ़ हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के पास ह़ाज़िर हुए और उन्हें सूरते ह़ाल से आगाह किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जाओ और जा कर उस ख़ैमे को आग लगा दो।" येह सुन कर लोग ख़ौफ़ज़दा हो गए और कहने लगे : "हुज़ूर ! हम में इतनी जुरअत नहीं कि उस ख़ैमे को आग लगाएं। मुल्के शाम से एक हज़ार शह सुवार आए हुए हैं, हम उन की मौजूदगी में येह काम कैसे कर सकते हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब लोगों से येह बुज़्-दिलाना जवाब सुना तो अपने ग़ुलाम से फ़रमाया : "जाओ और फ़ुलां थैले से वोह क़मीस निकाल लाओ जिसे पहन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ गज़्वए बद्र में शरीक हुए और उन्हों ने जामे शहादत नोश फ़रमाया।" ख़ादिम फ़ौरन वोह मुबारक क़मीस ले आया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोह क़मीस पहनी और ख़च्चर पर सुवार हो कर शामी लश्कर की जानिब रवाना हुए, तमाम लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पीछे पीछे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वहां पहुंच कर फ़रमाया : "आग ले आओ।" ख़ादिम ने फ़ौरन हुक्म

की ता'मील की। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बे ख़ौफ़ो ख़त़र आगे बढ़े और जा कर उस क़ीमती ख़ैमे को आग लगा दी, जब सालारे लश्कर ने येह देखा तो वोह बड़ा ग़ज़बनाक हुवा और आपे से बाहर हो गया। लोगों ने उसे बताया : "येह मदीनए मुनव्वरह के क़ाज़ी हैं और इन्हें ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद ने क़ाज़ी बना कर मदीना शरीफ़ भेजा है, तुम इन से कोई गुस्ताख़ाना अन्दाज़ इख़्तियार न करना, तमाम अहले मदीना इन की बहुत इ़ज़्ज़त करते हैं। लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि तुम ख़ामोशी इख़्तियार करो।" येह सुन कर सारा लश्कर वापस शाम की त़रफ़ चला गया और काफ़ी मालो अस्बाब वहां छोड़ गया। अहले मदीना के फु-क़रा ने उन का बचा हुवा मालो अस्बाब ले लिया और ख़ुशी ख़ुशी अपने घरों को लौट आए।

जब इस वाक़िए की ख़बर ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद को हुई तो उस ने फ़ौरन ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم को पैग़ाम भेजा तुम अपनी जगह किसी और को क़ाज़ी बना कर फ़ौरन मुल्के शाम पहुंचो जैसे ही तुम्हें मेरा पैग़ाम पहुंचे फ़ौरन चले आना।

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم को जब ख़लीफ़ा का पैग़ाम पहुंचा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक बा ए'तिमाद शख़्स को क़ाज़ी बनाया और ख़ुद मुल्के शाम की जानिब चल दिये। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه शाम की सरह़द पर पहुंचे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को शहर से बाहर ही रोक दिया गया और काफ़ी अ़र्से तक आप को दाख़िले की इजाज़त न मिली। बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ज़ादे राह ख़त्म होने लगा और अब वहां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का मज़ीद ठहरना दुश्वार हो गया। एक रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मस्जिद में मसरूफ़े इ़बादत थे कि एक शख़्स को देखा कि नशे की ह़ालत में बद मस्त है और मस्जिद में घूम रहा है। येह देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "येह शख़्स कौन है ?" लोगों ने बताया : "येह ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद का मामूं है, इस ने शराब पी है और अब नशे की ह़ालत में मस्जिद के अन्दर घूम फिर रहा है।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बहुत जलाल आया कि येह कितनी दीदा दिलेरी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर रहा है और उस के पाक दरबार में ऐसी गन्दी ह़ालत में बे ख़ौफ़ घूम फिर रहा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ग़ुलाम को दुर्रा लाने का हुक्म फ़रमाया। ग़ुलाम ने दुर्रा (कोड़ा) दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मुझ पर लाज़िम है कि मैं इस पर ह़द्दे शर-ई़ नाफ़िज़ करूं चाहे येह कोई भी हो, इस्लाम में सब बराबर हैं।" चुनान्चे आप आगे बढ़े और मस्जिद में ही उस को अस्सी (80) कोड़े मारे।

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने ख़च्चर पर सुवार हुए और मदीनए मुनव्वरह की जानिब रवाना हो गए। वोह शख़्स अस्सी (80) कोड़े खाने के बा'द निहायत ज़ख़्मी ह़ालत में ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद के पास पहुंचा। ख़लीफ़ा ने जब अपने मामूं की येह ह़ालत देखी तो बहुत ग़ज़बनाक हुवा और पूछा : "तुम्हारी येह ह़ालत किस ने की ? किस ने तुम्हें इतना शदीद ज़ख़्मी किया है ?" उस ने जवाब दिया : "एक शख़्स मदीनए मुनव्वरह से आया हुवा था, उस ने मुझे अस्सी (80) कोड़े सज़ा दी और कहा : "येह सज़ा देना और ह़द क़ाइम करना मुझ पर लाज़िम है।" उस ने मुझे मारा और फिर मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ चला गया।" ख़लीफ़ा ने जब येह सुना तो उस ने फ़ौरन हुक्म दिया कि हमारी सुवारी तय्यार की जाए, फ़ौरन हुक्म की ता'मील हुई और ख़लीफ़ा कुछ सिपाहियों को ले कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के तआ़क़ुब में

चला और एक मन्ज़िल पर जा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को रोक लिया।

ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से कहा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! तूने मेरे मामूं के साथ येह सुलूक क्यूं किया, उसे इतनी दर्दनाक सज़ा क्यूं दी ?" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़ा ! तूने मुझे क़ाज़ी बनाया ताकि मैं शरीअ़त के अह़काम नाफ़िज़ करूं और इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने वाले को सज़ा दूं।" चुनान्चे जब मैं ने देखा कि सरे आ़म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की जा रही है। येह शख़्स नशे की ह़ालत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार में घूम फिर रहा है और कोई इसे पूछने वाला नहीं तो मेरी ग़ैरते ईमानी ने इस बात को गवारा न किया कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी होती देखूं और तुम्हारी क़राबत दारी की वजह से चश्म पोशी करूं और शर-ई ह़ुदूद क़ाइम न करूं। मैं ने इस शख़्स को इस के जुर्म की सज़ा दी और दूसरी बात येह कि अगर मैं इसे सज़ा न देता तो लोग तुझ से बद ज़न होते कि ख़लीफ़ा अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर ह़ुदूद क़ाइम नहीं करता अगर्चे वोह सरे आ़म जुर्म का इर्तिकाब करें इस त़रह़ तुम्हारी बदनामी होती और लोगों के दिलों में तुम्हारी नफ़रत बैठ जाती लिहाज़ा मैं ने वोही किया जो मुझे करना चाहिये था।" जब ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के येह पुर ख़ुलूस कलिमात सुने तो बे इख़्तियार पुकार उठा : "ऐ सा'द बिन इब्राहीम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए तूने वाक़ेई़ वोह काम किया जो तुझ पर लाज़िम था।"

फिर ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बहुत सारा माल दिया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ रवाना कर दिया और उस ख़ैमे के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ भी गुफ़्त-गू न की जिसे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आग लगाई थी ह़ालां कि ख़लीफ़ा ने इसी मक़्सद के लिये आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मदीनए मुनव्वरह से शाम बुलाया था लेकिन अब ख़लीफ़ा ने इस बात का मा'मूली सा भी तज़्किरा न किया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस मदीनए मुनव्वरह की नूरबार फ़ज़ाओं में सांस लेने के लिये जल्दी जल्दी मदीना शरीफ़ की त़रफ़ चल दिये।

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی कैसे जुरअत मन्द हुवा करते थे कि उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी से भी ख़ौफ़ न आता। वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी बरदाश्त ही न करते थे, चाहे इस के लिये उन्हें कितने ही बड़े ज़ालिम से टक्कर लेनी पड़ती, उन के अन्दर जज़्बए ईमानी कूट कूट कर भरा हुवा था। वोह सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते थे जब वोह शरीअ़ते मुत़ह्हरा की ख़िलाफ़ वर्ज़ी देखते तो उन से येह बात बरदाश्त न होती और हर कोई अपने अपने मन्सब के मुत़ाबिक़ **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف** और **نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر** का फ़रीज़ा सर अन्जाम देता, उन्हें मख़्लूक़ की नाराज़गी का ख़ौफ़ न होता, वोह अपनी निय्यत में मुख़्लिस होते थे। और जो शख़्स अपनी निय्यत में मुख़्लिस हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या में भी अज्र अ़त़ा फ़रमाता है और आख़िरत में भी। वाक़ेई़ जो अ़मल सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ह़ुसूल की ख़ात़िर किया जाए, उस की तो बात ही कुछ और है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 126 : दियानत दार ताजिर

ह़ज़रते सय्यिदुना मत़फ़र बिन सहलुल मुक़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लानुल ख़य्यात़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के साथ बैठा हुवा था। दौराने गुफ़्त-गू ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق का ज़िक्रे ख़ैर शुरूअ़ हो गया, हम उन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान करने लगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लानुल ख़य्यात़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने फ़रमाया : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर था, अचानक एक औ़रत निहायत परेशानी के आ़लम में आई और आप को मुख़ात़ब कर के कहने लगी : "ऐ अबुल ह़सन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم) ! मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पड़ोस में रहती हूं, मुझ पर एक मुसीबत आन पड़ी है, रात मेरे बेटे को सिपाही पकड़ कर ले गए और मुझे ख़त़रा है कि वोह उसे तक्लीफ़ पहुंचाएंगे और उसे सज़ा देंगे। मैं आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) की बारगाह में ह़ाज़िर हुई हूं। अगर आप मेरी मदद फ़रमाएं और मेरे साथ चल कर मेरे बेटे की सिफ़ारिश करें या फिर किसी को मेरे साथ भेज दें जो आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का पैग़ामे सिफ़ारिश ह़ाकिम को पहुंचा दें तो मुझे उम्मीद है कि ह़ाकिम मेरे बेटे को छोड़ देगा। ख़ुदारा ! मेरे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाएं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लानुल ख़य्यात़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि उस औ़रत की येह फ़रियाद सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه खड़े हुए और नमाज़ में मशग़ूल हो गए और इन्तिहाई ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने लगे। जब काफ़ी देर हो गई तो उस औ़रत ने कहा : "ऐ अबुल ह़सन (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم) ! जल्दी करें कहीं ऐसा न हो कि ह़ाकिम मेरे बेटे को क़ैद में डाल कर सज़ा दे और उसे तक्लीफ़ पहुंचाए, बराए करम ! मेरे मुआ़-मले को जल्दी ह़ल फ़रमा दें।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ में मशग़ूल रहे, फिर सलाम फैरने के बा'द फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! मैं तेरे ही मुआ़-मले को ह़ल कर रहा हूं।"

अभी येह गुफ़्त-गू हो ही रही थी कि उस औ़रत की ख़ादिमा आई और उस से कहा : "मोह़तरमा : घर चलिये, आप का बेटा ब ख़ैरो आ़फ़िय्यत घर लौट आया है।" येह सुन कर वोह औ़रत बहुत ख़ुश हुई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दुआ़एं देती हुई वहां से रुख़्सत हो गई।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लानुल ख़य्यात़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने येह वाक़िआ़ सुनाने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मत़फ़र ! इस से भी ज़ियादा अ़जीब बात मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बताता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तिजारत किया करते थे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह अ़हद किया हुवा था कि तीन दीनार से ज़ियादा नफ़अ़ नहीं लूंगा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने इस अ़हद पर सख़्ती से अ़मल करते।

एक मर्तबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बाज़ार तशरीफ़ ले गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 60 दीनार के बदले 96 साअ़ बादाम ख़रीदे और फिर उन्हें बेचने लगे और उन की क़ीमत 63 दीनार रखी, थोड़ी देर के

बा'द आप के पास एक ताजिर आया और कहने लगा : ''मैं येह सारे बादाम आप से ख़रीदना चाहता हूं।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''ख़रीद लो।'' उस ने पूछा : ''कितने दीनार लोगे ?'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''63 दीनार।'' उस ताजिर ने पूछा : ''हुज़ूर ! बादामों का रेट बढ़ गया है और अब 96 साअ़ बादामों की क़ीमत 90 दीनार तक पहुंच चुकी है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुझे 90 दीनार में येह बादाम फ़रोख़्त कर दें।''

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने फ़रमाया : ''मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से वा'दा कर लिया है कि तीन दीनार से ज़ियादा नफ़्अ़ नहीं लूंगा लिहाज़ा मैं अपने वा'दे के मुताबिक़ तुम्हें येह बादाम ब खुशी 63 दीनार में फ़रोख़्त करता हूं, अगर चाहो तो ख़रीद लो, मैं इस से ज़ियादा रक़म हरगिज़ नहीं लूंगा।''

वोह ताजिर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नेक बन्दा था और अपने मुसल्मान भाई की भलाई का ख़्वाहां था। धोके से उन का माल लेने वाला या बद दियानत ताजिर न था। जब उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की येह बात सुनी तो कहने लगा : ''मैं ने भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से येह अ़हद कर रखा है कि कभी भी अपने मुसल्मान भाई के साथ बद दियानती नहीं करूंगा और न ही कभी किसी मुसल्मान का नुक़्सान पसन्द करूंगा। अगर तुम बादाम 90 दीनार में बेचो तो मैं ख़रीद लूंगा, इस से कम क़ीमत में कभी भी येह बादाम नहीं ख़रीदूंगा।''

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه भी अपनी बात पर क़ाइम रहे और फ़रमाया : ''मैं 63 दीनार से ज़ियादा में फ़रोख़्त नहीं करूंगा।'' चुनान्चे न तो उस अमानत दार ताजिर ने येह बात गवारा की, कि मैं कम क़ीमत में ख़रीदूं और न ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तीन दीनार से ज़ियादा नफ़्अ़ लेने पर राज़ी हुए बिल आख़िर उन का सौदा न बन सका और ताजिर वहां से चला गया।

येह वाक़िआ़ बयान करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना अ़लानुल ख़य्यात् عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : ''जिन लोगों में ऐसी अ़ज़ीम ख़स्लतें पाई जाएं जब वोह अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठाएं तो उन की दुआ़एं क़बूल क्यूं न हों। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसे बरगुज़ीदा बन्दों की दुआ़ओं को श-रफ़े कबूलिय्यत ज़रूर अ़ता फ़रमाता है। जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हो जाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम मुआ़-मलात को हल फ़रमा देता है।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 127 : एक मुस्तजाबुद्दा'वात बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सलमान आ़बिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं, मैं ने एक नेक शख़्स को येह फ़रमाते हुए सुना : "एक मर्तबा मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने अपने पास बुलाया। मैं उस वक़्त कुछ ग़मगीन था लिहाज़ा उस वक़्त आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर न हो सका। फिर जब मैं आप के पास ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "ख़ैरियत तो थी, कल तुम आए नहीं।" मैं ने कहा : "हां ! ख़ैरियत थी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस ह़ाल में रखे हम तो उस की रिज़ा पर राज़ी हैं, कल मैं घर वालों को ख़ुर्दो नोश का सामान मुहय्या करने के लिये मज़दूरी की तलाश में था इस लिये ह़ाज़िरे ख़िदमत न हो सका।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "क्या तुम्हें कल मज़दूरी मिली ?" मैं ने कहा : "नहीं।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "आओ ! हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करते हैं, वोह तमाम जहानों को रिज़्क़ अ़ता फ़रमाने वाला है, आओ ! हम उसी करीम ज़ात से रिज़्क़ के लिये दुआ़ करते हैं।" इतना कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने दुआ़ की और मैं आमीन कहता रहा, फिर मैं ने दुआ़ के लिये हाथ उठाए और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आमीन कहने लगे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी हम दुआ़ से फ़ारिग़ भी न होने पाए थे कि हमारे कमरे में दिरहम व दीनार गिरना शुरूअ़ हो गए। येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! क्या तुझे इतना काफ़ी है या कुछ और भी चाहिये ?" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां से तशरीफ़ ले गए और मैं ने जब वोह दिरहम व दीनार जम्अ़ किये तो सो दिरहम और सो दीनार थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं कि मैं ने उस सालेह़ आ़बिद शख़्स से पूछा कि तुम ने उस रक़म का क्या किया ? उस ने जवाब दिया : "मैं ने अपने अहलो इ़याल के लिये उस रक़म से एक हफ़्ते का राशन ख़रीद कर उन के ह़वाले कर दिया ताकि मैं अहलो इ़याल की त़रफ़ से बे फ़िक्र हो जाऊं और फिर दिल लगा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करूं और कोई चीज़ मेरे और मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान ह़ाइल न हो। फिर मैं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर बन गया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येही वोह लोग हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे ह़िसाब रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 128 : गुनाहों से हि़फ़ाज़त की अनोखी दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने ज़माने के मशहूर औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی में से थे। ज़ियादा तर वक़्त मस्जिद में गुज़ारते और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहते। आ़लमे शबाब था। उन्हों ने अपनी जवानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये वक़्फ़ की हुई थी। एक मर्तबा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्जिद से बाहर आ रहे थे कि अचानक रास्ते में एक नौ जवान औ़रत पर नज़र पड़ गई और दिल कुछ देर के लिये उस की त़रफ़ माइल हो गया लेकिन फिर फ़ौरन अपने इस फे़'ल पर नादिम हुए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ के लिये हाथ उठाए और इन अल्फ़ाज़ में दुआ़ मांगने लगे : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तूने मुझे आंखें अ़त़ा फ़रमाईं जो कि बहुत बड़ी ने'मत है लेकिन मुझे ख़त़रा लग रहा है कि कहीं इन आंखों की वजह से मैं अ़ज़ाब में मुब्तला न हो जाऊं और येह आंखें मेरे लिये हलाकत का बाइ़स न बन जाएं, ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तू मेरी आंखों की बीनाई सल्ब कर ले।" जैसे ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दुआ़ से फ़ारिग़ हुए आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बीनाई ख़त्म हो चुकी थी और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नाबीना हो गए थे।

चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने भतीजे को अपने साथ रखते जो नमाज़ों के अवक़ात में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मस्जिद तक ले जाता और दीगर ह़ाजात में भी आप उस से मदद लेते। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का भतीजा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मस्जिद में छोड़ जाता और ख़ुद बच्चों के साथ खेलने लगता। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कोई ह़ाजत दरपेश होती तो उसे बुला लेते इसी त़रह़ वक़्त गुज़रता रहा।

एक मर्तबा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्जिद में थे कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने जिस्म पर कोई चीज़ रेंगती हुई मह़सूस हुई, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भतीजे को आवाज़ दी लेकिन वोह बच्चों के साथ खेल में मगन रहा और आप के पास न आ सका। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़त़रा था कि कोई नुक़्सान न पहुंचा दे। चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दोबारा फ़रियाद की और इन अल्फ़ाज़ के साथ अपने मालिके ह़क़ीक़ी से दुआ़ मांगने लगे : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे आंखों की दौलत से नवाज़ा जो कि बहुत बड़ी ने'मत थी लेकिन फिर मुझे ख़ौफ़ हुवा कि कहीं इन आंखों के ग़लत़ इस्ति'माल की वजह से मैं मुब्तलाए अ़ज़ाब न हो जाऊं, चुनान्चे मैं ने तुझ से दुआ़ की, कि मेरी बीनाई सल्ब कर ले, ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! अब मुझे येह ख़ौफ़ है कि अगर मेरी बीनाई वापस लौट कर न आई तो कहीं येह मेरे लिये आज़माइश और रुस्वाई का बाइ़स न बन जाए क्यूं कि मैं अब देख तो नहीं सकता, कोई मूज़ी जानवर मुझे नुक़्सान पहुंचा सकता है और बार बार अपनी ह़ाजतों को पूरा करने के लिये दूसरों की मदद दरकार होती है जिस से मुझे बड़ी कोफ़्त होती है, ऐ मेरे मालिको मुख़्तार परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मेरी बीनाई लौटा दे ताकि मैं रुस्वाई और लोगों की मोह़ताजी से बच जाऊं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अभी वोह मर्दे सालेह़

अपनी दुआ़ से फ़ारिग़ भी न हुवा था कि उस की बीनाई वापस लौट आई और अब वोह खुद दूसरों की मदद के बिग़ैर अपने घर की त़रफ़ रवाना हो गया।

मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दोनों ह़ालतों में देखा या'नी इस ह़ाल में भी देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बीनाई ख़त्म हो चुकी थी और इस ह़ालत में भी देखा कि दुआ़ की ब-र-कत से आप को दोबारा आंखों की ने'मत अ़ता कर दी गई और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पहले की त़रह़ अब भी खुद मस्जिद की त़रफ़ जाते और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی कैसे अ़ज़ीम लोग थे कि उन्हें येह बात तो मन्ज़ूर थी कि हमारी आंखें ज़ाएअ़ हो जाएं लेकिन वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी को कभी भी बरदाश्त न करते। जब वोह देखते कि येह चीज़ हमारे लिये आख़िरत के मुआ़-मले में नुक़्सान देह है तो उस से बिल्कुल परहेज़ करते, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने ऐसे पाकीज़ा सिफ़ात लोगों की दुआ़एं बहुत जल्द क़बूल फ़रमाता है और उन्हें कभी रुस्वा नहीं करता न ही दूसरों का मोह़ताज करता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन बुज़ुर्गों के सदक़े हमें भी ने'मतों की सह़ीह़ क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और बुरे आ'माल की त़रफ़ रग़बत दिलाने वाली चीज़ों से बेज़ारी और बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, हमें सिर्फ़ अपना ही मोह़ताज रखे, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाए, हमारे हर हर उ़ज़्व को अपनी याद में मगन रखे, बद निगाही जैसी बुरी बीमारी से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नीची नीची नज़रों का वासित़ा हमारी बे बाकियों और ग़फ़्लतों से दर गुज़र फ़रमा और हमारी दाइमी मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो

ह़िकायत नम्बर 129 : मां की दुआ़ का असर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा एक बूढ़ी औ़रत ह़ज़रते सय्यिदुना बक़ी बिन मख़्लद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और बड़े ग़मगीन अन्दाज़ में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुई : ''हुज़ूर ! मेरे जवान बेटे को रूमियों ने क़ैद कर लिया है और वोह ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा उन के ज़ुल्मो सितम का निशाना बन रहा है। मेरे पास इतनी रक़म नहीं कि मैं फ़िदया दे कर उसे आज़ाद करा लूं, मेरी मिल्किय्यत में सिर्फ़ एक छोटा सा घर है जिसे मैं बेच भी नहीं

सकती, अपने लख़्ते जिगर की जुदाई के ग़म ने मेरे दिन का सुकून और रातों की नींद उड़ा दी, मुझे एक पल सुकून मुयस्सर नहीं, ख़ुदारा ! मेरी ह़ालते ज़ार पर रह़म फ़रमाएं, अगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه किसी साह़िबे हैसियत से कह देंगे तो वोह फ़िदया दे कर मेरे बेटे को आज़ाद करा लेगा और इस त़रह़ मुझे क़रार नसीब हो जाएगा।"

उस बूढ़ी मां की येह मामता भरी बातें सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे तसल्ली देते हुए फ़रमाया : "मोह़तरमा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखो वोह ज़रूर करम फ़रमाएगा, मैं आप के मुआ-मले को ह़ल करने की कोशिश करता हूं, आप बे फ़िक्र हो जाएं।" जब दुख्यारी मां ने ढारस बंधाने वाली येह बातें सुनीं तो दुआएं देती हुई वहां से रुख़्सत हो गई।

रावी कहते हैं कि जब वोह बुढ़िया वहां से चली गई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सर झुका कर बैठ गए। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुबारक होंटों को जुम्बिश हुई और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कुछ पढ़ने लगे लेकिन हम आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम को न सुन सके। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه काफ़ी देर तक इसी ह़ालत में रहे।

कुछ अ़र्सा बा'द वोही बूढ़ी औ़रत अपने जवान बेटे के साथ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई। वोह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दुआएं दे रही थी और आप का शुक्रिया अदा कर रही थी, फिर कहने लगी : "ह़ुज़ूर ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ब-र-कत से मेरे बेटे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ैद से रिहाई अ़त़ा फ़रमा दी है। इस का वाक़िआ़ बड़ा अ़जीब है, येह ख़ुद अपनी रिहाई का वाक़िआ़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने बयान करना चाहता है।" येह सुन कर आप ने फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! अपना वाक़िआ़ बयान करो।" तो वोह कहने लगा :

जब मुझे रूमियों ने क़ैद कर लिया तो उन्हों ने मुझे चन्द और क़ैदियों के साथ शामिल कर दिया। वोह हम से बहुत ज़ियादा मशक़्क़त वाले काम करवाते। फिर हम चन्द क़ैदियों को एक बड़े शाही ओ़ह्दे दार के पास भेज दिया गया। उस की मिल्किय्यत में बहुत सारे बाग़ात थे और वोह बहुत बड़ी जागीर का मालिक था, वोह हमारे पाउं में बेड़ियां डाल कर सिपाहियों की निगरानी में अपने बाग़ात और खेतों में काम करने के लिये भेजता। हम सारा दिन ज़न्जीरों में जकड़े हुए जानवरों की त़रह़ काम करते फिर शाम को वापस हमें क़ैदख़ाने में डाल दिया जाता। इस त़रह़ हम उन की क़ैद में मशक़्क़तें बरदाश्त कर रहे थे।

एक दिन ऐसा हुवा कि जब शाम को हमें वापस क़ैदख़ाने की त़रफ़ लाया जा रहा था तो यकायक मेरे पाउं में बंधी हुई मज़बूत़ बेड़ियां ख़ुद ब ख़ुद टूट कर ज़मीन पर आ पड़ीं, जब सिपाहियों को ख़बर हुई तो वोह मेरी त़रफ़ दौड़े और चीख़ते हुए कहने लगे : "तूने बेड़ियां क्यूं तोड़ डालीं ?" मैं ने कहा : "बेड़ियां ख़ुद ब ख़ुद टूट गई हैं, मैं ने तो इन को हाथ भी नहीं लगाया, अगर तुम्हें यक़ीन नहीं आता तो दूसरे क़ैदियों से पूछ लो।" मेरी येह बात सुन कर सिपाही बहुत ह़ैरान हुए और उन्हों ने जा कर अपने अफ़्सर को येह वाक़िआ़ बताया वोह भी ह़ैरान हुवा और उस ने फ़ौरन एक लोहार को बुलाया और कहा :

"इस नौ जवान के लिये मज़बूत़ से मज़बूत़ बेड़ियां तय्यार करो।" लोहार ने पहली बेड़ियों से मज़बूत़ बेड़ियां तय्यार कीं। मुझे दोबारा पाबन्दे सलासिल कर दिया गया। अभी मैं उन बेड़ियों में चन्द क़दम ही चला होउंगा कि वोह भी ख़ुद ब ख़ुद टूट कर ज़मीन पर गिर पड़ीं।

येह मन्ज़र देख कर सारे लोग बहुत ह़ैरान हुए और उन्हों ने बाहम मश्वरा से एक राहिब को बुलाया और उसे सारी सूरते ह़ाल से आगाह किया। राहिब ने सारी गुफ़्त-गू सुन कर मुझ से पूछा : "ऐ नौ जवान ! क्या तुम्हारी वालिदा ज़िन्दा है ?" मैं ने कहा : "हां, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी मां ज़िन्दा है।" राहिब मेरी बात सुन कर उन लोगों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "इस नौ जवान की वालिदा ने इस के लिये दुआ़ की है, उस की दुआ़ओं ने इस नौ जवान को अपने ह़िसार में ले रखा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की मां की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है, अब चाहे तुम इसे कितनी ही मज़बूत़ ज़न्जीरों में क़ैद करो येह फिर भी आज़ाद हो जाएगा लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि इसे आज़ाद कर दो जिस के साथ मां की दुआ़एं हों उस का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" राहिब की येह बात सुन कर उन रूमियों ने मुझे आज़ाद कर दिया और मुझे इस्लामी सरह़द तक छोड़ गए।

जब उस नौ जवान से वोह दिन और वक़्त पूछा गया जिस दिन उस की बेड़ियां टूटी थीं तो वोह वोही दिन था जिस दिन बुढ़िया ह़ज़रते सय्यिदुना बक़ी बिन मख़्लद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد की बारगाह में ह़ाज़िर हुई थी और उस ने दुआ़ के लिये अ़र्ज़ की थी और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस के बेटे के लिये दुआ़ की थी। उसी दिन और उसी वक़्त नौ जवान को रूम में वोह वाक़िआ़ पेश आया, इस त़रह़ मां की दुआ़ओं और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ब-र-कत से उस नौ जवान को रिहाई ह़ासिल हुई।

निगाहे वली में वोह तासीर देखी   बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इसी त़रह़ का वाक़िआ़ एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बेटे के साथ भी पेश आया, चुनान्चे मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द को मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हुए और अपने बेटे की क़ैद के मु-तअ़ल्लिक़ बताया और फिर येह भी बताया कि आजकल हम बहुत तंगी के आ़लम में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। येह सुन कर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो, सब्र करो और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم की कसरत करते रहो।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घर तशरीफ़ ले आए।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने बेटे की वजह से बहुत परेशान थीं, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बताया कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया है कि "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم" की कसरत करो।" तो दोनों ने ला ह़ौल शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। जब बाहर जा कर देखा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बेटा सामने मौजूद था और उस के साथ काफ़िरों की चार हज़ार बकरियां भी थीं। उन के बेटे ने बताया कि दुश्मनों ने मुझे क़ैद कर लिया और मुझ से बकरियां चरवाने लगे, आज मैं ने दुश्मन को ग़ाफ़िल पाया तो उन की बकरियां ले कर वहां से भाग आया, उन्हें मेरे भागने की ख़बर तक न हुई।

अपने बेटे को अपने पास देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ख़ुश हुए और ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "मेरा बेटा दुश्मन की क़ैद से भाग आया है और उन की चार हज़ार बकरियां भी साथ लाया है, क्या येह बकरियां हमारे लिये ह़लाल हैं ?" तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां (येह तुम्हारे लिये ह़लाल हैं)।"

उस वक़्त सूरए त़लाक़ की मुन्दरिजए ज़ैल आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

وَمَنْ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجْعَلْ لَّہٗ مَخْرَجًا ۙ وَّیَرْزُقْہُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ یَّتَوَکَّلْ عَلَی اللّٰہِ فَھُوَ حَسْبُہٗ ؕ اِنَّ اللّٰہَ بَالِغُ اَمْرِہٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰہُ لِکُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ۝ (پ۲۸، الطلاق:۲،۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।

(تفسیر قرطبی، سورۃ الطلاق، تحت الآیۃ: "وَمَنْ یَّتَّقِ اللّٰہَ... الٰی.. لَا یَحْتَسِبُ"، ج ۹، الجزء ۱۸، ص ۱۴۳۔۱۴۴)

मज़्कूरा आयतें करीमा के फ़वाइद :

येह आयतें बड़ी ही बा ब-र-कत और अ़-ज़मत वाली हैं। इन के मु-तअ़ल्लिक़ सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स इस आयत को पढ़े अल्लाह तआ़ला उस के लिये शुबुहाते दुन्या, ग़मराते मौत और बरोज़े क़ियामत सख़्तियों से ख़लासी की राह निकालेगा।" और इस आयत की निस्बत नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया : "मेरे इ़ल्म में एक ऐसी आयात है जिसे लोग मह़फ़ूज़ कर लें तो उन की हर ज़रूरत व ह़ाजत के लिये काफ़ी है।" (تفسیر خزائن العرفان، سورۃ الطلاق، تحت الآیۃ:۲۔۳)

(येह आयातें मुबा-रका निहायत मुजर्रब है जिसे कोई परेशानी हो, दुन्यावी तकालीफ़ का सामना हो, फ़िक्रे मआ़श दामन गीर हो, दुश्मन का ख़ौफ़ हो या दुश्मन की क़ैद में हो तो इस आयत को कामिल यक़ीन के साथ पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّ وَجَلَّ तमाम परेशानियों से नजात ह़ासिल हो जाएगी, ख़ुशहाली और फ़राख़ी

ह़ासिल होगी। इस के इ़लावा उख़रवी नजात के लिये भी येह आयतें मुबा-रका बहुत मुफ़ीद है। चुनान्चे इस का विर्द करते रहना चाहिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें क़ुरआने पाक की तिलावत और इस के अह़काम पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 130 : जगमगाता ख़ैमा

ह़ज़रते सय्यिदुना मस्मअ़ बिन आ़सिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُنْعِم से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़दविया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا बहुत ज़ियादा इ़बादत किया करतीं। सारी सारी रात क़ियाम फ़रमातीं, दिन को रोज़ा रखतीं और तिलावते क़ुरआने पाक किया करतीं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا का हर हर लम्ह़ा यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुज़रता।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं बहुत ज़ियादा बीमार हो गई जिस की वजह से मैं तहज्जुद की दौलत से मह़रूम रही और दिन को भी अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत न कर सकी, बीमारी की वजह से बहुत ज़ियादा कमज़ोरी आ गई, इसी त़रह़ कई दिन गुज़र गए मुझे अपनी इ़बादत छूट जाने का बहुत अफ़्सोस हुवा लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बीमारी की ह़ालत में भी जितना मुझ से हो सकता मैं इ़बादत की कोशिश करती, कभी दिन में नवाफ़िल की कसरत करती, कभी रात को नवाफ़िल पढ़ती। इसी त़रह़ कई दिन गुज़र गए।

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया और मुझे सिह़्ह़त अ़ता फ़रमाई मैं ने दोबारा नए जज़्बे के साथ इ़बादत शुरूअ़ कर दी। सारा सारा दिन इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुज़र जाता और इसी त़रह़ रात को भी इ़बादत करती।

एक रात मुझे नींद ने आ लिया और मैं ग़ाफ़िल हो कर सो गई। मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं फ़ज़ाओं में उड़ रही हूं, फिर मैं एक सर सब्ज़ो शादाब बाग़ में पहुंच गई। वोह बाग़ इतना ह़सीन था कि मैं ने कभी ऐसा बाग़ न देखा। उस बाग़ में बहुत ख़ूब सूरत मह़ल थे, हर त़रफ़ बुलन्दो बाला सर सब्ज़ दरख़्त थे, जगह जगह फूलों की क्यारियां थीं, दरख़्त फलों से लदे हुए थे, मैं उस बाग़ के हुस्नो जमाल के नज़ारों में गुम थी कि यकायक मुझे एक सब्ज़ परिन्दा नज़र आया, वोह परिन्दा इतना ख़ूब सूरत था कि इस से पहले मैं ने कभी ऐसा परिन्दा न देखा था, एक लड़की उसे पकड़ने के लिये भाग रही थी, मैं उस ख़ूब सूरत लड़की और ख़ूब सूरत परिन्दे को बग़ौर देखने लगी इतनी देर में वोह ह़सीनो जमील लड़की मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुई। मैं ने उस से कहा : "येह परिन्दा बहुत ख़ूब सूरत है, तुम उसे आज़ादी के साथ घूमने दो और उसे मत पकड़ो।"

मेरी बात सुन कर उस लड़की ने कहा : "क्या तुम्हें इस से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत चीज़ न दिखाऊं ?"

मैं ने कहा : "ज़रूर दिखाओ।" येह सुन कर उस ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे ले कर मुख़्तलिफ़ बाग़ात से होती हुई एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल के दरवाज़े पर पहुंच कर दस्तक दी। दरवाज़ा फ़ौरन खोल दिया गया, अन्दर का मन्ज़र बहुत सुहाना था, दरवाज़ा खुलते ही एक ख़ूब सूरत बाग़ नज़र आया, वोह लड़की मुझे ले कर बाग़ में आई और फिर एक ख़ैमे की जानिब चल दी। मैं भी साथ साथ थी। उस ने हुक्म दिया कि ख़ैमे के पर्दे हटा दिये जाएं। जैसे ही ख़ादिमों ने पर्दे हटाए तो अन्दर ऐसी नूरानी किरनें थीं जिन्हों ने आस पास की तमाम चीज़ों को मुनव्वर कर रखा था। पूरा ख़ैमा नूर से जगमगा रहा था। वोह लड़की उस ख़ैमे में दाख़िल हुई और फिर मुझे भी अन्दर बुला लिया वहां बहुत सारी नौ जवान कनीज़ें मौजूद थीं जिन के हाथों में ऊ़द (या'नी ख़ुश्बू) से भरे हुए बरतन थे और वोह कनीज़ें ऊ़द की धूनी दे रही थीं।

येह देख कर उस लड़की ने कहा : "तुम सब यहां क्यूं जम्अ़ हो ? येह इतना एहतिमाम क्यूं किया जा रहा है ? और तुम किस लिये ख़ुश्बू की धूनी दे रही हो ?" तो उन कनीज़ों ने जवाब दिया : "आज एक मुजाहिद राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद हो गया है, हम उस के इस्तिक़्बाल के लिये यहां जम्अ़ हैं और येह सारा एहतिमाम उसी मर्दे मुजाहिद की ख़ातिर किया जा रहा है।"

उस लड़की ने मेरी जानिब इशारा किया और पूछा : "क्या इन के लिये भी कोई एहतिमाम किया गया है ?" तो उन कनीज़ों ने कहा : "हां, इस के लिये भी इस त़रह़ की ने'मतों में ह़िस्सा है।" फिर उस लड़की ने अपना हाथ मेरी त़रफ़ बढ़ाया और कहा : "ऐ राबिआ़ अ़दविया ! जब लोग नींद के मज़े ले रहे हों उस वक़्त तेरा नमाज़ के लिये खड़ा होना तेरे लिये नूर है और नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देने वाली नींद सरासर ग़फ़्लत और नुक़्सान का बाइ़स है, तेरी ज़िन्दगी के लम्ह़ात तेरे लिये सुवारी की मानिन्द हैं और जो शख़्स दुन्यावी ज़िन्दगी में मगन रहे और अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात को फ़ुज़ूल कामों में गुज़ार दे तो वोह बहुत बड़े ख़सारे में है।"

येह नसीह़त आमोज़ कलिमात कहने के बा'द वोह लड़की मेरी आंखों से ओझल हो गई और मेरी आंख खुल गई। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : "जब भी मुझे येह ख़्वाब याद आता है तो मैं बहुत ज़ियादा ह़ैरान होती हूं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 131 : जुरअत मन्द चीफ़ जस्टिस

ह़ज़रते सय्यिदुना नमीर म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से मरवी है, ख़लीफ़ा मन्सूर जब मदीनए मुनव्वरह में आया तो उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इमरान त़ल्ह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मदीनए मुनव्वरह में ओ़ह्दए क़ज़ा पर फ़ाइज़ थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत आ़दिल व जुरअत मन्द क़ाज़ी थे। ह़क़दार को उस का ह़क़ दिलवाते अगर्चे मद्दे मुक़ाबिल कितना ही असरो रुसूख़ वाला हो आप इस मुआ़-मले में बिल्कुल रिआ़यत न करते।

मैं उन का कातिब था। जब ख़लीफ़ा मन्सूर मदीनए मुनव्वरह में ह़ाज़िर हुवा तो कुछ लोगों ने ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ क़ाज़ी की अ़दालत में दा'वा किया : "हमारे ऊंट ना जाइज़ त़रीक़े से ख़लीफ़ा ने छीन लिये हैं लिहाज़ा हमें इन्साफ़ दिलाया जाए।" उन ग़रीब लोगों की फ़रियाद सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इमरान त़ल्ह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने मुझे हुक्म फ़रमाया : "ऐ नमीर (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير) ! फ़ौरन ख़लीफ़ा की जानिब पैग़ाम लिखो : "चन्द लोगों ने आप के ख़िलाफ़ दा'वा किया है और वोह इन्साफ़ चाहते हैं लिहाज़ा आप पर लाज़िम है कि फ़ौरन तशरीफ़ लाएं ताकि फ़रीक़ैन की मौजूदगी में शर-ई फ़ैसला किया जा सके।"

ह़ज़रते सय्यिदुना नमीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं कि मैं ने क़ाज़ी साह़िब से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझे इस मुआ़-मले से दूर ही रखें, ख़लीफ़ा मेरी लिखाई को पहचानता है कहीं ऐसा न हो कि मैं किसी मुश्किल में फंस जाऊं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ नमीर (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير) ! येह पैग़ाम तुम ही लिखोगे और तुम ही इसे ले कर ख़लीफ़ा के पास जाओगे, जल्दी करो और पैग़ाम लिखो।" मैं ने जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह बात सुनी तो पैग़ाम लिखा, उस पर मोहर लगाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अब जल्दी से येह ख़त़ ले कर ख़लीफ़ा के पास जाओ।" चुनान्चे मुझे मजबूरन जाना ही पड़ा। मैं सीधा ख़लीफ़ा मन्सूर के मुशीरे ख़ास रबीअ़ के पास गया और उसे सूरते ह़ाल से आगाह करने के बा'द कहा : "आप येह पैग़ाम ख़लीफ़ा तक पहुचा दें, मुझ में इतनी हिम्मत नहीं।" रबीअ़ ने कहा : "तुम ख़ुद ही जा कर ख़लीफ़ा को क़ाज़ी का ख़त़ दो।"

लिहाज़ा चारो नाचार मुझे ही ख़लीफ़ा के पास जाना पड़ा, मैं ने जा कर उसे क़ाज़ी साह़िब का ख़त़ दे दिया और फ़ौरन वापस चला आया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इमरान त़ल्ह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अ़दालत में बैठे थे और लोगों के मसाइल ह़ल फ़रमा रहे थे। वहां मदीनए मुनव्वरह के बड़े बड़े उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی, उ-मरा और दीगर लोग काफ़ी ता'दाद में मौजूद थे। इतनी ही देर में ख़लीफ़ा मन्सूर का मुशीरे ख़ास रबीअ़ कमरए अ़दालत में आया और उस ने ख़लीफ़ा मन्सूर का पैग़ाम सुनाया :

ऐ लोगो ! ख़लीफ़ा ने आप सब को सलाम भेजा है और कहा है कि मुझे बत़ौरे मुद्दआ़ अ़लैह (या'नी जिस पर दा'वा किया जाए) अ़दालत में त़लब किया गया है लिहाज़ा मुझ पर अ़दालत में ह़ाज़िर होना लाज़िम है। तमाम लोगों को ताकीद है कि जब मैं आऊं तो कोई भी मेरी ता'ज़ीम के लिये खड़ा न हो और न ही कोई सलाम करने के लिये मेरी त़रफ़ बढ़े।

लोगों को ख़लीफ़ा का पैग़ाम सुनाने के बा'द रबीअ़ वहां से चला गया, मैं भी साथ था। कुछ ही देर बा'द ख़लीफ़ा मन्सूर, रबीअ़ और मुसय्यब के साथ आया। मैं भी उस के पीछे था। ख़लीफ़ा को देख कर मजलिस से कोई भी ता'ज़ीम के लिये खड़ा न हुवा और न ही किसी ने सलाम में पहल की बल्कि ख़ुद

ख़लीफ़ा ने आते ही लोगों को सलाम किया, फिर वोह रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हुवा, सलातो सलाम पेश करने के बा'द रबीअ़ से कहा : "अगर आज क़ाज़ी मुह़म्मद बिन इ़मरान त़ल्ह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने मेरे साथ नर्मी का बरताव किया और मेरे मन्सब की वजह से कोई ग़लत़ फ़ैसला किया तो मैं इसे फ़ौरन मा'ज़ूल कर दूंगा।"

फिर ख़लीफ़ा मन्सूर, क़ाज़ी की अ़दालत में आया, उस वक़्त उस के जिस्म पर चादर थी और एक तहबन्द था। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इ़मरान त़ल्ह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ख़लीफ़ा को देखा तो ज़र्रा बराबर भी मरऊ़ब न हुए और अपनी निशस्त पर बैठे रहे। ख़लीफ़ा मन्सूर की चादर उस के कन्धे से गिर गई तो किसी ने भी उसे चादर उठा कर न दी बल्कि उस ने ख़ुद ही अपनी चादर उठाई।

क़ाज़ी मुह़म्मद बिन इ़मरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان ने मुक़द्दमे की कारवाई शुरूअ़ करते हुए दोनों फ़रीक़ों को अपने सामने बुलाया। फिर मुद्दइ़य्यीन (या'नी दा'वा करने वालों) से पूछा : "तुम्हारा ख़लीफ़ा पर क्या दा'वा है ?" उन्हों ने कहा : "हमारे ऊंटों को जब्रन छीना गया है।" चुनान्चे क़ाज़ी साह़िब ने ख़लीफ़ए वक़्त के ख़िलाफ़ उन लोगों के ह़क़ में फ़ैसला कर दिया और बिल्कुल रू रिआ़यत से काम न लिया और ख़लीफ़ा से कहा : "इन ग़रीबों को इन का पूरा पूरा ह़क़ दिया जाए।" चुनान्चे उन्हें ख़लीफ़ा की त़रफ़ से उन के ऊंट वापस कर दिये गए।

इस फ़ैसले के बा'द ख़लीफ़ा मन्सूर अपनी क़ियाम गाह की त़रफ़ रवाना हो गया। क़ाज़ी साह़िब लोगों के मसाइल ह़ल करने में मश्ग़ूल रहे और ख़लीफ़ा की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दी। फिर ख़लीफ़ा ने रबीअ़ को बुलाया और कहा : "जाओ और क़ाज़ी साह़िब को बुला कर लाओ।" रबीअ़ ने कहा : "ख़ुदा की क़सम ! क़ाज़ी साह़िब उस वक़्त तक आप के पास नहीं आएंगे जब तक मजलिस में मौजूद तमाम फ़रियादियों की फ़रियाद न सुन लें। बहर ह़ाल मैं चला जाता हूं और आप का पैग़ाम उन तक पहुंचा देता हूं।"

चुनान्चे रबीअ़, क़ाज़ी मुह़म्मद बिन इ़मरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان के पास आया और उसे ख़लीफ़ा मन्सूर का पैग़ाम दे कर वापस आ गया। क़ाज़ी साह़िब लोगों के मसाइल सुनते रहे और फ़ैसले करते रहे जब सब लोग चले गए और मजलिस बरख़ास्त हो गई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़लीफ़ा मन्सूर के पास गए, उसे सलाम किया। ख़लीफ़ा ने सलाम का जवाब दिया और क़ाज़ी साह़िब से यूं मुख़ात़िब हुए :

ऐ मर्दे मुजाहिद ! ऐ जुरअत मन्द क़ाज़ी मुह़म्मद बिन इ़मरान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरे दीन की त़रफ़ से तेरी ज़िहानत, जुरअत मन्दी और अच्छा फ़ैसला करने पर अच्छा बदला अ़त़ा फ़रमाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे ह़सब व नसब में ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए, फिर ख़लीफ़ा मन्सूर ने ख़ादिम को हुक्म दिया कि दस हज़ार दीनार इस मर्दे मुजाहिद क़ाज़ी को हमारी त़रफ़ से बत़ौरे इन्आ़म पेश किये जाएं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इ़मरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان को दस हज़ार दीनार बत़ौरे इन्आ़म पेश किये गए, फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां से वापस अपनी रिहाइश गाह की त़रफ़ चले आए।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारा दीने इस्लाम कितना अ़ज़ीम दीन है कि इस ने आ कर तमाम लोगों को एक ही सफ़ में खड़ा कर दिया। चाहे कोई बादशाह हो या फ़क़ीर। जब हुक़ूक़ुल इबाद का मुआ़-मला हो तो जिस का ह़क़ साबित हो जाए उसे उस का पूरा पूरा ह़क़ अदा करने का हुक्म दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दीने इस्लाम में ऐसे ऐसे मर्दाने मुजाहिद पैदा फ़रमाए जो कभी भी ह़क़ से रू गरदानी नहीं करते। हमेशा मज़्लूमों का साथ देते हैं, चाहे इस के लिये बादशाहों से भी टक्कर क्यूं न लेनी पड़े, दीने इस्लाम ने हमें मुसावात का दर्स दिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हमेशा ह़क़ का साथ देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दीने इस्लाम पर ही हमारा ख़ातिमा फ़रमाए। कितना प्यारा है हमारा दीन जिस ने मुसावात व बराबरी का दर्स दिया। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

एक ही सफ़ में खड़े हो गए मह़मूदो अयाज़ न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़

हि़कायत नम्बर 132 : पांच लाख दिरहम का दा'वा [1]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِیْد का दौरे ख़िलाफ़त था, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन ज़ब्यान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان रिक़्क़ह (या'नी शहर) के क़ाज़ी थे और उस शहर का अमीर (या'नी गवर्नर) ईसा बिन जा'फ़र अ़ब्बासी था, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन ज़ब्यान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان एक बा हिम्मत, आ़दिल और रह़म दिल क़ाज़ी थे, किसी पर ज़ुल्म बरदाश्त न करते और ह़क़ दार को ह़क़ दिलवा कर ही दम लेते।

एक मर्तबा उन की अ़दालत में एक शख़्स आया और उस ने गवर्नर "**ईसा बिन जा'फ़र**" के ख़िलाफ़ दा'वा किया कि उस ने मुझ से पांच लाख दिरहम लिये थे और अब देने से इन्कार कर रहा है, ख़ुदारा ! मुझे मेरा ह़क़ दिलवाया जाए, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस की बात सुनी तो फ़ौरन कातिब को बुलाया और फ़रमाया : "अमीरे शहर के नाम पैग़ाम लिखो, कातिब ने पैग़ाम लिखा, जिस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ था :

"ऐ हमारे अमीर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे, अपनी ने'मतें आप पर निछावर फ़रमाए, आप को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे। आज मेरे पास एक शख़्स ने दा'वा दर्ज कराया है कि "अमीरे शहर ने मुझ से पांच लाख दिरहम ले कर वापस नहीं किये लिहाज़ा मुझे मेरा ह़क़ दिलवाया जाए।" ऐ

1 : इस हि़कायत का कुछ हि़स्सा अ़-रबी मतन में नहीं इस लिये आख़िरी हि़स्सा क़दरे तसर्रुफ़ के साथ अ़ल्लामा मुह़म्मद सालेह़ फ़रफ़ौर की किताब मिन रश्ख़ातिल ख़ुलूद (मुतरजम) स. 143 से लिया गया है।

हमारे अमीर ! अब शरीअ़त का हुक्म येह है कि या तो आप खु़द तशरीफ़ लाएं या अपना कोई वकील भेजें ताकि फ़रीक़ैन की गुफ़्त-गू सुन कर मैं फ़ैसला कर सकूं और ह़क़ वाजे़ह़ हो जाए। अल्लाह तआ़ला आप को जज़ाए खै़र अ़ता फ़रमाए।" **वस्सलाम**

क़ाज़ी साहि़ब ने ख़त़ पर मोहर सब्त फ़रमाई और एक शख़्स को वोह ख़त़ दे कर अमीर (या'नी गवर्नर) के पास भेज दिया, जब क़ासिद ने जा कर बताया कि क़ाज़ी की त़रफ़ से आप को ख़त़ आया है तो गवर्नर ने उस ख़त़ को कोई अहम्मिय्यत न दी और अपने ख़ादिम को बुला कर वोह ख़त़ उस के ह़वाले कर दिया। जब क़ासिद ने देखा कि क़ाज़ी के ख़त़ को कोई अहम्मिय्यत नहीं दी गई तो वोह वापस लौट आया और सारा वाक़िआ़ क़ाज़ी साहि़ब को बताया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दोबारा खै़र ख़्वाही के जज़्बे के तह़त ख़त़ लिखा और उस में भी येही कहा : "आप के ख़िलाफ़ दा'वा किया गया है लिहाज़ा आप या तो खु़द अ़दालत में तशरीफ़ लाएं या अपने किसी वकील को भेज दें ताकि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया जा सके, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे। फिर आप ने ख़त़ पर मोहर लगाई और दो क़ासिदों को ख़त़ दे कर ईसा बिन जा'फ़र के पास भेजा। जब वोह दोनों क़ासिद उस के पास पहुंचे तो उस ने ख़त़ देख कर बहुत ग़ैज़ो ग़ज़ब का इज़्हार किया, ख़त़ को ज़मीन पर फेंक दिया और क़ासिदों को भी डांटा। चुनान्चे दोनों क़ासिद शरमिन्दा हो कर वापस क़ाज़ी उ़बैद बिन ज़ब्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के पास आए और उन्हें सारा वाक़िआ़ कह सुनाया।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ासिदों की बात सुन कर तीसरी मर्तबा फिर ख़त़ भेजा और उस में लिखा : "ऐ हमारे अमीर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की हि़फ़ाज़त फ़रमाए आप को ने'मतों से मालामाल करे। आप के ख़िलाफ़ दा'वा दाइर किया गया है। बार बार आप को तवज्जोह दिलाई जा रही है कि या तो आप खु़द अ़दालत में आएं या अपने किसी वकील को भेजें ताकि फ़ैसला किया जा सके। अगर इस मर्तबा भी आप या आप का वकील न आया तो मैं येह मुआ़-मला ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد की ख़िदमत में पेश करूंगा, लिहाज़ा आप जल्द अज़ जल्द इस मुआ़-मले को ह़ल करने की कोशिश करें। **वस्सलाम**

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दो आदमियों को वोह ख़त़ दे कर ईसा बिन जा'फ़र के पास भेजा, जब दोनों क़ासिद दरबार में पहुंचे तो उन्हें बाहर ही रोक दिया गया। कुछ देर बा'द ईसा बिन जा'फ़र बाहर आया तो क़ासिदों ने उसे क़ाज़ी साहि़ब का ख़त़ दिया। उस ने ख़त़ की त़रफ़ कोई तवज्जोह न दी और उसे पढ़ना भी गवारा न किया और पढे बिग़ैर फेंक दिया। क़ासिद बेचारे शरमिन्दा हो कर क़ाज़ी साहि़ब के पास आए और उन्हें सारा वाक़िआ़ सुनाया, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह देखा कि ईसा बिन जा'फ़र अपने ओ़हदे और त़ाक़त के घमन्ड में आ कर क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर रहा है और मैं ह़क़दार को उस का ह़क़ न दिलवा सका तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इसी सोच की बिना पर अपने तमाम काग़ज़ात वग़ैरा एक थैले में भरे और घर की त़रफ़ रवाना हो गए और अ़दालत में आना छोड़ दिया।

जब मुआ़-मला तूल पकड़ गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अ़दालत में न आए तो लोगों ने

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد को बताया कि हमारे क़ाज़ी साह़िब दिल बरदाश्ता हो कर ओ़ह्दए क़ज़ा से बर त़रफ़ हो गए हैं और उन्हों ने अ़दालत में आना छोड़ दिया है। येह सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد ने फ़ौरन आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को अपने पास बुलवाया। जब आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه वहां पहुंचे तो ख़लीफ़ा ने पूछा : "बताओ ! तुम दिल बरदाश्ता क्यूं हो गए और क्यूं इस ओ़हदे से बर त़रफ़ होना चाहते हो ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन ज़ब्यान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَنَّان ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया कि मैं ने कई मर्तबा इन्तिहाई नर्मी और बा अदब त़रीक़े से ईसा बिन जा'फ़र को पैग़ाम भिजवाया लेकिन उस ने बिल्कुल तवज्जोह न दी। ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد ने जब क़ाज़ी साह़िब की येह दर्द भरी दास्तान सुनी तो उसी वक़्त इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ से फ़रमाया : "फ़ौरन ईसा बिन जा'फ़र की रिहाइश गाह पर जाओ और उस के घर के तमाम रास्ते बन्द कर दो कोई शख़्स भी न तो बाहर आ सके और न ही अन्दर जा सके। जब तक ईसा बिन जा'फ़र उस मज़्लूम ह़क़दार का ह़क़ अदा नहीं करेगा वोह इसी त़रह़ नज़र बन्द रहेगा। अगर वोह चाहता है कि उसे इस मुसीबत से आज़ादी मिल जाए तो वोह ख़ुद चल कर क़ाज़ी की अ़दालत में जाए या फिर अपने किसी वकील को भेज दे ताकि अ़दालत में शर-ई़ फ़ैसला हो सके और ह़क़ वाज़ेह़ हो जाए।"

हुक्म पाते ही इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ ने 50 शह सुवारों को ले कर ईसा बिन जा'फ़र की रिशाइश गाह का मुह़ासरा कर लिया। तमाम रास्ते बन्द कर दिये, किसी को भी आने जाने की इजाज़त न दी गई।

जब ईसा बिन जा'फ़र ने येह ह़ालत देखी तो वोह बहुत ह़ैरान हुवा। उस की समझ में न आया कि मुझे इस त़रह़ क्यूं क़ैद किया जा रहा है ? शायद हारूनुर्रशीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد मुझे क़त्ल करवाना चाहते है लेकिन क्यूं ? आख़िर मैं ने ऐसा कौन सा जुर्म किया है ? ईसा बिन जा'फ़र बहुत परेशान था, दूसरी त़रफ़ अहले ख़ाना परेशान थे, वोह चीख़ो पुकार कर रहे थे और रो रहे थे। ईसा बिन जा'फ़र ने उन को ख़ामोश कराया और इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ के साथ आए हुए सिपाहियों में से एक को बुलाया और उस से कहा : "इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ को पैग़ाम पहुंचा दो कि वोह मुझ से मुलाक़ात करे मैं उस से कुछ पूछना चाहता हूं।"

जब इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ उस के पास आया तो उस ने पूछा : "ख़लीफ़ा ने हमे इस त़रह़ क़ैद क्यूं करवा दिया है।"

उस ने बताया : "येह सब क़ाज़ी उ़बैदुल्लाह बिन ज़ब्यान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَنَّان की वजह से किया गया है उन्हों ने तुम्हारी शिकायत की है कि तुम ने क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है, और एक शख़्स पर ज़ुल्म किया है।" जब ईसा बिन जा'फ़र को सारा मुआ़-मला मा'लूम हो गया तो उसे एह़सास हो गया कि मुझे किस जुर्म की सज़ा मिल रही है, मैं ने त़ाक़त व ओ़ह्दे के नशे में एक मज़्लूम की बद दुआ़ ली जिस की वजह से मुझे ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ा, वाक़ेई़ ज़ुल्म का अन्जाम बुरा होता है और मज़्लूम की मदद ज़रूर की जाती है मुझे मेरे जुर्म की सज़ा मिल गई है। फिर ईसा बिन जा'फ़र ने उस शख़्स को बुलवाया जिस से पांच लाख दिरहम लिये थे, उसे वोह दिरहम वापस किये, उस से मा'ज़िरत की और

आइन्दा कभी ऐसी ह़-र-कत न करने का पुख़्ता इरादा कर लिया, अब मुआ़-मला बिल्कुल ख़त्म हो चुका था। जब ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد को इत्तिलाअ़ मिली कि ईसा बिन जा'फ़र ने मज़्लूम का ह़क़ अदा कर दिया है और उस से मुआ़फ़ी भी मांग ली है तो उस ने हुक्म दिया कि अब मुह़ासरा ख़त्म कर दिया जाए और तमाम रास्ते खोल दिये जाएं। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे पैग़ाम भिजवाया कि कभी भी किसी पर ज़ुल्म न करना। येह ओ़ह्दा व मन्सब सब आ़रिज़ी चीज़ें हैं, इन के बल बूते पर किसी को तंग करना बहादुरी नहीं। हमेशा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को पेशे नज़र रखो, इन्साफ़ का दामन कभी न छोड़ो, अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त मज़्लूमों को बहुत जल्द उन का ह़क़ दिलवा देता है। अच्छा है वोह शख़्स जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ को ख़ुश रखे और उस की वजह से किसी भी मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

(سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! ऐसे पाकीज़ा दीन पर क़ुरबान जाएं जिस ने हमें ऐसे ऐसे जुरअत मन्द अफ़्राद अ़ता किये जो ह़क़ की ख़ातिर बड़ी से बड़ी त़ाक़त से भी टकरा जाते, किसी की दुन्यावी हैबत व हैसियत उन्हें मरऊ़ब न कर सकती थी, वोह उस वक़्त तक सुख का सांस न लेते जब तक अहले ह़क़ को उस का ह़क़ न मिल जाए, उन्हों ने ग़ैरे ह़क़ के सामने कभी भी सर नहीं झुकाया, इस्लाम में ऐसे ऐसे हुक्मरान भी गुज़रे जिन्हों ने एक ग़रीब मज़्लूम फ़रियादी की फ़रियाद पर गवर्नरों को पाबन्दे सलासिल कर दिया और जब तक ह़क़दार को ह़क़ न मिला उस वक़्त तक क़ैद ही में रखा, अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें ऐसे बा हिम्मत व आ़दिल हुक्मरान और क़ाज़ी दोबारा अ़त़ा फ़रमाए जो ज़ालिमों को ज़ुल्म की सज़ा दें और मज़्लूमों और बे बसों की फ़रियाद रसी करें, अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें अच्छे क़ाइदीन अ़त़ा फ़रमाए और हम से भी अपने दीने मतीन की ख़िदमत का काम ले ले, हमें ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की तब्लीग़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और ग़ैरते ईमानी से मालामाल फ़रमाए, हमें हर ह़ाल में ह़क़ का साथ देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए चाहे इस मुआ़-मले में हमें जान ही क्यूं न देनी पड़े, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

ग़ुलामाने मुह़म्मद जान देने से नहीं डरते
येह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवाह नहीं करते

ह़िकायत नम्बर 133 : आग की जन्ज़ीरें

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان से नक़्ल करते हैं : "एक मर्तबा मैं बैतल मुक़द्दस की पहाड़ियों में था, एक जगह मुझे इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में इधर उधर घूमता हुवा एक ग़मगीन नौ जवान नज़र आया, मैं उस के पास आया और सलाम के बा'द उस से परेशानी का सबब पूछा तो उस ने बताया : "हमारे एक पड़ोसी का भाई फ़ौत हो गया है, तुम मेरे साथ चलो ताकि हम उस की ता'ज़िय्यत करें और उसे तसल्ली दें।" मैं उस नौ जवान के साथ चल दिया, हम एक शख़्स के पास पहुंचे जो बहुत उदासी के आ़लम में बैठा हुवा था हम ने उसे सब्र की तल्क़ीन की और तसल्ली देने लगे लेकिन उस ने हमारी बातें न सुनीं और बे सब्री करते हुए आहो ज़ारी और चीख़ो पुकार करने लगा, हम ने उसे मह़ब्बत व प्यार से समझाते हुए कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! इस त़रह़ बे सब्री का मुज़ा-हरा न कर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर ! और सब्र से काम ले। बेशक मौत हर किसी को आनी है जिस ने भी ज़िन्दगी का सफ़र शुरूअ़ किया उस की मन्ज़िल व इन्तिहा मौत है। मौत एक ऐसा पुल है जिस से हर एक ने गुज़रना है। कुछ गुज़र गए कुछ गुज़र रहे हैं और कुछ गुज़र जाएंगे।"

याद रख ! हर आन आख़िर मौत है — बन तू मत अन्जान, आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है — सुन लगा कर कान, आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके — मान या मत मान, आख़िर मौत है

हमारी येह बातें सुन कर वोह शख़्स कहने लगा : "मेरे भाइयो ! तुम ने बिल्कुल ठीक कहा, तुम्हारी बातें बिल्कुल बरह़क़ हैं लेकिन मैं तो इस लिये रो रहा हूं कि मेरे भाई को क़ब्र में बड़ी परेशानी का सामना है।"

जब हम ने उस की बात सुनी तो कहा : "سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! क्या तुम इ़ल्मे ग़ैब जानते हो जो तुम्हें मा'लूम हो गया कि तुम्हारा भाई क़ब्र में अ़ज़ाब से दो चार है ?" तो वोह कहने लगा : "मैं उस होलनाक मन्ज़र की वजह से परेशान हूं जो मैं ने देखा है। आओ ! मैं तुम्हें तफ़्सील से सारा वाक़िआ़ सुनाता हूं :

जब मेरे भाई का इन्तिक़ाल हो गया तो तज्हीज़ व तक्फ़ीन के बा'द हम ने उसे क़ब्रिस्तान ले जा कर दफ़्न कर दिया, लोग वापस आ गए, मैं कुछ देर क़ब्र के पास ही खड़ा रहा, यकायक मैं ने क़ब्र से एक दर्दनाक आवाज़ सुनी, मेरा भाई निहायत दर्द मन्दाना अन्दाज़ में चीख़ रहा था : "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।" जब मैं ने येह आवाज़ सुनी तो कहा : "वल्लाह ! येह तो मेरे भाई की आवाज़ है।" मैं ने बेचैन हो कर क़ब्र खोदना शुरूअ़ कर दी तो एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! इस क़ब्र को न खोदो, येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के राज़ों में से एक राज़ है, इसे

पोशीदा ही रहने दो।" आवाज़ सुन कर मैं क़ब्र खोदने से बाज़ रहा फिर मैं वहां से उठा और जाने लगा तो मुझे दर्दनाक आवाज़ सुनाई दी : "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।" मुझे अपने भाई पर तरस आने लगा और मैं ने दोबारा क़ब्र खोदना शुरूअ़ कर दी, अभी मैं ने थोड़ी सी मिट्टी हटाई थी कि फिर मुझे ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के राज़ों को न खोलो और क़ब्र खोदने से बाज़ रहो।" ग़ैबी आवाज़ सुन कर मैं ने दोबारा क़ब्र बन्द कर दी, और मैं वहां से जाने लगा तो फिर बड़ी दर्दनाक आवाज़ में मेरे भाई ने मुझे पुकारा : "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।" इस मर्तबा जब मैं ने अपने भाई की आवाज़ सुनी तो मुझे बहुत रह़्म आया और मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि अब तो मैं ज़रूर क़ब्र खोदूंगा। चुनान्चे मैं ने क़ब्र खोदना शुरूअ़ की जैसे ही मैं ने क़ब्र की सिल हटाई तो क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र देख कर मेरे होश उड़ गए, अन्दर इन्तिहाई ख़ौफ़नाक मन्ज़र था, अभी अभी हम ने जिस भाई को दफ़्नाया था उस का सारा जिस्म आग की ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा था, उस की क़ब्र आग से भरी हुई थी। जब मैं ने अपने भाई को इस ह़ालत में देखा तो मुझ से न रहा गया और मैं ने उसे ज़न्जीरों से आज़ाद कराने के लिये अपना हाथ उस की गरदन में बंधी हुई ज़न्जीर की त़रफ़ बढ़ाया जैसे ही मेरा हाथ ज़न्जीर को लगा मेरे हाथ की उंग्लियां जल कर हाथ से जुदा हो गईं, मुझे बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ मह़सूस होने लगी, मैं ने जैसे तैसे क़ब्र को बन्द किया और वहां से भाग निकला। येह देखो मेरे हाथ की उंग्लियां बिल्कुल जल चुकी हैं और अब तक मुझे शदीद दर्द हो रहा है, इतना कहने के बा'द उस ने चादर से अपना हाथ निकाला तो वाक़ेई उस की चार उंग्लियां ग़ाइब थीं और हाथ पर ज़ख़्म का अ़जीबो ग़रीब निशान मौजूद था। हम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत त़लब की और वहां से चले आए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "कुछ अ़र्से के बा'द जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और उन्हें येह सारा वाक़िआ़ सुनाया फिर पूछा : "हुज़ूर! जब कोई यहूदी या नसरानी मरता है तो उस का अ़ज़ाबे क़ब्र लोगों पर ज़ाहिर नहीं होता लेकिन मुसल्मानों की क़ब्रों के ह़ालात बा'ज़ मर्तबा ज़ाहिर हो जाते हैं, इस की क्या वजह है ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "कुफ़्फ़ार के अ़ज़ाबे क़ब्र में तो किसी मुसल्मान को शक ही नहीं, उन्हें तो दाइमी अ़ज़ाब का सामना करना ही है। सब मुसल्मान यक़ीन रखते हैं कि कुफ़्फ़ार मरते ही अ़ज़ाब में मुब्तला हो जाते हैं इस लिये उन के अ़ज़ाब को ज़ाहिर नहीं किया जाता। हां बा'ज़ मर्तबा गुनाहगार मुसल्मानों की क़ब्रों का ह़ाल लोगों पर मुन्कशिफ़ कर दिया जाता है ताकि लोग इस से इ़ब्रत पकड़ें और गुनाहों से ताइब हो कर अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले आ'माल की त़रफ़ राग़िब हों।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखना, हमारे कमज़ोर जिस्म जहन्नम की आग बरदाश्त नहीं कर सकेंगे हम से तो दुन्यवी आग की तपिश भी बरदाश्त नहीं होती, ज़रा सा पतंगा भी

जिस्म पर आ लगे तो चीख़ निकल जाती है, न गर्मी बरदाश्त होती है और न ही किसी क़िस्म की घुटन बरदाश्त होती है, अगर हमें हमारे गुनाहों की वजह से अ़ज़ाबे नार में मुब्तला कर दिया गया तो हमारा क्या बनेगा, ऐ हमारे रह़ीमो करीम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रख, हमारी क़ब्रों को सांपों और बिच्छूओं से मह़फ़ूज़ रख, अगर हमारी क़ब्रों में ऐसे अ़ज़ाबात आ गए तो हम कहां जाएंगे, किस की पनाह लेंगे ? ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू अपने लुत़्फ़ो करम से हमें सांपों और बिच्छूओं के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखना ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा   हाए बरबादी कहां जा के छुपूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

(ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें क़ब्रो ह़श्र की तमाम मुसीबतों से नजात अ़त़ा फ़रमा, जब हमें अंधेरी क़ब्र में उतारा जाए तो हमारी क़ब्रों को हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों से मुनव्वर फ़रमा दे और हमें उन की रह़मत के साए में मीठी मीठी नींद सोने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख़्त रात
उन के प्यारे मुंह की सुब्ह़े जां फ़िज़ा का साथ हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत नम्बर 134 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करने का अज्र

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : बनी इसराईल का एक आ़बिद ब क़द्रे किफ़ायत रिज़्क़े ह़लाल कमाता और बाक़ी वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में गुज़ारता । एक मर्तबा मुसल्सल कई रोज़ तक उसे कहीं भी मज़दूरी न मिली और फ़ाक़ों तक नोबत पहुंच गई, कई रोज़ तक घर में चूल्हा न जला । वोह खुद भी भूका रहा और अहलो इ़याल भी भूक की मशक़्क़त बरदाश्त करते रहे । जब मुआ़-मला ह़द से बढ़ गया तो उस ने अपनी ज़ौजा से कहा : ''कल मैं मज़दूरी के लिये जाऊंगा तुम दुआ़ करना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ को रिज़्क़ देने वाला है वोह हमें भी मह़रूम न रखेगा ।'' उस की ज़ौजा ने भी येही मश्वरा दिया कि तुम यक़ीने कामिल के साथ रिज़्क़ की तलाश में निकलो अल्लाह

عَزَّوَجَلَّ ज़रूर कोई राह निकालेगा। सुब्ह़ सवेरे वोह आ़बिद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर मज़्दूरी की तलाश में निकला और वोह भी दूसरे मज़्दूरों के साथ बैठ गया कि जिस को ज़रूरत होगी वोह मुझे मज़्दूरी के लिये ले जाएगा।

यके बा'द दीगरे तमाम मज़्दूरों को कोई न कोई उजरत पर काम करवाने के लिये ले गया लेकिन उस के पास कोई न आया। जब उस आ़बिद ने येह सूरते ह़ाल देखी तो कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आज मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मज़्दूरी (या'नी इ़बादत) करूंगा।" चुनान्चे वोह दरिया पर आया और वुज़ू कर के नवाफ़िल पढ़ने लगा और सारा दिन इसी त़रह़ रुकूअ़ व सुजूद में गुज़ार दिया। शाम को जब घर पहुंचा तो उस की ज़ौजा ने पूछा : "क्या किसी के हां तुम्हें मज़्दूरी मिली ?" उस ने जवाब दिया : "मैं ने आज बहुत करीम मालिक के हां मज़्दूरी की है, उस ने वा'दा किया है कि वोह मुझे इस मज़्दूरी का बहुत अच्छा बदला देगा।"

दूसरी सुब्ह़ दोबारा येह मज़्दूरों की सफ़ में खड़ा हो गया। सब को कोई न कोई अपने हां काम पर ले गया लेकिन इस की त़रफ़ किसी ने तवज्जोह न की। उस ने दिल में कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज फिर मैं मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मज़्दूरी करूंगा।" वोह फिर दरिया पर आया वुज़ू किया और ख़ूब ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ इ़बादत करने लगा। सारा दिन इसी त़रह़ रुकूअ़ व सुजूद में गुज़र गया। शाम को जब वोह घर पहुंचा और उस की ज़ौजा ने उसे ख़ाली हाथ देखा तो कहने लगी : "आज क्या हुवा ?" उस ने जवाबन कहा : "आज फिर मैं ने उसी मालिक के हां मज़्दूरी की है, वोह बड़ा करीम है, उस ने मुझ से वा'दा कर रखा है कि मुझे इस मज़्दूरी का अच्छा बदला देगा, मेरी उजरत उस मालिक के पास जम्अ़ हो रही है।" फ़ाक़ों की मारी ज़ौजा ने जब येह बात सुनी तो शोहर से झगड़ने लगी कि यहां कई दिन से फ़ाक़े हो रहे हैं, बच्चों की ह़ालत ऐसी हो गई है कि देखी नहीं जाती। हम में से किसी ने भी कई दिनों से एक लुक़्मा तक नहीं खाया और तुम जिस मालिक के हां मज़्दूरी कर रहे हो उस ने तुम्हें आज भी तुम्हारी उजरत नहीं दी, इस त़रह़ कैसे गुज़ारा होगा ?"

इस पर वोह आ़बिद बहुत परेशान हुवा और उस ने सारी रात करवटें बदलते हुए गुज़ार दी। बच्चे भूक की वजह से बिलबिला रहे थे। उस की अपनी भी ह़ालत क़ाबिले रह़्म थी बिल आख़िर सुब्ह़ वोह फिर बाज़ार गया और मज़्दूरों की सफ़ में खड़ा हो गया। आज फिर इस के इ़लावा सब को मज़्दूरी मिल गई लेकिन इसे कोई भी अपने साथ न ले गया।

वोह आ़बिद भी अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होने वाला नहीं था। वोह दरिया पर पहुंचा और वुज़ू करने के बा'द अपने दिल में कहा : "मैं आज फिर अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मज़्दूरी करूंगा, वोह ज़रूर मुझे इस का बदला अ़त़ा फ़रमाएगा।" चुनान्चे आज फिर उस ने सारा दिन इ़बादत में गुज़ार दिया लेकिन शाम तक उसे कहीं से भी रिज़्क़ का बन्दो बस्त होता हुवा नज़र न आया। अब वोह सोचने लगा कि मैं घर जा कर बच्चों और बीवी को क्या जवाब दूंगा ? फिर उस

के यक़ीन ने उस की ढारस बंधाई कि जिस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की तू इ़बादत करता है वोह तुझे मायूस न करेगा। उस की ज़ात पर कामिल यक़ीन रख, वोह ज़रूर रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा। बिल आख़िर वोह घर की त़रफ़ रवाना हुवा। जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचा तो उसे घर के अन्दर से खाना पकने की ख़ुश्बू आई और ऐसा मह़सूस हुवा जैसे अन्दर बहुत ख़ुशी का समां है, सारे घर वाले ख़ुशी से बातें कर रहे हैं। उसे यक़ीन नहीं आ रहा था कि सचमुच अपने घर में ख़ुशी का समां मह़सूस कर रहा हूं और मेरे घर से खाने की ख़ुश्बू आ रही है।

बहर ह़ाल उस ने दरवाज़ा खट-खटाया तो उस की ज़ौजा ने दरवाज़ा खोला। वोह बहुत ख़ुश थी, अपने शोहर को देखते ही कहने लगी : "जिस मालिक के हां तुम ने मज़दूरी की है, वोह तो वाक़ेई बहुत करीम है, आज तुम्हारे जाने के बा'द उस का क़ासिद आया था उस ने हमें बहुत सारे दिरहमो दीनार और उ़म्दा कपड़े दिये, आटा और गोश्त वग़ैरा भी काफ़ी मिक़्दार में दिया।" और कहा : "जब तुम्हारा शोहर आ जाए तो उसे सलाम कहना और कहना कि तेरे मालिक ने तेरा अ़मल क़बूल कर लिया है, और वोह तेरे इस अ़मल से राज़ी है। येह उस का बदला है जो तूने अ़मल किया था अगर तू ज़ियादा अ़मल करता तो तेरा अज्र भी बढ़ा दिया जाता।"

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह तो दुन्या में उस के अ़मल कुछ का अज्र था, रब्बे करीम उस का अस्ल बदला तो जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी का अ़मल ज़ाएअ़ नहीं करता। जो उस से उम्मीद रखता है वोह कभी मायूस नहीं होता, जो उस पर तवक्कुल करता है वोह बहुत नफ़्अ़ में रहता है)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 135 : तेरा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ, तेरी शफ़ाअ़त करेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन उ़स्मान तीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "एक शख़्स बहुत ज़ियादा गुनाहगार था, उस के शबो रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में गुज़रते। वोह मा'सिय्यत के बह़्रे अ़मीक़ में ग़र्क़ था। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाया और उस के दिल में एह़सास पैदा फ़रमाया कि अपने आप पर ग़ौर कर तू किस रविश पर चल रहा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब अपने किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा करता है तो उसे एह़सास और गुनाहों पर नदामत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देता है, उस पर भी पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया और उसे अपने गुनाहों पर शरमिन्दगी हुई, ग़फ़्लत के पर्दे आंखों से हट गए। सोचने लगा कि बहुत गुनाह हो गए, अब पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की

बारगाह में तौबा कर लेनी चाहिये।

चुनान्चे उस ने अपनी ज़ौजा से कहा : ''मैं अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों पर नादिम हूं और अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं, वोह रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को ज़रूर मुआ़फ़ फ़रमाएगा। मैं अब किसी ऐसी हस्ती की तलाश में जा रहा हूं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी सिफ़ारिश करे।''

इतना कहने के बा'द वोह शख़्स सह़रा की त़रफ़ चल दिया। जब एक वीरान जगह पहुंचा तो ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा : ''ऐ ज़मीन ! तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरे लिये शफ़ीअ़ बन जा, ऐ आस्मान ! तू मेरा शफ़ीअ़ बन जा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मा'सूम फ़िरिश्तो ! तुम ही मेरी सिफ़ारिश कर दो।''

वोह ज़ारो क़ित़ार रोता रहा और इसी त़रह़ सदाएं बुलन्द करता रहा। हर हर चीज़ से कहता कि तुम मेरी सिफ़ारिश करो, मैं अब अपने गुनाहों पर शरमिन्दा हूं और सच्चे दिल से ताइब हो गया हूं।

वोह आ़बिद मुसल्सल इसी त़रह़ पुकारता रहा बिल आख़िर रोते रोते बेहोश हो कर ज़मीन पर मुंह के बल गिर गया, उस की इस त़रह़ से आहो ज़ारी और गुनाहों पर नदामत का येह अन्दाज़ मक़्बूल हुवा और उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजा गया जिस ने उसे उठाया और उस के सर से गर्द वग़ैरा साफ़ की और कहा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तेरे लिये ख़ुश ख़बरी है कि तेरी तौबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़बूल हो गई है।'' इस पर वोह बहुत ख़ुश हुवा और कहने लगा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी सिफ़ारिश कौन करेगा ? वहां मेरा शफ़ीअ़ कौन होगा ?'' फ़िरिश्ते ने जवाब दिया : ''तेरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना, येह एक ऐसा अ़मल है जो तेरा शफ़ीअ़ होगा और तेरा येही अ़मल बारगाहे ख़ुदा वन्दी में तेरी सिफ़ारिश करेगा।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सच्ची तौबा की तीन शराइत़ हैं कि **गुनाहों पर नदामत और उस गुनाह से फ़ौरन रुक जाए और आइन्दा गुनाह न करने का अ़ज़्मे मुसम्मम हो**। जिस को येह चीज़ें ह़ासिल हो जाएं उस की तौबा क़बूल होती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है। बन्दा चाहे कितना ही गुनाहगार क्यूं न हो एक मर्तबा सच्चे दिल से ताइब हो जाए तो उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं। मेरा रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर बहुत करम फ़रमाता है। ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा कर हमें सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रख और सारी उम्मते मुस्लिमा की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

इलाही वासित़ा प्यारे का मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा
अ़ज़ाबे नार से मुझ को ख़ुदाया ख़ौफ़ आता है

ह़िकायत नम्बर 136 : काम्याबी की ज़मानत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने बारह ऐसे कलिमात इर्शाद फ़रमाए कि अगर लोग इन पर अ़मल करें तो काम्याबी व कामरानी से हम किनार हो जाएं और कभी भी ग़लत़ ह़-रकात न करें।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! वोह कौन से कलिमात हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "वोह नसीह़त आमोज़ कलिमात येह हैं :-

(1)...... तू अपने मुसल्मान भाई की पसन्द का ख़याल रख, उस के साथ भलाई कर। फिर तुझे भी उस की त़रफ़ से तेरी पसन्दीदा चीज़ ही मिलेगी।

(2)...... कभी भी किसी मुसल्मान भाई के कलाम में बद गुमानी न कर (या'नी हमेशा अच्छा पहलू तलाश कर) तुझे ज़रूर उस के कलाम में कोई अच्छी बात मिल जाएगी।

(3)...... जब तेरे सामने दो काम हों तो उस काम में हरगिज़ न पड़ जिस में नफ़्स की पैरवी करना पड़े क्यूं कि नफ़्स की पैरवी में सरासर नुक़्सान है।

(4)...... जब कभी तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी किसी ह़ाजत में ह़ाजत बर आरी चाहता हो तो दुआ़ से पहले उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर बहुत लुत़्फ़ो करम फ़रमाता है जो उस से अपनी ह़ाजतें त़लब करे। फिर अगर कोई शख़्स अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त से दो चीज़ें मांगता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे वोह चीज़ अ़त़ा फ़रमाता है जो उस के ह़क़ में बेहतर होती है और जो नुक़्सान देह हो उसे बन्दे से रोक लेता है।

(5)...... जो शख़्स येह चाहे कि हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मशग़ूल रहे तो उसे चाहिये कि सब्र को अपना शिआ़र बना ले और हर मुसीबत पर सब्र करे।

(6)...... और जो शख़्स दुन्यवी ज़िन्दगी (में त़वालत) का ख़्वाहिश मन्द हो तो उसे चाहिये कि मसाइब के लिये तय्यार हो जाए।

(7)...... जो शख़्स येह चाहे कि उस का वक़ार व इ़ज़्ज़त बर क़रार रहे तो उसे चाहिये कि रियाकारी से बचे।

(8)...... जो शख़्स क़ाइद व रहनुमा (या'नी सरदार) बनना चाहे उसे चाहिये कि हर ह़ाल में अपनी ज़िम्मादारी पूरी करे। चाहे उसे कितनी ही दुश्वारी का सामना करना पड़े (या'नी सरदारी के लिये ज़िम्मादारियों को पूरा करने की मशक़्क़त बरदाश्त करना ज़रूरी है। बिग़ैर मशक़्क़त के इन्सान को बुलन्द रुत्बा ह़ासिल नहीं होता)।

(9)...... जिस बात से तेरा तअ़ल्लुक़ न हो ख़्वाह म ख़्वाह उस के बारे में सुवाल न कर।

(10)...... बीमारी से पहले सिह़्ह़त को ग़नीमत जान और फ़ुरसत के लम्ह़ात से भरपूर फ़ाएदा उठा, वरना ग़म व परेशानी का सामना होगा।

(11)...... इस्तिक़ामत आधी काम्याबी है, जैसा कि ग़म आधा बुढ़ापा।

(12)...... जो चीज़ तेरे दिल में खटके उसे छोड़ दे क्यूं कि उस को छोड़ देने ही में तेरी सलामती है।

(سُبْحَانَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन ने हमारी रहनुमाई के लिये कैसे कैसे नसीह़त आमोज़ कलिमात इर्शाद फ़रमाए, मज़्कूरा बाला कलिमात ऐसे जामेअ़ और ह़िक्मत आमोज़ हैं कि अगर कोई शख़्स इन पर अ़मल कर ले तो वोह दारैन की सआ़दतों से मालामाल हो जाए, उसे दीनो दुन्या के किसी मुआ़-मले में शरमिन्दगी का सामना न करना पड़े, इन बारह कलिमात में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم नें हमें ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन त़रीक़ा बता दिया है कि अगर इस त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो बहुत जल्द तरक़्क़ी व काम्याबी की दौलत नसीब होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा नसीब होगी।

येह ह़ज़रात ख़ुद इल्मो अ़मल के पैकर हुवा करते थे और जो शख़्स मुख़्लिस व बा अ़मल हो उस के सीने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इल्मो ह़िक्मत के चश्मे रवां फ़रमा देता है, फिर उस की ज़बान से निकले हुए कलिमात कितने ही मुर्दा दिलों को ज़िन्दा कर देते हैं, कितनों की बिगड़ी बन जाती है। जब येह लोग किसी को नसीह़त करते हैं तो ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से करते हैं और जो बात दिल की गहराइयों से निकले वोह मुअस्सिर क्यूं न हो। ह़क़ीक़तन वोही बात असर करती है जो दिल से निकलती है।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दिल से जो बात निकलती असर रखती है
पर नहीं, त़ाक़ते परवाज़ मगर रखती है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें बुज़ुर्गाने दीन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 137 : सब्र और क़नाअ़त की दौलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह मुह़ामिली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی को येह फ़रमाते हुए सुना : ''ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़े ईद के बा'द मैं ने सोचा कि आज ईद का दिन है, क्या ही अच्छा हो कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन्हें ईद की मुबारक बाद दूं, आज तो ख़ुशी का दिन है, उन से ज़रूर मुलाक़ात करनी चाहिये।'' चुनान्चे इसी ख़याल के पेशे नज़र मैं ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی

के घर की जानिब चल दिया। वोह सादगी पसन्द बुज़ुर्ग थे और एक सादा से मकान में रहते थे। मैं ने वहां पहुंच कर दरवाज़ा खट-खटाया और अन्दर आने की इजाज़त चाही तो उन्हों ने मुझे अन्दर बुला लिया।

जब मैं कमरे में दाख़िल हुवा तो देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सामने एक बरतन में फलों और सब्ज़ियों के छिल्के और एक बरतन में आटे की बूर (या'नी भूसी) रखी हुई थी और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उसे खा रहे थे। येह देख कर मुझे बड़ी ह़ैरत हुई, मैं ने उन्हें ई़द की मुबारक बाद दी और सोचने लगा कि आज ई़द का दिन है, हर शख़्स अन्वाओ़ अक़्साम के खानों का एहतिमाम कर रहा होगा लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आज के दिन भी इस ह़ालत में हैं कि छिल्के और आटे की भूसी खा कर गुज़ारा कर रहे हैं। मैं निहायत ग़म के आ़लम में वहां से रुख़्सत हुवा और अपने एक साह़िबे सरवत दोस्त के पास पहुंचा, जिस का नाम "**जरजानी**" मशहूर था। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "हुज़ूर ! किस चीज़ ने आप को परेशान कर दिया है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मदद फ़रमाए, आप को हमेशा ख़ुश व ख़ुर्रम रखे, मेरे लिये क्या हुक्म है ?"

मैं ने कहा : "ऐ जरजानी ! तुम्हारे पड़ोस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक वली रहता है, आज ई़द का दिन है लेकिन उस की येह ह़ालत है कि कोई चीज़ ख़रीद कर नहीं खा सकता। मैं ने देखा कि वोह फलों के छिल्के खा रहे थे, तुम तो नेकियों के मुआ़-मले में बहुत ज़ियादा ह़रीस हो, तुम अपने इस पड़ोसी की ख़िदमत से ग़ाफ़िल क्यूं हो ?"

येह सुन कर उस ने कहा : "हुज़ूर ! आप जिस शख़्स की बात कर रहे हैं वोह दुन्यादार लोगों से दूर रहना पसन्द करता है। मैं ने आज सुब्ह़ ही उसे एक हज़ार दिरहम भिजवाए और अपना एक ग़ुलाम भी उन की ख़िदमत के लिये भेजा लेकिन उन्हों ने मेरे दराहिम और ग़ुलाम को येह कह कर वापस भेज दिया कि जाओ और अपने मालिक से कह देना कि तुम ने मुझे क्या समझ कर येह दिरहम भिजवाए हैं ? क्या मैं ने तुझ से अपनी ह़ालत के बारे में कोई शिकायत की है ? मुझे तुम्हारे इन दिरहमों की कोई ह़ाजत नहीं, मैं हर ह़ाल में अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से ख़ुश हूं, वोही मेरा मक़्सूदे अस्ली है, वोही मेरा कफ़ील है और वोह मुझे काफ़ी है।"

अपने दोस्त से येह बात सुन कर मैं बहुत मु-तअ़ज्जिब हुवा और उस से कहा : "तुम वोह दिरहम मुझे दो, मैं उन की बारगाह में येह पेश करूंगा। मुझे उम्मीद है कि वोह क़बूल फ़रमा लेंगे।" उस ने फ़ौरन ग़ुलाम को हुक्म दिया : "हज़ार हज़ार दिरहमों से भरे हुए दो थैले लाओ।" फिर उस ने मुझ से कहा : "एक हज़ार दिरहम मेरे पड़ोसी के लिये और एक हज़ार आप के लिये तोह़फ़ा हैं। आप येह ह़क़ीर सा नज़राना क़बूल फ़रमा लें।" मैं वोह दो हज़ार दिरहम ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के मकान पर पहुंचा और दरवाज़े पर दस्तक दी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه दरवाज़े पर आए और अन्दर ही से पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़ामिली ! तुम दोबारा किस लिये यहां आए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर !

एक मुआ़-मला दरपेश है, उसी के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ गुफ़्त-गू करनी है।" पस उन्हों ने मुझे अन्दर आने की इजाज़त अ़ता फ़रमा दी मैं उन के पास बैठ गया और फिर दिरहम निकाल कर उन के सामने रख दिये। येह देख कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं ने तुझे अपने पास आने की इजाज़त दी और तुम मेरी ह़ालत से वाक़िफ़ हो गए। मैं तो येह समझा था कि तुम मेरी इस ह़ालत के अमीन हो। मैं ने तुम पर ए'तिमाद किया था, क्या उस ए'तिमाद का सिला तुम इस दुन्यवी दौलत के ज़रीए़ दे रहे हो ? जाओ ! अपनी येह दुन्यवी दौलत अपने पास ही रखो, मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह मुहामिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "उन की येह शाने इस्तिग़्ना देख कर मैं वाापस चला आया और अब मेरी नज़रों में दुन्या ह़क़ीर हो गई थी। मैं अपने दोस्त जरजानी के पास गया उसे सारा माजरा सुनाया और सारी रक़म वापस कर देना चाही तो उस ने येह कहते हुए वोह दिरहम वापस कर दिये कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जो रक़म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में दे चुका उसे कभी वापस न लूंगा लिहाज़ा येह माल तुम अपने पास रखो और जहां चाहो ख़र्च करो।" फिर मैं वहां से चला आया और मेरे दिल में माल की बिल्कुल भी मह़ब्बत न थी मैं ने सोच लिया कि मैं येह सारी रक़म ऐसे लोगों में तक़्सीम कर दूंगा जो शदीद ह़ाजत मन्द होने के बा वुजूद दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाते बल्कि सब्रो शुक्र से काम लेते हैं और अपनी ह़ालत ह़त्तल इम्कान किसी पर ज़ाहिर नहीं होने देते।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

न दौलत दे न सरवत दे मुझे बस येह सआ़दत दे
तेरे क़दमों में मर जाऊं मैं रो रो कर मदीने में
न मुझ को आज़मा दुन्या का मालो जर अ़ता कर के
अ़ता कर अपना ग़म और चश्मे गिरयां या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *!*

(या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन बुज़ुर्गों की पाकीज़ा सिफ़ात के सदक़े हमें भी दुन्या की मह़ब्बत से ख़लासी अ़ता फ़रमा, दूसरों के सामने दस्ते सुवाल फैलाने से हमें मह़फ़ूज़ रख, क़नाअ़त व सब्रो शुक्र की ने'मत अ़ता फ़रमा, हमें ज़माने में अपने इ़लावा किसी और का मोह़ताज न कर, सिर्फ़ अपना ही मोह़ताज रख और दुन्या की ह़िर्स व मह़ब्बत से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा। हमें अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत अ़ता फ़रमा, ग़मे माल नहीं बल्कि ग़मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में रोने वाली आंखें अ़ता फ़रमा। हमारे दिलों में अपनी और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत रासिख़ फ़रमा, हमें मालो दौलत नहीं चाहिये, हम तो तेरी दाइमी रिज़ा के ही त़लबगार हैं। ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम से हमेशा के लिये राज़ी हो जा और हमें हर ह़ाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें क़नाअ़त की दौलत नसीब फ़रमा और दूसरों की मोह़ताजी से बचा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

न मोह़ताज कर तू जहां में किसी का मुझे मुफ़्लिसी से बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*

ह़िकायत नम्बर 138 : अह़कामे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ग़ौरो फ़िक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ दिमिश्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं "**लकाम**" के पहाड़ों में गया। मेरी येह ख़्वाहिश थी कि औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی से मुलाक़ात हो जाए क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ मख़्सूस बन्दे ऐसे भी होते हैं जो दुन्या से अलग थलग जंगलों, सह़राओं और पहाड़ों में रह कर ख़ूब दिल लगा कर ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहते हैं। ऐसे लोगों से फ़ैज़याब होने के लिये मैं "**लकाम**" की पहाड़ियों में सरगर्दां था कि यकायक मुझे एक शख़्स नज़र आया जो एक पथ्थर पर सर झुकाए बैठा था। उसे देख कर ऐसा लगता जैसे वोह किसी बहुत बड़े मुआ-मले में ग़ौरो फ़िक्र कर रहा है। मैं उस के क़रीब गया और सलाम कर के पूछा : "तुम यहां इस वीराने में क्या कर रहे हो ?" वोह शख़्स कहने लगा : "मैं बहुत सी चीज़ों को देख रहा हूं और उन के बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर रहा हूं।" उस की येह बात सुन कर मैं ने कहा : "मुझे तो तुम्हारे सामने पथ्थरों के इ़लावा कोई और चीज़ नज़र नहीं आ रही फिर तुम किन चीज़ों को देख रहे हो और किन अश्या के बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर रहे हो ?" मेरी इस बात पर उस शख़्स का रंग मु-तग़य्यिर हो गया और उस ने मुझ पर एक जलाल भरी नज़र डालते हुए कहा : "मैं इन पथ्थरों के बारे में ग़ौरो फ़िक्र नहीं कर रहा बल्कि अपने दिल की ह़ालत पर ग़ौरो फ़िक्र कर रहा हूं और इस में पैदा होने वाले ख़दशात के बारे में सोच रहा हूं और उन उमूर के बारे में मु-तफ़क्किर हूं जिन का मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है।"

फिर वोह कहने लगा : "ऐ शख़्स ! मुझे मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने हमारी मुलाक़ात कराई ! तेरा येह पूछना मुझे बहुत अ़जीब लगा और तेरे इस सुवाल पर मुझे बहुत ग़ुस्सा आया लेकिन अब मेरा ग़ुस्सा ज़ाइल हो चुका है, अब ऐसा करो कि तुम यहां से चले जाओ।"

मैं ने उस नेक बन्दे से अ़र्ज़ की : "मुझे कुछ नसीह़त कीजिये ताकि उस पर अ़मल कर के दारैन की सआ़दतों से मालामाल हो जाऊं। तुम्हारी नसीह़त भरी बातें सुनने के बा'द मैं यहां से चला जाऊंगा।"

येह सुन कर वोह शख़्स बोला : "जब कोई शख़्स किसी के दरवाज़े पर डेरा डाल दे और उस की ग़ुलामी करना चाहे तो उस शख़्स पर लाज़िम है कि हमेशा अपने मालिक की ख़ुशनूदी वाले कामों में लगा रहे। जो शख़्स अपने गुनाहों को याद रखता है उसे गुनाहों पर शरमिन्दगी नसीब होती रहती है (और गुनाहों पर नादिम होना तौबा है, लिहाज़ा इन्सान को हर वक़्त अपने गुनाहों पर नज़र रखनी चाहिये) जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल कर लेता है और अपने लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़ीमो करीम ज़ात को काफ़ी समझता है वोह कभी भी मह़रूम नहीं होता। उसे रब तआ़ला ज़रूर अ़ता फ़रमाता है, बस इन्सान का यक़ीन कामिल होना चाहिये। अगर यक़ीन कामिल होगा तो वोह कभी भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न होगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ दिमिश्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि इतना कहने के बा'द उस

शख़्स ने मुझे वहीं छोड़ा और ख़ुद एक जानिब रवाना हो गया।

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! उस पहाड़ी अ़लाक़े में रहने वाले शख़्स की कैसी नसीह़त भरी गुफ़्त-गू थी, उस के इन चन्द कलिमात में दुन्या व आख़िरत की भलाई के बेहतरीन उसूल हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हर ह़ाल में अपना मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार रखे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें गुनाहों पर नादिम होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। जब भी कोई गुनाह सरज़द हो फ़ौरन हमें तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्मो करम फ़रमा।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

ह़िकायत नम्बर 139 : अच्छे लोग कौन हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़ब्बास عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید ने ह़ज किया तो उन से कहा गया कि इस साल ज़माने के मशहूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان भी ह़ज के लिये आए हुए हैं। जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید ने येह सुना तो अपने साथियों को हुक्म दिया कि बड़े अदबो एह़तिराम से उन्हें मेरे पास ले आओ, हम उन की सोह़बत से फ़ैज़याब होना चाहते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان को बड़े अदबो एह़तिराम के साथ अमीरुल मुअमिनीन हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید के पास लाया गया। ख़लीफ़ा ने उन्हें अपने पास बिठाया और अ़र्ज़ की : "मुझे कुछ नसीह़त कीजिये ताकि मैं आख़िरत में नजात पा जाऊं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! मैं अ़-रबी ज़बान से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ नहीं, आप किसी ऐसे शख़्स को बुलवा लें जो मेरी तरजुमानी कर सके।"

चुनान्चे एक ऐसे शख़्स को लाया गया जो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तरजुमानी कर सके। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से कहा : "अमीरुल मुअमिनीन से कह दीजिये कि जो शख़्स तुझे अ़ज़ाबे आख़िरत से डराता है और येह कहता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बे ख़ौफ़ न होना जब तक तू अम्न वाली जगह (या'नी जन्नत) में न पहुंच जाए, ऐसा शख़्स उस से बेहतर है जो तुझे लम्बी लम्बी उम्मीदें दिलाता है और कहता है कि बस अब तो तू बख़्श दिया गया है ह़ालां कि अभी तेरी ज़िन्दगी बाक़ी है और अभी तू अम्न वाली जगह में पहुंचा ही नहीं।"

तरजुमान ने अमीरुल मुअमिनीन को येह बात बताई तो उस ने कहा : "अपने इन कलिमात की मज़ीद वज़ाहत फ़रमा दें।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तरजुमान से फ़रमाया : "अमीरुल मुअमिनीन से कह दो कि नसीहत करने वालों में तुझे दो क़िस्म के लोग मिलेंगे एक तो वोह जो तुझे इस त़रह़ नसीह़त करेंगे : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हर दम डरते रहो तुम भी उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के एक फ़र्द हो मगर तुम पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मादारी आ पड़ी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें लोगों पर अमीर मुक़र्रर फ़रमाया है और उन के मसाइल ह़ल करने की ज़िम्मादारी तुम्हें सोंपी है। कल बरोज़े क़ियामत तुम से तुम्हारी ज़िम्मादारी के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा। लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो, अ़द्लो इन्साफ़ से काम लो, किसी के साथ ज़ुल्म न करो, सीधा रास्ता इख़्तियार करो, दुश्मनाने इस्लाम से जंग करने का मौक़अ़ आए तो उन से भरपूर अन्दाज़ में जिहाद करो और अपने मुआ़-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हर वक़्त डरते रहो कभी भी अपने आप को लोगों से बाला तर न समझो। हर दम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से कांपते रहो।"

ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! नसीह़त करने वालों की दूसरी क़िस्म में ऐसे लोग शामिल हैं जो तुम्हें इस त़रह़ कहेंगे : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप तो बड़ी शान वाले हैं, आप को आख़िरत के मुआ़-मले में ज़ियादा परेशान होने की ज़रूरत नहीं क्यूं कि आप तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़राबत दारों में से हैं लिहाज़ा अब आप बे फ़िक्र हो जाएं।"

फिर इस क़िस्म की बातें करने वाले लोग तुम्हें किसी ग़लत़ बात पर टोकते भी नहीं और मुसल्सल ऐसी बातें करते हैं कि ख़ौफ़े आख़िरत जाता रहता है और ऐसी उम्मीदों की वजह से बन्दा आख़िरत के मुआ़-मलात से बिल्कुल बे फ़िक्र हो जाता है। ऐसे लोग तुम्हें उम्मीदें ही दिलाते रहेंगे और तुम अपने आप को मग़्फ़िरत याफ़्ता लोगों में शुमार करने लगोगे ह़ालां कि अभी न तो तुम्हें अमान मिली और न ही अभी तुम अम्न वाली जगह (या'नी जन्नत) में दाख़िल हुए।

ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! इन दूसरी क़िस्म के लोगों से पहली क़िस्म के लोग अच्छे हैं। अ़शरए मुबश्शरह सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जिन्हें दुन्या में ही जन्नत की ख़ुश ख़बरी दे दी गई थी लेकिन फिर भी उन का अ़मल मज़ीद बढ़ता ही गया। ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मज़ीद इज़ाफ़ा ही हुवा। उन्हों ने कभी भी येह सोच कर कोई ना मुनासिब काम नहीं किया कि हमें तो जन्नत की बिशारत मिल गई अब हम जो चाहें करें बल्कि वोह पाकीज़ा लोग हर आन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहते। उन्हों ने ख़ौफ़ व रजा वाला मा'क़ूल रास्ता इख़्तियार किया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस भी नहीं हुऐ और उस के ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ भी न हुए लिहाज़ा ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! रास्ता वोही अच्छा जो मो'तदिल हो न तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना चाहिये कि अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत की वजह से बड़ी शान मिली है और आख़िरत में भी शफ़ाअ़त ज़रूर नसीब होगी लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बे ख़ौफ़ भी नहीं होना चाहिये।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان की येह ह़िक्मत भरी बातें सुन कर अमीरुल मुअमिनीन ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد और उन के साथी ज़ारो क़ितार रोने लगे। फिर अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : "कुछ और नसीह़त फ़रमाइये।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "इन पर अ़मल कर लो येह तुम्हारे लिये काफ़ी हैं।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अमीरुल मुअमिनीन के पास से तशरीफ़ ले गए।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 140 : ज़ुल्म का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुन्इ़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने वालिद से और वोह ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد से रिवायत करते हैं कि किसी मुल्क में एक ज़ालिम व मग़रूर बादशाह रहा करता था। उस ने एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल बनवाया और उस की ता'मीर पर काफ़ी माल ख़र्च किया, जब ता'मीर मुकम्मल हो चुकी तो उस ने इरादा किया कि मैं सारे मह़ल का दौरा करूं और देखूं कि येह मेरी ख़्वाहिश के मुताबिक़ बना है या नहीं। चुनान्चे बादशाह ने अपने चन्द सिपाहियों को साथ लिया और मह़ल को देखने चल पड़ा। अन्दर से देखने के बा'द उस ने मह़ल के बैरूनी ह़िस्सों को देखना शुरूअ़ किया और मह़ल के इर्द गिर्द चक्कर लगाने लगा। एक जगह पहुंच कर वोह रुक गया और एक झोंपड़ी की त़रफ़ इशारा करते हुए पूछा : "येह हमारे मह़ल के साथ झोंपड़ी किस ने बनाई है ?" सिपाहियों ने जवाब दिया : "चन्द रोज़ से यहां एक मुसल्मान बूढ़ी औ़रत आई है, उस ने येह झोंपड़ी बनाई है और वोह इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करती है।"

जब बादशाह ने येह सुना तो बड़े मग़रूराना अन्दाज़ में बोला : "उस ग़रीब बुढ़िया को येह जुरअत कैसे हुई कि हमारे मह़ल के क़रीब झोंपड़ी बनाए, इस झोंपड़ी को फ़ौरन गिरा दो।" हुक्म पाते ही सिपाही झोंपड़ी की त़रफ़ बढ़े, बुढ़िया उस वक़्त वहां मौजूद न थी। सिपाहियों ने आन की आन में उस ग़रीब बुढ़िया की झोंपड़ी को मलिया मैट कर दिया। बादशाह झोंपड़ी गिरवाने के बा'द अपने दोस्तों के हमराह अपने नए मह़ल में चला गया।

जब बुढ़िया वापस आई तो अपनी टूटी हुई झोंपड़ी को देख कर बड़ी ग़मगीन हुई और लोगों से पूछा : "मेरी झोंपड़ी किस ने गिराई है।" लोगों ने बताया : "अभी कुछ देर क़ब्ल बादशाह आया था, उसी ने तुम्हारी झोंपड़ी गिरवाई है।" येह सुन कर बुढ़िया बहुत ग़मगीन हुई और आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुई : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! जिस वक़्त मेरी

झोंपड़ी तोड़ी जा रही थी, मैं मौजूद न थी लेकिन मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू तो हर चीज़ देखता है, तेरी कु़दरत तो हर शै को मुह़ीत़ है, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे होते हुए तेरी एक आ़जिज़ बन्दी की झोंपड़ी तोड़ दी गई ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस बुढ़िया की आहो ज़ारी और दुआ़ मक़्बूल हुई । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि इस पूरे मह़ल को बादशाह और उस के सिपाहियों समेत तबाहो बरबाद कर दे । हुक्म पाते ही ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ज़मीन पर तशरीफ़ लाए और सारे मह़ल को उस ज़ालिम बादशाह और उस के सिपाहियों समेत ज़मीन बोस कर दिया ।

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह ह़क़ीक़त है कि ज़ालिम को उस के ज़ुल्म का बदला ज़रूर दिया जाता है । मज़लूम की दुआ़ बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ज़रूर क़बूल होती है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ज़ालिमों के ज़ुल्म से मह़फ़ूज़ रखे और हमारी वजह से किसी मुसल्मान को कोई तक्लीफ़ न पहुंचे । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर वक़्त अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रख और हमारा ख़ातिमा बिलख़ैर फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 141 : उ़-लमा की शानो शौकत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने शहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से मरवी है कि जब इब्राहीम बिन हश्शाम ह़ाकिम बना तो मैं उस के साथ ही रहता । वोह कई मुआ़-मलात में मुझ से मश्वरा करता । एक दिन उस ने मुझ से कहा : "ऐ ज़ोहरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! क्या हमारे शहर में कोई ऐसा शख़्स है जिस ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत पाई हो, अगर कोई ऐसा शख़्स तुम्हारी नज़र में है तो बताओ ।" मैं ने कहा : "हां, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّائِم इस शहर में रहते हैं, उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की सोह़बते बा ब-र-कत ह़ासिल हुई है और उन से सुनी हुई कई ह़दीसें भी आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) बयान फ़रमाते हैं ।"

चुनान्चे इब्राहीम बिन हश्शाम ने एक क़ासिद भेज कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बुलवाया, आप तशरीफ़ लाए और सलाम किया । इब्राहीम बिन हश्शाम ने जवाब दिया और कहा : "ऐ अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّائِم ! हमें कोई ह़दीस सुनाइये ।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम बिन हश्शाम ! अगर मुझे तुम्हारी आख़िरत की भलाई मक़्सूद न होती तो मैं कभी भी तेरे पास ह़दीसे न-बवी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुनाने न आता । इब्राहीम बिन हश्शाम ने पूछा : "ह़ुज़ूर ! आप येह बताएं कि हमें नजात किस त़रह़ ह़ासिल होगी ?"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस का एक ही त़रीक़ा है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

अह़काम को तमाम मख़्लूक़ पर तरजीह़ दो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी की भी बात न मानो, माल ह़लाल त़रीक़े से ह़ासिल करो और जहां उसे सर्फ़ करने का ह़क़ है वहीं सर्फ़ करो।"

इब्राहीम बिन हश्शाम कहने लगा : "इन बातों पर कमा ह़क़्क़ुहू कौन अ़मल कर सकता है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! अगर तू चाहता है कि तुझे दुन्या में से इतनी चीज़ मिले जो तुझे काफ़ी हो तो तेरे लिये थोड़ी सी दुन्यवी ने'मतें भी काफ़ी हैं अगर तू सब्र करे। और अगर तू दुन्या का ह़रीस है तो चाहे कितना ही मालो ज़र जम्अ़ कर ले तेरी ह़िर्स ख़त्म न होगी तू कभी भी दुन्यवी दौलत से बे नियाज़ न होगा, हर वक़्त इस में इज़ाफ़े का मु-तमन्नी होगा।"

इब्राहीम बिन हश्शाम ने पूछा : "क्या बात है कि हम जैसे लोग मौत को ना पसन्द करते हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम लोगों ने अपनी सारी तवज्जोह दुन्या की दौलत पर दे रखी है और हर वक़्त तुम्हारे सामने दुन्यवी ने'मतें मौजूद रहती हैं। इस लिये तुम्हें इन ने'मतों से जुदा होना पसन्द नहीं। अगर तुम आख़िरत की तय्यारी करते और आख़िरत के लिये आ'माले सालिह़ा किये होते तो तुम मौत को कभी भी ना पसन्द न करते बल्कि आख़िरत की ने'मतों की त़रफ़ जल्दी करते।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह ह़िक्मत भरी बातें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "ऐ अमीर ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने आज तक कभी भी इस कलाम से बेहतर कलाम नहीं सुना। शैख़ अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الدَّائِم ने कैसे जामेअ़ कलिमात के साथ हमें नसीह़त की है, मैं अ़र्सए दराज़ से इन का पड़ोसी हूं लेकिन अफ़्सोस ! मैं कभी इन की बारगाह में ह़ाज़िर न हो सका और इन की सोह़बते बा ब-र-कत से मह़रूम रहा।"

शैख़ अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الدَّائِم ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने शहाब ज़ोहरी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! अगर तू उन उ़-लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم में से होता जो दुन्यादारों से बे नियाज़ी को पसन्द करते हैं तो ज़रूर मेरी मजलिस में बैठता और ज़रूर मुझ से मुलाक़ात का सिल्सिला रखता।"

इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الدَّائِم ! मुझे आप की इस बात ने ग़मज़दा कर दिया है।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ! जब कोई शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर इ़ल्म ह़ासिल करता है तो वोह शख़्स अपने इस इ़ल्म की बदौलत मख़्लूक़ से बे नियाज़ हो जाता है, उसे कोई दुन्यवी ग़-रज़ो ग़ायत नहीं होती और ऐसे आ़लिमे रब्बानी की त़रफ़ लोग इक्तिसाबे इ़ल्म के लिये आते हैं। बड़े बड़े उ-मरा व दुन्यादार लोग उस आ़लिमे रब्बानी की बारगाह में दस्त बस्ता खड़े होते हैं। ऐसा आ़लिम उ-मरा और अ़वाम दोनों के लिये बाइ़से नजात होता है। वोह हमेशा उन्हें ह़क़ बात ही का हुक्म देता है और बुरी बातों से रोकता है।

अगर उ़-लमा को दुन्या की ह़िर्स बादशाहों के दरबारों में ले जाए तो फिर उ़-लमा अपनी शान खो बैठते हैं और उ-मरा उन को ज़ियादा अहम्मिय्यत नहीं देते, ऐसे लोगों का इ़ल्म ह़ासिल करना इस लिये होता है कि हमारी ता'ज़ीम की जाए, हमारी बात को अहम्मिय्यत दी जाए लेकिन जब येह उ-मरा की मह़फ़िल में जाते हैं तो उन का वक़ार गिर जाता है। येह ह़क़ बात कहने की जुरअत नहीं रखते, हर वक़्त बादशाहों और उ-मरा की खुशनूदी के त़ालिब होते हैं, ऐसे उ़-लमा उन बादशाहों और अ़वामुन्नास दोनों के लिये हलाकत का बाइ़स बनते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الدَّائِم की येह बातें सुनने के बा'द इब्राहीम बिन हश्शाम ने कहा : "आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه अपनी ह़ाजत बयान करें, आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को जिस चीज़ की ज़रूरत हो वोह दी जाएगी।"

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम बिन हश्शाम ! मैं अपनी ह़ाजतें उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं जो ज़मीन व आस्मान का मालिक है, मेरी उम्मीदों का मर्कज सिर्फ़ मेरा मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ है। मैं उस के इ़लावा किसी और का मोह़ताज नहीं, मेरा मालिक عَزَّوَجَلَّ मुझे जो चीज़ भी अ़त़ा फ़रमाता है मैं उसे बखुशी क़बूल कर लेता हूं और जिस चीज़ को मुझ से रोक लेता है मैं कभी भी उस की शिकायत नहीं करता न ही ना शुक्री करता हूं बल्कि मैं अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से हर ह़ाल में खुश हूं। इस के इ़लावा किसी चीज़ को पसन्द नहीं करता। येह दो ने'मतें मेरे नज़्दीक बहुत बड़ा सरमाया हैं : (1)...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा (2)...... ज़ोह्दो तक़्वा। येह दो ने'मतें मुझे हर चीज़ से मह़बूब हैं।"

इब्राहीम बिन हश्शाम ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू ह़ाज़िम (عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الدَّائِم) ! बराए करम आप हमारे हां तशरीफ़ लाया करें ताकि हम आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से इक्तिसाबे फ़ैज़ कर सकें, अगर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه न आना चाहें तो मैं खुद ह़ाज़िर हो जाया करूंगा।"

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम बिन हश्शाम ! तू मेरा ख़याल छोड़ दे और मेरे घर भी न आना, इसी में मेरी भलाई है, हां इतना ज़रूर है कि तू नेक आ'माल की त़रफ़ रागिब हो जा, अगर नेक काम करेगा तो काम्याबी की राह पर गामज़न हो जाएगा और तुझे नजात ह़ासिल हो जाएगी।" इतना कहने के बा'द आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه वहां से तशरीफ़ ले गए।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَسَلَّم

اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه

ह़िकायत नम्बर 142 : ह़ासिद का इ़ब्रतनाक अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह अल मुज़्नी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی से मरवी है : "एक शख़्स की आ़दत थी कि वोह बादशाहों के दरबारों में जाता और उन के सामने अच्छी अच्छी बातें करता बादशाह खुश

हो कर उसे इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ते और उस की ख़ूब हौसला अफ़्ज़ाई करते।

एक मर्तबा वोह एक बादशाह के दरबार में गया और उस से इजाज़त चाही कि मैं कुछ बातें अ़र्ज़ करना चाहता हूं। बादशाह ने इजाज़त दी और उसे अपने सामने कुरसी पर बिठाया और कहा : "अब जो कहना चाहते हो कहो।" उस शख़्स ने कहा : "मोह़सिन के साथ एह़सान कर और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे ख़ुद ही मिल जाएगा।" बादशाह उस की येह बात सुन कर बहुत ख़ुश हुवा और उसे इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा। येह देख कर बादशाह के एक दरबारी को उस शख़्स से ह़सद हो गया और वोह दिल ही दिल में कुढ़ने लगा कि इस आ़म से शख़्स को बादशाह के दरबार में इतनी इ़ज़्ज़त और इतना मक़ाम क्यूं ह़ासिल हो गया बिल आख़िर वोह ह़सद की बीमारी से मजबूर हो कर बादशाह के पास गया और बड़े ख़ुशा-मदाना अन्दाज़ में बोला : "बादशाह सलामत ! अभी जो शख़्स आप के सामने गुफ़्त-गू कर के गया है अगर्चे उस ने बातें अच्छी की हैं लेकिन वोह आप से नफ़रत करता है और कहता है कि बादशाह को गन्दा द-हनी (या'नी मुंह से बदबू आने) का मरज़ लाह़िक़ है।"

जब बादशाह ने येह सुना तो पूछा : "तुम्हारे पास क्या सुबूत है कि वोह मेरे बारे में ऐसा गुमान रखता है ?" वोह ह़ासिद बोला : "हु़ज़ूर ! अगर आप को मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता तो आप आज़्मा कर देख लें, उसे अपने पास बुलाएं जब वोह आप के क़रीब आएगा तो अपनी नाक पर हाथ रख लेगा ताकि उसे आप के मुंह से बदबू न आए।" येह सुन कर बादशाह ने कहा : "तुम जाओ जब तक मैं इस मुआ़-मले की तह़क़ीक़ न कर लूं उस के बारे में कोई फ़ैसला नहीं करूंगा।"

चुनान्चे वोह ह़ासिद दरबारे शाही से चला आया और उस शख़्स के पास पहुंचा जिस से वोह ह़सद करता था। उसे खाने की दा'वत दी, उस ने ह़ासिद की दा'वत क़बूल की और उस के साथ चल दिया। ह़ासिद ने उसे जो खाना खिलाया उस में बहुत ज़ियादा लहसन डाल दिया। अब उस शख़्स के मुंह से लहसन की बदबू आने लगी बहर ह़ाल वोह अपने घर आ गया। अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि बादशाह का क़ासिद आया और उस ने कहा : "बादशाह ने आप को अभी दरबार में बुलाया है।" वोह शख़्स क़ासिद के साथ दरबार में पहुंचा। बादशाह ने उसे अपने सामने बिठाया और कहा : "हमें वोही कलिमात सुनाओ जो तुम सुनाया करते हो।" उस शख़्स ने कहा :" मोह़सिन के साथ एह़सान कर और जो बुराई करेगा उसे बुराई का बदला ख़ुद ही मिल जाएगा।"

जब उस ने अपनी बात मुकम्मल कर ली तो बादशाह ने उस से कहा : "मेरे क़रीब आओ।" वोह बादशाह के क़रीब गया तो उस ने फ़ौरन अपने मुंह पर अपना हाथ रख लिया ताकि लहसन की बदबू से बादशाह को तक्लीफ़ न हो। जब बादशाह ने येह सूरते ह़ाल देखी तो अपने दिल में कहा कि उस शख़्स ने ठीक ही कहा था कि मेरे मु-तअ़ल्लिक़ येह शख़्स गुमान रखता है कि मुझे गन्दा द-हनी (या'नी मुंह से बदबू आने) की बीमारी है। बादशाह उस शख़्स के बारे में बद गुमानी का शिकार हो गया और बिला तह़क़ीक़ उस ने फ़ैसला कर लिया कि इस शख़्स को सख़्त सज़ा मिलनी चाहिये। चुनान्चे उस ने अपने गवर्नर के नाम इस

त़रह़ ख़त़ लिखा : "ऐ गवर्नर ! जैसे ही येह शख़्स तुम्हारे पास पहुंचे इसे ज़ब्ह़ कर देना और इस की खाल उतार कर उस में भूसा भर देना और उसे हमारे पास भिजवा देना ।" फिर बादशाह ने ख़त़ पर मोहर लगाई और उस शख़्स को देते हुए कहा : "येह ख़त़ ले कर फ़ुलां अ़लाक़े के गवर्नर के पास पहुंच जाओ ।"

बादशाह की आ़दत थी कि जब भी वोह किसी को कोई बड़ा इन्आ़म देना चाहता तो किसी गवर्नर के नाम ख़त़ लिखता और उस शख़्स को गवर्नर के पास भेज देता वहां उसे ख़ूब इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाता । कभी भी बादशाह ने सज़ा के लिये किसी को ख़त़ न लिखा था । आज पहली मर्तबा बादशाह ने किसी को सज़ा देने के लिये गवर्नर के नाम ख़त़ लिखा वरना उस बादशाह के बारे में मशहूर था कि जब किसी को इन्आ़म देता तो उसे गवर्नर के पास भेजता । बहर ह़ाल येह शख़्स ख़त़ ले कर दरबारे शाही से निकला इस बेचारे को क्या मा'लूम कि इस ख़त़ में मेरी मौत का हुक्म है । येह शख़्स ख़त़ ले कर गवर्नर के पास जा रहा था कि रास्ते में उस की मुलाक़ात उसी ह़ासिद से हो गई । उस ने पूछा : "भाई ! कहां का इरादा है ?"

उस ने कहा : "मैं ने बादशाह को अपना कलाम सुनाया तो उस ने मुझे एक ख़त़ मोहर लगा कर दिया और कहा : "फ़ुलां गवर्नर के पास येह ख़त़ ले जाओ ।" मैं उसी गवर्नर के पास ख़त़ लिये जा रहा हूं ।" ह़ासिद कहने लगा : "भाई ! तू येह ख़त़ मुझे दे दे मैं ही इसे गवर्नर तक पहुंचा दूंगा ।" चुनान्चे उस शरीफ़ आदमी ने ख़त़ ह़ासिद के ह़वाले कर दिया, वोह ह़ासिद ख़त़ ले कर ख़ुशी ख़ुशी गवर्नर के दरबार की त़रफ़ चल दिया, वोह येह सोच कर बहुत ख़ुश हो रहा था कि इस ख़त़ में बादशाह ने गवर्नर के नाम पैग़ाम लिखा होगा कि "जो शख़्स येह ख़त़ ले कर आए उसे इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाए ।" मेरी क़िस्मत कितनी अच्छी है, मैं ने उस शख़्स को झांसा दे कर येह ख़त़ ले लिया है अब मैं मालामाल हो जाऊंगा ।" वोह ह़ासिद इन्हीं सोचों में मगन बड़ी ख़ुशी के आ़लम में झूमता झूमता गवर्नर के दरबार की जानिब जा रहा था । उसे क्या मा'लूम था कि वोह मौत के मुंह में जा रहा है और जाते ही उसे क़त्ल कर दिया जाएगा ।

बहर ह़ाल वोह गवर्नर के पास पहुंचा और बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में बादशाह का ख़त़ गवर्नर को दिया । गवर्नर ने जैसे ही ख़त़ पढ़ा तो पूछा : "ऐ शख़्स ! क्या तुझे मा'लूम है कि इस ख़त़ में बादशाह ने क्या लिखा है ?" उस ने कहा : "बादशाह सलामत ने येही लिखा होगा कि मुझे इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाए और मेरी ह़ाजात को पूरा किया जाए ।" गवर्नर ने येह सुन कर कहा : "ऐ नादान शख़्स ! बादशाह ने इस ख़त़ में मुझे हुक्म दिया है कि "जैसे ही येह शख़्स ख़त़ ले कर पहुंचे इसे ज़ब्ह़ कर देना और इस की खाल उतार कर उस में भूसा भर देना फिर इस की लाश मेरे पास भिजवा देना ।" येह सुन कर उस ह़ासिद के होश उड़ गए और वोह कहने लगा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ख़त़ मेरे बारे में नहीं लिखा गया बल्कि येह तो फ़ुलां शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ है, बेशक आप बादशाह के पास किसी क़ासिद को भेज कर मा'लूम कर लें ।"

गवर्नर ने उस की एक न सुनी और कहा : "हमें कोई ह़ाजत नहीं कि हम बादशाह से इस मुआ़-मले की तस्दीक़ करें बादशाह की मोहर इस ख़त़ पर मौजूद है लिहाज़ा हमें बादशाह के हुक्म पर

अ़मल करना होगा।" इतना कहने के बा'द उस ने जल्लाद को हुक्म दिया और उस ह़ासिद शख़्स को ज़ब्ह़ कर के उस की खाल उतार कर उस में भूसा भर दिया गया। फिर उस की लाश को बादशाह के दरबार में भिजवा दिया गया। वोह शख़्स जिस से येह ह़सद किया करता था ह़स्बे मा'मूल बादशाह के दरबार में गया और बादशाह के सामने खड़े हो कर वोही अल्फ़ाज़ दोहराए : "मोह़सिन के साथ एह़सान कर और जो कोई बुराई करेगा उसे अ़न्क़रीब उस की बुराई का सिला मिल जाएगा।" जब बादशाह ने उस शख़्स को सह़ीह़ व सालिम देखा तो उस से पूछा : "मैं ने तुझे जो ख़त़ दिया था उस का क्या हुवा ?" उस ने जवाब दिया : "मैं आप का ख़त़ ले कर गवर्नर के पास जा रहा था कि मुझे रास्ते में फ़ुलां शख़्स मिला और उस ने मुझ से कहा कि येह ख़त़ मुझे दे दो, चुनान्चे मैं ने उसे ख़त़ दे दिया और वोह ख़त़ ले कर गवर्नर के पास चला गया।"

बादशाह ने कहा : "उस शख़्स ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था कि तुम मेरे मु-तअ़ल्लिक़ येह गुमान रखते हो कि मेरे मुंह से बदबू आती है, क्या वाक़ेई ऐसा है ?" उस शख़्स ने कहा : "बादशाह सलामत ! मैं ने कभी भी आप के बारे में ऐसा नहीं सोचा।" तो बादशाह ने पूछा : "जब मैं ने तुझे अपने क़रीब बुलाया था तो तूने अपने मुंह पर हाथ क्यूं रख लिया था ?" उस शख़्स ने जवाब दिया : "बादशाह सलामत ! आप के दरबार में आने से कुछ देर क़ब्ल उस शख़्स ने मेरी दा'वत की थी और खाने में मुझे बहुत ज़ियादा लहसन खिला दिया था जिस की वजह से मेरा मुंह बदबूदार हो गया। जब आप ने मुझे अपने क़रीब बुलाया तो मैं ने येह बात गवारा न की, कि मेरे मुंह की बदबू से बादशाह सलामत को तक्लीफ़ पहुंचे इसी लिये मैं ने मुंह पर अपना हाथ रख लिया था।"

जब बादशाह ने येह सुना तो कहा : "ऐ ख़ुश नसीब शख़्स ! तूने बिल्कुल ठीक कहा तेरी बात बिल्कुल सच्ची है कि "जो किसी के साथ बुराई करता है उसे अ़न्क़रीब उस की बुराई का बदला मिल जाएगा।" उस शख़्स ने तेरे साथ बुराई का इरादा किया और तुझे सज़ा दिलवानी चाही लेकिन उसे अपनी बुराई का सिला ख़ुद ही मिल गया। सच है कि जो किसी के लिये गढ़ा खोदता है वोह ख़ुद ही उस में जा गिरता है। ऐ नेक शख़्स ! मेरे सामने बैठ और अपनी उसी बात को दोहरा।" चुनान्चे वोह शख़्स बादशाह के सामने बैठा और कहने लगा : "मोह़सिन के साथ एह़सान कर और बुराई करने वाले को अ़न्क़रीब उस की बुराई की सज़ा ख़ुद ही मिल जाएगी।"

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जो किसी पर एह़सान करता है उस पर भी एह़सान किया जाता है और जो किसी के लिये बुरा चाहता है उस के साथ बुरा मुआ़-मला ही होता है। जो दूसरों की तबाही व बरबादी का ख़्वाहां होता है वोह ख़ुद तबाहो बरबाद हो जाता है। जो किसी से ह़सद करता है उसे उस के ह़सद की सज़ा ख़ुद ही मिल जाती है, अच्छे काम का अच्छा नतीजा और बुरे काम का बुरा नतीजा, जैसी करनी वैसी भरनी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ह़सद जैसी बीमारी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए आमीन)

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

ह़िकायत नम्बर 143 : बे अ-दबों से दूरी में आ़फ़िय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह अस्सन्आ़नी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی ह़ज़रते सय्यिदुना हौसरा बिन मुह़म्मद अल मुक़री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून वासित़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के इन्तिक़ाल के बा'द चार रातें गुज़र गईं फिर मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाने लगे कि मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने मेरी नेकियां क़बूल फ़रमा लीं और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये और मुझे बहुत सारे ख़ुद्दाम अ़त़ा फ़रमाए। मैं ने पूछा : "फिर इस के बा'द क्या हुवा ?" फ़रमाया : "करीम करम ही करता है, मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ बहुत करीम है, उस ने मेरे सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये और मुझे जन्नत मे दाख़िल फ़रमा दिया।" मैं ने पूछा : "आप (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) को येह मक़ामो मर्तबा किन आ'माल की बदौलत ह़ासिल हुवा ?"

आप ने इर्शाद फ़रमाया : "इन पांच चीज़ों के सबब ह़ासिल हुवा : (1)...... इज्तिमाए ज़िक्र में शिर्कत (2)...... गुफ़्त-गू में सच्चाई (3)...... ह़दीस बयान करने में अमानत व सिद्क़ से काम लेना (4)...... नमाज़ में त़वील क़ियाम करना (5)...... तंगदस्ती और फ़क़्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में सब्र करना।"

मैं ने पूछा : "मुन्कर नकीर का मुआ़-मला कैसा रहा ?" फ़रमाया : "उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही इ़बादत के लाइक़ है ! मुन्कर नकीर मेरी क़ब्र में आए और मुझे खड़ा कर के सुवालात शुरूअ़ कर दिये : "(1) तेरा रब कौन है ? (2) तेरा दीन क्या है ?" (3) तेरा नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) कौन है ? उन के येह सुवालात सुन कर मैं ने अपनी सफ़ेद दाढ़ी से मिट्टी झाड़ते हुए कहा : "ऐ फ़िरिश्तो ! क्या तुम मुझ से सुवाल करते हो ? मैं यज़ीद बिन हारून वासित़ी हूं, मैं दुन्या में (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर) साठ साल तक लोगों को इ़ल्मे दीन सिखाता रहा हूं।" मेरी येह बात सुन कर उन में से एक फ़िरिश्ते ने कहा : "इस ने सच कहा है, येह वाक़ेई़ यज़ीद बिन हारून वासित़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی है।" फिर मुझ से कहा : "अब तू दुल्हन की त़रह़ सुकून की नींद सो जा, आज के बा'द तुझे किसी क़िस्म का ग़म व ख़ौफ़ न होगा।"

फिर दूसरे फ़िरिश्ते ने मुझ से पूछा : "क्या तूने जरीर बिन उ़स्मान से भी कोई ह़दीस सीखी है ?" मैं ने कहा : "हां ! वोह तो ह़दीस में सक़्क़ह (या'नी पुख़्ता) रावी है।" उस फ़िरिश्ते ने कहा : "येह बात ठीक है कि वोह सक़्क़ह रावी है लेकिन वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से बुग़्ज़ रखता है इस लिये वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ना पसन्दीदा शख़्स है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून वासित़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देखने वाला वाक़िआ़

इस त़रह़ भी बयान किया जाता है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और कर अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून वासिती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देखा तो पूछा : " مَا فَعَلَ اللهُ بِکَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने मेरे गुनाहों को बख़्श दिया, मुझ पर ख़ूब करम फ़रमाया लेकिन मुझ पर इ़ताब भी हुवा।" मैं उन की येह बात सुन कर मु-तअ़ज्जिब हुवा और पूछा : "आप की मग़्फ़िरत भी हो गई, आप पर रह़्म भी किया गया फिर इ़ताब भी हुवा ?" तो उन्हों ने जवाबन फ़रमाया : "हां ! मुझ से पुछा गया कि ऐ यज़ीद बिन हारून वासिती़ ! क्या तूने जरीर बिन उ़स्मान से कोई ह़दीस नक़्ल की है ?" मैं ने कहा : "हां ! अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं ने उस में हमेशा भलाई ही पाई।" फिर मुझ से कहा गया : "मगर वोह अबुल ह़सन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से बुग़्ज़ रखता था।"

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की सच्ची मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा, हमारे दिलों को उन की मह़ब्बत से मा'मूर फ़रमा, उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर ख़ूब रह़मतों की बरसात फ़रमा और उन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 144 : भुना हुवा हरन

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ह़ज़रते सय्यिदुना सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं और मेरे चन्द रु-फ़क़ा **ह़-रमैने शरीफ़ैन** की ह़ाज़िरी के लिये सफ़र पर रवाना हुए। मैं ने सब से अलग थलग रह कर सफ़र करना पसन्द किया और उन्हें छोड़ कर अकेला ही सफ़र करता रहा, चलते चलते जब भूक ने बहुत ज़ियादा सताया तो मेरे दोस्तों ने एक हरन शिकार किया और ज़ब्ह़ करने के बा'द उसे भूना, फिर सब मिल कर खाने के लिये बैठ गए। अभी उन्हों ने खाना शुरूअ़ भी न किया था कि एक बहुत बड़ा परिन्दा आया, उस ने भुने हुए हरन पर ह़म्ला किया और उस का चौथाई ह़िस्सा ले कर फ़ज़ा में बुलन्द हो गया। मेरे रु-फ़क़ा का कहना है : "हम ने उस का पीछा किया लेकिन कुछ दूर जा कर वोह हमारी नज़रों से ओझल हो गया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब हम सब दोस्त मक्कए मुकर्रमा में जम्अ़ हुए तो मैं ने उन से पूछा : "क्या तुम्हें दौराने सफ़र कोई अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "जी हां ! हमें एक अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया।" फिर उन्हों ने परिन्दे और हरन वाला वाक़िआ़ सुनाया। उन से येह वाक़िआ़ सुनने के बा'द मैं ने कहा : "फ़ुलां दिन फ़ुलां वक़्त मैं सूए ह़रम सफ़र पर रवां दवां था कि अचानक एक परिन्दा आया और मेरे सामने भुने हुए हरन का चौथाई ह़िस्सा डाल कर वहां से ग़ाइब हो गया, देखो ! हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने हमें किस त़रह़ एक ही वक़्त में एक ही हरन का गोश्त खिलाया।"

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा और ह़राम चीज़ों से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और हमें तवक्कुल की दौलत से मालामाल फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 145 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हर वली ज़िन्दा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने उस्ताद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू या'क़ूब अल सौसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना कि एक मर्तबा मेरा एक शागिर्द मेरे पास मक्कए मुकर्रमा आया और कहने लगा : "ऐ उस्तादे मोह़तरम ! कल ज़ोहर की नमाज़ के बा'द मैं अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिलूंगा। आप येह चन्द दिरहम ले लीजिये, इन से गोरकन (या'नी क़ब्र खोदने वाले) की उजरत अदा कर देना और बक़िय्या दिरहमों की ख़ुश्बू मंगवा लेना और मुझे मेरे इन्हीं कपड़ों में दफ़्न कर देना, येह बिल्कुल पाक व साफ़ हैं।" उस की येह बातें सुन कर मैं समझा कि शायद भूक की वजह से इस की येह ह़ालत हो गई। मुझे उस की बातों पर तअ़ज्जुब भी हो रहा था बहर ह़ाल मैं ने उस पर तवज्जोह रखी। दूसरे दिन जब नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हुवा तो उस ने नमाज़ अदा की और ख़ानए का'बा को देखने लगा और देखते ही देखते वोह ज़मीन पर गिर पड़ा। मैं दौड़ कर उस के क़रीब गया और उसे हिला जुला कर देखा तो उस का जिस्म बे जान हो चुका था और ख़ानए का'बा का जल्वा देखते देखते उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी।

येह सूरते ह़ाल देख कर मैं ने दिल में कहा : "मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ बड़ा बे नियाज़ है, जिसे चाहे जो मक़ाम अ़त़ा फ़रमाए, उस की ह़िक्मतें वोही जाने, वोह जिसे चाहे अपनी मा'रिफ़त अ़त़ा करे। वोह ज़ात पाक है जिस ने मेरे शागिर्द को इतना मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया कि मौत से पहले ही उसे ह़क़ीक़त से आगाही अ़त़ा फ़रमा दी और मैं ऐसी बातें नहीं जानता ह़ालां कि मैं उस का उस्ताद हूं। येह उस की ने'मतें हैं जिसे चाहे अ़त़ा करे।"

मुझे अपने उस शागिर्द की मौत का बहुत ग़म हुवा, बहर ह़ाल हम ने उसे तख़्ते पर लिटाया और ग़ुस्ल देना शुरूअ़ किया जब मैं ने उसे वुज़ू कराया तो अचानक उस ने आंखें खोल दीं। येह देख कर मैं बड़ा हैरान हुवा और उस से पूछा : "ऐ मेरे बेटे ! क्या तू मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा हो गया ?" उस ने बड़ी फ़सीह व बलीग़ ज़बान में जवाब दिया : "(ऐ उस्तादे मोह़तरम) ! मैं मौत के बा'द ज़िन्दा हो गया हूं और मौत के बा'द अपनी क़ब्रों में अल्लाह तआ़ला के तमाम वली ज़िन्दा होते हैं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 146 : दिल की दुन्या बदल गई

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ह़ज़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं, मुझे बग़दाद के एक शख़्स ने बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّائِم ने बयान फ़रमाया : "एक मर्तबा मैं ने बसरा जाने का इरादा किया। चुनान्चे मैं साह़िल पर आया ताकि किसी कश्ती में सुवार हो कर जानिबे मन्ज़िल रवाना हो जाऊं, जब वहां पहुंचा तो देखा कि एक कश्ती मौजूद है और उस में एक लौंडी और उस का मालिक सुवार है। मैं ने भी कश्ती में सुवार होना चाहा तो लौंडी के मालिक ने कहा : "इस कश्ती में हमारे इलावा किसी और के लिये जगह नहीं, हम ने येह सारी कश्ती किराए पर ले ली है लिहाज़ा तुम किसी और कश्ती में बैठ जाओ।" लौंडी ने जब येह बात सुनी तो उस ने अपने आक़ा से कहा : "इस मिस्कीन को बिठा लीजिये।" चुनान्चे उस लौंडी के मालिक ने मुझे बैठने की इजाज़त दे दी और कश्ती झूमती झूमती बसरा की जानिब सत़्ह़े समुन्दर पर चलने लगी, मौसिम बड़ा ख़ुश गवार था। मैं उन दोनों से अलग थलग एक कोने में बैठा हुवा था। वोह दोनों ख़ुश गप्पियों में मश्ग़ूल ख़ुश गवार मौसिम से ख़ूब लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे थे।

फिर उस लौंडी के मालिक ने खाना मंगवाया और दस्तर ख़्वान बिछा दिया गया। जब वोह दोनों खाने के लिये बैठे तो उन्हों ने मुझे आवाज़ दी : "ऐ मिस्कीन ! तुम भी आ जाओ और हमारे साथ खाना खाओ।" मुझे बहुत ज़ियादा भूक लगी थी और मेरे पास खाने को कुछ भी न था चुनान्चे मैं उन की दा'वत पर उन के साथ खाने लगा।

जब हम खाना खा चुके तो उस शख़्स ने अपनी लौंडी से कहा : "अब हमें शराब पिलाओ।" लौंडी ने फ़ौरन शराब का जाम पेश किया और वोह शख़्स शराब पीने लगा फिर उस ने हुक्म दिया कि इस शख़्स को भी शराब पिलाओ। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए, मैं तुम्हारा मेहमान हूं और

तुम्हारे साथ खाना खा चुका हूं, अब मैं शराब हरगिज़ नहीं पियूंगा।" उस ने कहा : "ठीक है जैसे तुम्हारी मरज़ी।" फिर जब वोह शराब के नशे में मस्त हो गया तो लौंडी से कहा : "सारंगी (या'नी बाजा) लाओ और हमें गाना सुनाओ।" लौंडी सारंगी ले कर आई और अपनी पुर कशिश आवाज़ में गाने लगी, उस का मालिक गाने सुनता रहा और झूमता रहा, लौंडी भी सारंगी बजाती रही और पुर कशिश आवाज़ से अपने मालिक का दिल ख़ुश करती रही।

येह सिल्सिला काफ़ी देर तक चलता रहा वोह दोनों अपनी इन रंगीनियों में बद मस्त थे और मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहा। जब काफ़ी देर गुज़र गई और उस का नशा कुछ कम हुवा तो वोह मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "क्या तूने पहले कभी इस से अच्छा गाना सुना है ? देखो ! कितने प्यारे अन्दाज़ में इस ह़सीना ने गाना गाया है, क्या तुम भी ऐसा गा सकते हो ?" मैं ने कहा : "मैं एक ऐसा कलाम आप को सुना सकता हूं जिस के मुक़ाबले में येह गाना कुछ हैसियत नहीं रखता।" उस ने हैरान हो कर कहा : "क्या गानों से बेहतर भी कोई कलाम है ?" मैं ने कहा : "हां ! इस से बहुत बेहतर कलाम भी है।" उस ने कहा "अगर तुम्हारा दा'वा दुरुस्त है तो सुनाओ ज़रा हम भी तो सुनें कि गानों से बेहतर क्या चीज़ है ?" तो मैं ने **सूरतुत्तक्वीर** की तिलावत शुरूअ़ कर दी :

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝ وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝ (پ۳۰، التکویر:۱تا۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब धूप लपेटी जाए और जब तारे झड़ पड़ें और जब पहाड़ चलाए जाएं।

मैं तिलावत करता जा रहा था और उस की ह़ालत तब्दील होती जा रही थी। उस की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया। बड़ी तवज्जोह व आ़जिज़ी के साथ वोह कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ को सुनता रहा। ऐसा लगता था कि कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तजल्लियां उस के सियाह दिल को मुनव्वर कर चुकी हैं और येह कलाम तासीर का तीर बन कर उस के दिल में उतर चुका है, अब उसे इ़श्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त से आशनाई होती जा रही थी। तिलावत करते हुए जब मैं इस आयते मुबा-रका पर पहुंचा : "وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ" तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब नामए आ'माल खोले जाएंगे।" (پ۳۰، التکویر:۱۰) तो उस ने अपनी लौंडी से कहा : "जा ! मैं ने तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आज़ाद किया।" फिर उस ने अपने सामने रखे हुए शराब के सारे बरतन समुन्दर में उंडेल दिये। सारंगी, बाजा और आलाते लह्वो लइ़ब सब तोड़ डाले फिर वोह बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में मेरे क़रीब आया और मुझे सीने से लगा कर हिचकियां ले ले कर रोने लगा और पूछने लगा : "ऐ मेरे भाई मैं बहुत गुनाहगार हूं, मैं ने सारी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़ार दी अगर मैं अब तौबा करूं तो क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा ?"

मैं ने उसे बड़ी मह़ब्बत दी और कहा : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तौबा करने वालों और पाकीज़गी ह़ासिल करने वालों को बहुत पसन्द फ़रमाता है, वोह तो तौबा करने वालों से बहुत ख़ुश होता है, अल्लाह

عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से कोई मायूस नहीं लौटता, तुम उस से तौबा करो वोह ज़रूर क़बूल फ़रमाएगा।"

चुनान्चे उस शख़्स ने मेरे सामने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और ख़ूब रो रो कर मुआ़फ़ी मांगता रहा। फिर हम बसरा पहुंचे और दोनों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ाति़र एक दूसरे से दोस्ती कर ली। चालीस साल तक हम भाइयों की त़रह़ रहे चालीस साल बा'द उस मर्दे सालेह़ का इन्तिक़ाल हो गया। मुझे इस का बहुत ग़म हुवा, फिर एक रात मैं ने उसे ख़्वाब में देखा तो पूछा: "ऐ मेरे भाई! दुन्या से जाने के बा'द तुम्हारा क्या हुवा तुम्हारा ठिकाना कहां है?" उस ने बड़ी दिलरुबा और शीरीं आवाज़ में जवाब दिया: "दुन्या से जाने के बा'द मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में भेज दिया।"

मैं ने पूछा: "ऐ मेरे भाई! तुम्हें जन्नत किस अ़मल की वजह से मिली?" उस ने जवाब दिया: "जब तुम ने मुझे येह आयत सुनाई थी:

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ۝ (پ۳۰، التکویر:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान: और जब नामए आ'माल खोले जाएंगे।

तो उसी आयत की ब-र-कत से मेरी ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ गया था। इसी वजह से मेरी मग़्फ़िरत हो गई और मुझे जन्नत अ़ता कर दी गई।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** क़ुरआने पाक एक ऐसी अ़ज़ीम ने'मत है कि इस को सुन कर न जाने कितने ऐसे सियाह दिल रोशन हो गए जो गुनाहों के तारीक गढ़े में गिर चुके थे, कितने ही मुर्दा दिलों को क़ुरआने करीम ने जिला बख़्शी, बड़े बड़े मुजरिमों ने जब इसे सुना तो उन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठे और वोह तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गए। कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ ऐसा बा ब-र-कत कलाम है कि जिस ने बड़े बड़े कुफ़्फ़ार को कुफ़्र के ज़ुल्मत कदों से निकाल कर ऐसी अ़-ज़मतें अ़ता़ की के वोह आफ़्ताबे हिदायत बन कर लोगों के हादी व मुक़्तदा बन गए और अपने जल्वों से दुन्या को मुनव्वर करने लगे और जो इन के दामन से वाबस्ता हो गया वोह भी मुनव्वर हो गया। ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें क़ुरआने करीम को समझने, इस पर अ़मल करने और इस की ता'लीम आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।)

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 147 : **मु-तवक्किल ख़ातून**

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा सर्दियों के मौसिम में ज़बर दस्त मूसला धार बारिश हुई, मुसल्सल बारिश की वजह से लोगों को परेशानी होने लगी। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हमारे पड़ोस में एक इ़बादत गुज़ार औ़रत अपनी यतीम बच्चियों के साथ एक पुराने से घर में रहती थी। जब बारिश हुई तो उन के कच्चे घर की छत टपकने लगी और बारिश का पानी घर में आने लगा, उन ग़रीबों के पास सिर्फ़ येह एक ही कमरे पर मुश्तमिल घर था। उस नेक औ़रत ने जब देखा कि सर्दी की वजह से बच्चे ठिठर रहे हैं और बारिश का पानी मुसल्सल घर में गिर रहा है जब कि बारिश रुकने का नाम तक नहीं ले रही।

चुनान्चे उस नेक औ़रत ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठाए और अ़र्ज़ गुज़ार हुई : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू रह़्म और नर्मी फ़रमाने वाला है, हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म और नर्मी फ़रमा।"

वोह नेक औ़रत अभी दुआ़ से फ़ारिग़ भी न होने पाई थी कि फ़ौरन बारिश रुक गई मेरा घर चूंकि उस सालिह़ा औ़रत के घर से बिल्कुल मुत्तसिल था। मैं उस की दुआ़ सुन रहा था जब मैं ने देखा कि इस औ़रत की दुआ़ से बारिश बन्द हो गई है तो मैं ने एक थैली में दस सोने की अशरफ़ियां डालीं और उस औ़रत के दरवाज़े पर पहुंच कर दस्तक दी। दस्तक सुन कर औ़रत ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ करे कि आने वाला ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हो।" जब मैं ने येह सुना तो कहा कि मैं ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही हूं। मैं ने तुम्हारी आवाज़ सुनी थी तुम दुआ़ में इस त़रह़ कह रही थीं : "ऐ नर्मी फ़रमाने वाले परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ नर्मी फ़रमा।" क्या तुम्हारी येह दुआ़ मक़्बूल हो गई है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम से नर्मी वाला मुआ़-मला फ़रमाया है ? वोह नेक औ़रत बोली : "मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने हम पर इस त़रह़ नर्मी फ़रमाई कि बारिश रुक गई और जो पानी हमारे घर में जम्अ़ हो गया था वोह भी ख़ुश्क हो गया। मेरे बच्चे भी सर्दी से मह़फ़ूज़ हो गए हैं, उन्हों ने गरमाइश ह़ासिल करने का भी इन्तिज़ाम कर लिया है।"

जब मैं ने उस औ़रत की येह बातें सुनीं तो सोने की अशरफ़ियों वाली थैली निकाली और कहा : "येह कुछ रक़म है, इसे तुम अपनी ज़रूरियात में इस्ति'माल करो।" अभी हमारे दरमियान येह गुफ़्त-गू हो रही थी कि एक बच्ची अचानक हमारे पास आई, उस ने ऊन का पुराना सा कुर्ता पहना हुवा था जो एक जगह से फटा हुवा था और उस पर पैवन्द लगे हुए थे। हमारे पास आ कर वोह कहने लगी : "ऐ ह़म्माद बिन स-लमह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! क्या आप येह दुन्यावी दौलत दे कर हमारे और हमारे रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान पर्दा ह़ाइल करना चाहते हैं, हमें ऐसी दौलत नहीं चाहिये जो हमें हमारे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से जुदा करने का सबब बने।"

फिर उस ने अपनी वालिदा से कहा : "अम्मी जान ! जब हम ने अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से अपनी मुसीबतों की इल्तिजा की तो उस ने फ़ौरन ही दुन्यावी दौलत हमारी त़रफ़ भिजवा दी, कहीं ऐसा न हो कि हम इस दुन्यावी दौलत की वजह से अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाएं और हमारी तवज्जोह उस से हट कर किसी और की त़रफ़ मब्ज़ूल हो जाए।" फिर उस लड़की ने अपना चेहरा ज़मीन पर मलना शुरूअ़ किया और कहने लगी : "ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! हम कभी भी तेरे दर से नहीं जाएंगे, हमारी उम्मीदें सिर्फ़ तुझ से ही वाबस्ता रहेंगी, हम तेरे ही दर पर पड़े रहेंगे अगर्चे हमें धुत्कार दिया जाए लेकिन हम फिर भी तेरे दर को न छोड़ेंगे।"

तुम्हारे दर तुम्हारे आस्तां से मैं कहां जाऊं
न मुझ सा कोई बे बस है न तुम सा कोई वाली है

फिर उस बच्ची ने मुझ से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, बराए करम ! आप येह रक़म वापस ले जाएं जहां से लाए हैं वहीं रख दें। हमें इस दौलत की कोई ह़ाजत नहीं, हमें हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है। वोह हमें कभी भी मायूस नहीं करेगा। हम अपनी तमाम ह़ाजतें उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करते हैं, वोही हमारी ह़ाजतों को पूरा करने वाला है, वोही तमाम जहानों का पालने वाला और सारी मख़्लूक़ का ह़ाकिम व वाली है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

حَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ نِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِیْرُ

ह़िकायत नम्बर 148 : "कामिल भरोसा" हो तो जंगल में भी "रिज़्क़" मिल जाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इब्राहीम यमानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा हम चन्द रु-फ़क़ा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم की हमराही मे समुन्दर के क़रीब एक वादी की त़रफ़ गए। हम समुन्दर के किनारे किनारे चल रहे थे कि रास्ते में एक पहाड़ आया जिसे ज-बले "**कफ़र फ़ैर**" कहते हैं। वहां हम ने कुछ देर क़ियाम किया और फिर सफ़र पर रवाना हो गए। रास्ते में एक घना जंगल आया जिस में ब कसरत ख़ुश्क दरख़्त और ख़ुश्क झाड़ियां थीं, शाम क़रीब थी, सर्दियों का मौसिम था। हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अगर आप मुनासिब समझें तो आज रात हम साह़िले समुन्दर पर गुज़ार लेते हैं। यहां इस क़रीबी जंगल में ख़ुश्क

लकड़ियां बहुत हैं। हम लकड़ियां जम्अ़ कर के आग रोशन कर लेंगे इस त़रह़ हम सर्दी और दरिन्दों वग़ैरा से मह़फ़ूज़ रहेंगे।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ठीक है जैसे तुम्हारी मरज़ी।" चुनान्चे हमारे कुछ दोस्तों ने जंगल से ख़ुश्क लकड़ियां इकठ्ठी कीं और एक शख़्स को आग लेने के लिये क़रीबी क़ल्ए़ की त़रफ़ भेज दिया, जब वोह आग ले कर आया तो हम ने जम्अ़ शुदा लकड़ियों में आग लगा दी और सब आग के इर्द गिर्द बैठ गए और हम ने खाने के लिये रोटियां निकाल लीं। अचानक हम में से एक शख़्स ने कहा : "देखो इन लकड़ियों से कैसे अंगारे बन गए हैं, ऐ काश ! हमारे पास गोश्त होता तो हम उसे इन अंगारों पर भून लेते।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم ने उस की येह बात सुन ली और फ़रमाने लगे : "हमारा पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि तुम्हें इस जंगल में ताज़ा गोश्त खिलाए।"

अभी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ येह बात फ़रमा ही रहे थे कि अचानक एक त़रफ़ से शेर नुमूदार हुवा जो एक फ़र्बा हरन के पीछे भाग रहा था। हरन का रुख़ हमारी ही त़रफ़ था। जब हरन हम से कुछ फ़ासिले पर रह गया तो शेर ने उस पर छलांग लगाई और उस की गरदन पर शदीद ह़म्ला किया जिस से वोह तड़पने लगा। येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم उठे और उस हरन की त़रफ़ लपके। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आता देख कर शेर हरन को छोड़ कर पीछे हट गया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "येह रिज़्क़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये भेजा है। चुनान्चे हम ने हरन को ज़ब्ह़ किया और उस का गोश्त अंगारों पर भून भून कर खाते रहे और शेर दूर बैठा हमें देखता रहा। इसी त़रह़ हमारी सारी रात गुज़र गई। सच है कि जो उस पाक ज़ात पर कामिल यक़ीन रखता है वोह कभी मायूस नहीं होता।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 149 : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अन्दाज़े दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन महमूद समर क़न्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, ज़माने के मशहूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ दुआ़ करते : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से उस ज़बान के ज़रीए़ दुआ़ करता हूं जो तूने मुझे अ़ता की है, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू अपने फ़ज़्लो करम से मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा। ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे हर ह़ाल में रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है और हर मुसीबत में मेरा मददगार तू ही है, ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी

अ़-ज़-मतों और रह़मतों को दिलो जान से मानने वाला हूं, मैं तेरी अ़-ज़मत का मो'तरिफ़ हूं, मेरे पास येही दलील व आसरा है कि मैं तुझ से मह़ब्बत करता हूं। मेरी तुझ से मह़ब्बत तेरी बारगाह में मेरे लिये शफ़ीअ़ है। ऐ रह़ीम व करीम मौला عَزَّوَجَلَّ ! तूने हमें बिग़ैर मांगे मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से ईमान की दौलत से नवाज़ा, दौलते ईमान सब से बड़ी दौलत है।

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! जब हम तुझ से कोई चीज़ मांगें तू हमें ज़रूर अ़ता फ़रमाएगा, जब बिग़ैर मांगे तू इतनी बड़ी बड़ी ने'मतें अ़ता फ़रमाता है तो मांगने पर भी ज़रूर हमारी ह़ाजतें पूरी करेगा। ऐ मेरे मैला عَزَّوَجَلَّ ! तू हम से अ़फ़्वो दर गुज़र वाला मुआ-मला फ़रमा। ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! अगर मुआफ़ करना तेरी सिफ़त न होती तो अहले मा'रिफ़त कभी भी तेरी ना फ़रमानी न करते। जब एक लम्ह़े का ईमान पचास साल के कुफ़्र को मिटा देता है और इन्सान को कुफ़्र की पुरानी से पुरानी गन्दगी से पाक कर देता है तो पचास साल का ईमान गुनाहों को कैसे नहीं मिटाएगा।"

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मैं इस बात की उम्मीद रखता हूं कि जो कि ईमान अपने से क़ब्ल कुफ़्र जैसी गन्दगी को इन्सान से लम्ह़ा भर में दूर कर देता है और ईमान की बदौलत इन्सान कुफ़्र जैसी बीमारी से नजात पा जाता है तो येही ईमान अपने मा बा'द गुनाहों को ज़रूर मिटा देगा, चाहे गुनाह कितने ही बड़े हों ईमान की बदौलत ज़रूर मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

ऐ इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात तो वोह अ़ज़ीम ज़ात है कि अगर कोई तुझ से न मांगे तो तुझे उस पर जलाल आ जाता है, मैं तो तुझ से मांग रहा हूं। लिहाज़ा मेरी दुआ रद न करना बल्कि क़बूल फ़रमा लेना। ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ मुझ पर हर घड़ी नज़रे रह़मत फ़रमा, मेरे पास बस एक ही हुज्जत व दलील है कि मैं तेरी अ़-ज़-मतों और तेरी तमाम सिफ़ात का मो'तरिफ़ हूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसी हुज्जत के सबब मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मेरा इस बात पर यक़ीने कामिल है कि मेरा और तमाम जहां का पालने वाला तू ही है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने आप को तेरी रह़मतों के साए में पाता हूं, तेरी रह़मत की जल्वा गरी हर त़रफ़ है। ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इस ह़ाल में दुआ कर रहा हूं कि मेरे गुनाहों से लिथड़े हुए हाथ फैले हुए हैं और आंखें तेरी रह़मत और तेरे अ़फ़्वो करम की उम्मीद से भीगी हुई हैं।

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ले क्यूं कि तू तो बुर्दबार और बख़्शने वाला मालिक है, मेरे ह़ाल पर रह़्म फ़रमा क्यूं कि मैं तो एक कमज़ोर व आ़जिज़ बन्दा हूं। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! जब तुझ से डरने में दिल को सुरूर व कैफ़ ह़ासिल होता है तो जिस वक़्त तू हम से राज़ी हो जाएगा और हमें जहन्नम से आज़ादी का परवाना अ़ता फ़रमा देगा तो उस वक़्त हमें कितना सुरूर ह़ासिल होगा।

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! जब दुन्यवी ज़िन्दगी में तेरी तजल्लियात में और तेरी रह़मतों के साए तले हम किसी मह़फ़िल में तेरा ज़िक्र करते हैं तो हमें कितना सुरूर मिलता है, तो जब हम उख़्रवी ज़िन्दगी में तेरे जल्वों और दीदार से मुशर्रफ़ होंगे उस वक़्त हमारी ख़ुशी और कैफ़ो सुरूर का क्या आ़लम होगा । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जब हम दुन्यावी ज़िन्दगी में इ़बादात व रियाज़ात कर के ख़ुश होते हैं और मुसीबतों पर सब्र कर के ख़ुश होते हैं तो जिस वक़्त हमें आख़िरत में बख़्शिशें, मग़्फ़िरतें और ने'मतें अ़ता होंगी उस वक़्त हमारी ख़ुशी का क्या आ़लम होगा ? जब हम दुन्या में तेरे ज़िक्र की लज़्ज़त से मसरूर व शादां होते हैं तो जिस वक़्त उख़्रवी ज़िन्दगी शुरूअ़ होगी उस वक़्त हमारी ख़ुशी और सुरूर का आ़लम क्या होगा ।

ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने आ'माल पर भरोसा नहीं कि मैं इन की वजह से बख़्शा जाऊंगा मुझे तो बस तेरी रह़मत से उम्मीद है कि तू मुझे ज़रूर बिज़्ज़रूर बख़्शेगा मुझे तेरी रह़मत से क़वी उम्मीद है। आ'माल में इख़्लास शर्त़ है क्या मा'लूम कि मेरे आ'माल में इख़्लास है भी या नहीं ? फिर मैं क्यूं न डरूं इस बात से कि हो सकता है मेरे आ'माल तेरी बारगाह में क़बूल ही न हों । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बात पर पुख़्ता यक़ीन रखता हूं कि मेरे गुनाह मह़्ज़ तेरी रह़मत ही से बख़्शे जाएंगे और येह कैसे हो सकता है कि तू गुनाहों को मुआ़फ़ न करे ह़ालां कि तू तो जव्वाद व ग़फ़्फ़ार है तू ज़रूर बिज़्ज़रूर मेरे गुनाहों को बख़्शेगा ।

या इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझे उस वक़्त तक दुन्या से न उठाना जब तक तू मुझे अपनी मुलाक़ात का ख़ूब शौक़ अ़ता न फ़रमा दे । जब मैं दुन्या से जाऊं तो मेरे दिल में तुझ से मुलाक़ात का शौक़ मचल रहा हो, तेरी ज़ियारत के लिये मेरा दिल बे क़रार हो, तेरे जल्वों में गुम होने के लिये मेरी रूह़ तड़प रही हो ।

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरे पास ऐसी ज़बान नहीं जो तेरी ख़ूबियां बयान कर सके और न ही कोई ऐसा अ़मल है जिसे मैं हु़ज्जत व दलील बना सकूं और उस के ज़रीए़ तेरा क़ुर्ब ह़ासिल कर सकूं । मेरे गुनाहों की कसरत ने मुझे बोलने से आ़जिज़ कर दिया है और मेरे उ़्यूब की वजह से मेरी क़ुव्वते बयानी ख़त्म हो चुकी है ।

ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरे पास कोई अ़मल ऐसा नहीं जिसे तेरी बारगाह में वसीला बना सकूं, न ही कोई ऐसा अ़मल है जिस की वजह से मेरी कोताहियां मुआ़फ़ हो जाएं । अलबत्ता ! येह बात ज़रूर है कि मैं तेरी रह़मत से क़वी उम्मीद रखता हूं कि तू मुझे ज़रूर बख़्शेगा तू ज़रूर मुझ पर एह़सान फ़रमाएगा और मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं । मेरा येह अ़मल भी मुझे तेरी बारगाह से ज़रूर मग़्फ़िरत दिलवाएगा । या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे तेरे फ़ज़्लो करम का वासित़ा देता हूं तू मेरी ग़-लत़ियों और कोताहियों से दर गुज़र फ़रमा । इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मेरी दुआ़ को क़बूल फ़रमा ले अगर तू क़बूल फ़रमा लेगा तो मेरे सारे गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । तेरे दरियाए रह़मत का एक क़त़रा मेरे तमाम गुनाहों की सियाही धो

डालेगा। ऐ मेरे मालिको मुख़्तार रब عَزَّوَجَلَّ ! तूने हम पर अपनी इ़बादत लाज़िम फ़रमाई ह़ालां कि तू हमारी इ़बादत का मोह़ताज नहीं बल्कि तू तो बे नियाज़ है, हमारी इ़बादत की तुझे कोई ह़ाजत नहीं लेकिन ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से मग़्फ़िरत का त़ालिब हूं और मैं मग़्फ़िरत का मोह़ताज हूं अपने करम से मेरी ह़ाजत को पूरा फ़रमा दे और मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा।

ऐ मेरे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इस बात को पसन्द करता है कि मैं तुझ से मह़ब्बत करूं ह़ालां कि तुझे मेरी मह़ब्बत की कोई ह़ाजत नहीं। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरा अदना व ह़क़ीर बन्दा हूं, मैं तुझ से मह़ब्बत करता हूं, मैं ने तेरा दर लाज़िम कर लिया है अब किसी और की त़रफ़ हरगिज़ हरगिज़ इल्तिफ़ात न करूंगा। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरे दिल में येह बात अच्छी त़रह़ घर कर चुकी है कि तेरी रह़मत के सहारे मैं ज़रूर बख़्शा जाऊंगा मुझे तुझ से क़वी उम्मीद है। फिर येह कैसे हो सकता है कि मैं तुझ से उम्मीद रखूं फिर भी मेरी मग़्फ़िरत न हो।

मेरा उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ पर पुख़्ता यक़ीन है जो दुन्यावी ज़िन्दगी में हमारी कोताहियों के बा वुजूद हमें ने'मतों से नवाज़ता जा रहा है, वोह कल बरोज़े क़ियामत मह़्ज़ अपने लुत़्फ़ो करम से हमारे ह़ाले ज़ार पर ज़रूर रह़्म फ़रमाएगा। वोह ऐसा सत्तार व ग़फ़्फ़ार है कि दुन्या में हमारी नेकियों को ज़ाहिर फ़रमाता और हमारे उ़यूब पर पर्दा डालता है वोह बरोज़े क़ियामत ज़रूर हमारी टूटी फूटी नेकियों को क़बूल फ़रमाएगा और हमारी ख़त़ाओं और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमा कर हमें ज़रूर मग़्फ़िरत का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुनाएगा और जो किसी पर एह़सान करता है उस की शान येह है कि वोह एह़सान को पायए तक्मील तक पहुंचाता है। मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ हम पर एह़सान फ़रमाने वाला है वोह ज़रूर हमारे गुनाहों को छुपाए रखेगा और ज़रूर हमारी मग़्फ़िरत फ़रमाएगा।

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरी बारगाह में मेरा वसीला तेरी ने'मतें हैं, तेरा लुत़्फ़ो करम ही मेरा वसीला और तेरा एह़सान व शाने करीमी ही तेरी बारगाह में मेरे लिये शफ़ीअ़ हैं। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनाहगार हूं फिर मैं ख़ुश कैसे रह सकता हूं और जब तेरी रह़मत की त़रफ़ नज़र करूं और तेरी बख़्शिशों और अ़त़ाओं को मद्दे नज़र रखूं तो फिर मैं ग़मगीन और परेशान कैसे रह सकता हूं।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब मैं अपने गुनाहों की त़रफ़ नज़र करता हूं तो सोचता हूं कि तुझ से दुआ़ किस त़रह़ मांगूं ? किस मुंह से तेरी बारगाह में इल्तिजाएं करूं लेकिन जब तेरी रह़मत और करम की त़रफ़ नज़र करता हूं तो मेरी ढारस बंध जाती है कि करीम से न मांगूं तो किस से मांगूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत मुझ से गुनाह सरज़द हो जाते हैं लेकिन मैं फिर भी तुझ से दुआ़ ज़रूर करूंगा क्यूं कि मैं देखता

हूं कि गुनाहगार से गुनाहों के सुदूर के बा वुजूद तू उन्हें अपनी ने'मतों से महरूम नहीं करता। ऐ मेरे मग़्फ़िरत फ़रमाने वाले परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा तो बेशक येह मह़ज़ तेरी अ़त़ा है और तू सब से ज़ियादा मग़्फ़िरत फ़रमाने वाला है और अगर तू मुझे अ़ज़ाब देगा तो तू इस बात पर क़ादिर है। तेरा किसी को अ़ज़ाब देना कोई ज़ुल्म नहीं बल्कि येह तो तेरा अ़द्ल है।

ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं ज़लीलो ख़्वार हूं, अपनी हैसियत के मुत़ाबिक़ तुझ से त़लब कर रहा हूं तू अपने करम के मुत़ाबिक़ अ़त़ा फ़रमा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब मुझे तुझ से सुवाल करने में इतना सुरूर मिलता है कि बयान से बाहर है तो जिस वक़्त तू मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा लेगा और मुझे बख़्शिश व मग़्फ़िरत और अपनी दाइमी रिज़ा की दौलत से मालामाल कर देगा तो उस वक़्त मेरी खुशी का क्या आ़लम होगा। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे ख़ौफ़ से थर थर कांपता हूं क्यूं कि मैं इन्तिहाई गुनाहगार व ख़त़ाकार हूं और तेरी रह़मत का उम्मीद वार भी हूं क्यूं कि तू करीम है तू रह़ीम व ह़लीम है।

ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा ले क्यूं कि तू लत़ीफ़ व करीम है, मेरे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमा, बेशक मैं कमज़ोर व आ़जिज़ बन्दा हूं। ऐ मेरे मौला ! ऐ मेरे परवर्द गार ! ऐ मेरे मालिक ! ऐ रह़ीम व करीम ज़ात ! मुझ पर रह़्म फ़रमा मैं तेरा मोह़ताज हूं, मैं तेरा मोह़ताज हूं, मैं तेरी बारगाह में रह़मत व मग़्फ़िरत का त़लबगार हूं, मैं अपनी ह़ाजतें ख़ुद पूरी नहीं कर सकता, मेरी उम्मीद गाह का मर्कज़ तेरी ही ज़ात है, तेरी रह़मत व मग़्फ़िरत का सब से ज़ियादा ह़क़दार मैं ही हूं, मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा हैं और आख़िरत का मुआ़-मला बहुत सख़्त है। नहीं मा'लूम मेरा क्या अन्जाम होगा। या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रख अगर्चे मेरे पास नेक आ'माल का ज़ख़ीरा नहीं लेकिन फिर भी मैं तेरी रह़मत का त़लबगार हूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे पास ऐसा कोई उ़ज़्र नहीं जिसे तेरी बारगाह में पेश कर के ख़लासी ह़ासिल कर सकूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तमाम आफ़तों और मुसीबतों से उसी वक़्त ख़लासी मिल सकती है जब तू लुत़्फ़ो करम फ़रमा दे, मेरे तमाम गुनाहों को बख़्श दे और मेरी तमाम ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दे। या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है, तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं तू पाक है, तू पाक है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

बख़्श हमारी सारी ख़त़ाएं, खोल दे हम पर अपनी अ़त़ाएं
बरसा दे रह़मत की बरखा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी झोली भर दे

हिकायत नम्बर 150 : बड़ी चाहतों से है इस दर को पाया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, मुझ से हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ईमान लाने का वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाया : मैं "**अस्बहान**" के एक गाउं में रहता था, मेरा बाप एक बड़ा जागीर दार था और वोह मुझ से बहुत ज़ियादा महब्बत करता था, मैं उस के नज़दीक तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा प्यारा था। इसी महब्बत की वजह से वोह मुझे घर से बाहर न निकलने देता, हर वक़्त मुझे घर ही में रखता, मेरी ख़ूब देख भाल करता, मेरे बाप की येह ख़्वाहिश थी मैं पक्का मजूसी (या'नी आतश परस्त) बनूं क्यूं कि हमारा आबाई मज़्हब "**मजूसियत**" ही था और मेरा बाप पक्का मजूसी था। वोह मुझे भी अपनी त़रह़ बनाना चाहता था लिहाज़ा उस ने मेरी ज़िम्मादारी लगा दी कि मैं आतश कदे में आग भड़काता रहूं और एक लम्ह़ा के लिये भी आग को न बुझने दूं। मैं अपनी ज़िम्मादारी सर अन्जाम देता रहा। एक दिन मेरा बाप किसी ता'मीरी काम में मश्ग़ूल था जिस की वजह से वोह ज़मीनों की देख भाल के लिये नहीं जा सकता था।

चुनान्चे मेरे बाप ने मुझे बुलाया और कहा : "ऐ मेरे बेटे ! आज मैं यहां बहुत मस्रूफ़ हूं और खेतों की देख भाल के लिये नहीं जा सकता। आज वहां तू चला जा और ख़ादिमों को फ़ुलां फ़ुलां काम की ज़िम्मादारी सोंप देना और उन की निगरानी करना, इधर उधर कहीं मु-तवज्जेह न होना, सीधा अपने खेतों पर जाना और काम पूरा होने के फ़ौरन बा'द वापस आ जाना।" अपने बाप का हुक्म पाते ही मैं अपनी ज़मीनों की त़रफ़ चल दिया। रास्ते में ईसाइयों का इ़बादत ख़ाना था। जब मैं उस के क़रीब से गुज़रा तो मुझे अन्दर से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। वहां कुछ राहिब नमाज़ में मश्ग़ूल थे। मैं जब अन्दर दाख़िल हुवा और उन का अन्दाज़े इ़बादत मुझे बड़ा अनोखा और अच्छा लगा मैं ने पहली मर्तबा इस अन्दाज़ में किसी को इ़बादत करते हुए देखा था। मैं चूंकि ज़ियादा तर घर ही में रहता था इस लिये लोगों के मुआ़-मलात से आगाह न था। अब जब यहां इन लोगों को देखा कि येह ऐसे अन्दाज़ में इ़बादत कर रहे हैं जो हम से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है तो मेरा दिल उन की त़रफ़ राग़िब होने लगा और मुझे उन का अन्दाज़े इ़बादत बहुत पसन्द आया।

मैं ने दिल में कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इन राहिबों का मज़्हब हमारे मज़्हब से अच्छा है।" फिर मैं सारा दिन उन्हें देखता रहा और अपने खेतों पर नहीं गया। जब तारीकी ने अपने पर फैलाना शुरूअ़ किये तो मैं उन लोगों के क़रीब गया और उन से पूछा : "तुम जिस दीन को मानते हो उस की अस्ल कहां है ? या'नी तुम्हारा मर्कज़ कहां है ?" उन्हों ने बताया : "हमारा मर्कज़ "**शाम**" में है।" फिर मैं घर चला आया। मेरा बाप बहुत परेशान था कि न जाने मेरा बच्चा कहां गुम हो गया ? उस ने मेरी तलाश में कुछ लोगों को आस पास की बस्तियों में भेज दिया था। जब मैं घर पहुंचा तो मेरे बाप ने बेताब हो कर पूछा : "मेरे लाल ! तू कहां चला गया था ? हम तो तेरी वजह से बहुत परेशान थे।" मैं ने कहा : "मैं अपनी ज़मीनों की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में कुछ लोगों को नमाज़ पढ़ते देखा, मुझे उन का

अन्दाज़े इ़बादत बहुत पसन्द आया चुनान्चे मैं शाम तक उन्ही के पास बैठा रहा।"

येह सुन कर मेरा बाप परेशान हुवा और कहने लगा : "मेरे बेटे ! उन लोगों के मज़्हब में कोई भलाई नहीं। जिस मज़्हब पर हम हैं और जिस पर हमारे आबाओ अजदाद थे वोही सब से अच्छा है लिहाज़ा तुम किसी और त़रफ़ तवज्जोह न दो।" मैं ने कहा : "हरगिज़ नहीं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन राहिबों का मज़्हब हमारे मज़्हब से बहुत बेहतर है।" मेरी येह गुफ़्त-गू सुन कर मेरे बाप को येह ख़ौफ़ होने लगा कि कहीं मेरा बेटा मजूसियत को छोड़ कर नसरानी मज़्हब क़बूल न कर ले। इसी ख़ौफ़ के पेशे नज़र उस ने मेरे पाउं में बेड़ियां डलवा दीं और मुझे घर में क़ैद कर दिया ताकि मैं घर से बाहर ही न निकल सकूं। मुझे उन राहिबों से बहुत ज़ियादा अ़क़ीदत हो गई थी। मैं ने किसी त़रीक़े से उन तक पैग़ाम भिजवाया कि जब कभी तुम्हारे पास मुल्के शाम से कोई क़ाफ़िला आए तो मुझे ज़रूर इत्तिलाअ़ देना।

चन्द रोज़ बा'द मुझे इत्तिलाअ़ मिली कि शाम से राहिबों का एक क़ाफ़िला हमारे शहर में आया हुवा है। मैं ने फिर राहिबों को पैग़ाम भिजवाया कि जब येह क़ाफ़िला अपनी ज़रूरियात पूरी करने के बा'द वापस शाम जाने लगे तो मुझे ज़रुर इत्तिलाअ़ देना। कुछ दिन बा'द मुझे इत्तिलाअ़ मिली कि क़ाफ़िला वापस शाम जा रहा है। मैं ने बहुत जिद्दो जुहद के बा'द अपने क़दमों से बेड़ियां उतारीं और फ़ौरन शाम जाने वाले क़ाफ़िले के साथ जा मिला। मुल्के "**शाम**" पहुंच कर मैं ने लोगों से पूछा : "तुम में सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ और साह़िबे इ़ल्मो अ़मल कौन है ?" लोगों ने बताया : "फ़ुलां कनीसा (या'नी इ़बादत ख़ाना) में रहने वाला राहिब हम में सब से ज़ियादा क़ाबिले एह़तिराम और सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़ गार है।" चुनान्चे मैं उस राहिब के पास पहुंचा और कहा : "मुझे आप का दीन बहुत पसन्द आया है, अब मैं इस दीन के बारे में कुछ मा'लूमात चाहता हूं। अगर आप क़बूल फ़रमा लें तो मैं आप की ख़िदमत किया करूंगा और आप से इस दीन के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूमात भी ह़ासिल करता रहूंगा। बराए करम ! मुझे अपनी ख़िदमत के लिये रख लीजिये।"

येह सुन कर उस राहिब ने कहा : "ठीक है, तुम ब ख़ुशी मेरे साथ रहो और मुझ से हमारे दीन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करो।" चुनान्चे मैं उस के साथ रहने लगा लेकिन वोह राहिब मुझे पसन्द न आया। वोह बहुत बुरा शख़्स था, लोगों को स-दक़ात व ख़ैरात की तरग़ीब दिलाता। जब लोग स-दक़ात व ख़ैरात की रक़म ले कर आते तो येह उस रक़म को ग़रीबों और मिस्कीनों में तक़्सीम न करता बल्कि अपने पास ही जम्अ़ कर लेता। इस त़रह़ उस बद बात़िन राहिब ने बहुत सारा ख़ज़ाना जम्अ़ कर के सोने के बड़े बड़े सात मटके भर लिये थे। मुझे उस की इन ह़-र-कतों पर बहुत ग़ुस्सा आता बिल आख़िर जब वोह मरा तो लोगों का बहुत बड़ा हुजूम उस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन के लिये आया। मैं ने लोगों को बताया : "जिस के बारे में तुम्हारा गुमान था कि वोह सब से बड़ा राहिब है वोह तो बहुत लालची और गन्दी आ़दतों वाला था।" लोग कहने लगे : "येह तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हारे पास क्या दलील है कि वोह राहिब बुरा शख़्स था ?"

मैं ने कहा : "अगर तुम्हें मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता तो मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें उस का मालो दौलत और ख़ज़ाना दिखाता हूं जो वोह जम्अ़ करता रहा और फ़ु-क़रा व मसाकीन और यतीमों पर ख़र्च न किया।" लोग मेरे साथ चल दिये। मैं ने उन्हें वोह मटके दिखाए जिन में सोना भरा हुवा था। उन्हों ने वोह मटके लिये और कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम उस राहिब को दफ़्न नहीं करेंगे।" फिर उन्हों ने उस के मुर्दा जिस्म को सूली पर लटकाया और पथ्थर मार मार कर छल्नी कर दिया फिर उस की लाश को बे गोरो कफ़न फेंक दिया। इस के बा'द लोगों ने एक और राहिब को उस की जगह मुन्तख़ब कर लिया। वोह बहुत अच्छी आ़दात व सिफ़ात का मालिक और इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़ गार शख़्स था, त़म्अ़ व लालच उस में बिल्कुल न थी, दिन रात इ़बादत में मश्ग़ूल रहता। दुन्यवी मुआ़-लात की त़रफ़ बिल्कुल भी तवज्जोह न देता, मेरे दिल में उस की अ़क़ीदत व मह़ब्बत घर कर गई। मैं ने उस की ख़ूब ख़िदमत की और उस से नसरानियत के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करता रहा।

जब उस की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने उस से पूछा : "आप मुझे किस के पास जाने की वसिय्यत करते हैं ? आप के बा'द मेरी रहनुमाई कौन करेगा ?" वोह राहिब कहने लगा : "ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस दीन पर मैं हूं उस में सब से बड़ा आ़लिम व फ़क़ीह एक शख़्स है जो "**मूसिल**" में रहता है। मेरे नज़्दीक उस से बेहतर कोई नहीं जो तुम्हारी रहनुमाई कर सके, अगर तुम से हो सके तो उस की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाओ।" राहिब की येह बात सुन कर मैं मूसिल चला गया और वहां के राहिब के पास पहुंच गया। मैं ने वाक़ेई़ उसे ऐसा पाया जैसा उस के बारे में बताया गया था। वोह बहुत नेक व ज़ाहिद शख़्स था। चुनान्चे मैं उस के पास रहने लगा फिर जब उस की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने उस से पूछा : "अब आप मुझे किस के पास जाने का हुक्म देते हैं जो आप के बा'द मेरी सह़ीह़ रहनुमाई करे ?" उस ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस वक़्त हमारे दीन का सब से बड़ा बा अ़मल आ़लिम "**नसीबैन**" में रहता है। मेरी नज़रों में उस से बेहतर कोई और नहीं, अगर हो सके तो उस के पास चले जाओ।"

चुनान्चे मैं सफ़र की सुऊ़बतें बरदाश्त करता हुवा "**नसीबैन**" पहुंचा और उस राहिब के पास रहने लगा। वोह भी निहायत मुत्तक़ी व परहेज़ गार शख़्स था, जब उस की वफ़ात का वक़्त आया तो मैं ने पूछा : "आप मुझे किस के पास जाने का हुक्म फ़रमाते हैं ?" उस ने कहा : "इस वक़्त हमारे दीन पर क़ाइम रहने वालों में सब से बड़ा बा अ़मल राहिब "**अ़मूरिया**" में रहता है, मेरी नज़रों में उस से बेहतर कोई नहीं, तुम उस के पास चले जाओ वोह तुम्हारी सह़ीह़ रहनुमाई करेगा।"चुनान्चे मैं "**अ़मूरिया**" पहुंचा और उस राहिब की ख़िदमत में रहने लगा। वोह वाक़ेई़ बहुत नेक व सालेह़ शख़्स था। में उस से दीने नसारा के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करता और दिन को बत़ौरे अजीर (या'नी मज़दूर) एक शख़्स के जानवरों की देख भाल करता। इस त़रह़ मेरे पास इतनी रक़म जम्अ़ हो गई कि मैं ने कुछ गाय और बकरियां वग़ैरा ख़रीद लीं। फिर जब उस राहिब की मौत का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने उस से पूछा : "आप मुझे किस के पास भेजेंगे

जो आप के बा'द मेरी सह़ीह़ रहनुमाई करे ?''

उस राहिब ने कहा : ''ऐ मेरे बेटे ! अब हमारे दीन पर क़ाइम रहने वाला कोई ऐसा शख़्स नहीं जिस के पास मैं तुझे भेजूं । हां ! अगर तुम नजात चाहते हो तो मेरी बात तवज्जोह से सुनो : अब उस नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जल्वा गरी का वक़्त बहुत क़रीब आ गया है जो दीने इब्राहीमी ले कर आएगा । वोह सर ज़मीने अ़रब में मब्ऊ़स होगा और खजूरों वाली ज़मीन की त़रफ़ हिजरत फ़रमाएगा। उस नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की कुछ वाज़ेह़ निशानियां येह हैं : ''(1)...... वोह हदिय्या क़बूल फ़रमाएंगे (2)...... लेकिन सदक़े का खाना नहीं खाएंगे और (3)...... उन के दोनों मुबारक शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत होगी ।''

अगर तुम उस नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़माना पाओ तो उन के पास चले जाना اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّ وَجَلَّ तुम दुन्या व आख़िरत में काम्याब हो जाओगे । ऐ मेरे बेटे ! तुम उस रह़मत वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़रूर मिलना ।'' इतना कहने के बा'द उस राहिब का भी इन्तिक़ाल हो गया । फिर जब तक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने चाहा मैं ''**अ़मूरिया**'' में ही रहा । फिर मुझे इत्तिलाअ़ मिली कि क़बीला ''**बनी कल्ब**'' के कुछ ताजिर अ़रब शरीफ़ जा रहे हैं तो मैं उन के पास गया और उन से कहा : ''मैं भी तुम्हारे साथ अ़रब शरीफ़ जाना चाहता हूं, मेरे पास कुछ गाएं और बकरियां हैं, येह सब की सब तुम ले लो और मुझे अ़रब शरीफ़ ले चलो ।'' उन ताजिरों ने मेरी येह बात मन्ज़ूर कर ली और मैं ने उन्हें तमाम गाएं और बकरियां दे दीं । चुनान्चे हमारा क़ाफ़िला सूए अ़रब शरीफ़ रवाना हुवा । जब हम वादिये ''**क़ुरा**'' में पहुंचे तो उन ताजिरों ने मुझ पर ज़ुल्म किया और मुझे जब्रन अपना ग़ुलाम बना कर एक यहूदी के हाथों फ़रोख़्त कर दिया ।

यहूदी मुझे अपने अ़लाक़े में ले गया । वहां मैं ने बहुत से खजूरों के दरख़्त देखे तो मैं समझा कि शायद येही वोह शहर है जिस के बारे में मुझे बताया गया है कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, सुल्त़ाने दो जहां, मह़बूबे रब्बुल इन्से वल जां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم यहां तशरीफ़ लाएंगे । चुनान्चे मैं उस यहूदी के पास रहने लगा और उस की ख़िदमत करने लगा । कुछ दिनों के बा'द उस यहूदी का चचाज़ाद भाई मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से उस के पास आया । उस का तअ़ल्लुक़ क़बीला ''**बनी क़रीज़ा**'' से था । यहूदी ने मुझे उस के हाथों फ़रोख़्त कर दिया । वोह मुझे ले कर मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ रवाना हो गया । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब मैं मदीनए मुनव्वरह की पाकीज़ा फ़ज़ाओं में पहुंचा तो मैं ने पहली ही नज़र में पहचान लिया कि येही जगह मेरी अ़क़ीदतों का मह़वर व मर्कज़ है । येही वोह पाकीज़ा शहर है जिस में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, सुल्त़ाने दो जहां, सरवरे कौनो मकां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आ-वरी होगी । जो निशानियां राहिब ने मुझे बताई थीं कि वहां ब कसरत खजूरें होंगी, वोह मैं ने पा ली थीं ।

अब मैं मुन्तज़िर था कि कब मेरे कानों में येह सदा गूंजे कि उस पाकीज़ा हस्ती ने अपने जल्वों से मदीनए मुनव्वरह को नूरबार कर दिया है जिस की आमद की ख़बर साबिक़ा आस्मानी कुतुब में दी गई है ।

बिल आख़िर इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं । एक दिन मैं खजूर के दरख़्त पर चढ़ा हुवा था

और मेरा मालिक नीचे बैठा था। उस का चचाज़ाद भाई आया और कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां क़बीले (या'नी औस व ख़ज़्रज) को बरबाद करे, वोह लोग मक़ामे "**क़ुबा**" में जम्अ़ हैं और एक ऐसे शख़्स का दीन क़बूल कर चुके हैं जो **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से आया है और वोह अपने आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नबी कहता है। उस क़बीले (या'नी औस व ख़ज़्रज) के अक्सर लोग अपने आबाओ अजदाद का दीन छोड़ कर उस पर ईमान ला चुके हैं।" जब मैं ने अपने मालिक के चचा ज़ाद भाई की येह बात सुनी तो मैं ख़ुशी के आ़लम में झूम उठा। क़रीब था कि मैं अपने मालिक के ऊपर गिर पड़ता लेकिन मैं ने अपने आप को संभाला और जल्दी जल्दी नीचे उतरा। फिर पूछा : "अभी तुम ने क्या बात कही है ? और कौन शख़्स मक्का से आया है ?" मेरी येह बात सुन कर मेरे मालिक को बहुत ग़ुस्सा आया और उस ने मुझे एक ज़ोरदार त़मांचा मारा और कहा : "तुम्हें हमारी बातों से क्या मत़लब ? जाओ ! जा कर अपना काम करो।"

मैं ने कहा : "मैं तो वैसे ही पूछ रहा था।" येह कह कर मैं दोबारा अपने काम में मश्ग़ूल हो गया। मेरे पास कुछ रक़म बची हुई थी। एक दिन मौक़अ़ पा कर मैं बाज़ार गया, कुछ खाने पीने की अश्या ख़रीदीं और बेताब हो कर उस रुख़े ज़ैबा की ज़ियारत के लिये क़ुबा की त़रफ़ चल दिया जिस के दीदार की तमन्ना ने मुझे फ़ारस से मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا तक पहुंचा दिया था। जब मैं वहां पहुंचा तो मैं ने उन की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मुझे येह ख़बर पहुंची है कि आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दे हैं और आप के अस्ह़ाब में अक्सर ग़रीब और ह़ाजत मन्द हैं, मैं कुछ अश्याए ख़ुर्दो नोश ले कर ह़ाज़िर हुवा हूं, मैं येह अश्या बत़ौरे स-दक़ा आप की बारगाह में पेश करता हूं, आप क़बूल फ़रमा लें।"

येह सुन कर उस पाकीज़ा व मुत़ह्हर हस्ती ने अपने अस्ह़ाब को मुख़ात़ब करते हुए फ़रमाया : "आओ ! और येह चीज़ें खा लो।" लोग खाने लगे और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में से कुछ भी न खाया। येह देख कर मैं ने दिल में कहा : "एक निशानी तो मैं ने पा ली है।" फिर कुछ दिनों के बा'द मैं खाने का कुछ सामान ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! येह कुछ खाने की चीज़ें हैं, इन्हें बत़ौरे हदिय्या क़बूल फ़रमा लें।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में से कुछ खाया और अपने अस्ह़ाब को भी अपने साथ खाने का हुक्म फ़रमाया। मैं ने दिल में कहा : "येह दूसरी निशानी भी पूरी हो गई है।"

फिर एक दिन मैं जन्नतुल बक़ीअ़ की त़रफ़ गया तो देखा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां मौजूद हैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर पर दो चादरें हैं। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द इस त़रह़ जम्अ़ हैं जैसे शम्अ़ के गिर्द परवाने जम्अ़ होते हैं। मैं ने जा कर सलाम अ़र्ज़ किया और फिर ऐसी जगह बैठ गया जहां से मेरी नज़र आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते मुबारक पर पड़े ताकि मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत को देख

सकूं क्यूं कि राहिब ने जो निशानियां बताई थीं वोह सब की सब मैं ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात में देख ली थीं। बस आख़िरी निशानी (या'नी मोहरे नुबुव्वत) देखना बाक़ी थी। मैं बड़ी बेताबी से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ देख रहा था, जब नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी येह ह़ालत देखी तो मेरे दिल की बात जान ली और मेरी त़रफ़ पीठ फैर कर मुबारक शानों से चादर उतार ली, जैसे ही आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चादर हटाई तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दोनों मुबारक शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत जग-मगा रही थी। मैं दीवाना वार आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बढ़ा और मोहरे नुबुव्वत को चूमना शुरूअ़ कर दिया। मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, बे इख़्तियार मेरी आंखों से आंसू बह निकले। आज मेरी खुशी की इन्तिहा न थी जिस के रूए ज़ैबा की एक झलक देखने के लिये मैं ने इतनी मुसीबतें और मशक़्क़तें झेलीं आज वोह नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे सामने मौजूद थे और मैं उन के जल्वों में अपने जिस्म को मुनव्वर होता देख रहा था।

मैं ने फ़ौरन हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मह़बूब आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कलिमा पढ़ा कर मुसलमान कर दीजिये और अपने ग़ुलामों में शामिल फ़रमा लीजिये।" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं मुसलमान हो गया। मैं अभी तक हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मोहरे नुबुव्वत को बोसे दे रहा था आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अब बस करो।" चुनान्चे मैं एक त़रफ़ हट गया, फिर मैं ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी सारी रूदाद सुनाई तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बहुत ह़ैरान हुए कि मैं किस त़रह यहां तक पहुंचा और मैं ने कितनी मशक़्क़तें बरदाश्त कीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक दिन हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! तुम अपने मालिक से मुका-तबत कर लो (या'नी उसे रक़म दे कर आज़ादी ह़ासिल कर लो)।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने मालिक से बात की तो उस ने कहा : "मुझे तीन सो खजूरों के दरख़्त लगा दो और चालीस ओक़िया चांदी भी दो फिर जब येह खजूरें फल देने लग जाएंगी तो तुम मेरी त़रफ़ से आज़ाद हो जाओगे।"

मैं हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हुवा और अपने मालिक की शर्तें आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बताईं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : "अपने भाई की मदद करो।" चुनान्चे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भरपूर तआ़वुन किया, किसी ने खजूरों के 30 पौदे ला कर दिये, किसी ने 50। अल ग़रज़ ! मददगार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मदद से मेरे पास 300 खजूरों के पौदे जम्अ़ हो गए।

फिर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! तुम

जाओ और ज़मीन को हमवार करो।" चुनान्चे मैं गया और ज़मीन को हमवार करने लगा ताकि वहां खजूर के पौदे लगाए जा सकें। इस काम से फ़ारिग़ हो कर मैं हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ज़मीन हमवार कर दी है।" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे साथ चल दिये। सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان भी आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थे। हम हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को खजूरों के पौदे उठा उठा कर देते और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दस्ते अक़्दस से उसे ज़मीन में लगाते जाते।

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में सलमान फ़ारसी (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की जान है ! हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जितने पौदे लगाए वोह सब के सब उग आए और उन में बहुत जल्द फल लगने लगे।" चुनान्चे मैं ने 300 खजूरें अपने मालिक के ह़वाले कीं। अभी मेरे ज़िम्मे 40 ओक़िया चांदी बाक़ी रह गई थी। फिर हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास किसी ने मुर्ग़ी के अन्डे जितना सोने का एक टुकड़ा भिजवाया। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क्या हुवा ?" फिर मुझे बुलवा कर फ़रमाया : "इसे ले जाओ, और अपना क़र्ज़ अदा करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह इतना सोना 40 ओक़िया चांदी के बराबर किस त़रह़ होगा ?" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम येह सोना लो और इस के ज़रीए 40 ओक़िया चांदी जो तुम्हारे ज़िम्मे है, उसे अदा करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये इसी को काफ़ी कर देगा और तुम्हारे ज़िम्मे जितनी चांदी है येह उस के बराबर हो जाएगा।" मैं ने वोह सोने का टुकड़ा लिया और उस का वज़्न किया। उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! वोह थोड़ा सा सोना 40 ओक़िया चांदी के बराबर हो गया और इस त़रह़ मैं ने अपने मालिक को चांदी दे दी और ग़ुलामी की क़ैद से आज़ाद हो कर सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों में शामिल हो गया। फिर मैं ग़ज़्वए ख़न्दक़ में हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शामिल हुवा। इस के बा'द में हर ग़ज़्वे में हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहा।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث سلمان الفارسی، الحدیث۲۳۷۹۸،ج۹،ص۱۸۵تا۱۸۹)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 151 : क'बतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र

हज़रते सय्यिदुना हामिद अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के अक़ीदत मन्दों में से थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब कभी सफ़र पर रवाना होते तो किसी को भी इत्तिलाअ़ न देते और न ही किसी को अपने साथ सफ़र पर चलने के लिये कहते। जब कभी सफ़र का इरादा होता तो एक बरतन अपने साथ ले जाते जो वुज़ू और पानी पीने के लिये इस्ति'माल फ़रमाते।

एक मर्तबा इसी तरह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना बरतन उठाया और एक सम्त चल दिये। मैं भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पीछे हो लिया। हमारा सफ़र जारी रहा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दौराने सफ़र मुझ से कोई बात न की यहां तक कि हम कूफ़ा पहुंच गए। वहां हम ने एक दिन और एक रात क़ियाम किया, फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **"क़ादिसिया"** की तरफ़ रवाना हुए। जब हम क़ादिसिया पहुंचे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरी तरफ़ मु-तवज्जेह हो कर पूछने लगे : "ऐ हामिद ! तुम यहां कैसे आए ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ साथ ही सफ़र करता आ रहा हूं। मैं सारे सफ़र में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ रहा हूं।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरा इरादा तो हज करने का है, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो अब मैं मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ जाऊंगा।" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! إِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मैं भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ मक्का शरीफ़ चलूंगा।" चुनान्चे हम सूए हरम रवाना हुए और मुसल्सल दिन रात सफ़र किया।

हमारा सफ़र इसी तरह जारी व सारी था। मक्कए मुकर्रमा क़रीब से क़रीब तर होता जा रहा था। अचानक हमें रास्ते में एक नौ जवान मिला। वोह भी हमारे साथ साथ चलने लगा। वोह हमारे साथ एक दिन और एक रात सफ़र करता रहा लेकिन रास्ते में उस ने एक भी नमाज़ न पढ़ी। येह देख कर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से कहा : "ऐ नौ जवान ! तू कल से हमारे साथ है लेकिन तूने एक भी नमाज़ न पढ़ी हालां कि नमाज़ हज से भी ज़ियादा अहम्मिय्यत की हामिल है।" उस नौ जवान ने जवाब दिया : "ऐ शैख़ ! मुझ पर नमाज़ फ़र्ज़ नहीं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "क्या तू मुसल्मान नहीं ?" उस ने जवाब दिया : "नहीं, बल्कि मैं नसरानी हूं और मैं इस जंगल बियाबान में येह देखने आया हूं कि मैं तवक्कुल में कितना कामिल हूं और मुझे मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ पर कितना भरोसा है क्यूं कि मेरा नफ़्स मुझ से कहता है कि तू तवक्कुल में बहुत कामिल है लेकिन मैं ने नफ़्स की बात पर यक़ीन न किया और येह तहिय्या कर लिया कि अपने आप को आज़माऊंगा और किसी ऐसी जगह जाऊंगा जहां मेरे और मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई न हो फिर वहां देखूंगा कि मेरे अन्दर कितना तवक्कुल है। चुनान्चे मैं इस जंगल बियाबान में आ गया हूं और अपने आप को आज़मा रहा हूं।"

उस नौ जवान की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से उठे और चलते हुए मुझ से फ़रमाया : "इसे इस के ह़ाल पर छोड़ दो।" नौ जवान भी हमारे साथ ही चलने लगा। ह़रम शरीफ़ से क़रीब **"वादिये मुर्र"** में पहुंच कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने पुराने कपड़े उतार कर धोए फिर वुज़ू करने के बा'द उस नौ जवान से पूछा : "तुम्हारा नाम क्या है ?" उस ने जवाब दिया : "अ़ब्दुल मसीह़।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल मसीह़ ! अब ह़रम शरीफ़ की ह़द शुरूअ़ होने वाली है और कुफ़्फ़ार का दाख़िला ह़रम शरीफ़ में ह़राम है।

जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी आख़िरी किताब क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ (پ۱۰، توبہ:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुश्रिक निरे नापाक हैं तो इस बरस के बा'द वोह मस्जिदे ह़राम के पास न आने पाएं।

लिहाज़ा तुम अब यहीं रुको और हरगिज़ हरगिज़ ह़रम शरीफ़ में दाख़िल न होना अगर तुम दाख़िल हुए तो हम हुक्काम से तुम्हारी शिकायत कर देंगे।

इतना कहने के बा'द हम ने उस नौ जवान को वहीं छोड़ा और हम मक्कए मुकर्रमा की नूरबार मुश्कबार फ़ज़ाओं में दाख़िल हो गए। फिर हम मैदाने अ़-रफ़ात की जानिब रवाना हुए वहां ह़ाजियों का हुजूम था अचानक हम ने उसी नौ जवान को मैदाने अ़-रफ़ात में देखा उस ने ह़ाजियों की त़रह़ एह़राम बांधा हुवा था और बे ताबाना नज़रों से किसी को तलाश कर रहा था जूंही उस ने हमें देखा फ़ौरन हमारे पास चला आया और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पेशानी को बोसा देने लगा। येह सूरते ह़ाल देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल मसीह़ ! तुम यहां कैसे आ गए ?" उस नौ जवान ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अब मेरा नाम अ़ब्दुल मसीह़ नहीं बल्कि अ़ब्दुल्लाह है (या'नी अब वोह ईसाई मुसल्मान हो चुका था)

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अपना पूरा वाक़िआ़ बयान करो कि तुम किस त़रह़ मुसल्मान हुए, तुम्हारी ज़िन्दगी मे येह इन्क़िलाब कैसे आया ?" उस नौ जवान ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे छोड़ कर आ गए थे तो मैं वहीं मौजूद रहा और मेरे दिल में येह ख़्वाहिश मचलने लगी कि आख़िर मैं भी तो देखूं कि वोह मक्कए मुकर्रमा कैसी जगह है जिस की त़रफ़ मुसल्मान सफ़र व हिज्र की सुऊ़बतें बरदाश्त कर के हर साल ह़ज के लिये आते हैं। आख़िर इस में ऐसी क्या अ़जीब बात है। इसी ख़्वाहिश की बिना पर मैं ने भेस बदला और मुसल्मानों जैसी ह़ालत बना ली। मेरी ख़ुश क़िस्मती कि वहां एक क़ाफ़िला पहुंचा जो **"ह़-रमैने शरीफ़ैन"** आ रहा था। मैं ने अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर किया और उस क़ाफ़िले में शामिल हो गया।

जूं जूं हमारा क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा से क़रीब होता जा रहा था मेरे दिल की दुन्या बदलती जा रही

थी। अजीबो ग़रीब कैफ़िय्यत का आलम था फिर जूंही मेरी नज़र "**ख़ानए का'बा**" पर पड़ी तो मेरे दिल से तमाम अदयाने बातिला की महब्बत निकल गई और "**दीने इस्लाम**" की महब्बत मेरे दिल में घर कर गई। मैं ने फ़ौरन "**ईसाइय्यत**" से तौबा कर के मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी इख़्तियार कर ली और मुसल्मान हो गया। उस वक़्त मेरा दिल बहुत ख़ुशी महसूस कर रहा था। क़बूले इस्लाम के बा'द मैं ने ग़ुस्ल किया एहराम बांधा और दुआ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! आज मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से हो जाए।" बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में मेरी दुआ क़बूल हुई और मैं अब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में हाज़िर हूं।"

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत ख़ुश हुए। उसे ख़ूब शफ़क़तों और महब्बतों से नवाज़ा। फिर हमारी तरफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "ऐ हामिद ! देख लो सच्चाई में कितनी ब-र-कत है। इस नौ जवान को हक़ की तलाश थी और येह अपनी तलब में सच्चा था लिहाज़ा इसे हक़ मिल गया या'नी येह इस्लाम की दौलत से मालामाल हो गया।" फिर वोह नौ जवान हमारे साथ ही रहने लगा और बहुत बुलन्द मर्तबा हासिल किया। बिल आख़िर वोह दारे फ़ना से दारे बक़ा की तरफ़ रवाना हो गया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 152 :

टूटी हुई सुराही

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में हाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा थे, आंखों से आंसूओं की बरसात हो रही थी, बड़े दर्द मन्दाना अन्दाज़ में रो रहे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने एक सुराही टूटी हुई थी। मैं ने जा कर सलाम अर्ज़ किया और बैठ गया। मुझे देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रोना बन्द कर दिया। मैं ने अर्ज़ की : "हुज़ूर ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को किस चीज़ ने रुलाया है ? आख़िर आप को ऐसा कौन सा ग़म लाहिक़ हो गया है जिस की वजह से आप इतनी गिर्या व ज़ारी कर रहे हैं ?"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "आज मैं रोज़े से था, मेरी बेटी येह सुराही ले कर आई, इस में पानी भरा हुवा था। उस ने मुझ से कहा : "ऐ मेरे वालिदे गिरामी ! आज गर्मी बहुत ज़ियादा है, मैं येह सुराही ले कर आई हूं ताकि इस में पानी ठन्डा हो जाए और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ठन्डे पानी से रोज़ा इफ़्तार करें।"

येह कहने के बा'द मेरी बेटी ने वोह सुराही ठन्डी जगह रख दी, अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि मेरी आंख लग गई। मैं ने ख़्वाब में एक ह़सीनो जमील औ़रत देखी, उस ने चांदी की क़मीस पहनी हुई थी, उस के पाउं में ऐसी ख़ूब सूरत जूतियां थीं कि मैं ने आज तक ऐसी जूतियां नहीं देखीं और न ही ऐसे ख़ूब सूरत पाउं कभी देखे। वोह मेरे पास इसी दरवाज़े से इस कमरे में आई।

मैं ने उस से कहा : "तू किस के लिये है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं उस के लिये हूं जो ठन्डे पानी की ख़्वाहिश न करे और सुराही का ठन्डा पानी न पिये।" इतना कहने के बा'द उस ने सुराही को अपनी हथेलियों से घुमाना शुरूअ़ किया। मैं ने वोह सुराही उस से ली और ज़मीन पर दे मारी फिर मेरी आंख खुल गई। येह जो तुम सामने टूटी हुई सुराही देख रहे हो येह वोही सुराही है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने कभी भी ठन्डा पानी न पिया। मैं जब भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर जाता तो देखता कि वोह सुराही उसी त़रह़ टूटी हुई पड़ी है और उस पर गर्दो ग़ुबार जम चुकी है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस ख़्वाब के बा'द सुराही को हाथ तक न लगाया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 153 : ख़ून के आंसू

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन हश्शाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मुसिली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के एक मुरीद ने बताया : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मूसिली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने दोनों हाथ दुआ़ के लिये उठाए हुए थे, आंखों से सैले अश्क रवां था, हथेलियां आंसूओं से तर ब तर थीं। मैं आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़रीब हुवा और ग़ौर से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ देखा तो मैं ठिठक कर रह गया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के आंसूओं में ख़ून की आमैज़िश थी जिस की वजह से आंसू सुर्ख़ी माइल हो गए थे।"

मैं येह देख कर बहुत परेशान हुवा और अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सच सच बताएं क्या आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के आंसूओं में ख़ून की आमैज़िश है ?" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अगर तूने मुझे क़सम न दी होती तो मैं हरगिज़ न बताता लेकिन अब

मजबूरन बता रहा हूं कि वाक़ेई मेरी आंखों से आंसूओं के साथ ख़ून भी बहता है इसी वजह से आंसूओं की रंगत तब्दील हो गई है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को किस चीज़ ने रोने पर मजबूर किया है और आख़िर ऐसा कौन सा ग़म आप को लाहिक़ है कि आप ख़ून के आंसू रोते हैं ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं रोता तो इस लिये हूं कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम पर अ़मल न कर सका, उस की इ़बादत में कोताही करता रहा, मैं अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की कमा ह़क़्क़ुहू फ़रमां बरदारी न कर सका और आंसूओं में ख़ून इस लिये आता है कि मुझे येह ख़ौफ़ हमेशा दामन गीर रहता है कि मेरा येह रोना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल भी है या नहीं। मेरे आ'माल मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़बूल भी हुए या नहीं ? बस येही ख़ौफ़ मुझे ख़ून के आंसू रुलाता है।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दोबारा रोने लगे। पूरी ज़िन्दगी आप की येही कैफ़िय्यत रही और इसी ह़ालत में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा।

विसाल के बा'द मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देखा तो अ़र्ज़ की : "مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" आप ने जवाब दिया : "मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" फिर मैं ने पूछा : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आंसूओं का आप को क्या सिला दिया गया ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपना क़ुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमाया और पूछा : "ऐ फ़त्ह़ मूसिली ! तुम दुन्या में आंसू क्यूं बहाया करते थे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस ख़ौफ़ से आंसू बहाता था कि मैं ने तेरी इ़बादत का ह़क़ अदा न किया, तेरी इत़ाअ़त न कर सका, तेरे अह़कामात पर अ़मल पैरा न हो सका।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से पूछा : "तुम्हारे आंसूओं में ख़ून क्यूं आता था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे हर वक़्त येह ख़ौफ़ दामन गीर रहता कि न जाने मेरे आ'माल तेरी बारगाह में मक़्बूल हैं या नहीं ? ऐसा न हो कि मेरे आ'माल अकारत हो गए हों, बस येही ख़ौफ़ मुझे ख़ून के आंसू रुलाता था।"

येह सुन कर मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़त्ह़ मूसिली ! येह तेरा गुमान था कि तेरे आ'माल मक़्बूल हैं या नहीं, मुझे मेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! चालीस साल से तुम्हारे नामए आ'माल में तुम पर निगहबान फ़िरिश्तों (या'नी किरामन कातिबीन) ने एक गुनाह भी नहीं लिखा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 154 : तर्के दुन्या और फ़िक्रे आख़िरत के मु-तअ़ल्लिक़ एक तह़रीर

ह़ज़रते सय्यिदुना शरीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है : "मैं ने दो सो दीनार का एक घर ख़रीदा और एक तह़रीर लिख दी, और आ़दिल लोगों को (इस पर) गवाह बनाया, इस बात की ख़बर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को पहुंची तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ शरीह़ ! मुझे ख़बर पहुंची है कि तूने एक घर ख़रीदा है और एक तह़रीर लिखी है और उस पर आ़दिल लोगों को गवाह भी बनाया है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! येह ख़बर ह़क़ीक़त (पर मब्नी) है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ शरीह़ ! जल्द ही तेरे पास ऐसा शख़्स आएगा जो न तो तेरी तह़रीर देखेगा और न ही तुझ से तेरे घर के बारे में सुवाल करेगा। वोह तुझे इस घर से निकाल कर तेरी क़ब्र के ह़वाले कर देगा। अगर तू मेरे पास आता तो मैं तेरे लिये येह मज़मून लिखता :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

येह वोह घर है जिसे ह़क़ीर बन्दे ने उस शख़्स से ख़रीदा है जिसे कूच करने (के हुक्म) की वजह से परेशान किया गया है और मरने वाला है। इस ने ऐसा घर लिया है जो धोके का घर है और इस पर चार हु़दूद मुश्तमिल हैं।

इन में **पहली ह़द** मुख़्तलिफ़ उमूर की त़रफ़ दा'वत देने वाली चीज़ों पर ख़त्म होती है, **दूसरी ह़द** मसाइब व तकालीफ़ की त़रफ़ दा'वत वाली बातों पर, **तीसरी ह़द** नफ़्सानी ख़्वाहिशात और फ़ुज़ूल कामों पर और **चौथी ह़द** धोकेबाज़ शैत़ान पर ख़त्म होती है और उस में इस घर का दरवाज़ा शुरूअ़ होता है।

इस धोके में पड़े शख़्स ने एक उम्मीद के साथ उस शख़्स से सारा घर ख़रीद लिया जो पैग़ामे अजल की वजह से परेशान है। अब येह क़नाअ़त की इ़ज़्ज़त से निकल कर लालच के घर में दाख़िल हो गया है लेकिन घर ख़रीदने वाले ने कौन सी बहुत बड़ी ह़ाजत पूरी कर ली है जब कि बादशाहों के अज्साम का मालिक, जाबिर लोगों की जानों को सल्ब करने वाला, फ़िरऔ़नों जैसे किसरा, तब्अ़, हु़मैर और वोह जिस ने मह़ल बनाया फिर उसे पुख़्ता मुज़य्यन किया और लोगों को इकठ्ठा कर के उन्हें ग़ुलाम बना लिया और जो अपने बेटे के लिये भी इस मिल्किय्यत का गुमान रखता था और उन की बादशाहत को ख़त्म करने वाला इन सब को मैदाने ह़श्र में जम्अ़ फ़रमाएगा और जब फ़ैसला सुनाने के लिये कुरसी रखी जाएगी उस वक़्त बात़िल काम करने वाले ख़सारे में होंगे और मुनादी इस त़रह़ निदा करेगा : "दो आंखों वाले के लिये ह़क़ कितना वाज़ेह़ और रोशन है। बेशक सफ़र दो दिन का है, नेक आ'माल कर के ज़ादे राह तय्यार कर लो क्यूं कि इन्तिक़ाल और ज़वाल का वक़्त क़रीब आन पहुंचा है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 155 : रिज़्क़ की ब-र-कत से महरूम कौन...... ?

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं, एक मर्तबा मैं अस्कन्दरिया के एक शख़्स से मिला जिसे अस्लम बिन ज़ैद अल जहनी कहा जाता था। वोह मुझ से कहने लगा : "ऐ नौ जवान ! तुम कौन हो ?" मैं ने कहा : "मैं ख़ुरासान का रहने वाला हूं।" उस ने पूछा : "तुझे दुन्या से बे रग़बती पर किस चीज़ ने उभारा ?" मैं ने जवाब दिया : "दुन्यवी ख़्वाहिशात को तर्क करने और इन के तर्क पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाले सवाब की उम्मीद ने।" वोह कहने लगा : "बन्दे की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अज्रो सवाब की उम्मीद उस वक़्त तक पूरी नहीं हो सकती जब तक वोह अपने नफ़्स को सब्र करने का आ़दी न बना ले।" येह सुन कर उस के पास खड़े एक शख़्स ने पूछा : "सब्र क्या है ?" उस ने जवाब दिया : "सब्र की सब से पहली मन्ज़िल येह है कि इन्सान उन बातों को भी (ख़ुशी से) बरदाश्त कर ले जो उस के दिल को अच्छी न लगें।" मैं ने कहा : "अगर वोह ऐसा कर ले तो फिर क्या होगा ?"

उस ने कहा : "जब वोह ना पसन्दीदा बातों को बरदाश्त कर लेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को नूर से भर देगा। फिर मैं ने उस से पूछा : "नूर क्या है ?" उस ने मुझे बताया : "येह उस शख़्स के दिल में मौजूद ऐसा चराग़ होता है जो ह़क़ व बात़िल और मु-तशाबेह में फ़र्क़ करता है। ऐ नौ जवान ! जब तू औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की सोह़बत इख़्तियार करे या सालिह़ीन से गुफ़्त-गू करे तो उन की नाराज़गी से हमेशा बचते रहना क्यूं कि उन की नाराज़गी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और उन की ख़ुशी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी पोशीदा है। ऐ नौ जवान ! मेरी येह बातें याद कर ले, अपने अन्दर बरदाश्त का माद्दा पैदा कर और समझदार हो जा।"

येह नसीह़त आमोज़ बातें सुन कर मेरी आंखों से सैले अश्क रवां हो गया। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत, उस की रिज़ा के ह़ुसूल और दुन्यवी ख़्वाहिशात को तर्क करने की ख़ात़िर अपने वालिदैन और मालो दौलत को छोड़ा है।" उस ने कहा : "बुख़्ल से कोसों दूर भागना।" मैं ने पूछा : "बुख़्ल क्या है ?" उस ने कहा : "दुन्या वालों के नज़दीक तो बुख़्ल येह है कि कोई आदमी अपने माल में कन्जूसी करे जब कि आख़िरत के त़लबगारों के नज़दीक बुख़्ल येह है कि कोई अपने नफ़्स के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कन्जूसी करे। याद रख ! जब इन्सान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर अपने दिल से सख़ावत करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को हिदायत और तक़्वा से भर देता है और उसे सुकून, वक़ार, अच्छा अ़मल और अ़क़्ले सलीम जैसी ने'मतें मिलती हैं। उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और वोह मसरूर व शादां उन दरवाज़ों के खुलने की कैफ़िय्यत को देखता है।"

येह सुन कर उस के रु-फ़क़ा में से एक शख़्स ने कहा : "हुज़ूर ! इस की आतशे इ़श्क़ को मज़ीद भड़काइये। हम देख रहे हैं कि इस नौ जवान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से विलायत की तौफ़ीक़ अ़ता की गई है।"

वोह शख़्स अपने रफ़ीक़ की इस बात से बहुत मु-तअ़ज्जिब हुवा कि "इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की विलायत की तौफ़ीक़ अ़ता की गई है।" फिर मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "ऐ अ़ज़ीज़ ! अ़न्क़रीब तू अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा। जब तुझे येह सआ़दत नसीब हो तो उन के लिये ऐसी ज़मीन की मानिन्द हो जा कि अगर वोह चाहें तो तुझे पाउं के नीचे रौंद डालें। और अगर वोह तुझे मारें, झिड़कें या धुत्कार दें तो तू अपने दिल में सोचना कि तू आया कहां से है ? अगर तू ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नुसरत तेरी मुअय्यद होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे दीन की समझ अ़ता फ़रमाएगा, फिर लोग दिलो जान से तुझे मान लेंगे।

ऐ नौ जवान ! याद रख, जब किसी इन्सान को अच्छे लोग छोड़ दें, परहेज़गार उस की सोह़बत से बचने लगें और नेक लोग उस से नाराज़ हो जाएं तो येह उस के लिये नुक़्सान देह बात है। अब उसे जान लेना चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ है। जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को गुमराही और तारीकी से भर देगा। इस के साथ साथ वोह रिज़्क़ (की बरकत) से मह़रूम हो जाएगा और ख़ानदान वालों की जफ़ा और साह़िबे इक़्तिदार लोगों का बुग़्ज़ उस का मुक़द्दर बन जाएगा। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जहां चाहे उसे हलाक कर दे।"

मैं ने कहा : "एक मर्तबा मैं ने एक नेक शख़्स की हमराही में कूफ़ा से मक्कए मुकर्रमा तक सफ़र किया। जब शाम होती तो वोह दो रक्अ़त नमाज़ अदा करता। फिर आहिस्ता आहिस्ता कलाम करता। मैं देखता कि सरीद से भरा हुवा पियाला और पानी से भरा हुवा एक कूज़ा उस के दाईं जानिब रखा होता। वोह उस खाने में से ख़ुद भी खाता और मुझे भी खिलाता। मेरी येह बात सुन कर वोह शख़्स और उस के रु-फ़क़ा रोने लगे।"

फिर उस ने मुझे बताया : "ऐ मेरे बेटे ! वोह मेरे भाई दावूद थे और उन की रिहाइश बल्ख़ से पीछे एक गाउं में थी। दावूद के वहां सुकूनत इख़्तियार फ़रमाने की वजह से वोह गाउं दूसरी जगहों पर फ़ख़्र करता है। ऐ अ़ज़ीज़ ! उन्हों ने तुझे क्या कहा था, और क्या सिखाया था ?" मैं ने कहा : "उन्हों ने मुझे इस्मे आ'ज़म सिखाया।" उस शख़्स ने पूछा : "वोह क्या है ?" मैं ने कहा : "इस का बोलना मेरे लिये बहुत बड़ा मुआ़-मला है। एक बार मैं ने इस्मे आ'ज़म पढ़ा तो फ़ौरन एक आदमी ज़ाहिर हुवा और मेरा दामन पकड़ कर कहने लगा : "सुवाल कर, अ़ता किया जाएगा।" मुझ पर घबराहट त़ारी हो गई। मेरी येह ह़ालत देख कर वोह बोला : "घबराने की कोई बात नहीं, मैं ख़िज़्र हूं और मेरे भाई दावूद ने तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इस्मे आ'ज़म सिखाया है। इस इस्मे आ'ज़म के ज़रीए़ किसी ऐसे शख़्स के लिये कभी भी बद दुआ़ न करना जिस से तुम्हारा ज़ाती झगड़ा और इख़्तिलाफ़ हो, अगर ऐसा करोगे तो कहीं ऐसा न हो कि तुम उसे दुन्या व आख़िरत की हलाकत में मुब्तला कर दो और फिर तुम भी नुक़्सान उठाओ। बल्कि इस्मे आ'ज़म के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करो कि वोह तुम्हारे दिल को दीने इस्लाम पर साबित रखे। तुम्हारे पहलू को

शुजाअ़त व बहादुरी अ़ता फ़रमाए, तुम्हारी कमज़ोरी को कुव्वत से बदल दे। तुम्हारी वह़शत को उन्सिय्यत से और तुम्हारे ख़ौफ़ को अम्न से बदल दे।"

फिर मुझ से कहा : "ऐ नौ जवान ! नफ़्स की ख़्वाहिशात को तर्क करने की ग़रज़ से दुन्या को छोड़ने वालों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को (अपना) लिबास, उस की मह़ब्बत को अपनी चादर और उस की अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी को अपना शिआ़र बना लिया है। चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ऐसा फ़ज़्लो इन्आ़म फ़रमाया कि ऐसा किसी पर न फ़रमाया।" इतना कहने के बा'द वोह चला गया। वोह शख़्स मेरी इस बात से बहुत मु-तअ़ज्जिब हुवा। फिर कहने लगा : "यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसे हिदायत याफ़्ता लोगों से (दीने इस्लाम की) तब्लीग़ का काम लेता है। ऐ अ़ज़ीज़ ! हम ने तुझे (इन बातों से) नफ़्अ़ पहुंचाया और जो हम ने सीखा था वोह तुझे सिखा दिया। फिर उन में से बा'ज़ ने बा'ज़ से कहा : "ख़ूब सैर हो कर खाने के बा'द रात जाग कर गुज़ारने की त़म्अ़ नहीं की जा सकती। दुन्या की मह़ब्बत के होते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत की त़म्अ़ नहीं की जा सकती, तक़्वा और परेहज़ गारी को तर्क करने के बा वुजूद ह़िक्मत का इल्हाम होना मह़ज़ ख़ाम ख़याली है।

ज़ुल्मतो तारीकी की राहों में गुम होने के बा वुजूद तेरे सब काम सह़ीह़ हो जाएं येह नहीं हो सकता। और जब तुझे माल से मह़ब्बत हो तो फिर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की त़म्अ़ न कर। लोगों पर ज़ुल्मो जफ़ा करने के बा वुजूद तुम्हारे दिल के नर्म होने का गुमान नहीं किया जा सकता। फ़ुज़ूल कलाम करने के बा वुजूद रिक़्क़ते क़ल्बी, मख़्लूक़ पर रह़्म न करने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की मजालिस में न बैठने के बा वुजूद रुश्दो हिदायत की त़म्अ़ मह़ज़ ख़ाम ख़याली है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 156 : येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़क़्ल बिन ज़ियाद औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दौराने वा'ज़ इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन ने'मतों का शुक्र अदा करो जिन की वजह से तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की भड़काई हुई उस आग से दूर कर दिये गए जो दिलों तक चढ़ जाती है। तुम ऐसे घर में हो जिस में थोड़ी ही देर ठहरना है और तुम बहुत ही क़लील अ़र्से के लिये उन लोगों के नाइब बन कर आए हो जिन की उ़म्रें तुम से ज़ियादा थीं, उन के जिस्म तुम से ज़ियादा लम्बे थे, उन्हों ने पहाड़ों को खोद कर फाड़ डाला और चट्टानें तोड़ डालीं। वोह ऐसे जंगजू

और बहादुर थे कि शहरों में पहुंच कर शदीद ह़म्ला करते, उन के अज्साम सुतूनों की मानिन्द थे। उन्हों ने इस फ़ानी दुन्या में बहुत कम वक़्त गुज़ारा। गर्दिशे अय्याम ने उन की त़वील उ़म्रें घटा दीं, उन के निशानात मिटा दिये, उन के घरों को वीरान कर दिया और उन के ज़िक्र को भुला दिया। उन में से कोई भी बाक़ी न रहा, जो लोग बहुत गरजदार आवाज़ में बातें करते थे मरने के बा'द कभी उन की धीमी सी आवाज़ भी सुनाई न दी।

वोह फ़ुज़ूल उम्मीदों में पड़े ऐ़श व इ़श्रत से ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। उन्हों ने लोगों के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल न की और ग़फ़्लत की वादियों में भटक्ते रहे। फिर अचानक रात के वक़्त उन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब नाज़िल हुवा तो उन में से अक्सर अपने घरों में सोए ही रह गए (या'नी मौत के मुंह में उतर गए)। और जो बाक़ी रह गए थे वोह अ़ज़ाब के आसार व निशानात, ज़वाले ने'मत, और तबाह व बरबाद घरों को देखने लगे। इन बातों में उन लोगों के लिये इ़ब्रत व निशानियां हैं जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं।

उन के बा'द तुम्हारी उ़म्रें कम हो गईं हैं। दुन्या फ़ना की त़रफ़ बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है। अब हर त़रफ़ बुराइयों का दौर दौरा है। अ़फ़्वो दर गुज़र पीठ फैर गया, ख़ैर ख़्वाही और नर्मी रुख़्सत हो गई। अब इ़ब्रतनाक होल नाकियां, मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सज़ाएं, फ़ित्ना व फ़साद, लग़्ज़िशों की भरमार और गुज़रे हुए उन लोगों की बुरी बातें बाक़ी रह गईं जिन की वजह से ख़ुश्की और समुन्दर में फ़साद बरपा हुवा। ऐ लोगो ! तुम उन ग़ाफ़िलों की त़रह़ न हो जाना जिन्हें त़वील उ़म्री की झूटी उम्मीदों ने धोके में डाले रखा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह हमें और तुम्हें इत़ाअ़त गुज़ारों और आख़िरत की तय्यारी करने वालों में शामिल फ़रमाए।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 157 : फ़ु-क़रा व मसाकीन का रुत्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बिशार ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی से मरवी है, एक मर्तबा मैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम, अबू यूसुफ़ ग़सूली और अबू अ़ब्दुल्लाह सन्जारी رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی के साथ **अस्कन्दरिया** की त़रफ़ रवाना हुवा। जब हम अरदन की नहर के क़रीब पहुंचे तो आराम की ख़ातिर बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ख़ुश्क रोटियों के चन्द टुकड़े थे उन्हों ने वोह हमारे सामने रख दिये, हम ने वोह खाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया, फिर मैं जल्दी से नहर की जानिब बढ़ा ताकि पीने के लिये पानी लाऊं मगर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم मुझ से पहले नहर में दाख़िल हो गए। पानी उन के घुटनों तक पहुंच गया उन्हों ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर

अपनी हथेलियों से पानी पिया। पानी पीने के बा'द اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कह कर नहर से बाहर तशरीफ़ लाए फिर पाउं फैला कर बैठ गए और फ़रमाया : "ऐ अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! अगर बादशाह और उन के शहज़ादे हमारी ने'मतों और सुकून को जान लें तो वोह हमें तलवारों के साथ मारने लगें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! लोग ने'मतों और राहत व सुकून के ता़लिब तो हैं मगर उन्हों ने सीधे रास्ते को छोड़ दिया है।" मेरी इस बात पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुस्करा दिये।

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बिशार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار मज़ीद फ़रमाते हैं : "एक शाम हम ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के साथ गुज़ारी। हम रोज़े से थे लेकिन इफ़्तारी के लिये हमारे पास कोई चीज़ न थी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जब मुझे ग़म व हुज़्न के आ़लम में देखा तो फ़रमाया : "ऐ इब्ने बिशार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ! देखो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़ु-क़रा व मसाकीन पर ने'मतों और राहतों की कैसी छमाछम बरसात फ़रमाई है कि कल बरोज़े क़ियामत उन से ज़कात और हज व सदक़ा के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल नहीं फ़रमाएगा। बल्कि फ़ु-क़रा व मसाकीन के बारे उन लोगों से सुवाल किया जाएगा, जो दुन्या में अमीर हैं लेकिन आख़िरत में फ़क़ीर होंगे, और जो दुन्या में मुअ़ज़्ज़ज़ हैं मगर आख़िरत में ज़लीलो रुस्वा होंगे। लिहाज़ा तुम ग़म न करो, जिस रिज़्क़ का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़िम्मा लिया है वोह अ़न्क़रीब तुझे मिल कर रहेगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बादशाह और ग़नी तो हम हैं। हम ही तो हैं जिन्हें दुन्या में ही बहुत जल्द राहत व सुरूर मुयस्सर है, जब हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इता़अ़त में हों तो हमें कुछ परवाह नहीं होती कि हम किस हा़ल में सुब्हो शाम कर रहे हैं। हम हर हा़ल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के शुक्र गुज़ार हैं।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नमाज़ के लिये खड़े हो गए। मैं भी अपनी नमाज़ अदा करने के लिये खड़ा हो गया। अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि एक आदमी आठ रोटियां और बहुत सारी खजूरें ले कर हमारे पास आया। उस ने सलाम किया और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, येह कुछ खाना हा़ज़िरे ख़िदमत है, तनावुल फ़रमाइये।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ मग़मूम ! खाना खाओ।"

अभी हम खाना खाने बैठे ही थे कि एक साइल आ गया उस ने कहा : "मुझे कुछ खाना खिलाओ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तीन रोटियां और कुछ खजूरें साइल को दे दीं तीन रोटियां मुझे अ़ता फ़रमाईं और दो ख़ुद तनावुल फ़रमाईं। फिर इर्शाद फ़रमाया : "मुवासात (या'नी ग़म ख़्वारी) मुअमिनीन के अख़्लाक़ में से है।"

इब्ने बिशार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के साथ **तराबल्स** रवाना हुवा। मेरे पास दो रोटियों के इ़लावा और कोई शै न थी। रास्ते में एक साइल ने सुवाल किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझ से फ़रमाया : "जो कुछ तेरे पास है वोह इस साइल को दे दे।" इस मुआ-मले में मैं ने थोड़ी सी सुस्ती की, तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझ से फ़रमाया : "क्या बात है, साइल को रोटी देने में तुम सुस्ती क्यूं कर रहे हो ?" येह सुन कर मैं ने दोनों रोटियां तो साइल

को दे दीं लेकिन मैं परेशान था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "कल तू उस ज़ात से मुलाक़ात करेगा जिस के साथ इस से पहले तू श-रफ़े मुलाक़ात ह़ासिल न कर सका। और तू उन तमाम चीज़ों का अज्र भी पाएगा जिन्हें तू आगे भेजता रहा। और जो चीज़ें तू दुन्या में छोड़ जाएगा वोह तुझे कोई फ़ाएदा न देंगी। लिहाज़ा अपने लिये आगे कुछ मुहय्या कर, तू नहीं जानता कि कब अचानक तुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बुलावा आ जाए।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की इस गुफ़्त-गू ने मुझे रुला दिया। और मेरी नज़रों में दुन्या की क़द्रो क़ीमत बहुत ही कम कर दी। जब उन्हों ने मुझे रोते हुए देखा तो इर्शाद फ़रमाया : "हां इसी त़रह़ ज़िन्दगी बसर करो।"

इब्ने बिशार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि "एक मर्तबा मैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم, अबू यूसुफ़ ग़सूली और अबू अ़ब्दुल्लाह सन्जारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِم के साथ सफ़र पर था, हम एक क़ब्रिस्तान के पास से गुज़रे तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم एक क़ब्र के पास आए, अपना हाथ उस पर रखा और फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए।" फिर दूसरी क़ब्र के पास आए और इसी त़रह़ कहा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सात क़ब्रों के पास जा कर इसी त़रह़ कहा। फिर उन क़ब्रों के दरमियान खड़े हो गए और बा आवाज़े बुलन्द इस त़रह़ निदा की : "ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! ऐ अहले क़ुबूर ! तुम फ़ौत हो गए और हमें पीछे छोड़ आए। हम भी जल्द ही तुम से मिलने वाले हैं।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه रोने लगे और किसी गहरी सोच में गुम हो गए कुछ देर इसी त़रह़ बैठे रहे फिर आंसूओं से तर ब तर चेहरे के साथ हमारी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "ऐ मेरे भाइयो ! आख़िरत की तय्यारी के लिये तुम पर जिद्दो जुहद और जल्दी लाज़िम है, जल्दी करो और आख़िरत की तय्यारी में एक दूसरे पर सब्क़त की कोशिश करो, बेशक तेज़ रफ़्तारी में अपने मद्दे मुक़ाबिल पर वोही सब्क़त ले जाता है जो तेज़ चलता है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 158 : दुन्या मसाइब का घर है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ उ़जली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बनी शैबान के एक शख़्स ने मुझे बताया कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं मैं उस की ह़म्द बयान करता हूं और उसी से मदद मांगता हूं, उस पर ईमान लाता हूं और उसी पर भरोसा करता हूं, मैं गवाही देता हूं कि

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। और इस बात की गवाही देता हूं कि ह़ज़रते **मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें हिदायते कामिल और दीने ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया, ताकि इस के ज़रीए वोह तुम्हारी बीमारियों को दूर फ़रमाए और तुम्हें ग़फ़्लत की नींद से बेदार करे। याद रखो ! तुम मरने वाले हो और तुम्हें मौत के बा'द दोबारा उठाया जाएगा। तुम्हें तुम्हारे आ'माल से आगाह किया जाएगा और उन का बदला दिया जाएगा। लिहाज़ा तुम्हें दुन्या की ज़िन्दगी किसी त़रह़ धोके में न डाले।

येह दुन्या मुसीबतों में घिरा हुवा घर है। और हर शख़्स जानता है कि उस ने फ़ना हो जाना है। येह धोके का घर है। इस में जो कुछ है ज़वाल पज़ीर है। येह कभी एक के पास है तो कभी दूसरे के पास। इस में आने वाला कभी भी इस के शर से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता इस में रहने वाले ख़ुद को ख़ुशह़ाल और मसरूर समझते हैं मगर इस सोच की वजह से वोह मुसीबत और धोके में पड़ जाते हैं। दुन्यवी ख़ुशह़ाली दाइमी नहीं होती। इस के रहने वालों में से हर एक की मौत का वक़्त मुअ़य्यन है।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! याद रखो : इस नैरंगिये दुन्या में तुम जिन गुज़रे हुए लोगों की पैरवी कर रहे हो उन की उ़म्रें तुम्हारी ब निस्बत बहुत ज़ियादा थीं। उन के घर तुम्हारे घरों से ज़ियादा आबाद थे। वोह तुम से ज़ियादा त़ाक़त वर थे। दूर दूर तक उन का रो'ब व दबदबा था, मगर अब उन की आवाज़ें बन्द हो गईं, उन के जिस्म बोसीदा हो गए, घर वीरान और ख़ाली हो गए। उन का नामो निशान तक मिट गया। उन के वोह बुलन्दो बाला मह़ल्लात जिन की बुन्यादें बहुत मज़बूत़ थीं, अब पथ्थरों, सिलों और रैत में तब्दील हो चुके हैं।

अब जो लोग यहां आ कर बसे हैं वोह साबिक़ा लोगों को जानते तक नहीं, इसी त़रह़ साबिक़ा लोगों के लिये येह नए मकीन अज्नबी हैं। वोह अपने क़ुर्बो जवार और घर के क़रीब रहने वालों के साथ ऐसा तअ़ल्लुक़ नहीं रखते जो पड़ोसियों का पड़ोसियों और भाइयों का भाइयों के साथ होना चाहिये। अब उन के दरमियान तअ़ल्लुक़ हो भी कैसे ? जब कि बोसीदगी ने उन्हें ख़ूराक बना कर हलाक कर दिया है।
और उन पर चट्टानों और मिट्टी ने साया किया हुवा है। ज़िन्दगी के बा'द मौत ने उन्हें आ लिया, अपने तईं उ़म्दा और ख़ुशह़ाल ज़िन्दगी गुज़ारने के बा'द अब वोह फ़ना के घाट उतर गए। उन की वजह से उन के दोस्त व अह़बाब मुसीबत में मुब्तला हो गए, उन्हों ने मिट्टी को अपना मस्कन बना लिया और दुन्या से कूच कर गए। वहां क़ब्रों में उन के लिये येह दुन्यवी ने'मतें नहीं हैं। हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ुरआने पाक की येह आयत तिलावत फ़रमाई :

كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ (پ۱۸،المؤمنون:۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हिश्त येह तो एक बात है जो वोह अपने मुंह से कहता है और उन के आगे एक आड़ है उस दिन तक जिस में उठाए जाएंगे।

गोया तुम भी उन्ही की त़रह़ हो गए जिस त़रह़ वोह क़ब्र में तन्हा और बोसीदा हो गए। और तुम्हें भी उस ख़्वाब गाह (या'नी क़ब्र) में रखा जाएगा। तो उस वक़्त तुम्हारी क्या कैफ़िय्यत होगी जब आ'माल इन्तिहा को पहुंच चुके होंगे, क़ब्रों को उलट पलट कर दिया जाएगा, जो कुछ सीनों में छुपा था वोह सामने आ जाएगा। फिर तुम्हें ह़िसाब किताब के लिये मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़े किया जाएगा, जो कि बहुत जलाल वाला है। साबिक़ा गुनाहों के ख़ौफ़ के बाइ़स तुम्हारे दिल थर थर कांप रहे होंगे। फिर तुम्हारे उ़यूब और राज़ ज़ाहिर हो जाएंगे। वहां हर एक अपने किये की जज़ा पाएगा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें अपनी किताब (या'नी कुरआने पाक) पर अ़मल करने वाला, और औलियाए किराम की इत्तिबाअ़ करने वाला बनाए। यहां तक कि हम अपनी मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच जाएं। यक़ीनन हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ता'रीफ़ किया हुवा और बुज़ुर्गी वाला है।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ह़िकायत नम्बर 159 नेक जिन्न

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद क़ु-रशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى कहते हैं, मुझे मेरे वालिद ने बताया कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जुमुआ़ के दिन जब ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाते तो अक्सर येह कहा करते : "ऐ लोगो ! नेकी के कामों को लाज़िम पकड़ो और जिन्न के फ़े'ल को याद करो।"

एक मर्तबा अबुल अश्तर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से कहा : "आओ **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में चलें और उन से उस **जिन्न** के बारे में सुवाल करें जिस के मु-तअ़ल्लिक़ उन्हों ने हुक्म दिया है और जिस का वोह अक्सर तज़्किरा करते रहते हैं। चुनान्चे मैं और अबुल अश्तर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बैतुल माल में थे। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा इस वक़्त मेरे पास आना कितना अ़जीब है ?" हम ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ! आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया था कि "नेकी के कामों को लाज़िम पकड़ो और जिन्न के फ़े'ल को याद करो। ह़ुज़ूर हमें येह बताइये कि वोह जिन्न कौन है ?" आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि वोह जिन्न कौन है ?" हम ने

अ़र्ज़ की : "नहीं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह तुम में था।" हम ने अ़र्ज़ की : "वोह कौन था ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मालिक बिन ख़ुज़ैम हमदानी अपने चन्द दोस्तों के साथ ह़ज के इरादे से रवाना हुवा, दौराने सफ़र जब वोह किसी मक़ाम पर पहुंचा तो उस ने अपने दोस्तों से कहा : यहां ठहर जाओ ! तुम पानी के ह़ुसूल पर क़ादिर हो गए हो। चुनान्चे उन्हों ने वहीं क़ियाम किया और सो गए, रात के आख़िरी पहर जब चांद तुलूअ़ हुवा तो पहाड़ से एक अज़्दहा बड़ी तेज़ी के साथ रेंगता हुवा उन के पास पहुंचा। और अहले क़ाफ़िला के गिर्द चक्कर लगाया, अहले क़ाफ़िला में से एक नौ जवान उस अज़्दहे को देख रहा था। अज़्दहा जब चक्कर लगा कर एक ज़ई़फ़ शख़्स के पास पहुंचा, तो उस नौ जवान को ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि कहीं येह इस बुज़ुर्ग को डस न ले, चुनान्चे उस ने क़रीब ही पड़ा हुवा डन्डा उठाया और उस पर ह़म्ला कर दिया। मगर निशाना ख़त़ा हो गया। वोह बुज़ुर्ग भी जाग गए और ख़ौफ़ज़दा हो कर कहने लगे : "क्या है ? येह अज़्दहा कहां से नुमूदार हो गया ?" फिर उस ने क़ाफ़िले वालों से कहा : सो जाओ ! तुम ने पानी के ह़ुसूल पर क़ुदरत ह़ासिल कर ली है। वोह सो गए और फिर तुलूए आफ़्ताब से पहले उन की आंख न खुल सकी।

तुलूए आफ़्ताब के वक़्त वोह उठ खड़े हुए और उन में से हर शख़्स ने अपनी सुवारी की लगाम पकड़ी और पानी की तलाश में निकल पड़े मगर वोह रास्ता भूल गए थे। जब अज़्दहे ने उन्हें देखा तो पहाड़ पर से बोला : "ऐ लोगो ! तुम्हारे सामने उस वक़्त तक पानी नहीं आ सकता, जब तक तुम आज के दिन इन थके हुए सुवारी के जानवरों की अच्छी त़रह़ देख भाल न कर लो। फिर जब ऐसा कर लो तो देखना कि सामने टीले के पीछे पानी का एक चश्मा है।"

चुनान्चे वोह रुके रहे। फिर मत़्लूबा जगह पहुंचे तो वहां वाक़ेई एक चश्मा था जिस का पानी रुका हुवा था। उन्हों ने ख़ुद भी पानी पिया, अपने जानवरों को भी पिलाया, और क़ाफ़िला दोबारा सूए मन्ज़िल चल दिया। जब वोह एक छोटी सी पहाड़ी के क़रीब पहुंचे तो कहने लगे : "ऐ अबू ह़ुज़ैम ! अगर उसी त़रह़ का पानी यहां भी मिल जाए तो कितनी बड़ी ख़ुश बख़्ती है। फिर वोह पहाड़ी के क़रीब ठहर गए और पानी की तलाश में निकले इस मर्तबा फिर रास्ता भूल गए। जब पहाड़ी पर मौजूद अज़्दहे ने उन्हें देखा तो पुकार कर कहा : "ऐ अहले क़ाफ़िला ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी त़रफ़ से तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए। अब मैं तुम्हें अपनी त़रफ़ से अल वदाअ़ कहता हूं और (आख़िरी) सलाम पेश करता हूं। एह़सान और नेकी का काम करने में किसी को हरगिज़ बे रग़बती नहीं होनी चाहिये, यक़ीनन जो मोह़ताज को मह़रूम रखता है वोह ख़ुद मह़रूम है। मैं वोह अज़्दहा हूं कि भटके हुओं को रास्ता बता कर मुसीबत से नजात दिलाता हूं, इस पर शुक्र अदा करता हूं और यक़ीनन शुक्र अदा करना अच्छी ख़स्लत है। जो नेकी का काम करता है जब तक वोह ज़िन्दा रहे उस की ज़रूरत का सामान ख़त्म नहीं होता, जब कि बुराई का अन्जाम बुराई ही है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 160 : अनमोल नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा ताजी علیہ رحمۃ اللہ الھادی फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी علیہ رحمۃ اللہ القوی को इस त़रह़ फ़रमाते हुए सुना : "ऐ इब्ने आदम ! तेरे लिये दुन्या कुशादा कर दी गई तो तू आख़िरत के अ़मल से ग़ाफ़िल हो गया, तेरी मौत क़रीब आन पहुंची, तुझे अ़मल करने का हुक्म दिया गया । अल्लाह عزّوجلّ का ह़क़ सब से अफ़्ज़ल है वोह उस वक़्त तक तुझ से राज़ी न होगा जब तक तू उन अह़काम को पूरा न करे जो उस ने तुझ पर लाज़िम किये हैं । ऐ इब्ने आदम ! जब तू लोगों को नेकी का काम करता देखे तो ऐसे काम में तू उन पर सब्क़त ले जाने की कोशिश कर और जब तू उन्हें हलाकत व बरबादी के कामों मे देखे, तो उन से और उन के इख़्तियार कर्दा अफ़्आ़ल से कोसों दूर भाग । हम ने ऐसे लोग देखे हैं जिन्हों ने अपनी दुन्या को आ़क़िबत पर तरजीह़ दी पस वोह ज़लीलो ख़्वार हो गए ।

ऐ इब्ने आदम ! तू उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता जब तक तू लोगों की ऐ़ब जूई से बाज़ न आ जाए, पहले तू उन उ़यूब को तलाश कर जो तेरी ज़ात में मौजूद हैं, फिर अपनी ज़ात से इस्लाह़ का अ़मल शुरूअ़ कर, जब तू ऐसा करेगा तो दूसरों की ऐ़ब जूई से बचा रहेगा । और अल्लाह عزّوجلّ के नज़्दीक पसन्दीदा शख़्स वोह है जो इन ख़ुसूसियात का ह़ामिल हो ।

ज़ुल्म और जफ़ा ज़ाहिर हो गए, **उ़-लमा** कम हो गए और सुन्नत को छोड़ दिया गया । मुझे ऐसी बरगुज़ीदा हस्तियों की हम नशीनी का शरफ़ ह़ासिल हुवा है कि जिन की हम नशीनी हर बन्दए मोमिन की आंखों की ठन्डक है । अल्लाह عزّوجلّ की क़सम ! आज कोई भी ऐसा नहीं रहा जिस से हम फ़ैज़ और ब-रकात ह़ासिल कर सकें । बेहतरीन और अच्छे लोग गुज़र गए, दुन्यादार सरकश लोग बाक़ी रह गए ।

ऐ इब्ने आदम ! तू ईमान और ख़ियानत को एक साथ जम्अ़ नहीं कर सकता । ऐ इब्ने आदम ! तू कैसे मोमिने कामिल हो सकता है जब कि तेरा पड़ोसी अम्न में न हो । ऐ इब्ने आदम ! तू कैसे कामिल मुसल्मान हो सकता है जब कि लोग तुझ से सलामत न हों । दुन्या में मोमिन की मिसाल एक अज्नबी की सी है जो दुन्यवी ज़िल्लत से नहीं घबराता । और न ही दुन्यवी इ़ज़्ज़त के ह़ुसूल की ख़ात़िर दुन्यादारों से मुक़ाबला करता है । दुन्यादारों का अन्दाज़े ज़िन्दगी और है, जब कि इस का और । लोग उस की त़रफ़ से राह़त व सुकून में होते हैं । मोमिन की सुब्ह़ो शाम अल्लाह عزّوجلّ के ख़ौफ़ ही में होती है, अगर्चे वोह कितना ही नेक क्यूं न हो । उस मर्दे मुजाहिद की ह़क़ीक़त को सिवाए उस के कोई नहीं जानता इस लिये कि वोह दो ख़ौफ़ों के दरमियान है :

(1)...... उस गुनाह का ख़ौफ़ जो उस से सरज़द हुवा । अब वोह नहीं जानता कि इस गुनाह के बदले अल्लाह عزّوجلّ उस के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाएगा ।

(2)...... अ़न्क़रीब आने वाली मौत का ख़ौफ़ क्यूं कि वोह नहीं जानता कि उसे कौन कौन सी हलाकतें और परेशानियां पहुंचने वाली हैं ।

अल्लाह عزّوجلّ उस बन्दे पर रह़म फ़रमाए जिस ने ग़ौरो फ़िक्र किया, इ़ब्रत ह़ासिल की और मुआ़-मले की गहराई को ग़ौर से देख लिया ।

ऐ लोगो ! सन्जीदगी इख़्तियार कर लो । अब वक़्त आ गया है कि तुम आंखें खोल लो । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या जब इस में रहने वालों के लिये खोली गई तो उस के कुत्ते (ह़िर्स और फ़ितना व फ़साद) भी खोल दिये गए । इस दुन्या के कुत्ते सब से बुरे हैं । दुन्या के ह़ुसूल की ख़ात़िर लोगों ने तो एक दूसरे पर तलवारों से ह़म्ले किये । और बा'ज़ ने बा'ज़ की ह़ुरमत को ह़लाल जाना । हाए अफ़्सोस ! इस फ़साद पर ! येह कितना बड़ा फ़साद है ।

उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में ह़सन की जान है ! इस दुन्या में जिस मोमिन ने भी सुब्ह़ की तो ग़म और परेशानी की ह़ालत में की । पस जल्दी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो जाओ इस लिये कि बन्दए मोमिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किये बिग़ैर राह़त व सुकून की दौलत नसीब नहीं हो सकती ।

यक़ीनन मौत ने दुन्या को रुस्वा कर दिया । मौत ने दुन्या में किसी भी साह़िबे अ़क़्ल के लिये कोई ख़ुशी नहीं छोड़ी । बन्दए मोमिन ने जब दुन्या का क़स्द किया तो उसे मुन्हदिम कर दिया । और इस के ज़रीए अपनी आख़िरत को संवारा, दुन्या की वजह से अपनी आख़िरत को तबाह व बरबाद नहीं किया । जब कि मुनाफ़िक़ ने अपनी ख़्वाहिशात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर तरजीह़ दी और दुन्या को अपना मा'बूद बना लिया ।

ऐ इब्ने आदम ! जितना दुन्यवी रिज़्क़ तेरे नसीब में है वोह तुझे मिल कर रहेगा । मगर आख़िरत के मुआ़-मले में तू नेकियों का मोह़ताज है, तुझ पर लाज़िम है कि तू आख़िरत की तय्यारी कर । अगर तू आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाएगा तो दुन्या ख़ुद तेरे क़दमों में आ जाएगी । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन लोगों पर रह़्म फ़रमाए कि जिन्हें दुन्या मिली लेकिन उन्हों ने येह दुन्यवी मालो दौलत उस के ह़क़दारों (फ़ु-क़रा व मसाकीन) पर ख़र्च कर दिया । फिर येह लोग इस ह़क़ को अदा करने के बा'द हल्के फुल्के हो गए ।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया :" त़लब करने वालों की दो क़िस्में हैं :

(1)...... आख़िरत का त़लबगार, ऐसा शख़्स अपनी त़लब में काम्याब हो जाता है और उस की उख़्रवी ने'मतें ख़त्म नहीं होतीं ।

(2)...... दुन्या का त़लबगार, ऐसा शख़्स अपनी त़लब में बहुत कम काम्याब होता है, और उसे जो दुन्यवी ने'मतें मिलती हैं उन में अक्सर को ज़ाएअ़ कर बैठता है ।"

मैं ने ऐसे लोगों की सोह़बत का शरफ़ ह़ासिल किया है जिन की नज़्रें आख़िरत (की ने'मतों) पर मरकूज़ थीं । जाहिल उन्हें बीमार तसव्वुर करते थे । मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोही सब से ज़ियादा सिह़्ह़त मन्द दिलों के मालिक थे ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जिस ने अपने आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रखा । और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब क़ुरआने मजीद पर अ़मल पैरा हुवा । अगर उस का अ़मल किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुवाफ़िक़ व मुत़ाबिक़ हुवा तो उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की और

अपने इस अ़मल में ज़ियादती का त़लबगार हुवा। और अगर उस का अ़मल किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुनाफ़ी हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी से बचने के लिये क़रीब ही से लौट आया।

दुन्या का ज़वाल बिल्कुल ज़ाहिर है। इस की ने'मतें दाइमी नहीं हैं। न ही इस के मसाइब व आलाम से कोई अम्न में है इस की नई चीज़ पोशीदा हो जाती है। सिह़्ह़त मन्द बीमार हो जाता है, ग़नी फ़क़ीर बन जाता है। अपने रहने वालों को अक्सर अ़ज़ाब से दो चार रखती है और हर ह़ाल में उन्हें खेल तमाशा बनाए रखती है। दुन्या में सिवाए उस के कोई चीज़ तेरे लिये फ़ाएदा मन्द नहीं कि जिसे तू आख़िरत के लिये भेज चुका है। पस तू माल को अपने लिये दुन्या में ज़ख़ीरा न कर और न उस चीज़ में अपने नफ़्स की पैरवी कर जिस के बारे में तू जानता है कि इसे तूने अपने पीछे छोड़ कर चले जाना है। बल्कि आने वाली मशक़्क़तों के लिये ज़ादे राह तय्यार कर ले (या'नी स-दक़ा व ख़ैरात कर ताकि आगे काम आए) और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अक़्दस से बुलावा (या'नी मौत) आने से क़ब्ल इस का एहतिमाम कर ले। कहीं ऐसा न हो कि अचानक मौत के घाट उतर जाए और तेरी ख़्वाहिशात धरी की धरी रह जाएं। फिर उस वक़्त तुझे शरमिन्दगी उठानी पड़े। मगर उस वक़्त की नदामत व शरमिन्दगी किसी काम न आएगी दुन्या को अपने जिस्म की सोह़बत अ़त़ा कर मगर इसे अपने दिल से दूर रख और इस के ग़म में मुब्तला न हो।

दुन्या वालों और उन के उमूर के दरमियान रास्ता ख़ाली छोड़ दे क्यूं कि वोह थोड़ा अ़र्सा ही बाक़ी रहेंगे। मगर ह़क़ीक़त में इस के वबाल को सजाया हुवा पेश किया गया है। लोगों का दुन्या को पसन्द करना तेरे इस को ना पसन्द करने में इज़ाफ़ा करे और लोगों का इस में मुत़्मइन होना तेरे लिये इस में एह़तियात़ करने और इस से मज़ीद दूर भागने में इज़ाफ़ा करे। जिस काम (या'नी इ़बादत) के लिये तुझे पैदा किया गया है उस में ख़ूब मह़ब्बत कर। अपनी मश्ग़ूलिय्यत और फ़राग़त इसी में गुज़ार दे। तूने जो अ़मल भी किया तू उसे देख लेगा और इस के बारे में तुझ से पूछा जाएगा, अब तू सुब्ह़ो शाम मौत का इन्तिज़ार कर।

ऐ लोगो ! तुम ऐसे बुरे और मज़मूम घर में आ गए जिसे आज़माइश के त़ौर पर पैदा किया गया और इस की एक मुक़र्ररा मीआ़द है जब वोह पूरी हो जाए तो (ज़िन्दगी) ख़त्म हो जाती है। येह ऐसा फ़ानी घर है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ के इस की त़रफ़ झुकने और माइल होने से राज़ी और ख़ुश नहीं होता, इस के उ़यूब, इस से बाज़ रहने और इस के इ़लावा में रग़बत रखने के बारे में बहुत सारी आयात और मिसालें बयान की गई हैं, जो इस में रहा मगर इस से नफ़रत की और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क किया तो वोही सआ़दत मन्द रहा। और जो इस में रहा और इस से रग़बत और मह़ब्बत रखी तो ऐसा करने से वोह बद बख़्त हो गया। और अल्लाह तआ़ला की रह़मत से मह़रूम हो गया।

उस का मालो मताअ़ इन्तिहाई क़लील है और इस का फ़ना हो जाना लिख दिया गया है। इस के रहने वाले इसे छोड़ कर उन मनाज़िल की जानिब जाने वाले हैं जो कभी फ़ना न होंगी। ऐ इब्ने आदम ! दुन्या की त़वील उ़म्री तुझे धोके में न रखे।

बेशक आने वाली होलनाकियां और उमूर की सख़्तियां जो कि तुम्हारे सामने हैं उन से आज तक कोई भी ख़लासी नहीं पा सका। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस मुश्किल रास्ते पर ज़रूर चलना है और तमाम उमूर ज़रूर पेश आने वाले हैं। फिर या तो इस के शर से आफ़िय्यत और इस की होलनाकी से नजात मिल जाएगी या फिर हलाकत व बरबादी होगी कि जिस के बा'द ख़ैर और भलाई नहीं है। ऐ इब्ने आदम ! मौत की तय्यारी में जल्दी कर और "कल, कल" की रट न लगा। जो करना है आज ही कर ले। इस लिये कि तू येह नहीं जानता कि कब तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौट कर जाना है।

ऐ इब्ने आदम ! तू हरगिज़ नेकी के किसी काम को भी ह़क़ीर न जान, क्यूं कि जब तू उसे दारे जज़ा में देखेगा तो इस नेकी का वहां मौजूद होना तुझे ख़ुश कर देगा। और बुराई के किसी काम को हरगिज़ ह़क़ीर न जान ! क्यूं कि जब तू उसे देखेगा तो उस का वहां मौजूद होना तुझे ग़मनाक कर देगा। ऐ इब्ने आदम ! ज़मीन को अपने क़दमों तले रौंद डाल क्यूं कि येह तेरी क़ब्र के क़रीब है।

ऐ इब्ने आदम ! जिस वक़्त से तेरी मां ने तुझे जना उस वक़्त से अब तक लगातार तेरी उ़म्र कम होती जा रही है।

ऐ इब्ने आदम ! तेरे लिये एक नामए आ'माल खोल दिया गया है और तेरे ऊपर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये गए हैं। एक तेरी दाईं जानिब जब कि दूसरा बाईं जानिब है। अब कम आ'माल कर ! या ज़ियादा, जब तू मरेगा तो उस नामए आ'माल को लपेट कर तेरे गले में पहना दिया जाएगा।

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۴)

तर- ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा (नामए आ'माल) पढ़, आज तू ख़ुद ही अपना ह़िसाब करने को बहुत है।

ऐ इब्ने आदम ! तू रियाकारी करते हुए कोई नेकी न कर और न ही शर्म की वजह से किसी नेकी को छोड़।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 161 :

रोज़े जज़ा का ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बकरह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, आप फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ! नेकी करें जन्नत पाएं।" फिर उस

ने चन्द अ़-रबी अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा येह है :

मेरी बच्चियों और उन की मां को कपड़े पहनाइये तो हम सारी ज़िन्दगी आप के लिये जन्नत की दुआ़ करेंगे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप (येह नेकी) ज़रूर करेंगे ।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर मैं ऐसा न करूं तो ?" आ'राबी बोला : "ऐ अबू ह़फ़्स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! अगर ऐसा न हुवा तो मैं चला जाऊंगा ।"

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "अगर तू चला गया फिर क्या होगा ?"

वोह कहने लगा : "तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप से मेरे ह़ाल के बारे में ज़रूर सुवाल किया जाएगा । और उस दिन अ़तिय्यात एह़सान और नेकियां होंगी । तो (मह़शर के दिन) खड़े शख़्स से उन के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा । फिर उसे (ह़िसाबो किताब के बा'द) या तो जहन्नम की त़रफ़ भेज दिया जाएगा या जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाई जाएगी ।"

(अश्आ़र की सूरत में उस आ'राबी की येह बात सुन कर) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया, यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक तर हो गई । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ग़ुलाम को हुक्म फ़रमाया : "ऐ ग़ुलाम ! इस शख़्स को मेरी येह क़मीस अ़त़ा कर दो । और येह इस वजह से नहीं कि इस ने अच्छा शे'र कहा है, बल्कि उस दिन (या'नी रोज़े क़ियामत) के लिये ।" इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (इस वक़्त) इस क़मीस के इ़लावा मैं किसी और चीज़ का मालिक नहीं ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 162 : सब्र की तल्क़ीन

मुह़म्मद बिन अ़ली मदाइनी से मन्क़ूल है, मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने इर्शाद फ़रमाया : "यमन के किसी बादशाह का भाई फ़ौत हो गया । तो किसी अ़-रबी शख़्स ने उस की ता'ज़िय्यत करते हुए इस त़रह़ कहा : "याद रख ! मख़्लूक़, ख़ालिके़ ह़क़ीक़ी के लिये है, शुक्र उसी ज़ात का है जो इन्आ़म करने वाली है, मसाइब व आलाम से बचाने पर वोह क़ादिर है । जो होना हो वोह ज़रूर हो कर रहता है । जब (मौत का हुक्म) आ गया तो उसे वापस नहीं किया जा सकता । और न ही फ़ौत होने वाले की वापसी की कोई राह है । तुझे ऐसी चीज़ दी गई है जो अ़न्क़रीब तुझे छोड़ जाएगी या तू ख़ुद ही उसे छोड़ देगा । तो जिस काम को ज़रूर

ब ज़रूर होना था तो उस के होने के बा'द परेशानी किस बात की ? और जिस बात के होने की उम्मीद ही नहीं तो फिर उस की त़म्अ़ क्यूं ? और जिस चीज़ ने अ़न्क़रीब मुन्तक़िल हो जाना है या जिस से तूने मुन्तक़िल होना है तो उस के लिये ह़ीला क्या करना ?

हमारे आबाओ अज्दाद गुज़र गए जिन की हम औलाद हैं। तो जब अस्ल ही ख़त्म हो जाए तो फ़र्अ़ भी बाक़ी नहीं रहती।

लिहाज़ा मसाइब व आलाम के वक़्त सब से अफ़्ज़ल शै "सब्र करना" है। दर अस्ल इस दुन्या के रहने वाले ऐसे मुसाफ़िर हैं जो अपनी सुवारियों को इस दुन्या के इ़लावा किसी और मक़ाम पर ही उतारते हैं। तो ने'मत मिलने पर शुक्र, और तग़य्युराते ज़माना व ह़ालात के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने उस की रिज़ा की ख़ातिर अपना सर तस्लीमे ख़म करना कितनी अच्छी बात है।

जब तू किसी परेशान ह़ाल (बे सब्रे) को देखे तो उस से इ़ब्रत ह़ासिल कर। और जब तू कोई परेशानी देखे तो उसे इस मस्अले के ह़ल के लिये उस की तह तक पहुंचने वाले शख़्स की त़रफ़ लौटा दे। क्यूं कि इस का तुझ से ज़ियादा कौन मुस्तह़िक़ है।

और याद रख ! सब से बड़ी मुसीबत अपने पीछे बुरे जा नशीन छोड़ जाना है। पस तू सुधर जा ! इस लिये कि लौटने का वक़्त क़रीब है।

याद रख ! यक़ीनन तुझ पर इन्आ़मो इक्राम करने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ही तुझे आज़माइश में मुब्तला किया है। उसी अ़ता करने वाले ने तुझ से (अपनी अ़ता कर्दा ने'मत) ले ली है। मगर अक्सर (ने'मतें) तो (तेरे पास) छोड़ दीं। लिहाज़ा अगर तुझे सब्र करना भुला दिया गया है, तो फिर शुक्र करने से तो ग़ाफ़िल न हो। (अगर हो सके तो) इन दोनों में से किसी को न छोड़। और ऐसी ग़फ़्लत से बच जो सल्बे ने'मत और अ-बदी नदामत व शरमिन्दगी का बाइ़स हो। कहीं ऐसा न हो कि आज मिलने वाली छोटी मुसीबत के बजाए कल तुझे बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़े। हम दुन्या में जिस भी मक़्सद के ह़ुसूल की कोशिश करते हैं तो मौत और मसाइब व आलाम हमारे दरमियान आ खड़े होते हैं। हर घूंट और लुक़्मे के साथ फन्दा लगा होता है।

कोई भी ने'मत पहली ने'मत के ख़त्म हुए बिग़ैर नहीं पाई जा सकती। इस दुन्या में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला शख़्स जो दिन भी गुज़ारता है इस के साथ ही वोह अपनी पहली गुज़रने वाली ज़िन्दगी को ख़त्म कर रहा है। उन गुज़श्ता दिनों का नामो निशां बाक़ी नहीं रहता बल्कि ख़त्म हो जाता है। हमारा गुज़रने वाला हर सांस हमें फ़ना की जानिब ले जा रहा है, तो फिर हम बाक़ी रहने की उम्मीद कैसे करें ? येह दिन और रात जिस चीज़ को भी बुलन्दी देते हैं तो आख़िरे कार उसे गिराना शुरूअ़ कर देते हैं। और जिस शै को वोह इकठ्ठा करें आख़िरे कार उसे बिखेर देते हैं। पस तू नेक काम और नेक लोगों को तलाश कर। और याद रख ! भलाई पहुंचाने वाला बन्दा भी भला होता है और शर पहुंचाने वाला शख़्स शरीर ही होता है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 163 : ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का जिन्नात से मुका-लमा

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को येह फ़रमाते हुए सुना : "नौ जवानी के ज़माने में जब कि मेरे दिन बड़े अच्छे गुज़र रहे थे । एक रात ऐसी आई कि मैं ने ख़ुद को ऐसे पहाड़ के दामन में पाया जहां कोई इन्सान न था । आधी रात के वक़्त किसी मुनादी ने मुझे इस त़रह़ पुकारा : "दिल, मह़बूब की यादों से ख़ाली नहीं होते, बल्कि वोह तो मह़बूब के गुम हो जाने के ख़ौफ़ से ही पिघल जाते हैं ।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं बहुत ह़ैरान हुवा और पूछा : येह मुनादी (पुकारने वाला) कोई जिन्न है या इन्सान ? फिर येह आवाज़ सुनाई दी : "मैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने वाला जिन्न हूं । मेरे साथ मेरे और भी दोस्त हैं ।"

मैं ने पूछा : "क्या उन के पास भी ऐसी बातें हैं जैसी तुम्हारे पास हैं ?" उस ने कहा : "हां । बल्कि इस से भी ज़ियादा अच्छी बातें हैं ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि फिर मुझे येह अल्फ़ाज़ सुनाई दिये : "बदन की काहिली और सुस्ती हमेशा सफ़र में रहने से ही दूर होती है ।" मैं ने दिल में कहा : "इन का कलाम कितना अच्छा है ।" फिर तीसरी मर्तबा येह अल्फ़ाज़ सुनाई दिये : "जो तारीकियों से मानूस हो जाए तो फिर उसे किसी क़िस्म की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता ।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं उन की इन बातों की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़ा । (थोड़ी देर बा'द) जब एक बहुत ही प्यारी ख़ुश्बू की वजह से मुझे होश आया, तो मैं ने अपने सीने पर नरगिस का एक फूल पाया । मैं उस की ख़ुश्बू सूंघते ही बिल्कुल ठीक हो गया । मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, मुझे कोई नसीह़त करो । वोह तमाम जिन्न (ब यक ज़बान) बोले : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से मुत्तक़ी लोगों के दिल ही जिला पाते हैं, जिस ने उस की याद के इ़लावा किसी और काम में त़म्अ़ की तो यक़ीनन उस ने ऐसी जगह त़म्अ़ की जिस के वोह क़ाबिल न थी और जिस ने किसी बीमार त़बीब की पैरवी की तो उस की बीमारी हमेशा रहेगी ।"

(इस के बा'द) वोह मुझे वहां छोड़ कर चल दिये । अब भी जब कभी मैं उस वाक़िए को याद करता हूं तो उन के कलाम का असर अपने दिल में मौजूद पाता हूं ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 164 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के औसाफ़े करीमा

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, एक मर्तबा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : ''मेरे सामने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के औसाफ़ बयान करो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की ''क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे इस से मुआफ़ न रखेंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं, बल्कि तुम उन के औसाफ़ बयान करो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फिर अ़र्ज़ की : ''क्या मुझे इस से आ़फ़िय्यत न देंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं, बल्कि तुम्हें उन के औसाफ़ ज़रूर बयान करने होंगे।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ''अच्छा ! अगर आप उन के औसाफ़ सुनना ही चाहते हैं तो सुनिये।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के इ़ल्मो इ़रफ़ान का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में और उस के दीन की ह़िमायत में मज़बूत़ इरादे रखते, फ़ैसला कुन बात करते और इन्तिहाई अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते, उन की ज़ात मम्बए़ इ़ल्मो ह़िक्मत थी, जब कलाम करते तो द-हने मुबारक से ह़िक्मत व दानाई के फूल झड़ते, दुन्या और इस की रंगीनियों से वह़शत खाते, रात के अंधेरों में (इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ) से उन्हें सुरूर ह़ासिल होता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ज़ियादा रोने वाले, दूर अन्देश और ग़मज़दा थे, अपने नफ़्स का मुह़ा-सबा करते, खुरदरा और मोटा लिबास पसन्द फ़रमाते और मोटी मोटी रोटी तनावुल फ़रमाते।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन का रो'ब व दबदबा ऐसा था कि हम में से हर एक उन से कलाम करते हुए डरता था, ह़ालां कि जब हम उन के पास जाते तो वोह ख़ुद मिलने में पहल करते और जब हम सुवाल करते तो जवाब देते, और हमारी दा'वत क़बूल फ़रमाते।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन का रो'ब व दबदबा ऐसा था कि हम उन के इन्तिहाई क़रीब होने के बा वुजूद उन के सामने कलाम की जुरअत न रखते।

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुस्कराते तो दन्दाने मुबारक ऐसे मा'लूम होते जैसे **मोतियों की लड़ी,** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दीनदारों की ता'ज़ीम करते, मिस्कीनों से मह़ब्बत करते, किसी त़ाक़त वर या साह़िबे सरवत को उस की बात़िल आरज़ू में उम्मीद न दिलाते, कोई भी कमज़ोर शख़्स आप की अ़दालत से मायूस न होता बल्कि उसे उम्मीद होती कि मुझे यहां इन्साफ़ ज़रूर मिलेगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने उन्हें देखा कि जब रात अपने पर फैला देती, तो आप अपनी

दाढ़ी मुबारक को पकड़ कर ज़ारो क़ित़ार रोते और ज़ख़्मी शख़्स की त़रह़ तड़पते।

मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह फ़रमाते हुए सुना : "ऐ दुन्या ! क्या तूने मुझ से मुंह मोड़ लिया है या अभी भी तू मुझ पर मुशताक़ है ? ऐ धोकेबाज़ दुन्या ! जा, तू किसी और को धोका दे, मैं तुझे तीन त़लाक़ें दे चुका हूं अब रुजूअ़ हरगिज़ नहीं। तेरी उ़म्र बहुत कम है और तेरी आसाइशें और ने'मतें इन्तिहाई ह़क़ीर हैं, लेकिन तेरे नुक़्सानात बहुत ज़ियादा हैं, हाए ! सफ़रे (आख़िरत) बहुत त़वील है, ज़ादे राह बहुत क़लील और रास्ता इन्तिहाई ख़त़रनाक और पुर पेच है।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की आंखों से सैले अश्क रवां हो गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रीशे मुबारक आंसूओं से तर हो गई और वहां मौजूद लोग भी ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अबुल ह़सन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم पर रह़्म फ़रमाए, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह ऐसे ही थे।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! उन (की जुदाई) का ग़म तुम पर कैसा है ?" अ़र्ज़ की : "उस औ़रत के ग़म की त़रह़ जिस की गोद में उस के बच्चे को ज़ब्ह़ कर दिया गया हो। जिस त़रह़ उस औ़रत के आंसू नहीं थमते और न ही ग़म कम होता है। इसी त़रह़ मेरी भी ऐसी ही ह़ालत है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 165 : क़ुरआनो सुन्नत से ख़लीफ़ए वक़्त को नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़मर औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक रोज़ मैं साह़िल पर था कि ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने मुझे बुलाया, मैं उस के पास गया और सलाम किया उस ने जवाब दिया, मुझे अपने साथ बिठाया फिर कहने लगा : "ऐ औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! आप ने मेरे पास आने में बहुत देर लगाई इस की क्या वजह है ? ह़ालां कि मैं तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इ़ल्मो अ़मल की बातें सीखना चाहता हूं।" मैं ने कहा : ऐ अबू जा'फ़र मन्सूर ! सोच समझ कर बात करो और जो मैं कहूं उस से ग़फ़्लत में न रहो, अबू जा'फ़र ने कहा : "मैं तो ख़ुद आप से कुछ सीखने का मु-तमन्नी हूं फिर भला मैं क्यूंकर आप की बातों की त़रफ़ तवज्जोह न दूंगा ? मैं ने इसी लिये तो आप को बुलवाया है कि मैं आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कुछ सीख सकूं।" मैं ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा मन्सूर ! तुम इ़ल्म की बातें तो सुनते हो

लेकिन उन पर अ़मल नहीं करते।" येह सुन कर रबीअ़ ने मेरी त़रफ़ तलवार बढ़ाई और ग़ुस्से का इज़्हार किया, ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने रबीअ़ को डांटते हुए कहा : "ऐ रबीअ़ ! येह इ़ल्म की मजलिस है, उ़क़ूबत (या'नी सज़ा वग़ैरा) की मजलिस नहीं।"

जब मैं ने ख़लीफ़ा की येह बात सुनी तो मेरी ढारस बंधी फिर मैं ने कहा : "ऐ अबू जा'फ़र मन्सूर ! नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के पास अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से कोई दीनी नसीह़त आए तो बेशक वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की जानिब से उस के लिये ने'मत है, अगर वोह उस नसीह़त को क़बूल करे और शुक्र अदा करे (तो बहुत अच्छी बात है) वरना वोह नसीह़त अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की जानिब से उस बन्दे के ख़िलाफ़ ह़ुज्जत होगी, और उस शख़्स के गुनाहों में इज़ाफ़ा होगा और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नाराज़गी उस पर ज़ियादा होगी।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة أولی الأمر، فصل فی نصیحة الولاة، الحدیث:۷٤۱۰، ج٦،ص۲۹)

ऐ मन्सूर ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़िय्या बिन बिशर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो ह़ाकिम इस ह़ाल में रात गुज़ारे कि अपनी रिआ़या से बे ख़बर हो तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة أولی الأمر، فصل فی نصیحة الولاة، الحدیث ۷٤۱۱،ج٦،ص ۳۰)

ऐ ख़लीफ़ा ! लोगों के दिल इस लिये तेरे बारे में नर्म हैं कि तू अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्रबा में से है, इसी क़राबत दारी की वजह से लोगों ने तुझे अपना ह़ाकिम मान लिया, हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों पर बहुत रह़्मो करम फ़रमाते, किसी के लिये अपने दरवाज़े बन्द न फ़रमाते और किसी को मुलाक़ात से न रोकते, सब से मुश्फ़िक़ाना रवय्या रखते। जब लोगों को कोई ख़ुशी पहुंचती तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी ख़ुश होते और अगर उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचती तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم परेशान हो जाते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हर मुआ़-मले में अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते।

ऐ ख़लीफ़ा मन्सूर ! तुम्हें बहुत सारे लोगों की ज़िम्मादारी मिली है तुम इन पर ह़ाकिम हो। तुम्हें तो सब की फ़िक्र होनी चाहिये, लेकिन मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है तुम सिर्फ़ अपनी ही भलाई की फ़िक्र में हो, तुम पर तो लाज़िम है कि लोगों में अ़दलो इन्साफ़ क़ाइम करो, ज़रा सोचो तो सही कि उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब लोग तुम्हारे बारे में ज़ुल्मो ज़ियादती की शिकायत करेंगे ?

ऐ ख़लीफ़ा मन्सूर ! ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि एक आ'राबी को ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथों छड़ी से बिला क़स्द ख़राश आ गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस आ'राबी को बुलाया और फ़रमाया : "मुझ से बदला ले लो, उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! मैं ने आप को मुआ़फ़ किया, ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे क़त्ल भी कर दें तो मैं आप

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बदला नहीं लूंगा।" येह सुन कर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के लिये दुआए ख़ैर फ़रमाई।

(المستدرك، كتاب الرقاق، باب دعاالنبى ﷺ اعرابيا الى القصاص من نفسه، الحديث ٨٠١٣، ج٥، ص ٤٧١)

ऐ ख़लीफ़ा मन्सूर! नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी छोड़ दो, अपने नफ़्स को राज़ी करने के बजाए ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के तलबगार बनो, और उस जन्नत की तरफ़ रग़बत करो जिस की चौड़ाई आस्मानों व ज़मीन से ज़ियादा है, और जिस जन्नत के बारे में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "(जन्नत में) तुम में से किसी का एक कमान पर क़ब्ज़ा दुन्या और मा फ़ीहा से बेहतर है।" (صحيح البخارى، كتاب الجهاد، باب الحور العين وصفتهن، الحديث ٢٧٩٦، ص ٢٢٥، لقيد:بدله:لقاب)

ऐ मन्सूर! बादशाही अगर हमेशा रहने वाली शै होती तो तुझे हरगिज़ न मिलती, जिस तरह येह तुम से पहलों की पास न रही इसी तरह तुम्हारे पास भी न रहेगी, तुम्हारे बा'द किसी और को, फिर किसी और को, और इसी तरह येह सिल्सिला चलता रहेगा।

ऐ ख़लीफ़ा! क्या तुझे मा'लूम है कि तुम्हारे दादा हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस आयत की क्या तशरीह फ़रमाई:

مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰهَا ۚ (پ١٥، الكهف:٤٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान: इस नविश्ता को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो।

सुनो! उन्हों ने फ़रमाया: "इस आयत में सग़ीरा ख़ता से मुराद **तबस्सुम** और कबीरा ख़ता से मुराद **ज़हक** (या'नी हंसना) है, अब ज़रा सोचो कि जो आ'माल हाथों और ज़बान से सरज़द होते हैं तो उन का क्या हाल होगा।"

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमान है: "अगर दरियाए फ़ुरात के किनारे एक बकरी का बच्चा भी मर जाए तो मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं मुझ से इस के बारे में (बरोज़े क़ियामत) सुवाल न कर लिया जाए।"

ऐ मन्सूर! तुम्हारे दौरे ख़िलाफ़त में तो कितने लोग ज़ुल्मो ज़ियादती के शिकार हुए हैं तुम बरोज़े क़ियामत क्या जवाब दोगे?

ऐ ख़लीफ़ा! तुम बहुत बड़ी आज़माइश में मुब्तला कर दिये गए हो, येह ज़िम्मादारी जो तुझे सोंपी गई है अगर आस्मानों और ज़मीन को सोंपी जाती तो वोह इसे लेने से डरते और इन्कार कर देते, मरवी है कि "अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक अन्सारी को सदक़ा के माल पर आमिल मुक़र्रर किया, कुछ दिनों बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मा'लूम हुवा कि वोह अन्सारी शख़्स आमिल बनने के लिये तय्यार नहीं। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे बुलाया और फ़रमाया: "तुझे अपनी ज़िम्मादारी पूरी करने से किस बात ने रोका? तुम्हें मा'लूम नहीं कि तुम्हारी इस ज़िम्मादारी का सवाब ऐसा है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करना, इस के बा वुजूद तुम येह ज़िम्मादारी क़बूल नहीं कर रहे हो, आख़िर क्या वजह है?" उस अन्सारी ने अर्ज़ की: "ऐ अमीरुल मुअमिनीन

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! मुझे येह ख़बर पहुंची है कि रसूले अक्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स लोगों का ह़ाकिम बना कल बरोजे़ क़ियामत उसे दोज़ख़ के पुल पर खड़ा किया जाएगा उस के हाथ उस की गरदन से बंधे होंगे और उस वक़्त उस के जिस्म के तमाम आ'ज़ा जुदा जुदा हो जाएंगे, फिर दोबारा उसे सह़ीह़ व सालिम खड़ा किया जाएगा, फिर उस से ह़िसाब लिया जाएगा, अगर वोह नेक हुवा तो अपनी नेकियों की बदौलत नजात पाएगा, अगर गुनाहगार हुवा तो इस की वजह से जहन्नम की आग में गिर जाएगा।"

उस अन्सारी से येह ह़दीस सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "तुम ने येह ह़दीस किस से सुनी ?" अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से सुनी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन दोनों सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के पास एक क़ासिद भेज कर तस्दीक़ करवाई तो उन दोनों ह़ज़रात ने फ़रमाया : "वाके़ई हम ने येह ह़दीसे पाक सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है।"

जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने येह सुना तो फ़रमाया : "हाए उ़मर ! अब कौन ह़ाकिम बनेगा, ज़िम्मादारियां अब कौन क़बूल करेगा ?" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "वोही क़बूल करेगा जिस का चेहरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन से चिपका देगा।" (شعب الایمان للبیھقی، باب فی طاعۃ أولی الأمر، فصل فی نصیحۃ الولاۃ، الحدیث۷٤۱۵/۷٤۱٦،ج٦،ص۳۱تا۳۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़मर औज़ाई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "मेरी येह बातें सुन कर मन्सूर ने रुमाल मंगवाया और अपना चेहरा उस में छुपा कर ज़ारो क़ित़ार रोने लगा, उस की ह़ालत ऐसी थी कि उस ने हमें भी रुला दिया।"

ऐ ख़लीफ़ा मन्सूर ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़ाकिम वोही शख़्स बन सकता है जो मज़बूत़ अ़क़्ल वाला, साह़िबे राय, शर्मो ह़या का पैकर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में किसी मलामत गो की मलामत से न डरता हो।

फिर फ़रमाया : "हुक्मरान चार त़रह़ के होते हैं :

(1)...... वोह ह़ाकिम जो ख़ुद भी गुनाहों से बचे और अपने उ़म्माल (या'नी गवर्नरों) को भी गुनाहों से बचाए, ऐसा ह़ाकिम उस मुजाहिद की त़रह़ है जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करे।

(2)...... वोह ह़ाकिम जो ख़ुद तो गुनाहों से दूर रहता हो लेकिन अपने उ़म्माल को बुराई से रोकने में सुस्ती से काम ले और उन्हें गुनाहों से न रोके, तो ऐसा ह़ाकिम हलाकत के बिल्कुल क़रीब है, हां अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो वोह हलाकत व बरबादी से बच सकता है।

(3)...... वोह ह़ाकिम जो अपने उ़म्माल को तो गुनाहों से बाज़ रखे लेकिन ख़ुद मुर्तकिबे मआ़सी हो तो वोह "**ह़-त़मा**" ह़ाकिम की त़रह़ है, जिस के बारे में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से ज़ियादा बुरा ह़ाकिम "**ह़-त़मा**" है।

(या'नी येह ह़ाकिम दूसरों को तो गुनाहों से बचाता रहा लेकिन खु़द गुनाहों में मुन्हमिक रहा और हलाक हो गया।)

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة أولی الأمر، فصل فی نصیحة الولاة، الحدیث۷۴۱۷/۷۴۱۸/۷۴۱۹، ج۶، ص۳۲ تا ۳۳)

(صحیح مسلم، کتاب الامارة، باب فضیلة الأمیر العادل وعقوبة الجائر......الخ، الحدیث ۱۸۳۰، ص۱۰۰۶)

(4)...... वोह ह़ाकिम जो खु़द भी गुनाह करे और उस के उ़म्माल भी गुनाह करें तो येह ह़ाकिम और उ़म्माल सब हलाक होने वाले हैं।"

ऐ अबू जा'फ़र ! मुझे येह ख़बर पहुंची है कि, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस वक़्त आया जब अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ने (फ़िरिश्तों) को हुक्म दिया कि, क़ियामत तक जहन्नम की आग भड़काते रहो।

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे सामने दोज़ख़ के कुछ अह़वाल बयान करो, अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इब्तिदाअन दोज़ख़ की आग भड़काने का हुक्म दिया चुनान्चे वोह एक हज़ार साल तक जलती रही यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दोबारा भड़काया गया तो ज़र्द हो गई, फिर एक हज़ार साल तक भड़काया गया तो सियाह हो गई, और अब वोह सियाह, सख़्त अंधेरे वाली है, उस के शो'लों और अंगारों में रोशनी नहीं, उस पाक परवर्द गार عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा अगर जहन्नमियों के लिबास का एक कपड़ा भी ज़मीन वालों पर ज़ाहिर कर दिया जाए तो रूए ज़मीन के तमाम लोग हलाक हो जाएं, अगर जहन्नम के पानी का एक क़त़्रा भी ज़मीन के पानी में डाल दिया जाए तो सारा पानी कड़वा हो जाए और जो भी उसे चखे वोह हलाक हो जाए, और जहन्नम की वोह ज़न्जीरें जिन का तज़्किरा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने फ़रमाया है, अगर उन में से एक ज़राअ़ के बराबर भी ज़मीन के तमाम पहाड़ों पर डाल दी जाए तो तमाम पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाए, और अगर जहन्नमियों में से कोई शख़्स जहन्नम से बाहर आ जाए तो उस की बदबू और जले हुए जिस्म को देख कर तमाम लोग हलाक हो जाएं।"

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर रोने लगे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को रोता देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام भी रोने लगे और फिर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े आप के अगलों, पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं, फिर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस क़दर रो रहे हैं ? येह सुन कर रसूलों के सालार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं अपने रब عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?

फ़िक्रे उम्मत में रातों को रोते रहे — आ़सियों के गुनाहों को धोते रहे
तुम पे क़ुरबान जाऊं मेरे मह जबीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

ऐ जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ! तुम क्यूं रो रहे हो ? ह़ालां कि तुम तो रूहु़ल अमीन हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से वह़्य पर अमीन हो ।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे इस ख़ौफ़ ने रुलाया कि कहीं मैं भी हारूत और मारूत (येह दो फ़िरिश्तों के नाम हैं) की त़रह़ आज़माइश में मुब्तला न हो जाऊं बस इसी ख़ौफ़ ने मुझे इस मर्तबे पर ए'तिमाद करने से रोक दिया जो मर्तबा मेरा बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में है, कहीं ऐसा न हो कि मैं भी क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूर हो जाऊं ।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة أولی الأمر، فصل فی نصیحة الولاة، الحدیث ٧٤٢٠، ج٦، ص٣٣تا٣٤)

ऐ अबू जा'फ़र मन्सूर ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ दुआ़ की : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ जब मेरे पास दो शख़्स फ़ैसला करवाने आएं और मेरा दिल उन में से किसी एक की जानिब माइल हो जाए तो मुझे थोड़ी सी भी मोहलत न देना ।"

अल्लाह इस से पहले ईमां पे मौत दे दे
नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

ऐ अबू जा'फ़र मन्सूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हु़जूर ह़िसाबो किताब के लिये खड़ा होना बहुत शदीद है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा मुकर्रम शै तक़्वा व परहेज़ गारी है, जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी के ज़रीए इ़ज़्ज़त का त़लबगार हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इ़ज़्ज़त व बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है, और जो उस की ना फ़रमानी के ज़रीए इ़ज़्ज़त का त़लबगार हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लीलो ख़्वार कर देता है ।"

ऐ ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ! येह मेरी त़रफ़ से कुछ नसीह़त आमोज़ कलिमात थे इन्हें क़बूल कर लो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए और सलामती अ़त़ा फ़रमाए, इतना कहने के बा'द मैं वापस जाने लगा तो ख़लीफ़ा ने कहा : "हु़जूर कहां जा रहे हैं ?" मैं ने कहा : "मैं अमीर की इजाज़त से अपने शहर और अहलो इ़याल की त़रफ़ जा रहा हूं क्या तुम मुझे जाने की इजाज़त देते हो ?"

ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने कहा : "जाइये ख़ुशी से जाइये और मैं आप का शुक्र गुज़ार हूं कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझे नसीह़त फ़रमाई, मैं इन बातों पर अ़मल करने की कोशिश करूंगा । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही भलाई की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है और वोही मददगार है, मैं उसी से मदद त़लब करता, उसी पर भरोसा करता हूं, वोही मेरा निगहबान और कारसाज़ है, ऐ अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़मर औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ! आप मुझे न भूलना और इसी त़रह़ नसीह़तें वक़्तन फ़ वक़्तन करते रहना اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मैं आप की बातों पर ज़रूर अ़मल करूंगा ।" मैं ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा ! اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मैं भी तुम्हें ऐसी बातें बताता रहूंगा ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मा'सब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जाने लगे तो ख़लीफ़ा मन्सूर ने तह़ाइफ़ और रक़म वग़ैरा भिजवाई आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तह़ाइफ़ व हदाया लेने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया : "मुझे इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं क्यूं कि मैं अपनी दीनी नसीह़तों को दुन्यवी ह़क़ीर माल के बदले फ़रोख़्त नहीं करना चाहता, मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाला अज्र ही काफ़ी है।"

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 166 : अ़ज़ीम लोगों की अ़ज़ीम सोच

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि "यज़ीद बिन मुआ़विया ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पैग़ाम भेजा "कि वोह अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ मुझ से कर दें।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इन्कार फ़रमा दिया। फिर एक ग़रीब शख़्स ने निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़बूल फ़रमा लिया और अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ उस ग़रीब शख़्स से कर दिया।

लोगों में येह बात मशहूर हो गई कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी साह़िब ज़ादी के लिये ह़ाकिमे वक़्त का रिश्ता ठुकरा दिया और एक ग़रीब शख़्स से अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ कर दिया। जब लोगों ने इस की वजह पूछी, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं ने अपनी बेटी की भलाई चाहते हुए येह फ़ैसला किया है (या'नी मेरे इस अ़मल में उसी का फ़ाएदा है) तुम्हारा क्या ख़याल है कि जब हर वक़्त मेरी बेटी के सर पर एक बे ह़या ज़ालिम शख़्स खड़ा रहता, और वोह ऐसे मह़ल्लात में होती जिन की चकाचौंद रोशनी आंखों को ख़ीरा कर दे तो बताओ क्या उस वक़्त मेरी बेटी का दीन सलामत रहता।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 167 : कहां है वोह मर्दे सालेह़ ?

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक वली ने गोशा नशीनी इख़्तियार कर रखी थी, लोग उस की ज़ियारत व मुलाक़ात के लिये जाते तो वोह उन्हें वा'ज़ो नसीह़त करता, जब उस मह़फ़िल से लोग वापस आते तो इल्मो अ़मल का ख़ज़ाना ले कर आते, एक दफ़्अ़ा लोग उस की मह़फ़िल में जम्अ़ थे उस ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! हम ने अपने घरों और अहलो इ़याल को इस लिये छोड़ दिया कि इन में रह कर कहीं हम मा'सिय्यत में मुब्तला न हो जाएं, लेकिन मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं हमें ऐसी मुसीबत लाह़िक़ न हो जाए जो इस मुसीबत से बुरी हो जो अहले सरवत और मालदारों को लाह़िक़ होती है, कहीं ऐसा न हो कि हम में से कोई इस बात को पसन्द करे कि मेरी दीनदारी की वजह से लोग मेरी ह़ाजात को पूरा करें, और जब मैं कोई चीज़ ख़रीदूं तो भी लोग मेरी दीनदारी की वजह से रिआ़यत से काम लें, जब मैं लोगों से मिलूं तो मेरी ता'ज़ीम की जाए लोग मेरा अदब बजा लाएं।

ऐ लोगो ! येह तमाम उमूर बहुत तबाह कुन हैं लिहाज़ा इन से हमेशा बचना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के उस वली का येह नसीह़त आमोज़ कलाम लोगों में फैल गया ह़त्ता कि बादशाहे वक़्त को भी उस की नसीह़त आमोज़ बातें पहुंच गईं, बादशाह उस वलिय्युल्लाह की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करने के लिये ह़ाज़िर हुवा, जब वहां पहुंचा तो लोगों ने कहा : "ऐ मर्दे सालेह़ ! देखो बादशाह तुम से मुलाक़ात करने आया है।" उस ने कहा : "बादशाह मुझ से क्यूं मिलना चाहता है ?" लोगों ने कहा : येह आप की नसीह़त आमोज़ बातें सुनने आया है, उस शख़्स ने येह सुना तो कहा : "क्या खाने की कोई शै है ?" एक शख़्स ने कहा : जी हां ! मेरे पास कुछ खजूरें हैं आप इन से रोज़ा इफ़्तार कर लेना, येह कह कर उस ने खजूरें उस मर्दे सालेह़ के ह़वाले कर दीं उस ने फ़ौरन खजूरें खाना शुरूअ़ कर दीं ह़ालां कि वोह सारा साल रोज़े रखता था, जब बादशाह ने येह ह़ालत देखी तो मु-तअ़ज्जिब हो कर लोगों से पूछा : "वोह नेक मर्द कहां है जिस की ख़ात़िर मैं यहां आया हूं, क्या येह वोही शख़्स है ?" लोगों ने कहा : "जी हां ! येह वोही मर्दे सालेह़ है जिस की नसीह़त आमोज़ बातें मशहूर हैं।" येह सुन कर बादशाह ने कहा : "मुझे तो इस में कोई भलाई नज़र नहीं आती।" येह कह कर बादशाह वहां से चला गया।

जब बादशाह चला गया तो नेक शख़्स ने कहा : शुक्र है उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का जिस ने मुझ से बादशाह को दूर कर दिया येह बहुत अच्छा हुवा कि बादशाह मुझ से मु-तअस्सिर न हुवा बल्कि उस ने मुझे बुरा भला कहा। (या'नी इस त़रह़ मैं हुब्बे जाह और रियाकारी से बच गया)।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 168 : फ़क़ीर की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़र्बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ के दिन मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के पीछे नमाज़ अदा की इतने में एक परागन्दा ह़ाल शख़्स खड़ा हुवा और कहने लगा : "ऐ लोगो ! डरो कहीं मैं अपनी बात में सच्चा न हो जाऊं, मजबूरी के वक़्त इख़्तियार नहीं, जब कोई चीज़ मौजूद न हो तो सुकून नहीं, कुछ मौजूद हो तो सुवाल करना जाइज़ नहीं, ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे मेरी मदद करो ।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने उस फ़क़ीर को एक सिक्का दिया जब सिक्का ले कर वोह जाने लगा तो मैं उस के पास गया और कहा : "तुम येह सिक्का मुझे दे दो और एक दिरहम मुझ से ले लो ।" उस ने इन्कार कर दिया, मैं ने कहा : "दो दिरहम ले लो ।" उस ने फिर इन्कार किया, मैं ने कहा : "दस दिरहम ले लो और येह एक सिक्का मुझे दे दो ।" येह सुन कर उस फ़क़ीर ने कहा : "ऐ नौ जवान ! आख़िर इस सिक्के में ऐसी क्या बात है कि तुम इस के बदले दस दिरहम देने को तय्यार हो गए हो ?" मैं ने कहा : "जिस के हाथों तुम्हें येह सिक्का मिला है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नेक बन्दा है ।" (यक़ीनन उस की दी हुई चीज़ भी ब-र-कत वाली होगी)

फ़क़ीर ने कहा : "तब तो मुझे इस में ज़ियादा रग़बत होनी चाहिये एक वलिय्युल्लाह के हाथ से दी हुई चीज़ मैं किसी क़ीमत पर तुम्हें नहीं दूंगा, मैं इसे अपनी जान पर ख़र्च करूंगा ताकि मेरी तंगदस्ती दूर हो और मेरी ह़ाजात पूरी हो जाएं ।" मैं ने कहा : "देखो येह सआ़दत किसी किसी को मिलती है । अच्छा तुम मेरे लिये दुआ़ करो ।" फ़क़ीर ने दुआ़ देते हुए कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल को ज़िन्दा रखे, और तुझे उन लोगों में से बनाए जिन्हों ने सब कुछ दे कर (अ-बदी) ज़िन्दगी (की ने'मतों) को ख़रीद लिया और किसी भी क़ीमत पर उख़्रवी ने'मतों का सौदा न किया ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 169 : एक सर्द रात

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हां चन्द मेहमान आए, सख़्त सर्दी का मौसिम था, जब रात हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मेहमानों के लिये सादा सा खाना भिजवाया और सर्दी से बचाओ के लिये बिस्तर वग़ैरा न भिजवाए, मेहमानों में से किसी ने कहा : "अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इतनी सख़्त सर्द रात में सिर्फ़

सादा सा खाना भिजवाया और बिस्तर वग़ैरा नहीं भिजवाए, मैं इस की वजह ज़रूर मा'लूम करूंगा।'' दूसरे ने कहा : ''इस मुआ़-मले को छोड़, लेकिन वोह शख़्स न माना और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर की जानिब चल दिया, वहां जा कर उसे मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास इतनी सर्द रात में भी सिर्फ़ इतना लिबास था जिस से सित्र पोशी हो सके इस के इ़लावा कोई लिह़ाफ़ वग़ैरा न था।

उस मेहमान ने कहा : ''ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! क्या बात है कि तुम ने भी इस त़रह़ बिग़ैर लिह़ाफ़ के रात गुज़ारी है जिस त़रह़ हम ने।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक हमारे लिये आख़िरत में एक घर है जिस की त़रफ़ हमें मुन्तक़िल हो जाना है, हम ने तमाम लिह़ाफ़ और बिस्तर वग़ैरा उस घर की त़रफ़ भेज दिये हैं (या'नी तमाम मालो अस्बाब राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर के आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लिया है) अगर मेरे पास कोई बिस्तर वग़ैरा होता तो मैं ज़रूर अपने मेहमानों की त़रफ़ भेजता और सुनो ! हमारे सामने एक दुश्वार गुज़ार घाटी है जिसे कमज़ोर शख़्स, ज़ियादा वज़्न वाले की निस्बत जल्दी पार कर लेगा, ऐ शख़्स ! जो बातें मैं ने कीं क्या तुझे वोह समझ आ गईं हैं ?'' उस ने कहा : ''जी हां।'' (या'नी मैं ख़ूब समझ चुका हूं।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 170 : दर्से इ़रफ़ां

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना : ''एक मर्तबा हमारा क़ाफ़िला मुल्के शाम के शहरों में सफ़र पर था, हम रास्ते से हट कर एक पहाड़ी अ़लाक़े की त़रफ़ जा निकले, हमारे रु-फ़क़ा में से एक शख़्स ने कहा : ''हम रास्ते से भटक चुके हैं और पहाड़ी अ़लाक़े में आ गए हैं। पहाड़ी अ़लाक़ों, सह़राओं और जंगलों वग़ैरा में बा'ज़ नेक लोग दुन्या से अलग थलग रह कर अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं, आओ ! हम भी इन पहाड़ों में किसी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दे को तलाश करें और उस से इक्तिसाबे फ़ैज़ करें। अगर यहां किसी वादी में किसी इ़बादत गुज़ार शख़्स से हमारी मुलाक़ात हो गई तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें उन की सोह़बत से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। अगर उन्हों ने हम से गुफ़्त-गू की तो उन की ह़िक्मत आमेज़ बातों से हमें बहुत फ़ाएदा होगा।''

चुनान्चे हम सब क़ाफ़िले वाले किसी आ़बिद की तलाश में उस वादी में घूमने लगे, एक जगह इन्तिहाई नूरानी चेहरे वाला एक शख़्स नज़र आया, जब हम उस के क़रीब पहुंचे तो देखा कि वोह ज़ारो क़ित़ार रो रहा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उस बुज़ुर्ग से पूछा : "ऐ नेक इन्सान ! तुम क्यूं रो रहे हो, तुम्हें किस चीज़ के ग़म ने रुलाया ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह बात सुन कर उस आ़बिद ने जवाब दिया : "मैं क्यूं न रोऊं, हमारी उख़्रवी मन्ज़िल के रास्ते बहुत दुश्वार गुज़ार हैं और उन रास्तों पर चलने वालों की ता'दाद बहुत कम रह गई है, नेक आ'माल छोड़ दिये गए हैं, नेकियों की त़रफ़ रग़बत करने वाले लोग बहुत कम हैं। लोग ख़ुद ह़क़ बात नहीं करते लेकिन दूसरों को ह़क़ गोई की तल्क़ीन करते हैं। क़ौल व फ़े'ल में तज़ाद का येह आ़लम है कि हर शख़्स एक दूसरे को नेक आ'माल की तरग़ीब दिलाता हुवा नज़र आता है लेकिन ख़ुद अ़मल से दूर रहता है। लोगों ने नर्मी और रुख़्सत वाला रास्ता इख़्तियार किया हुवा है और अक्सर बातों में किसी न किसी त़रह़ की तावील निकाल कर नेक आ'माल में सुस्ती करते हैं। आजकल लोगों ने नेक लोगों की पैरवी छोड़ कर ना फ़रमानों और दुन्यादारों के मज़्मूम अफ़्आ़ल की इत्तिबाअ़ शुरूअ़ कर दी है।"

फिर उस आ़बिद ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहने लगा : " न जाने क्यूं लोगों के दिल इस फ़ानी दुन्या की ख़ुशियों से तो मसरूर व शादां होते हैं लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत से दूर हैं। उस की सच्ची मह़ब्बत इन के दिलों में घर क्यूं नहीं करती, ज़मीन व आस्मान के मालिक عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत से उन्हें आशनाई क्यूं नहीं होती, येह उस की मह़ब्बत में कामिल क्यूं नहीं ?"

फिर वोह आ़बिद चीख़ने लगा और येह कहता हुवा वहां से चल पड़ा : "हाए हसरत व अफ़्सोस ! उ़-लमाए सूअ की फ़ित्ना अंगेज़ियों पर ! हाए शिद्दते ग़म ! उन लोगों पर जो (गुनाहों के बा वुजूद) नाज़ व नख़्रे करते हैं और बड़ी जुरअत मन्दी से दन्दनाते फिरते हैं।" वोह आ़बिद कुछ सोच कर दोबारा हमारे पास आया और कहने लगा : "उ़-लमा में से वोह उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى कहां हैं जिन्हें येह तौफ़ीक़ हो कि वोह अपने इ़ल्म पर अ़मल करते हों फिर भी उन का शुमार नेक लोगों में होता है, अपने आप को ज़ाहिद कहने वालों में ह़क़ीक़ी ज़ाहिद कौन हैं ? आजकल ऐसे अ़ज़ीम लोग कहां मिलते हैं ?" इतना कहने के बा'द उस आ़बिद ने रोना शुरूअ़ कर दिया। और कहा :

जो ह़क़ीक़ी आ़लिम और ह़क़ीक़ी ज़ाहिद व मुत्तक़ी होगा उसे हर वक़्त ह़श्र के मैदान में त़वील क़ियाम, उस की होलनाकियों और वहां की सख़्तियों की फ़िक्र दामन गीर होगी और उसे तो हर वक़्त येही फ़िक्र व ग़म होगा कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस त़रह़ उस के सुवालों का जवाब दूंगा, न जाने मेरा ठिकाना जन्नत में होगा या जहन्नम की आग मेरा मुक़द्दर होगी ? ऐसी ही बातों में ग़ौरो फ़िक्र करना उ़-लमाए रब्बानिय्यीन का मह़बूब मश्ग़ला है।

थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बा'द फिर वोह बोला : "मैं कस्रते कलाम से अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें फ़ुज़ूल गोई से बचाए और ऐसी बातें करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए जो नेकी की दा'वत पर मब्नी हों।" इतना कहने के बा'द वोह शख़्स हमें छोड़ कर वहां से चला

गया लेकिन जाते जाते हमारे दिलों को ग़म व मलाल और फ़िक्रे आख़िरत से भर गया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

ह़िकायत नम्बर 171 : दीने मुह़म्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अह़मद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى को येह फ़रमाते सुना : "मैं एक मर्तबा मक्कए मुकर्रमा से मुल्के शाम जा रहा था, रास्ते में मेरी मुलाक़ात एक राहिब (या'नी ईसाइयों के आ़लिम) से हुई। वोह एक गिर्जा (इ़बादत ख़ाना) में था। मैं ने उस से पूछा : "तूने अपने आप को लोगों से अलग थलग इस गिर्जा में क्यूं क़ैद कर रखा है ?" उस राहिब ने जवाब दिया : "मैं यहां अकेला इस लिये रहता हूं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत कर सकूं और दुन्यवी मशाग़िल मेरी इ़बादत में रुकावट न बनें।" मैं ने पूछा : "तू किस की इ़बादत करता है ?" उस ने जवाब दिया : "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इ़बादत करता हूं और उन्हीं के लिये आ'माले सालिह़ा करता हूं।"

मैं ने कहा : "क्या वजह है कि तू मा'बूदे ह़क़ीक़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत छोड़ कर उस के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की इ़बादत करता है ह़ालां कि इ़बादत के लाइक़ तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की ज़ात है, मा'बूदे बरह़क़ तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है फिर तू ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इ़बादत क्यूं करता है ?" मेरी येह बात सुन कर उस राहिब ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चालीस दिन और चालीस रातें बिग़ैर खाए पिये गुज़ार दीं।"

मैं ने उस से पूछा : "ऐ राहिब ! जो शख़्स चालीस दिन और रातें बिग़ैर खाए पिये भूका प्यासा गुज़ार दे तो क्या वोह मा'बूद बन जाता है ?" राहिब ने कहा : "हां ! ऐसा शख़्स वाक़ेई इ़बादत के लाइक़ है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं, मैं ने उस से कहा : "ऐ राहिब ! मैं यहां तेरे साथ रहता हूं तू शुमार करना कि मैं कितने दिन तक बिग़ैर खाए पिये रह सकता हूं।" चुनान्चे मैं उस राहिब के साथ उस के गिर्जा में रहने लगा। मैं दिन रात इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहता, न कुछ खाता न पीता। इस त़रह़ जब चालीस दिन और चालीस रातें गुज़र गईं तो मैं ने उस राहिब से कहा : "अगर तू चाहे

तो मैं मज़ीद कुछ दिन बिग़ैर खाए पिये गुज़ार सकता हूं।" राहिब ने जब मेरी येह ह़ालत देखी तो पूछा : "तुम्हारा दीन कौन सा है ?" मैं ने कहा : "मैं नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, शहन्शाहे कौनो मकां, वालिये दो जहां, रह़मते आ़-लमियां ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती हूं, मैं उन का अदना सा ग़ुलाम हूं और हमारा दीन "**इस्लाम**" है।"

वोह राहिब मेरे पास आया, उस ने ईसाइय्यत से तौबा की और कलिमा पढ़ कर दामने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वाबस्ता हो गया। फिर मैं उसे अपने साथ दिमिश्क़ ले आया और वहां के लोगों से कहा : "ऐ लोगो ! अपने इस नौ मुस्लिम भाई की ख़ूब ख़ैर ख़्वाही करना और इसे किसी क़िस्म की परेशानी न होने देना।"

मैं चन्द दिन दिमिश्क़ रहा। वोह शख़्स अब हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहता, ख़ूब मुजा-हदात करता। फिर जब मैं दिमिश्क़ से वापस आया तो उसे इस ह़ाल में छोड़ कर आया कि उस का शुमार औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی में होने लगा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 172 : अ़जीबो ग़रीब निशानी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं, एक मर्तबा मेरी एक राहिब से मुलाक़ात हुई। मैं ने उस से कहा : "तुझे उस ज़ात की क़सम जिस की तू इ़बादत करता है ! अपने मा'बूद से सुवाल कर कि वोह हमें कोई अ़जीब व ग़रीब निशानी दिखाए।" मेरी येह बात सुन कर राहिब ने कहा : "तुम क्या निशानी देखना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "तुम जिस की इ़बादत करते हो उस से दुआ़ करो कि वोह सामने ख़ाली ज़मीन में ताज़ा खजूरों से लदा हुवा एक दरख़्त उगा दे।"

वोह राहिब अपने गिर्जा में दाख़िल हुवा और कुछ देर बा'द बाहर आ कर कहने लगा : "वोह देखो ! तुम्हारे सामने क्या है ?" जब मैं ने सामने की त़रफ़ देखा तो वहां एक खजूर का दरख़्त नज़र आया जिस में ताज़ा खजूरें लगी हुई थीं। फिर उस राहिब ने मुझ से कहा : "ऐ दीने मुह़म्मदी को मानने वाले ! अब तू अपने मा'बूद से दुआ़ कर कि वोह हमारे लिये कोई अ़जीबो ग़रीब निशानी ज़ाहिर करे।" मैं ने कहा : "ऐ राहिब ! बता तू किस त़रह़ की निशानी देखना चाहता है ?" उस ने कहा : "तुम अपने मा'बूद से दुआ़ करो कि वोह इस खजूर के गिर्द सब्ज़ा उगा दे और हर त़रफ़ हरियाली ही हरियाली कर दे।" राहिब की येह बात सुन कर मैं एक त़रफ़ गया और अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सर ब सुजूद हो कर इस

त़रह़ दुआ़ की : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू ख़ूब जानता है कि मैं तुझ से जो दुआ़ मांग रहा हूं तेरे दीन की सर बुलन्दी के लिये मांग रहा हूं। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा।"

जब मैं ने सज्दे से सर उठाया तो देखा कि वोह ज़मीन जो अभी कुछ देर पहले वीरान थी और उस पर सब्ज़ा नाम को न था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अब वोह सर सब्ज़ो शादाब हो चुकी थी, हर त़रफ़ हरियाली ही हरियाली थी और खजूर के चारों त़रफ़ बेहतरीन क़िस्म के पौदे उगे हुए थे।

फिर मैं ने उस राहिब से पूछा : "ऐ राहिब ! तुझे तेरे मा'बूद की क़सम ! सच सच बता कि तूने किन अल्फ़ाज़ के ज़रीए़ दुआ़ की और किस से दुआ़ की ?" उस राहिब ने जवाब दिया : "तुम्हारे यहां आने से पहले ही इस्लाम की मह़ब्बत मेरे दिल में पैदा हो गई थी। फिर जब तुम ने निशानी दिखाने के लिये कहा तो मैं गिर्जा में गया और तुम्हारे क़िब्ला (या'नी ख़ानए का'बा) की त़रफ़ सज्दा किया फिर इस त़रह़ दुआ़ की : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! जिस दीने मुह़म्मदी की मह़ब्बत तूने मेरे दिल में डाली है अगर वोह तेरे नज़्दीक ह़क़ व सच और मक़्बूल है तो मुझे येह निशानी दिखा दे कि ताज़ा फलों से लदा हुवा खजूर का दरख़्त उग आए।" मैं ने इन ही अल्फ़ाज़ के साथ दुआ़ मांगी थी।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم ने उस राहिब से कहा : "हमें येह दोनों निशानियां एक ही ज़ात ने दिखाई हैं जो वाक़ेई मा'बूदे ह़क़ीक़ी है।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह बातें सुन कर उस राहिब ने कहा : "ह़ुज़ूर ! मैं नस्रानिय्यत से तौबा करता हूं और सच्चे दिल से मुसल्मान होता हूं, फिर उस ने कलिमए शहादत पढ़ा : "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ." ।

बुझ गईं जिस के आगे सभी मश्अ़लें
शम्अ़ वोह ले कर आया हमारा नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर 173 : लाश ग़ाइब हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं एक मुत्तक़ी परहेज़ गार शख़्स के जनाज़े में शरीक हुवा। उसे बसरा के क़ब्रिस्तान में दफ़्न कर दिया गया। तदफ़ीन के बा'द लोग अपने अपने घरों की त़रफ़ चले गए और मैं क़रीबी जंगल की त़रफ़ चला गया। वहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत में ग़ौरो फ़िक्र करता रहा। एक जगह बहुत घने दरख़्त थे। मैं ने जब बग़ौर देखा तो उन दरख़्तों के पीछे एक ग़ार नज़र आया। मैं ने अपने दिल में कहा : "शायद ! येह ग़ार डाकूओं और लुटेरों की आमाज गाह है। जब

मैं उस ग़ार के क़रीब गया तो देखा कि वहां नूरानी चेहरे वाला एक ह़सीनो जमील नौ जवान ऊन का जुब्बा पहने बड़े ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ रहा था। मैं उस के क़रीब जा कर बैठ गया। उस नौ जवान ने रुकूअ़ व सुजूद के बा'द सलाम फैरा और मेरी जानिब मु-तवज्जेह हुवा। मैं ने सलाम किया उस ने जवाब दिया। मैं ने उस से पूछा : "ऐ मेरे भाई ! आप कहां के रहने वाले हैं ?" उस ने कहा : "मैं मुल्के "शाम" का रिहाइशी हूं।" मैं ने पूछा : "आप शाम से बसरा किस मक़्सद के लिये आए हैं ?" उस ने जवाब दिया : "मैं ने सुना था कि बसरा और उस के क़रीबी अ़लाक़ों में आ़बिदीन व ज़ाहिदीन और बा अ़मल उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی बहुत ज़ियादा हैं। चुनान्चे मैं शाम से बसरा चला आया ताकि इन औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی से इक्तिसाबे फ़ैज़ कर सकूं और इन से इ़ल्मो अ़मल सीखूं।"

मैं ने उस से पूछा : "ऐ बन्दए ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ! तुम्हारे खाने पीने का इन्तिज़ाम किस त़रह़ होता है ? यहां जंगल में तुम्हें खाना कैसे मुयस्सर आता होगा ?" उस ने जवाब दिया : "जब भूक लगती है तो दरख़्तों के पत्ते खा लेता हूं और जब प्यास मह़सूस होती है तो जंगल में मौजूद तालाबों से पानी पी लेता हूं।" मैं ने कहा : "ऐ नौ जवान ! मेरी ख़्वाहिश है कि मैं तुम्हें उ़म्दा आटे की दो रोटियां पेश कर दिया करूं ताकि तुम उन्हें खा कर इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल कर सको।" तो वोह नौ जवान कहने लगा : "ऐसी बातें छोड़ो, मैं ने कई सालों से खाना नहीं खाया, पत्ते खा कर ही गुज़ारा कर रहा हूं।" मैं ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! अगर तुम हमारे खाने को क़बूल कर लोगे तो हमारी ख़ुश क़िस्मती होगी। तुम हमारी त़रफ़ से कुछ क़बूल कर लो ताकि हमें ब-र-कतें ह़ासिल हों।" वोह नौ जवान बोला : "अच्छा अगर तुम बज़िद हो तो जव के बिग़ैर छने आटे की दो रोटियां ले आओ और सालन की जगह नमक लाना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : फिर मैं उस नौ जवान के पास से चला आया और "जव" के बिग़ैर छने आटे की दो रोटियां पकवाईं, उन पर नमक रखा और वापस उसी जंगल की त़रफ़ चल दिया। जब मैं ग़ार के क़रीब पहुंचा तो वहां का मन्ज़र देख कर मैं बहुत ह़ैरान हुवा। मैं ने देखा कि एक ख़ूंख़ार शेर ग़ार के दहाने पर बैठा हुवा है। मैं ने दिल में कहा : "ऐसा न हो कि इस ख़ूंख़ार दरिन्दे ने उस नौ जवान को मार डाला हो।" मैं बहुत परेशान हो गया था। फिर मैं एक ऊंची जगह पर चढ़ा जहां से ग़ार का अन्दरूनी ह़िस्सा नज़र आ रहा था। मुझे येह देख कर बड़ी ख़ुशी हुई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! वोह नौ जवान सह़ीह़ व सालिम है और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सर ब सुजूद है। मैं ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : "ऐ मेरे भाई ! तुझे क्या हो गया है कि तू अपने आस पास के ह़ालात से बे ख़बर है ? शायद इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूलिय्यत की वजह से तुझे बाहर के ह़ालात की ख़बर नहीं।" मेरी येह आवाज़ सुन कर उस नौ जवान ने नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ की और सलाम फैरने के बा'द कहने लगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तुम ने ऐसी क्या चीज़ देख ली है जिस की वजह से तुम इतने परेशान हो रहे हो ?" तो मैं ने कहा : "वोह देखो ग़ार के दहाने पर एक ख़ूंख़ार शेर घात लगाए बैठा है और ऐसा

लगता है कि वोह अभी ह़म्ला कर देगा।"

उस ने मुझे मुख़ात़ब करते हुए कहा : "ऐ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अगर तू उस ज़ात से डरता जिस ने इस शेर को पैदा किया है तो येह तेरे लिये बहुत बेहतर था।" फिर उस नौ जवान ने शेर की त़रफ़ तवज्जोह की और कहा : "ऐ दरिन्दे ! बेशक तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुत्तों में से एक कुत्ता है। अगर तुझे बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से हुक्म मिला है कि तू मुझे कोई नुक़्सान पहुंचाए तो फिर मैं तुझे रोकने की क़ुदरत नहीं रखता और अगर तुझे अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की त़रफ़ से हुक्म नहीं मिला तो फिर मुझे तेरा कोई ख़ौफ़ नहीं। फिर तेरी बेहतरी इसी में है कि तू यहां से चला जा, तू ख़्वाह म ख़्वाह मेरी और मेरे भाई की मुलाक़ात में ह़ाइल हो रहा है।"

अभी उस नेक ख़स्लत नौ जवान ने अपनी बात मुकम्मल भी न की थी कि वोह शेर दहाड़ने लगा और दुम हिलाता हुवा वहां से इस त़रह़ भागा जैसे उसे अपना कोई शिकार नज़र आ गया हो। जब शेर वहां से चला गया तो मैं उस नौ जवान के पास आया और येह कहते हुए दोनों रोटियां उस के सामने रख दीं कि "ऐ मेरे दोस्त ! जो चीज़ तूने त़लब की थी वोह ह़ाज़िर है।" उस ने रोटियां लीं और उन्हें हसरत भरी निगाहों से देखने लगा फिर वोह रोने लगा, रोते रोते उस की हिचकियां बंध गईं। फिर उस ने रोटियां नीचे रख दीं और आस्मान की त़रफ़ देखते हुए कहने लगा : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे तेरे अ़र्शे अ़ज़ीम का वासित़ा दे कर इल्तिजा करता हूं कि अगर तेरी बारगाह में मेरा कुछ मर्तबा व मक़ाम है और मैं तेरी बारगाह में मरदूद नहीं बल्कि मक़्बूल हूं तो ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने क़ुर्बे ख़ास में बुला ले और मेरी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा ले।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "अभी उस नौ जवान ने येह दुआ़ मुकम्मल ही की थी कि फ़ौरन उस की बे क़रार रूह़ इस दुन्यवी ज़िन्दगी की क़ैद से आज़ाद हो कर आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई।" मैं वापस अपने अ़लाक़े में आया और चन्द मुत्तक़ी व परहेज़ गार लोगों को जम्अ़ किया ताकि हम उस नौ जवान की तज्हीज़ व तक्फ़ीन कर सकें। मैं अपने उन साथियों को ले कर ग़ार की त़रफ़ चल दिया। जब हम वहां पहुंचे तो देखा कि ग़ार में तो कोई भी मौजूद नहीं जिस ख़ुश नसीब नौ जवान की लाश को मैं अभी अभी छोड़ कर गया था अब वहां उस का नामो निशान भी न था। मैं बहुत हैरान व परेशान था कि आख़िर उस की लाश कहां ग़ाइब हो गई। अचानक मुझे एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी, कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ अबू सई़द (येह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की कुन्यत थी) ! अपने रु-फ़क़ा से कहो कि वोह वापस चले जाएं अब उस नौ जवान की लाश कभी नहीं मिलेगी क्यूं कि उस की लाश को यहां से उठा लिया गया है।"

जब तेरी याद में दुन्या से गया है कोई   जान लेने को दुल्हन बन के क़ज़ा आई है

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 174 : बिन्ते सिद्दीक़, आरामे जाने नबी صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وَ رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मलीका رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا के दरबान ह़ज़रते सय्यिदुना ज़क्वान رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُ ने बयान फ़रमाया : ''जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُمَا काशानए अक़्दस पर आए और अन्दर आने की इजाज़त त़लब की। मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا के भतीजे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُمَا आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا के सिरहाने खड़े थे। मैं ने अ़र्ज़ की : ''बाहर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُمَا खड़े हैं और अन्दर आने की इजाज़त त़लब कर रहे हैं।'' आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''अभी मेरा जी नहीं चाह रहा कि मैं (किसी से) मुलाक़ात करूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : ''ऐ फूफी जान ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُمَا हमारे प्यारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान में से हैं और बड़ी अ़-ज़मत वाले हैं, वोह आप के पास आ कर आप के लिये सलामती की दुआ़ करेंगे।'' आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''अच्छा अगर तुम्हारी येही मरज़ी है तो इजाज़त दे दो।''

चुनान्चे इजाज़त मिलते ही ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہُمَا ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और अ़र्ज़ की : ''आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا को ख़ुश ख़बरी हो।'' उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''किस बात पर ख़ुश ख़बरी।'' अ़र्ज़ की : ''जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا इस दुन्या से रुख़्सत होंगी तो फ़ौरन आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا की मुलाक़ात आक़ाए दो जहां, मालिके कौनो मकां, रह़मते आ़-लमियां صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से होगी जो दुन्या से रुख़्सत हो चुके हैं और आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में सब से ज़ियादा मह़बूब थीं। आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا तो त़य्यिबा व त़ाहिरा हैं क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद त़य्यिब व त़ाहिर हैं तो त़य्यिबीन के लिये त़य्यिबात ही होती हैं। आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا तो बड़ी शान की मालिक हैं, आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا की ब-र-कत से मुसल्मानों के लिये तयम्मुम की इजाज़त अ़त़ा की गई। जब एक सफ़र में आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا का हार गुम हो गया और उसे ढूंडने में देर लगी और लोगों के पास पानी ख़त्म हो गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई :

فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَیَمَّمُوْا صَعِیْدًا طَیِّبًا (پ۵، النسآء:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो।

(जब आप رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाई गई तो) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की पाकीज़गी और त़हारत के बारे में क़ुरआन की आयतें नाज़िल फ़रमाईं जिन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام

ले कर आए, अब क़ियामत तक आप की पाकीज़गी और त़हारत का चर्चा होता रहेगा वोह आयतें जो आप की शान में नाज़िल हुईं क़ियामत तक नमाज़ों और ख़ुत़्बों में सुब्ह़ो शाम मुसल्मानों की मसाजिद में पढ़ी जाती रहेंगी।''

येह सुन कर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ! मेरी ता'रीफ़ न करो, क़सम है मुझे मेरे उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं तो इस बात को पसन्द करती हूं कि मैं गुमनाम ही रहती और मेरी शोहरत न होती।''

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

ह़िकायत नम्बर 175 : ह़िम्स के मिसाली गवर्नर

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से मरवी है कि ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन ख़लीफ़ए सानी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मर्तबा सल्त़नते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शहरों का दौरा करने तशरीफ़ ले गए ताकि वहां के इन्तिज़ामात को देखें और उन में बेहतरी लाएं। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ''**ह़िम्स**'' पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वहां क़ियाम फ़रमाया और हुक्म दिया कि इस शहर में जितने भी फ़ु-क़रा व मसाकीन हैं उन के नामों की फ़ेहरिस्त बना कर मुझे दिखाओ। जब फ़ु-क़रा व मसाकीन के नामों की फ़ेहरिस्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में पेश की गई तो उस में ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर बिन हुज़ैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम भी था जो कि ''**ह़िम्स**'' के गवर्नर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : ''येह सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कौन है ?'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''वोही सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो इस शहर के गवर्नर और हमारे अमीर हैं।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मु-तअ़ज्जिब हो कर पूछा : ''क्या वाक़ेई तुम्हारे अमीर की येह ह़ालत है ?'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम्हारे अमीर की येह ह़ालत कैसे हुई कि वोह फ़क़ीर व मिस्कीन हो गए, उन को जो वज़ीफ़ा मिलता है वोह कहां जाता है ?'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! उन्हें जितना भी वज़ीफ़ा मिलता है और जब कभी उन्हें कहीं से रक़म वग़ैरा मिलती है तो वोह अपना सारा माल फ़ु-क़रा व मसाकीन और मुसल्मानों की ह़ाजतों में ख़र्च कर देते हैं, अपने लिये कुछ भी नहीं बचाते।''

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ रोने लगे फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने एक हज़ार दीनार मंगवाए और क़ासिद से फ़रमाया : "येह सारे दीनार सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ के पास ले जाओ। उन्हें मेरा सलाम कहना और कहना कि येह दीनार अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ही के लिये भेजे हैं ताकि इन के ज़रीए़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ अपनी ह़ाजतें पूरी कर सकें, इन्हें अपनी ज़रूरियात में इस्ति'माल करना।"

क़ासिद ने दीनारों से भरी हुई थैलियां और अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ का पैग़ाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ को दिया और वहां से चला आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने जब थैलियां देखीं तो اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "मेरे सरताज क्या हो गया ? क्या कोई ना ख़ुश गवार वाक़िआ़ पेश आ गया है ? किसी ने अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ को धोके से शहीद तो नहीं कर दिया ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे इस से भी बड़ी मुसीबत आ पहुंची है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा ने अ़र्ज़ की : "आख़िर ऐसी कौन सी मुसीबत आ गई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ इतने परेशान हो रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे पास दुन्या की ह़क़ीर दौलत आ गई है, मैं एक बहुत बड़ी आज़माइश में मुब्तला हो गया हूं।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "मेरे सरताज ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ परेशान क्यूं होते हैं, इस रक़म को जहां मुनासिब समझें ख़र्च करें।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम इस मुआ़-मले में मेरी मदद करोगी ? क्या तुम्हारे पास थोड़ा बहुत खाना मौजूद है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "जाओ और घर में मौजूद फटे हुए कपड़ों के टुकड़े ले आओ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा घर में मौजूद पुराने कपड़ों के टुकड़े ले आई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने तमाम दीनार निकाले और कपड़ों में बांध बांध कर रखने लगे। जब सब दीनार ख़त्म हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने हुक्म सादिर फ़रमाया कि "येह तमाम के तमाम दीनार उन मुजाहिदीन में तक़्सीम कर दो जो कुफ़्फ़ार से बर सरे पैकार हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी के लिये अपने घर बार और अहलो इ़याल को छोड़ कर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी जानों की बाज़ी लगा रखी है। जाओ ! येह सारे दीनार इस्लाम के उन शेरों की ख़िदमत में पेश कर दो, हम से ज़ियादा वोह इस के ज़रूरत मन्द हैं।" येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ ने हुक्म नामे पर दस्त-ख़त़ किये और सारा माल मुजाहिदीने इस्लाम के लिये भेज दिया।

येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "मेरे सरताज ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہ पर रह़्म फ़रमाए, अगर इन दीनारों में से कुछ अपने पास रख लेते तो इन के ज़रीए़ हम अपनी ज़रूरियात पूरी कर लेते और हमें कुछ आसानी हो जाती।" आप

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने अपने मह़बूब आक़ा, अह़मदे मुस्त़फ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह इर्शाद फ़रमाते सुना : "अगर जन्नत की औ़रतों में से कोई औ़रत ज़मीन में ज़ाहिर कर दी जाए तो वोह ज़मीन को मुश्क की ख़ुश्बू से भर दे।" (الزهد لاحمد بن حنبل، زهد سعيد بن عامر بن جذيمة بن الجمحي، الحديث ١٠٣٠، ص٢٠٣ تا ٢٠٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन हूरों की इतनी ख़ूब सूरती व पाकीज़गी के बा वुजूद मैं तुझे जन्नत में उन पर तरजीह़ दूंगा और तुझे इख़्तियार करूंगा।" अपने अ़ज़ीम शोहर की येह बात सुन कर सआ़दत मन्द व फ़रमां बरदार ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़ामोश हो गई और किसी क़िस्म की शिकायत न की और दुन्या की ने'मतों पर आख़िरत की ने'मतों और दुन्यावी ख़ुशियों पर उख़्रवी ख़ुशियों को तरजीह़ दी।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 176 मा'रिफ़त की बातें

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मह़मूद समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی को येह फ़रमाते हुए सुना : "ग़ुरबत और तंगदस्ती ज़ाहिदीन के दियार हैं। बन्दए मोमिन जब कोई अ़मल करता है या तो उस का वोह अ़मल नेक होता है या बद। उस का नेक अ़मल तो नेक ही है लेकिन उस के बुरे अ़मल के साथ भी बसा अवक़ात नेकियां शामिल हो जाती हैं वोह इस त़रह़ कि जब किसी नेक इन्सान से कोई गुनाह सरज़द होता है तो उस पर ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ त़ारी हो जाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना नेकी है, इस के बा'द वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखता है कि वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उस का गुनाह बख़्श देगा तो उस की येह उम्मीद भी नेकी ही है। पस मोमिन का गुनाह ऐसा है जैसे दो शेरों के दरमियान लोमड़ी।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ह़िक्मत के सर चश्मे हैं, इन की मजालिस बा ब-र-कत होती हैं गोया येह लोग उ़म्दा बाग़ात और अपनी पसन्दीदा जगहों में हैं, इन की मजालिस में ख़ैर ही ख़ैर है।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते : "अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ने क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया :

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِؕ (پ٢٦، محمد:١٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब ! अपने ख़ासों और आ़म मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो।

इस आयते करीमा में खुद खुदाए बुजुर्ग व बरतर हुक्म फ़रमा रहा है । "ऐ महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों के लिये दुआए मग़फ़िरत कीजिये ।" क्या ऐसा हो सकता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को खुद किसी काम का हुक्म फ़रमाए और फिर उस की बजा आ-वरी पर उन्हें अज्र न दे, या जो उस ने वा'दा किया है उसे पूरा न करे ? ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता । वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तो वा'दों को पूरा करने वाला है जो उस से उम्मीद रखता है वोह कभी भी मायूस नहीं होता । जब किसी बन्दे से कोई गुनाह सरज़द हो जाए और उसे अपने गुनाह पर शरमिन्दगी भी हो फिर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस की शफ़ाअत फ़रमाएं और जिस ज़ात की ना फ़रमानी उस गुनाहगार शख़्स से हुई वोह ज़ात भी ऐसी करीम कि बड़े बड़े गुनाहों को महूज़ अपने लुत्फ़ो करम से बख़्श दे और जो उस के सामने सिद्क़े दिल से ताइब हो जाए और दो क़तरे आंसूओं के बहा ले तो ज़मीन व आस्मान के बराबर गुनाहों को भी मुआफ़ फ़रमा दे । क्या वोह पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हमारे गुनाहों को मुआफ़ नहीं फ़रमाएगा ? ज़रूर फ़रमाएगा हमें उस पाक ज़ात पर कामिल यक़ीन है ।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "काश ! कोई ऐसा रास्ता मिल जाए कि वोह हमें किसी आरिफ़ तक ले जाए । ऐ आरिफ़ो ? तुम कहां हो ? मैं तुम्हारे दीदार से अपनी आंखें ठन्डी करना चाहता हूं । तअज्जुब व अफ़्सोस है उन लोगों पर जो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की महफ़िलों और उन के कुर्ब से ना आशना हैं और बादशाहों और वज़ीरों की खुशनूदी के तलबगार हैं, महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के तलबगारों को दुन्यवी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है । जब तक इन्सान राहे इश्क़ में तकालीफ़ से दो चार न हो तब तक महब्बत की मिठास नहीं पा सकता ।"

वोह इश्क़े हक़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता जो रन्जो मुसीबत से दो चार नहीं होता

दुन्या को तर्क कर देना आख़िरत का महर है या'नी जिस ने दुन्यवी ने'मतें तर्क कर दीं उस ने आख़िरत की ने'मतों को पा लिया । उख़्रवी ने'मतों की ख़ातिर दुन्यवी ने'मतों को छोड़ देना ईमान व यक़ीन के पुख़्ता होने की दलील है । **ऐ मेरे अक़ीदत मन्दो !** जब तुम दुन्या हासिल करने पर मजबूर हो जाओ तो ब क़द्रे किफ़ायत रिज़्क़े हलाल हासिल करो लेकिन दुन्यवी मालो दौलत की महब्बत हरगिज़ दिल में न बिठाओ, अपने जिस्मों को रिज़्क़े हलाल की तलब में मश्गूल रखो लेकिन अपने दिलों को उस में मश्गूल न करो बल्कि तुम्हारे दिलों में आख़िरत की महब्बत होनी चाहिये, हर वक़्त आख़िरत को मद्दे नज़र रखो । बेशक येह दुन्या तो एक गुज़र गाह है लिहाज़ा इस से दूर रहने में ही आफ़िय्यत है, बे वफ़ा दुन्या से दिल न लगाओ, बल्कि आख़िरत से महब्बत करो, उसी की फ़िक्र करो क्यूं कि वहां हमेशा रहना है, वोही दारे क़रार है ।"

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार तू अचानक मौत का होगा शिकार

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मौत का ख़ौफ़ मौत की तक्लीफ़ से ज़ियादा होलनाक है या'नी जिसे येह इल्म हो जाए कि मैं फ़ुलां वक़्त मरूंगा तो वोह ऐसे ख़ौफ़ में मुब्तला हो जाए कि जिस का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता गोया मौत के ख़ौफ़ से वोह घुल घुल कर मुर्दों की मानिन्द हो जाता है ।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (आ़जिज़ी करते हुए) फ़रमाते हैं : ''मेरी ह़ालत तो ऐसी है कि अगर मेरी कोई ह़ाजत पूरी न हो तो रोने लगता हूं लेकिन मौत के ख़ौफ़ से रोना नहीं आता। **ऐ इब्ने आदम !** तुझ पर अफ़्सोस है, अगर तुझे कोई दुन्यावी ने'मत न मिले तो तू परेशान व ग़मगीन हो जाता है और उन आ़रिज़ी चीज़ों के मिलने पर तुझे ख़ुशी होती है जिन्हें मौत तुझ से जुदा कर देगी। याद रख ! मौत आते ही तमाम दुन्यावी ने'मतें तुझ से वापस ले ली जाएंगी।''

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते थे : ''अगर अ़फ़्वो दर गुज़र और रह़्मो करम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात न होतीं तो अहले मा'रिफ़त कभी भी उस की ना फ़रमानी न करते, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने अ़फ़्वो दर गुज़र और रह़्मो करम का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुनाया तो गुनाहगारों का आसरा बढ़ गया और उन्हें पुख़्ता यक़ीन हो गया कि हमारा रब عَزَّوَجَلَّ हमारी ग़-लतियों और कोताहियों से ज़रूर दर गुज़र फ़रमाएगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने अ़फ़्वो करम का ए'लान फ़रमाया ताकि लोग जान जाएं कि हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ बहुत रह़ीमो करीम है, वोह गुनाहगारों के बड़े बड़े गुनाहों को मह़्ज़ अपने लुत़्फ़ो करम से मुआ़फ़ फ़रमा देता है, उस की रह़मत उस के ग़ज़ब पर सब्क़त रखती है। वोह अपने बन्दों पर बहुत ज़ियादा रह़ीमो करीम है, इस लिये गुनाहगार गुनाह हो जाने पर उस की रह़मत से मायूस नहीं होते बल्कि वोह अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से उम्मीदे वासिक़ रखते हैं कि वोह गुनाहों को बख़्श देगा और रह़्मो करम फ़रमाएगा, क्यूं कि उस के रह़्मो करम की कोई इन्तिहा नहीं।''

سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ عَلٰی غَضَبِیْ तूने जब से सुना दिया या रब عَزَّوَجَلَّ !
आसरा हम गुनाहगारों का और मज़बूत़ हो गया या रब عَزَّوَجَلَّ !

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''मेरे नज़्दीक बन्दा जिस गुनाह की वजह से अपने आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का मोहताज समझे, वोह उस नेकी से अफ़्ज़ल है जिस की वजह से बन्दा अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर दिलेर हो जाए और मग़रूर हो जाए।''

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया : ''इ़बादत क्या है ?'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''गोशा नशीनी इख़्तियार करना, इ़बादत की दुकानदारी के लिये माले तिजारत है और जन्नत इस तिजारत का मनाफ़ेअ़ है या'नी जो शख़्स मख़्लूक़ से बे नियाज़ हो कर सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहेगा उस को इ़बादत का सिला जन्नत की सूरत में दिया जाएगा।''

(ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें इ़बादत की लज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा और नेक लोगों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم)

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे नजात वोह क्या बहक सके जो येह चराग़ ले के चले

ह़िकायत नम्बर 177 : क्या बीमारी बजाते ख़ुद दवा बन सक्ती है ?

सय्यिदुत्त़ाइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "एक रात मुझे बड़ी बे चैनी हुई। मैं इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहा लेकिन सुकून मुझ से कोसों दूर था। मैं ने ख़ूब कोशिश की के इ़बादत में यक्सूई और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल हो जाए लेकिन मैं इस कोशिश में काम्याब न हो सका। फिर मैं ने क़ुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ कर दी लेकिन मुझे फिर भी यक्सूई और दिली सुकून ह़ासिल न हुवा। मैं बहुत ह़ैरान था कि आख़िर आज ऐसी क्या बात है कि मुझे इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में यक्सूई ह़ासिल नहीं हो रही और मेरा सुकून मुझ से दूर हो गया है। आख़िरे कार रात के पिछले पहर मैं ने अपनी चादर कन्धे पर डाली और घर से बाहर निकल आया। कुछ दूर जा कर रास्ते में मुझे एक शख़्स नज़र आया जो चादर में लिपटा हुवा था।

जब मैं उस के क़रीब गया तो उस ने अपना सर उठाया और मुझ से पूछा : "तुम इतने परेशान क्यूं हो ? क्या क़ियामत बरपा हो चुकी है ?" मैं ने कहा : "क्या क़ियामत का मुक़र्ररा दिन आ गया है ?" उस शख़्स ने कहा : "नहीं, बल्कि मैं तो येह पूछ रहा हूं कि क्या तुम दिल की हलचल और बे चैनी की वजह से परेशान हो कर दिली सुकून ह़ासिल करने जा रहे हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! वाक़ेई मैं दिली सुकून की तलाश में बाहर निकला हूं और येह जानना चाहता हूं कि किस वजह से मुझे आज रात सुकून नहीं मिल रहा ?" (फिर मैं ने उस से पूछा :) "अच्छा येह बताओ ! क्या तुम्हें मुझ से कोई ह़ाजत है ?" उस शख़्स ने जवाब दिया : "हां, मुझे तुम से ह़ाजत है।" मैं ने इस्तिफ़्सार किया : "बताओ, क्या ह़ाजत है ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ अबू क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! मुझे येह बताइये, क्या कोई ऐसी सूरत भी है कि बीमारी ख़ुद ही दवा बन जाए ?" मैं ने कहा : "जी हां, एक सूरत ऐसी है कि बीमारी ख़ुद दवा बन जाती है। ग़ौर से सुन ? जब तू ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की मुख़ालिफ़त करेगा तो दिल की तमाम बीमारियां तुझ से दूर हो जाएंगी और येही बीमारियां दवा बन जाएंगी।"

येह सुन उस शख़्स ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और कहने लगा : "मुझे आज रात इस सुवाल का जवाब सात मर्तबा इसी त़रह़ दिया जा चुका है लेकिन मेरी येह ख़्वाहिश थी कि मैं आप की ज़बानी अपने सुवाल का जवाब सुनूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मेरी येह ख़्वाहिश पूरी हो गई और मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुबारक ज़बान से अपने सुवाल का जवाब सुन चुका।" इतना कहने के बा'द वोह शख़्स वहां से रुख़्सत हो गया और फिर दोबारा कभी नज़र न आया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 178 : मैं तेरी रिज़ा पर राज़ी हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मूफ़िक़ رَحْمَۃُاللّٰہ تعالٰی علیہما से मरवी है, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الاَکرم ने फ़रमाया : "एक मर्तबा मैं घोड़े पर सुवार हो कर कहीं जा रहा था कि रास्ते में मुझे एक तुर्क (तुर्की का बाशिन्दा) मिला। वोह मुझ से थोड़ा दूर था और हमारे दरमियान एक दीवार ह़ाइ थी। मैं जैसे ही आगे बढ़ा उस ने दीवार के क़रीब पहुंच कर मुझ पर रस्सी का फन्दा डाला, मैं घोड़े से नीचे गिर गया। वोह शख़्स फ़ौरन अपनी सुवारी से उतरा और मेरे सीने पर चढ़ कर मेरी घनी दाढ़ी को बड़ी मज़बूती से पकड़ लिया और मुझे ज़ब्ह़ करने के लिये अपना ख़न्जर निकाल लिया।

उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जो मेरा मालिके ह़क़ीक़ी है ! ऐसी ख़त़रनाक सूरते ह़ाल में भी मेरी तवज्जोह न तो उस ज़ालिम की त़रफ़ थी और न ही उस के ख़न्जर की त़रफ़, बल्कि मेरा दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु-तवज्जेह था कि वोह कब मुझे इस मुसीबत से नजात दिलाता है और मैं येह दुआ़ कर रहा था : "ऐ मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ अगर तूने मेरे ह़क़ में येह फ़ैसला कर दिया कि मैं इस के हाथों ज़ब्ह़ किया जाऊं तो ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरा हुक्म सर आंखों पर , मेरी जान ह़ाज़िर है। मैं तेरी मिल्किय्यत हूं और तेरा बन्दा हूं, तू मेरे बारे में जो चाहे फ़ैसला कर, मैं तेरी रिज़ा पर राज़ी हूं।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "मैं येह दुआ़ कर रहा था और वोह मेरे सीने पर चढ़ा हुवा था और मुझे ज़ब्ह़ करने ही वाला था कि कुछ मुसल्मानों ने उस पर तीर बरसाए। एक तीर उस को लगा और वोह तड़प कर मेरे सीने से दूर हो गया। मैं फ़ौरन खड़ा हुवा और उसी के ख़न्जर से उसे ज़ब्ह़ कर डाला।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाया करते थे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करेगा और अपने दिल को उसी की त़रफ़ मु-तवज्जेह रखेगा वोह अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ को मां बाप से कहीं ज़ियादा रह़ीमो करीम पाएगा, मां बाप की शफ़्क़तें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रह़्मो करम के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी सच्ची मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए और हमेशा अपने रह़्मो करम में रखे।)

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 179 : **ता'ज़ीम की ब-र-कत**

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद रशीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने बताया कि एक मर्तबा जब मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से हुई तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "इन्सान का कोई नेक अ़मल अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में ऐसा मक़्बूल हो जाता है कि वोह तमाम बुराइयों को मिटा देता है। वोह नेक मशहूर हो जाता है और उस बन्दे के बुरे आ'माल को पोशीदा कर दिया जाता है।

मेरे साथ भी कुछ इसी त़रह़ का वाक़िआ़ पेश आया। आज मैं कहीं जा रहा था कि रास्ते में मुझे दो शख़्स मिले एक ने दूसरे से कहा : "देखो ! ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى जा रहे हैं, येह रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल पढ़ते हैं और कुछ खाए पिये बिग़ैर मुसल्सल तीन तीन दिन रोज़ा रखते हैं।" उन की येह बातें सुन कर मैं बड़ा ह़ैरान हुवा, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं ने आज तक कभी भी ब यक वक़्त एक दिन में हज़ार नवाफ़िल नहीं पढ़े और न ही कभी मुसल्सल तीन दिन भूक व प्यास की ह़ालत में गुज़ारे लेकिन लोगों में मेरे मु-तअ़ल्लिक़ ऐसी बातें मशहूर होने लगी हैं ह़ालां कि मैं ने कभी ऐसे नेक आ'माल नहीं किये। हां ! इतना ज़रूर है कि मेरे साथ एक वाक़िआ़ पेश आया है अगर तुम जानना चाहो तो बताऊं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं कि वोह वाक़िआ़ क्या है जिस की वजह से आप को येह मक़ाम व मर्तबा मिला कि लोगों के दिलों में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़ब्बत बैठ गई है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने फ़रमाया : "एक मर्तबा मैं कहीं जा रहा था कि अचानक मेरी नज़र ज़मीन पर पड़े हुए काग़ज़ के एक टुकड़े पर पड़ी, उस काग़ज़ पर मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखा हुवा था। येह देख कर मैं तड़प उठा कि मेरे परवर्द गार عَزَّ وَجَلَّ के नाम की बे ह़ुरमती हो रही है। मैं ने फ़ौरन बसद अ़क़ीदत व एह़तिराम वोह काग़ज़ का टुकड़ा उठाया और सीधा नहर की त़रफ़ चल दिया। वहां जा कर उस काग़ज़ को अच्छी त़रह़ धोया। उस वक़्त मेरे पास पांच दानिक़ थे। मैं ने चार दानिक़ की ख़ुश्बू ख़रीदी और बक़िय्या एक दानिक़ से अ़-रक़े गुलाब ख़रीदा और बड़ी मह़ब्बत व अ़क़ीदत से उस काग़ज़ पर ख़ुश्बू मलने लगा जिस पर मेरे परवर्द गार عَزَّ وَجَلَّ का नामे पाक लिखा हुवा था फिर उस काग़ज़ को अ़-रक़े गुलाब में डाल कर एक मु-तबर्रक मक़ाम पर रख कर अपने घर चला आया।"

जब रात को सोया तो कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ बिशर (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى) ! जिस त़रह़ तूने हमारे नाम को मुअ़त्तर व मुत़ह्हर किया इसी त़रह़ हम भी तेरा ज़िक्र बुलन्द करेंगे। जिस त़रह़ तूने उस काग़ज़ को धोया जिस पर हमारा नाम लिखा था इसी त़रह़ हम भी तेरे दिल को ख़ूब पाक कर देंगे और तेरा ख़ूब चर्चा होगा।"

(अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(**ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्द गार** عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी रह़मत पे क़ुरबां ! तू वाक़ेई बहुत मग़्फ़िरत फ़रमाने वाला है, तू जिसे चाहे जो मक़ाम व मर्तबा अ़ता फ़रमा दे, ऐ हमारे रह़ीमो करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम पर भी ख़ुसूसी करम फ़रमा, अपनी दाइमी मह़ब्बत से हम फ़क़ीरों की झोलियां भर दे, अपने ज़िक्र की लज़्ज़त से हम बे सुकूनों को सुकून अ़ता फ़रमा और अपने जल्वों से हमारे तारीक दिलों को मुनव्वर फ़रमा। ऐ हमारे पालनहार ! तू अपने नाम की क़द्र करने वालों को अंधेरों से निकाल कर आस्माने विलायत के ऐसे ताबिन्दा सितारे बना देता है कि जिन की रोशनी से ग़फ़्लत के अंधेरों में भटके हुओं को सीधी राह मिलती है। ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र है कि तूने हमें मुसल्मान बनाया, हमारे दिलों में तेरा नाम बसा हुवा है, हमारी ज़बानों पर तेरे पाक नाम का विर्द जारी रहता है। ऐ हमारे मौला عَزَّوَجَلَّ ! जो तेरा पाक नाम हमारे दिलों पर कन्दा और हमारी ज़बानों पर जारी है उसी की ब-र-कत से हमारे दिलों को भी पाक व साफ़ फ़रमा, गुनाहों से नफ़रत और अपने नाम की लज़्ज़त अ़ता फ़रमा और इस की ब-र-कत से हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रख। हमें तुझ से और तेरे बा ब-र-कत अस्मा से मह़ब्बत है। उसी मह़ब्बत के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, हमें अपनी दाइमी रिज़ा से मालामाल फ़रमा और अपनी विलायत की ख़ैरात अ़ता फ़रमा। (اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे
मेरे ग़ौस का वासिता या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

हिकायत नम्बर 180 : सत्तू से इफ़्त़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुलैद बिन ह़स्सान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی सख़्त गर्मियों में भी नफ़्ली रोज़े रखते। एक दिन हम इफ़्त़ारी के वक़्त खाना ले कर उन की बारगाह में ह़ाज़िर हुए। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हमारे खाने से रोज़ा इफ़्त़ार करना चाहा तो किसी ने क़ुरआने करीम की येह आयत तिलावत की :

اِنَّ لَدَیْنَاۤ اَنْکَالًا وَّ جَحِیْمًاۙ۝ وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّۃٍ وَّ عَذَابًا اَلِیْمًا۝ (پ۲۹،المزمل:۱۲۔۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़क्ती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब।

येह सुनते ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना हाथ खाने से रोक लिया और एक लुक़्मा भी न खाया और फ़रमाया : "येह खाना यहां से हटा लो।" दूसरे दिन फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रोज़ा रखा। इफ़्त़ार के वक़्त जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने खाना रखा गया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को फिर

वोही आयत याद आ गई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक लुक़्मा भी न खाया और फ़रमाया : "येह खाना मुझ से दूर ले जाओ।" इसी त़रह़ तीसरे दिन भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बिग़ैर कुछ खाए इसी त़रह़ रोज़ा रख लिया।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साहिब ज़ादे ने जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह ह़ालत देखी कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बिग़ैर खाए पिये तीन दिन गुज़ार दिये हैं तो वोह बहुत परेशान हुए और ज़माने के मश्हूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या और दीगर औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! आप जल्द अज़ जल्द मेरे वालिद की मदद को पहुंचिये, उन्हों ने मुसल्सल तीन दिन सिर्फ़ चन्द घूंट पानी पी कर रोज़ा रखा है और तीन दिन से खाने का एक लुक़्मा तक नहीं खाया। हम जब भी उन के सामने स-ह़री या इफ़्त़ारी के लिये खाना पेश करते हैं तो उन्हें क़ुरआने पाक की येह आयत याद आ जाती है :

اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّ جَحِيْمًاۙ۝ وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا اَلِيْمًا۝ (پ۲۹، المزمل:۱۲،۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़क्ती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब।

और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه खाना खाने से इन्कार फ़रमा देते हैं, ख़ुदारा ! जल्दी चलिये और येह मुआ़-मला ह़ल फ़रमाइये।" येह सुन कर तमाम ह़ज़रात ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के पास आए, जब इफ़्त़ारी का वक़्त हुवा तो फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मज़्कूरा आयत याद आ गई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने खाना खाने से इन्कार कर दिया लेकिन जब ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनाई, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने पैहम इसरार किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ब मुश्किल सत्तू मिला पानी पीने पर राज़ी हुए और उन लोगों के इसरार पर तीसरे दिन सत्तू मिला हुवा शरबत पिया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 181 : तू अचानक मौत का होगा शिकार

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद क़-रशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "किसी शहर में एक बहुत दौलत मन्द नौ जवान रहता था। उसे हर त़रह़ की दुन्यावी ने'मतें मुयस्सर थीं। उस के पास इन्तिहाई ह़सीनो जमील लौंडी थी जिस से वोह बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करता था। ख़ूब ऐशो इ़श्रत में उस के लैलो नहार गुज़र रहे थे, उसे हर त़रह़ की दुन्यावी ने'मतें मुयस्सर थीं लेकिन वोह औलाद जैसी मीठी ने'मत

से मह़रूम था, उस की बड़ी ख़्वाहिश थी कि इस लौंडी के बत़्न से उस की औलाद हो। काफ़ी अ़र्सा तक उसे येह ख़ुशी नसीब न हो सकी फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उस लौंडी को इस्तिक़रारे ह़म्ल हुवा। अब तो उस नौ जवान की ख़ुशी की इन्तिहा न रही, वोह ख़ुशी से फूला न समाता था, इन्तिज़ार की घड़ियां उस के लिये बहुत सब्र आज़मा थीं। बिल आख़िर वोह वक़्त क़रीब आ गया जिस का उसे शिद्दत से इन्तिज़ार था लेकिन होता वोही है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता है। अचानक वोह मालदार बीमार हो गया और कुछ ही दिनों बा'द औलाद के दीदार की ह़सरत दिल ही में लिये इस बे वफ़ा दुन्या से कुच कर गया। जिस रात उस नौ जवान का इन्तिक़ाल हुवा उसी रात लौंडी के बत़्न से एक ख़ूब सूरत बच्चे ने जनम लिया लेकिन मुक़द्दर की बात है कि उस का बाप उसे न देख सका, वोही होता है जो मन्ज़ूरे ख़ुदा होता है।"

उ़म्रे दराज़ मांग कर लाए थे चार दिन दो आरज़ू में कट गए दो इन्तिज़ार में

बुलबुल को बाग़बां से न सय्याद से गिला क़िस्मत में क़ैद लिखी थी फ़स्ले बहार में

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब पर अपनी रह़मतें नाज़िल और मग़्फ़िरत फ़रमाए।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 182 : तख़्ते सिकन्दरी पर येह थूकते नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ाइदह बिन क़िदामा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد बहुत मुत्तक़ी व परहेज़ गार शख़्स थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने चालीस साल इस ह़ाल में गुज़ारे कि मुसल्सल रोज़ा रखते सारी सारी रात क़ियाम फ़रमाते (या'नी इ़बादत करते) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर रातों को रोते और बड़े दर्द भरे अन्दाज़ में अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करते, रोते रोते आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हिचकियां बंध जातीं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदए मोह़तरमा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا फ़रमातीं : "ऐ मेरे लाल! क्या तू अपने आप को इतनी मशक़्क़त में डाल कर हलाक करना चाहता है?" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाते : "ऐ मेरी प्यारी मां! मैं अपने नफ़्स के कारनामों से ख़ूब आगाह हूं, मैं अपनी ह़ालत ख़ूब जानता हूं कि नफ़्स मुझे किस त़रह़ गुनाहों में मुब्तला करना चाहता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाइदह बिन क़िदामा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के

होंट गुलाब की पंखड़ियों की मानिन्द नर्म व नाज़ुक और ख़ूब सूरत थे। एक मर्तबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी नूरानी आंखों में सुरमा लगाया। सरे मुबारक में तेल डाला और किसी काम से बाहर तशरीफ़ ले गए। रास्ते में "**कूफ़ा**" के गवर्नर **यूसुफ़ बिन उ़मर** ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को पकड़ लिया। वोह चाहता था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को क़ाज़ी बना दिया जाए लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह ओ़हदा क़बूल करने से साफ़ इन्कार कर दिया और फ़रमाया : "मैं कभी भी येह ज़िम्मादारी क़बूल न करूंगा।"

जब कूफ़ा के गवर्नर यूसुफ़ बिन उ़मर ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का जुरअत मन्दाना जवाब सुना तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया और उस ने हुक्म दिया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बेड़ियों में जकड़ कर क़ैद ख़ाने में डाल दिया जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाइदह बिन क़िदामा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا फ़रमाते हैं : "जब मुझे येह ख़बर मिली कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को गवर्नर पकड़ कर ले गया है तो मैं फ़ौरन उस के दरबार में पहुंचा, सिपाही बेड़ियां ले कर आया ही था कि दो दरबारी गवर्नर के पास अपने किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला करवाने आए लेकिन उस ने न तो उन के मुक़द्दमे की समाअ़त की और न ही उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा। उस की येह ख़्वाहिश थी कि किसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد क़ाज़ी का ओ़हदा क़बूल कर लें और वोही लोगों के दरमियान फ़ैसला करें लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुसल्सल इन्कार करते रहे। फिर किसी कहने वाले ने यूसुफ़ बिन उ़मर से कहा : "अगर तू ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد के जिस्म का सारा गोश्त भी उतार डाले तब भी येह तेरे लिये क़ाज़ी का ओ़हदा क़बूल न फ़रमाएंगे।" येह सुन कर यूसुफ़ बिन उ़मर ने हुक्म दिया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को आज़ाद कर दिया जाए।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(**मीठे मीठे इस्लामी !** سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين की क्या अनोखी शान थी कि उन्हें सख़्त से सख़्त सज़ा तो मन्ज़ूर थी लेकिन इक़्तिदार व हुकूमत की हवस न थी। वोह कभी भी दुन्यावी ओ़हदों की ख़्वाहिश न करते, बल्कि उन के नज़्दीक तो सब से बड़ा ओ़हदा येह था की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा नसीब हो जाए, उस की बारगाह में हमारी मक़्बूलिय्यत हो जाए। दुन्यावी शानो शौकत, रो'ब व दबदबा उन की नज़रों में कुछ भी न था वोह तो आ़जिज़ी और इन्किसारी के पैकर हुवा करते थे। उन का सब से अहम्म मक़्सद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दाइमी रिज़ा का हुसूल था। ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी दुन्या की मह़ब्बत से बचा कर अपनी मह़ब्बत अ़त़ा कर। और सच्ची आ़जिज़ी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। उन बुज़ुर्गों के सदक़े हम से हमेशा के लिये राज़ी हो जा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर 183 : तीन बहादुर भाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन यज़ीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के वालिदे गिरामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुल्के **शाम** से मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर दीने ह़क़ की सर बुलन्दी के मुक़द्दस जज़्बे से सरशार दिलों में शहादत का शौक़ लिये **रूम** के ईसाइयों से जिहाद करने रवाना हुवा।

उस अ़ज़ीम लश्कर में तीन सगे भाई भी शामिल थे। तीनों शुजाअ़त व बहादुरी, जंगी महारत, हुस्नो जमाल और ज़ोहदो तक़्वा में अपनी मिसाल आप थे। वोह जामे शहादत नोश करने के लिये हर वक़्त तय्यार रहते। लश्करे इस्लाम कुफ़्फ़ार की सरकूबी के लिये मन्ज़िलों पर मन्ज़िलें तै करता रूम की सरह़द की जानिब बढ़ता चला जा रहा था। उन तीनों भाइयों का अन्दाज़ ही निराला था वोह लश्कर से अ़लाहिदा हो कर चलते, जब लश्करे इस्लाम किसी जगह क़ियाम करता तो वोह लश्कर से कुछ दूर क़ियाम करते। अगर कहीं उन के हम पल्ला या उन से ज़ियादा त़ाक़त वर दुश्मन नज़र आ जाते तो येह तीन अफ़राद पर मुश्तमिल मुख़्तसर सा क़ाफ़िला आन की आन में उन्हें ख़त्म कर देता।

जब मुजाहिदीन का लश्कर रूमी सरह़द के क़रीब पहुंच गया तो अचानक मुसल्मानों के एक दस्ते पर रूमी सिपाहियों के एक दस्ते ने ह़म्ला कर दिया। रूमियों की ता'दाद बहुत ज़ियादा थी। घुमसान की जंग शुरूअ़ हो गई। इस्लाम के जियाले अपनी जानों से बे फ़िक्र मुजाहिदाना वार रूम की ईसाई फ़ौज से बर सरे पैकार थे। मुसल्मानों की ता'दाद ईसाइयों के मुक़ाबले में बहुत कम थी। अचानक रूमियों ने मुसल्मानों पर शदीद ह़म्ला कर दिया और बहुत से मुसल्मान जामे शहादत नोश कर गए और कुछ क़ैद कर लिये गए। जब उन तीन भाइयों को येह ख़बर मिली तो वोह तड़प उठे और एक दूसरे से कहने लगे : "अब हम पर लाज़िम है कि हम अपने मुसल्मान भाइयों की मदद को पहुंचें और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी जानों का नज़राना पेश करें।"

चुनान्चे इस्लाम के येह तीनों शेर ग़ैज़ो ग़ज़ब की ह़ालत में मैदाने जंग की त़रफ़ रवाना हुए। वहां मुसल्मान बहुत सख़्ती की ह़ालत में थे। उन्हों ने वहां पहुंच कर ना'रए तक्बीर बुलन्द किया और कहा : "ऐ हमारे मुसल्मान भाइयो ! अब तुम न घबराओ, हम तुम्हारी मदद को पहुंच चुके हैं। सब के सब जम्अ़ हो जाओ और हमारे पीछे पीछे रहो। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन रूमी कुत्तों को हम तीनों शेर ही काफ़ी हैं।

येह सुन कर मुसल्मानों का जज़्बा बढ़ा और वोह एक जगह जम्अ़ होने शुरूअ़ हो गए। उन तीनों भाइयों ने आंधी व तूफ़ान की त़रह़ रूमियों की फ़ौज पर ह़म्ला किया, जिस त़रफ़ जाते लाशों के ढेर लगा देते, उन की तलवारों और नेज़ों ने ऐसे जंगी जौहर दिखाए कि रूमियों को इस मा'रिका में मुंह की खानी पड़ी और वोह मैदान छोड़ कर भाग गए और अपने लश्कर से जा मिले।

वोह रूमी जो इस बात पर ख़ुश हो रहे थे कि आज हम मुसल्मानों पर ग़ालिब आ जाएंगे जब उन पर इस्लाम के बिफरे हुए उन तीन शेरों ने ह़म्ला किया रूमी, लोमड़ी की त़रह़ मैदाने जंग से भाग गए। जब रूम के ईसाई बादशाह को येह ख़बर मिली कि इस्लाम के तीन शेरों ने जंग का पांसा ही पलट दिया तो

बादशाह को उन की बहादुरी पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और उस ने ए'लान किया : "जो कोई उन तीनों में से किसी को गरिफ़्तार कर के लाएगा मैं उसे अपने ख़ास ओ़हदे दारों में शामिल कर लूंगा और उसे गवर्नर बनाऊंगा।" जब रूमियों ने येह ए'लान सुना तो रूम के बड़े बड़े बहादुरों ने उन तीन नौ जवानों को क़ैद करने का इरादा किया और बहुत से लोग उन जां निसारों को क़ैद करने के लिये मैदाने कारज़ार की त़रफ़ गए।

दूसरे दिन दोनों फ़ौजों में घुमसान की जंग जारी थी। येह तीनों भाई सब में नुमायां थे जिस त़रफ़ रुख़ करते रूमियों की शामत आ जाती। उन की गरदनें तन से जुदा हो कर गिर पड़तीं। जब लालची रूमियों ने देखा कि येह तीनों नौ जवान अपनी जान की परवाह किये बिग़ैर मसरूफ़े जंग हैं तो बहुत से रूमियों ने मिल कर पीछे से उन तीनों भाइयों को घेरे में ले लिया और फन्दा डाल कर उन शेरों को क़ैद कर के बादशाहे रूम के दरबार में ले गए। जब बादशाह ने उन तीनों को देखा तो कहने लगा : "इन से बढ़ कर न तो हमारे लिये कोई माले ग़नीमत है और न ही इन की गरिफ़्तारी से बढ़ कर कोई फ़त्ह़।"

फिर उन तीनों मुजाहिदीन को "**क़ुस्तुन्तुनिया**" ले जाया गया और बादशाह ने उन को दरबार में बुला कर कहा : "तुम्हारी बहादुरी क़ाबिले ता'रीफ़ है लेकिन तुम ने हमारे ख़िलाफ़ जंग की जुरअत की, लिहाज़ा तुम्हारी सज़ा मौत के सिवा कुछ नहीं। हां ! अगर तुम अपने दीने इस्लाम को छोड़ कर नसरानी हो जाओ तो हम तुम्हारी जान बख़्शी कर देंगे। तुम्हें शाही दरबार में आ'ला मक़ाम दिया जाएगा और मैं अपनी शहज़ादियों की तुम से शादी कर दूंगा। बस तुम दीने इस्लाम को छोड़ कर हमारा दीने (ईसवी) क़बूल कर लो।" बादशाह की येह बात सुन कर इस्लाम के उन अ़ज़ीम मुजाहिदों ने बहुत जुरअत मन्दी का मुज़ा-हरा किया और बड़ी बे ख़ौफ़ी और बहादुरी से जवाब दिया : "हम अपने दीन को कभी भी नहीं छोड़ सकते इस दीन की ख़ात़िर सर कटाना हमारे लिये बहुत बड़ी सआ़दत है। तुम हमारे साथ जो चाहे करो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे पाए इस्तिक़्लाल में ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ न आएगा।" येह कह कर तीनों भाई ब यक वक़्त शाहे रूम के दरबार में खड़े हो कर अपने प्यारे नबी, दो आ़लम के वाली, सुल्त़ाने दो जहां, रह़मते आ़-लमियां, **नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में इस्तिग़ासा करते हुए "**या मुह़म्मदाह ! या मुह़म्मदाह ! या मुह़म्मदाह** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !" की सदाएं बुलन्द करने लगे।

जब बादशाह ने येह देखा तो पूछा : "येह क्या कह रहे हैं ?" लोगों ने बताया : "येह अपने नबी, मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस्तिग़ासा कर रहे हैं।"

उस बद बख़्त बादशाह को बहुत ग़ुस्सा आया कि इन्हें अपने नबी से इतनी मह़ब्बत है कि अपनी जान की परवाह तक नहीं बल्कि ऐसी ह़ालत में भी इन की तवज्जोह अपने नबी की त़रफ़ है फिर उस बद

बख़्त बादशाह ने उन मुजाहिदीन को मुख़ात़ब करते हुए कहा : "कान खोल कर सुन लो ? अगर तुम ने मेरी बात न मानी और दीने ईसवी क़बूल न किया तो मैं तुम्हें ऐसी दर्दनाक सज़ा दूंगा जिस का तुम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। अभी मौक़अ़ है कि तुम मेरी पेशकश क़बूल कर लो और ख़ूब ऐ़शो इ़श्रत की ज़िन्दगी गुज़ारो।" उन आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ग़ैरते ईमानी का सुबूत देते हुए बड़ी बहादुरी से जवाब दिया : "हम ऐसी ऐ़शो इ़श्रत भरी ज़िन्दगी पर ला'नत भेजते हैं जो हमें इस्लाम की अ़ज़ीम दौलत से महरूम कर दे। तुम लाख कोशिश कर लो लेकिन हमारे दिलों में इस्लाम की जो शम्अ़ रोशन है तुम उसे कभी भी नहीं बुझा सकते, हमारे दिलों में हमारे नबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जो मह़ब्बत है तुम उसे हमारे दिलों से कभी भी नहीं निकाल सकते। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानियत के कभी भी मुन्किर न होंगे। हमें अपनी जानों की परवाह नहीं, तुम्हें जो करना है कर लो।"

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की ह़-र-कत पे ख़न्दा ज़न

फूंकों से येह चराग़ बुझाया न जाएगा

बादशाह को बहुत ग़ुस्सा आया और उस ने अपने जल्लादों को हुक्म दिया कि तीन बड़ी बड़ी देगों में तेल डाल कर नीचे आग जला दो। जब तेल ख़ूब गर्म हो जाए और खौलने लगे तो मुझे इत्तिलाअ़ कर देना। जल्लाद हुक्म पाते ही दौड़े और तीन देगों में तेल डाल कर उन के नीचे आग लगा दी। मुसल्सल तीन दिन तक वोह देगें आग पर रखी रहीं। उन मुजाहिदीन को रोज़ाना नसरानियत की दा'वत दी जाती और लालच दिया जाता कि तुम्हें शाही ओ़हदा भी दिया जाएगा और शाही ख़ानदान में तुम्हारी शादी भी करा दी जाएगी लेकिन उन के क़दम बिल्कुल न डग-मगाए। चौथे दिन बादशाह ने फिर उन्हें लालच और धमकी दी लेकिन वोह अपने मज़्मूम इरादे में काम्याब न हो सका। अब बादशाह को बहुत ग़ुस्सा आया और उस ने सब से बड़े भाई को मुख़ात़ब कर के कहा : "अगर तूने मेरी बात न मानी तो तुझे इस खौलते हुए तेल में डाल दूंगा।" मगर उस आ़शिक़े रसूल, जुरअत मन्द मुजाहिद पर बादशाह की धमकी का कुछ असर न हुवा। बादशाह ने जल्लादों को हुक्म दिया कि इसे उबल्ते हुए तेल में डाल दिया जाए। हुक्म पाते ही जल्लाद आगे बढ़े और उन्हों ने उस मर्दे ह़क़ को उबल्ते हुए तेल में डाल दिया। आन की आन में उस राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ीम मुजाहिद का सारा गोश्त जल गया और तेल में उस की हड्डियां नज़र आने लगीं। ब ज़ाहिर तो येह नज़र आ रहा था कि उस का गोश्त जल गया लेकिन दर ह़क़ीक़त उस मुजाहिद ने उस गर्म तेल में ग़ोता लगाया और जन्नत की नहरों में पहुंच गया और उसे दाइमी ह़यात की दौलत नसीब हो गई और उस की जामे शहादत नोश करने की ख़्वाहिश पूरी हो गई।

फिर बादशाह ने उस से छोटे भाई को बुलाया और उसे भी लालच और धम्कियां दीं और कहा : "अगर तुम ने मेरी बात न मानी तो तुम्हारा ह़श्र भी तुम्हारे भाई जैसा ही होगा।" उस मर्दे मुजाहिद ने जवाब दिया : "हम तो कब से जामे शहादत नोश करने के लिये बेताब हैं। हमें न तो दौलत व शोहरत चाहिये और न ही मुल्क व हुकूमत बल्कि हमारा मत़्लूब तो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जान दे देना है। हमें मौत तो

बखु़शी क़बूल है लेकिन दीने इस्लाम से इन्ह़िराफ़ ना मुम्किन।"

बिल आखि़र उस मुजाहिद की दिलेराना गुफ़्त-गू सुन कर बादशाह ने हुक्म दिया : "इसे भी इस के भाई के पास पहुंचा दो।" हुक्म पाते ही ज़ालिम जल्लाद आगे बढ़े और उस अ़ज़ीम मुजाहिद को भी उबल्ते हुए तेल में डाल दिया और उस की रूह़ भी **आ़लमे बाला** की त़रफ़ परवाज़ कर गई, उस का ख़्वाब भी शरमिन्दए ता'बीर हो गया क्यूं कि उस की जान राएगां न गई बल्कि दीने इस्लाम की सर बुलन्दी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर उस ने जामे शहादत नोश किया। बहर ह़ाल जब बादशाह ने उन मुजाहिदीन का सब्रो इस्तिक़्लाल, बे ख़ौफ़ी व जुरअत मन्दी और दीने इस्लाम पर इस्तिक़ामत देखी तो उसे अपने इस फ़े'ल पर बड़ी नदामत हुई और कहने लगा : "मुसल्मानों से ज़ियादा बहादुर और अ़ज़ीम क़ौम मैं ने आज तक नहीं देखी।" फिर बादशाह सब से छोटे मुजाहिद की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा जिस का चेहरा इ़बादत व रियाज़त के नूर से चमक रहा था और वोह बिल्कुल वक़ार व इत़्मीनान से खड़ा था। बादशाह ने उसे अपने पास बुलाया, उसे ख़ूब लालच दिया और हर त़रह़ के ह़ीले इस्ति'माल कर लिये कि किसी त़रह़ येह अपने दीन से मुन्ह़रफ़ हो जाए लेकिन बादशाह की कोई तदबीर भी उस नौ जवान के ईमान को मु-तज़ल्ज़ल न कर सकी। बादशाह को फिर ग़ुस्सा आने लगा वोह उस मुजाहिद के ख़िलाफ़ भी कुछ फ़ैसला करना चाहता था कि एक गवर्नर उस के पास आया और कहने लगा : "बादशाह सलामत ! अगर मैं इस नौ जवान को दीने इस्लाम से मुन्ह़रफ़ कर दूं तो मुझे क्या इन्आ़म मिलेगा ?" बादशाह ने कहा : "मैं तुझे मज़ीद तरक़्क़ी दे दूंगा और तुझे ख़ूब इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाएगा मगर येह तो बताओ कि तुम इस नौ जवान को किस त़रह़ बहकाओगे। जब येह मौत से भी नहीं डरता तो फिर ऐसी कौन सी चीज़ है जो इस मुजाहिद को इस के दीन से फिसला देगी ?" वोह बे ग़ैरत गवर्नर बादशाह के क़रीब गया और सरगोशी करते हुए कहने लगा : "बादशाह सलामत ! आप तो जानते ही हैं कि येह अ़रब लोग ह़सीन औ़रतों के बहुत शैदाई होते हैं और उन की त़रफ़ बहुत जल्द माइल हो जाते हैं। बादशाह सलामत ! पूरे रूम में कोई लड़की मेरी बेटी से ज़ियादा ह़सीन नहीं। येह आप अच्छी त़रह़ जानते हैं कि मेरी बेटी के हुस्नो जमाल के चर्चे पूरे रूम में हो रहे हैं। आप इस नौ जवान को मेरे ह़वाले कर दें मैं इसे अपने घर ले जाऊंगा। मुझे उम्मीद है कि मेरी बेटी इसे ज़रूर अपने हुस्नो जमाल के ज़रीए़ घाइल कर देगी और येह अपने दीन से ज़रूर मुन्ह़रफ़ हो जाएगा।"

बादशाह ने कहा : "ठीक है, मैं तुम्हें चालीस दिन की मुद्दत देता हूं अगर तुम इसे ईसाई बनाने में काम्याब हो गए तो तुम्हें इतना बड़ा इन्आ़म दिया जाएगा जिस का तुम तसव्वुर भी नहीं कर सकते।"

चुनान्चे वोह बे ग़ैरत गवर्नर जो मुल्क व दौलत के लालच में अपनी बेटी की इ़ज़्ज़त का सौदा करने के लिये तय्यार हो गया था, उस अ़ज़ीम नौ जवान को ले कर अपने घर की जानिब चल दिया। घर जा कर गवर्नर ने उस नौ जवान को अपने घर के सब से अच्छे कमरे में रिहाइश दी और अपनी बेटी को सारा वाक़िआ़ बताया। उस की बेटी ने कहा : "अब्बा जान ! आप बे फ़िक्र हो जाएं, मैं इस नौ जवान के

लिये काफ़ी हूं, मैं चन्द ही दिनों में इसे अपने दामें महब्बत में फंसा लूंगी।" चुनान्चे गवर्नर ने अपनी बेटी को उस नौ जवान के पास भेज दिया। वोह हसीन दोशीज़ा रोज़ाना अपने हुस्नो जमाल का जाल डाल कर उस शर्मो हया के पैकर अ़ज़ीम मुजाहिद नौ जवान को फंसाना चाहती लेकिन सद हज़ार आफ़रीन उस नौ जवान की पाक दामनी और शर्मो हया पर ! उस ने कभी भी नज़र उठा कर उस फ़ितने बाज़ हसीना को न देखा जिस की एक झलक देखने को रूम के हज़ारों रूमियों की निगाहें तरसती थीं। बस येह सब दीने इस्लाम का फ़ैज़ान था और उस नौ जवान पर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे करम थी कि जिन की निगाहें हर वक़्त हया से झुकी रहती थीं।

नीची नज़रों की शर्मो हया पर दुरूद
ऊंची बीनी की रिफ़अ़त पे लाखों सलाम

अल ग़रज़ ! उस लड़की ने इस्लाम के उस मुजाहिद को बहकाने की ख़ूब कोशिश की लेकिन वोह सारा दिन नमाज़ पढ़ता रहता। इसी त़रह़ पूरी रात तिलावत करते करते और क़ियाम व सुजूद में गुज़र जाती। उस नौ जवान ने कभी भी लड़की की त़रफ़ न देखा, बस हर वक़्त यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मगन रहता। इसी त़रह़ काफ़ी दिन गुज़र गए। मुक़र्ररा मुद्दत ख़त्म होने वाली थी। बादशाह ने उस गवर्नर को बुलाया और पूछा : "उस नौ जवान का क्या ह़ाल है ? क्या उस ने दीने इस्लाम छोड़ दिया है ?" गवर्नर ने कहा : "मैं ने अपनी बेटी को इसी काम पर लगाया हुवा है, मैं उस से मा'लूम कर लेता हूं कि उसे कहां तक काम्याबी ह़ासिल हुई है ?"

गवर्नर अपनी बेटी के पास आया और पूछा : "बेटी ! उस नौ जवान का क्या ह़ाल है ?" लड़की ने जवाब दिया : "अब्बा जान ! येह तो हर वक़्त गुमसुम रहता है। शायद इस की वजह येह है कि इस शहर में इस के दो भाइयों को मार दिया गया है, येह उन की याद में ग़मगीन रहता है और मेरी त़रफ़ बिल्कुल मु-तवज्जेह नहीं होता। अगर ऐसा हो जाए कि हमें इस शहर से किसी दूसरे शहर में मुन्तक़िल कर दिया जाए और बादशाह से मज़ीद कुछ दिनों की मोहलत ले ली जाए, नए शहर में जाने से इस नौ जवान का ग़म कम हो जाएगा। फिर मैं इसे ज़रूर अपनी त़रफ़ माइल कर लूंगी।

अपनी बेटी की येह बात सुन कर वोह बे ग़ैरत गवर्नर बादशाह के पास गया और उसे सारी सूरते ह़ाल बता कर मुद्दत में त़वालत और इन दोनों के लिये किसी दूसरे शहर में रिहाइश के इन्तिज़ाम का मुत़ा-लबा किया। बादशाह ने दोनों बातें मन्ज़ूर कर लीं। उन दोनों को एक दूसरे शहर में भेज दिया और कुछ दिनों की मज़ीद मोहलत दे दी। अब एक ही कमरे में एक ह़सीनो जमील दोशीज़ा और येह मुत्तक़ी व परहेज़ गार नौ जवान एक साथ रहने लगे। वोह लड़की रोज़ाना नए नए अन्दाज़ से बनाव सिंघार कर के नौ जवान को माइल करने की कोशिश करती लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वोह नेक बन्दा नमाज़ व तिलावत में मश्ग़ूल रहता, उस की रातें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आहो ज़ारी और नियाज़ मन्दी में गुज़र जातीं। इसी

त़रह़ वक़्त गुज़रता रहा मुक़र्ररा मुद्दत ख़त्म होने में सिर्फ़ तीन दिन बाक़ी थे। उस लड़की ने जब देखा कि गुनाह के तमाम तर मवाक़ेअ़ मुयस्सर होने के बा वुजूद येह अ़ज़ीम नौ जवान अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से और अपने दीने इस्लाम के अह़काम पर अ़मल करने के लिये मेरी त़रफ़ नज़र उठा कर भी नहीं देखता और अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में मगन रहता है तो वोह लड़की उस अ़ज़ीम मुजाहिद से बहुत मु-तअस्सिर हुई और दीने इस्लाम की अ़-ज़मत उस के दिल में बैठ गई।

चुनान्चे एक रात वोह उस नौ जवान के पास आई और कहने लगी : "ऐ शर्मो ह़या के पैकर अ़ज़ीम व पाक दामन नौ जवान! मैं तुम्हारी इ़बादत व रियाज़त और पाक दामनी से बहुत मु-तअस्सिर हुई हूं और अब मैं तुम्हारे दीन से मह़ब्बत करने लगी हूं कि जिस की ता'लीमात ही ऐसी हैं कि किसी ग़ैर औ़रत को न देखा जाए तो जिस दीन में ऐसे अच्छे अच्छे अह़कामात हों यक़ीनन वोही दीन ह़क़ है। मैं आज और अभी ईसाइय्यत से तौबा करती हूं और तुम्हारे दीन में दाख़िल होती हूं। मुझे कलिमा पढ़ा कर अपने दीन में दाख़िल कर लीजिये।" फिर उस लड़की ने सच्चे दिल से ईसाइय्यत से तौबा की और कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गई।

अब नौ जवान ने उस लड़की से कहा : "हमें इस मुल्क से निकल जाना चाहिये वरना जैसे ही तुम्हारे इस्लाम की ख़बर बादशाह को पहुंचेगी वोह तुम्हारी जान का दुश्मन हो जाएगा। क्या कोई ऐसा त़रीक़ा है कि हम इस मुल्क से दूर चले जाएं?" उस लड़की ने कहा : "आप बे फ़िक्र रहें, मैं आज रात ही सारा इन्तिज़ाम कर लूंगी। आप तय्यार रहना हम आज रात ही यहां से इस्लामी मुल्क की त़रफ़ रवाना हो जाएंगे।" जब रात ने अपने पर फैलाए तो नौ जवान बिल्कुल तय्यार था क्यूं कि आज रात उसे अपने मुल्क की त़रफ़ रवाना होना था। कुछ देर बा'द वोह लड़की आई और कहने लगी : "जल्दी चलिये! बाहर हमारे लिये दो घोड़े तय्यार हैं, हमें फ़ौरन यहां से निकलना है।" नौ जवान के तरग़ीब दिलाने पर गवर्नर की उस लड़की ने जो मुसल्मान हो चुकी थी, अपने आप को सर से ले कर पाउं तक चादर में छुपाया और नौ जवान के पीछे पीछे चलने लगी। दोनों घोड़ों पर सुवार हुए और इस्लामी सरह़द की त़रफ़ बढ़ने लगे।

वोह मुजाहिद आगे आगे यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़, बड़ी तेज़ रफ़्तारी से जानिबे मन्ज़िल बढ़ता जा रहा था। पीछे येह नौ मुस्लिम लड़की थी। चलते चलते जब काफ़ी रात बीत गई तो एक मक़ाम पर उन्हें घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ सुन कर वोह नौ मुस्लिम लड़की घबरा गई। उस ने समझा शायद दुश्मन हमारे तआ़क़ुब में आ रहे हैं, वोह कहने लगी : "ऐ नेक सीरत नौ जवान! उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करो जिस पर हम ईमान लाए हैं कि वोह हमें हमारे दुश्मनों से छुटकारा अ़त़ा फ़रमा दे।"

अभी लड़की येह बात कह ही रही थी कि चन्द शह सुवार उन के क़रीब आ गए। उन्हें देख कर येह दोनों बहुत ह़ैरान हुए क्यूं कि आने वाले शह सुवार उस नौ जवान के भाई थे और उन के साथ चन्द और नूरानी चेहरों वाले शह सुवार भी थे। जब नौ जवान ने अपने भाइयों को देखा तो फ़र्ते मह़ब्बत से उन की

त़रफ़ लपका, उन्हें सलाम किया और पूछा : "ऐ मेरे भाइयो ! तुम्हारे साथ क्या मुआ़-मला हुवा ?" उन्हों ने जवाब दिया : "जब हमें उबल्ते हुए तेल में ग़ोत़ा दिया गया तो हम सीधे जन्नतुल फ़िरदौस में जा कर निकले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें अपना कुर्बे ख़ास अ़त़ा फ़रमाया। अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें तुम्हारी त़रफ़ भेजा है और हमारे साथ मलाएका की एक जमाअ़त भी आई है। हमें हुक्म हुवा है कि तेरी शादी इस नौ मुस्लिम ख़ुश क़िस्मत लड़की से करवा दें। हम तुम्हारी शादी कराने आए हैं।" चुनान्चे फ़िरिश्तों की नूरानी बारात की मौजूदगी में उस अ़ज़ीम नौ जवान और ख़ुश क़िस्मत नौ मुस्लिम का निकाह़ कर दिया गया। फिर वोह दोनों भाई मलाएका की जमाअ़त के साथ एक सम्त रवाना हो गए।

दूल्हा और दुल्हन ह़सरत भरी निगाहों से उस नूरानी क़ाफ़िले को देखते रहे। जब येह क़ाफ़िला नज़रों से ओझल हो गया तो उन्हों ने भी मुल्के शाम की त़रफ़ कूच किया। मुल्के शाम पहुंच कर उन्हों ने वहीं मुस्तक़िल रिहाइश इख़्तियार कर ली। लोगों में उन का वाक़िआ़ बहुत मशहूर हो चुका था और पूरे शाम में उस नौ जवान की पाक दामनी, उस के भाइयों की शुजाअ़त व बहादुरी, उस नेक सीरत नौ मुस्लिम लड़की की क़ुरबानी और उस की दीने इस्लाम से मह़ब्बत के चर्चे होने लगे और आज तक उन का वाक़िआ़ लोगों में मशहूर है।

फिर किसी शाइ़र ने उन ख़ुश नसीब मियां बीवी के बारे में चन्द अश्आ़र कहे, जिन में से एक शे'र येह भी था :

سَيُعْطَى الصَّادِقِيْنَ بِفَضْلِ صِدْقٍ　　نَجَاةٌ فِى الْحَيَاةِ وَ فِى الْمَمَاتِ

तरजमा : अ़न्क़रीब सादिक़ीन को उन के सिद्क़ के सबब दुन्या और आख़िरत में नजात दी जाएगी।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

(शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाला **"हुसैनी दूल्हा"** में येह वाक़िआ़ नक़्ल करने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं : **"मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! उन तीनों शामी भाइयों ने ईमान पर इस्तिक़ामत का कैसा ज़बर दस्त मुज़ा-हरा किया, उन के दिलों में ईमान किस क़दर रासिख़ हो चुका था, येह इ़श्क़ के सिर्फ़ बुलन्द बांग दा'वे करने वाले नहीं ह़क़ीक़ी मा'ना में मुख़्लिस आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم थे। दोनों भाई जामे शहादत नोश कर के जन्नतुल फ़िरदौस की सरमदी ने'मतों के ह़क़दार बन गए और तीसरे ने रूम की ह़सीना की त़रफ़ देखा तक नहीं और दिन रात रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ रहा और यूं जो ब निय्यते शिकार आई थी ख़ुद असीर बन कर रह गई ! इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि **मुश्किलात में सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **से मदद चाहना और या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **पुकारना अहले ह़क़ का क़दीम त़रीक़ा रहा है।"**

या रसूलल्लाह के ना'रे से हम को प्यार है

दो जहां में अपना बेड़ा पार है اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

उस शामी नौ जवान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल और उस की ईमान पर इस्तिक़ामत मरह़बा ! ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! निगाहों के सामने दो प्यारे प्यारे भाई जामे शहादत नोश कर गए मगर उस के पाए सबात को ज़रा भी लग्ज़िश नहीं आई न धम्कियां डरा सकीं न ही क़ैदो बन्द की सुऊ़बतें उसे अपने अ़ज़्म से हटा सकीं। ह़क़्क़ो सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की काली काली घटाओं से बिल्कुल न घबराया। तूफ़ाने बला के सैलाब से उस के पाए सबात में जुम्बिश तक न हुई। ख़ुदा व मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का शैदाई दुन्या की आफ़तों को बिल्कुल ख़ात़िर में न लाया। बल्कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहुंचने वाली हर मुसीबत का उस ने ख़ुश दिली के साथ ख़ैर मक़्दम किया, नीज़ दुन्या के माल और हु़स्नो जमाल का लालच भी उस के अ़ज़ाइम से उस को न हटा सका और उस मर्दे ग़ाज़ी ने इस्लाम की ख़ात़िर हर त़रह़ की राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी।

येह ग़ाज़ी येह तेरे पुर असरार बन्दे — जिन्हें तूने बख़्शा है ज़ौक़े ख़ुदाई
है ठोकर से दो नीम सह़रा व दरिया — सिमट कर पहाड़ इन की हैबत से राई

आख़िरे कार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रिहाई के भी ख़ूब अस्बाब फ़रमाए। वोह रूमी लड़की मुसल्मान हो गई और दोनों रिश्तए अज़्दवाज में मुन्सलिक हो गए।" (हुसैनी दूल्हा, स. 21 ता 23)

(**ऐ हमारे पाक परवर्द गार** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी शौक़े शहादत के जज़्बे में इख़्लास व इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। दीन की ख़ात़िर अपना तन, मन, धन सब कुछ क़ुरबान करने की अ़ज़ीम सआ़दत अ़त़ा फ़रमा। दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये हमें ख़ूब ख़ूब तगो दौ करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। ऐ हमारे मौला عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी दीने इस्लाम पर साबित क़दम रख। ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में शहादत की मौत अ़त़ा फ़रमा। हमें अपनी राह में सर कटाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। उन अ़ज़ीम मुजाहिदों के सदक़े बद निगाही, गन्दी सोच और गन्दे अफ़्आ़ल से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की झुकी झुकी बा ह़या आंखों का वासित़ा हमें भी शर्मो ह़या से हर वक़्त निगाहें नीची रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ *रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां*

उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो

हिकायत नम्बर 184 : फु-क़रा व मसाकीन की ई़द हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद रक्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं, मैं ने एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को देखा कि आप ज़ारो क़ित़ार रो रहे हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप को किस चीज़ ने रुलाया है ?" इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या से नेक लोग रुख़्सत हो गए और अब सूरते ह़ाल येह है कि लोग दुन्यावी ने'मतों के ह़रीस हो गए हैं, दीन से दूरी इख़्तियार कर ली है। लोगों ने आख़िरत को बिल्कुल भुला दिया है और दुन्या में मगन हो कर रह गए हैं।" येह दर्द भरे कलिमात कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उठे और बाज़ार की त़रफ़ चल दिये। मैं भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ हो लिया। बाज़ार में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाई की आटे की दुकान थी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दुकान पर तशरीफ़ ले गए। अपने भाई को सलाम किया और बैठ गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाई ने सलाम का जवाब दिया और कहा : "भाईजान ! आप कुछ देर यहीं दुकान में बैठें, मुझे कुछ ज़रूरी काम है, मैं उस से फ़ारिग़ हो कर अभी आता हूं, आप दुकान का ख़याल रखियेगा।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भाई अपने काम से चला गया।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दुकान पर बैठे हुए थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने देखा कि कुछ और फु-क़रा व मसाकीन बाज़ार में मौजूद हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें बुलाया और आटा देना शुरूअ़ कर दिया। फु-क़रा व मसाकीन आते रहे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बिग़ैर किसी इ़वज़ के उन को आटा देते रहे यहां तक कि दुकान में मौजूद तमाम आटा फु-क़रा व मसाकीन में तक़्सीम कर दिया।

जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भाई आया और उस ने सूरते ह़ाल देखी तो पूछा : "आटा कहां गया ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "वोह आटा मैं ने फु-क़रा व मसाकीन में तक़्सीम कर दिया।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भाई कहने लगा : "भाईजान ! आप ने तो मुझे कंगाल कर दिया है।"

भाई की येह बात सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां से उठे और मस्जिद का रुख़ किया फिर इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गए। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाई ने गल्ला खोला तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि गल्ला दराहिम से भरा हुवा है। जब ह़िसाब लगाया तो उस गल्ले में इतने दिरहम थे कि एक दिरहम के बदले सत्तर दिरहम नफ़्अ़ हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भाई बहुत ह़ैरान हुवा और दिल में कहने लगा : "येह सब मेरे भाई की ब-र-कत से हुवा है।"

चन्द दिन बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भाई आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आया और सलाम अ़र्ज़ किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया और पूछा : "भाई कैसे आना हुवा ?" उस ने कहा : "भाईजान ! कल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरी दुकान पर कुछ देर के लिये तशरीफ़ लाएं तो येह मेरे लिये सआ़दत होगी।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम येह बात इस लिये कह रहे हो कि उस दिन

तुम्हें बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ हुवा। अब मैं तुम्हारी दुकान पर नहीं आऊंगा और हर मर्तबा ऐसे मुआ़-मलात नहीं होते, इस में मेरा कोई कमाल नहीं।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "पाक है मेरा परवर्द गार عَزَّ وَجَل, तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं, वोह अपनी मख़्लूक़ को जैसे चाहे रिज़्क़ अ़ता फ़रमाए, जिस पर चाहे जूदो अ़ता की बारिश फ़रमाए, वोह मालिको मुख़्तार है और हम उस के आ़जिज़ बन्दे हैं।" फिर फ़रमाया : "अगर हम अल्लाह عَزَّ وَجَل से दुन्यावी ने'मतों का सुवाल करते तो वोह हमें मन्अ़ नहीं फ़रमाता लेकिन हम ने तो अपने परवर्द गार عَزَّ وَجَل से येह सुवाल किया है कि "वोह हमें दुन्यावी मालो दौलत से मह़फ़ूज़ रखे। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلّ ! उस पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلّ ने हमारी येह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली और हमें दुन्यावी मालो दौलत की ह़िर्स से मह़फ़ूज़ रखा।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 185 : दो चादरों वाला नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अह़मद ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को येह फ़रमाते हुए सुना : "मैं ने एक नौ जवान को देखा जिस ने दो चादरें अपने जिस्म पर ली हुई थीं, एक का तहबन्द बनाया हुवा था और दूसरी कन्धों और बक़िय्या जिस्म पर डाली हुई थी। वोह ख़ूब सूरत नौ जवान ख़ानए का'बा के गिर्द त़वाफ़ कर रहा था। काफ़ी देर तक वोह त़वाफ़ करता रहा फिर नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी, वोह नौ जवान दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बे ख़बर अपने रब عَزَّ وَجَل की इ़बादत में मसरूफ़ था। उस के नूरानी चेहरे और इ़बादत व रियाज़त को देख कर मेरे दिल में उस की अ़-ज़मत बैठ गई और वोह मेरी नज़रों में बहुत ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ हो गया। मैं रोज़ाना उस नौ जवान को इसी त़रह़ त़वाफ़ व नमाज़ में मश्ग़ूल देखता। मेरे पास चार सो दिरहम थे। मैं उन्हें ले कर उस नौ जवान के पास गया, वोह मक़ामे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के पास बैठा हुवा था।

मैं ने वोह तमाम दिरहम उस के क़रीब रख दिये और कहा : "ऐ मेरे भाई ! येह ह़क़ीर सा नज़राना मेरी त़रफ़ से क़बूल कर लो और इस रक़म के ज़रीए अपनी ज़रूरिय्यात पूरी करो।" इस पर वोह नौ जवान खड़ा हुवा और तमाम दिरहम उठा कर इधर उधर रख दिये और कहने लगा : "ऐ इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَل की राह में सत्तर हज़ार दीनार ख़र्च किये हैं फिर मुझे येह ह़ालत और इस जगह इ़बादत की सआ़दत नसीब हुई है और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلّ की इ़बादत से दूर करना चाहते हैं और वोह भी इतनी कम रक़म के इ़वज़।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : " उस नौ जवान की येह बात सुन कर मैं शर्म से पानी पानी हो गया और अपने आप को सब से ज़ियादा ह़क़ीर समझने लगा, फिर मैं ने वोह दिरहम जम्अ़ करना शुरूअ़ कर दिये। मैं बिखरे हुए दराहिम उठा रहा था और वोह नौ जवान मेरी त़रफ़ देख रहा था। आज मेरी नज़रों में उस से ज़ियादा कोई मुअ़ज़्ज़ज़ न था। वोह मुझे सब से ज़ियादा मुत्तक़ी और परहेज़ गार नज़र आ रहा था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 186 : एक ग़रीबुल वत़न

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को येह फ़रमाते हुए सुना : "मैं तक़रीबन सत्तरह साल तक जंगलों और सह़राओं में फिरता रहा और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता रहा। इन सत्तरह सालों में मुझे जो सब से ज़ियादा अ़जीब वाक़िआ़ पेश आया वोह येह था : "एक मर्तबा मैं ने जंगल में एक ऐसे शख़्स को देखा जिस के दोनों हाथ पाउं कटे हुए थे और वोह घिसट घिसट कर चल रहा था। इस के इ़लावा भी वोह बहुत सी मुश्किलात से दो चार था। मैं उसे देख कर ह़ैरान हुवा और मुझे उस पर तरस आने लगा, मैं ने क़रीब जा कर उसे सलाम किया, उस ने मेरा नाम ले कर जवाब दिया। उस के मुंह से अपना नाम सुन कर मुझे बड़ी ह़ैरत हुई, मैं ने उस से पूछा : "आप से येह मेरी पहली मुलाक़ात है, फिर आप ने मेरा नाम कैसे जान लिया ?"

तो वोह कहने लगा : "जो ज़ात तुझे मेरे पास लाई है उसी ने मुझे तुम्हारी पहचान करा दी है।" मैं ने कहा : "आप ने बिल्कुल बजा फ़रमाया, वाक़ेई मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हर चाहे पर क़ादिर है।" फिर मैं ने उस से पूछा : "आप कहां से आए हैं और कहां जाने का इरादा है ?" उस ने कहा : "मैं शहरे "**बुख़ारा**" से आ रहा हूं और "**ह़-रमैने त़य्यिबैन**" की त़रफ़ जा रहा हूं।" येह सुन कर मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि न इस शख़्स के हाथ हैं न पाउं। फिर येह बुख़ारा से यहां तक कैसे पहुंचा और **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا तक जाना चाहता है जो यहां से काफ़ी फ़ासिले पर है, येह वहां तक तने तन्हा कैसे पहुंचेगा ? मैं इन्हीं ख़यालात में गुम बड़ी ह़ैरत भरी नज़रों से उसे देख रहा था।

उस शख़्स ने मेरी त़रफ़ जलाल भरी निगाह डाली और कहने लगा : "ऐ इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! क्या तुझे इस बात पर तअ़ज्जुब हो रहा है कि क़ादिर व क़दीर परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ मुझ जैसे ज़ईफ़ व अपाहज को यहां तक ले आया।" इतना कहने के बा'द उस शख़्स की आंखों से

सैले अश्क रवां हो गया और वोह ज़ारो क़िता़र रोने लगा। मैं ने उसे कहा : "आप बिल्कुल परेशान न हों, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हर शख़्स के साथ है, वोह किसी को मायूस नहीं करता।"

फिर मैं उसे वहीं छोड़ कर आगे रवाना हो गया, मेरा भी उस साल ह़ज का इरादा था जब मैं **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पहुंचा और त़वाफ़ के लिये ख़ानए का'बा में ह़ाज़िर हुवा तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि वोही अपाहज शख़्स मुझ से पहले ख़ानए का'बा पहुंचा हुवा है और मश्ग़ूले त़वाफ़ है, वोह घिसट घिसट कर त़वाफ़ कर रहा था।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हिकायत नम्बर : 187 फ़ाह़िशा औरत और बा ह़या नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّب ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَظِيْم से नक़्ल फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल में एक नौ जवान था जो अहले दुन्या से अलग थलग एक इ़बादत ख़ाने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करता था। वोह हर वक़्त यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहता। कुछ बद बात़िन लोग उस नौ जवान से ह़सद करने लगे और उन्हों ने येह फ़ैसला किया कि किसी त़रह़ इस नौ जवान को ज़लील करना चाहिये।

बहर ह़ाल ह़ासिदीन की वोह जमाअ़त हर वक़्त उस आ़बिद व ज़ाहिद नौ जवान को ज़लील करने की फ़िक्र में सरगर्दां रहने लगी। बिल आख़िर उन के गन्दे ज़ेहनों में येह ख़याल आया कि फ़ुलां औ़रत जो बहुत ज़ियादा ह़सीनो जमील और फ़ाह़िशा है, उस को लालच दे कर इस बात पर राज़ी किया जाए कि वोह इस आ़बिद नौ जवान को अपने फ़ित्ने में मुब्तला करे।

चुनान्चे उन बद बख़्तों की वोह जमाअ़त उस फ़ाह़िशा औ़रत के पास आई और कहा : "अगर तू उस नौ जवान को अपने फ़ित्ने में मुब्तला कर दे तो हम तुझे मालामाल कर देंगे, हमें उम्मीद है कि तू उसे रुस्वा व ज़लील कर सकती है। चुनान्चे वोह फ़ाह़िशा औ़रत इस फ़े'ले मज़मूम के लिये तय्यार हो गई और एक रात उस नौ जवान के इ़बादत ख़ाने की त़रफ़ चली। रात बहुत अंधेरी थी, ऊपर से बारिश शुरूअ़ हो गई। औ़रत ने उस नौ जवान को पुकारा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मुझे पनाह दो।" नौ जवान ने ऊपर से झांका तो देखा कि एक नौ जवान औ़रत दरवाज़े पर खड़ी है और अन्दर आने की इजाज़त मांग रही है। उस नौ जवान ने सोचा कि इस वक़्त इतनी रात गए किसी ग़ैर मह़रम औ़रत को दाख़िले की इजाज़त देना ख़त़रे से ख़ाली नहीं, चुनान्चे वोह नौ जवान वापस अन्दर चला गया और नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया। औ़रत ने दोबारा निदा दी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! बाहर बहुत ज़ियादा बारिश हो रही है और सर्दी भी

बहुत ज़ियादा है, ख़ुदारा ! मुझे एक रात के लिये पनाह दे दो।'' बार बार वोह औ़रत येही इल्तिजा करती रही आख़िरे कार नौ जवान ने तरस खाते हुए उसे पनाह दे दी और ख़ुद ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल हो गया।

फ़ाह़िशा औ़रत सीना खोले नीम उ़र्यां ह़ालत में उस नौ जवान के सामने आई और गुनाह की दा'वत देते हुए अपना आप उस के सामने पेश कर दिया। बा ह़या नौ जवान ने फ़ौरन निगाहें झुका लीं और उस से दूर हो गया। वोह दोबारा उस के पास आई और गुनाह की दा'वत देने लगी, नौ जवान ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ येह गुनाह नहीं करूंगा। जब तक मैं आज़मा न लूं कि अगर मेरा नफ़्स गुनाह करे तो क्या वोह इस गुनाह के बदले जहन्नम की आग बरदाश्त कर लेगा।'' फिर वोह नौ जवान जलते हुए चराग़ की त़रफ़ बढ़ा और उंगली उस पर रख दी यहां तक कि उंगली जल गई। फिर वोह इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया, फ़ाह़िशा औरत ने क़रीब आ कर फिर उसे गुनाह की दा'वत दी तो नौ जवान ने अपनी दूसरी उंगली जला डाली, इसी त़रह़ वोह फ़ाह़िशा औ़रत बार बार उसे गुनाह की दा'वत देती रही और नौ जवान अपनी उंग्लियां जलाता रहा, बिल आख़िर उस पाक दामन मुत्तक़ी व परहेज़ गार नौ जवान ने अपनी सारी उंग्लियां जला डालीं लेकिन ग़ैर महरम औ़रत की त़रफ़ नज़र उठा कर भी न देखा और अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करता रहा। जब उस फ़ाह़िशा ने येह सूरते ह़ाल देखी कि इस नौ जवान ने एक गुनाह से बचने के लिये अपनी सारी उंग्लियां जला डाली हैं तो उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और तड़प तड़प कर मर गई।

(सद आफ़रीन ! उस नौ जवान पर ! जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से ऐसे वक़्त में गुनाह करने से बाज़ रहा जब इर्तिकाबे गुनाह से उसे कोई चीज़ मानेअ़ न थी। जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ होता है वोह हर ह़ाल में चाहे ख़ल्वत हो या जल्वत, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हैं और गुनाहों की त़रफ़ राग़िब नहीं होते। उस नौ जवान ने अपनी उंग्लियां तो जला डालीं लेकिन एक नज़र भी उस फ़ाह़िशा पर डालना गवारा न की, ह़क़ीक़त येह है कि जिस के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद हो उसे कोई रुस्वा व ज़लील नहीं कर सकता। जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है वोह गुनाहों से बचने की राहें निकाल लेता है। ह़ासिदीन ने तो ख़ूब कोशिश की के किसी त़रह़ उस नौ जवान को ज़लील करें लेकिन जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त दे उसे कौन ज़लील कर सकता है, उस क़ादिरे मुत़लक़ عَزَّوَجَلَّ के सामने किसी की क्या मजाल ! वोह जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़लील करे, वोह जिसे बुलन्द करना चाहे उसे कोई पस्त नहीं कर सकता।)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

फ़ानूस बन के जिस की ह़िफ़ाज़त हवा करे
वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे

हि़कायत नम्बर 188 : बुज़ुर्गों की म-दनी सोच

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नैशापूरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा हम चन्द रु-फ़क़ा अपने उस्तादे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स नैशापूरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی के साथ नैशापूर से दूर एक शहर की त़रफ़ सफ़र पर रवाना हुए। एक जगह हम ने क़ियाम किया तो हमारे उस्ताज़े मोह़तरम हमें वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाने लगे, उन की मुख़्लिसाना और हि़क्मत भरी बातें सुन कर हमें दिली सुकून ह़ासिल हुवा और नेक आ'माल की त़रफ़ हमारी रग़्बत बढ़ गई, उस्तादे मोह़तरम हमें नसीह़त फ़रमा रहे थे कि इसी दौरान सामने मौजूद पहाड़ से एक फ़र्बा हिरनी उतरी और हमारे उस्ताद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के सामने आ कर खड़ी हो गई। हिरनी को देख कर आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه रोने लगे और इतना रोए कि आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की हिचकियां बंध गईं।

फिर जब आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को कुछ सुकून ह़ासिल हुवा और आप ख़ामोश हुए तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे उस्ताद ! आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه हमें कितना प्यारा दर्स दे रहे थे और हमारे दिलों में आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की बातों से रिक़्क़त और सोज़ो गुदाज़ पैदा हो रहा था लेकिन जब येह हिरनी सामने आई तो आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने ज़ारो क़ित़ार रोना शुरूअ़ कर दिया, आख़िर इस हिरनी को देख कर रोने में क्या हि़क्मत है ?"

येह सुन कर आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : "हां ! मैं तुम्हें बताता हूं कि मैं क्यूं रोया बात दर अस्ल येह है कि हम सब मुसाफ़िर हैं और हमारे पास ज़ादे राह भी वाफ़िर मिक़्दार में नहीं। जब मैं तुम्हें दर्स दे रहा था तो अचानक मेरे दिल में येह ख़याल आया कि ऐ काश ! मेरे पास कोई बकरी होती जिसे ज़ब्ह़ कर के मैं तुम्हारी दा'वत करता। अभी येह ख़याल मेरे दिल में आया ही था कि फ़ौरन मेरे सामने येह हिरनी आ गई।

इसे देख कर मेरे दिल में येह ख़ौफ़ पैदा हुवा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरे नेक आ'माल का बदला दुन्या ही में दे रहा हो और कहीं मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ तो नहीं ? क्यूं कि जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है उसे दुन्या ही में उस के अच्छे अ़मल का बदला दे देता है जैसा कि फ़िरऔ़न अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन था लेकिन जब उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की के दरियाए नील जारी हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की दुआ़ क़बूल कर ली और दरियाए नील जारी फ़रमा दिया ह़ालां कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन था लेकिन फिर भी उस की ख़्वाहिश दुन्या में पूरी कर दी गई, आख़िरत में ऐसे लोगों का कोई हि़स्सा नहीं। मुझे भी येह ख़ौफ़ होने लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मुझे मेरे नेक आ'माल का बदला दुन्या ही में दिया जा रहा हो और आख़िरत में मेरे लिये कुछ भी न बचे और मैं वहां मुफ़्लिस रह जाऊं, बस इसी ख़याल ने मुझे रुला दिया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 189 : शैत़ान की धमकी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़ियाद عليه رحمة الله الجواد बहुत मुत्तक़ी व परहेज़ गार बुज़ुर्ग थे। उन पर हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़-लबा रहता और रोते ही रहते। बहुत ज़ियादा रोने की वजह से उन की बीनाई ख़त्म हो चुकी थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : "एक मर्तबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से पूछा : "ह़ुज़ूर ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इतना अ़र्सा जंगलों और सह़राओं में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते रहे, क्या इस दौरान कभी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कोई बहुत अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया ?"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "एक मर्तबा मुझे एक बहुत ही अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया। हुवा यूं कि एक रात मैं जंगल में सो रहा था, अचानक मेरे पास शैत़ाने लई़न आया और ग़ुसीले अन्दाज़ में कहने लगा : "यहां से उठो और कहीं और चले जाओ।" तो मैं ने उस से कहा : "ऐ मरदूद ! यहां से दफ़अ़ हो जा।" शैत़ान कहने लगा : "या तो तू शराफ़त से उठ जा। या फिर तुझे ऐसी ठोकर मारूंगा कि तू हलाक हो जाएगा।" मैं ने कहा : "(ऐ मरदूद !) तुझे जो करना है कर ले, तू मेरा बाल भी बीका नहीं कर सकता।" शैत़ान ने जब मेरी येह बात सुनी तो बड़े ज़ोर से मुझे ठोकर मारी लेकिन मुझे उस की ठोकर ऐसे मा'लूम हुई जैसे मेरे जिस्म पर किसी ने घास वग़ैरा फेंकी हो या'नी मुझे उस की ठोकर से बिल्कुल कोई तक्लीफ़ न हुई।

येह देख कर शैत़ान कहने लगा : "तुम मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली मा'लूम होते हो, तुम कौन हो ?" मैं ने कहा : "मेरा नाम इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق है।" शैत़ान ने पूछा : "तुम ने बिल्कुल ठीक कहा, अब मेरी बात ग़ौर से सुनो ! कुछ अश्या ह़राम हैं और कुछ ह़लाल। ह़लाल तो वोह चीज़ें हैं जो पहाड़ों वग़ैरा में उगती हैं, येह मुबाह़ हैं और वोह चीज़ें जो ख़ियानत और धोके से ह़ासिल की जाएं, वोह ना जाइज़ हैं, (फिर शैत़ान कहने लगा) मुझे दरिया के किनारे दो माहीगीर मिले जो मछलियां पकड़ रहे थे। अस्लन तो दरिया व समुन्दर वग़ैरा की मछलियां मुबाह़ व जाइज़ हैं। जो इन्हें पकड़ ले वोह उस की मिल्किय्यत में आ जाती हैं लेकिन वोह दोनों माहीगीर ख़ाइन और धोकेबाज़ थे। ऐ इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ! हमेशा ह़लाल खाओ और ह़राम से किनारा कशी इख़्तियार करो।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हर वक़्त अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, शैत़ान के मक्रो फ़रेब से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और हमारे दिलों से अपने ख़ौफ़ के इ़लावा सब मख़्लूक़ का ख़ौफ़ निकाल दे, और हमें सिर्फ़ अपना ही मोह़ताज रखे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे अस्लाफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के सदक़े हमें भी इ़बादत व रियाज़त में इख़्लास की दौलत नसीब फ़रमाए और अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाए, ह़राम अश्या से हमें मह़फ़ूज़ रखे और रिज़्क़े ह़लाल कमाने और खाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

(اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

हि़कायत नम्बर 190 : शिफ़ा देने वाला हाथ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हुर्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना : "मैं तक़रीबन बीस साल तक साहि़लों, जंगलों, पहाड़ों और सह़राओं में सिर्फ़ इस लिये घूमता रहा कि शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से मुलाक़ात हो जाए और मैं उस की सोह़बते बा ब-र-कत से फ़ैज़ ह़ासिल करूं, एक दिन इसी मक़्सद के तह़त मैं एक जंगल में गया। वहां मुझे एक ग़ार नज़र आया। मैं उस ग़ार में दाख़िल हुवा तो देखा कि वहां एक लुन्जा, दो अन्धे और बहुत से कोढ़ के मरीज़ मौजूद थे, मैं ने उन से पूछा : "तुम लोग यहां क्या कर रहे हो और इस वीरान जंगल में इस वक़्त तुम किस लिये जम्अ़ हुए हो ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक वली का इन्तिज़ार कर रहे हैं, जिस की शान येह है कि वोह जिस बीमार पर अपना मुबारक हाथ रख देता है उस की सब बीमारियां दूर हो जाती हैं। आज वोह यहां आएगा, हम उस के इन्तिज़ार में यहां जम्अ़ हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने दिल में कहा : "اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज मेरी मुराद पूरी हो जाएगी और आज मैं किसी वलिय्ये कामिल की ज़ियारत से ज़रूर मुशर्रफ़ होउंगा।" चुनान्चे मैं भी उन मरीज़ों के साथ बैठ गया और उस वलिय्ये कामिल का इन्तिज़ार करने लगा, इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और एक निहायत कमज़ोर व नह़ीफ़ शख़्स ऊन का जुब्बा ज़ैबे तन किये हमारी त़रफ़ आया, उस ने आते ही सलाम किया और बैठ गया फिर अन्धे शख़्स को अपने पास बुलाया। उस की आंखों की त़रफ़ अपने हाथ से इशारा किया तो वोह अन्धा फ़ौरन अखियारा हो गया।

फिर उस मर्दे सालेह़ ने अपने दस्ते मुबारक से लुन्जे शख़्स की त़रफ़ इशारा किया, वोह भी फ़ौरन दुरुस्त हो गया फिर कोढ़ के मरीज़ों को बुलाया और उन की त़रफ़ भी अपना हाथ बढ़ा कर इशारा किया तो सब के सब कोढ़ पन से नजात पा गए और बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए, जब वहां मौजूद तमाम मरीज़ों को अपने अपने मरज़ से शिफ़ा मिल गई तो वोह नेक शख़्स उठा और जाने लगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब मैं ने उसे जाते देखा तो मैं फ़ौरन उठा और उन का दामन थाम लिया।" वोह कहने लगा : "ऐ सरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ! तू मेरी त़रफ़ राग़िब न हो, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़य्यूर है। अल्लाह की बारगाह में तेरा मक़ाम व मर्तबा बहुत बुलन्द है लेकिन उस ने तेरा राज़ पोशीदा रखा हुवा है। अगर तू उसे छोड़ कर किसी और की त़रफ़ राग़िब होगा तो कहीं ऐसा न हो कि उस की बारगाह में तेरी क़द्रो मन्ज़िलत कम हो जाए। बस उस एक ज़ात पर कामिल भरोसा रख और उसी की त़रफ़ हर दम मु-तवज्जेह रह।"

कोहे लकाम का आ़रिफ़ :

मा क़ब्ल में मज़्कूर हि़कायत इस त़रह़ भी मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से चालीस साल तक येह दुआ़ करता रहा कि मुझे अपना कोई कामिल वली दिखा दे, ऐ काश ! मैं उस सच्चे आ़शिक़ की एक झलक देख लूं, एक मर्तबा मैं "**लकाम**" की पहाड़ियों में था, वहां एक जगह मैं ने बहुत से मरीज़ों को जम्अ़ देखा। मैं ने उन से पूछा : "तुम लोग यहां क्यूं जम्अ़ हो ?" उन्हों ने कहा : "महीने में एक मर्तबा यहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक नेक बन्दा आता है, वोह हम जैसे मरीज़ों के लिये दुआ़ करता है, उस की दुआ़ की ब-र-कत से मरीज़ फ़ौरन तन्दुरुस्त हो जाते हैं, आज उस के आने का दिन है, बस वोह आने वाला ही होगा।" अभी हम येह बातें कर ही रहे थे कि एक नूरानी चेहरे वाला शख़्स हमारी त़रफ़ आया, फिर उस ने कुछ पढ़ा और सब मरीज़ों पर दम किया। फ़ौरन सारे मरीज़ तन्दुरुस्त हो गए फिर वोह मर्दे सालेह़ वहां से उठा और वापस जाने लगा तो मैं भी उस के पीछे हो लिया और अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! कुछ देर के लिये ठहर जाओ, मैं तुम से कुछ बातें करना चाहता हूं।"

वोह नेक बन्दा मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "ऐ सरी सक़त़ी عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और की त़रफ़ मु-तवज्जेह न हो, हर वक़्त उसी की याद में मगन रह, किसी और की त़रफ़ इल्तिफ़ात ही न कर, वरना ख़त़रा है कि कहीं तू उस की बारगाह में ग़ैर मक़्बूल न हो जाए। लिहाज़ा उस के इ़लावा किसी और की त़रफ़ मु-तवज्जेह न हो, इतना कहने के बा'द वोह नेक बन्दा जिस सम्त से आया था उसी त़रफ़ चला गया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيۡہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 191 : **गुमशुदा थैली कैसे मिली ?**

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सहल बिन अ़स्कर बुख़ारी عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی फ़रमाते हैं, मैं ने **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में एक जगह देखा कि एक मग़रिबी शख़्स ख़च्चर पर सुवार है और उस के आगे आगे एक मुनादी येह निदा कर रहा है : "हमारी एक थैली गुम हो गई है अगर कोई शख़्स वोह थैली हम तक पहुंचा दे तो उसे बत़ौरे इन्आ़म एक हज़ार दीनार दिये जाएंगे।" मुनादी मुसल्सल येह ए'लान करता जा रहा था।

अचानक बोसीदा लिबास पहने हुए एक मा'ज़ूर शख़्स आया, जो ब ज़ाहिर बहुत ग़रीब व मुफ़्लिस मा'लूम हो रहा था। उस ने मग़रिबी शख़्स से कहा : "तुम्हारी गुमशुदा थैली की क्या अ़लामत है ? उस की कोई निशानी बताओ ?" चुनान्चे मग़रिबी शख़्स ने उस थैली की निशानियां बताना शुरूअ़ कीं और

फिर कहने लगा : "उस में लोगों की अमानतें रखी हुई हैं और अमानत रखने वालों के नाम भी उस थैली में मौजूद हैं कि फ़ुलां की इतनी रक़म अमानत है और फ़ुलां की इतनी।" उस मा'ज़ूर शख़्स ने कहा : "तुम में से पढ़ना कौन जानता है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़स्कर बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने फ़रमाया : "मैं पढ़ना जानता हूं।" तो उस मा'ज़ूर शख़्स ने कहा : "तुम सब मेरे साथ आओ।" चुनान्चे हम उस के साथ चल दिये, वोह हमें रास्ते से एक वादी में ले गया फिर उस ने एक जगह से थैली निकाली और मुझे पकड़ा दी फिर उस मग़रिबी शख़्स से कहा : "बताओ ! इस थैली में किस किस की कितनी कितनी रक़म अमानत है ?" मग़रिबी शख़्स ने बताया : "पांच सो दिरहम फ़ुलां बिन फ़ुलां के हैं, सो दिरहम फ़ुलां के हैं।" इसी त़रह़ उस ने सब के नाम गिनवा दिये, मैं साथ साथ सब के नाम पढ़ता जा रहा था जिस त़रह़ मग़रिबी शख़्स ने बताया था वाक़ेई उसी त़रह़ इतनी ही मिक्दार में रक़म थैली में मौजूद थी।

फिर उस मा'ज़ूर शख़्स ने कहा : "येह थैली इस मग़रिबी शख़्स को दे दो।" चुनान्चे मैं ने वोह थैली उस शख़्स को दे दी, उस ने अपनी त़रफ़ से एक हज़ार दीनार उस मा'ज़ूर शख़्स को देते हुए कहा : "येह तुम्हारा इन्आ़म है जिस का मैं ने वा'दा किया था कि जो शख़्स हमारी थैली ढूंड कर देगा उसे एक हज़ार दीनार बत़ौरे इन्आ़म दिये जाएंगे लिहाज़ा तुम इस इन्आ़म के मुस्तह़िक़ हो, लो ! येह एक हज़ार दीनार रख लो।" उस मा'ज़ूर शख़्स ने कहा : "मेरे नज़्दीक तुम्हारी इस थैली की क़ीमत दो मेंगनियों जितनी भी नहीं फिर मैं तुम से एक हज़ार दीनार कैसे ले लूं ? जाओ ! मुझे तुम्हारी रक़म की ज़रूरत नहीं।" इतना कहने के बा'द वोह शख़्स वहां से उठा और एक जानिब चल दिया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

(سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین ऐसे होते हैं कि जिन के दिलों में दुन्यावी मालो मताअ़ की कोई वुक़्अ़त नहीं होती, उन की नज़रों में बड़ी से बड़ी रक़म भी ह़क़ीर होती है, उन्हें मालो दौलत की ह़िर्स नहीं होती बल्कि उन का मक़्सद तो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का ह़ुसूल होता है, वोह आख़िरत के त़ालिब होते हैं और उस की त़लब में दिन रात तगो दौ करते हैं। उन्हें न तो दुन्या से सरोकार होता है और न ही दुन्यादारों से। वोह तो बस अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी चाहते हैं और हर काम उसी की रिज़ा के लिये करते हैं, अल्लाह हमें भी उन बुज़ुर्गों के सदक़े दुन्यावी मालो दौलत की ह़िर्स से बचाए और आख़िरत की तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, दुन्या की मह़ब्बत हमारे दिलों से मिटा कर अपनी मह़ब्बत की ने'मत से हमें मालामाल फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

मेरे दिल से दुन्या की उल्फ़त मिटा दे
मुझे अपना आ़शिक़ बना या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

ह़िकायत नम्बर 192 : नूरानी बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मग़्रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना : "मैं ने बहुत अ़र्सा से अंधेरा नहीं देखा (या'नी उन्हें दिन की त़रह़ रात के वक़्त भी हर वक़्त रोशनी ही रोशनी नज़र आती और रात में भी हर चीज़ वाज़ेह़ नज़र आती)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "वाक़ेई ! आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का येह फ़रमान बिल्कुल दुरुस्त है, हम जब कभी सख़्त अंधेरी रात में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ सफ़र पर रवाना होते तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारे आगे आगे उसी त़रह़ चलते जैसे दिन के उजाले में चल रहे हों और हमारी येह कैफ़िय्यत होती कि हाथ को हाथ सुझाई न देता, जब हम में से कोई फिसलने लगता या रास्ते से एक त़रफ़ होने लगता तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते : "सीधी त़रफ़ हो जाओ ! इस त़रफ़ चलो ।" इस त़रह़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारी रहनुमाई करते ।

एक मर्तबा सख़्त अंधेरी रात में हम आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ सफ़र पर रवाना हुए । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नंगे पाउं और नंगे सर थे, हम आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पीछे पीछे चलने लगे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारी रहनुमाई फ़रमाते रहे, सारी रात सफ़र जारी रहा, जब सुब्ह़ हुई तो हमारी नज़र आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुबारक क़दमों पर पड़ी तो वोह ऐसे साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ थे जैसे कजावे से उतरने वाली दुल्हन के पाउं साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होते हैं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुबारक क़दमों पर मिट्टी का नामो निशान तक न था ।

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने मो'तक़िदीन के दरमियान बैठ जाते और उन्हें वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाते, मैं ने कभी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को लोगों के सामने रोते हुए नहीं देखा लेकिन एक मर्तबा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इतना रोए कि रोते रोते हिचकियां बंध गईं ।

हुवा यूं कि एक मर्तबा हम आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ "**कोहे त़ूर**" पर गए, वहां आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक दरख़्त से टेक लगा कर बैठ गए । हम भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के गिर्द बैठ गए, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हमें नसीह़त करते हुए फ़रमाया : "**इन्सान उस वक़्त तक अपनी मुराद को नहीं पहुंच सकता जब तक वोह सब से अलग थलग हो कर अपने काम में मश्ग़ूल न हो जाए ।**" अभी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इतनी ही बात की थी कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ोर ज़ोर से रोने लगे और तड़पने लगे । हम ने देखा कि आस पास मौजूद पथ्थर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की गुफ़्त-गू के बा'द रेज़ा रेज़ा हो गए, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इसी त़रह़ रोते रहे और तड़पते रहे, बिल आख़िर ह़ालत संभली और होश में आए तो ऐसे ख़ौफ़ ज़दा और ग़मगीन थे जैसे अभी क़ब्र से निकल कर आ रहे हों । फिर कई दिन तक आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ख़ौफ़ त़ारी रहा और इस वाक़िए के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत कमज़ोर हो गए ।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 193 : सफ़ेद रोटी और ख़त़रनाक अज़्दहा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम हरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मौसिमे गर्मा की एक दो पहर दौराने सफ़र मैं ने एक शख़्स को एक सम्त जाते हुए देखा, मैं भी उस के साथ साथ चल दिया। कुछ दूर जा कर उस ने रास्ता छोड़ दिया और एक वादी की जानिब मुड़ गया, मैं भी उस के पीछे पीछे चलता रहा फिर वोह एक ग़ार में दाख़िल हो गया मैं भी ग़ार में चला गया। अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि मेरे सामने एक बड़ा **अज़्दहा** नुमूदार हुवा। मैं ने अपनी ज़िन्दगी में कभी इतना बड़ा अज़्दहा न देखा था फिर वोह अज़्दहा ग़ार के दहाने के क़रीब आ कर कुंडली मार कर बैठ गया और मेरी त़रफ़ देखने लगा। मैं ने दिल में कहा : "शायद आज येह मुझे खा जाएगा, येह ख़याल तो मुझे ज़रूर आया लेकिन न तो मैं घबराया और न ही ख़ौफ़ ज़दा हुवा। कुछ देर वोह अज़्दहा मुझे देखता रहा फिर वोह रेंगता हुवा मेरी त़रफ़ बढ़ने लगा। मैं भी अपनी जगह खड़ा रहा जब वोह मेरे बिल्कुल क़रीब आ गया तो मैं ने देखा कि उस के मुंह में बहुत ही उ़म्दा क़िस्म के सफ़ेद आटे की तरो ताज़ा रोटी थी, उस अज़्दहे ने वोह रोटी मेरे क़रीब रखी और फ़ौरन वापस चला गया, और दोबारा ग़ार के दहाने पर कुंडली मार कर बैठ गया, मैं ह़ैरानो परेशान खड़ा रहा और सोचता रहा कि अज़्दहा येह रोटी कहां से लाया है ? फिर मैं ने वोह रोटी खाई और दो पहर का वक़्त गुज़ारने के लिये आराम की ग़रज़ से ग़ार ही में रुक गया, जब मौसिम कुछ ठन्डा हुवा और शाम होने लगी तो मैं उस ग़ार से निकला और चलता हुवा अपने साथियों के पास पहुंचा। मुझे देख कर वोह कहने लगे : "तुम कहां से आ रहे हो और अब तक कहां थे ?" मैं ने उस वादी की त़रफ़ इशारा करते हुए कहा : "मैं उस वादी से आ रहा हूं।" फिर उन्हों ने पूछा : "क्या तुम ने भी वोह चीज़ देखी है जो हम ने देखी ?" मैं ने जवाबन कहा : "तुम किस चीज़ की बात कर रहे हो, ज़रा वज़ाह़त करो ?" उन्हों ने बताया : "आज दो पहर के वक़्त हमारे सामने एक बहुत बड़ा अज़्दहा आया, हमारे बिल्कुल क़रीब आ कर वोह अपनी दुम पर खड़ा हो गया और ज़ोर ज़ोर से फन्कारने लगा। हम ख़ौफ़ ज़दा हो गए, हम में एक बुज़ुर्ग भी मौजूद थे जो बहुत दाना और मुआ़मला फ़हम थे उन्हों ने हम से फ़रमाया : "मेरा गुमान है की येह अज़्दहा भूका है, शायद ख़ूराक की तलाश में हम तक आ पहुंचा है।" येह कहने के बा'द उन्हों ने सफ़ेद आटे की उ़म्दा रोटी उस की त़रफ़ फेंक दी। अज़्दहे ने वोह रोटी अपने मुंह में ली और वहां से चला गया। मैं ने कहा : "वोह सफ़ेद आटे की रोटी मैं ने ही खाई है फिर मैं ने उन्हें सारा वाक़िआ़ सुनाया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ का राज़िक़ है, वोह अपनी मख़्लूक़ को जिस त़रह़ चाहे उन के ह़िस्से का रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाए, वोह हर चाहे पर क़ादिर है। चाहे तो मूज़ी जानवरों के ज़रीए अपने बन्दों को रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा दे जैसा कि मज़्कूरा बाला ह़िकायत में एक ख़त़रनाक अज़्दहे के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम हरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को उन के ह़िस्से का रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा दिया गया। बस इन्सान

को अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ पर कामिल यक़ीन होना चाहिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हमारे अस्लाफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِین के सदक़े तवक्कुल की दौलत से मालामाल फ़रमाए और हमें रिज़्क़े ह़लाल खाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم)

ग़मे रूज़गार में तो मेरे अश्क बह रहे हैं
तेरा ग़म अगर रुलाता तो कुछ और बात होती

ह़िकायत नम्बर 194 : मिस्र का बादशाह

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली मुरादानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा मैं (बादशाहे मिस्र) "**अह़मद बिन त़ूलून**" की क़ब्र के पास से गुज़रा तो देखा कि एक शख़्स उस की क़ब्र के क़रीब क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहा है।

फिर ऐसा हुवा कि उस शख़्स ने यक्दम "**अह़मद बिन त़ूलून**" की क़ब्र पर आना छोड़ दिया। काफ़ी अ़र्सा बा'द मेरी उस से मुलाक़ात हुई तो मैं ने पूछा : "क्या तू वोही शख़्स नहीं जो "**अह़मद बिन त़ूलून**" की क़ब्र के पास क़ुरआने पाक पढ़ा करता था ?" तो वोह कहने लगा : "आप ने बजा फ़रमाया, मैं ही इब्ने त़ूलून की क़ब्र के पास क़ुरआन पढ़ा करता था क्यूं कि वोह हमारा ह़ाकिम था और अ़दलो इन्साफ़ के मुआ़-मले में मशहूर था लिहाज़ा मैं ने इस बात को पसन्द किया कि उस के लिये ईसाले सवाब करूं। चुनान्चे मैं ने उस की क़ब्र के पास क़ुरआने करीम की तिलावत करना शुरूअ़ कर दी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने उस शख़्स से पूछा : "फिर अब तुम वहां तिलावत क्यूं नहीं करते ?" वोह शख़्स कहने लगा : "एक रात मैं ने ख़्वाब में "**अह़मद बिन त़ूलून**" को देखा, उस ने मुझ से कहा : "तुम मेरी क़ब्र पर क़ुरआन की तिलावत न किया करो।" मैं ने कहा : "आप मुझे तिलावते क़ुरआन से क्यूं मन्अ़ कर रहे हैं ?" उस ने जवाब दिया : "जब भी तुम क़ुरआने मजीद की कोई आयत तिलावत करते हो तो मुझे सर पर ज़ोरदार ज़र्ब लगाई जाती है और कहा जाता है : "**क्या तुम ने दुन्या में येह आयत न सुनी थी ?**" लिहाज़ा इस ख़्वाब के बा'द मैं ने "**अह़मद बिन त़ूलून**" की क़ब्र पर तिलावत करना छोड़ दी।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें क़ुरआने करीम के अह़काम पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हमें क़ब्रो ह़श्र के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखे, दीनो दुन्या में आ़फ़िय्यत और करम वाला मुआ़-मला फ़रमाए, क़ुरआने ह़कीम को हमारे लिये ज़रीअ़ए नजात बनाए और इस की ब-र-कत से हमें अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर 195 : चिड़िया और च्यूंटी की मिसाल

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नईम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं, एक मर्तबा मैं हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की बारगाह में हाज़िर हुवा उस वक़्त आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमार थे। मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस फ़ानी दुन्या में च्यूंटियों की येह आ़दत है कि गर्मियों में अपने लिये दाने वग़ैरा बिलों में जम्अ़ कर लेती हैं ताकि सर्दियों में उन्हें ख़ूराक के लिये बाहर न निकलना पड़े और आराम से जम्अ़ की हुई ख़ूराक खाती रहें। एक मर्तबा इसी मक़्सद के लिये एक च्यूंटी अपने बिल से निकली, उस ने दाना लिया और दोबारा बिल की त़रफ़ जाने लगी। इतने में एक चिड़िया आई और च्यूंटी को दाने समेत खा गई। अब न तो वोह चीज़ बाक़ी रही जिसे वोह च्यूंटी जम्अ़ करना चाहती थी और न ही वोह च्यूंटी बाक़ी रही कि अपनी जम्अ़ की हुई चीज़ खा लेती।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मज़ीद कुछ नसीहत फ़रमाइये।" आप ने इर्शाद फ़रमाया : "तेरा उस शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जिस का मस्कन (या'नी रिहाइश) **क़ब्र** हो और गुज़रगाह **पुल सिरात़** हो (जो बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार की धार से भी ज़ियादा तेज़ है) और मैदाने ह़श्र उस के ठहरने की जगह हो जहां उस से ह़िसाब लिया जाएगा। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से ह़िसाब लेने वाला हो। फिर उस शख़्स को येह भी मा'लूम न हो कि मैं ह़िसाबो किताब के बा'द जन्नत में जाऊंगा और मुबारक बाद का मुस्तह़िक़ होउंगा या जहन्नम की भड़क्ती हुई आग मेरा ठिकाना होगी और मैं वहां अ़ज़ाब दिया जाऊंगा। हाए ह़सरत व अफ़्सोस ! ऐसे बन्दे का ग़म कितना त़वील होगा, और उस को कैसी कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। हाए ! हाए उस वक़्त रोना तो होगा लेकिन तसल्ली देने वाला कोई न होगा, उस वक़्त ख़ौफ़ व दहशत तो त़ारी होगी लेकिन कोई अम्न देने वाला न होगा।"

फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझ से बार बार येही फ़रमाते रहे : "ज़रा अपनी ह़ालत पर ग़ौर कर ! (उस दिन तेरा क्या ह़ाल होगा) ज़रा अपनी क़ब्र के बारे में सोच ! उस में तेरे साथ क्या मुआ़-मलात पेश आएंगे ? दुन्यादारों से तअ़ल्लुक़ात कम कर दे, और कभी भी इस बात को पसन्द न कर कि लोग तेरी ता'रीफ़ करें और अपने आ'माल पर लोगों से अपनी ता'रीफ़ सुनने की ख़्वाहिश न कर। दुन्यवी नाम व नुमूद न चाह, इ़ज़्ज़त वाला वोही है जो रब عَزَّوَجَلَّ के हां मुअ़ज़्ज़ज़ है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ज़लील है ब ज़ाहिर वोह दुन्या में कितना ही मुअ़ज़्ज़ज़ हो ह़क़ीक़तन वोह ज़लील है।"

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! हमें दुन्या और आख़िरत में इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा, हर अ़मल अपनी रिज़ा की ख़ात़िर करने की तौफ़ीक़ दे, हुब्बे दुन्या और मालो दौलत की ह़िर्स से हमें मह़फ़ूज़ रख, क़ब्रो ह़श्र, ह़िसाबो किताब और बरज़ख़ के तमाम मुआ़-मलात में हमारे साथ आसानी और नर्मी वाला मुआ़-मला फ़रमा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू तो ग़फ़्फ़ार है और हमारे पल्ले कुछ भी नहीं, ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा हमें बे सबब बख़्श दे, और हम पर अपना ख़ुसूसी रह़्मो करम फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ !

हिकायत नम्बर 196 : माले यतीम की हिफ़ाज़त

अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन सलमान कहते हैं : "मैं मूसा बिन बुग़ाअ का कातिब था, उस वक़्त हम "रै" में थे और वहां के क़ाज़ी हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन बदील कूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى थे।

अहमद बिन बुग़ाअ की उस अ़लाक़े में कुछ ज़मीन थी, जिस में वोह ता'मीराती काम करवाना चाहता था। उसी जगह से मुत्तसिल ज़मीन का एक टुकड़ा एक यतीम बच्चे की मिल्किय्यत में था, मुझे मूसा बिन बुग़ाअ ने हुक्म दिया कि वहां जा कर ज़मीन वग़ैरा देखूं और मज़ीद ज़मीन ख़रीदनी पड़े तो ख़रीद लूं। मैं वहां पहुंचा और ज़मीन को देखा तो येही बात समझ आई कि जब तक उस यतीम की ज़मीन न ख़रीदी जाएगी उस वक़्त तक ता'मीराती काम ठीक अन्दाज़ में न होगा। चुनान्चे मैं वहां के क़ाज़ी हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन बदील رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास गया और अ़र्ज़ की : "आप यतीम बच्चे की ज़मीन हमें फ़रोख़्त कर दें।" क़ाज़ी साहिब ने इन्कार करते हुए फ़रमाया : "उस यतीम बच्चे को अपनी ज़मीन बेचने की अभी कोई हाजत नहीं और मैं येह जुरअत नहीं कर सकता कि ज़मीन बेच कर उसे ज़मीन से महरूम कर दूं। हो सकता है मैं ज़मीन के बदले क़ीमत ले लूं और ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी तरह उस का माल हलाक हो जाए तो गोया मैं उस के हक़ को ज़ाएअ़ करने वाला हो जाऊंगा।"

मैं ने कहा : "आप हमें वोह ज़मीन बेच दें हम उस की दुगनी क़ीमत अदा करेंगे।" क़ाज़ी साहिब ने कहा : "मैं दुगनी क़ीमत पर भी उस की ज़मीन नहीं बेचूंगा क्यूं कि माल तो घटता बढ़ता रहता है। ज़ियादा माल का लालच मुझे ज़मीन बेचने की त़रफ़ राग़िब नहीं कर सकता।" अल ग़रज़ मैंने क़ाज़ी साहिब को हर त़रह से राज़ी करने की कोशिश की लेकिन बे सूद। उन के सामने मेरी एक न चली। उन की बातों ने मुझे परेशान कर दिया। मैं ने तंग आ कर कहा : "क़ाज़ी साहिब ! आप ऐसा क़दम न उठाइये जिस से आप को परेशानी हो, क्या आप जानते नहीं कि येह मूसा बिन बुग़ाअ का मुआ-मला है ? ज़रा सोच समझ कर क़दम उठाइये, ऐसे लोगों से टक्कर लेना दुरुस्त नहीं।" क़ाज़ी साहिब ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाए, तू मेरे मुआ-मले में परेशान न हो, बेशक मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त वाला और बुलन्द व बरतर है।" क़ाज़ी साहिब की येह बातें सुन कर मैं वापस पलट आया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करते हुए मैं दोबारा क़ाज़ी साहिब के पास न गया। जब मैं "मूसा बिन बुग़ाअ" के पास गया तो उस ने मुझ से पूछा : "तुम्हें जिस काम के लिये भेजा था उस का क्या हुवा ?" मैं ने क़ाज़ी साहिब से मुलाक़ात का सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया और जब उसे क़ाज़ी साहिब का येह जुम्ला बताया कि "बेशक मेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ बुलन्द व अ़ज़ीम है।" तो येह सुनते ही मूसा बिन बुग़ाअ रोने लगा और बार बार इसी जुम्ले को दोहराता रहा फिर मुझ से कहा : "अब तुम उस ज़मीन को रहने दो और क़ाज़ी साहिब को तंग न करो। जाओ ! और उस नेक मर्द के ह़ालात मा'लूम करो। अगर उसे कोई ह़ाजत दरपेश हो तो मैं उसे पूरा करूंगा, ऐसे नेक लोग दुन्या में बहुत कम होते हैं।"

मैं मूसा बिन बुग़ाअ से रुख़्सत हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन बज़ील कूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के पास आया और कहा : "क़ाज़ी साहि़ब ! मुबारक हो, अमीर मूसा बिन बुग़ाअ ने ज़मीन वाले मुआ़-मले में आप को आ़फ़िय्यत बख़्शी और येह इस वजह से हुवा कि मैं ने वोह तमाम बातें जो हमारे दरमियान हुई थीं, तफ़्सीलन मूसा बिन बुग़ाअ को बता दीं। अब अमीर मूसा बिन बुग़ाअ ने येह हुक्म दिया है कि अगर आप को कोई ह़ाजत हो तो हमें बताएं हम ज़रूर पूरा करेंगे।"

क़ाज़ी साहि़ब ने उसे दुआ़एं दी और कहा : "येह सब उस का सिला है कि मैं ने एक यतीम के माल की ह़िफ़ाज़त की, मैं इस के बदले दुन्यवी मालो दौलत का त़लबगार नहीं।" फिर मैं ने मूसा बिन बुग़ाअ के हुक्म से क़ाज़ी साहि़ब को एक लौंडी हिबा कर दी।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 197 : घर में क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे एक नेक सीरत दोस्त ने बताया : "हमारे पास "वासित़" का रहने वाला अबू अ़य्याद नामी एक मर्दे सालेह़ है, वोह कसरत से मुजा-हदे करता है। ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम सआ़दत से मालामाल है, नमक के साथ रोटी खाता है, हमेशा अपने हाथ की कमाई खाता है, वोह रोज़ाना दो दानिक़ कमाता है, एक दानिक़ से स-ह़री व इफ़्त़ार का सामान ख़रीद लेता है और दूसरा दानिक़ स-दक़ा कर देता है। अगर आप उस के पास चलें और कलाम फ़रमाएं तो वोह इस बात को पसन्द करेगा और जब आप उसे देखेंगे तो उम्मीद है कि उस की मुलाक़ात से आप को भी फ़ाएदा होगा।"

मैं ने कहा : "मैं उस से मुलाक़ात का मु-तमन्नी हूं, मैं ज़रूर उस से मुलाक़ात करूंगा।" चुनान्चे हम उस मर्दे सालेह़ से मुलाक़ात के लिये उस के घर पहुंचे। हम ने दस्तक दी तो दाख़िले की इजाज़त मिल गई। वहां मुझे एक ऐसा शख़्स नज़र आया जिसे देख कर ऐसा लग रहा था जैसे उस का दिल दुन्या से उचाट हो गया है। वोह तन्हाई पसन्द है और लोगों से उसे वह़शत होती है, वोह ख़ौफ़ ज़दा और सहमा सहमा लग रहा था। मैं समझ गया कि मुसल्सल मुजा-हदात की वजह से उस की येह ह़ालत हो गई है और येह शख़्स सख़्त गर्मियों के दिनों में रोज़ा रखता और सारी सारी रात क़ियाम और सज्दों में गुज़ार देता है, उस के जिस्म पर टाट का लिबास था। वोह भी सिर्फ़ इतना कि जिस से सित्र पोशी हो सके। उसे देखते ही मुझ पर सक्ता त़ारी हो गया। मैं उसे देख कर ख़ौफ़ मह़सूस करने लगा। उस की ह़ालत ऐसी

वह़शत नाक थी कि इस से पहले मैं ने किसी को ऐसी ह़ालत में न देखा था। हम उस के क़रीब गए तो मेरे दोस्त ने मेरा तआ़रुफ़ कराते हुए कहा : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار) हैं, जिन से मुलाक़ात के आप मु-तमन्नी थे।" इतना सुनना था कि वोह जल्दी से उठा, मुझ से मुसा-फ़ह़ा किया और मेरा दायां हाथ पकड़ कर कहने लगा : "मरह़बा ! मरह़बा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़त़ा फ़रमाए, मुझे और आप को दुन्या के ग़मों से बचा कर ग़मे आख़िरत की ने'मत अ़त़ा फ़रमाए।" वोह मुझे एक ऐसे कमरे में ले गया जहां उस ने क़ब्र खोद रखी थी, और मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : "मेरी देरीना ख़्वाहिश थी कि आप से मुलाक़ात करूं और अपने दिल की सख़्ती से आप को आगाह करूं, मुझे एक बहुत पुराना ज़ख़्म है, तमाम मुआ़लिजीन इस के इ़लाज से आ़जिज़ आ चुके हैं, अब आप ही मेरे ज़ख़्मी दिल का इ़लाज करें और जो मुनासिब समझें वोह मरहम मेरे ज़ख़्म पर रखें।"

मैं ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! मैं आप का इ़लाज किस त़रह़ करूं मैं तो ख़ुद ज़ख़्मी हूं और मेरा ज़ख़्म तुम्हारे ज़ख़्म से कहीं ज़ियादा है।" उस ने कहा : "अगर वाक़ेई़ ऐसा है फिर तो मैं आप का और ज़ियादा मुश्ताक़ हूं।" मैं ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! अगर तू अपने घर में क़ब्र खोद कर इस से इ़ब्रत ह़ासिल करता है और इसे देख देख कर अपने नफ़्स को मुत़्मइन कर लेता है और मौत से पहले ही कफ़न ख़रीद कर इस बात का इज़्हार करता है कि मैं ने आख़िरत की तय्यारी कर ली है तो बा'ज़ औलियाए किराम ऐसे भी हैं कि उन के सामने हर वक़्त क़ब्र का होलनाक मन्ज़र होता है वोह मौत से कभी ग़ाफ़िल नहीं होते। वोह ऐसे हैं कि उन से ज़ियादा ह़ुदूदुल्लाह की रिआ़यत करने वाला तू किसी को न पाएगा। उन के दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मन्अ़ कर्दा अश्या की त़रफ़ रग़बत नहीं करते क्यूं कि वोह जानते हैं कि एक दिन ऐसा भी आएगा जिस दिन झूटे लोग बहुत ज़ियादा ख़सारे में रहेंगे। ऐसे लोग सिर्फ़ लि वज्हिल्लाह आ'माल करते हैं और रियाकारी से बचते हैं।"

मेरी येह बातें सुन कर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और अपने घर में खोदी हुई क़ब्र में मुंह के बल गिर पड़ा, इन्तिहाई कर्ब व तक्लीफ़ में मुब्तला शख़्स की त़रह़ हाथ पाउं मारने लगा। उस के गले से अ़जीबो ग़रीब आवाज़ आने लगी। मैं ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ पढ़ा और कहा "अगर मेरी बातें सुन कर येह शख़्स हलाक हो गया तो गोया मैं इस के क़त्ल का सबब बनूंगा।" मुझे इस के सामने ऐसी नसीह़त आमोज़ बातें नहीं करनी चाहिये थीं। उसे इसी ह़ाल में छोड़ कर मैं उस घर से बाहर आया और एक चक्की वाले के पास जा कर सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। येह सुन कर चक्की वाले ने मुझे डांटा और कहा : "मेरे साथ चलो ताकि हम उस की कुछ मदद करें।" चुनान्चे हम जल्दी से उस के घर पहुंचे, वोह उसी त़रह़ तड़प रहा था। हम ने फ़ौरन उसे बाहर निकाला। उस की ह़ालत बहुत नाज़ुक थी, उस का जिस्म मु-तअ़द्दद जगहों से ज़ख़्मी हो चुका था।

ऐसा लगा रहा था कि शायद येही अभी फ़ौत हो जाएगा। चक्की वाला मुझे बड़ी ग़ज़बनाक नज़रों से घूर रहा था, मैं फ़ौरन बाहर चला आया। फिर ज़ोहर के वक़्त दोबारा वहां गया तो देखा कि अभी तक उस की ह़ालत ऐसी ही है। मग़रिब तक मैं उस के पास रहा, फिर वापस चला आया उसे अभी तक होश न आया था। वोह रात मैं ने इतनी परेशानी और ग़म के आ़लम में गुज़ारी कि इस से क़ब्ल कभी भी मुझे इतनी परेशानी न हुई थी। सुब्ह़ होते ही मैं उस के पास पहुंचा तो वोह अपने घर के मशरिक़ी ह़िस्से में बैठा था। उस ने जिस्म के ज़ख़्मी ह़िस्सों पर एक पुराना कपड़ा बांधा हुवा था। मुझे देख कर वोह बहुत ख़ुश हुवा और आगे बढ़ कर येह कहते हुए मेरा इस्तिक़्बाल किया : "ऐ मेरे मोह़सिन ! तुम्हारी तशरीफ़ आ-वरी का शुक्रिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए और अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे।" वोह मुझे इसी त़रह़ दुआ़एं देता रहा, मैं कुछ देर वहां बैठा और फिर ख़ुशी ख़ुशी वापस चला आया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَيْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 198 : दो वलियों की मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब बिन ह़र्ब عَلَيْہِ رَحْمَۃُ الرَّب से मन्क़ूल है : "एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन सईद सौरी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के हमराह "कूफ़ा" से "मसीसा" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم की ज़ियारत के लिये गया। हम ने "मसीसा" पहुंच कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم रَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْہ के बारे में दर्याफ़्त किया तो लोगों ने बताया कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْہ मस्जिद में होंगे। हम जामेअ़ मस्जिद पहुंचे तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْہ को मस्जिद में लैटे हुए पाया। मैं ने क़रीब जा कर आप को बेदार किया और कहा : "ह़ुज़ूर ! उठिये और देखिये कि आप के दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन सईद सौरी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی आप से मिलने आए हैं।" इतना सुनते ही आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْہ एक झटके से उठे और ख़ुश होते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को गले लगाया। फिर दोनों दोस्त बैठ गए और बातें करने लगे।

मैं ने और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने तीन दिन से कुछ न खाया था। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَعْظَم से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق ! हमें कोई ऐसा अ़मल बताइये कि जिस के ज़रीए़ हम ह़लाल रिज़्क़ ह़ासिल कर सकें।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْہ ने फ़रमाया : "आओ ! हम खेती काटने चलते हैं।" चुनान्चे हम

एक शख़्स के पास गए और कहा : "हम मज़्दूरी करना चाहते हैं, हमें उजरत पर कुछ काम दे दीजिये।" उस ने कहा : "आप दोनों खेती काटें।"

चुनान्चे हम एक दिन की दो दिरहम उजरत पर खेत की कटाई पर अजीर (या'नी मज़्दूर) बन गए। सारा दिन इन्तिहाई मेह्नत, लगन और दियानत दारी से काम करते रहे। शाम को जब खेत के मालिक ने हमारा काम देखा तो बड़ा ख़ुश हुवा और कहने लगा : "तुम लोगों ने बहुत अच्छा काम किया है, येह लो अपनी उजरत।" फिर उस ने दो दिरहम देते हुए कहा : "तुम रोज़ाना मज़्दूरी के लिये आ जाया करो।" फिर हम वहां से चले आए।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने एक दिरहम मुझे दिया और कहा : "जाओ ! जो बेहतर समझो, खाने के लिये ले आओ।" चुनान्चे मैं बाज़ार जा कर खाना ख़रीद लाया और उन के सामने रख दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم से फ़रमाया : "खाना खाइये।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने कहा : "पहले आप खाइये, आप मुझ से बड़े हैं और इ़ल्म के ए'तिबार से भी अफ़्ज़ल हैं।" लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी पहले खाने से इन्कार करते हुए कहा : "पहले आप खाइये।" कुछ देर इसी त़रह़ तकरार होती रही। बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم से फ़रमाया : "मुझे इस खाने से मुआ़फ़ी दीजिये, क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं कि हम ने मज़्दूरी बिल्कुल ठीक की है और जो रक़म हमें मिली है उस में किसी क़िस्म की मिलावट या शुबा नहीं ? अगर आप येह ज़मानत देते हैं तो मैं खा लेता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने अ़र्ज़ की : "मैं कैसे ज़मानत दे सकता हूं कि येह खाना शुबा से पाक है ?"

तो ह़ज़रते सय्यिुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कहने लगे : "फिर मुझे इस खाने की कोई ह़ाजत नहीं।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने कहा : "जिस चीज़ को आप ने तर्क कर दिया मैं उसे कैसे इख़्तियार कर सकता हूं, मैं भी येह खाना नहीं खाऊंगा।" चुनान्चे हम ने खाना वहीं छोड़ दिया और एक लुक़्मा भी न खाया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 199 : अनोखी ज़ियाफ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़राज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَهَّاب फ़रमाते हैं : ''एक मर्तबा मैं ने अपने एक मुत्तक़ी व परहेज़ गार दोस्त के साथ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में क़ियाम किया । हम तीन दिन वहां रहे । हम ने एक फ़क़ीर को देखा कि अपनी झोंपड़ी में रहता है, उस के पास सिर्फ़ एक डोल था जो टाट के रुमाल से ढका रहता । वोह फ़क़ीर उ़म्दा आटे की सफ़ेद रोटी खाता था । हम ह़ैरान थे कि न जाने येह रोटी इस के पास कहां से आती है । मुसलसल तीन दिन से हम ने कोई शै न खाई थी । मैं ने दिल में कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज मैं उस फ़क़ीर से कहूंगा कि आज रात हम आप के हां बत़ौरे मेहमान ठहरेंगे ।'' चुनान्चे मैं उस के पास गया और कहा : ''आज रात हम आप के मेहमान हैं ।'' उस ने कहा : ''ख़ुश आ-मदीद ! येह तो मेरे लिये सआ़दत की बात है ।'' चुनान्चे हम दोनों दोस्त उस की झोंपड़ी में आ गए । इ़शा के वक़्त तक मैं उसे देखता रहा लेकिन उस के पास मैं ने कोई शै ऐसी न देखी जिस से वोह हमारी ज़ियाफ़त करता । कुछ देर के बा'द उस ने अपनी मूंछों पर हाथ फैरा तो उस के हाथ में कोई चीज़ थी जो उस ने मुझे पकड़ा दी । मैं येह देख कर ह़ैरान रह गया कि वोह बेहतरीन क़िस्म के दो दिरहम थे । चुनान्चे हम ने खाना ख़रीदा और खा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया । कुछ दिनों बा'द मेरी उस फ़क़ीर से दोबारा मुलाक़ात हुई । मैं ने सलाम किया और पूछा : ''जिस रात हम आप के हां ठहरे थे तो मैं ने देखा कि आप के हाथ में अचानक दो दिरहम आ गए थे और येह बहुत ह़ैरान कुन बात है, मैं जानना चाहता हूं कि येह क्या राज़ है ? अगर किसी अ़मले सालेह़ के ज़रीए़ आप को येह करामत मिली है तो वोह अ़मल मुझे भी बताइये ।'' फ़क़ीर ने कहा : ''ऐ अबू सईद ! वोह कोई बड़ा अ़मल नहीं, सिर्फ़ एक ह़र्फ़ है ।'' मैं ने पूछा : ''वोह क्या है ?'' फ़क़ीर ने जवाब दिया : ''अपने दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दे और ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत दिल में बिठा ले اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तेरी तमाम ह़ाजतें पूरी हो जाएंगी ।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 200 : कटे हुए सर से तिलावते क़ुरआन की आवाज़ आती

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन इस्माईल बिन ख़लफ़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّب फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नस्र ह़म्बली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی जलीलुल क़द्र आ़लिम थे, नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाते । ''**वासिक़ बिल्लाह**'' ने उन्हें इस लिये अपने हाथों शहीद किया कि वोह क़ुरआन को मख़्लूक़ न मानते ।

ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्लाह ने उन्हें शहीद कर दिया और हुक्म दिया कि इन के सर को बग़दाद की गलियों में फिराया जाए। चुनान्चे ऐसा ही हुवा, इस के बा'द कुछ अ़र्सा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुबारक सर को बग़दाद की मश्रिक़ी जानिब और कुछ अ़र्सा मग़्रिबी जानिब लटकाया गया और बक़िय्या जिस्म को "सुर्र मन रआ' में सूली पर लटकाए रखा, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शहीद तो हो गए लेकिन ह़क़ बात से रू गरदानी न की। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शहादत के बा'द मुझे ख़बर मिली कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सरे अक़्दस से क़ुरआन की तिलावत सुनाई देती है। येह ख़बर मिलते ही मैं वहां पहुंचा जहां आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सरे अक़्दस लटकाया गया था वहां बहुत से शह सुवार और पहरेदार निगरानी पर मामूर थे। रात के आख़िरी पहर जब सब सो गए तो मैं ने उन के सर से क़ुरआने करीम की येह आयत सुनी :

الٓمّٓ ، اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْٓا اَنْ یَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ۝ (پ۲۰،العنکبوت:۱۔۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़माइश न होगी।

येह सुन कर मेरा जिस्म कांपने लगा। चन्द दिन बा'द मैं ने ख़्वाब देखा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म पर रेशम का बेहतरीन लिबास और सर पर ताज था। मैं ने पूछा : "مَافَعَلَ اللّٰہُ بِکَ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया) ?" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और जन्नत में दाख़िल फ़रमाया लेकिन मैं तीन दिन तक ग़मज़दा और परेशान रहा।" मैं ने पूछा : "आप परेशान क्यूं हुए ?" फ़रमाया : "मैं ने देखा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे क़रीब से गुज़रे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना रुख़े ज़ैबा फैर लिया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मुझे ह़क़ की ख़ातिर क़त्ल न किया गया ?" हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तू ह़क़ की ख़ातिर शहीद हुवा लेकिन तुझे एक ऐसे शख़्स ने शहीद किया जो मेरे अहले बैत से है, मैं ने ह़या की वजह से तुझ से मुंह फैर लिया।"

अह़मद बिन अ़ली साबित फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नस्र ह़म्बली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का सरे अक़्दस बग़दाद में और बक़िय्या जिस्म "सुर्र मन रआ" में छ साल तक लटका रहा। छ साल बा'द जिस्मे मुबारक और सरे अक़्दस को एक साथ दफ़्न कर दिया गया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे अक़्दस बग़दाद शरीफ़ की मग़्रिबी जानिब वाक़ेअ़ है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर 201 : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق और यतीम घराना

ह़ज़रते सय्यिदुना मुअ़म्मर बिन अह़मद बिन मुह़म्मद अस्बहानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي नक़्ल फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने एक दफ़्आ़ बयान फ़रमाया : "मैं हर रोज़ दरिया के किनारे जाता और खजूर के पत्तों से टोकरियां बनाता फिर वोह टोकरियां दरिया में डाल देता। न जाने क्या बात थी कि इस अ़मल से मुझे दिली ख़ुशी और सुकून ह़ासिल होता। मुझे येह अ़मल करते हुए बहुत दिन गुज़र गए। एक दिन मैं ने दिल में कहा : "जो टोकरियां मैं पानी में डालता हूं आज देखूंगा कि आख़िर वोह कहां जाती हैं। चुनान्चे मैं ने उस दिन टोकरियां न बनाईं और दरिया के किनारे कई घन्टे मुसलसल चलता रहा।

आख़िरे कार मैं दरिया के किनारे एक ऐसी जगह पहुंचा जहां एक बुढ़िया बैठी रो रही थी। मैं ने उस से पूछा : "तू क्यूं रो रही है ?" वोह कहने लगी : "मेरे छोटे छोटे पांच यतीम बच्चे हैं, हमें फ़क़्रो फ़ाक़ा और तंगदस्ती पहुंची तो मैं रिज़्क़े ह़लाल की तलाश में इस दरिया के किनारे पर आ गई। मैं ने देखा कि खजूर के पत्तों से बनी टोकरियां दरिया में बहती हुई मेरी जानिब आ रही हैं। मैं ने उन्हें पकड़ा और बेच कर उन की क़ीमत को अपने बच्चों पर ख़र्च कर दिया। दूसरे और तीसरे दिन भी इसी त़रह़ हुवा। फिर रोज़ाना ऐसे ही होता रहा और यूं हमारे घर का ख़र्च चलता रहा लेकिन आज अभी तक टोकरियां नहीं आईं, मैं उन के इन्तिज़ार में यहां परेशान बैठी हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द किये और रब की बारगाह में अ़र्ज़ करने लगा : "ऐ मेरे रह़ीम करीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं जानता कि मेरी कफ़ालत में पांच बच्चे और भी हैं तो मैं ज़ियादा टोकरियां दरिया में डालता।" फिर मैं ने उस बुढ़िया से कहा : "मोह़तरमा ! आप परेशान न हों, आज आप लोगों के लिये खाने वग़ैरा का बन्दो बस्त मैं करूंगा।" फिर मैं उस के घर की त़रफ़ चल दिया। मैं ने देखा कि वाक़ेई बुढ़िया ग़रीब औ़रत है। चुनान्चे मैं कई साल इसी त़रह़ उस ग़रीब बुढ़िया और उस के यतीम बच्चों की परवरिश करता रहा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस अ़मल को क़बूल फ़रमाए।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 202 : हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन हामान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ ह़र्बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को येह फ़रमाते सुना : "हर ज़माने के अ़क़्ल मन्दों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि जो तक़्दीर पर राज़ी नहीं वोह उख़्रवी ज़िन्दगी में काम्याब नहीं।

गोया मेरी क़मीस सब से ज़ियादा साफ़ क़मीस और मेरी चादर सब से गन्दी चादर हो फिर भी कभी मेरे दिल में येह ख़याल नहीं गुज़रा कि येह दोनों एक जैसी हों और जब कभी मुझे बुख़ार हुवा तो अपनी वालिदा, बहन, बीवी और बेटी यहां तक कि किसी से भी उस की कभी शिकायत न की। अच्छा आदमी वोही है जो अपने ग़म को अपनी ज़ात तक मह़दूद रखे और अपने अहलो इ़याल को मग़मूम न करे।

हम अपना ग़म किसी को बताते नहीं
ख़ुद जलते रहते हैं किसी को जलाते नहीं

मुझे चालीस साल तक दर्दे शक़ीक़ा रहा मगर मैं ने इस के मु-तअ़ल्लिक़ कभी किसी को न बताया। दस साल मैं सिर्फ़ एक आंख से देखता रहा क्यूं कि दूसरी आंख की बीनाई ज़ाएअ़ हो चुकी थी। मगर मैं ने कभी किसी को न बताया। तीस साल रोज़ाना मैं सिर्फ़ दो रोटियां खा कर ही गुज़ारा करता रहा वोह भी अगर मेरी मां या बहन ले आतीं तो खा लेता वरना अगली रात तक भूका प्यासा रहता। अपनी ज़िन्दगी के तीस साल इस त़रह़ गुज़ारे कि रोज़ाना सिर्फ़ एक रोटी और चौदह खजूरें खाता। और अगर बिल्कुल अदना क़िस्म की खजूरें होती तो रोज़ाना बीस खजूरें इस्ति'माल करता।

एक मर्तबा मेरी बेटी बीमार हो गई, मेरी बीवी एक महीना तक उस के पास रह कर उस की देखभाल करती रही। उस महीने हमारा खाने का ख़र्च एक दिरहम और ढाई दानिक़ हुवा। मैं ह़म्माम में गया और उन के लिये दो दानिक़ (या'नी दिरहम के छटे हिस्से) का साबुन ख़रीदा। लिहाज़ा पूरे र-मज़ानुल मुबारक के महीने का ख़र्च एक दिरहम और साढ़े चार दानिक़ हुवा लेकिन हम ने अपना येह ह़ाल किसी पर ज़ाहिर न किया।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

हि़कायत नम्बर 203 : इ़ल्म के क़द्रदानों का सिला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुसैन बिन शम्ऊ़न رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं, मुझे अह़मद बिन सुलैमान क़तीई़ علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने बताया : "एक मर्तबा मैं बहुत ज़ियादा मोह़ताज हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़र्बी علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास अपनी कैफ़िय्यत बयान करने चला गया। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "इस मुआ़-मले में तेरा दिल तंग नहीं होना चाहिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से मदद फ़रमाने वाला है। एक मर्तबा मैं भी इतना मोह़ताज हो गया था कि नौबत फ़ाक़ों तक पहुंच गई थी। मेरी ज़ौजा ने मुझ से कहा : "हम दोनों तो सब्र कर लेंगे मगर हमारे इन दो बच्चों का क्या बनेगा ? अपनी किताबों में से कोई किताब ही ले आओ ताकि उसे बेच कर या किसी के पास रहन रख कर हम बच्चों के लिये खाने का बन्दो बस्त कर लें।" मुझे अपनी दीनी किताबों से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत थी इस लिये मैं ने कहा : "इन बच्चों के लिये कोई चीज़ उधार ले लो और मुझे आज के दिन और रात की मोहलत दो।"

मेरे घर की दहलीज़ पर एक कमरा था जिस में मेरी किताबें थीं, मैं वहीं बैठ कर किताबों का मुत़ा-लआ़ और तह़रीरी काम करता था। उस रात भी मैं उसी कमरे में था कि किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने पूछा : "कौन है ?" उस ने कहा : "तुम्हारा पड़ोसी हूं।" मैं ने कहा : "अन्दर आ जाओ।" उस ने कहा : "पहले चराग़ बुझाओ तब मैं दाख़िल होउंगा।" मैं ने चराग़ पर बरतन औंधा कर दिया और कहा : "आ जाओ।" वोह अन्दर आया और मेरे पास कोई शै छोड़ कर चला गया। मैं ने चराग़ से बरतन हटाया तो क्या देखता हूं कि एक निहायत क़ीमती रुमाल है जिस में अन्वाओ़ अक़्साम के खाने और पांच सो दिरहम हैं। मैं ने अपनी बीवी को बुला कर कहा : "बच्चों को जगाओ ताकि वोह खाना खा लें।" दूसरे दिन हम पर जितना क़र्ज़ था वोह उन दराहिम से अदा कर दिया। फिर ख़ुरासान से ह़ाजियों के क़ाफ़िलों की आमद का वक़्त आ गया लिहाज़ा अगली रात मैं अपने घर के दरवाज़े पर बैठ गया। क्या देखता हूं कि एक सारबान साज़ो सामान लदे दो ऊंट लिये आ रहा है और इब्राहीम ह़र्बी के घर के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ रहा है। यहां तक कि वोह मेरे पास पहुंचा तो मैं ने कहा : "मैं ही इब्राहीम ह़र्बी हूं।" चुनान्चे उस शख़्स ने ऊंटों से सामान उतारा और कहने लगा : "येह दोनों ऊंट ख़ुरासान के एक शख़्स ने आप के लिये भेजे हैं।" मैं ने पूछा : "वोह नेक शख़्स कौन है ?" कहने लगा : "उस ने मुझ से क़सम ली थी कि मैं इस के मु-तअ़ल्लिक़ किसी को न बताऊं लिहाज़ा मैं आप को उस का नाम नहीं बता सकता।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(1) करन्सी नोट के शर-ई़ अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु़-रक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ई़दैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहु़ल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ई़द) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल क़ह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़अ मअ़ह़ू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 140)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) । (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) । (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) । (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) । (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) । (17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) । (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) । (19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्ह़ात : 164)

(26) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़्ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्ह़ात : 43)

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्ह़ात : तक़्रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़्ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़्ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्ह़ात : 142)

(36) अर-बई़ने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़्ह़ात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्ह़ात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़्ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़्ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़्ह़ात : 24)

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़्ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्ह़ात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्ह़ात : 220)

(57) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़्ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्ह़ात : 62)

(59) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़्ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीस (कुल सफ़्ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़्ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़्ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़्ह़ात : 36)

(64) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़्ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़्ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़्ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़्रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़्ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्ह़ात : 136)

(70) उ़यूनिल हि़कायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़्ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81 ता 85.86) बहारे शरीअ़त (पांच हि़स्से, हि़स्सा : 16)

(87) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

(88) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

(89) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

(90) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़श्के़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 274)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

मआख़ज़ो मराजेअ़

नम्बर शुमार	किताब	मुसन्निफ़/मुअल्लिफ़	मत़्बूआ़
1	क़ुरआने मजीद	कलामे बारी तआ़ला	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
2	कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर-ज-मतिल क़ुरआन	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अल मु-तवफ़्फ़ा हि. 1340 हि.	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़
3	तफ़्सीरे क़ुरत़ुबी	इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद अल क़ुरत़ुबी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
4	अद्दुर्रिल मन्सूर फ़ित्तफ़्सीरि बिल मअसूर	इमाम जलालुद्दीन अस्सुयूत़िश्शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अल मु-तवफ़्फ़ा 911 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
5	अल मुसन्नफ़ लि इब्ने शैबा	इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अबी शैबा رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 235 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
6	मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल	इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
7	अज़्ज़ोह्द लि इमाम अह़मद बिन ह़म्बल	अल इमाम अबी अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन मुह़म्मद ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अल मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.	दारुल ग़द्दिल ह़दीद मिस्र
8	सह़ीह़ुल बुख़ारी	इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 256 हि.	दारुस्सलाम रियाज़
9	सह़ीह़ मुस्लिम	इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज नैशापूरी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 261 हि.	दारुस्सलाम रियाज़
10	सु-नने इब्ने माजह	इमाम मुह़म्मद बिन यज़ीद अल क़ज़्वेनी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 273 हि.	दारुस्सलाम रियाज़
11	जामेइ़त्तिरमिज़ी	इमाम मुह़म्मद बिन ईसा अत्तिरमिज़ी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.	दारुस्सलाम रियाज़
12	मौसूअतुल इमाम इब्ने अबिद्दुन्या	अल ह़ाफ़िज़ अल इमाम अबी बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अल क़-रशी अल मु-तवफ़्फ़ा 281 हि.	अल मक-त-बतुल अ़स्रिय्या बैरूत
13	सु-ननुन्नसाई	इमाम अह़मद बिन शुऐ़ब अन्नसाई رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 303 हि.	दारुस्सलाम रियाज़
14	अल मुस्तदरक अ़लस्सह़ीह़ैन	इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल ह़ाकिम رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 405 हि.	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत
15	ह़िल्यतुल औलिया	अल इमाम अल ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अल अस्फ़हानी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 430 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
16	अस्सु-ननुल कुब्रा लिल बैहक़ी	अल इमाम अह़मद बिन अल ह़ुसैन अल बैहक़ी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
17	शु-अ़बुल ईमान	अल इमाम अह़मद बिन अल ह़ुसैन अल बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अल मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
18	फ़िरदौसुल अख़्बार लिद्दैलमी	अल ह़ाफ़िज़ शहरूया बिन शहरदार बिन शहरूया अद्दैलमी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 509 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
19	कन्ज़ुल उ़म्माल	अ़लाउद्दीन अ़लल मुत्तक़ी अल हिन्दी رحمۃ اللہ علیہ अल मु-तवफ़्फ़ा 975 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत

याद दाश्त

दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा